दानवीर माणिकचंद सुलभ ग्रन्थमाला न० १

ॐ नमः श्रीवीतरागाय।

दानवीर माणिकचन्द्र

(बम्बई निवासी स्व० दानवीर जैनकुलभूषण
सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जौहरी
जे. पी. का विस्तृत जीवनचरित्र)

लेखक—
श्रीमान् जैनधर्मभूषण–
ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी
संपादक "जैनमित्र"–सूरत।

प्रकाशक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया–सूरत।

वीर सं २४४५] विक्र सं १९७५. [ई० १९१९
प्रथमावृत्ति] [प्रति २०००

'जैनविजय' प्रिन्टिंग प्रेस–सूरत।

मूल्य सिर्फ रु. १–८–०.

Printed by
Ishwarlal Kisandas Kapadia at 'Jain Vijaya'
Printing Press near Khapatia chakla,
Laxminarayan's Wadi—SURAT

Published by
Moolchand Kisandas Kapadia,
from Khapatia Chakla Chandawadi-SURAT



—✻✻✻—

बम्बई निवासी स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचद हीराचदजी जौहरी जे० पी० को कौन नही जानता ? आपकी जन्मभूमि सूरत है और हम भी आपकी जाति (वीसा हूमड) और एक गोत्री होनेसे तथा हमारे ऊपर आपका प्रेम एक पुत्रसे भी अधिक होनेके कारण आपसे हमारा विशेष परिचय था और सेठजीने जीवित अवस्थामे हमसे कई वार कहा था कि "भाई मूलचद, तुम हमारा जीवनचरित्र हमारे जीते हुए ही प्रकट करो"। परतु खेद है कि हम आपकी आज्ञाका पालन नही कर सके थे, क्योंकि इस कार्यके लिये विशेष सामिग्री एकत्रित करनेकी आवश्यकता थी तो भी एकवार भ्रमणके समय रेल ट्रेनमें बैठे २ आपके वशका परिचय और बम्बईमे जाकर व्यापार शुरू किया वहा तककी सब घटनाए आपसे नोट कर ली थी और विशेपके लिये फिर मौका न मिलनेसे यह काम रह गया था। इतनेमें अकस्मात् आपका स्वर्गवास वीर स० २४४० विक्रम सवत १९७० आषाढ वदी ९ (गुजराती) को हो जानेसे हमें और सारी जैन समाजको जो दु ख हुआ उसका कोई पारावार न था परतु क्या किया जाय, होनहार बलवान है वह कभी भी मिट नहीं सकती।

आपके स्वर्गवास होते ही हमने 'दिगबर जैन' द्वारा आपका एक स्मारक फड स्थापित किया था जिसका खास उद्देश्य आपका विस्तृत जीवनचरित्र प्रकट करना था। इस फडमें हमें निम्नलिखित सहायता प्राप्त हुई थी.—

स्मारकफंडकी संक्षिप्त सूची ।

५१) सेठ मूलचद किसनदास कापडिया सूरत
५१) "दिगम्बरजैन" कार्यालय ,,
२५) सेठ शिवलाल झवेरचद व्यारा सूरत
५)- सेठ देवचद गुलाबचद ,,
१०) शा० नानचद रुपचद ,,
१४।)≡ फुटकर ,,
६) करमसद (आणद)के भाइयों द्वारा
२१॥) वडु (पादरा) ,, ,,
४) वलासण (आणद)
६) डबका (वटोदा) ,, ,,
२५) सेठ डाह्याभाई रीपवदास सूरत
२०) दोशी गेबीलाल कस्तूरचद मार्फत दि० जैन पच झाबुआ
२५) शा० डाह्याभाई शिवलाल करमसदवाले गिरीडिह
७) वसोके भाइयों द्वारा
१५।) दि० जैन पच काणीसा (खभात)
९) सायमा (खभात)के भाइयों द्वारा
२५) समस्त दि० जैन पच महुवा (सूरत)
१६॥।) बोरसदके भाइयों द्वारा
१५) वाच (अमदाबाद) ,,
११) सेठ लालचद कहानदास वडौदा
११) ,, गिरधरलाल नारणदास वडौदा
१८॥।) फुटकर वडोदाके पचोंके मार्फत सेठ लालचद कहानदा-
२५) सेठ छगनलाल घेलाभाई तासवाला सूरत
५) प्रेमजी सवजी वसारीया डूगरपुर

६) मालावाड़ा (पेटलाद)के भाइयों द्वारा
५) सराफ गेबीलाल नुदरजी दाहोद
२३) दाहोदके भाइयों द्वारा फुटकर मार्फत जेचद नाथजी
५) कुशलगढ़के पचों द्वारा
५) सेठ वजेचद हरीचद रानकुवा (सूरत)
५८) राणापुरके दि० जैन पच मार्फत जवेरचद भोजराज
८) शा० प्रेमचद दीपचद तारापुर
५) शा० तिलोकचद रतनजी दाहोद
५) रुदेलके भाइयों द्वारा
४०) चसनरीया (नगाल) के भाइयों दारा मार्फत
शा० तलकचद ईश्वरदास
१०) शा जेसगभाई गुलाबचद प्रभासपाटण
९।≈) मसीआव (आणद)के भाईयों द्वारा
६।≈) समस्त दि० जैन पच द्वारा
५) सेठ अमृतलाल गुलाबचद बम्बई
५१) सेठ गुलाबचद हीरालाल धूलिया
५) नाधेगावके भाइयों द्वारा
६) घायज (वड़ौदा)के पचों द्वारा
१५) शा० मोतीचद नेमचद सुहारी (सूरत)
११) ,, नानचद करतूरचद ,,
९) ,, खीमचद भगवानदास ,,
११) ,, प्राणजीवनदास माणिकचद ,,
६) ,, बहेचरदास मकनदास ,,
११) ,, ताराचद मोतीचद ,,
१८) ,, मगनलाल तथा मणीलालकी कपनी
११) ,, मणीलाल ताराचदकी कपनी

५) ,, अबेलाल आतमारामकी कंपनी
८२।) अकलेश्वरके दि० जैन पंच मार्फत
शा० छोटालाल घेलाभाई गांधी
१५) टेंभुर्णी (सोलापुर)के भाइयों द्वारा
२०॥) रणासणके भाइयों द्वारा मार्फत
सेठ पूनमचंद साकलचंद
१८) थांदला (रतलाम) के भाइयों द्वारा
५) नाथूराम दीपचन्द्र परवार नरसिंहपुर
१२॥) रतलामकी बोर्डिंग द्वारा फुटकर
५) शा० भीकमदास खुशालदास बाकरोल
६॥) देलवाडके भाइयों द्वारा
१५॥) वेडच ,, ,,
८) पेटलाद ,, ,,
२८) दि० जैन पंच मार्फत सेठ हरजीवन लालचंद बडौदा
१०१) सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारी
११) जवरचंद कवरलाल जैन म्हसर
१०) शा० दलपतभाई केवलभाई वलसाड
५) मुनीम धरमचंदजी हरजीवनदास पालीताना
३०) शा० परभुदास लखमीदास झहेर
१०) ,, केवलदास हरजीवनदास ,,
४६) झहेरके भाइयोंद्वारा फुटकर
५) खेरगाम (सूरत) के भाईयोंद्वारा
१०) श्राविकाश्रम (बम्बई) की श्राविकाओंद्वारा
१०) श्री० शिवलाल सुन्दरलाल बैनाडा झालरापाटन
९।) जाबुडीके भाइयों द्वारा
१७॥) सेठ भगवानदास झवेरदास सोजित्राकी मार्फत आए

२५)	शा०	परभूदास हेमचंद	सूरत
१५)	,,	त्रिभोवनदास ग्रीजलाल	,,
५)	,,	छगनलाल उत्तमचंद सरैया	,,
५)	,,	परभुदास पानाचंद सरैया	,,
५)	,,	मछाराम जगजीवनदास	,,
८२॥।-)	फुटकर		
१३९१-५-०			

इसके बाद सेठजीकी विधवा नवीबाईसे पत्र व्यवहार करने पर आपके द्वारा रु० ५००)की रकम इस फंडमें मिली थी जिससे यह फंड १८९१।-)का हो गया।

तदनंतर जीवनचरित्रके लिये सामिग्री एकत्रित करनेका काम हमने लिया और सेठजीसे गाढ परिचयवाले और जैनसमाजकी उन्नतिके लिये रात्रि दिन लवलीन श्रीमान् जैनधर्मभूषण **ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने** यह चरित्र लिख देनेका काम सहर्ष स्वीकार कर लिया। बादमें इसकी आवश्यक सामग्री एकत्र करनेके लिये 'दिगम्बरजैन,' 'जैनमित्र' आदि पत्रोंमे विज्ञापन छपाया गया और हमने इतस्तत बहुत पत्र व्यवहार किया, किन्तु खेद है कि हमको आने दो आने समाचार ही सेठजीके बारेमे प्रगट हुए जिसमें आमोदके सेठ हरजीवन रामचंद शाहने सेठजीके कई कार्योंके उल्लेखरूप एक बडा लेख भेजा था जिसके लिये हम आपके आभारी है। इस प्रकार जब पूर्ण सामग्री न मिल सकी तब हमने जातीय साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक सभी पत्रोंकी फाइलें एकत्रित कीं जिसमें 'जैनगजट'की पुरानी फाइलें

भेजनेके लिये भारतवर्षीय दि० जैन महासभा कार्यालयके, सबसे पुराना मासिक 'जैन बोधक' (मराठी) की प्रारंभसे फाइलें भेजनेके लिये सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुरके, 'जिनविजय' (मराठी) मासिककी फाइलें भेजनेके लिये श्रीयुत भरमप्पा पदमप्पा पाटील (होसूर)के और 'जैनमित्र' तथा 'जैनगजट'की कुछ फाइलें भेजनेके लिये बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभा कार्यालयके हम आभारी है, क्योंकि इन फाइलोंसे ही इस चरित्रके लिये हमें बहुतसी सामग्री मिल सकी है।

अब सेठजीके वंशका विशेष परिचय जाननेकी आवश्यकता थी जिसको आपके लघु भ्राता **सेठ नवलचंदजी** (जो कि इस जीवनचरित्रको प्रकट हुआ देख नहीं सके और गत वर्षमें स्वर्गवासी हुए हैं) और आपकी पत्नी श्रीमती परसनबाईको पूछ कर नोट किया था और आपके पिताकी जन्मभूमि भीण्डर (मेवाड उदयपुर) का कुछ परिचय प्राप्त किया और स्वर्गीय सेठजीकी जन्मभूमि **सूरत** शहरका—जो कि " सोनानी मूरत " (सोनेकी मूर्ति) कही जाती है और अति प्राचीन शहर है, जहां कई भट्टारक हो गये हैं, कई ग्रन्थ तैयार हुए थे, और कई मंदिरोंका निर्माण हुआ था—और उसके आसपास यानी गुजरात देशका प्राचीन इतिहास इस चरित्रमें प्रकट करनेका हमारा और ब्रह्मचारीजीका विचार हुआ था, क्योंकि जिससे स्वर्गीय सेठजीकी जन्मभूमिका महत्व प्रकट हो जाय और साथ २ अपने धर्मकी पूर्व महत्ताका परिचय मिल जाय इसलिये इधर उधर घूमकर कई पुस्तकें एकत्रित की और कई प्रतिमाओंके लेख उद्धृत

किये और हस्तलिखित कई ग्रन्थोंसे भी सूरत और आसपासके मन्दिर, प्रतिमाओं और ग्रन्थादिका पता लगाया। सूरत, रादेर आदिके मदिरोंकी प्रतिमाओंके लेखादि सग्रह करनेमे यहाके हमारे उत्साही मित्र भाई छगनलाल उत्तमचद सरैयाने बहुत सहायता की थी जिसके लिये भाई सरैयाके हम आभारी है। इसके सिवाय सेठजीकी फर्मसे स्वर्गवासके बाद आये हुए तार पत्रादि प्राप्त किये और पत्रोंके शोकजनक लेख और कविताए प्राप्त की। इस तरह इस बृहत् चरित्रकी सामग्री इकट्ठी करनेमे बहुत समय लग गया। फिर मान्यवर ब्रह्मचारीने जब तीसरे वर्ष बडौदेमे चौमासा किया था तब इस चरित्रको लिपिबद्ध कर लिया। बाद छपानेका काम प्रारभ हुआ जिसमे कई कारणोंसे विलब हुआ और फिर इसमे सेठजीकी कई अवस्थाओंके चित्र, आपकी स्थापित सस्थाओंके चित्र ऐसे कई चित्र प्रकट करनेका इरादा था जिसको प्राप्त करने और तयार करनेमे भी विलब हुआ।

पाठकगण! आपने बहुतसे जीवनचरित्र पढे होंगे परतु इस बृहत् चरित्रमे आपको कुछ विशेपता अवश्य ही दृष्टिगोचर होगी, क्योंकि स्वर्गीय सेठजीका वशपरिचय और अपनी समाजोन्नतिकी कार्य प्रणालीका वर्णन पढनेसे पाठकोंको बहुत ही लाभ होगा और सूरत जिलेके जैनोंकी पूर्व कीर्ति-कौमुदीका वर्णन तथा शिलालेख, भट्टारकोंकी पट्टावली तथा जातियोंकी उत्पत्तिका वर्णन पढनेसे यह जीवनचरित्र एक सग्रह करने योग्य जैनशास्त्र ही मालूम होगा। जब एक ऐशआराम करनेवाला बहुत बडा धनिक अपने पैसेका उपयोग धार्मिक और सामाजिक कार्योंमे

नही करता है तब स्वर्गीय सेठजीने सामान्य धनिक होकर भी सामाजिक और धार्मिक उन्नतिके लिये रात्रि दिन इतना परिश्रम और द्रव्य व्यय किया था कि आज सेठजीकी जोडका एक भी पुरुष नजर नही आता।

इस चरित्रमे करीब २९–२६००) रु०की रकम खर्च हुई है और २००० प्रतिया प्रकट की गई हैं जो सिर्फ १) रु० लेकर ही प्रथम 'दिगम्बर जैन'के ग्राहकोको ही दी जायगी और कुछ प्रतियॉं समालोचनादिमें तथा अपनी सस्थाओको भेटमे बटेंगी और शेष करीब २०० ही विक्रीके लिये रह जायगी जो देखते २ विक जायगी ऐसी आशा है।

स्वर्गीय सेठजीको पुस्तके प्रकाशित करनेका शौक था और इसकी आवश्यकता है ही इसलिये यह चरित्र विक जानेपर जो रकम बचेगी उसको स्थायी रखके उसकी उपजमेंसे **"दानवीर माणिकचद सुलभ ग्रन्थमाला"** प्रकट करनेका हमारा विचार है जिसके ग्रथ बिलकुल लागतके मूल्य पर ही प्रकट किये जायगे और हिन्दी तथा गुजराती दोनो भाषाओंके ग्रथ इसमें प्रकट होंगे।

इस चरित्रमें क्या क्या विषय हैं वह तो इसकी विषयसूची पढ़नेसे मालूम होगा इसलिये यहा विशेष न लिखकर पाठकोंसे हम सिफारिश करते है कि आप इस बृहत् चरित्रको आदिसे अत तक शने २ अवश्य पढें और बादमे अपने मित्रोंको भी पढनेको देवें। हमारे अजैन भाई भी इस चरित्रको पढकर बहुत लाभ उठा सकेंगे।

चार वर्षसे इस चरित्रको पढ़नेके लिये सारा जैन समाज लालायित हो रहा था और बहुत समयसे अनेक आर्डर भी आ गये थे परन्तु तैयार होनेमें कई कारणोंसे विलम्ब हो गया इसलिये पाठकोंसे हम क्षमाप्रार्थी हैं तथा इसमें जो कुछ त्रुटि मालूम पड़ें उसकी सूचना हमको अवश्य देवें क्योंकि यदि इस जीवनचरित्रकी विशेष माग होगी तो इसकी दूसरी आवृत्ति निकालनेका भी हमारा पूर्ण विचार है। इति शुभम्।

वीर स० २४४५
पौष वदी ३ गुरूवार
ता० २६-१२-१८
सूरत.

जैन जातिसेवक—
मूलचन्द किसनदास
कापड़िया



विषय-सूची।

—•※※※•—

अध्याय पहिला।

अध्याय दूसरा।

गुजरात देशके सूरत शहरका दिग्दर्शन—

अध्याय तीसरा।

उच्च कुलमें जन्म

अध्याय चौथा ।

सेठ माणिकचंदजीकी वृद्धि ।

अध्याय पांचवां।

युवावस्था और गृहस्थाश्रम

अध्याय छठा।

संतति–लाभ

अध्याय सातवां ।

लक्ष्मीका उपयोग

अध्याय आठवां ।
संयोग और वियोग ।

अध्याय नवां।

समाजकी सच्ची सेवा।

अध्याय दसवां।

महती जातिसेवा-प्रथम भाग।

अध्याय ग्यारहवां।

महती जातिसेवा–द्वितीय भाग।

अध्याय बारहवा।

महती जातिसेवा–तृतीय भाग।

अध्याय तेरहवा।

दानवीरका स्वर्गवास।

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	थीरता	थिरता
९	६	हठ	हट
१३	१७	शीघ्र	सिद्ध
१६	१८	प्लोटो	प्लेटो
,,	२३	कार्णो	कर्णो
४७	८	अय्यु	लघु
५४	१०	तवतके अक तीनठो	सवतके अक तीन ही
६१	२०	पुरुषार्थ	पुरुषार्थी
६३	७	विनकसेन	विनयसेन
,,	१९	उम्मेगग	उम्मग्ग
६४	१२	ग्राम ने काउ	ग्राममें काष्ठा
६९	१७	यथन	कथन
७३	१८	कगूनेदार	कगूरेदार
१०५	२२	बढाता	बढता
१३८	१८	उत्कृष्ट	उत्कट
१५७	८	रमणीकता	रमणीकताका
१९६	३	पुरापार्थी	पुरुषार्थी
१९७	१७	एक	एक मे
३२०	१४	सम्बन्धियोमे	सम्बन्धियोंमेसे
३३६	१४	जरता	जाता

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दानवीर माणिकचन्द्र।

स्व० दा० जैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्द्र हीराचन्द्र जौहरी जे०पी०बम्बईका संक्षिप्त जीवन चरित्र।

अध्याय पहिला।

जीवन चरित्रकी आवश्यकता।

इस ससारमे कोई भी प्राणधारी एक पर्यायमे बहुत कालतक नहीं रहता। यह बात प्रत्यक्ष है कि लाखो कोशिशोंके किये जानेपर भी एक जीता जागता मानव, एक जगतके जीवोंका मित्र, एक अपनी शक्तियोंको परमात्म-भक्तिमे व परोपकार-वृत्तिमें लीन करनेवाला, यहा तक कि स्वय सर्वज्ञ अवस्थाको प्राप्त होनेवाला इस पुद्गलके स्कधोंसे रचे हुए शरीरमे अपनी आयुसे अधिक रह नहीं सक्ता। मरण किसीको नहीं छोडता। किन्तु मरण उन्हीका मरणरूप है जो फिर अन्य शरीर-को धारण करते है। जिन्होंने अपने आत्माके ऊपरसे कारण शरीर अर्थात कार्माण देहको या आठों कर्मोंको जला डाला है और उसे शुद्ध निर्विकार ज्ञानानदमय बना डाला है उनका यह शरीर-वियोग मरण नहीं किन्तु मोक्ष है। वे स्वाधीन, अव्याबाध,

आनदमय होकर निरंतर स्वात्मानुभूति तियाके विलासमे मग्न परमामृतका स्वाद लेते हुए परम सुखी रहते है। ऐसे महात्माओं वीर, महावीर, परमविजयी, सिद्ध, परमऐश्वर्यधारी, परमप्रभु कहते आत्मा अपूर्व शक्तियोंका भडार है। इसका लक्षण उपयोग ज्ञान क्रियाका स्वामी आत्मा ही है, अन्य कोई भी अनात्मा न ज्ञान एक गुण है। गुण और गुणका आश्रयी द्रव्य इस जगतमें मिटते नहीं, चाहे जितनी उनकी अवस्थायें पलटती चली जा निःसन्देह एक अवस्था जरूर मिटनेवाली और अन्य अवस्था होनेव है, पर जिसकी दशा पलटती वह अपनी सत्ताको इस जगतमे बनाये रखता है। हमको प्रत्यक्ष अनुभव है कि किसीका निश्च नाश नही होता। एक उजड़े हुए वृक्षकी शाखायें काटे जा लकडी होकर कोयला, राख होती और फिर पानी हवाके इधर उधर बहती हुई फिरती है। वह मसाला, वह द्रव्य, चीज जो शाखाओंमे थी वह इस संसारसे लुप्त न हुई किन्तु दूसरी-ही हालतमे बदल गई, तो भी जो गुण उस शाखाके द्र थे वे सब उसके उसीमे है।

ज्ञान आत्माका मुख्य गुण, हरएकके अनुभवमें है। हर जानता है कि मैं जानता हू, मैं देखता हू, मैं सुनता हू, मैं करता हू, मैं दुखी हू, मैं सुखी हू। इस ज्ञान गुण इसके स्वामी आत्माका कभी नाश नही। ये दोनों अजर अविनाशी अमिट है। इससे आत्मा अपने सर्व गुणोंके साथमें जगतमें सदा ही एक न एक पर्यायमें बना रहता है। जब तक नहीं, मुक्त नहीं, निरंजन नहीं तब तक अपने आपसे कर्मोंके अन

कोई न कोई देहमें अवश्य रहना पडता है । कर्म सहित जीवोंका मरण एक नये जन्मके लिये होता है । जो कुछ भी हो यह निश्चय है कि इस शरीरका सम्बन्ध किसीका भी अमर नहीं रह सक्ता । ऐसी दशामें प्रवीण मनुष्य मानव शरीरमे रहते हुए इसका ऐसा उपयोग करते है जिससे न कि यह जन्म ही सुन्दर, सुखदायी और हितकारी होता है, किन्तु पर जन्ममें भी शुभ शरीर व शुभ सम्बन्ध पानेका दृढ पुण्य उनके साथ हो जाता है ।

सर्व प्राणधारियोंमे मानव सर्वसे श्रेष्ठ है। इसको मनकी शक्तिका अपूर्व लाभ है । मनकेद्वारा यह बडे २ आश्चर्ययुक्त तरकीवोंको सोच सक्ता है । आज कल जो हवाई जहाज, बेतारका तार आदि नाना यत्र निकल पडे है ये सब मनका ही चमत्कार है । मनके द्वारा यह जगत क्या है? इसमें कौन२ पदार्थ है ? उनमें मुझे हितकारी क्या व अहितकारी क्या ? यह सब ज्ञान होता है । सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व जो एक शुद्ध आत्माका अनुभव है उस तककी पहुच इस मानवको हो जाती है और यह उस तत्त्वका सेवी होता हुआ जो आनन्द लाभ करता है वह वचनअगोचर है, केवल अनुभव-गम्य है। यही अनुभव आत्माके मैलको धीरे२ धोता है, यहा तक कि यही आत्माको शुद्ध कर देता है ।

मानवोंके लिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ है । मोक्ष धर्मका अतिम फल है । अर्थ और कामका भी अतरग हेतु पुण्यरूप धर्म है । धर्मसाधन बिना तीनोंका लाभ नहीं, इससे धर्मका सेवन सबसे जरूरी है ।

धर्म वास्तवमें आत्माके उस परिणामको कहते हैं जो शुद्ध

आत्मा या परमात्माकी ओर तन्मय होता हुआ वीतरागमय हो। यही परिणाम कर्मोंसे मुक्ति देनेवाला है। इसके अलाभमें उस परिणामको भी धर्म कहते है जो आत्माको पापोंसे बचाकर पुण्य कार्य्योंमें लगाता है पर वीतरागरूप होनेकी चाहसे मिला होता है। जिसका परिणाम क्रोध, मान, माया, लोभ कषायोंकी मदतामे होता है। वह शुभ परिणाम है और जो इन कषायोंकी अतिशय मदतामें होता है उसे शुद्ध या वीतराग परिणाम कहते है। जो इन दोनोंसे रहित तीव्र कषाय युक्त होकर पाचों इन्द्रियोंके भोगोंमे अनुरागी व पर अहितमे निडर व परकी बुराई व कष्ट देनेमे उत्सुक होता है उसे अशुभ परिणाम कहते है। यह अधर्म है क्योंकि पापका कारण है।

जो मानव श्रीऋषभदेव, अजितनाथ, चंद्रप्रभु, शीतलनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ व महावीर सरीखे उत्कृष्ट क्षत्रियोंके समान आत्माको शुद्ध करना चाहते है वे केवल वीतराग भावके ही रसिक हो योगाभ्यासमे लीन हो साधुपनेके जीवनमें रह मुख्यतासे अपना नर जन्म सफल कर मोक्ष पुरुषार्थ साधते है। परतु जो इतनी कषायोंकी हीनता करनेमे असमर्थ है वे घरहीमें रह धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ साधते है। यद्यपि अर्थ याने लक्ष्मीका लाभ, काम याने न्यायपूर्वक इन्द्रियोंके भोग, शुभ परिणामसे किये हुए पुण्य कर्मको अपना अतरग कारण रखते है पर इनके लिये न्यायपूर्वक बाहरमे उद्यम या पुरुषार्थ किया जाता है तब ये सिद्ध होते है। जैसे दो पहियोंके बिना गाडी नहीं चलती ऐसे ही अंतरग और बहिरंग दोनों कारणोंके बिना अर्थ और काम नहीं होते। जो आलसी बाहरी उपायोंमें सुस्त होते है वे अंतर

कारण होनेपर भी न तो द्रव्य पैदा कर सक्के और न न्याय सहित भोग ही पा सक्के हैं।

इस जगतमें वे ही मानव अपने जीवनके सुयशकी सुगंधको चारो ओर फैला जाते है जो अपने जीवनकी घडियोंको–उनके पल व विपलोंको, आवली व समयोंको सम्हाल २ कर काममें लेते–अर्थात् जो अपने आत्माको परमात्म शक्तिका भडार निश्चय करते हुए उस शक्तिके खिलाने व उसीकी प्रफुल्लतामें परम सुख-अनुभवके श्रद्धानको रखते हुए गृही जीवनमें शरीरके इन्द्रिय सम्बन्धी विषयोंकी तुच्छ परवाह रखते हुए अर्थ व कामकी सिद्धि करते हुए **परके उपकारमे अपनी शक्तियोंका उपयोग करना अपना कर्तव्य समझते है** और रात्रि दिन सर्व जीवमात्रका कैसे हित हो इस चिन्तामे, इस उद्योगमें, इस धुनमे मस्त रहते हैं। ऐसे परोपकारियोंसे अधिक जीवोंका हित होता और उन जीवोंको अपनी उन्नतिका मार्ग सूझता है।

जो मानव इस पृथ्वीपर जन्म ले केवल अपनी इन्द्रियोंकी गुलामीमे ही अपने इस जीवनको बिता कर मृत्युकी शय्यामें सो जाते हैं वे यहा भी अपने जीवनसे बहुतोंकी हानि करते है और परलोकमें भी उनकी आत्माको योग्य पर्यायका लाभ नही होता। उनका जीवन पाशविक जीवनसे भी गया-बीता है।

मानवमें मानसिक, वाचनिक और कायिक ये तीन शक्तिया बडी बलवती है। जो इनको लोहेकी तरह बेकाम डाल रखते है उनकी शक्तियोंमें लोहेकी तरह जग लग जाता है और वे बेचारे

उनसे कुछ भी लाभ नहीं उठा सक्ते। करोडों मनुष्य इस संसारमें ऐसे हैं जिनकी शक्तिया शिक्षा, योग्य उदाहरण व योग्य सहारेके बिना यों ही पड़ी रहती हैं । जिनकी शक्तियोंको शिक्षादेवीकी उपासना नही मिलती है वे यों ही रह जाते हैं, कोरे पशुसम जीवन काटते है। भारतमे करोडों मनुष्य इसी रगके है। शिक्षा शक्तियोंको खिलाती हैं, उन्हें मजबूत करती है, उनसे उपयोग लेना बताती है। मानवको जब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धि करनी है तब उसको शिक्षा भी ऐसी ही मिलनी चाहिये जो चारों साधनोंमें सहायक हो । यदि वह शिक्षा इनमेंसे किसी एकको भी हानि करनेवाली होगी तो वह शक्तियोंको उन्मार्गमे उपयुक्त करनेकी तरफ प्रेरणा करेगी । और इसका फल प्राय· ऐसा भी हो जायगा कि वह शिक्षाके होनेपर शिक्षाविहीन रहनेकी अपेक्षा अपनी अधिक हानि कर बैठेगा । इस कारण इन ऊपर कहे हुए चारों वर्गोंको साधनेमे सहायक जो शिक्षा है वही सुशिक्षा है । यही सुशिक्षा मानवकी शक्तियोंको ऐसी चमत्कृत बनायेगी कि जिनसे वह जगतके उपकार करनेके सिवाय अपना भी उपकार कर लेवेगा । **केवल पुस्तकोंके पढ़ने वा रटनेको शिक्षा नही कहते**—जिस रीतिसे मनुष्यको अपनी मानसिक, वाचनिक और कायिक शक्तियोंको उपयोगी मार्गमें ले जाकर उनसे यथोचित स्वपर उपकारक कार्य लेनेकी योग्यता आजाय वही रीति सुशिक्षा है।

जगतमें तीन तरहके मनुष्य होते है—उत्तम, मध्यम और जघन्य ।

उत्तम मनुष्य वे ही है जो प्रत्येक कार्य्यको विचारपूर्वक

शुरू करते, उसके शीघ्र करनेके लिये अनेक साधनोंको मिलाते, कार्य्यमें उद्यम करते हुए जो अनेक आपत्ति, उपसर्ग और कष्ट आजाते उनको समभावसे सहते, ज्यों ज्यों कष्ट पडते त्यों त्यों और अधिक उस सकल्प किये हुए कार्य्यके साधनमे लीन होते और अततः उसे पूरा करके ही छोडते है। यदि कदाचित् आयु कर्म शीघ्र ही क्षय हो जावे और इस शरीरसे उनकी आत्माका वियोग हो जावे तो भी वे कुछ खेदित नही होते किन्तु अपने दृढ सकल्प और उद्योगके कारण अपने पीछे ऐसा दृष्टान्त छोड जाते है जिससे उसी कामके पूरा करनेमे कोई न कोई उद्योगी निकल आते है। और उनका उदाहरण सदाके लिये इस जगत्में अकित हो जाता है।

मध्यम मनुष्य वे है जो काम तो विचारसे ही शुरू करते है और उसके साधन भी मिलाते हैं, पर यदि कष्ट, परीषह और उपसर्ग आनकर खड़े हो जाते है तो कायर होकर उस कार्य्यको छोड बैठते है। यद्यपि इनमे कार्य्यको अतिम हद्द तक पहुंचानेका साहस नही होता तो भी उत्तम कार्य्योंके करनेमें उत्साह दिखलाते है व कुछ प्रयत्न भी करते रहते है इससे उनका उपयोग हितरूप भावोंमें ही वर्तन किया करता है।

जघन्य पुरुष वे है जो पहले तो किसी उपयोगी कामका विचार ही नही बाधते हैं और यदि किसीके कुछ विचार भी होता है तो उनको कायरता, डर व आलस्य इतना सताता है जिससे वे अपने विचारका कुछ भी उपयोग नहीं कर सके। ऐसे मनुष्य बुरे कामोंमे तो जल्दी तय्यार हो जाते हैं और उनको जिस तिस

तरह करते भी हैं मर उनमें भी इनकी शक्ति दृढरूप नही रहती। उन्मत्त पुरुषकी तरह एकको छोड दूसरेमें, दूसरेको छोड तीसरेमें घूमा करते हैं। ऐसे पुरुष प्राय इस जगतमें भाररूप है। उत्तम पुरुष अपने कार्योंकी सिद्धि इन नीचे लिखे गुणोंके ही कारणसे कर सक्ते है.—

(१) **समयकी उपयोगिता**—जो लोग अपने समयकी कद्र नही जानते है वे अपने जीवनके मूल्यको नही पहचानते हैं। समयोंसे ही यह जीवन बना है। रत्नोंसे अधिक मूल्य हरएक समयका है। एक सेकन्ड या पलमे बेगिनती समय बीत जाते हैं। अपने समयोंकी कदर करना ही जीवनको उपयोगी बनानेका एक मुख्य साधन है।

(२) **नियमित कामकी विभाग शक्ति**—मनुष्यमें शरीरके बलको व स्वास्थ्यको रक्षा करते हुए अपने कामोंको पूरा कर डालनेका अवसर उसी समय आता है जब वे भगवद्भक्ति, शरीर क्रिया, भोजन, शयन आदि नित्यके कामोंको नियमके अनुसार प्रतिदिन करते है। जो विना किसी नियमके चाहे-जब खाते, सोते, काम करते है उनके बहुतसे काम रह जाते है तथा कोई भी काम निराकुलतासे नहीं होता तथा प्राय अनियमित काम करनेवालोंका शरीर अस्वस्थ रहता है। जो सूर्योदयसे पहले उठकर काममें लगते और रात्रिको ही धीरताके साथ छह सात आठ घंटे आराम करते हैं वे प्राय नियमसे अपना काम कर सक्ते हैं।

(३) **दीर्घदर्शिता**—मानवके कामोंकी सफलताके लिये उसमें दीर्घदर्शिताकी बहुत बडी जरूरत है ताकि वह अपने उस

कार्य्यके फलको पहलेसे ही विचार ले और गभीरतासे सोच ले। जो गभीर विचार नहीं कर सक्ते वे प्राय. अपने कार्यमें विफल हो जाते है।

(४) **इन्द्रिय-पराजय**--पांचों इन्द्रियोंकी चाहनायें मनुष्यको जब अपना दास बना लेती है तब वह उपयोगी कामोंसे हठ करके उनकी पूर्ति करनेमे लग जाता है जिससे उसका जीवन इन्द्रियोंके दासत्वमे पडकर बेकार हो जाता है। जो उपयोगी काम करना चाहते है वे हमेश अपनी इन्द्रियोंपर काबू रखते है। वे सही-सलामत रहें ऐसी भावनासे उन्हें भोजन पानादि देते है और उनमे खूब काम लेने है। मुहका चटोरापन, मेले तमाशेकी दौड-धूम, नाच-रगकी चटक-मटक, अतर-फुलेलकी महक आदिसे उनका दिल गन्दा नही होता है।

(५) **सहनशीलता**--जगतमे रहते हुए और किसी भी कामकी सिद्धि करते हुए अपने सिवाय और बहुतसे लोगोंसे काम पडता है। उनके साथ व्यवहारमें कभी २ कठोर शब्द व अनुचित वर्तावका भी सामना हो जाता है। उस वक्त अपने भावोंको सम्हालने और क्रोध न करनेकी बहुत बडी जरूरत है। जिनमे किसी बातको सहनेकी शक्ति नहीं होती वे हेल-मेलसे नही रह सक्ते और न दूसरोंसे कोई लाभ ले सक्ते हैं। सहनशीलताके गुणसे आदमी जगत् भरको अपने वशमें कर सक्ता है। यह भी कार्यसिद्धिका एक अमूल्य गुण है।

(६) **धैर्य्य**—यह गुण भी बहुत जरूरी है। धैर्य्यके बिना कोई काम पार नहीं उतर सक्ता। किसी कामकी सिद्धिका यत्न करते हुए बहुतसे विघ्न व सकट व चिन्तायें उपस्थित होती हैं उस

समय धैर्य्य ही एक ऐसा गुण है जो वारवार कोशिश किये जानेकी उत्तेजना देता है। और जो इस गुणको अपने गलेका हार बनाते और कभी आकुलित नहीं होते वे अपने काममें अवश्य सफल होते है।

(७) **नम्रता**--नम्रताकी भी मानवको बहुत बडी जरूरत है। जो मानव अपने पास धन, बल, तप, विद्या आदि बलोंको बढते हुए देख करके भी अहकार नही करते किन्तु सदा नम्र रहते है, वे ही बडे पुरुष है। वे बिना कारण जगतको अपना बन्धु बना लेते है। वास्तवमे नम्रताकी छायाके नीचे सब कोई आना चाहते हैं। उसकी सुगंधको सर्व कोई सूघते है। जो किसी भी बातमें बलवान् होकर मान नही करते हुए नम्र रहते है वे ही दूसरोंसे गुण ले सक्के व दे सक्के है, स्वयं उपकार पा सक्के व छोटेसे छोटेका भी उपकार कर सक्के है।

(८) **सत्यता**-सत्य बोलना और सत्य व्यवहार मानवकी शोभा व उन्नतिका भडार है। जो मनमें सोचकर कहते और उसी तरह वर्तन करते है वे ही सत्यवादी है। जो असत्यको सर्व पापोंका सरदार समझते और उससे डरते है, जो वादा करते है उसको पूरा करते है, जो श्रीदशरथ व श्रीरामचद्रकी भाति दृढ प्रतिज्ञाको निवाहनेवाले है वेही कुउ काम कर जाते हैं। मनुष्यकी वाणी सचके विना महा अनर्थकी करनेवाली होती है। सत्यतासे किसीको दु ख नहीं होता। केवल सत्यतासे ही मनुष्य लौकिक व पारमार्थिक सर्व तरहकी उन्नति कर सक्ते है।

(९) **ब्रह्मचर्य**–मानवकी शक्तिको दृढ और मनको पवित्र रखनेके लिये मानव जातिके लिये यह एक अति आवश्यक गुण है। जो विवाहित नही है वे अपने वीर्य्यकी रक्षा पूर्णपने करके श्री महावीरस्वामीके समान परम वीर बननेका यत्न करते है। पर जो विवाहित है वे केवल सतानकी इच्छासे गृहससारमे वर्तते है तो भी इच्छाको आधीन रखते है। जो इस गुणकी कदर नहीं करते वे वीर्य्यको वरवादकर निकम्मे हो जाते है और पवित्रता उनके मनसे विदा हो जाती है। जिससे उत्तम विचार व उत्तम कार्य्य नही होने पाते। उत्तम मनुष्य इन ऊपर लिखित नौ या अधिक गुणोंकी बदौलत ही इस नरभवकी घडियोंको ऐसे २ कामोमे लगाते है जिससे वे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धिमें कुछ उन्नति पा जाते है और जगतका उपकार कर जाते है।

आज हम अपने पाठकोंको एक उत्तम मनुष्यके जीवनका परिचय कराना चाहते हैं जिसमे ये ऊपर लिखित गुण कूट कूट कर भरे हुए थे व जिसने अपने पौरुषके बलसे गृहस्थ धर्मकी जो उन्नति की व अपनी उन्नतिसे जो दूसरोंका हित किया वह वचनसे अगोचर है। जिनका उस मानवसे रात्रि दिनका सम्बन्ध रहा है वे अच्छी तरह जानते है कि उस मानवमें कैसी २ खूबीके गुण थे। आज वह मानव इस मानव पर्य्यायमेंसे चला गया है–उसकी आत्मा इस शरीरसे विदा होकर अन्य किसी देहमे चली गई है। यद्यपि अब उसके मन वचन कायके चरित्र दृष्टिमे नहीं आते तो भी उस मानवने अपने जीवनमें जो कुछ किया है वह कृत्य उसके सर्व जैसेके तैसे मौजूद हैं–वे मरे नही है।

हमारा (लेखक) उस उत्तम मानवसे बहुत वर्षोंतक सम्बन्ध रहा है—हमने उसके सद् विचारों और भावनाओंको रात्रिदिन अनुभव किया है अतएव यह हमारा फर्ज आन पडा है कि हम उनका एक दिग्दर्शनमात्र वर्णन जगनके मानवोंके हितार्थ करें जिससे अनेक मानव उस उत्तम मानवका दृष्टान्त ले अपने जीवनको उपयोगी बनावें।

यद्यपि वे गृहस्थ थे, त्यागी नहीं थे, तो भी **हृदयके त्यागी** थे वैरागी थे और बडे पुरुष थे और इसीलिये उनके जीवनका वर्णन हमारे द्वारा हो जाना हमें भी उनके उत्तम मानवीय गुणोंमें प्रेरित करनेवाला है। अतण्व **उस उत्तम मानवके उपदेशद्वारा इस समय** परोपकारतामे रात्रिदिन लवलीन **सेठ मूलचंद्र किसनदास कापड़िया** सम्पादक—"दिगम्बर जैन," सूरतकी प्रेरणाके अनुसार **दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद्र हीराचंद्र जे० पी०** सभापति—"भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा"का कुछ चरित्र आगे लिखा जाता है।



अध्याय दूसरा ।

गुजरात देशके सूरत शहरका दिग्दर्शन ।

गुजरातका महत्त्व। वास्तवमें वह देश अवश्य सौभाग्यशाली होता है जहा महान् व उत्तम पुरुष जन्म लेते हैं। उत्तम पुरुषोंका शरीर जिस प्रदेशके अन्न, जल व वायुसे वृद्धि पाता है, छोटेसे बडा होता है, वह प्रदेश वास्तवमे पुण्यशाली है। किसी स्थानको भाग्यवान् कहनेसे उन मानवोंके भाग्यवान् होनेका ही उपचार होता है। गुजरात देश ऐसा ही एक देश है जहा जैनधर्मकी मान्यताके अनुसार **श्रीरामचन्द्र**-जीके सुपुत्र **लव** और **अंकुशने** मुनि हो विहार किया, धर्मोपदेश दे अनेकोंको स्वसवेदन ज्ञानसे उत्पन्न आत्मानदका पान कराया और अतमें प्रसिद्ध चापानेर नगरके निकटस्थ **पावागढ़** पर्वतके शिखरपर ध्यान धर कर्म इधनको जला और केवलज्ञान ज्योतिको प्रगट कर अर्हत हो अनेकोंको शुद्ध धर्म मार्गपर चला तथा शेप कर्मोसे आत्माको छुडा पवित्र हो परमात्मपदका लाभ किया।

श्रीगिरनार, शत्रुजय, तारंगा, इन सिद्धक्षेत्रमय पर्वतोंसे शीघ्र गतिको प्राप्त होनेवाले श्रीनेमिनाथ, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, आदि अनेकों अगणित महात्माओंने इस गुर्जर देशको अपने विहारसे पवित्र कर इन पर्वतोंके शिखरोंसे मुक्तधामका परम अभिराम आनन्दका आस्वाद किया। मौर्य्य चन्द्रगुप्तको सन् ई०के

२२० वर्ष पूर्वके अनुमान परम निर्ग्रन्थ दिगम्बरी दीक्षा देनेवाले श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवली १२००० साधुसंघ और मुनि प्रभाचद्र (चंद्रगुप्तका द्वितीय नाम)को साथ लिये हुए मगध देशसे दक्षिणको जाते हुए इसी गुजरात देशमें होकर श्रीगिरनार पर्वत तक गये थे और वहा अपनी आयु निकट जान अपने आचार्य्य पदका तिलक श्री**विशाखाचार्य**को प्रदान किया था और फिर वहासे मैसूरके श्रवणबेलगोला स्थानमें पहुच कटवप्र पर्वतपर समाधि मरण ले स्वर्गधाम प्राप्त किया।

श्रीधरसेनाचार्यने प्रथम शताब्दीके अनुमान जिन पुष्पदत और भूतबलि अतितीव्र बुद्धि मुनियोंको श्रीगिरनार पर्वतपर जैन सिद्धान्त पढाया था। उन्होंने गिरनारसे ९ दिन चलकर कुरीश्वर ग्राममे आकर चतुर्मास किया था और श्रुतस्कंधकी महिमा विस्तारी थी। और फिर दक्षिण देशको विहार किया था। (श्रुतस्कध)

यह कुरीश्वर गुजरात देशमें होना चाहिये। सभव है इसीका नाम बिगडकर अकलेश्वर हो गया हो। यह बडौदेके और सूरतके मध्यमें अब भी प्राचीन जिन बिम्बोंको शोभायमान किये हुए विराजित है।

श्रीजिनसेनाचार्य्यने अपने गुरु श्रीवीरसेनाचार्य्यकी करी हुई श्रीजयधवलकी टीकाको ६०००० श्लोकोंमे गुर्जर देश प्रतिपालक श्री**अमोघवर्षके** राज्यमे बाटग्रामके भीतर शक सवत् ७५९ फाल्गुण सुदी १० को प्रात काल श्रीअष्टाह्निका महोत्सवके समय पूर्ण किया था। (जयधवल प्रशस्ति)

यह गुजरात देश श्रीशुभचंद्र, सकलकीर्ति, ज्ञानभूषण आदि

बडे २ विद्वानोंसे सुशोभित रह चुका है जिन्होंने अनेक शास्त्रोंकी टीका व रचना की है।

इस धर्म-जन भरपूर गुजरात देशमे ताप्ती नदी बडे वेगसे सतपुरा पर्वतकी इमरडी पहाडीकी तलहटीसे निकलकर खानदेश-में बहती हुई अनुमान ५०० मीलकी लंबाईको लिये हुए **रांदेर** और **सूरत** दो बडे प्रसिद्ध नगरोंके मध्यमें आध मीलके अनुमान पाटके साथ खमातकी ओर चली जाती है।

नर्मगद्य गुजराती गद्यात्मक ग्रथके कर्ता कवि नर्मदाशकर लाभशंकर लिखते हे कि श्रीमहावीर सवत् २७१ व सन् ईसवीके २५५ वर्ष पूर्व इस ताप्ती नदीके उस ओर **रादेर** नामका एक बडा प्रसिद्ध नगर था। जिसपर मपत्ति नामका जैनी राजा राज्य करता था* वह रादेर शहर अब भी मौजूद है पर अब वह एक छोटासा कसबा है। वर्तमानमे ताप्तीके इस ओर रादेरके ठीक सामने अतिविख्यात और ऐतिहासिक सूरत नगर मौजूद हे। यद्यपि नर्मगद्यके कर्ताने यह खुलासा नहीं किया कि जब एक ओर ताप्तीके आजसे २२०० वर्ष पहले एक बडा राज्यनगर था तब उसीके ठीक सामने जहा आज सूरत पाया जाता है वहा उस समय किसी वस्तीकी सूरत थी कि नहीं?

विचारनेसे यह अवश्य निश्चित होता है कि ताप्तीके इस पार भी कुछ वस्ती अवश्य वसती होगी। सभव है कि उस समय इसका नाम सूरत न हो।

* इस कथनको नर्मगद्यके अनुसार ही यहा उल्लेख किया जाता है।

बहुतसे जन इस नगरको सुर्यपुरके नामसे पुकारते हैं तथा नर्मगद्य

सूरत नगर कैसे बसा?

कर्ताने भी लिखा है कि सूरतसे ८ गांव दूर कामलेज ग्रामके निवासी एक राजाके बडे २ प्रसिद्ध कुए थे। उनमें एक सूरजवाडी नामका कुआ था। उसी वाडीके नामसे यह सुरजपुर या सुर्जपुर कहलाता था जो फिर बिगडके सुरत हो गया। ५वीं गुजराती साहित्य परिषद् सन् १९१५की बैठककी स्वागत कारिणी कमिटीके प्रमुख रा० मधुवचराम वलवन्तरामने अपने व्याख्यानमें यहातक अनुमान लगाकर प्रगट किया है कि सन् ईसवीके वीसहजार २०००० वर्ष पहले भी यह स्थान आबाद था। आपने अमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर डेंटनकृत "The Soul of things" नामकी पुस्तकके आधारसे लिखा है कि यूनानका विद्वान् **प्लैटो** अपने किसी पूर्व जन्ममें इसी (सूरत) स्थानके किसी बडे मदिरका मुख्य अधिकारी या भक्त था। रासमालाके प्रथम भागके आधारसे आप लिखते है कि यह स्थान तब सूर्यपुर कहलाता था जिस समय सन ९००मे अनहिडवालकी सेना भरुच और सूर्यपुरके आगेसे होकर निकली थी। सन् १९०८के इम्पीरियल गैजेटियरसे मालूम हुआ कि सन् १५०मे होनेवाले यूनानके विद्वान् प्लोटोने पुलिपदा नामके व्यापारिक स्थानका वर्णन किया है जिसका नाम शायद फुलपाद होना चाहिये और यह स्थान इसी सूरत नगरका एक पवित्र भाग है।

जो कुछ हो, इसमें सन्देह नहीं कि सुरत और रादेर दोनों ही अतिप्राचीन नगर तासीके इधर उधर एक शोभनीक स्त्रीके कार्णोमें पड़े हुए सुर्य और चद्रकी कातिवत् चमकते हुए मनोहर कुंडलोंकी भाति दीर्घ कालसे शोभा पा रहे थे।





ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी संपादक

सन् १९०८का गैजेटियर बताता है कि रादेरकी जमा मसजिद, मिया खखा व मुन्शीकी मसजिदें, जैन मंदिरोंको तोडकर बनाई गई हैं। नर्मगद्यके कर्त्ताने सूरत नगरके नाम होनेके विषयमे कुछ और भी दंतकथायें लिखी है। उनका भी साराश पाठकोंके ज्ञान हेतु कह देना अनुचित न होगा।

ताप्ती नदीके तटपर सूरत नगरकी ओर बहुतसे जहाज ठहरा करते थे। जहाजका काम करनेवाले माछी लोग वहापर रहते थे। इससे उस तटके बहुतसे प्रदेशका नाम **माछीवाड़ा** प्रसिद्ध था। उसी महल्लेमें कुछ नागर ब्राह्मण भी रहते थे। उनमे एक जमीदारकी विधवा स्त्री अपने पुत्र **गोपी**के साथ रहा करती थी। उसकी स्थिति बहुत गरीब हो गई थी। रादेरके एक मुसलमान नवायताके यहा नृत्यकला करनेवाली एक सुरज नामकी कचनी इस माछीवाडेमे आकर ठहरी। इसके पास धन भी बहुत था। उस समय गोपीकी गरीब मा उस कचनीका यथायोग्य काम करके उसकी अधिक स्नेहपात्रा हो गई तथा उसके बालक गोपीको वह सुरज बहुत प्यार करने लगी।

जब वह नृत्यकारिणी उस मुसलमान नवायताके साथ हज करनेके लिये करीब १५०० सन् ई० के जहाजपर बैठ मक्का जाने लगी तब उसने गोपीकी माको, विश्वासपात्रा जान अपना लाखोंका जवाहरात उसको अमानत सौंप दिया। इसमें सन्देह नहीं कि ईमानदारी, सचाई और सरलता ऐसे गुण हैं जो सबको वश कर सक्ते हैं। जब वह सूरज कंचनी लौट कर आई, गोपीकी माने विना किसी कपटके जो कुछ जवाहरात उसने सौंपा था उस

सबको वैसाका वैसा ही उस कचनीके सामने लाके धर दिया। सुरज इसकी सरलता व सत्यताको देख अचभेमें आ गई। और इतनी प्रसन्न हुई कि वह सब माल उसको दे दिया और दिनपर दिन इससे व उसके पुत्र गोपीसे उनकी सच्ची खिदमतके कारण बहुत ही राजी रहने लगी। सुरजकी उमर छोटी नही थी। आयु कर्म शेष होनेसे जब वह मरने लगी तब अपनी सब जायदाद गोपी-की मा और गोपीको दे दी और कहा—तुम इसका अच्छा व्यवहार करना और मेरा नाम मशहूर करना। मैं तो जाती हू, पर मेरा नाम रहना चाहिये। वास्तवमें जिसके दिलमे सम्यक्त्व नहीं होता, जो आत्माको अजर अमर अविनाशी आनन्दरूप नहीं अनुभव करता, उसके दिलको सन्तोष केवल कषायोको पोषनेसे ही होता है। सारी दौलतका वियोग होते हुए उस सुरजके दिलमे मान कषायने जोर किया और इसीसे पीछे मेरा नाम रहे इस स्वार्थने कठगतप्राण होनेपर भी उस कचनीकी आत्माको नही छोडा। खैर, गोपी और उसकी माने बहुतसे मकानात बनवाये तथा गोपीपुरा बसाया और गुजरातके बादशाह शाह मुहम्मद बेगडाके पुत्र खलीलखा अलकाब मुजफ्फरशाहसे मिलकर नायबका खिताब हासिल किया। गोपी बडा उद्योगी था। इसके प्रयत्नसे यहा व्यापार और भी बढने लगा। सन् १५१६मे इसने एक तालाब बनवाया जो अब **खेतर-वाड़ी** (खेतरपाल) के पास गोपीतालावके नामसे मौजूद है।

इस वक्त यूरुपसे पुर्तगाल लोग, जिनको यहां फिरगी कहते थे, आने लगे थे। सन् १४९८में वास्कोडिगामा पहिले पहिल भारतमें आया। इस समय इस ताप्ती नदीके तटपर उनके जहाजपर जहाज

आने लगे। ये लोग हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके जहाजोंसे माल लूटने लगे व शहरमें भी घूमकर प्रजाको कष्ट देने लगे। प्रजाकी पुकार सुन गुजरातके बादशाह मुजफ्फरशाहने सन् १५१५में यहा किला बधवाया और इनकी रोक व जाचका प्रबन्ध किया। दिनपर दिन गोपीपुराके आसपास रौनक बढते देख गोपीने उस सूरज कचनीके मरते समयके वचनको याद किया और उसका नाम कायम रखनेके लिये यही विचार किया कि इस वस्तीका नाम उसीके नामसे प्रसिद्ध हो।

बादशाह मुजफ्फरशाहसे गोपीने सब हाल कहा और सूरज नाम रखनेके लिये निवेदन किया। बादशाहने सिर्फ इस खयालसे कि वेश्याके नामसे नगरका नाम प्रसिद्ध करना ठीक न होगा, यह स्वीकार किया कि आखरी अक्षर जको बदलकर त कर दिया जाय। गोपीने स्वीकार किया और सन् १५२१ में इसका नाम **सूरत** प्रसिद्ध कर दिया। ज्यों २ व्यापार चमकता गया गुजरातके बादशाहका अमल बढता गया। इस समय सूरत नगर एक बडा व्यापारी बन्दर था। सन् १५१४ मे पुर्तगाला यात्री बार्बमा आया था। उसने लिखा है, सूरत बडा ही कीमती बन्दर था जहा मलाबार आदिसे जहाज आते थे। (Barbase describes Surat as a very important seaport frequented by many ships from malabar and all other ports vide Imp G 1908)। सन् १५४६ में अहमदाबादके बादशाहने एक किला बनवाया।

सन् १५६१ में जब तीसरे मुजफ्फरशाह गुजरातकी गद्दीपर बैठे तब सूरत मिरजाके हाथमें था। यह बादशाह अकबरसे विरुद्ध हो गया, तब देहलीका बादशाह अकबर स्वयं बडी भारी फौज

लेकर आया और ता० १९ जनवरी सन् १५७३ मे सुरतके गोपी-पुरामें अपना अड्डा जमा और ६ मार्च १५७३ के दिन किलेपर अपना झडा गाडा और खलीजखाको अपना कारबारी नियतकर देहली चला गया। देहली पहुचकर राजा टोडरमलको बदोबस्तके लिये भेजा। उक्त राजाने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। कोई किसीकी जमीन न दबावे, कोई कम बढ तौलकर दे ले नही, बाजारका भाव ठीक रहे, ऐसे कई उपयोगी महकमे नियत किये। इस वक्त सूरतमे व्यापार खूब बढ रहा था। जो रादेरमें था वह सुरतमें चमक उठा था। यूरुपसे भी व्यापारी बहुत आने लगे थे। "अकबर, शाहजहा व जहागीर बादशाहके वक्तमें यह Mercantile city of India भारतका व्यापारी नगर कहलाता था। अकबरकी माल्गुजारीमे इसको First class port पहले नबरका बदर लिखा है (Imp G 1908)

अंग्रेजोका आगमन। जिस वक्त बादशाह जहागीर देहलीमे राज्य कर रहे, वे उसी वक्त इङ्गलेडमे पहले जेम्स (James the I) का राज्य था और भारतसे व्यापार करनेके लिये ईस्ट इडिया कम्पनी बन चुकी थी। कप्तान हेकटर विलियम होकिन्स एक व्यापारी जहाजको लेकर इस कम्पनीकी तरफसे हिन्दुस्तानमे आये और ता० २० अगस्त १६०८ को पहिले पहिल सुरतमे आ लगर डाला। और बादशाह जेम्सका पत्र ले अंग्रेज लोग देहली दर्बारमे पहुचे। परतु उस समय फिरगियों अर्थात् पूर्तगालोंका अधिक जोर था। वे दूसरे किसी-के भी जहाजको लूट लेते थे। वे अंग्रेजोंको नहीं चाहते थे। इन

ईस्टइंडिया कम्पनीकी कोठीमें ८७ लाखका माल था। कोठीपर सर जार्ज ओक्सेन्डनने वडी चतुराईसे काम किया। अपना माल बचानेके सिवाय साहूकारोंकी भी रक्षा की तो भी शिवाजी ३० करोडका माल लूट ले गये। साहूकारोंने अंग्रेजोंकी तारीफ बादशाह देहलीको लिख भेजी। इससे प्रसन्न हो बादशाहने ३॥ रु०के बदले सिर्फ १) सैकडा जकात कर दी। १६७०मे फिर शिवाजीने ३ दिन सूरत लूटा। इस वक्तसे मि० कुक ऐसे अंग्रेजोंने भी लूट-पाट शुरू कर दी। १६८० मे एक मक्के जाते हुए जहाजको लूटनेसे बादशाहने जकात फिर ३॥) रु० कर दी। इधर कम्पनीने टकसालमें रुपया बनानेका हुकुम बादशाहसे ले लिया। इस वक्त फ्रेंच लोग भी सूरतमे खूब व्यापार कर रहेथे।

अंग्रेजोंकी सत्ताका जमना।

१६८७मे कम्पनीकी सत्ता बम्बईमे होजानेसे व्यापरका जमाव सूरतसे उठ कर बम्बई होने लगा। इस वक्त एक अंग्रेज सर जान चाइल्डेने कम्पनीके नामसे सूरतमे खूब व्यापार किया। पर किसीको कुछ न दिया। बादशाहके हुकमसे हैरिस और ग्लैडस्टोन कैद किये गये। पर यह चाइल्डे भागकर बम्बई गया। ४० जहाज मुगलोंके और पकड़े तब लोगोंका विश्वास जाता रहा। बादशाहने अंग्रेज व फ्रेंच आदि परदेशियोंको बहुत धमकाया, पर फल कुछ न हुआ। उधर देहलीमे भी मुगल सल्तनत मौज व शौकमें पडने लगी। इधर सूरतमें भी सत्ता ढीली पड गई।

सन् १७३४ में मराठोंने कुछ गाव दाव लिये तथा पेशवा

और गायकवाड़ने दबाव डालकर अपना कर सूरतपर लगा दिया। १७३४से १७५९ तक बडी भारी गडबड रही। परस्पर फूटकी आग भभक उठी। इस गडबडमे अंग्रेजोंने अपना दाव जमा लिया। सूरतके नवाब मिया अचनने मराठोंसे परेशान हो अंग्रेजोंसे संधि की कि अंग्रेज लोग किलेदार रहें, सेनाकी अफसरी करें तथा नवाब दो लाख रुपया प्रतिवर्ष देवे। इस वक्त किलेपर अंग्रेजोंका झंडा गड गया तथा नाममात्र मुगलोंका भी गडा रहा। इस सूरतपर अंग्रेजोंके आधीन नवाब अच्चनके वंशवाले राज्य करने रहे। नवाब अचन उर्फ मुईनुद्दीनने १७६३ तक राज्य किया। फिर नवाब हफीजुद्दिन १७६३ से १७९० तक राज्य करते रहे। १७९०मे निजामुद्दीन नवाब हुए। ये १७९९ तक रहे। इनके समयमे सूरतपर बड़ी विपत्तियें आई। ये नवाब भी जुलमी थे। १७९१मे इतना भारी दुर्भिक्ष पडा था जिससे १ रुपयेमे ८ सेर अनाज मिलता था। यद्यपि इस समय यह भाव प्राय रहा करता है तो भी उस समय अनाजका भाव बहुत मन्दा रहा करता था। इस अपेक्षा वह भाव दुर्भिक्ष रूपमे ही था। तथा १७९७ में ताप्ती नदीकी बाढ आई जिससे भी सूरतकी बरबादी हुई। बहुतसे व्यापारी इधर उधर चल दिये। सन् १७९९में नसीरुद्दीन गद्दीपर बैठे। उस वक्त नवाबसे अंग्रेजोंने ३॥) लाख रुपया मागा। नवाब दे नही सका तब बम्बईके गवर्नर डंकनके हुकमसे सूरतकी सीनेटने **सूरतपर अपना पूरा कबजा ता० १९ मई सन् १८०० को जमा लिया** और नवाबकी सिर्फ १ लाख रुपया पेन्शन कर दी।

यह नियम है कि जब देशका शासक इन्द्रियोंके विषयोंमें लीन

होकर प्रजाके हितकी चिन्ताको छोड देता है और इतना ही नहीं प्रजापर जुल्म करके उससे अपना स्वार्थ साधना चाहता है तब अवश्य उसका पुण्य क्षीण होता है। और राज्यशासनका प्रतापी छत्र उसके हाथसे जाता रहता है। अकबर बादशाहसे ले औरंगजेबके राज्यके पहिले तक मुगल बादशाहोंने प्रजाके हितका खयाल किया तब नीचेके नवाबोंने भी अपने प्रबन्धमें ढील नही की। पर जब मुगल बादशाह ऐशो–आराममें लीन हुए, तब इधर उधरके नवाब भी प्रजाशासनमे सुस्त पड गये। इसीका यह फल हुआ कि सूरतसे नवाबोंकी सत्ता १८००मे बिलकुल उठ गई। पेन्शनवालोमे नसीरुद्दीन सन् १८२१ तक और अफजुलुद्दीन सन् १८२४ तक कायम रहे।

सूरतपर अंग्रेजी कम्पनीका राज्य हो जानेसे मराठाओंसे सुलह हो गई। काम बदस्तूर चलने लगा। पर इस समय विलायतमे कलोंकेद्वारा कपडा बुने जानेसे यहा कपडा बुननेका काम कमती होने लगा। बहुतसे लोग बम्बई जाकर रहने लगे।

जो उन्नति मुगलोंके समयथी वह सब अवनतिमें परिणत हो गई। वास्तवमे किसी भी वस्तुकी थिरता इस असार ससारमे नही है। सब वस्तुयें अपनी दशाओंको पलटनेकी अपेक्षासे क्षणभगुर हैं। कम्पनीके राज्यमे मुख्य २ बातें इस तरहपर हुई कि—

सूरतकी अवनति।

सन् १८०४ मे फिर एक बडा भारी दुर्भिक्ष पडा जो कि सांठोकालके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सन् १८१८ मे सबसे पहले सूरतमें बसनेवाले युरुपियन पोर्चुगीज फिरगी लोग बिलकुल यहांसे चल दिये। सन् १८३२ मे

मनुष्य डूबे व खराबी हुई। सन् १८२४ मे एक अंग्रेजी पुस्तकालय विलंदाके बंदरमें खोला गया जो इस वक्त ऐंड्रुस लाइब्रेरीके साथ मिला दिया गया है। सन् १८३७ ता० २४ अप्रैलको (सम्वत १८९३ चैत्र वदी ४) ४ बजे पिछले पहर माछलीपीठमें एक पारसीके यहा आग लगी। यह आग दो दिन तक जली। इसने सूरत शहरका नाश कर दिया। कहते है इस अग्निसे ६००० मकान जले, ९०० मनुष्य व अनेक पशु मरे, ७० हजार लोग मुफलिस हो गये।

सन् १८४२मे सबसे पहिले अंग्रेजी स्कूल स्थापित हुआ। सन् १८४३मे निमकपर महसूल नियत किया गया। प्रजाने कबूल न किया, हुल्लड हुआ, तब सरकारने कुछ महसूल कम कर दिया। १ मई सन् १८९६को अमरोलीमे रेलवे बननेका काम चला। तथा १ नवम्बर १८६४ के दिन सूरतसे बम्बई तक रेलगाडी चलने लगी। यह सूरत १८वी सदी अर्थात् सन् १७९७में बहुत आबाद था। ८ लाख मनुष्योंकी वस्ती थी। परतु सन् १८९१ मे घटकर ५ लाख रह गई। अवनति होते २ सन् १९०१मे सूरत नगरमें केवल १ लाखकी वस्ती रह गई, अर्थात ८५९७७ हिन्दू, २२८२१ मुसलमान और ४६७१ जैन। कुल सूरत जिल्लेकी वस्ती, जिसमें ८ नगर व ७७० गाम है, सन् १९०१में ६३७०१७ थी। इनमें २ सैकडा जैनकी वस्ती थी।

सूरत व रांदेरमें जैनियोका वर्णन।

जैसा ऊपर कहा गया है कि जब रादेरमें सपत्ति राजा जैनी थे व जहा बड़े २ मदिर थे कि जिनको तोडकर मसजिदें बनवाई

गई है तब वहा या कुल सूरत जिलेमें जैनियोंका कितना बल होगा, सो पाठकगण स्वय ही विचार कर सक्ते है ।

रांदेरमें जैनियोंका महत्त्व

खेद है कि जैनियोंके प्राचीन इतिहासका कुछ पता नहीं चलता है । वर्तमानमे रादेर कसबेमे अब भी जो हाल मिलता है इससे वहाके पूर्वज जैनियोंका महत्त्व भली भाति प्रगट होता है । इस समय वहा श्वेताम्बर जैनियोंकी सख्या ९०० व उनके ६ मदिर हैं, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले २००० की सख्या थी। दिगम्बरियोंकी वस्तीमें अब वहा केवल २ घर है जो दसा हूमड जातिके है। उनके नाम चुन्नीलाल लालचद और दीपचद हीराचद है, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले वहा दिगम्बर जैनियोंकी बहुत वस्ती थी। उनके रहनेके तीन महल्ले अबतक प्रसिद्ध है--निशाल फलिया, सोनी फलिया और हूमड फलिया। इसीमे अब दो घर हैं। दिगम्बरी जैन मंदिरोंमे अब केवल एक मंदिर अवशेष है जो बहुत पुराना बना मालूम होता है तथा इसमें बहुतसी प्रतिमायें है जो दूसरे मदिरोंके टूटनेपर लाई गई हों, ऐसा भी संभव है । इस मदिरके नीचे एक भौरा है अर्थात् गभारा व तहखाना है। इसमे भी प्रतिमायें सुशोभित है । वहा एक धातुकी प्रतिमाका लेख इस भाति है:–

" स० १३८७ माघ सुदी ५ रवि० श्रेष्ठि भीमा भार्या रूपलता तयो सुत वालखान श्रीरत्नत्रय विम्ब राउल श्रीअभयनदि-शिष्य आचार्य मावनदी उपदेशेन श्रीमूलसघे प्रतिष्ठित "

तथा एक शातिनाथस्वामीकी मूर्तिपर सं० १६४८ है।

ऊपरकी वेदीमे जो प्रतिविम्ब है उनमे सवत १५१८, १५१९, १५३७, १६४८, १६६९ व १६८३ है। जिनपर प्राय ऐसे लेख है कि—

विद्यानदि, मल्लिभूषण, लक्ष्मीचद्र वीरचद्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचद्र वादिचद्र, या महीचद्रना उपदेशथी हुमड ज्ञाति आदि....

एक बिम्बपर है—

"१५३७ वैसाख सुदी १२ देवेन्द्रकीर्त्ति- पदे विद्यानदि हूमड़ज्ञातीय श्रेष्ठी चापा .. ...

तथा एकपर है—

"१५१८ माघ सु ५ बुधवार देवेन्द्रकीर्त्ति शिष्य विद्यानदि उपदेशथी हूमड़वसे समघर भार्या जीवी ना पुत्री नव करण सिंह .. . ."

यहा एक प्राचीन पोथी यानें गुटका है जिसमें 'महीचद्र, प्रभाचद्र, महीचद्रके शिष्य ब्रह्मचारी जयसागर' वर्णित है।

इन लेखोंसे प्रगट है कि हूमड ज्ञातिके दिगम्बरी रादेरमे बहुत माननीय व धनाढ्य हुए है। यहा तक कि अभी तक यह प्रसिद्ध है कि जहागीर बादशाहके समयमे एक धनाढ्य दिगम्बर जैनीकी बुगल रादेर नगरमे बजा करती थी। तथा ऊपरके लेखोंसे यह भी पता चलता है कि सम्वत १३८७मे आचार्य्य माघनदि हुए। माघनदि शब्दके पूर्व भट्टारक शब्द न होनेसे ये निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि प्रतीत होते है। सवत १५१८ से भट्टारकोंके नाम हे जिनमे विद्यानन्दि प्रथम है। **सूरत** नगरके **कतारगांवमे विद्यानंदि** नामका एक जैनियोंका माननीय स्थान है जहापर भट्टारकोंकी बहुतसी समाधियें है। बहुत सभव है कि भट्टारक विद्यानदिकी पहिली समाधि

यहा बननेसे यह स्थान विद्यानंदिके नामसे प्रसिद्ध हुआ हो। कहते है कि यहा मूलवेदीको **रायकवाल** जातिके शिवामोरारने बनवाई थी । यह जाति भी इस ओर बहुत प्रसिद्ध हो गई हैं। इस जातिके घर सूरतके सलावतपुरा, खरादीसेरी व वम्बईपुरा मुहल्लोंमे १०० वर्ष पहिले ४० थे तथा सूरतसे १९ मील बारडोलींमे २०० वर्ष पहिले ५० घर थे । अब सूरतमे इसका नाम व निशान भी नही है परतु अब भी इस जातिके ९ घर व्यारामें मुखिया सेठ शिवलाल झवेरचंद तथा ८ घर महुआमे मुखिया सेठ इच्छाराम झवेरचद तथा कुछ घर वाच आदिमे भी है। जिस तरह आज कल छोटी २ जातियोंमे जैनियोंका विभाग होनेसे व जातिमे बाल विवाह, वृद्धविवाह, व्यर्थव्यय आदि कुरीतियोंके होनेसे प्रत्येक जातिके स्त्री पुरुषोंकी सख्या बडे वेगसे घट रही है—विधवा व विधुरोंकी सख्या अधिक होनेसे दिनपर दिन सतानक्रम बन्द हो रहा है, ऐसा ही सौ दो सौ वर्ष पहिले भी था। इसीसे इस जातिका अब कोई मनुष्य सूरतमे नही दिखलाई पडता । सूरत नगरमें इस जातिका कैसा गौरव था इसको प्रगट करनेवाला एक शिलालेख नीचे दिया जाता है । यह लेख उन २४ बड़ी भव्य प्रतिबिम्बोंसे एक प्रतिबिम्बपर है जो **बड़ा चौटा** जिसको अब नानावट कहते हे, के मदिरजीमे विराजमान थी और अब वे सब चन्दावाडीके पासवाले बडे (पुराने) मदिरजीमें स्थापित है ।

नकल शिलालेख।

"श्रीजिनो जयति। स्वस्ति श्री १८०५ वर्षे शाके १६७५ -प्रवर्तमाने वैशाख मासे शुक्लपक्षे चन्द्रवासरे गुर्जरदेशे सूरतबन्दरे

जुग्यादिचैत्यालये श्रीमूलसंघे नन्दीसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्यानन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लीभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवीरचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवादीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमहीचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमेरुचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्यानन्दीगुरूपदेशात् **सूरतवास्तव्य रायकवालजातीय** धर्मधुरधर सम्यक्त्वधारक गुर्वाज्ञाप्रतिपालक सप्तक्षेत्रविल्सतवित् सा कुँवरजीसुत सौजीसुत लक्ष्मीदासस्तत्पुत्रधर्मदासभार्या रतनबाई तयो सत्पुत्र धर्मधुरन्धर पूजाबिम्बप्रतिष्ठासंघवच्छलकरणसमर्थ जैनप्रसिद्धमार्ग विलसतवित् श्रावकाचारचतुर गुर्वाज्ञाप्रतिपालक जगजीवनदास भार्या नवीनहू ताभ्या बिम्बप्रतिष्ठा करीता सेठ श्रीलालभाईस्तेषा पुण्यपवित्रसमस्त प्राणिगणप्रतिपालक करुणामूर्ति सेठ जगन्नाथबाई सान्निध्य विराजमाने श्रीआदिनाथजी मूलनायकनी प्रतिष्ठित नित्य प्रणमति। श्रीरस्तु। लेखकवाचकयो भद्र भूयात्।"

इस लेखसे भट्टारकोंकी वंशावलीका कुछ पता चलता है। रादेरके जिन मंदिरकी एक प्रतिमापर जैसा ऊपर लिखा है संवत् १९१८में देवेन्द्रकीर्ति, शिष्य विद्यानंदि है। इससे प्रगट है कि ये विद्यानंदि वेही विद्यानन्दि है जो बडाचौटेके प्रतिबिम्बपर लिखित है। संवत १५१८ से लेकर १८०५ तक नीचेप्रमाण क्रमसे भट्टारक हुए व उनसे पहिले विद्यानंदिके गुरु देवेन्द्रकीर्ति व इनके गुरु भट्टारक श्री पद्मनंदि थे। ऊपरके लेखसे यह भी झलकता है कि इस सूरत जिलेमें सबसे पहिले भट्टारक ये ही पद्मनंदि हुए, क्योंकि इनके पहिलेके

किसी भट्टारकका नाम लेखमें नहीं है, केवल श्रीकुन्दकुन्दाचार्य्यजी महाराज हैं, जो परम ऋषि दिगम्बरी आत्मज्ञानी व अनुपम विद्वान् और योगीश्वर थे।

सूरतकी गद्दीका संबंध ईडरकी गद्दीसे है, ऐसा सुनते हैं। इस ईडरकी गद्दीके भट्टारकोंकी नामावली इस प्रकार है.—

१ श्रीभद्रबाहु	१८ श्री वसुनन्दी	३५ श्री नागचन्द्र
२ ,, गुप्तिगुप्त	१९ ,, वीरनन्दी	३६ ,, नयचन्द्र
३ ,, माघनन्दी	२० ,, माघनन्दी	३७ ,, हरिचन्द्र
४ ,, जिनचन्द्र	२१ ,, माणिक्यनंदी	३८ ,, महीचन्द्र
५ श्री पद्मनन्दी	२२ ,, मेघचन्द्र	३९ ,, माघचन्द्र
६ ,, उमास्वामी	२३ ,, शांतिकीर्ति	४० ,, लक्ष्मीचन्द्र
७ ,, लोहाचार्य	२४ ,, मेघकीर्ति	४१ ,, गुणकीर्ति
८ ,, यश कीर्ति	२५ ,, पद्मकीर्ति	४२ ,, विमलकीर्ति
९ ,, देवनन्दी	२६ ,, विनयकीर्ति	४३ ,, लोकचन्द्र
१० ,, गुणनन्दी	२७ ,, भूषणकीर्ति	४४ ,, शुभचन्द्र
११ ,, वज्रनन्दी	२८ ,, शीलचन्द	४५ ,, शुभकीर्ति
१२ ,, कुमारनन्दी	२९ ,, नन्दीकीर्ति	४६ ,, भावचन्द्र
१३ ,, लोकचन्द्र	३० ,, देशभूषण	४७ ,, महीचन्द्र
१४ ,, प्रभाचन्द्र	३१ ,, अनन्तकीर्ति	४८ ,, माघचन्द्र
१५ ,, नेमिचन्द्र	३२ ,, धर्मचन्द्र	४९ ,, ब्रह्मचन्द्र
१६ ,, अभयनन्दी	३३ ,, विद्यानन्दी	५० ,, शिवनन्दी
१७ ,, सिंहनन्दी	३४ ,, रामचन्द्र	५१ ,, वीरचन्द्र

५२ „ हरिचन्द्र	६९ „ ललितकीर्ति	८६ „ गुणकीर्ति
५३ „ भावनन्दी	७० „ केशवचन्द्र	८७ „ वादिभूषण
५४ „ सुरेन्द्रकीर्ति	७१ „ चारुकीर्ति	८८ „ रामकीर्ति
५५ „ विद्याचन्द्र	७२ „ अभयकीर्ति	८९ „ पद्मनन्दी
५६ „ सूरचन्द्र	७३ „ वसन्तकीर्ति	९० „ देवेन्द्रकीर्ति
५७ „ माघनन्दी	७४ „ विशालकीर्ति	९१ „ क्षेमकीर्ति
५८ „ नन्दी	७५ श्री शुभकीर्ति	९२ „ — —
५९ „ गगनन्दी	७६ „ धर्मचन्द्र	९३ „ नरेन्द्रकीर्ति
६० „ हेमकीर्ति	७७ „ रतनचन्द्र	९४ „ विजयकीर्ति
६१ „ चारुकीर्ति	७८ „ प्रभाचन्द्र	९५ „ नेमिचन्द्र
६२ „ मेरुकीर्ति	७९ „ पद्मनन्दी	९६ „ रामकीर्ति
६३ „ नाभिकीर्ति	८० „ सकलकीर्ति	९७ „ यशःकीर्ति
६४ „ नरेन्द्रकीर्ति	८१ „ भुवनकीर्ति	९८ „ सुरेन्द्रकीर्ति
६५ „ चन्द्रकीर्ति	८२ „ ज्ञानभूषण	९९ „ रामकीर्ति १०० „ रत्नकीर्ति
६६ „ पद्मकीर्ति	८३ „ विजयकीर्ति	१०१ „ विनयकीर्ति*
६७ „ वर्द्धमान	८४ „ शुभचन्द्र	("दिगम्बरजैन"
६८ „ अकलङ्क	८५ „ सुमतिकीर्ति	वर्ष ४ अंक ७)

ऊपरकी पट्टावलीमें नं० ८३ श्रीविजयकीर्त्तिजी सं० १९६८ में मौजूद थे तथा नं० ८० श्रीसकलकीर्ति शिष्यपरम्परामें थे। इसका प्रामाणिक लेख बड़ौदा नवी पोलके चैत्यालयमें विराजित श्री-

* ये आजकल मौजूद हैं, परन्तु सब सम्मतिसे गद्दीपर नहीं बैठे हैं इसलिये बहुतसे लोग इनको नहीं मानते हैं।

पद्मनंदिपचविंशतिका संस्कृत ग्रंथके अंतिम पत्रे ९९ की लिपि-प्रशस्तिमें है । यह ग्रंथ बहुत शुद्ध है अन्वयके नं० शब्दोंपर दिये है व कठिन शब्दोंके अर्थ भी लिख दिये है । परन्तु शुरूके ३० पत्रे नही मिलते हैं । सेठ लालचद कहानदास द्वारा देखनेको मिल सक्ते हैं । ग्रंथ दर्शनीय है । वह प्रामाणिक लेख यह है —

"सं० १५६८ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे १० दिन गुरौ श्रीगिरिपुरे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवन-कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीविजयकीर्तिदेवा-स्तत् भगिनि आर्यिका श्रीदेवश्री तस्यै पद्मनंदिपचविंशतिका श्रीसंघेन लिखाप्य दत्ता ।"

इस लेखसे यह भी पता लगता है कि श्रीविजयकीर्ति भट्टारक-की बहन देवश्री आर्यिका थी व संस्कृत पद्मनंदिको समझ सक्ती थीं । उन्होंको यह ग्रंथ संघने भेटमें दिया था ।

यहांपर पाठकोंका यह अवश्य भ्रम होगा कि जो नाम इस ईडरके भट्टारकोंकी नामावलीमें है वे सर्व दिगम्बर नग्न मुनि थे या आजकलके ऐसे वस्त्रधारी भट्टारक थे ? जिसके समाधानमें पाठकोंको बताया जाता है कि सन् १२९१ ई० के पहिले सर्व ही मुनि या भट्टारक नग्न होते थे । इस सन्में आलमशाह अलाउद्दीन बादशाह देहलीमें थे । इनको किसी धर्मका आस्था नही थी । इनकी सभामें **राघो** और **चेतन** दो ब्राह्मण भी थे जो कि नास्तिक मतके पक्षपाती भ्रष्टवादी तथा निर्दय थे । ये बादशाहके मनको और भी धर्मशून्य करते रहते थे । एक दिन उन्होंने बादशाहको बहकाया कि

सर्व धर्मोकी परीक्षा होनी चाहिये, जो सत्य ठहरे उसके सिवाय सर्वको मुसलमान बना लिया जावे। बादशाहने देहलीमे आज्ञा दी कि सर्व अपने२ धर्मकी परीक्षा दें और अपने गुरुको लेकर आवें, नही तो हमारा धर्म स्वीकार करना पडेगा। जैनियोंको भी यह आज्ञा हुई। उस ओर तब कोई दिगम्बर मुनि नही थे। उनको ढूंढनेके लिये जैनियोंने बादशाहसे छह मासका समय मागा। बादशाहने स्वीकार किया। जैनी लोग दक्षिणकी ओर आये और उन्हें तीन मास बाद गिरनारपर श्री**माहवसेन** (महासेन) स्वामीका दर्शन हुआ। उनसे सर्व हाल कहा। जैनी लोग वही ठहरे रहे, स्वामी-का विहार नहीं हुआ। इतनेमे जब छह मासमें एक दिन ही शेष रहा तब श्रावक लोग घबडाये। स्वामीने कहा तुम चिन्ता न करो। तपोबलसे दूसरे दिन प्रात काल स्वामी देहलीकी मसानभूमिमे पहुच गये और सर्व जैनी अपने २ घरोंमें सोते २ उठे। उसी रात्रिको एक सेठके पुत्रको सर्पने डंस लिया। उसको मृतक समझ लोग वहीं जलानेको आये जहा मुनि महाराज विराजमान थे। मुनिने पुत्रको देखकर कहा कि यह मरा नहीं है सर्व लोग ठहर गये। मुनिने पुत्रको सचेत कर दिया। वह अच्छी तरह खेलने लगा। इस बातकी बडी प्रसिद्धि हुई। बादशाह राघो और चेतनके साथ मुनि महाराजसे मिले। इन ब्राह्मणोंने मुनिको देखते ही कहा कि आपने अपने कमण्डलुमे मछलिया क्यों रख छोडी हैं? मुनिने कहा कि पूजनके लिये पुष्प है, मछलिया नहीं। कमण्डलु उंधा गया तो पुष्प ही निकले। फिर दोनों ब्राह्मणोंने अनिगनत पद शास्त्र पर खूब वादानुवाद किया। मुनि महाराजकी विजय हुई।

वमकी वडी प्रभावना हुई । बादशाहने स्वय प्रशसा की । मुनि महाराज उसी ओर ठहरे । बादशाहने जैनियोंसे कहा कि आपके गुरु सदा देहलीमे रहें ऐसा कहिये तथा हमारी बेगमें भी दर्शन किया करें इससे उनको वस्त्र रखना चाहिये । जैनी लोग इस बात-पर विचार करने लगे। इतनेहीमें अर्थात सन् १३१५में **फिरोजशाह तुघलक** देहलीके बादशाह हुए। दि० जैनियोंके अति आग्रह व बादशाहकी इच्छासे श्रीमहासेनके शिष्य मुनिने वस्त्र रखना स्वीकार किया । बादशाहने ३२ पदकी उपाधिया दी व कुछ सनदें दी जो देहली, कोल्हापुर, नागौर आदिके भट्टारकोंके पास मौजूद हैं (देखो, जैनसिद्धान्तभास्कर किरण ४, सफा ११४, छपा १९१५)। उस समयसे जो वस्त्र रखने लगे उनकी भट्टारकोंकी गद्दी प्रसिद्ध हुई । और देहलीके भट्टारकने अपनी शाखाए भारतके अनेक स्थानोंपर कायम की ।

यद्यपि कालदोषसे भट्टारकोंका पद वस्त्रमहित स्थापित हो गया तथापि नग्न मुनियोंका कभी अभाव नहीं हुआ था। नग्न मुनि भी होते रहे हैं । स० १९३४ मे श्रीसोमसेन मुनि ९० वर्षके वृद्ध बडौदा नगरमे पधारे थे । सोजित्रामे चातुर्मास किया था। जैनबद्रीमे बराबर मुनि होते आये हैं । अब भी वहा श्रीअनन्तकीर्तिजी महाराज मौजूद है। झालरापाटनमे थोडे ही दिन पहिले श्रीसिद्धसेन मुनि हुए हैं। हालमे वहा मुनि चन्द्रसागरजी विराजमान हैं ।

यद्यपि शास्त्राज्ञासे विरुद्ध भट्टारकोने वस्त्र रक्खा, पर मुसल्मानोंके जमानेमे उन्होंने भारतमे दिगम्बर जैन समाज, धर्म और उनके

मंदिर व शास्त्रोंकी बहुत रक्षा की है। कई तीर्थोंका उद्धार किया है। विद्याबलसे अनेक चमत्कार दिखाये हैं व ग्रंथ रचना भी की है। यद्यपि आज कलके कुछ भट्टारक चारित्रहीन दिखलाई पडते हैं तथापि पहिले ये लोग सिवाय वस्त्र रखनेके और सर्व चारित्र वाह्य क्रिया योग्य करते थे व धर्मकी रक्षार्थ ही जीवनका उपयोग करते थे।

सूरतकी गद्दीके भट्टारक।

१ श्रीपद्मनन्दि
२ ,, देवेन्द्रकीर्ति
३ ,, विद्यानन्दि (सं० १५१८)
४ ,, मल्लिभूषण (चन्दावाडीके बडे मंदिरकी प्रतिमाओंपरसे सं० १५४४)
५ ,, लक्ष्मीचंद्र
६ ,, वीरचंद्र
७ ,, ज्ञानभूषण
८ ,, प्रभाचंद्र
९ ,, वादिचंद्र (चंदावाडीके बड़े मंदिरकी प्रतिमाओंपरसे (सं० १६४१)
१० ,, महीचंद्र—(इन्होंने संस्कृतमें पंचमेरुपूजा आदि पुस्तकें रची हैं।)
११ ,, मेरुचंद्र (इन्होंने संस्कृतमें नन्दीश्वरपूजाविधान रचा है। सं० १७२२)
१२ ,, जिनचंद्र
१३ ,, विद्यानन्दि (सं० १८०५)

३०० वर्षोंमें १० भट्टारकोंका क्रमवार होना सर्वथा सभव है। विद्यानन्दिके पीछेके भट्टारकोंके नाम ये हैं.—

१४ श्री देवेन्द्रकीर्ति (इन्होने पादरा तथा आमोदके मदिर बंधवाये है। इनके पास १६ शिष्य रहते थे।

१५ ,, विद्याभूषण (इन्होंने महुवा, सूरत, अकलेश्वर, सजोत, सोजित्राके मन्दिर बधवाये। इनके एक शिष्य पण्डित भाणा था कि जिन्होने व्याराका मन्दिर बधवाके स० १८७१ मे प्रतिष्ठा की तथा सोजित्रामे एक मदिरका मडप बधवाया। इनके शिष्य पण्डित पीताम्बर थे, जिन्होके लिखे हुए कई ग्रन्थ पादराके मन्दिरमे मौजूद है।)

१६ ,, धर्मचद्र।

१७ ,, चद्रकीर्ति (ये बम्बईवाले सेठ सौभागशाह मेघराजके भाई थे। सवत् १९२८ मे नरोडामे देवलोक गये। वहा एक प्रतिष्ठा भी कराई थी। इनके शिष्य पण्डित शिवलालजी महुवामे रहते थे और पालीताणा क्षेत्रपर देखरेख रखते थे। इन्होंने शिखरजीकी यात्रा करते हुए स० १९२९ में शिखरजीकी एक पूजा रची है।)

१८ ,, गुणचद्र (बागड देशमे कई कुरीतिया बद कराई। जैसे-कन्यादानमे गर्दभका दान। अहमदावादमे रायकवालजातिने वैष्णवकी कठी बाध ली थी सो तुडवाके उनके लिये मदिर बधवाया। ये अभी हालमे विद्यमान है।)

१९ ,, सुरेन्द्रकीर्ति (ये भी हालमे विद्यमान है।)

सूरतजिलेमें दिगम्बर जैनियोंकी वस्ती १०० व १५० वर्ष पहिले निम्न स्थानोंपर थी। वहांपर मंदिरजी भी थे।

१-**वलसाड**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है।

२-**मंदरोही**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है। परन्तु यहांके लिखे हुए कई ग्रंथ मिलते है।

३-**रांदेर**-यहां अब दो घर व एक जूना जिन मंदिर है।

४-**हांसोट**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है परन्तु यहांके लिखे ग्रंथ मिलते है।

५-**महुआ**-यहां अब भी १० घर हैं, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथका अतिशययुक्त प्राचीन जिनमंदिर है व संस्कृतका अच्छा शास्त्रभंडार है।

६-**कोदादा**-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है, परंतु बडौदा नवी पोलके दि० जैन चैत्यालयमें विराजित श्रीसकलकीर्तिकृत संस्कृत श्रीपालचरित्रसे पता लगता है कि कोदादामें श्रीशीतलनाथस्वामीका मंदिर सं० १६३७ में मौजूद था। ग्रंथलिपिकी प्रशस्ति जो अंतिम पत्र ६७ पर दी हुई है इस भांति है —

"संवत १६३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे अदेहश्री**कोदादा** शुभस्थाने श्रीशीतलनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचंद्रपट्टे भ० श्रीवीरचंदपट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणपट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्र तत्पट्टे भ० श्रीवादिचंद्र तेषां मध्ये उपाध्यायधर्मकीर्ति स्वकर्मक्षयार्थं लेखि।"

इस लेखमें जितने भट्टारकोंके नाम है उनका नाम व ग्राम

सर्व ऊपर लिखित सूरत गद्दीके भट्टारकोंसे बिलकुल मिलते है। सूरत चदावाड़ीके मदिरमे वादिचद्र भट्टारक प्रतिष्ठित प्रतिमा मौजूद है।

७–**नौसारी**–यहा अब कोई नहीं है न जैन मदिर है परन्तु सवत १९१२ तक यहापर मदिरजी था।

८–**सूरत**–यहा पहले ९ जातियोंके जैनी थे अब वीसा हुवडके २० घर, दसा हुवडके ७९ घर व नरसिंहपुराके २० घर है। तो भी पच पाच गोटकी कहलाती है। रायकवाल व मेवाडा नहीं है। यद्यपि मेवाडा लोग प्रगटपने वैष्णव हो गये है। सूरत शहरमे १०० वर्ष पहले दिगम्बर जैनियोकी सख्या ७०० के अनुमान थी। पहले इनके खास रहनेके मुहल्ले सगरामपुरा, काजीका मैदान और नानावट भी थे। यहा अब कोई घर नहीं है। अब हरिपुरा, नवापुरा, खपाटियाचकला आदिमें रहनेवाले अब केवल २५० हे। श्वेताम्बर जैनी पहले १२००० थे अब ३००० के अनुमान है। वर्तमानमे श्वे० जैनियोंके ९० मदिर व ७५ घर चैत्यालय और दि० जैनियोंके ६ मदिर व ९ घर चैत्यालय है।

इन छह मदिरोंमे सर्वसे पुराना मदिर खपाटिया चकलेमें चदावाडी धर्मशालाके पास छोटा जिन मदिर है जिसमें एक भौरा है। इस भौरेमे ३ बडी अवगाहनाकी भव्य प्रतिमाए विराजमान थी सो अब ऊपर वेदी बनाकर स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलाल झवेरचद जौहरी, सहायक महामत्री–" भारतवर्षीय दि०जैनतीर्थक्षेत्र कमेटी " द्वारा स्थापित की गई है। इनमेंसे दोपर लेख है जो ऐसी भाषामे हैं कि पढा नहीं जाता। श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिबिम्बपर सवत १२३९ वैशाख

सुदी १० उल्लिखित है। चढावाडीके पास दूसरा बडा मदिर है जिसमें बहुतसे प्रतिबिम्बोका समूह है। उनपर सवत व प्रतिष्ठा-कारक भट्टारकोंका नाम इस भाति है--

स० १४९४ श्रीअभयचद्र

स० १४९९ नदीश्वरकी मूर्ति, भट्टारकका नाम नही है।

स० १५०७ श्रीभट्टारक विद्यानदि।

स० १५१३ श्रीभट्टारक विद्यानदि।

" १५२३ " " भुवनकीर्ति।

" १५४४ " " मल्लिभूषण।

" १५४८ " " जिनचद्र

" १६४१ " " वादिचद्र।

" १६४१ " " गुणकीर्ति।

" १६४७ " " "

" १६५१ " " वादिभूषण।

" १६६६ " " वादिचद्र।

" १६७९ " " महीचद्र।

" १६८४ " " महीचंद्र।

" १६८४ " " कुमुदचद्र।

" १७१३ " " महीचद्र।

" १७२२ " " मेरुचद्र।

मन्दिरके नीचेके भागमें विराजमान चन्द्रप्रभुकी प्रतिमापरका लेख।

"V ०॥ सवत् १६७९ वर्षे शाके १५५३ श्रीमूलसघ नन्दीसघे सर-स्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा

स्त० भ० देवेन्द्रकीर्तिदेवास्त० भ० ॥ श्रीविद्यानन्दिदेवास्त० भ० श्रीमल्लीभूषणास्त० भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रस्त० भ० श्रीवीरचन्द्रास्त० भ० श्रीज्ञानभूषणास्त० भ० श्रीप्रभाचन्द्रास्त० भ० श्रीवा दीचन्द्रदेवास्त० भ० श्रीमहीचन्द्रोपदेशात् हुबड़जातीयः वीउँलवास्तव्य मातर गोत्रे स० श्रीवर्द्धमानभार्या सवनादे तयो. पुत्र स० कुअरजीत ।० सकोटमदे तयो पुत्र स० श्रीधर्मदासभार्या स घनादे पुत्री वेमबाई चन्द्रप्रभ प्रणमति ।"

चद्रप्रभुकी बाई ओरकी बड़ी प्रतिमाका लेख ।

"सवत् १६७९ वर्षे वैशाख वदी ५ गुरौ श्रीमूलसघे भारती गच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वय भट्टारक श्रीपद्मनदीदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानदीदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीवादीचद्रदेवास्तत्पटे भट्टारक श्रीमहीचद्रोपदेशात् स० श्रीधर्मदास श्रीवासुपूज्य प्रणमति"

चन्द्रप्रभकी दाई ओर भी एक आदिनाथ स्वामीकी उतनी ही विशाल प्रतिमा है, लेकिन उसपर कोई लेख नहीं है । यहाके वृद्ध पुरुषोंके कथनके आधारपर तलाश करनेसे ज्ञात हुआ कि ये तीनों प्रतिमाए पहिले नानावट बड़े चौटेकेके भौरेमें थीं । वहापर अब सिर्फ घेलाभाई मंछालाल दसा हुवडका एक घर है । उनके आधिन वह भौरा अभी है और वहा तीन प्रतिमाओंके आसन भी मौजूद है ।

यह बडा मदिर सवत् १८९३ मे भस्म हो गया था । उस वक्त अग्निकाडसे आधा शहर जल गया था पर प्रतिमाएं सुरक्षित रही थीं । सं० १८९५से १८९८ तकमें फिर तय्यार होकर इसकी

प्रतिष्ठा वैसाख सुदी १२ सवत १८९९ को भाणा पडितके द्वारा की गई थी जो यही रहते थे और यत्र मत्रमे बहुत प्रवीण थे। उस समयकी प्रतिष्ठित पद्मावतीकी मूर्तिपर नीचे प्रकार लेख है।

पद्मावतीकी पाषाणकी प्रतिमा।

"सं० १८९९ वैशाख सुद १२ गुरुवार श्रीमुलसंघे सरस्वतीगछ बलातकारगण कुंदकुदाचार्य भट्टारक श्रीविद्यानादितत्पट्टे भ श्रीदेवेन्द्रकीतिस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्याभूपणजीस्तत्पट्टे भ० श्री धर्मचद्रस्तत्गुरु भ्राता पडित भाणचद उपदेशात् सा० वेणिलाल केसुरदास तत्सुता बाई इच्छाकोर नीत्य प्रणमति।"

पद्मावती (पाषाणकी खड्गासन)

"सं० १५४८ वर्षे वैशाख शुदी ३ सोमे॥ श्री मूलसघे॥ सरस्वतीगछे॥ बलात्कारगणे॥ भट्टारक श्रीविद्यानदीदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लीभूषण॥ श्रीस्तभस्तीर्थे॥ हुबड ज्ञातेय। श्रेष्ठी चापा भार्या रूपिणि तत्पुत्री श्रीआर्जिका आर्जिका रत्न सिरीक्षुल्लिका जिनमती श्रीविद्यानंदी दीक्षिता आर्जिका कल्याण सिरीतत्वल्ली अग्रोतका ज्ञातोसाह देदा भार्या नारिंगदे॥ पुत्री जिनमती नस्स ही कारापिता प्रणमति श्रेयार्थम्।"

पंचमेरुकी धातुकी बडी प्रतिमा।

"सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगछे। भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ। श्रीपद्मनदीतत्सिष्य श्रीदेवेद्रकीर्तिदीक्षिताचार्य श्री

दि गुरूपदेशात् गाधारवास्तव्य हुवड ज्ञातीय समस्त श्री संघेन कारापित मेरुशिखरा कल्याण भूयात्"

मेरुके नीचे चारों कानोंपर चारों दिशाओंमे चार मुनियोंकी मूर्तिया है जो जाप करते हुए दाहिना हाथ छातीपर और बाया हाथपर रख हुए है ।

चारों मुनिओंके नाम ।

१ मुनिश्री कल्याणनदी मूर्तिः
२ भ० श्रीपद्मनदी देवस्य मूर्तिरियम्
३ मडलाचार्य श्रीदेवेंद्रकीर्तिः मूर्तिः
४ ...नदी मूर्तिः

पंचपरमेष्टीकी धातुकी प्रतिमा ।

" सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसंघे आचार्य श्रीविद्यानंदीगुरूपदेशात हुवड ज्ञातीय दो० डुंगर भा० सोनीं देवलदेसुतदोशी शंखा भार्या वासुदिवी०का भार्या मटका तेनेद श्री जिन बिम्ब कारिता । "

मूलनायक श्रीआदिनाथस्वामीकी प्रतिमा मूलसघे सं० १३७६ की है । विशेष लेख पढा नही जाता ।

सम्यक्ज्ञानका यंत्र ।

"सं० १६८९ वर्षे माघ सुदी ५ श्रीमूलसघे कुदकुदाचार्यान्वये श्रीवादीचन्द्रस्तत्पट्टे श्रीमहीचंद्रोपदेशात् सिंघपुरावशे संघवी वल्लभजी स० हीरजी ज्ञानं प्रणमति ।"

चौवीसी।

" स० १५४८ वर्ष वैशाख सुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुवडशाह-रामाभार्या कर्मा सु० कर्णाभार्या हासी सुत मना एते नित्य प्रणम्य श्रीमहावीर जिनम् ।"

पार्श्वनाथकी धातुकी छोटी प्रतिमा।

"स० १४०९ वर्षे वैशा० नादे ५ गुरुवारे श्रीकाष्ठा-सघगणे हुंवडवाशाय जगपालभा सातित्रि। सुत नरपालेन श्रीपार्श्वनाथबिंब करारि ।"

सम्यक्ज्ञानका यंत्र।

"म० १३७८ माह० सुदी १२ साधु चादावोदा प्रणमति नित्यम् ।"

तीसरा दि० जैन मदिर गोपीपुरामे है। यहापर भी बहुत प्रतिबिम्ब है अधिकतर काष्टासघकी गद्दीके भट्टारकोंके द्वारा प्रतिष्ठित है। इस मदिरमे सस्कृत ग्रंथोंका प्राचीन शास्त्र भडार है, परतु बहुत ही अव्यवस्थित स्थितिमें पडा है। बम्बईके सेठ डाह्या-भाई प्रेमचदका प्रबंध है। खेद है कि वे इनकी सम्हाल नहीं कराते। इस भडारमे सस्कृत–प्राकृतके अपूर्व २ हजार डेढ हजार ग्रथ हैं।

यहापर एक पद्मावती देवीका प्रतिबिम्ब है उसपर सवत् १६९४ जेठ सुदी १० है। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक काष्ठासघी लक्ष्मीसेन है। इसकी प्रतिष्ठा गुर्जरदेश सुरत बंदर नरसिंहपुरा ज्ञातीय पचलालगोत्रे शाह रामजी भार्या फवाई तयो सुत कल्याणजी भार्य्या गौरीने की।

एक पचमेरु है उसके १ लेखसे इस तरफ होनेवाले काष्ठासघी भट्टारकोंके क्रमका पता चलता है ।

नकल लेख पंचमेरु दि० जैन मंदिर गोपीपुरा सूरत।

"संवत १७४७ शाके १६२२ प्रमोदनाम सवत्सरे ज्येष्ट मासे कृष्णपक्षे सातम बुधवासरे नंदीतटगच्छे भट्टारक विधगणे भट्टारकश्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भट्टारकश्रीविशालकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारकश्रीविश्वसेन तत्पट्टे भट्टारकश्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीभूषण तत्पट्टे भट्टारकश्री चंद्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक प०लक्ष्मीसेनजी तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति प्रतिष्ठित।"

यहा धातुका एक रत्नत्रयका प्रतिबिम्ब है जिसमें तीन कायोत्सर्ग प्रतिमाए एक साथ अकित होती है उसको इधर रत्नत्रय बिम्ब कहते हे । इसका लेख यह है —

"सं० १७६७ माघ वदी ७ शुक्र श्रीसूरत बंदरे श्री चद्रनाथ चैत्यालये काष्टासघे नरसिंहपुरा ज्ञातीय कुकाल्लोलानी सघवी नाना सुत हीरजी तस्य भा० विनीबाई तयो पुत्रा सुन्दरदासजी हीरजी तथा त्रीकमजी हीरजी तथा हेमजी हीरजी तथा वहन गेवबाई तथा जेगबाई प्रतिष्ठित"

काष्ठासघके जो नाम ऊपरके शिलालेखमे आये है वे सर्व नाम उस सस्कृत गुर्वावली पाठमे है जो ६४ श्लोकोकी है तथा जो करमसदके उस सस्कृत गुटकेमे है जो सुरेन्द्रकीर्ति भट्टार-

कने अपने खास पढनेके लिये सम्वत् १७४३ चैत्र सुदी १४ रवि-के दिन श्रीवन्धपुर (यह कौन नगर है सो इसमे नही आया)-के श्रीआदिनाथ चैत्यालयमें लिखवाया था। इस गुटकके देखनेसे विदित होता है ये सुरेन्द्रकीर्ति विद्वान थे क्योंकि इसमे प्राकृत संस्कृतकी निम्न भक्तिया हैं-सिद्धभक्ति, श्रुतज्ञानभक्ति, दर्शनभक्ति, चारित्रभक्ति, वीरभक्ति, २४ तीर्थंकरभक्ति, चैत्यभक्ति, बृहद् स्वयभू, पचमहागुरुभक्ति, शातिभक्ति, ३४ अतिशयभक्ति, नदीश्वरभक्ति, समाधिभक्ति, योगभक्ति, निर्वाणभक्ति, अघुआलोचनाभक्ति, वृहदालोचनाभक्ति, इनके सिवाय तत्त्वार्थसूत्र, ऋषिमडल, अष्टान्हिका वीनती, आराधनप्रतिबोध, गुर्वावली, वृहद्दीक्षा विधिव प्रतिष्ठा विधि है, यह गुटका २७९ पत्रोंका है। इसके २३१ में गुर्वावली है। इसके १९ श्लोकसे काष्ठासघका वर्णन इस भाति है कि इस काष्ठासघके ४ गच्छ है—नदीतट, माथुर, बागड और लाडबागड। सो यहा नदीतट गच्छकी गुर्वावली कही जाती है। सो नीचेके क्रमसे नाम हैं—

१ अर्हद्वल्लभसूरि	४ नागसेन	७ नोपसेन
२ श्रीपन्नगुरु	५ सिद्धान्तसेन	८ रामसेन
३ गगसेन	६ गोपसेन	

रामसेनके सम्बन्धमें लिखा है कि इन्होंने **नारसिंह** नामकी जाति स्थापित की।

रामसेनोति विदित प्रतिबोधनपडित । स्थापिता येन सज्जाति-नारसिंहाभिधा भुवि ॥२४॥

इससे पता चलता है कि जो ८४ जातिया जैनियोंमे प्रसिद्ध हैं वे प्राय पचम कालके मुनि व भट्टारकोंके द्वारा किसी २ खास

कारणसे स्थापित की गई हैं । वह कारण भी बहुत करके यह हो सक्ता है कि जब किसीने किसी अजैन समूहको एक साथ जैनी किया तब उसका एक खास नाम रखके उसे एक जाति करार दे दिया ।

९ नाभिसेन	२८ मेरुसेन	४५ सुवर्णकीर्ति
१० नरेन्द्रसेन	२९ शुभकरसेन	४६ भानुकीर्ति
११ वासवसेन	३० नयकीर्ति	४७ कविभूषण
१२ महेन्द्रसेन	३१ चद्रसेन	४८ संयमसेन
१३ आदित्यसेन	३२ सोमकीर्ति	४९ विख्यातमूर्ति
१४ सहस्रकीर्ति	३३ लघुसहस्र कीर्ति	५० लघु राजकीर्ति
१५ श्रुतकीर्ति	३४ महाकीर्ति या महासेन	५१ नरकीर्ति
१६ देवकीर्ति		५२ चारुकीर्ति
१७ रामसेन	३५ यशःकीर्ति	५३ विश्वसेन (वादि प्रसिद्ध)
१८ विजयकीर्ति	३६ गुणकीर्ति	
१९ वामनसेन	३७ पद्मकीर्ति	५४ देवभूषण
२० महासेन	३८ भुवनकीर्ति	५५ ललितकीर्ति
२१ मेत्रसेन	३९ मल्लकीर्ति या विमलकीर्ति	५६ श्रुतकीर्ति
२२ सुवर्णसेन		५७ जयकीर्तिदेव
२३ विजयसेन	४० मदनकीर्ति	५८ उदयसेन
२४ हरिषेण	४१ मेरुकीर्ति	५९ गुणदेवसुरि
२५ चारित्रसेन	४२ गुणसेन	६० विशालकीर्ति
२६ वीरसेन	४३ सहस्रकीर्ति	६१ अनतकीर्ति
२७ कुलभूषण	४४ विजयसेन	६२ महेन्द्रसेन



सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक–सूरत.

सं० १७९०.

(देखो पृष्ठ ५२) J. V. P. Surat.

६३ विनयकीर्ति
६४ श्रीजिनसेन (कवीश्वर)
६५ सूर्यकीर्ति
६६ विश्वसेन
६७ श्रीकीर्ति
६८ चारुसेन
६९ शुभकीर्ति
७० भवकीर्ति
७१ भवसेन
७२ लोककीर्ति
७३ त्रैलोक्यकीर्ति
७४ विनयकीर्ति
७५ कर्मोंत्सेन
७६ सुरसेन
७७ कुमारसेन
७८ रामसेन
७९ जयकीर्ति या दयाकीर्ति
८० राजकीर्ति
८१ कुमारसेन
८२ पद्मकीर्ति
८३ पद्मसेन
८४ भुवनकीर्ति
८५ विख्यातकीर्ति
८६ भावसेन
८७ रत्नकीर्ति (सं० १४०२)
८८ लक्ष्मीसेन
८९ धर्मसेन (सं० १५४७)
९० विमलसेन
९१ विशालकीर्त्ति
९२ निश्चसेन
९३ विद्याभूषण (सं०१६०४*)
९४ श्रीभूषण या रत्नभूषण
९५ चद्रकीर्ति या जयकीर्ति
९६ राजकीर्ति
९७ लक्ष्मीसेन
९८ इन्द्रभूषण या चद्रभूषण (सं० १७०८)
९९ सुरेन्द्रकीर्ति

इस सस्कृत गुर्वावलीमें सुरेन्द्रकीर्ति तक नाम है उसका सवत
ोपीपुरा मदिरके पचमेरुके लेखके व इस गुटकेके अनुसार वि० सं०
७४३ और १७४७है । प्रतिमाके शिलालेखमें विशालकीर्तिसे
ुरेन्द्रकीर्ति तक जो नाम दिये हैं वे बराबर मिलते हैं ।

इस गुटकेके अंतमें अलग जो नाम गिनाए हैं उनमें कई नाम
वेशेषणके शामिल किये गए हैं तथा सुरेन्द्रकीर्तिके आगेके चार

* बड़ौदा मंदिरके लेखसे देखो, अध्याय ३ में।

भट्टारकोंके और नाम हैं—सकलकीर्ति, लक्ष्मीसेन, रामसेन और रत्नकीर्ति। ऊपर जो पट्टावली दी है वह आगरा मोतीकटराके दि० जैन मंदिरके सरस्वती भटारके गुटके नं० १३९ से भी मिलती है।

इसी गोपीपुराके मंदिरमे दूसरे मेरुपर-लेख है। उसमें काष्ठासघ लाड वागड गच्छका वर्णन है और बघेरवाल जाति प्रतिष्ठाकारक है। इससे मालूम होता है कि बघेरवाल लोग काष्ठासघ लाड वागड गच्छको मानते है। जब कि नरसिंहपुरा नंदीतट गच्छको मानते है।

गोपीपुरा मंदिरकी एक चौवीसीपरका लेख।

"स० १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बु० आचार्य श्री देवेन्द्रकीर्ति शिष्य श्रीविद्यानदी देवादेशात् काष्ठासघे हुमड वशे श्रेष्ठी काना भार्या बारु सुत साजण भार्या सुहवदे भ्राता सोमसा भार्या रही भानर सींघराज भार्या वरमादे साजण भार्या अधन सुत सदा श्रे सींधराज सुत वदा श्रे साजणे स्वश्रेयोय श्री जिन बिंब कारपितम्। श्री घोघा वेलातट वास्तव्य श्री मूलसघे आर्जिका सयम श्री श्रेयार्थम्।"

नवापुरा-मेवाडा मंदिरकी प्रतिमाएं।

मेवाड़ाका, गुजरातीका, चोपडाका, ऐसे नवापुरामें ३ दिगम्बर जैन मंदिर है। जिसमें चितामणि पार्श्वनाथका मेवाडा जातिका मंदिर प्रसिद्ध है—इसमें भी काष्ठासघी नदीतट गच्छकी आम्नाय है यहा जो मुख्य श्रीशीतलनाथस्वामीकी प्रतिमा अभी भोंरेमें है उसपर यह लेख है—

"स्वस्तिश्री नृप विक्रमात १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ श्रीमद काष्ठा सघ नदीतट गच्छे विद्या गुरौ श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये सुरतबंदरे वास्तव्य मेवाड़ा ज्ञाती लघु शाखायाम् सा सनाथा विद्यनदास सुत

विठलभ्राता मूलजी इत्यादि पुत्र पौत्रादिविह सह श्रीसीतलनाथ विम्ब नित्य प्रणमति ''

इस लेखमें लक्ष्मीसेनके बाद कई नाम रह गए हैं—विजयकीर्ति सुरेंद्रकीर्तिके शिष्य थे तथा शायद इन्हीका नाम सकलकीर्ति है जो गुटकेमे सुरेन्द्रकीर्तिके पीछे हुए लिखे है अथवा यह दूसरे शिष्य हों—क्योंकि यह भी किंवदन्ती कही जाती है कि गोपीपुराके भट्टारकके दो शिष्य थे—तकरार होनेसे जो मूर्ख था उसको लज्जा आई वह विद्या पढनेको कर्नाटक गया और खूब विद्वान् होकर करमसदकी गद्दीका भट्टारक हो गया और सूरत आनेका विचार किया, पर गुरुबंधु जिससे झगडा हुआ था और जो यहा गोपीपुरामे भट्टारक था उसने सूरतके नवाबसे आज्ञा ले ली कि नर्बदाके इस पार उसको उतरने न दिया जाय। करमसदवाले भट्टारक सूरतके लिये रवाना हुए। भरुच याने भृगुपुर जब आए तब नर्बदा नदीमें नौकावालोंने उतारनसे इनकार किया तब मत्र•आराधनकर सेत्रजी विद्या इस पार आगए तब भरुचके नबावको नौकावालोंने खबर दी। नबाव आया और इनकी विद्या देखकर क्षमा मागी। ये आगे चलकर वरियाव आए और ताप्ती नदी उतरना चाही। यहापर भी नाविकोंने इनकार किया तब फिर आपने मत्र आराधा सेत्रजी विद्या नदी पारकर वरियावी भागलके द्वारपर सूरतमें आए। वहा द्वार बन्दकर दिये गए। तब फिर मत्र आराध कर आप आकाश मार्गसे उसी स्थानपर आए जहापर नवापुरामें यह मेवाडाका मदिर बना है। सूरतका नवाब व श्रावक आए—और इनकी विद्या देखकर सबने क्षमा मागी। तब

आपने वही यह मंदिर बंधवाया। इससे साफ प्रगट है कि ये विजयकीर्ति है और इनके गुरुभ्राता सकलकीर्ति है। दोनोंके गुरु सुरेन्द्रकीर्ति है क्योंकि इसी भौरमे एक चरणपादुका भी है जिसपर यह लेख है—

"स्वस्ति श्री स० १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ काष्ठा संघे श्री विजयकीर्ति गुरुपदेशात सुरेन्द्रकीर्ति गुरुपादुका नित्य प्रणमति—"

तथा यह प्रगट है कि यह सुरेन्द्रकीर्ति स० १७९० तक रहे विजयकीर्तिने अपने गुरुके स्मरणमे यह पादुका स्थापित करवाई यह बात भी साफ २ प्रगट है—

सुरेन्द्रकीर्तिका चित्र उसी समयका खीचा हुआ इस मंदिर-जीमे पाया गया है जो पाठकोके ज्ञान हेतु यहांपर प्रगट किया जाता है। इस मदिरका प्रबन्ध वीसा मेवाडा भगुभाई चुन्नीलाल कस्तूरचंद चोखावाला करते है। दसा मेवाडाके पहले यहां १०८ घर थे परतु वे कन्याओंके लोभसे वैष्णवोंसे मिलनेके लिये कठी बाधकर वैष्णव हो गए तौ भी उनमेंसे ८ व १० घरवाले श्री जिनमदिरजी दर्शनार्थ अभी भी आते है।

पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"श्री मूलसंघे प्रतिज्ञा श्री श्री काय मुनींद्र ११६४ सशनीय संवत्सरे पुतमय भवतु।"

धातुकी प्रतिमा।

"स० १४९७ मूलसंघे श्रीसकलकीर्ति हुबड ज्ञातीय शाह कर्णा भार्या भोली सुता सोमा भार्या मोदी भार्या पासी आदिनाथं प्रणमति। "

चौवीसी धातुकी।

"स० १४९० वर्षे वै० सु० ९ सनौ श्री मूलसंघे नदी संघे बलात्कार गणे स० गच्छे श्री कु० म० श्री पद्मनंदी तत्पट्टे श्री श्री शुभचंद्र तस्य भ्राता जगत्रय विख्यात मुनि श्री सकलकीर्ति उपदेशात् हुबड ज्ञातीय ठा० नरवद भार्या वला तयो पुत्रा ठा० देपाल अर्जुन भीमा कृपा चासण चापा काह्ला श्री आदीनाथ प्रनिमेय।"

पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"स० १३०४ वर्षे चैत्र सुदी ८ रवौ **सूरत** तीर्थ वास्तव्य हुबड ब्याना आद्दा रान ठका जरा गत सेगण राजी धार प्रसादी कर्तव्या।"

पार्श्वनाथकी प्रतिमा।

"स० १३८० वर्षे महा सुदी १२ रवौ श्रीमूल संघे व्याघ्रेरवालान्वये साधु रतन सुत सोया भार्या लक्ष्मी प्रणमि तम् तत्।"

चोपडाका मंदीरकी प्राचीन प्रतिमा।

पार्श्वनाथ—स० ११६० श्री मूलसंघे भट्टारक श्री शुभचद्र दो० सिंघराज।"

पद्मावतीकी प्रतिमा—स० १२३५ की है।

गुजराती मंदिरकी प्राचीन प्रतिमाएं।

रत्नत्रयकी धातुकी प्रतिमा।

"स० १५१८ वर्षे श्रीमूलसंघे आचार्य श्रीविद्यानंदी गुरोरुपदेशात् हुबड वंशे दो साइया भार्या अहीवदे तयो पुत्रा हुया निम्बभज आस आवा प्रणमति।"

चौवीसी धातुकी।

"स० १४९९ वर्षे वै० वदी २ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतिगच्छे

मुनि देवेंद्रकीर्ति तच्छिष्य श्री विद्यानदीदेवा रुपदेशात् श्री हुबड वश शाह खेता भार्या रुडी तयो पुत्र शा राजा भार्या गौरी द्वितीय गणी तयो. सु० अदा वदा राजा भ्रात्री रुपाणा भार्या अणसु तयो पुत्रौ सदा मल्लीदास एतेषा मध्ये राजा भग्नी राणी श्रेया चतुर्विंशतिका करापिता ।"

पाषाणकी चौवीसी प्रतिमा ।

"सवत Z७५ माघ बदी ५ श्रीदोशी लाड हेत्र हुलाका माना दुतीय प्रणमति ।"

यह प्रतिमा बहुत प्राचीन मालूम पडती है । सवतका निश्चय नहीं हो सकता तवतके अक तीनठी है ।

धातुकी प्रतिमा ।

"स० १४२९ वर्षे श्रीमूलसघे श्री स० गच्छे श्री विद्यानदी गुरूपदेशात् **सिधपुरा** ज्ञातिय श्रेष्ठी पासा भार्या ऐभू पुत्र दामोदर सानवाल श्रीपति श्री आदिनाथ कारापिता ।"

आदिनाथ स्वामीकी धातुकी प्रतिमा ।

"स० १३८० वर्षे वैशाख सुदी १२ सनौ श्री प्रवरसेन देव उपदेशेन स० खडी बाला देव साखे एपज सुत धाँजासा माकौसा तत्परिदारेण प्रणमति ।"

सिद्धयंत्र ।

"स० १५०४ वर्षे फाल्गुण सुदी ११ गुरौ श्री गाधार वेश्य कुले श्री आदिश्वर जिनालये श्री मूल स० ब० स० गच्छे श्री कु० श्री पद्मनदी देवा तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति देवा तच्छिष्य श्री भुवनकीर्तिदेवन एनेद श्री सिद्ध . श्री हुमडज्ञातीय श्री सुमाम भार्या-ऽणि जत्र नित्य प्रणमति ।"

नदीश्वरकी प्राचीन प्रतिमा।

"श्री मूलसघे भारतीय गच्छाधिप पद्मनदी शिष्य श्री देवेंद्रकीर्ति नाम्ना श्री विद्यानदी सच्छिष्य २ श्री संवत चतुर्देश स्याते नवतिर्नेव संज्ञुता वैशाख कृष्ण पक्षे च तृतीयापि शुभे दिने यो मन्विख्यातमते हुबडवंशे जनाधिरवतरो सुवीयमाल देवा विजयदेवी भर्त्रजाया पुत्रा अजनि भार्या गेतोना दाख्यो धरणि तले भार्या हासलदेवी तीस जाता भया सुता ४ प्रथम साईयो जाता लीलादे भा० गुणवति भार्या भीम मुजदोपाना सद् गर्नो तत्सुतौ जातौ द्वितीय सहदेवाख्यो भाया मेत्त सुतो सु वीर गगादे या गगी सग तृतीयो निसाये तयो पुत्रौ ६ जुठानी भार्या सवीरा सुत भक्तौ दे नेर्चा रम्यते मध्ये पापकर्म क्षयार्थ श्रीस्वीष्ठ विम्बं हसलाद अमदादा भार्या हासवदे तयो पुत्री अमकसात्र प्रणमति।"

इस मदिरमे सफेद पाषाणकी और धातुकी कई कायोत्सर्ग प्रतिमाय है। जो अतिप्राचीन होनेके कारण ऊपरके लेख पढे नही जाते।

और भी इस मदिरमे एक सुवण अक्षरोका लाल कागजोंपर लिखा श्रीतत्त्वार्थ सूत्र है जिसमे सुनहरी स्याहीसे व्याख्यान करते हुए एक भट्टारकका चित्र है और उसके चारो ओर चौवीस तीर्थंकरका चित्र है। पास ही कुछ श्रोतागण भी बैठे हुए है। जो कि वि० स० १५२६ मे मूलसघी भट्टारक श्री विद्यानदिके उपदेशसे श्री राहुलस्याना विकरमीणीसाने लिखवाया था।

सिंहपुरा ज्ञातिका वर्णन।

सूरतनगरमे आपाबाजारमे सेठ प्रभुदास पानाचदके यहा एक चैत्यालय है वहा एक पद्मावती देवीकी मूर्ति है जिसपर यह लेख है—

" स० १७२२ जेठ सुदी २ मूलसघे भट्टारक श्री मेरुचद पट्टे साह

श्री सिंहपुराज्ञातीय प्रेम जीवा भाई सुत भट्टारक श्री महाचद्र शिष्य ब्र० जयसागर प्रणमति "

इस लेखमे सिंहपुरा जातिका वर्णन आया है। इसकी दन्तकथा सुरतमे यह प्रसिद्ध है कि इस सिंहपुरा जातिका एक दीवान देहलीकी सल्तनतमे था। वहा बादशाहसे कुछ अनबन होनेके कारण वह कुटुम्बसहित खभातके नबाबके यहा आकर रहा। फिर सूरत, महुआ, व्यारा तथा वलसारमे रहा। सूरत जिलेमे अब भी इस जातिके १९ घर है। मुख्य सेठ प्रेमचद हरगोविन्दभाई देवचद मोतीरूपावाला सूरत है। परन्तु वे सब घर नरसिंहपुरा जातिसे सम्बन्ध करते है। क्योंकि सिंहपुरा जातिके और घर इधर नही रहे। इस लिये संवत् १९०४में सिंहपुरा और नरसिहपुरा दोनों जातिया मिल गई।

यहापर यह कह देना उचित होगा कि समयसमयपर जब जातिया छोटी२ रह गई तब वे एक दूसरेमें मिलती भी गई है ऐसा प्रमाण मिलता है। ऐसी दशामे यदि दिगम्बर जैन धर्म पालनेवाली सर्व शुद्ध भिन्न २ जातिया परस्पर खानपान और बेटी व्यवहार करें तो छोटी जातियोंके घरोका नाश न हो। और क्षेत्र विशाल होनेसे योग्य सम्बन्ध प्रत्येकको प्राप्त हो जावे।

इस समय यहा दिगम्बर जैनियोंमे मुख्य सेठ कालीदास वखतचद है जो दशाहुबड है। ये ही पाच गोटोंके सेठ कहलाते है। वीसाहुमड मत्रेश्वर गोत्री परोपकार–कार्य्यमें लीन सेठ मूलचद किसनदासजी कापडिया है जो 'दिगम्बर जैन' पत्रके सम्पादक 'जैन मित्र' के प्रकाशक व 'जैनविजय' प्रेसके स्वामी है—नवापुरामें १ जैन पाठशाला व १ फुलकौर जैन कन्याशाला है। धर्मशाला चंदांवाड़ी

है, जहा परदेशी यात्री ठहरते हैं। नवापुरा
डुंबडोंकी वाडी भी है।

ऊपर दि० जैनियोंकी कुछ स्थितिका
उससे पाठकोंको मालूम होगा कि सूरत नग
बहुत बडा प्रभाव था।

वर्तमानमें इस सूरत शहरकी चौहद्

वर्तमानमें सूरतकी स्थिति।

कतारगाम,
दक्षिणमे उ
तथा पश्चि
पौनेदो मील लम्बा सूरत शहर बसा है।
जरीका काम अच्छा होता है। लकडी, च
कढावका काम होता है। गुलामबावा मि
स्वदेशी मिल सुत और कपडे बनानेकी है
जमू मिया कागजोकी मिल है। इसके सिव
बाधनेके प्रेस चावलकी मिलें व बरफ व सोड
हैं। मीनाकारी व जवाहरातका जडावकाम

सूरतमें प्रसिद्ध मुहल्ले इस भाति हैं—

१—बेगमपुरा, बादशाह औरंगजेबकी बह
नामसे बसा हुआ है इसमे नवाबी मह
योग्य है।

३–नवापुरा–यहा झापावाजार कापड बाजार, दि० जैन मदिर, सेठ माणिकचदकी पुत्रीके नामसे फुलकौर कन्याशाला व दि० जैन पाठशाला है। दि० जैनियोंकी वस्ती ज्यादा है। यहा गोकुल अष्टमीका मेला होता है।

४–इद्रपुरा–इद्र नामके अनावला ब्राह्मणने बसाया।

५–रुस्तमपुरा–अग्रेजोंके दलाल रुस्तमजीने बसाया। यहा रुस्तम बाग, कबीरका मदिर व मारकट है।

६–सगरामपुरा–सिवराम नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया। यहा नवसारी बाजार, व रोकडिया हनुमान मशहूर है। तथा उसीका मेला भरता है।

७–सामपुरा–सामजी नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया।

८–रुद्रपुरा–रुद्र नामके अनावेल ब्राह्मणने बमाया।

९–रहमतपुरा–रहमतखाने बसाया।

१०–खडेरावपुरा–इसको खंडेराव मराठाने बसाया। यहा गणपती चौथका मेला भरता है।

११–नानपुरा–यहापर वलदो (पुर्तगालों)ने कोठी की थी। प्रसीद्ध स्थान–जहागीर बदर या वलदा बन्दर, प्रिन्सेस बाग, कोर्ट, जेल, सार्वजनिक हाईस्कूल।

१२–घास्तीपुरा–सुरतके गयासुदीन नवावके नामसे प्रसिद्ध है। यहा आरमीनियन कबरिस्थान है।

१३–सैय्यदपुरा–सैय्यद एद्रुसके नामसे।

१४–रामपुरा–रामभाई नामके ब्राह्मणने बसाया। यहा अर्देसर

कोटवालका बंगला, अनाथबालाश्रम, अशक्ताश्रम, प्रसिद्ध स्थान है।

१५–रुगनाथपुरा–रुघनाथ ब्राह्मणने बसाया।

१६–हरिपुरा–हरि ब्राह्मणने बसाया। यहा प्रेमचद रायचद श्वे० जैन कन्याशाला, भवानी बड, चारखानाका चकला मशहूर है।

१७–महीधरपुरा–महीधर ब्राह्मणने बसाया।

१८–हैदरपुरा–हैदरखाने बसाया।

१९–मचरपुरा–मचेरजी पार्सीने बसाया। यहा दिल्ही दरवाजा है।

२० कनपीठ–यहा पहले अनाजका मोटा बाजार था। अब भी अनेक दूकाने ऊच कौमकी है। यहा यूनियन हाईस्कूल, बैंक व लीमडा चौक मशहूर जगह है।

२१–रहिया सोनीका फलिया (केलापीठ)–रहिया सुनारके नामसे मशहूर है। ऊच कोम रहते है। यहा रामजी, बालाजी, अबाजी आदिके हिंदू मंदिर प्रसिद्ध हैं।

२२–वाडी फलिया–यहा सस्कृत पाठशाला है।

२३–सग्राडियावाड–यहा गुलाबदास भाईदास कन्याशाला है।

२४–गोपीपुरा–प्रसिद्ध गोपीने बसाया। यहा श्वे० जैनियोंकी बहुत वस्ती है। यहा मगनभाई प्रतापचद फ्री लाईब्ररी, प्रेमचद रायचद धर्मशाला, श्वे० जैन मदिरों व गोविंदजीका मदिर प्रसिद्ध है। दि० जैन मदिरजी भी है।

२५–खपाटिया चकला–यहा दि० जैनियोंकी वस्ती भी है। सेठ माणिकचंदजीके घरानेकी चदावाडी दि० जैन धर्मशाला, २ दि० जैन मदिर, रायचद दीपचद कन्याशाला, वनिताविश्राम

है । 'जैनविजय' प्रेस तथा "दि० जैन", 'जैन मित्र' पत्रोंका दफ्तर है ।

२६–कैलापीठ–यहां कापड बाजार, व मोटा मदिर है।

२७–भागातलाव–यहा स्त्री छोकडोंको अस्पताल, पारेख हुन्नरशाला, फिरंगीका कब्रिस्तान है ।

२८–बडेखाका चकला–यहॉ काजीकी मसजिद व मीनारा तथा पशु दवाखाना है।

२९–आसुरबेगका चकला–यहॉ जूना दर्बार, मारकेट व जैन पाठशाला है ।

३०–चौक बाजार–यहा मोटी अस्पताल, विक्टोरिया बाग, सुवा-वडखाना, बम्बई बेंक, किला, गवर्नमेंट हाईस्कूल, श्वे० जैन नगिनचद हॉल, होपपुल, बकसीका दरिया महल प्रसिद्ध है। शनिवारका हाटका मेला भरता है।

३१–मुल्लाचकला–यहा फ्रेजरका दरियामहल, म्यूनिसिपल हॉल, अग्रेजी कोठी, मिशन हाईस्कूल, चितामणि व पाताली हरमानक मदिर, पारसी ऑर्फनेज, मिरजास्वामीकी मसीद, चुडगरकी मीनारें प्रसिद्ध हैं ।

३२–माछलीपीठ–यहा डाक्टर वहरामजीका धर्मादा दवाखाना है ।

३३–रानीतलाव–गोपीकी स्त्री द्वारा एक तालाव बनाया गया था उससे यह नाम पडा है ।

शहरमें म्यूनिसिपलटीकी २९ शालाएँ है जिनमें ४ गुजराती कन्याशाला, १ उर्दू कन्याशाला, दो अत्यज शाला, ७ उर्दू शाला, १६ बालकोंकी गुजराती शाला हैं । इसके सिवाय तीन जैनियोंकी, दो पारसियोंकी व ४ मिशनकी कन्याशालाएं है। गुजराती पाठशाला

३ मिशनकी, ३ पारसियोंकी, १ जैनोंकी है। ४ फ्री रात्रिशालाए है। एक सस्कृत शाला, १ पारख हुन्नरशाला तथा ५-६ वोहरोंके मदरसे है। अग्रेजी हाईस्कूल ४ है, मिडलस्कूल ३ है, पार्सी लडकियोंकी एक इग्रेजी स्कूल व मिशन जनानास्कूल व १ फ्री अग्रेजी रात्रिशाला है।

यहा फ्री लायब्रेरी ११ व १२ है जिसमे जैनियोंकी मगनभाई प्रतापचद जैन लायब्रेरी है। एड्रुस लायब्रेरी सबसे बडी है।

वर्तमानमे सूरत शहर साधारण व्यापारका स्थान है।

पाठकोंको मालूम होना चाहिये कि यही वह नगर है जहा इस पुस्तकके चरित्रनायक **सेठ माणिकचन्दजीने जन्म** धारण किया था। जिस मुहल्लेमें उक्त सेठका जन्म हुआ था उसको अब **सपाटिया चकला** कहते हैं। जिस **साधारण मकानमें** उस शरीरने माताके उदरसे अवतार लिया था वह मकान नदावाड़ी धर्मशालाके पास जैन मंदिरके बगलमे एक मजलका **छोटासा घर** है जिसका अब भी दर्शन होता है।

पाठकोंके ज्ञानके लिये हम **उसका चित्र** यहापर दिये देते हैं जिससे मालूम होगा कि जिस आत्माने अपने जीवनमे महा-परोपकार व अपनी कीर्ति विस्तारी वह पुरुष एक बहुत ही साधारण स्थितिवाले घरमें जन्मे थे। जो अपनी निम्न दशासे ऊपरको चढता है वही पुरुषार्थ और पुण्यात्मा मनुष्य है। जिसने जन्म लेकर अपने वशकी उन्नति की उसीका जीना सफल है। जो योंही पैदा होकर जीता है वह मरेके समान है। कहा भी है—

परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम् ॥

अध्याय तीसरा ।

उच्चकुलमें जन्म ।

हुंबड जातिका वर्णन ।

जैनियोंमें एक प्रसिद्ध जाति हुवड़ है जिसका मूल निवासस्थान वागड या मेवाड प्रान्त है वहासे ही इस जातिके लोग निकलकर अर अन्यस्थानोमें फैले है । हुवड जातिमे अधिकतर दिगम्बराम्नायके माननेवाले व कुछ श्वेताम्बराम्नायी भी है । इस जातिकी स्थापनाका क्या इतिहास है उसका कोई प्रामाणिक पता नही चलता है । तो भी इस सम्बन्धमें भाई जवाहरलाल गुमानजी वैद्य परतापगढ राज्यने जो छानवीन करके पता लगाया है व हमें एक निबन्ध दिया है, उसके आधारपर यह प्रकाशित किया जाता है कि यह जैनियोंकी ८४ जातियोंमेसे ११ वीं जाति है । इसको स्थापित करनेवाले विनयसेन आचार्यके शिष्य **कुमारसेन** हुए है । इन्होंने सवत् ८०० के अनुमान वागड देशमे इस जातिको स्थापित किया है । इसके प्रमाणमें गुमानजीने वि० स० ९०९ में श्रीदेवसेनाचार्य रचित प्राकृत दर्शनसारकी गाथाऍ दी हैं जो निम्न प्रकार है —

गाथा—सिरिवीरसेणसीसो जिणसेणो सयलसच्छविण्णाणी ।
सिरिपउमणादिपच्छा चउसगसमुद्धरणधीरो ॥ ३० ॥

भावार्थ—श्रीवीरसेनके शिष्य श्रीजिनसेन सकल शास्त्रोंके ज्ञाता और श्रीपद्मनन्दिके पीछे चारों संघोंकी स्थापनामें धीर था ॥३०॥

गाथा–तस्सय सीसो गुणव, गुणभद्दो दिव्वणाण परिपुण्णो।
पक्खोववास मंडिय महोतवो भावलिंगो य ॥ ३१ ॥

भावार्थ–उनके शिष्य गुणवान श्रीगुणभद्रजी हुए जो दिव्य ज्ञानसे परिपूर्ण, पक्षोपवासके कर्ता, महातपी और भावलिंगी थे ॥३१॥

गाथा–तेण पुणोवि य मुच णेऊण मुणिस्स विणयसेणस्स।
सिद्धत घोसित्ता सय गय सग्गलोयस्स ॥ ३२ ॥

भावार्थ–इन्होंने श्री विनक्सेन मुनिको सिद्धात शास्त्रोंका उपदेशदिया। आप स्वर्गलोक गए।

गाथा–आसी कुमारसेणो णंदियडे विणयसेण दिक्खयओ।
सण्णास भजणेण यँ अगहिय पुण दिक्खओ जाओ ॥३३॥

भावार्थ–विनयसेनका शिष्य कुमारसेन नदीयड ग्राममें हुआ उसने सन्यास या समाधिमरणको भग किया फिरसे दीक्षा दी सो ग्रहण न की ॥ ३३ ॥

गाथा–परिवज्जऊण पिच्छ चमर णेऊण मोहकलिदेण।
उम्मेग्ग सकलिय वागड विसएसु सव्वेसु ॥३४॥

भावार्थ–उसने मोरकी पीछी छोडकर चमरीकी पीछी ग्रहण की तथा मोहके वशमें होकर सर्व ही बागड देशमें प्राचीन मार्गसे रहित उन्मार्गकी प्रवृत्ति की।

गाथा–इत्थीण पुण दिक्खा खुल्लय लोयस्स वीर चीरयत्त।
कक्कसकेसग्गहण छट्ठ च गुणव्वद णाम ॥ ३५ ॥

भावार्थ–स्त्रीको पुन दीक्षा, क्षुल्लकोंको वीरचर्य्या, चमरीके कर्कस केशोंका ग्रहण बताया व छठे गुणस्थानका विपरीत स्वरूप कहा ॥ ३५ ॥

काल भी भिन्न २ है। इस हूमड जातिका मुख्य स्थान बागड देशमें होनेसे तथा वहाँ उस जातिके अधिक दिगम्बराम्नायी प्राप्त होनेसे यह बात अधिकतर ध्यानमें जमती है कि कुमारसेनने हूमड ज्ञातिकी स्थापना की हो। हूमड जातिकी स्थापनाके सम्बन्धमें इतना ही लिखकर यह कहना पडता है कि यह जाति भी बहुत उच्च और प्रवीण हुई है। इस हूमड जातिके अदर २० गोत्र कहे जाते हैं परन्तु १८ के नाम प्रचलित हैं वह इस प्रकार है—

हूमडके १८ गोत्र।

१ खेरजु	७ भद्रेश्वर	१३ सोमेश्वर
२ कमलेश्वर	८ गगेश्वर	१४ राजीयानो
३ काकडेश्वर	९ विश्वेश्वर	१५ ललितेश्वर
४ उत्तरेश्वर	१० संखेश्वर	१६ कासवेश्वर
५ मन्त्रेश्वर	११ आचेश्वर	१७ बुद्धेश्वर
६ भीमेश्वर	१२ चाचनेश्वर	१८ सघेश्वर

ये नाम कैसे प्रसिद्ध हुए इसका हमारे पास कोई इतिहास नहीं है।

हूमड जातिमे दो भेद पाए जाते है-एक वीसा हूमड, दूसरे दसा हूमड। ये दो भिन्न भेद कैसे हुए इसका भी कोई विश्वास योग्य इतिहास नहीं मिलता है। परतु यह दोनोंही भेदके लोग बहुत अधिक सख्यामे मिलते है, कहीं २ वीसोंसे दसा हूमड बहुत ज्यादा है। तथा दोनोंही भेदके लोगोंके बनवाए हुए व प्रतिष्ठा कराए हुए जिन मंदिर पाए जाते है व दोनोंही समान भावसे श्रीजिन प्रतिबिम्बोंकी प्रक्षाल व पूजन करते हैं। इस सम्बन्धमें एक दूसरेसे कोई

गा नहीं है। इन दोनों भेदोंमें खानपान भी सर्व तरहसे होता है। र्क केवल परस्पर लग्न न होनेका है।

बड़ौदामें वाडी मुहल्लेके दिगम्बर जैन मंदिरके प्रतिबिम्बोंसे ता लगता है कि संवत १६०४में काष्ठासंघी भट्टारक विद्याभूषणके उपदेशसे हुम्बड ज्ञातीय अनंतमतीने श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिष्ठा कराई। लेख यह है—

"सं० १६०४ वर्षे वैशाख वदी ११ शुक्रे काष्ठासंघे नदीतट गच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री विशालकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषणेन प्रतिष्ठित-हूंबड ज्ञातीय गृहीत दीक्षा बाई अनंतमती नित्य प्रणमति।

दूसरे भी इसी मंदिरकी एक प्रतिमाके लेखसे काष्ठासंघी हूंबड जातिका पता लगता है। लेख यह है—

"सं० १६८६ वर्षे चैत्र वदी ३ भौमे भ० श्री रत्नभूषण भ० जयकीर्ति हूंबड़ ज्ञातीय पार्श्वनाथ प्रणमति"

इस लेखके यह भट्टारक काष्ठासंघी है इसके प्रमाणमें एक इसी दिरकी दूसरी प्रतिमाका लेख है—

"श्री काष्ठासंघे सं० १६८६ भ० भूषण भ० जयकीर्ति नरसिंहपुरा ज्ञातीय..."

इस लेखसे नरसिंहपुरा जातिका काष्ठासंघी होना भी सिद्ध होता है।

नरसिंहपुरा जातिके काष्ठासंघी होनेके प्रमाणमें इसी मंदिरकी क और प्रतिमाका यह लेख है—

"संवत १६५८ मा० सु० ५ दि० श्री काष्ठासंघे भ० श्री विश्वभूषण गुरूपदेशात् नरसिंहपुरा ज्ञातीय भालण डोड़ा गोत्रे सा'सिं-दे भा० महायोजिता.."

परतावगढके हूमड। हूमड ज्ञातिका मुख्य केन्द्रस्थान परतावगढ़ राज्य है, उसमें इस जातिके बहुत प्रतिष्ठित विद्वान आदि हो गए हैं व अब भी कई उच्च राज्य कर्मचारी हैं। परतावगढ शहरसे ८ मील देवगढ एक पुरानी वस्ती है। इसको बीकाजी महाराजने स० १६१० में बसाया था। कई पीढियोंतक यह बडाभारी नगर रहा था जिसका प्रमाण यह है कि यहॉ अमृतसागर, केसरविलास, परतापवावडी आदि कई मनोहर वापिकाएं हैं व पुराने मकान हैं। यहॉ दिगम्बर जैनियोंका एक बडा आलीशान मदिर है जिसकी प्रतिष्ठा सं० १७७४ मे हुई थी उस समय हूमडोंके यहा ८०० घर थे। इस मंदिरके मूलनायक श्री मल्लिनाथ स्वामी है। मदिरके प्रतिष्ठाकारक वर्षावत रिषभदासके पुत्र वर्द्धमानजी हूमड हुए है। यहॉं एक शिलालेख है उससे पता लगता है कि मूलसंघी भट्टारक रत्नचंद्रके उपदेशसे हूमड ज्ञातीय मंत्रेश्वर गोत्रधारी सघवी वर्षावतके पुत्र वर्द्धमान आदिकोंने प्रतिष्ठा कराई। हमारे चरित्रनायकका जन्म जिस मंत्रेश्वर गोत्रमे हुआ है उसीमे यह वर्षावतजी भी थे।

सारांश नकल लेख।

"ऊ स्वस्ति . विक्रमादित्य समयातीत स० १७७४ वर्षे शाके १६३९ प्रवर्तमाने माह सुदी १२ रवि श्री देवगढ नगरे महाराजाधिराज महारावत श्री पृथवीसिंहजी विजयी राज्ये कुंवर श्री पहाडसिंघ विराजमाने श्री मूलसघे बलात्कारगणे श्री कुद० भ० श्रीरत्नचद्र त० भ० श्री हर्षचद त० भ० श्रीशुभचंद्र त० भ० श्री अमरचद्र त० भ० श्री रत्नचद्र गुरूपदेशात् श्रीमत् हूबड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

वर्षावत भार्या नानी रुक्मणी तयो पुत्र स० वर्द्धमान भ्राता
त साह इदर खेमजीसा चद्रमानजी गोविंदजी वल्लमजी,
ल्लिनाथप्रासाद प्रतिष्ठा महामहोत्सवे सह करावित।
र्द्धमानजीके वशमें किशनजी अबसे २९ वर्ष पहले हो गए है
दो महल अब भी यहाँ मौजूद हैं एकमें राज्यका डॉक्टर रहता है।
इस वड़े मदिरजीमें एक वेदी श्री आदिनाथ स्वामीकी है इसकी
ा हूंवड ज्ञातीय अगस्त्य गोत्रे पाडलिया धारी शाहजी रघुनाथ-
स० १८३८में कराई थी उस समय यहॉ सामतसिंहजीका
था। इनके वंशमें शाह हीरालाल जागीरदार अब भी मौजूद
इसी वडे मदिरजीमें एक सहस्त्रकूट चैत्यालय है जिसकी प्रतिष्ठा
लिया गोत्र धारी फौजके कामदार राघोजी वख्सीने कराई
इनके वशमें अब रामलाल फूलचंद बम्बईमें एक धनिक व
ष्ठित व्यापारी है। देवगढमें हूमड जैनियोंका इतना जोर था कि
की ओरसे यह आज्ञा हो गई थी "कि दिगम्बरियोंके १० दिन
ाक्षणी व श्वेताम्बरियोंके ८ दिन पर्यूसन व सालमें २४ चौदस,
आठम व वर्षके पहले दीतवारके दीन कोई पशुघात न करे,
मदिरा बेची जाय।" इस भावार्थका शिला लेख स० १७७४
ाख सुदी १२ का श्रीपृथ्वीसिंहजी महाराजका देवगढके खास
क बाजारमें अब भी लगा हुआ है।

अब यहाँ दिगम्बर हूमडोंके केवल ९ घर रह गए है क्योंकि
ल इसकी वसती उजाड है। एक ग्रामके समान है। मनुष्य
ख्या २० है। मुखिया भाई कानजी कूपा, मगनलाल गाधी,
ीलाल दोसी और बर्द्धमान खापरा है।

परतावगढ शहरमें ८५०० कुल वस्ती है । जिसमें १५०० जैनी है इनमे १००० दिग०, ३०० श्वे०, और २०० स्थानकवासी है । इन दिगम्बरियोंमें थोडेसे नरसिंहपुरा जातिके हैं जिनका १ जूदा मदिर है शेष सर्व हूमड है। इनके ३ मंदिर बडे २ आलीशान और सुन्दर है । पाडलिया गोत्रधारी संवत् १७००के अनुमान जीवराजजी कामदार बडे प्रसिद्ध हुए उनके बाद क्रमसे बर्दुवानजी, सूरजी, लानजी, कपूरजी, शिवजी, नवलचदजी, जोधकरणजी प्रधान पदधारी हुए।उनके पुत्र कानजी परतावगढ राज्यकी ओरसे जोधपुरमें वकील है। जोधकरणजीके बडे भाई जोधराजजी भी प्रधान हुए, उनके पोते एक मुन्नालाल है जो वर्तमान महाराज कुवरके प्राइवेट सेक्रेटरी है । दूसरे पन्नालालजी है जो मंगरा जिलेमे हाकिम रह चुके है।

इसी गोत्रमे सखारामजी प्रधान हुए है इनकी सन्तान शाहजी चम्पालाल हैं जो जातिमे मुखिया व कौसिलमें काम करते है। इसी गोत्रमे लालजी प्रधान हुए है उनके वंशमे शाहजी रत्नलाल अब मौजूद है यह गोम्मटसार समयसार आदि जैन शास्त्रोंके अच्छे मरमी है ।

हूमड ज्ञातिकी तलाटी अडकमें शाह जडावचदजी प्रधान हुए है इन्हींके वशमे पडित किशनलाल एक अच्छे जैन विद्वान थे जो हालहीमें स्वर्ग पधारे है । वडी अडकमें शाहजी शकरलालजी प्रधान होगए है जिनके वंशमे पन्नालालजी आदि राज्यमे हेडक्लर्क है ।

श्री गिरनारजी तीर्थमे दिगम्बर जैनियोंके प्रभावको विस्तारनेवाले वडी कस्तूरचदजी हूमड यहीं हो गए हैं । यह धनाढय, धर्मात्मा व शास्त्रोंके ज्ञाता भी थे । धर्मसे अत्यन्त प्रेम करते थे । प्रसिद्ध

जैन विद्वान भागचदजीकी सगति व वैय्यावृत्तिसे आपको बहुत लाभ होता था। इनके वशमें बडी मन्नालाल और हीरालाल विद्यमान है।

स० १९१२ मे सेठ लालजी बडीके खानदानके लोग सेठ कस्तूरचदजी हीरालालजी आदिने गिरनार तीर्थके मंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया तथा एक नवीन मंदिरकी स्थापनाकर उसकी प्रतिष्ठा स० १९१९ मे कराई।

इस समय परताबगढमे घीयावाला, रतनलालजी जुवा और साह कस्तूरचदजी तलाटी हूमडोंमे मुखिया है।

हूमड जातिके लोक बागडसे निकलकर कुछ मालवामे व कुछ बम्बई, शोलापुर और गुजरातमे आकर बसे है।

शोलापुरके हूमड़ोंने ऐश्वर्यमें विशेष उन्नति की है। वहाँके प्रसिद्ध सेठ हरीभाई देवकरणने श्री मागीतुगी, सम्मेद शिखर, पालीताना आदि तीर्थों पर मंदिर जीर्णोद्धारे व धर्मशाला आदिमें बहुत द्रव्य खर्च किया है तथा प्रत्येक धर्मकार्यमें दानार्थ अग्रगामी रहते हैं। इनके वशके सेठ वालचंद, हीराचद और फूलचद तीनों भाई उदारचित्त है। इसी तरह सेठ रावजी नानचद, सेठ हीराचद अमीचद, सेठ सखाराम व हीराचद नेमचद, सेठ नाथा रंगजी गाधी है। इन्होंने भी श्री गजपथा, तारगा, गिरनार, पावागढ आदि तीर्थो पर श्री जिन मदिर निर्मापण आदिमें बहुत द्रव्य खर्च किया है। सेठ हीराचद नेमचद विद्वान और शास्त्रके मरमी तथा जैन जातिके उत्थानमें मुख्य भाग लेनेवाले है। सेठ नाथा रगजी विद्यादान व शास्त्र प्रचारमें अति प्रेमी हैं। आपके वशके सेठ

शोलापुरमें हूमडोका प्रभाव।

गंगाराम, रामचन्द्रजी आदिने शोलापुरमें एक दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापित किया है। सर्व हूमडोंकी ओरसे शोलापुरमे चतुर्विध दानशाला अनुमान ४००००) के व्याजसे व ५००००) के व्याजसे ऐलक पन्नालाल दि० जैन पाठशाला है। श्राविकाशाला भी है जिसकी सम्हाल श्रीमती कंकुबाई सुपुत्री सेठ हीराचन्द नेमचन्द करती है आपको धार्मिक ग्रथोंका अच्छा मर्म है।

शोलापुरके सेठोंने सन् १८९५ तक कहाँ२ प्रतिष्ठा कराई उसका वर्णन।

सिद्धक्षेत्र	साल	प्रतिष्ठा करानेवालोंके नाम
१ सम्मेदशिखर	१९३८	पदमसी निहालचद तथा नानचद खेमचद
२ चंपापुरी	१९३३	मोतीचद प्रेमचद तथा जोतीचद नेमचद।
३ पावापुरी	१९५०	रामचद साकला।
४ गिरनार	१९२६	खेमचद उगरचद, पदमसी निहालचद तथा नेमचद निहालचद।
५ पालीताना	१९५१	हरीभाई देवकरण तथा मोतीचद परमचद।
६ मांगीतुंगी	१९१६	पानाचद जोतीचद तथा हरीभाई देवकरण।
७ गजपथ	१९४४	वस्ता खुशाल।
८ तारगा	१९२३	हरिचद, मोतीचद, अभेचद, जोतीचद परमचद।
९ कुंथलगिरि	१९४७	हरिभाई देवकरण, पदमसी निहालचद।
१० सिद्धवरकूट	१९५१	मलुकचद गणेश।
११ पावागढ़	१९४३	गौतमचद नेमचद।

फल्टनके हूमडोंमें सेठ हीराचद अमुलक एक वैरागी धर्मज्ञाता, श्रद्धालु महात्मा हो गए है जिनके रचे हुए भजनोंका बहुत प्रचार है। इसी फल्टनके निवासी हूमड जातिमे उत्पन्न बाल ब्रह्मचारी बाबा दुलीचदजी है जिनकी अब १०० वर्षकी आयु है जिन्होंने आजन्म जिनवाणीकी सेवा की है। जैपुरके तेरापथी बड़े मदिरमे एक बहुत बडा दर्शनीय सरस्वती भडार एकत्र किया है बहुतसे ग्रथोकी विद्वानोंसे भाषा कराई है व अपने हाथसे नकल की है। आप दिनभर अब भी शास्त्रोंको व किसी रचनाको लिखा ही करते है। बहुतसे मदिरोंकी प्रतिष्ठा कराई है। आप मन्त्रशास्त्रके भी मरमी हैं। गुजरातमे हूमडोंका अधिक जोर ईडर तथा सूरतमें है। बागडमें बासवाडाके रायबहादुर सेठ चपालाल विजयचदजी प्रसिद्ध, राज्यमान्य और धनाढय है।

फल्टनमें हूमडोकी महिमा ।

बागड देशवाले हूमडे भी बहुत प्रसिद्ध हो गए हैं। श्री धुलेव केशरियाजीमें प्राय बहुतसी दि० जैन प्रतिमाओंके प्रतिष्ठाकारक ये लोग हुए है। श्री ऋषभदेवके बडे मदिरजीके चारों ओर एक बडा भारी ऊचा कगूरेदार कोट है उसको सागवाडा निवासी हूमड ज्ञातीय कमलेश्वर गोत्रीय दि० जैनी सेठ धनजी करणजीने सवत १८६३में बनवाया है ऐसा वहाँपरके शिला लेखसे प्रगट है (देखो नकल शिला लेख दि० जैन डाइरेक्टरी छपी सन् १९१४ सफा ४७३)।

बागड देशमें हूमड़।

बागड देशके एक दूसरे कमलेश्वर गोत्रीय हूमड द्वारा संवत

१७३४की प्रतिष्ठित प्रतिमा श्री सेत्रुंजय पालीतानाके उस दिगम्बर जैन छोटे मदिरमे है जो पहाडपर है व जिसको अब श्वेताम्बरियोंने अपने कबजेमें कर लिया है उसके शिला लेखकी नक़ल यह है—

" स० १७३४ वर्षे मूलसघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे श्री कुदकुदाचार्याम्नाये भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे श्री पद्मनन्दी तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति शुद्धाम्नाये वागडदेश शीतलवाडा नगरे हूमड ज्ञातीय लघशीरवाया कमलेश्वर–गोत्रे दोशी श्री सूरदास तथा सूरमद तयो पुत्र दोसी सागीता सरताण देतयो· पुत्री .... . . " (दि० जैन डाइ० सफा ८००)

यह भट्टारक ईडर गादीके मालूम होते है। ईडर गादीके भट्टारकोंकी नामावली द्वितीय अध्यायमे दी है उसके अनुसार पद्मनंदीसे क्षेमकीर्ति तक तीनों नाम मिलते है। सकलकीर्तिके पीछे रामकीर्ति तक नाम इस लेखमे नहीं है। केशरियाजी या ऋषभदेवजीका जो मदिर धुलेव जिला उदयपुरमे है उसमे बडे मदिरके चारों ओर जो दालानोंमे वेदियॉ है उनमे दिगम्बर जैन मूर्तियां भट्टारकों द्वारा प्रतिष्ठित है—इनके कुछ सवत व भट्टारकके नाम इस भाति हैं—

सं०	प्रतिष्ठाकारक भट्टारक	स०	प्रतिष्ठाकारक भट्टारक
१७४६	क्षेमकीर्ति	१७३४	यशकीर्ति
१७७२	देवेन्द्रकीर्ति	१७६४	त्रिभुवनकीर्ति
१७५२	सुरेन्द्रकीर्ति		

१७५४—सुरेन्द्रकीर्ति—यह प्रतिमा श्री ऋषभदेवकी श्याम वर्ण है। इस पर जो लेख है उससे प्रगट है कि धुलेवके सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक द्वारा हूमड ज्ञातीय सेठ कानजीकी भार्याने प्रतिष्ठा कराई।

१७४६—श्री शातिनाथ स्वामीकी—इसमें जो लेख है उसमें

मूलसत्र सरस्वती गच्छ सकलकिर्ति, देवेन्द्रकीर्ति, पट्टे श्री कीर्तिद्वारा सूरतवासी हूमड ज्ञातीय विमलदास माणकजी नेमिदास आदिने प्रतिष्ठा कराई ।

इससे भी सूरतके हूमड़ोंकी धनाढ्यता व धर्मज्ञता झलकती है।

१७६४ सुमतिकीर्ति

१७६८—श्री वासुपूज्यस्वामीकी—इसकी प्रतिष्ठा भट्टारक नरेन्द्र-कीर्ति द्वारा महुआ वासी हूमड जातीय साह दादा नानजीने कराई।

गुजरात देशके श्री तारगाजी सिद्धक्षेत्रपर एक चाद सूरजकी देहली है उसके भीतर जो शिला लेख है उससे विदित होता है कि उसे दिगम्बर जैन हूमड ज्ञातीय गाधी नरपति आदिने बनवाया था। जीर्णोद्धार कराया था । उस लेखकी नकल जो पढी गई और जैनमित्र ता० २१ नव० १९०७ मे छपी है सो यह है —

" सवत १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे आचार्य्य कुन्दकुन्दाचार्य भट्टारक श्री शुभचद्र-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरूपदेशात् हूमड़ ज्ञातीय गाधी नरपति भार्या

हूमड़ोंकी वस्ती ।

हूमडोंकी वस्ती अर्थात् मनुष्यसख्या दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी छपी सन् १९१४के अनुसार (देखो सफा १४२०) इस भाति है।

	बगाल विहार	मध्य प्रदेश	राजपूताना और मालवा	गुजरात और बम्बई आहाता	कुल
वीसा हूमड •	×	×	८४६	१७०९	२,५५५
दसा हूमड	३	४९	१०६३९	७३९२	१८०७९

कुल २०६३४

वीसा हूमड़ोंकी विगत।

राजपूताना व मालवामें ८४६ नीचे भाति है (देखो डाइरेक्टरी सफा १२६१)—

ग्राम	सख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	सख्या
उज्जैन	७	झालरापाटन	९०	भीडर	९
उदयपुर	१३०	डुगरपुर	४६	मदसौर	३
कुरावड	१२	धरियावाद	१४	रतलाम	३३
खानपुर	६	धार	४	सलुम्बर	४०
खेमरा	६९	धुलेव	४६	सागवाडा	७०
गलियाकोट	१२	परतावगढ	२४८	सेलाना	७
जावद	३२	भानपुर	२२	कुल	८४६

गुजरात व बम्बईके आहातेमें १७०९ की विगत।

(देखो सफा १२७९–१२८०)

ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या
आसु	७	कुमारगाव	७	घोडेगाव	५
इन्दापुर	२	कुरबानी	१३	चिंचोली	१३
ईडर	९०	कुरवली	४०	जिंती	१४
उमरड	२	केडगाव	६	टेंभुरणी	४
अंतुर्णे	६०	कोराले	११	तिखटी	१२
कडियादरा	९०	खटाव	१८	दहीगाव	५४
करमाला	६४	खडाली	८	देवरगणूर	१३
कलंब	१६	घाटग्याचीवाडी	१	नातेपुते	१११

ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या
नादल	६	विंची	४	लोणन्द	१५
नान्नज	२६	बुध	१	वाखरी	२२
निगडी	४	भोरगाव	२९	वाघोली	७
पलसमडल	१३	भाबुर्डी	१६	विडणी	१०
पाडली	१	भड	४	विहाल	११
पिंपलाचीवाडी	५	भोडयाची वाडी	७	विजापुर	३२
पिंपोडे	१	म्हसवड	१००	वीट	११
पिरलें	९	मगराचे लिंबगाव	२	वेलापुर	२४
पुरन्दावडे	२१	महीमानगढ	३९	शिरसणें	६
पुना	१०	माडवे	१८	शोलापूर	५
पढरपुर	६	माढे	२५	सागवी	६
फडतरी	१	मालखानी	७	सिद्धेश्वर करोली	४०
फलटण	१७५	मेडद	१८	सिपुरे	३
फोंडशिरस	२८	लडल	१०	हातुरने	११
बम्बई	१५०	लवग	१२	हिंगणगाव	७
बारामती	१०	लासुर्णे	४०		
बिधवन	१२	लिम्बझागर	६	मीजान	१७०९

नोट—सूरतमें वीसा हूमडकी ५० की सख्या है यह डाइरेक्टरीमें लिखनेका छूट गया है।

विगत दसा हूमड़।

बंगालआहाता—सम्मेदशिखरमे ३ (सफा १३७२।

मध्यप्रदेश। सफा १३२२

बुरहानपुर ३३, मूर्तिजापुर ७, सावरगाव ९—मीजान ४९

राजपूताना मालवा (सफा १३५९)

ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या
आजनो	१६०	खोटन	२९	जुहावा	१२
आणोट	२७९	गढा	९०	जेठाना	८
आतरी	३९	गढी	१९०	झाडोल	२०
आरोन	४९	गनोडा	४९	झाबूआ	३९
उदयपुर	४०	गलियाकोट	२००	ठाकरणा	४९
ओगना	८०	गाठोल	९००	डडूका	१९९
ओवरी	१०१	गामडा	३	डुगरपुर	१९०
कचनार	८	गावडी	१०९	ढालवाडा	६
कनेजरा	१९०	गुवाडी	१९	तलवाडा	३००
कुआं	९०	गोरना	४०	तेजपुर	७
कुलयारी	२२	गगाधार	१	थादला	८०
कुवाला	१६	घाटागाव	२०	थोबावाणा	१९
कुशलगढ	४२५	घाटोल	३४०	दडूका	१५०
कोकापुर	२५	चीतरी	६०	दीवडा	१२
कोठडा	२३	छानी	२००	देवगढ	२०
कोटरी	१०२	जवास	३०	देवल	१६
खमरा	१४०	जाडोल	७	धरियावाद	२७०
खाकड	७८	जावद	११	धुलेव (ऋषभदेव)	४
खूटा	३६	जावरा	५	नरवारी	१८६

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
नवागाव	१९०	बावलवाडा	८०	मोर	८
नादवेल	२५	बासवाडा	७०	रतलाम	९
नेनोर	१९	बीसाखेडा	३६	राणापुर	९०
नोगाम	२००	बीसीवाडा	७०	रियावन	१४
प्रतापगढ	११९	बोरी	१००	रीचा	१६
पचलासाखुर्द	१५	भाउगढ	५८	रोयडा	३
परतापुर	३५०	भानदा	४०	सनावदा	३५
परासिया	९५	भोलड़ा	२००	समेजा	२०
पाडवा	७०	भूद्दर	७०	मलुमर	१२५
पाड़सोला	२८७	मदसौर	१०४	सलोटा	५५
पाडा	१६	मनासा	२२	सागवाडा	४५०
पारोदा	१५०	माटोच	४२	सालिमगढ	२८
पीठ	७५	मावता	६०	सावल्ना	२६९
बनवानी	८	मुगाना	९६	सिंगोली	३
बडोदिया	१५०	मुबई	७	सिंराना	१०
बदराणा	२२	मेतवाला	३०	सिडोदिया	६०
बरधा	१०	मेलखेडा	५०	हनुनाद	१२
बागीदौरा	४००	मोगडा	५०		
बावनगजाजी (सिद्धक्षेत्र)	१	मोटा पचलासा	१५	मीजान	१०६३५

दसा हूमड बम्बई आहाता ।

(सफा १३७६–७७–७८–७२)

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
अम्मोड़ा	१२	उपाले	४	कुरोली	३
अमनगर	१२५	उमदी	११	कुसुंबा	११७
अक्कलकोट	६८	खोरान	२००	केम	२३
आक्लून	८	कण्हेरगाव	२	कोथले	१
आगरखेड	३१	करकम्ब	३४	कोरफल	१
आगोती	७	करजगी	२१	कोराले	४
आनगर	१०	करमाले	२९	कोरेगाव	१३
आप	१३	करियाली	६	कोल्हापुर	५
आलद	११६	करोल	७०	कोलेगाव	१
आष्टी	५३	कल्मन	१२	खनीपुर	३०
आष्टे	३	कल्स	७	खरडा	७१
आसु	९	कलब	१०	खरेगाव	१५
इन्डी	९७	कव्हे	१४	खाडज	१६
इडर	१५०	किणी	८	खुटे	१०
इन्दापुर	९	कुकेरी	२९	खेरोल	५
उज्नी	४	कुथलगीरी	६	खोटाना मुवाडा	२०
उजेडिया	१३५	कुमारगाव	९	खडाली	१३
उपलाई (धाकटी)	१४	कुमारी	३	गढोडा	२०
,, (थोरली)	४	कुर्डुवाडी	३०	गणेगाव	१६
उपलवाटे	१४	कुल्ल	१२	गारोले	८०

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
गिर्वी	२८	जेऊर	२	दारपाल	२४
गुजोटी	२५	जेजले	३	दालवडी	४
गुणवडे	१६	जेरूर	१२	दाहोद	१००
गुलचे	८	टेंमुर्णी	८	दूधनी	३०
गुलवर्गा	४१	ठोंग्याची उपलाई	१२	देराले	२१
गोतली	१९	डोणजे	१२	देलवाड	२१
गोगा	४०'	डोरलानी	१७	धमनार	४
गोटी	९	तटवेल	१	धाराशिव	२६
चडचण	१९	तडरगाव	६४	धारीसणा	४०
चिकमण्णूर	१	तलदगे	२	धूलिया	१०
चितरोडा	३०	तलोद	२१	न्हावी	२
चुवली	३	तादुलवाड़ी	२	ननानपुर	६१
चोपडे	१००	तावे	६	नरखेड	१
छाला	४०	तारापुर	१३	नखणे	८
जवलगी	१५	तुलशी	१	नरोंने	८
जवले (सोलापुर)	७०	तेभाई	१६	नल्दुर्ग	८
जवले (निजामुद्दीन)	६	दगड	१	नागणपुर	९
जवले (अट्टी)	३६	दहीगाव	४१	नागणसुर	९
जवलगी	१७	दहीगाव	२	नातेपुते	७
जाबुली	२१	दहीटन	११	नादगाव	१'
जिगुर्डी	२	दहीवडी	११	नालज	१२
जिंनी	३	दहेल	१	निंबगाम	८४

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
निंबरगी	२६	पिंपोडे	६	मालेक	७०
निंबरग	२०	पुलुन	१३	भावनगर	५०
निर्गुडी	२	पूना	२	भूम	१६
नेकाडा	४०	पेणुर	१७	भुथार	४
नेरी	२	पंढरपुर	८२	भोंसे	५
नदुर	३	फलटण	२४८	भंडाद कवठे	१८
प्रातिन	४५	बटोली	२०	म्हमवड	१९
पणदूर	३९	बबई	२५०	म्हेमगाव	६
परिले	२१	बल्सग	३४	मउ	६०
परडा	३०	बाकरोळ	१००	मगरूल	३०
पलसदेव	३३	बार्सीटाउन	३६	मरोडे	६
पाग्री	३	बारामती	७७	मल्वटी	२०
पापरी	९	बालीसणा	१०	ममले	४
पारोला	१२५	बावडे	२२	महूद	२०
पालदी	३	बावी	१०	माडल	३५
पालिम	२५	बिबि	४	माडवी	१९
पिंगली	४०	बुध	१३	मालेगाव	१०
पिठेवाडी	१	बेवले	१८	मुरुम	२३
पिंपरज	६	बोराले	२०	मेंदरगी	९१
पिपरे	१	बोरी	१७	मोडनिंब	९३
पीपलनेर	३४	भडगाव	७	मोहाडी	१७
पिंपलनेर	३	भाडगाव	१३	मोहोळ	५०

ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
मंगलवेढे	१५	वडगाव	३१	शिरसणे	२
मट्ठप	६	वडगाव (खरडे)	७	शिरसाले	६८
मुधोल	२	वडगाव (मट्ठप)	३	शिरसाव	१५
येवती	७	वडाले	२२	शिराल	११
रखीयाल	३०	वडासण	३६	शेटफल	८
रणमोडवाडी	४	वडूज	१९	शेटफल	२४
रणासण	४०	वडराट	३०	शेन्दरी	४०
रानाके	८	वरखेडा	३१	शेन्दूरणी	३५
राडेल	१३	रवड	९	शेरीचीवाडी	९
रानकुवा	१०	वाखरी	९	शेलगाव	४
रोंपाले	३	वागदरी	१८	सोलापुर	३००
लउल	४९	वाग़ोली	१०	सदानामुवाडा	३०
लच्छन	९	वागर	८	सरडे	६
लाकरोडा	६९	वाडखेला	४	साटावी	२२
लाखेवाडी	७	वालवट	२	सागवी	४
लासुर्णे	४	वालूज	६	साडवेल	९
लिंबगाव	२८	विडणी	२९	सापडे	१२
लिंबलक	२३	विजपुर	३	सामोडे	३
लिंबुरे	७	विजापुर	१०	सायरा	९
लगेर	११	वेलापुर	६	सासकल	३
लोणंद	४	सिंदेवाडी	४	सीतवाड	२६
		शिरबल	१२		

ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या	ग्राम	सख्या
सुरवडी	९	सोनासण	११९	हिराली	६
सेलगाव	१४	सोनगाव	६	हिवले	१४
सोनगाव	४	हरीश्वरपीपलगाव	६६	होल	४
सोनगिर	१२१	हातफलगडा	१२		
सोनारी	५२	हातूर	७	मीजान	७३९२

नोट—सूरतमे दसाँ हूमडकी सख्या १५० की है । यह भी डिरैक्टरीमें लिखना छूट गया है ।

शेठ माणेकचन्द्जीका वश–परिचय

उदयपुरसे २८ मीलपर एक **भींडर** नामका छोटासा देशी राज्य है । जिसकी अब वार्षिक उपज अनुमान रुपया २ लाखकी है। यद्यपि अब इसमे २००० घरोकी वस्ती है परतु १०० व १५० वर्ष पहले इसमे ७ या ८००० घरोंकी वस्ती थी जिनमे चौथाई वस्ती जैनियोंकी थी। अब भी वहॉ जैनियोंके ४०० घर है, दिगम्बर जैन मदिर तीन जब श्वेताम्बरी मंदिर १ है। किसी समयमे यहॉ दिगम्बर जैन हुमडोंके बहुतसे घर थे परतु व्यापारादिके निमित्त परदेश जानेके कारण अब यहॉ केवल १० घर ही देखनेमे आते है।

हम जिस समयकी बात कहते हैं, उस समय **भींडर नगर** बहुत रमणीक था । जैनियोंकी प्रबलताके कारण वह एक अहिंसामई राज्य था। कही पर पशु वधका नाम भी नहीं सुन पडता था। मासका किसीको दर्शन नहीं होता था । मद्य पीना तो दूर रहा

उसका कोई नाम भी नही लेता था। लोग सत्यवादी व नीति परायण थे। अपने पुण्य कर्मके उदयसे जो उपार्जन करते थे उसमें सन्तोष पाते हुए तृप्त थे। तौ भी निरुद्यमी नहीं थे। जिन मदिरोंमे नरनारी धर्ममें लौलीन, विनयको प्रदर्शित करनेवाले तथा अर्हंत, साधु और शास्त्रभक्तिमे तन्मय थे। श्री जिनेन्द्रके बिम्बका नित्य अभिषक करके जलचन्दनादि अष्ट द्रव्यसे बहुत ही विनय और सार गर्भित अर्थ सूचक छन्दोंको पढ़ते हुए पूजन होता हुआ दिखलाई पड़ता था। पूजनमे ऐसे लीन हो जाते हुए नरनारी मालूम पड़ते थे कि उनको और किसी बातकी मानो खबर ही नही है। पूजनके पीछे शास्त्र सभामें सर्व ही स्त्री पुरुष विनय सहित बैठकर परोपकारी धर्मात्मा शास्त्रमर्मी वक्ताके द्वारा जिनवाणीको सुनकर अपना हृदय पवित्र करते थे। शास्त्रके पीछे मदिरजीके बाहर पात्र भक्तिके निमित्त धर्मात्मा श्रावकोंको अपना घर पवित्र करनेके लिये आमत्रण देते थे। और भक्ति पूर्वक जघन्य व मध्यम पात्रोंको दान करके आल्हाद भावसे परम पुण्य बाधते थे। कभी २ नगरमें कोई मुनि महाराज व ऐलक, क्षुल्लक भी आ जाते थे उस समय श्रावक जन भोजनके समय द्वारापेक्षण करके प्रतिग्रहण करते थे। आहार एकके यहाँ होता था पर आनन्द सब मानते थे।

शास्त्रस्वाध्यायमें व सामायिक या जापमें दत्तचित्त श्रावक व श्राविकाएं दीख पड़ती थीं। शामको मदिरजीमें अनेक जन ध्यानमें लीन दिखलाई देते थे। यद्यपि यह कोई व्यापारी मडी नहीं थी तौ भी लोग सब धर्म कार्य व खानपानसे निवट कर बाजारमें जाते थे तो वहा एक मन हो न्यायपूर्वक लेन देन करते थे। शामको

घंटा दो घंटे पहलेसे ही लोग घर पर आकर संध्याका भोजन कर लेते थे जिससे रात्रिको भोजन न करना पडे ।

और व्यापारोंके साथ वहॉ अफीमका व्यापार भी होता था । जबसे चीन देशमें अफीमका ज्यादा व्यवहार होने लगा तबसे भारतको अफीम पैदा करके चीनको भेजना पडा। उस समय चीनको बहुत अफीम जाती थी । भींडरमे भी अफीमकी खेती होती थी और व्यापारी लोग अफीम एकत्र कर बाहर भेजा करते थे।

विक्रम स० १८४०के अनुमान **वीसा हूमड** ज्ञातिमे **मंत्रेश्वर गोत्रधारी** एक साधारण व्यापारी गृहस्थ भींडरमे निवास करते थे जिनका नाम **शाह गुमानजी लालजी** था । यह साधारण श्रावकके धार्मिक कृत्योमे सावधान, शरीरके दृढ, उद्योगी और विचारशील थे।

भींडरमें इनके सिवाय और भी कई बडे २ अफीमके व्यापारी थे । शाह गुमानजी उनकी मंडलीमे जब जाके बैठते थे तब अफीमके व्यापारकी बहुतसी बातें सुनते थे ।

भीडरसे सूरत आनेका कारण।

हिन्दुस्तानके प्राय हर विभागसे अफीम आकर सूरतके बाजारोमे जमा होता था । और वहॉसे जहाजोंके द्वारा चीन देशको जाया करता था । इससे गुमानजीके कानमे **सूरत** नगरके व्यापार व वहॉकी सुन्दरताकी भनक हरसमय पडकर उनको यह लोभ दिलाती थी कि सूरतमे स्वय जाकर अफीमका काम करना चाहिये । यहॉ पडे २ साधारण उपज होती है जिससे पूरा गृहस्थीका खर्च भी नही चलता है । वास्तवमे जो उद्योगी होते है वे द्रव्योपार्जनके योग्य मार्गोको सदा ही ढूढा करते है । और वे

क्त मनोरथ भी होते हैं । पुरुषार्थी मनुष्य यदि पुण्यके मद उदयसे धनशाली न भी होवे तौभी अपने खर्चके लायक धन अवश्य पैदा कर लेता है । वह कर्ज लेना बडा भारी फन्दा समझता है । आलसी मनुष्य सदा दु खी रहता है । वह उद्योग करनेके बदलेमें बहुत दु ख व अन्यायसे अपना खर्च चलाकर अपने शरीरकी भी रक्षा करनेमे असमर्थ होता है । यदि उसके आश्रय कुटुम्ब हो तब तो बहुत ही कष्टमे आप भी रहता है और परिवारको भी रखता है ।

साह गुमानजी पुरुषार्थी थे । इनका मन दिनपर दिन सूरत देखनेको ललचाने लगा । इन्होने यह भी सुना था कि आजकल बहुतसे अंग्रेज लोग सूरतमें आकर खूब व्यापार कर रहे हैं तथा उन्होंने अपनी सत्ता ऐसी जमाई है कि सूरतके किलेपर अंग्रेजोंका झंडा गड गया है तथा नाम मात्र मुगलोंका भी है । तथा नवाब अचन जो सूरतके नवाब थे वे बिल्कुल अंग्रेजोंके हाथकी कठ पुतली होकर रहे और उनके पीछे जो नवाब हफीजुद्दीन हैं वे भी उन्हींके हाथमें हैं । गुमानजी जिन्दे दिलके मनुष्य थे । बारबारकी रगडसे जैसे पत्थर घिस जाता है, बारबार पाठ करनेसे जैसे विद्यार्थीको पाठ पक्का हो जाता है, बार बार जाप करनेसे जैसे भाव निर्मल हो जाते हैं, ऐसे ही पुन पुन सूरत नगरकी चर्चाने गुमानजीके दिलको सूरत जानेके लिये पक्का ही कर दिया । एक दिन आप श्री जिन मंदिरजीसे आकर रात्रिको बैठे २ विचारने लगे कि यहाँसे सूरतकी यात्रा हम अकेले करें कि कुटुम्बके साथ करें । मनमे यही भाव आया कि परदेशमें अकेले जानेसे अपनी अर्धाङ्गिणीके साथ जानेमे बहुत आराम है । क्योंकि भोजनादिकी चिंतासे छुड़ाकर घरहीके समान सर्व

प्रकार आराम देनेवाली स्त्री है । पत्नी सहित पति जंगलमें भी हो तब भी वहाँ घरसाही आराम है और यदि पत्नी रहित पति व पति रहित पत्नी किसी ऊँचे बडे भारी रत्न जडित महलमें भी रहते हों तो एक दूसरेके चित्तको साता नहीं । वास्तवमे पत्नी और पतिके युगलको ही गृहस्थ कहते है और यह एक दूसरेके सहायक है । पतिका काम बाहर घूमकर द्रव्य लाना है, पत्नीका काम आमदनीके भीतर घरका प्रबन्ध करना, सुन्दर स्वादिष्ट शरीरको लाभकारी भोजन तयार करना, वस्त्रादिको सवारना, घरके खर्चका हिसाब रखना, घरकी सफाई रखना, बच्चोंको पालकर प्रवीण करना, पतिको अपने मधुर मुखके हास्यमई व मिष्ट वाणीसे जैसे चद्रमा कुमुदनीको प्रफुल्लित करे ऐसे रजायमान करना, पतिके गृही धर्मके आचरणके पालनमें सहायता देना, व समय पाकर शिल्पादि द्वारा कारीगरीकी चीजें बनाना, तथा कभी काम पड़े और घरका खर्च अधिक हो तो उनको बिकवाकर घरका काम चलाना आदि है। सच्ची पत्नी पतिके जीवनको आदर्श रूप बनानेमें पूर्ण सहकारी होती है ।

गुमानजीकी स्त्री पतिव्रता थी–पतिसे अतिशय प्रेम करती थी–उनके मुखसे उनके मनकी बात समझकर उनके कहनेके पहले ही सर्व काम तय्यार कर देती थी, धर्ममें भी सहायक थी, रसोई भी शुद्ध बनाती थी, कुदेवोंकी भी भक्त न थी। ऐसी स्त्रीके प्रसंगको गुमानजी क्षणभर छोडना नही चाहते थे। यद्यपि गुमानजीके चित्तमें एकदफे यह बात आई कि यहाँसे चौगुणा खर्च सूरत नगरमे है । कदाचित वहाँ हम आमदनी ज्यादा न कर सके तब हम तो चने फाककर ही काट लेंगे परन्तु स्त्री होनेसे बडा भारी खर्च करना पडेगा तौभी आपने विचारा कि हमारी स्त्री बडी ही संतोषप्रिया

है। यदि हम सूखा खाएँगे तो उसे भी कोई इनकार न होगा। ठहरनेको मकान तो हमें रखना ही पडेगा इससे हर तरह साथ ले जाना ही अच्छा है। तीसरे साहजीने यह भी विचार किया कि हमें बैल गाडी करके ही जाना है। हम दोनों एक गाडी कर लेंगे और धीरे २ रास्तेमें भगवानके मंदिरोंके दर्शन करते हुए सूरत पहुंच जायगे।

ऐसा दृढ संकल्पकर विक्रम संवत १८४० अर्थात् ई० सन् १७८३में गुमानजी सपत्नी सूरत नगरको प्रस्थान कर गए। अपने रहनेका मकान अपना ही था उसे अपने कुटुम्बियोंके सुपुर्द कर दिया। अब भी यह मकान भींडरमें मौजूद है और गुमानजीके ही कुटुम्बीजन उसमें बास करते हैं।

थोडे दिनोंमे आप सूरतमें आ पहुंचे और वहाँके श्री चन्द्रप्रभुके बड़े जिनमंदिरजीमें जो अब चन्दावाडीधर्मशालाके पास है दर्शन करनेके लिये गए। भींडरमें गुमानजी एक छोटेसे अफीमके व्यापारी थे। इनकी सीधी आढत सूरतके किसी व्यापारीसे नहीं थी। आप दर्शन करनेके बाद जाप देकर स्वाध्याय करने लगे। पासमें और भी श्रावक शास्त्र पढ रहे थे। उन्होंने इनको मेवाड देशका निवासी तथा धर्मात्मा और चतुर जान पूछा कि आपका कहाँ निवास है और कैसे आना हुआ? गुमानजीने अपना सब हाल सरल मनसे कह दिया। व श्रावक आजकल कैसे रूखे मनके न थे, परंतु वात्सल्य गुणके धारी थे। इनको एक श्रावक बडे आदरसे अपने घर ले गए और हर प्रकारसे खातिर की। गुमानजी अपने साथ अफीम भी लाए थे सो इनके सुपुर्द की। यह भी अफीमके

सेठ माणेकचन्दके पितामहका सूरत आना।

व्यापारी थे। भीडरकी ताजी अफीमको देखकर गुमानजीसे भाव चुकाकर सबकी सब खरीद ली। गुमानजीको इस सौदेमे दुगनेसे ज्यादा लाभ हुआ।

उसी मंदिरजीके निकट एक छोटासा एक एकमजला मकान खाली पडा था। उसीको भाडे लेकर गुमानजी सपत्नी रहने लगे और बाजारमे अफीमका व्यापार करने लगे। अब यह भीडरसे स्वयं अफीम मंगाते थे और अच्छे भावोंसे बाजारमे बेचते थे।

अब ये दोनो बडे सुखमे रहने लगे। भीडरमे जो खचकी तंगी रहती थी वह भी मिट गई। यह अपने निकटके कुटुम्बियोंको भी खर्चके लिये भीडर रुपया भेजने लगे और कुछ दान पुण्य भी करने लगे। पूर्वोपार्जित पुण्यका इतना तीव्र उदय नही था जिससे लक्षपति आदि तो नहीं हुए पर वर्षमे कुछ दान पुण्य करनेके सिवाय दोसौ चारसौ रुपये बचा भी लेते थे।

साह गुमानजीको पुत्रोका लाभ।

गुमानजीके दिन सूरतमे अपनी पतिव्रता स्त्रीके साथ बड़े ही आनन्दसे बीतने लगे। सूरतमे इनको बहुत दिन रहनेके पीछे हीराचंद और बखतचंद दो पुत्ररत्नोका लाभ हुआ जिनमे हीराचंद बडे और बखतचंद छोटे थे।

साह गुमानजी बडे विचारशील थे और ब्रह्मचर्यका बहुत खयाल रखते थे। और उनका लग्न भी प्रौढ अवस्थामें हुआ था, बाल्यावस्थामे नहीं। यद्यपि भीडरमे बालविवाहका रिवाज भी था पर वह धनाढ्योंमे था। गुमानजी एक साधारण गृहस्थ थे इससे

इनका विवाह युवावस्थामे हुआ था और उसीके एक दो वर्ष बाद ही यह भीडरसे सूरत आकर रहने लगे थे।

गुमानजीने सूरतमे जिस घरका आश्रय लिया था उसको छोडा नही। आपने और कोई घर भी नही बनवाया। उसी घरको उसके मालिकसे खरीद लिया और उसीमें आनन्दपूर्वक अपना जीवन विताया।

साह गुमानजीका अपने पुत्रोंके सम्बन्धमें यह विचार था कि यह धर्मके श्रद्धावान हो और अभिषक पूजन जप व स्वाध्यायमें सावधान हो, कामके योग्य हिसाब किताब व लिखना पढना कर सके और व्यापारमे कुशल हो जावे, अतएव घरके पास श्री बडे जिन मदिरजीमें जो पडित रहते थे उनके पास स्तुति, दर्शन, भक्तामर आदि पढवाते थे और दिनमे देशी पाठशालामें साधारण प्राथमिक शिक्षा लेने भेजते थे। जिस समयकी यह बात है उस समय प्राय बालकोंको पढानेका ऐसा ही कायदा था। धर्मका ज्ञान परोपकारार्थ देनवाले कोई न कोई धर्मात्मा जिन मदिरमे अवश्य तय्यार रहते थे। बहुतसे मदिरोंमे पडित या ब्रह्मचारी रहते थे जिनका पठन पाठन ही मुख्य काम होता था। हीराचन्द बुद्धिके तीव्र, उत्साही और सुआचरण व आज्ञापालनमें दक्ष थे जब कि वखतचदकी बुद्धि मद थी।

थोडे ही दिनोंमे जब हीराचद हिसाब किताबमे पक्के हो गए तब गुमानजी इनको अपने साथ व्यापार सिखानेके लिये बाजारमे ले जाने लगे। वास्तवमे व्यापार भी विना सिखाये व विना उसमे बुद्धि प्रवेश किये नही आता है। प्राय मारवाडी लोग व्यापारमें कुशल इसी कारण होते है कि उनके पिता उन्हें छोटी उमरसे ही

व्यापार करनेकी रीतिया वताते रहते है, जो उनके मगजमे जम जाती है। यद्यपि उनमे यह दोप अवश्य होता है कि वे और ऊची शिक्षा अपने पुत्रोंको देते ही नही। व्यापारी शिक्षाके साथ साथ उनको दिनमे २ व ३ घंटे अच्छे शिक्षक द्वारा साहित्य, नीति व धर्मकी शिक्षा अवश्य दिलानी चाहिये। जहाँ तक देखा गया है जो बालक अपने १० व १५ वर्ष स्कूलकी सगतिमें विताते हुए विश्व विद्यालयकी परीक्षाओंमे उत्तीर्ण होनेके झझटमें लगजाते हैं वे फिर अपने मनको देशी व्यापारकी ओर नही झुका सक्ते। फिर व्यापारकी ओर झुकना उनके लिये कठिन हो जाता है यद्यपि असंभव नही है।

हीराचंदजीका स्वभाव

हीराचंदका चित्त व्यापारमे लग गया और यह भी पिताकी भाति अफीमका व्यापार करने लगे। थोडे दिनों बाद वखतचंद भी पिताके साथ व्यापार-को जाने लगे पर इनका मन जैसे पढनेमें कम लगता था वैसे व्यापारमें भी न लगा। इनको बाजारकी मिठाई खाने व मेले तमाशे देखनेका अधिक शौक था जब कि हीराचंद अपने पिताकी भाति शुरूसे ही विवेक बुद्धि थे। माता जो घरमे शुद्ध भोजन व मिठाई पकवान बनाती थी उसीको लेकर सतोपी रहते थे। मेले ठेलेका भी शौक न था। सवेरे शाम साधारण धर्म ध्यानमें चित्त लगाकर आनन्दित रहते थे।

गुमानजीको इस बातका अवश्य विश्वास था कि वाल्यावस्थामें विवाह करना बहुत हानिकारक होता है। जब तक पक्ववीर्य्य न हो तब तक विवाहका ख्याल भी पुत्रके दिलमें नहीं आना चाहिये

और उमे वीर्य रक्षा और ब्रह्मचर्यका पूरा २ ध्यान रहना चाहिये। इसी कारण गुमानजी समय २ पर अपने पुत्रोंको समझाते रहते थे कि वीर्य रक्षाके बहुत बडे लाभ हैं। युवावस्था तक इसको भले प्रकार स्थमन करना चाहिये, किसी भी तरह इसको खराब नही करना चाहिये। बहुतसे पिता अपने पुत्रोंको लज्जाके भयसे ब्रह्मचर्य्यकी रक्षाके उपायोंकी शिक्षा नही देते है इस कारण व कुसगतिमे पडकर और हानि लाभसे अजान रहकर अपने ब्रह्मचर्यको विगाड कर अपने मन और शरीरको निर्बल कर बैठते है और फिर उन्हीको बड़े होनेपर अपने पूर्व कृत्योंका पछतावा करना पडता है।

प्रौढ अवस्थामें विवाह।

जब हीराचद २० वर्षसे ऊपर अवस्थाके होगए तब गुमानजीने इनकी लग्न सूरत निवासी एक वीसा हूमड गृहस्थकी कन्यासे कर दी। इसका नाम बिजलीबाई था। यह कन्या १२ वर्षकी थी और यद्यपि लिखना पढना नही जानती थी तौ भी घरके कामकाजमे बड़ी चतुर, सरलचित्त, सौम्यमूर्ति, दयावती और जिनधर्ममे श्रद्धालु थी। ऐसी स्त्री-रत्नको पाकर हीराचद चित्तमे बहुत ही प्रसन्न हुए और दोनों अति प्रेमके साथ गृहीधर्म सेवने लगे।

गुमानजी और उनकी पत्नीका मरण

सेठ गुमानजीकी स्त्री एक दिन कुछ बीमार होगई। सेठजी और उनके पुत्रोंने बहुत औषधि की परन्तु आयुकर्म शेष होनेका समय आजाने पर कोई उपचार कारगर नही हुआ। यद्यपि वह रोगग्रस्त थी पर होशसे नहीं चूकी थी। अपने दिलमे अर्हत सिद्ध जपा करती थी और उसके पति व पुत्र

भी उसको धर्मकी बातें सुनाते रहते थे। निदान णमोकार मंत्र सुनते २ उसके प्राण पखेरू शरीरको त्यागकर अन्य गतिमे चलदिये।

सेठ गुमानजी और उनके पुत्रोंको खासकर हीराचन्दजीको इस वियोगसे बहुत कष्ट हुआ। गुमानजीका जैसा प्रेम अपनी अर्धांगिणी से था उसीके प्रमाणमें उतना ही उन्हें **वियोगका दुःख** भी हुआ। वास्तवमें इस संसारके पदार्थ सर्व क्षणिक अवस्था वाले है। जो किसी अवस्थाके होते हुए हर्ष करेगा उसेही उस अवस्थाको बिगड जाते देखकर कष्ट व शोक होगा। जो ज्ञानी व **निर्मोही साधुजन** होते हैं वे किसीसे **मोह नहीं करते** अतएव उनको सांसारिक हर्ष और विषाद नहीं होता। यद्यपि गुमानजी शास्त्रके जाननेवाले थे पर विशेष वैराग्यवान न थे। इनको अपनी पत्नीके वियोगका ऐसा दुःख हुआ कि यह भी थोडे ही दिनोंमें कुछ अस्वस्थ हो गए। और बहुत बीमारी न पाते हुए एक दिन बहुत स्वस्थतासे णमोकार मंत्र जपते हुए तथा श्री अरहंत की प्रतिमाका ध्यान करते हुए शरीरको त्यागकर स्वर्ग पधारे।

मातापिताके वियोग का दुःख

विवाहके थोडे ही दिनोंके पीछे हीराचन्दको अपने माता पिताका वियोग सहना पडा, परन्तु हीराचन्द शास्त्रस्वाध्याय करतेथे इससे अपने मनको समझाकर अपने गृहकर्तव्यमे लग गए। शाह गुमानजी हीराचन्दका विवाह तो कर पाये थे परन्तु वखतचन्दका विवाह नहीं कर सकेथे। साह हीराचन्द बडे बुद्धिमान थे और अपने छोटे भाईसे बहुत प्रेम रखते थे। कुछ काल पीछे हीराचन्दने वखतचन्दकी लग्न करके अपने कर्त्तव्यको पूरा किया और दोनों

भाई एक ही घरमें सुखसे शाति पूर्वक रहने लगे। यद्यपि हीराचन्दको छोटे भाईसे प्रेम था परन्तु वखतचन्दका मन अपने भाईका बाजार व जातिमें आदर देखकर ईर्षाभावसे भर आता था और इस कारण कभी २ स्वतत्र होनेको मन चाहता था।

साह हीराचदजीको सतानका लाभ।

साह हीराचद अपनी पत्नी बिजलीबाईके साथ अति प्रेमसे रहते हुए। स० १८९३ में एक कन्याका लाभ हुआ जिसका नाम हेमकोर (हेमकुमरी) रक्खा गया। यद्यपि इस युगलको यह इच्छा थी कि पुत्रका लाभ होगा क्योंकि प्राय सर्वसाधारणको पुत्रीकी अपेक्षा पुत्रकी प्राप्तिका अधिक प्रेम होता है। तौभी शाह हीराचदको पुत्रीके लाभसे किसी प्रकारकी उदासी नहीं हुई। सर्वसे पहले सन्तानका लाभ होनेपर इनको व सर्व कुटुम्बियोंको बडा हर्ष हुआ। इन्होंने यथायोग्य उत्सव मनाया। श्री मदिरजीमे पूजन कराई व यथायोग्य दान धर्म किया। इस वर्ष सूरत नगरमे इतनी भारी अग्नि लगी कि आधा नगर भस्म होनेके साथ वह अग्नि साह हीराचदके मुहल्लेमे भी आई। खपाटिये चकलेके बहुतसे घर जल गए। साह हीराचदका घर भी भस्म हो गया। साह हीराचदने अपने घर भस्म होनेका दु ख नहीं किया परन्तु बडा भारी दु ख जो साह हीराचद व अन्य श्रावकोंको हुआ वह इस चदावाडीके निकटस्थ बडे मदिरमें अग्नि लगनेसे हुआ। श्री मदिरजीमें अग्निकी लपटोंको जाते हुए देखकर साह हीराचद, वखतचदने अपने घरकी चिंता छोड तुर्त ही निकटके श्रावकोंको बुलाया और मदिरके भीतरसे श्री जिन बिम्बोंकी रक्षा की। सर्व

प्रतिमाओंके सुरक्षित होनेपर मदिरकी भीतें भस्म हो जानेपर भी श्रावकोने संतोष माना और साह हीराचद्के साहसकी सराहना की, जिसने अग्रगामी होकर अपना खयाल छोड इस उपसर्गको निवारण किया। उस दिनमे साहजीने धीरे २ अपना मकान तो ठीक किया ही, पर श्री मंदिरजीके जीर्णोद्धारकी बहुत बड़ी फिक्र की। चार वर्ष पीछे सं० १८९७मे विजलीबाईको दूसरी सन्ततिका लाभ हुआ। इस समय जब विजलीबाईको गर्भ रहा तब साह हीराचदके चितमें यह उमंग उठी कि अब तो शायद पुत्रकी प्राप्ति अवश्य होगी। परतु इस वक्त भी साहजीको १ कन्यारत्नकी प्राप्ति ही हुई। साहजीने इसका नाम मच्छाकोर (मञ्छकुमरी) रक्खा और पूर्वोपार्जित कर्मके उदयसे जो लाभ हुआ उसीमे सन्तोष किया।

विजलीबाईकी संतान रक्षा।

बिजलीबाई सन्तानकी रक्षा करनेमे बहुत चतुर थी। योग्य खानपान करती थी ताकि उसके दूधमे कोई विकार नहीं हो क्योंकि जो माता ऐसी वैसी चीजें खाकर शरीरको विकारी व रोगग्रसित कर लेती है उसके विकारी दूधसे बच्चेके शरीरमे बहुतसे रोग हो जाते है। बहुतसे बचे तो माताकी गोदमे ही कालके ग्रास हो जाते है। बिजलीबाईकी सावधानीसे न हेमकुमरीके न मंच्छाके कोई भारी रोग हुआ जिससे माता पिताको चिन्ता हो। मच्छा जब माताका दूध पान करती थी तब हेमकुमरी चार वर्षकी थी। इसका शरीर बहुत सुन्दर व गठा हुआ था। चिहरा गोल था, चचलनेत्र थे व मुख हंसता हुआ प्रफुल्लित कमलके समान था। जो कोई देखता उसका दिल उमङ्ग आता और इसे गोदमें लेकर प्यार करता था।




सेठजीका जन्मगृह सूरत. (देखो पृष्ठ ९१)

इसकी बोली भी बडी ही मीठी थी। माताने इसको न तो कोई अपशब्द सिखाए थे और न मारना पीटना ही सिखाया था जैसे बहुधा करके माता पिता व कुटुम्बीजन छोटे २ बच्चोंको गाली देना व मारना पीटना सिखाते हैं। माता बिजलीबाई हेमकुमरीका हाथ पकडकर जिन मंदिरजीमें ले जाया करती थी और वहाँ पर कायदेसे हाथ जोडना व दंडवत करना सिखलाती थी व भगवानके २४ नाम बुलवाती थी। बिजलीबाईने हेमकुमरीकी ऐसी अच्छी आदत डलवाई थी कि वह नित्यप्रति समय पर ही भोजन करती थी और रात्रिके पहले ही भोजनसे निश्चिन्त हो जाती थी। रात्रिको भोजन मांगती ही न थी। हां जल व दूध लिया करती थी। सवेरे उठकर 'जयजय चन्द्रप्रभुकी जय' ऐसा कहती थी।

बिजलीने जैसे हेमकुमरीके पालनेमें परिश्रम किया था वैसी ही मिहनत मच्छाके भरणपोषणमें की। बिजली अपनी कन्याको न कभी मारती थी न गाली देती थी और न कभी क्रोधभरे शब्द कहती व आकृति दिखाती थी। न कभी उसके मनमें यह खयाल आता था कि यह कन्या पर घर जानेवाली है, इसकी अच्छी तरह रक्षा क्यों करे जैसा बहुधा पुत्रमोही माताएँ स्वार्थ वश खयाल किया करती हैं और कन्याओंको सैकडों गालियाँ सुनाकर व मारकूटकर, रुलाकर, पटककर, कोसकर, कुढकर अपना जला दिल ठंडा करती हैं और समयपर भोजनपान नहीं खिलाती हैं। बहुधा कन्याएं माता पिताकी बेगौरी और अनुत्साहरूप पालनसे शीघ्रही कालका ग्रास हो जाती हैं। साह हीराचंद दोनों पुत्रियोंकी प्रफुल्लित

मूर्तियोंको देखकर बहुत आनन्दित होते थे और निरन्तर इस बातका उद्योग करते थे कि ये दोनों सुपुत्री बनें, जिससे ये अपने पतिके घरोंको दीप्तमान कर सकें और मेरे यशको उज्वल रक्खें।

चंद्रप्रभुके मंदिरका जीर्णोद्धार।

साह हीराचंद व अन्य श्रावकोंने उस बडे जिनमंदिरजीके, जो भस्म हो गया था जीर्णोद्धार करनेका बहुत ही शीघ्र प्रबन्ध किया, यहा तक कि संवत् १८९८ तक वह मंदिर फिरसे तय्यार हो गया, तब मुहूर्त्त दिखाकर इसकी प्रतिष्ठा करानेकी मिती वैशाख सुदी १२ संवत् १८९९ नियत की गई। देशदेश पत्र भेजकर संघको एकत्रित किया गया। भट्टारकोंकी आम्नायके भाणा पंडितने जो विद्याभूषण भट्टारकके शिष्य थे इस मंदिरकी प्रतिष्ठा विधिके अनुसार की। सूरतमें उस दिन जैन धर्मकी बडी प्रभावना हुई। सम्पूर्ण संघके मध्यमे साह हीराचंद अपनी दोनों पुत्रियोंके साथ जिनकी अवस्था क्रमसे ६ और २॥ वर्षकी थी लिये हुए बहुत ही शोभते थे और अन्य सज्जनोंको यह उत्साह होता था कि ये कन्याए चिरजीवित रहें तो हम हमारे पुत्रोंसे इनका सम्बन्ध करें। श्रीमंदिरजीकी प्रतिष्ठा होकर सर्व प्रतिमाएँ सविनय विराजमान की गई। भट्टारकोंकी आम्नायमे पद्मावती देवीके मस्तक पर पार्श्वनाथ स्वामीकी छोटी प्रतिबिम्ब हो ऐसी प्रतिमा निर्मापणका रिवाज प्रचलित है उसीके अनुसार भाणा पंडितने एक मूर्ति निर्मापण कराय उसकी प्रतिष्ठा की, जिसका लेख दूसरे अध्यायमें दिया गया है। इस समय सूरतमे जितने लोग बाहरसे आए थे उनका भोजनादिसे-यथायोग्य सत्कार किया गया।

इस धर्मके कार्य्यमें यद्यपि साह हीराचंदने पंचायतीके साथ धनकी मदद बहुत नहीं दी थी तो भी अपनी उदारतासे अपनी शक्तिसे अधिक सहायता की थी, इतना ही नहीं इस कार्य्यके मुख्य प्रबन्धकर्ताओंमें साह हीराचंद भी थे। इनके प्रबन्धमें निर्विघ्नतया और विना किसी शिकायतके कार्य्यकी पूर्ति देखकर लोग इनकी बुद्धि और धर्मवात्सल्यताकी बहुत सराहना करते थे।

वखतचंदका पृथक् होना।

साह हीराचंदजीकी जातिमें अति प्रशंसा होते देखकर वखतचंदका मन अप्रसन्न रहता था। इसके सिवाय वखतचंदकी प्रकृति भी हीराचंदसे नहीं मिलती थी। दूसरे इनकी पत्नी भी अपने पतिको जुदा रहनेकी सम्मति दिया करती थी क्योंकि वह दूरदर्शिता और बुद्धिमत्तासे काम लेना नहीं जानती थी। वखतचंदका मन पृथक् होनेको होता भी था पर जब वह बड़े भाईके वर्तावको अपनी ओर देखता था तब उसका मन तुर्त इस विचारको मिटा देता था। पर उसकी स्त्रीके पुनः पुनः प्रेरणा करने पर वखतचंदका चित्त स्थिर हो गया कि हम कल अवश्य २ अपने भाईसे जुदा हो जायगे। संवत् १९०० में या सन् १८४३में कि जब सूरतमें सर्कार इंग्रेज द्वारा बिठाए हुए निमकके महसूलको प्रमाणसे अधिक समझकर प्रजाने हड़ताल की थी साह वखतचंदने एक दिन सवेरे जब साह हीराचंद श्री मंदिरजीसे निकलकर घरमें आए उदास मुख करके अपने मुँहसे शब्द न निकलते हुए भी बड़ी कठिनतासे ज्यों त्यों कर कह डाला कि मेरी इच्छा आजसे अलग ही रहकर भिन्न ही व्यापार करनेकी है। अब तक तो मैं ज्यों

स्योकर एक साथ रहा परंतु अब मुझको साथ रहना नहीं है इससे आप सर्व मालका विभाग कर देवे ।

साह हीराचंदको यह बात वज्रके समान लगी । क्योंकि यह अपने छोटे भाईसे अति प्रेम करते थे और अपनी सतानसे इनकी अधिक खातिर करते थे व किसी प्रकारका कष्ट नहीं होने देते थे । दूसरे हीराचंदजीको अब तक किसी पुत्ररत्नका लाभ भी नही हुआ था, अतएव वह अपने भाईही को देखकर हर तरह सन्तोष मानते थे ।

हीराचदजीने बखतचंदसे इस नादानीका कारण पूछा परन्तु कुछ उत्तर न पाकर परस्पर मेलके लाभ और भिन्नताके अलाभ भले प्रकार समझाए, पर जिसकी बुद्धिमें किसी प्रकारका हठ होजाता है वह उसको नहीं छोडता । निदान जब बखतचंदकी समझमें कुछ भी नही आया तब हीराचंदने लाचार हो पृथक् होनेका प्रबन्ध किया । १५ दिनका समय लेकर सर्व हिसाब तय्यार करके सर्व मालमता रुपया पैसा आधा आधा इस तरह बाँट दिया कि बखतचद और उसकी स्त्रीको इसमें पूरा २ सन्तोष हुआ । यद्यपि हीराचदकी कमाई प्राय उसीकी ही परिश्रमकी थी पर हीराचदने अपना स्वार्थ कुछ न रख धर्म सम्बन्धको मध्यमे डाल कर पुरा २ न्याय कर दिया । विजलीबाईको भी इसमें किसी तरहकी नाराजी नहीं हुई। यद्यपि पृथक् होनेमे अवश्य उसको दुःख हुआ क्योंकि वह बखतचंदकी बहूको बहुत चाहती थी और घरके कामकाजमें उससे मदद भी बहुत मिलती थी । पुराना मकान साह हीराचदके ही अधिकारमे आया । बखतचन्द दूसरे मकानमे रहने लगे ।

माह हीराचदको पुत्र लामकी चिन्ता अवश्य रहा करती थी सो धर्म और न्याय प्रकृतिवालीके पुण्यके उदयसे संवत् १९०२ में प्रथम पुत्ररत्नका लाभ हुआ । माहजी और उनके कुटुम्बियोने पुत्र लाभका बडा ही आनन्द माना ।

सेठ मोतीचंदका जन्म ।

हीराचद धनाढ्य नही थे, साधारण गृहस्थ थे, इससे इन्होंने किसी प्रकारका नाच तमाशा न करके केवल मदिरजीमे उत्सव सहित पूजन कराई, कुटुम्बियोंका भोजनसे सत्कार किया और याचकोंको यथाशक्ति दान बॉटा । खूब विचार कर पुत्रका नाम मोतीचंद रक्खा । यह पुत्र सुन्दराकार और गोल मोतीके समान मुखवाला था । विजलीबाईके पुत्रपालनके हुनरसे पुत्र धीरे २ बढता गया और किसी प्रकारके रोगमें ग्रसित न हुआ । इस समय हेमकुमरी १० वर्ष व मञ्छाकुमरी ६ वर्षकी थी । हेमकुमरीको माताने घरका कामकाज सर्व धीरे २ सिखला दिया था । साधारण स्थितिके कारण हीराचदके घरमें नौकर चाकर नही थे । हेमकुमरी और मञ्छाकुमरी छोटे बच्चेको खिलानेमे बहुत महायता देती थी । उस समय कन्याओंके पढानेका रिवाज बहुत ही कम था इससे हीराचदने अपनी कन्याओंको अक्षरज्ञान करानेका कुछ उपाय नही किया । तौभी जहॉ माता धर्मात्मा, प्रवीण और गुणवाली होती है वहाँ उसकी कन्याए भी यदि माता चाहे तो प्रवीण बना सक्ती है । विजलीबाईके दिलमे सर्वसे पवित्र काम भगवत् भजन और तब फिर अपने बालकोंकी सेवा थी । बालिकाकी सुश्रुषाके सामने पतिभक्ति व पतिसेवा भी गौण रूपसे थी । मेरे लडकालडकी बडे यशस्वी व उपयोगी हों, धर्मकर्ममें सावधान

हों, आचरणमें कुशल और निर्मल हों, यही भावना निरंतर विजलीबाईके हृदयमे लहराया करती थी।

सेठ पानाचंदका जन्म।

मोतीचदके जन्मके २—२॥ वर्ष पीछे ही संवत् १९०९ आषाढ सुदी ८ के दिन जब अष्टान्हिकाका महान पर्व प्रारभ होता है, विजलीबाईको दूसरे पुत्ररत्नका लाभ हुआ। इस पुत्रका उदय देखकर व इनके मुखको निहारकर माताको बडा ही हर्ष हुआ। पिताने इसका नाम **पानाचद** रक्खा। यद्यपि हीराचंद अफीमका काम करते थे पर अपना नाम हीरा होनेसे पन्ना हीरा मोती आदि जवाहरातके धन्देका मानो स्वप्न ही देखते थे और यह भावना रखते थे कि हम अपने पुत्रोंको जौहरी ही बनाएंगे। इसी भावनासे प्रेरित हो ऐसे ही नाम अपने पुत्रोंके नियत किये। पानाचंदके जन्मपत्रका हाल सुनकर हीराचद व कुटुम्बियोंको बडा ही आनन्द हुआ। जैसा इनका मुख अपने उच्च भाग्यको प्रगट करता था ऐसा जन्मपत्रने भी सूचित किया। मातापिताको अपने पुण्यके उदय पर बडा ही सन्तोष था।

हेमकुमरीका लग्न।

इस समय हेमकुमरीकी अवस्था १२ वर्षकी हो गई थी। अबतक इसकी सगाई मातापिताने नही की थी। यद्यपि चारों ओरसे माँग आरही थी। अब साह हीराचदने विवाह योग्य जान हेमकुमरीकी लग्न बागड निवासी पर बम्बईमें व्यापार करनेवाले एक बीसाहूमड सेठ प्रेमचदके पुत्र हेमचंदके साथ बडे प्रेमके साथ कर दी। इस लग्नमें साह हीराचंदने सम्बन्धियोंका बडा सन्मान किया और

न अपनी शक्तिको छिपाकर न स्वशक्तिसे बाहर विवाहमे खर्च उठाया। हेमचंद बडा ही सुशील, सौम्यमुख, उद्योगी और धर्म प्रेमी १८ वर्षका युवान था।

सेठ चुन्नीलालका परिचय।

हेमकुमरी हेमचंदको प्राप्त होकर परस्पर प्रीतिमे इस तरह रम गई जैसे हेमकी चमक हेममे रम जाती है और दोनोंकी एकता अति सुन्दराकार सुवर्णको दिखाती है। हेमचंद प्रेमचंदका व्यापार बम्बईमे चलता था। यह जरीके कामके लिये प्रसिद्ध थे। अब भी इनके यहॉ जरदोजी काम बहुत ही अच्छा होता है। सेठ हेमचंद व हेमकुमरीके तीन पुत्रोंमे एक पुत्र सेठ चुन्नीलालजी इस समय बम्बईमे विद्यमान है। इनको धर्मसे बडा ही प्रेम है। श्री जिनेन्द्रकी भक्ति व स्वाध्यायमे निरन्तर लीन रहते है। इनकी स्त्री नडकोरबाई भी बडी धर्मात्मा लिखी पढी व पतिभक्त है। इनसे ५ पुत्र व १ पुत्री है। बड़े पुत्रका नाम अमरचंद है, जो व्यापारमें दक्ष है। इससे छोटा पुत्र रतनचंद बी० ए० क्लासमें पढ रहा है, तीसरा नौनीतलाल इन्टरमे पढ रहा है और और २ लडके भी विद्याभ्यास करते है। सेठ चुन्नीलाल-जीने श्री पावागढ क्षेत्रके एक प्राचीन जिन मंदिरका जीर्णोद्धार कराया है और उसकी प्रतिष्ठामें भी खूब द्रव्य लगाकर उस मौकेपर बम्बई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाका वार्षिक अधिवेशन कराया था। आप श्री पावागढ क्षेत्रकी प्रबन्धकारिणी सभाके सभापति हैं। व्यापार भी अच्छा चलता है। बम्बईके गुजराती प्रतिष्ठित धनाढ्यों-मेंसे आप भी एक प्रसिद्ध मान्य पुरुष हैं और गुजराती मंदिरके

प्रबंध करनेमें आप ही प्रधान व्यक्ति हैं । वास्तवमे जिसकी कुल-परम्परा अच्छी होती है उसकी सन्तति यदि ऐसा कोई अंतराय न पडे तो वह भी अच्छी ही होती है । हेमकुमरीकी लग्न करनेके बाद साह हीराचद व्यापारमें लीन हो गए । माता पिता पानाचन्दकी वृद्धि पाती हुई मूर्तिको देखदेखकर हर समय प्रफुल्लित होते थे ।

गणपतराव गायकवाडका दान ।

सूरत नगरमे अंग्रेजी राज्यक होनेसे इंग्रेजी पढनेकी चर्चा बढने लगी और साथ ही लोगोंमें पुस्तक और समाचार पत्र पढनेका भी शौक बढा । सवत् १९०७ व सन् १८५० में एडूस लायब्रेरी नामका पुस्तकालय स्थापित हुआ । लोग इसके द्वारा गुजराती व इंग्रेजी पुस्तक व पत्रोंके पढनेका लाभ लेने लगे । सवत् १९०८ व सन् १८५१ मे गणपतराव गायकवाड जिनको अपने वैष्णव धर्मसे बहुत प्रेम था जजूरी ग्राममें खडोवाकी यात्रा करनेको निकले थे तब सूरत होकर गए थे। यहाँके नागरिकोंने इनका बहुत सन्मान किया था। गायकवाडने स्वधर्म वृद्धि या यश लाभ चाहे जिस कारणसे हो सूरतमें इतना धर्म व दान किया कि सारे नगरमे उनकी कीर्त्ति छा गई । जितने दिन वे ठहरे मानो धर्म व दानका राज्य ही हो गया ।

दानकी वासनाओंमें शेठ माणिकचन्दका अवतार ।

उसी समय एक रात्रिको अपनी पत्नीसे बातें करते हुए साह हीराचदने गायकवाडके दानकी बडी प्रशसा की और गायकवाडकी जो कुछ चर्चा बाजारमें सुनी थी वह सब कह सुनाई । उसी कथनमें यह भी बयान किया कि गायकवाडने ब्राह्मणोंके सत्कार करनेके सिवाय हरएक मदिर व पाठशालामें द्रव्यदान किया तथा नगरके

गरीबोंको तृप्त किया। विजलीबाईका चित्त बडा कोमल था। जब वह किसी गुणकी बात सुनती थी तो उसका दिल भर आता था। उसके मनमें यह आया कि कि कब मैं इस योग्य होऊँ कि खूब दान धर्म करूं और सर्वको तृप्त करूं। विचारने २ उसने हीराचंदजीसे कहा कि देखो हमारे भी कभी ऐसे पुण्यका उदय आवे जो हमसे भी खूब दान धर्ममें द्रव्य खर्च किया जावे। साह हीराचंदने कहा कि हम तो इतने भाग्यशाली नहीं है क्योंकि इतने दिन व्यापार करते बीते कभी हम अपने खर्चमें अधिक नही कमा सके। ज्यों त्यों कर हेमकुमरीका विवाह किया था उसके पीछेसे व्यापार साधारण ही चला। हाँ, जिस वर्ष पानाचंदका जन्म हुआ था उस वर्ष व्यापारमे अच्छी पैदा की थी। अब तो साधारण ही लाभ हो रहा है। परंतु यह मुझे आशा है कि पानाचंद अवश्य भाग्यशाली होगा और द्रव्य कमाएगा। उस समय यदि उसका परिणाम दान धर्ममें होगा तो वह भी अपने दानकी सुगंधको उसी तरह विस्तारेगा जैसे आज गायकवाडका यश हो रहा है। इस तरह परस्पर वार्तालाप करते पति पत्नी उस रात्रिको अति प्रेमसे अपने खास शयनालयमें सोए। उसी रात्रिको विजलीबाई गर्भवती हुई। विजलीबाईका मन रात्रिभर दानकी उमगमें भीज रहा था। यह वही रात्रि है जिसमें इस पुस्तकके नायक प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद्का जीव विजलीबाईके गर्भमें आया, जिस आत्माने गर्भस्थानमें निवास करते ही उस स्थानको दानधर्मकी वासनासे वासित पाया।

ज्यों २ गर्भ बढाता था विजलीबाईका मन दानके लिये उ[illegible] ता था। साधारण स्थितिके कारण इतना तो वह [illegible] करती थी।

कि जो कोई अपाहज दरवाजे पर आ जाता था उसको मुट्ठीभर अन्न जरूर दे आती थी । अच्छी भावनाओंका असर भी अच्छा ही हुआ करता है । बिजलीबाईके धर्ममें झुकते हुए भावोंका असर उस गर्भ स्थित बालक पर भी पडता था। जगतमें निमित्त नैमित्तिक सम्बन्धसे अनेक अवस्थाए हो जाती है । पूर्वबन्ध जड द्रव्य कर्मोका असर ससारी आत्मापर पडता है । और ससारी आत्माके भावोंसे पुद्गलका परिणमन होता है । बाहरी पदार्थ भी भावोंमें असर डाल्ते है ।

सेठ माणिकचन्दका जन्म सं० १९०८।

सुयोग्य सम्बन्धोंमे प्राणोंकी वृद्धि करते हुए नौ (९) मास वीत् गए और दिवालीकी निकटताका समय आ गया । इस कारण उच्च कुली सर्व ही अपने स्थानोंकी सफाई तथा लीपापोती कराने लगे । साह हीराचन्दने भी अपने मकानकी शुद्धि व पुताई कराई । कार्तिक वदी १३ (आसौज वदी १३ गुज०) का दिन आ पहुँचा। इसको **धनतेरस** भी कहते है । बहुतसे लोग आजकल घरमें कुछ नए बरतन भी खरीद कर लाते है । यह दिन एक **मगल दिवस** माना जाता है । इसी दिन प्रात कालके शुभ मुहूर्तमें बिजलीबाईने **पुत्ररत्नका जन्म** दिया । इस समय भी पुत्रका मुख देखकर माता पिताको जो आनन्द हुआ वह वचन अगोचर है । जैसे पानाचदके मुखपर तेज झलकता था ऐसा ही इस पुत्रके मुखसे प्रगट होता था । साह हीराचदने इस पुत्रका **माणिकचन्द** नाम रक्खा और यथायोग्य श्री जिनमंदिरजीमे पूजा कराई, कुछ दान बाँटा तथा कुटुम्बियोंको तृप्त किया ।

जब यह गोदमे खिलानेलायक हुआ इसको देखकर हरएक प्यार करना चाहता था। ऊचा माथा, बडा सिर, बडी चक्षु, सुडौल हस्त पग आदि देखनेसे माणिकचद एक महान पुरुष होगा ऐसी कल्पना बुद्धिमानोंके चित्तमे हो उठती थी। जन्म पत्रसे भी इस बालकके ऐश्वर्यवान व यशस्वी होनेका पता लगता था। इसका शरीर भी बहुत सुन्दर और गठा हुआ था। खपाटिया चकलेका मकान जिसका चित्र पहले दिया गया है और जो अब भी मौजूद है मोतीचद, पानाचद और माणिकचद पुत्र और मच्छाकुमरी पुत्रीसे बडा ही रमणीक मालूम होता था। इस समय मच्छाकुमरीकी आयु ११ वर्षकी, मोतीचदकी ९ और पानाचदकी २॥ वर्षकी थी।

मछाकुमरीका विवाह।

हेमकुमरीकी तरह मच्छाकुमरी भी घरके कामकाजमे प्रवीण कर दी गई थी। जब यह १२ वर्षकी हुई साह हीराचदने इस कन्याका विवाह सुरत निवासी बीसा हूमड गगेश्वर गोत्री श्रीजलाल शीतलदासके पुत्र झवेरचदके साथ कर दिया। झवेरचद साधारण लिखा पढा था पर बुद्धि तीव्र थी। अपनी मध्यम स्थिति होनेके कारण पिताके साथ व्यापारमे जाता था।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दका जन्म।

मच्छाबाई और झवेरचदके सयोगसे सवत् १९२४ चैत्र सुदी ११ के दिन सेठ चुन्नीलालजीका जन्म भया। यह चुन्नीलाल सेठ माणिकचन्द पानाचदके व्यापारमे मुख्य सहायक होनेके सिवाय धर्म कार्योंमे बडे ही उत्साही थे। आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र क--

कि जो कोई अपाहज दरवाजे पर आ जाता था उसको मुट्ठीभर अन्न जरूर दे आती थी। अच्छी भावनाओंका असर भी अच्छा ही हुआ करता है। बिजलीबाईके धर्ममें झुकते हुए भावोंका असर उस गर्भ स्थित बालक पर भी पडता था। जगतमें निमित्त नैमित्तिक सम्बन्धसे अनेक अवस्थाए हो जाती है। पूर्वबन्ध जड द्रव्य कर्मोका असर ससारी आत्मापर पडता है। और ससारी आत्माके भावोंसे पुद्गलका परिणमन होता है। बाहरी पदार्थ भी भावोंमें असर डालते है।

सेठ माणिकचन्दका जन्म स० १९०८।

सुयोग्य सम्बन्धोमे प्राणोंकी वृद्धि करते हुए नौ (९) मास बीत गए और दिवालीकी निकटताका समय आ गया। इस कारण उच्च कुली सर्व ही अपने स्थानोंकी सफाई तथा लीपापोती कराने लगे। साह हीराचन्दने भी अपने मकानकी शुद्धि व पुताई कराई। कार्तिक वदी १३ (आसौज वदी १३ गुज०) का दिन आ पहुँचा। इसको **धनतेरस** भी कहते है। बहुतसे लोग आजकल घरमे कुछ नए बरतन भी खरीद कर लाते है। यह दिन एक **मंगल दिवस** माना जाता है। इसी दिन **प्रात कालके** शुभ मुहूर्त्तमें बिजलीबाईने **पुत्ररत्नका जन्म** दिया। इस समय भी पुत्रका मुख देखकर माता पिताको जो आनन्द हुआ वह वचन अगोचर है। जैसे पानाचंदके मुखपर तेज झलकता था ऐसा ही इस पुत्रके मुखसे प्रगट होता था। साह हीराचंदने इस पुत्रका माणिकचन्द नाम रक्खा और यथायोग्य श्री जिनमदिरजीमे पूजा कराई, कुछ दान बाँटा तथा कुटुम्बियोंको तृप्त किया।

जब यह गोदमे खिलानेलायक हुआ इसको देखकर हरएक प्यार करना चाहता था। ऊचा माथा, बडा सिर, बडी चक्षु, सुडौल हस्त पग आदि देखनेसे माणिकचद एक महान पुरुष होगा ऐसी कल्पना बुद्धिमानोंके चित्तमे हो उठती थी । जन्म पत्रसे भी इस बालकके ऐश्वर्यवान व यशस्वी होनेका पता लगता था । इसका शरीर भी बहुत सुन्दर और गठा हुआ था। खपाटिया चकलेका मकान जिसका चित्र पहले दिया गया है और जो अब भी मौजूद है मोतीचद, पानाचद और माणिकचद पुत्र और मच्छाकुमरी पुत्रीसे बडा ही रमणीक मालूम होता था । इस समय मच्छाकुमरीकी आयु ११ वर्षकी, मोतीचदकी ९ और पानाचदकी २॥ वर्षकी थी ।

हेमकुमरीकी तरह मच्छाकुमरी भी घरके कामकाजमे प्रवीण कर दी गई थी । जब यह १२ वर्षकी हुई साह हीराचदने इस कन्याका विवाह सुरत निवासी वीसा हूमड गगेश्वर गोत्री व्रीजलाल शीतलदासके पुत्र झवेरचदके साथ कर दिया। झवेरचद साधारण लिखा पढा था पर बुद्धि तीव्र थी । अपनी मध्यम स्थिति होनेके कारण पिताके साथ व्यापारमे जाता था।

मच्छाकुमरीका विवाह ।

मच्छाबाई और झवेरचदके सयोगसे सवत् १९२४ चैत्र सुदी ११ के दिन सेठ चुन्नीलालजीका जन्म भया । यह चुन्नीलाल सेठ माणिकचन्द पानाचदके व्यापारमे मुख्य सहायक होनेके सिवाय धर्म कार्योंमे बडे ही उत्साही थे । आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र क--

सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दका जन्म ।

मेटीके सहायक महामंत्री थे, तीर्थभक्त थे। इन्होंने सूरतके सर्वसे प्राचीन श्री शातिनाथजीके छोटे मदिरका जीर्णोद्धार सवत् १९९६ मे कराया और इसका शिखर बधवाकर धूमसे प्रतिष्ठा की थी।

सेठ नवलचन्दका जन्म।

मोतीचन्द जब ६ वर्षसे अधिकका होगया तब हीराचदने इसको देशी निशालमे पढने भेज दिया। पानाचन्द और गोदके बच्चे माणिकचन्दको बिजलीबाई घर ही में नाना प्रकारकी उत्तम शिक्षा दिया करती थी। इतनेमे वह फिर गर्भवती हुई और सवत् १९११ मे चतुर्थ पुत्ररत्नको उत्पन्न किया। इस समय भी पुत्रका लाभ देखकर माता पिताको बडा ही सुख भया। हीराचन्दने इसका नाम नवलचद रक्खा। इसका जन्मपत्र भी इसके सौभाग्यवान और ऐश्वर्यवान होनेकी साक्षी देने लगा।

इस तरह चार पुत्रोसे सुशोभित होकर हीराचद और बिजलीबाई अपने घरको इसी तरह दीप्तमान मानने लगे जैसे राजा दशरथ और कोशल्या श्री रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्नको देख कर आनन्दित होते थे।

हीराचद अब धर्ममें और अधिक प्रीति करने भए। अधिक समय श्रीजिनेन्द्रकी भक्ति व स्वाध्यायमें व्यतीत करने लगे। तृतीय पुत्र माणिकचदको उगली पकडकर यह मदिरजी ले जाते थे और अपने पास बिठालेते थे। यह बालक शुरूसेही बहुत विचारवान और शात मिजाजका था। रोना तो जानता ही न था। सच है जो अपने जीवनमें महान कृत्य करनेवाले होते हैं उनकी शुरूसे ही उत्तम चेष्टा

होती है। उनको पूर्वजन्मका उत्तम सस्कार भी होता है। इसतरह हीराचन्द धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थको भोगते हुए अतिसतोषसे रहने लगे और जातिमें एक आदरणीय गृहस्थ माने जाने लगे।



अध्याय चौथा ।

सेठ माणिकचंदकी वृद्धि ।

१८५७के गदरका समय।

साह हीराचंद अब पुत्रोंकी सम्हाल व उनकी साधारण शिक्षा पर ध्यान रखने लगे। मोतीचंदको दो वर्ष तक देशी निशालमें पढाकर फिर एक गुजराती स्कूलमे पढने भेज दिया, इसी तरह पानाचंदको भी दो वर्ष तक देशी निशालमें पढाकर गुजराती स्कूलमे भेजा। इतनेमें माणिकचंद ६ वर्षके हुए। इसको मंदिरजीमे देर तक बैठनेका शौक था। जो कोई शास्त्र पढता यह बिना समझे भी सुना करता था। संवत् १९१४ या सन् १८५७ बडा विकट वर्ष था। सूरतमें लश्करका आना जाना बहुत रहता था। यद्यपि वहाँ कोई हुल्लड नहीं था। पर उत्तर हिंदुस्तानमे अंग्रेजोंसे देशी फौज बिगड उठी थी जिससे देहली, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानोंमें बडा भारी गदर हो गया था। प्रजाजन लूटे जाते थे। लोग अपने २ मकान छोडकर परदेश भाग रहे थे। इतिहासमें यह वर्ष बहुत प्रसिद्ध है। इस समय ईष्ट इंडिया कम्पनीकी सत्ता भारतमें थी। गदर शांत होनेके पश्चात् सन् १८५८की १ नवम्बरको प्रसिद्ध रानी क्वीन विक्टोरियाने भारतकी राज्यसत्ता कम्पनीके हाथसे अपने हाथमें ली और भारतके धर्मकर्ममें समभाव रखने व हस्तक्षेप न करने आदिकी घोषणा प्रसिद्ध की।

इस समय माणिकचंदकी अवस्था ७ वर्षकी थी । पिताने इसे देशी निशालमें पढ़ने भेज दिया। नवलचंद घर-हीमें माता पिताद्वारा शिक्षा प्राप्त करता था।

हीराचन्दकी चिंतित अवस्था।

संवत् १९१६का वर्ष हीराचंदके लिये कठिन था। उधर पुत्रोंका खर्च बढ़नेके साथ २ व्यापारमें शिथिलता हो गई। इधर बिजलीबाईका शरीर बहुत नर्म रहने लगा और थोड़े दिनोंके पीछे ऐसा शिथिल हो गई कि उससे घरका कामकाज भी न होने लगा । बड़ी कठिनतासे कुछ दिन सारे कुटुम्बकी रसोई बनाई परंतु जब अधिक ढीली पड गयी अर्थात् शय्यासे उठा नहीं गया तब हीराचंदजी और छोकरोंको मिलकर सबकी रसोई बनानी पडी व घरका सब कामकाज करना पडा । इस समय हीराचंदको चित्तमें बहुत खेद रहने लगा । व्यापारमें लाभ कम होनेसे घरका खर्च बड़ी तंगीसे चलता था तथा अपनी पतिभक्ता स्त्रीके शरीर शिथिल होनेसे मनको और भी उदासी हो गई थी । संसारकी विचित्र दशा है । पुण्य पापकर्मका उदय एकके पीछे दूसरा आया ही करता है । इस समय मोतीचंद १३, पानाचंद ११, माणिकचंद ८ तथा नवलचंद ९ वर्षके थे । सिवाय छोटेके तीनों अपना बहुतसा काम अपने आप कर लिया करते थे। सबोंमें माणिकचन्दको अभीसे धर्मकी बहुत बडी लग्न थी, यहाँतक की हररोज पासके मंदिरजीमें जा और लोगोंके साथ श्री जिनेन्द्रकी प्रतिमाओंका प्रक्षाल किया करता, जाप देता व कभी २ पूजनमें भी खडा होता था । पिताको इस समय दुःखी व उदास देखकर मोतीचंद और पानाचंद आश्वासन देते थे, जिसमें

पानाचंद बड़े साहसके साथ कहते थे कि–पिताजी, आप चिंता न करें, मैं बड़ा हूँगा तब बहुत धन कमाऊँगा। माताकी सेवामें चारों ही पुत्र लवलीन थे। माता अपनी शिथिल अवस्थामें इनको देखदेखकर अपने जीवनमें मैंने रत्न उत्पन्न किये ऐसा मानकर परम सन्तोष प्राप्त करती थी और जब कभी प्रेमभरी दृष्टिसे अपने स्वामीको निरखती थी तब अंतरंगमें महासुख प्राप्त करती थी। मनमें सिवाय 'अर्हन सिद्ध' के किसीका स्मरण नहीं करती थी। मुखसे भी यही मंत्र कहा करती थी।

माता विजलीबाईका स्वर्गवास।

एक दिन विजलीबाईके चित्तमें यह अच्छी तरह जम गया कि अब मेरा अन्तसमय आ गया है। उसने साह हीराचंदको कहा कि अब मेरी आयु नहीं मालूम होती, मुझे धर्मके वचन सुनाओ और जो कुछ मुझसे दान पुण्य कराना हो सो इसी समय करा लो। साह हीराचंदकी आखोंसे आसू बहने लगे, दिल घबडा गया, पर यकायक मनको सम्हालर कहा–तुम्हें मरणकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। चिन्ता करनेसे भी आयु कम होती है ऐसा शास्त्रोंमें सुना है। धैर्य रक्खो। श्री पंच परमेष्ठिका ध्यान करो। मुझे तो आशा है तुम बहुत शीघ्र अच्छी हो जाओगी। यदि तुम्हारी इच्छा है कि अभी कुछ दान धर्म किया जाय तो तुम्हारे लिये सब कुछ हाजिर है। ये चार पुत्ररत्न तुम्हारे मौजूद है। हमें तुम्हें कोई बातकी फिकर नहीं है। साहजीने मोतीचंदको १०) दिये और कहा कि बाजारमें गांधीके यहाँसे पूजनकी सामग्री ले आ। मोतीचंद समझता था, वह तुर्त गया पर बड़े उदास मनसे

उस समय कुटुम्बियोंका ज्यादा जमाव देखकर इनने सबसे कहा कि इनके पास वे ही रहें जो धर्मके पाठ व णमोकार मंत्र पढ़ें, शेष दूर २ बैठें और इस तरह बात न करें जो इनके कानमें शब्द जाय ।

रात्रिको अनुमान ३ बजे होंगे तब बिजलीबाईने कहा कि मुझे शय्यासे भूमिपर ले लो। भूमिपर नामका साथरा करके उन्हें धीरसे लिटा दिया गया। उससमय साह हीराचद स्वय बडे ही मिष्ट वचनोंसे णमोकार मंत्र पढने लगे व बारह भावना या समाधिमरणका पाठ सुनाने लगे । धर्मध्यान करते २ विजलीबाईकी आत्मा प्रात-काल होते होते इस क्षणिक शरीरको छोड कर चल दिया— जीवके सम्बन्धमें होते हुए जो कान्ति शरीरकी थी वह सब जाती रही। अगोपाग वैसेके वैसे रहते हुए भी शरीर अचेतन-जड मिट्टीके समान होगया । व नाना प्रकारके ज्ञान पूर्ण विचार जो अभी २ शरीरके आश्रय हो रहे थे वे सर्व बद होगए । कारण यही कि चैतन्य गुणधारी पदार्थ इस तन रूपी झोपड़ीसे बाहर चला गया । जीवन क्षणिक है । कोई भी शरीरधारी अमर नहीं रह सक्ता, सर्व ही को परलोकमें जाना है, अतएव ज्ञानी जीव परलोकके लिये अवश्य यत्न रखते हैं। जो वर्तमानके विषय-भोगोंमें गाफिल हो जाते हैं व अपने आपको ठगते हैं और खोटी गतिमें जानेकी तय्यारी कर लेते हैं । चारों ही पुत्र अपनी माताको अनबोल व मुर्दा देखकर हम असहाय हो गए ऐसा मानते हुए । माणिकचद और पिता हीराचदके आखोंसे आसुओंका टपकना बन्द न हुआ । प्रात काल ही सर्व दग्ध क्रिया आदिका प्रबन्ध

हुआ। अब वह घर जो बिजलीबाई सरीखी स्त्रीरत्नके रहते हुए बिजलीके समान चमकता था, बिल्कुल सुनसान हो गया। मानो एक प्रकाशमान दीपक ही बुझ गया।

घरमें कोई भी स्त्री न होनेसे कुछ दिन तो हेमकोर और मन्छाने रसोई बनाकर खिलाई तथा घरका कामकाज किया, पर जब वे अपनी ससुराल चली गई तब फिर अकेले हीराचदजीको द्रव्य कमानेके साथ २ स्त्री सम्बधी आरभ कार्य भी करने पडे, क्योंकि स्थिति साधारण थी, इससे कोई रसोई करनेवालेको नही रख सक्के थे। पर सेठ हीराचद बडे ही बुद्धिमान, धर्मबुद्धि व धैर्यधारी थे, समताके साथ सारा काम करते हुए अपना समय बिताते थे, पर जब जरा भी खाली होते थे तभी बिजलीबाईकी स्मृति बिजलीके समान इनके चित्तके सन्मुख चमक उठती थी। वे ऐसी पतिव्रता स्त्रीको कब भूल सक्के थे?

मोतीचदका बम्बई जाना।

इस समय हेमकुमरी जब बम्बई जाने लगी तब अपने पितासे विनती की कि सूरतमें जब व्यापार कम हो चला है और बम्बईमे व्यापारकी वृद्धि है तब उचित है कि आप मोतीचदको मेरे साथ कर देवें तो मैं इसे कोई व्यापारकी शिक्षामे डाल दूं। हीराचंदकी दशा बहुत शोचनीय थी। इस समय इनके अशुभ कर्मका उदय था। यह चाहते ही थे कि मोतीचंदकी उम्र १२ वर्षकी है, इसे कोई आलम्बन मिले, क्योंकि अफीमका व्यापार मद दशापर है, इसे उसमे जोडनेसे कोई लाभ न होगा।

सामग्री बनवाकर घर आया । साहजीने तीनो लडकोंको सामग्री साफ करके तय्यार करनेको आज्ञा दी। उन तीनोके साथ नवलचद भी चाँवल उलटने पलटने लगा । उस समय माणिकचदका मुह सबसे अधिक उदास था । यद्यपि वह ८ वर्षका था, पर वह समझता था कि माताजीने अन समयपर दान करनेको यह सामग्री मँगाई है । माणिकचदका चित्त बडा कोमल था । किसी खास बातका उसके दिलपर बडा असर हो जाता था । कभी २ आखसे पानी भी निकलनेको होता था, पर वह रोक लेता था कि और भाई बुरा समझेंगे ।

सामग्री तय्यार होने पर सूरतके सर्व मदिरोंमे दिये जानेको साहजीने थाल सजे और यथायोग्य दो दो एक एक रुपया नगदी रखकर बिजलीबाईके सामने रख दिये । बाईने कहा कि हर एक मदिरमे इनको भेज दो । साहजीने लडकोंके द्वारा मदिरोमे सामग्री भिजवा दी तथा प्रबन्ध करके २५०) और उसके सामने रख दिये और कहा–"जहाँ तुम्हारी इच्छा दानकी हो वहाँ दान करो।" इस समय मच्छाकुमरी भी आ गई थी। वह देखकर रोनेको हुई परन्तु साहजीने मना किया । बिजलीबाईने २५०) देखकर एक दफे पतिसे कहा-आप मेरे लिये कष्ट न सहें। मदिरोंमे सामग्री भेज दी सो बस है। हीराचदजीने कहा मै इस समय लाचार हू नही तो तुमने जो उपकार किया है उसके लिये मै कुछ नहीं कर सक्ता। हजारों लाखोंका दान तुम्हारे हाथसे होता। मेरी तो यह भावना थी। यह रकम तो कुछ नही है। श्री जिनेन्द्रके प्रतापसे व्यापारद्वारा सब कुछ मिल जायगा, सब कुछ हो लेगा, पर तुम्हारे हाथसे दान तो

होना ही चाहिये। विजलीबाईने पचीस २ रुपये श्री सम्मेदशिखर, पावापुर, चम्पापुर, गिरनार सिद्धक्षेत्रोंमें, १९) पालीताना सत्रुजय, १५) श्री गजपथाजी, १९) श्री पावागढजी, १५) तारगाजी सिद्धक्षेत्रोंमे, ४०) भूखोंको अन्नादि वाटनेमे और शेष रूपये शास्त्रदानमें देनेको कहे। साहजीने सब लिख लिया।

हीराचंदको भी मनमें निश्चय हो गया कि अब इसका शरीर चलता हुआ नहीं मालूम होता। हेमकुमरी भी उन दिनों सूरतमें ही थी। वह भी आ गई। रात्रिको विजलीबाईने हेमकुमरीसे कहा कि, हेम! आज रात्रिको मेरा शरीर नहीं रहेगा ऐसा मालूम होता है, सो तुम मुझे एक दफे देहरासर ले चल कि मैं श्री जिनेन्द्र प्रभुके दर्शन कर लू। श्री मंदिरजी पासमे ही था। मंदिरजीमें एक व्यासन थी। वह बलिष्ठ शरीरकी थी। वह अपनी गोदमे विजलीबाईको मंदिरजी ले गई। साथमे दोनों बहनें गई। वहा बहनोंने भगवानके सामने बिठाया। बहुत ही भक्तिसे प्रभुकी शात छबिको निरखकर मन ही मन स्तुति पढ झुक गई और वही प्रतिज्ञा ले ली कि अबसे आज रातभर मुझे जलपानी आदिका त्याग है जो कुछ वस्त्र व शय्या आदि मेरे पास है उसके सिवाय और परिग्रहका भी त्याग है।

घर आकर विजलीबाई शातिसे शय्यापर लेट गई। इस समय सबको निश्चय हो गया कि अब बाईके प्राणान्तका अवसर है। और भी कुटुम्बीजन आ पहुँचे। नवलचंद तो सो गया, पर माणिकचंदको नींद नहीं आई। वह पडे २ रोने लगा। उधर साह हीराचंदजीका भी जी घबडाया और थोडी देरके लिये एकान्तमें जाकर खूब रोए। फिर वे मन थामकर शय्याके पास आए और

करते हुए देखा तब बहुत ही प्रसन्न हुई और लौटकर अपने पिताको सर्व हाल कहा, तथा यह भी कहा कि यदि आप भी इन दोनों पुत्रोंको साथ लेकर बम्बई जावें तो अच्छा हो। इधर पानाचंदने भी अपने पूज्य पिताजीको पत्र लिखा कि आप वहाँ अफीमका काम बन्दकर दोनों भाइयोंको लेकर बम्बई चले आवें, जिससे हम सब मिलकर यहा अपना भाग्य अजमावें। साह हीराचंदका काम यहाँ नही चलता था, रोज स्वय हाथसे रोटी बनाकर खिलाते थे, इससे साहजीने भी बम्बई चलनेकी ठान ली।

सेठ माणिकचदजीका छोटे भाईके साथ बम्बई जाना।

इस समय माणिकचदकी अवस्था १२ वर्षकी थी। यह देशी निशालसे उठकर गुजराती शालामें ५वीं कक्षा तक भाषा आदिका ज्ञान कर चुके थे तथा नवलचद केवल ९ वर्षके थे। यह देशी निशालसे उठकर किसी गुजराती शालामे भरती नही हो सके। घर ही में अपने पूज्य पितासे गुजराती आदि सीखे थे। साह हीराचदने अपना सब काम समेट कर बाजारमे जिसका जो देना था सो सब चुका दिया और संवत् १९२०के प्रारभमे ही हीराचदजी दोनों पुत्रोंको लेकर बम्बई आ गए और एक 'ग्राकमीनी चाल' नामक भाड़ेके मकानमे ठहरे।

हीराचद्रजीकी पुत्र सेवा।

साह हीराचदजीको यह पसन्द नही था कि ब्राह्मण आदि अजैनोंकी व अविवेकी जैनोंकी बीसीमे मूल्य देकर अशुद्ध भोजन किया जाय। उन्होंने जाते ही मोतीचद और पानाचदको भी बीसीमें नहीं जीमने दिया, अपने हाथसे

रसोई बनाकर रोज चारों पुत्रोंको खिलाने लगे और समयपर बाजारमे भी जाकर कुछ साधारण व्यापार करने लगे।

माणिकचदकी रुचि हिसाब किताबमें देखकर एक सराफके यहाँ वही खाता सीखनेके लिये बैठाया। १ वर्षमें ही यह सब ढग जान गए तब हेमकौरके कहनेसे सेठ हेमचद प्रेमचदने अपनी दूकानपर बिठाकर मुनीमतका काम लेना शुरू किया। थोडे दिनोंके बाद पानाचदने पिताजीसे कहा, कि माणिकचंद बहुत परिश्रमी और चतुर है, मेरी रायमे इसे भी मोती पुराना सिखलाना चाहिये। हीराचदजीने यह बात मानकर मोती पुराना सिखलानेमे माणिकचंदको भी लगा दिया।

हेमकुमरीका उपकार।

वास्तवमें माणिकचंद पानाचदकी उच्च स्थिति लानेमे मूल निमित्त कारण सेठ चुन्नीलाल हेमचदकी माता हेमकुमरी थी, जिसने अपने पिताको सुखी करने व भाईयोंकी उन्नत दशा करानेमें पूरी २ सहायता दी। हेमकुमरीने अपना सच्चा बहिनपना पालन किया।

सेठ माणिचदका व्यापारमें लगना।

माणिकचदमें एक यह बड़ाभारी गुण था कि जिस काममे दिल लगाते थे उसमे बिल्कुल लवलीन हो जाते थे, वास्तवमें उपयोगकी एकाग्रता बड़े २ काम कर सक्ती है। यह उपयोगकी एकाग्रता है जिसके कारण एक मुनि धर्मध्यानसे शुक्लध्यानको पाकर कर्मोंको काट मोक्ष अवस्थाको प्राप्त कर लेते है। उपयोगकी एकतासे ही एक विद्यार्थी थोडे ही कालमें किसी पाठको कंठ कर

पुत्री हेमकुंवरीके साथ पिताने मोतीचंदको बम्बई भेज दिया । उस वक्त सूरतमें बम्बईकी शोभा और महत्ताकी बडी धूम थी । मोतीचंद अपने साथके लडकोंसे व इधर उधर बम्बईकी बातें सुन चुका था । पिताकी आज्ञा पाते ही यह खुशीसे बहिनके साथ बम्बई चला गया ।

हेमचंदजीने मोतीचंदको बडे प्यारसे रक्खा । भोजनपानादिमें भले प्रकार खातिर की कि जिससे इसका मन उचाट न हो, और हेमकुंवरीकी सम्मतिसे मोतीचंदको मोती पुराना सिखानेके लिये मोती पोरनेवाले एक प्रवीण जौहरीके सुपुर्द कर दिया । मोतीचंद बडे आनन्दसे रहता और मोती पोरनेके हुनरको बडे प्रेमसे सीखता था । उस समय बम्बईमें मोती पोनेका हुनर जिनको अच्छी तरह आ जाता था वे प्रतिदिन दो २ तीन २ रुपयेकी मजदूरी सुगमतासे कर लेते थे । जब इसको बम्बईमें दो वर्षके अनुमान हो गया और यह इस हुनरमें चतुर हो गया तथा इसे कुछ लाभ भी होने लगा तब हेमकुंवरीने अपने पिताको खबर की कि द्वितीय पुत्र पानाचंदको भी यहां भेज दो ।

पानाचन्दका बम्बई जाना ।

पानाचंदकी उमर उस समय १२ वर्षकी थी । यह गुजराती स्कूलमें पांचवीं कक्षा तक पढ चुके थे । पिताने इस भारी आशासे, कि यह बालक चारोंमें तीव्र बुद्धि और साहसी है, अवश्य यह एक दिन भारी व्यापारी हो जायगा, हेमकौंरके लिखते ही इसे भी बम्बई भेज दिया । इसका मन पढनेकी अवस्थामें भी द्रव्य कमानेको चला करता था । पितासे आज्ञा पाते ही यह किसी

निवटकर बैठे हुए थे तब एक मारवाडी शास्त्रके ज्ञाता उस मंदिरमें दर्शनार्थ आये। वे इस बालकको देखकर इसके पास बैठ गए और इससे धर्मकी चर्चा पूछने लगे। इस समय तक यद्यपि ये कुछ पढते तो रहते थे, पर किसी प्रश्नका जवानी उत्तर नहीं दे सक्ते थे।

माणिकचंदका शास्त्र-स्वाध्याय प्रारंभ।

उस विद्वान्ने इनको उपदेश दिया कि तुम नियमसे शास्त्रोंका स्वाध्याय क्रम क्रमसे किया करो और जो बात न समझो वह किसीसे मालूम कर लिया करो। उसने कहा कि तुम **श्रीपद्मपुराण** और **श्रीरत्नकरंड श्रावकाचार**का स्वाध्याय पाच सात वार कर जाओ, तुम्हें बहुतसी चर्चा मालूम हो जायगी। माणिकचंद शुरूसे ही गुणग्राही थे। इस बातको इन्होंने पल्ले बाध उसी दिनसे श्रीपद्मपुराणका स्वाध्याय करना प्रारंभ कर दिया। माणिकचंदको गुजराती पुस्तक व समाचारपत्र बाचनेका भी शौक था। ग्रमें फुरसतके समय यह नाना प्रकारकी पुस्तकें पढते थे तथा बम्बईमें जब कभी **व्याख्यान सभा** सुनते थे, मौका निकालकर जाते थे और व्याख्यान सुनकर उसका सार ग्रहण करते थे और तीनों भाइयोंका इस तरफ कुछ ध्यान नहीं था। वे साधारण धर्म क्रिया व व्यापार धन्धेमें ही लीन थे।

मजदूरीसे व्यापारमें आना।

संवत १९२४ तक मोती पुरानेकी मजूरी करते रहे किन्तु बहुत सादगीसे रहने, किसी भी व्यसन में न पडने और द्रव्यका व्यर्थ व्यय न करने के कारण इनके पास इतनी पूंजी हो गई कि इन्होंने मोती पुरानेका काम छोड

लेता है व समझ लेता है। उपयोगके एक ओर देर तक जमाए रखनेके कारण एक व्यापारी व्यापारके ढंग भले प्रकार सोच सक्ता है। प्रयोजन यह कि हरएक कामको धैर्यके साथ पूरा करनेके लिये उपयोगकी थिरताकी आवश्यकता है। **एडिसन** जैसे अमेरिका आदि देशोंके विद्वानोंने इसीकी बदौलत नाना प्रकारके यन्त्र निर्माण किये हैं। विद्वान् लोग जब एकान्तमें किसी विषयका मनन करते हैं तो उसके भेदको खोज लेते हैं। टेलीग्राफ, टेलिफोन, बेतारका तार, मोटर गाड़ी, हवाई विमान आदि सर्व ही उपयोगकी थिरताके फल हैं। **माणिकचंद** इस उपयोगी गुणके आश्रयसे कुछ ही महीनोंमें ही मोती पुरानेमें चतुर हो गए और अपने दोनों भाइयोंके साथ मोती पोकर द्रव्य कमाने लगे। बाजारमें लोग पानाचंद और मणिकचंदके कामको बहुत ही पसंद करते थे और इनको खूब ही काम मिलता था।

नवलचंद भी व्यापारमें शामिल।

कामकी अधिकता व अपना यश फैलता देख भाइयोंने पिताजीको कहा कि नवलचंदको भी यह काम सिखाना चाहिये। नवलचंद अब अनुमान ११ वर्षके थे। नवलचंदने भी १ वर्ष परिश्रम कर इस कामको सीख लिया।

एकतासे चारोंकी व्यापारमें वृद्धि।

अब चारों भाई मिलकर बाजारके व्यापारियोंका मोती ले लेकर और पो पोकर देते थे। इनको सबसे अधिक बाजारमें काम मिलने लगा, क्योंकि यह बहुत चित्त लगाकर और सफाईसे वक्तके ऊपर सबका काम कर देते थे। चारों भाइयोंमें पूर्ण

प्रेम था । किसीके चित्तमे यह ईर्षा भाव नही था कि मैं इनसे चतुर हू व मैं अधिक धनका हकदार हूं । चारोंमे पानाचन्द और माणिकचन्द ही बडे चतुर और उद्योगी थे, पर यह बहुत ही समझदार, क्षमाशील और सादे मिजाजके थे । अधिक द्रव्य कमानेकी शक्ति रखनेपर भी कभी अपने मुहसे अपनी बडाई नही करते थे । **यदि इनमें मेल न होता तो इनकी इतनी प्रसिद्धि न होती** । एकताके कारण बाजारमे चारों भाइयोंका कोई नाम नहीं लेता, किन्तु "**भाई राम**"के नामसे पुकारता था । सर्व व्यापारी इन चारोंको **एक ही दिलवाले, ईमानदार, सत्यवादी और विश्वासपात्र** जानने लगे । चार पाच वर्ष इस तरह मिहनत करने से इन्होंने खर्चसे अधिक रुपया पैदा कर लिया तथा मोती व जवाहरातकी पहचान भी अच्छी तरह कर ली ।

सूरतसे बम्बई तक रेल्वे।

जब हीराचंदजी सूरतसे बम्बई आए थे तब सूरतसे बम्बई तक रेलगाडी नही थी, पर संवत् १९२१ या सन् १८६४ ता० १ नवम्बरसे सूरतसे बम्बई तक रेलगाड़ी चलने लगी । इन चारों भाइयोंमेसे जब किसी की इच्छा होती तब एक दो दिनके लिये सूरत चले जाते थे और वहाँके लोगोंसे व अपनी बहिन मच्छाबाईसे मिल आते थे । अब इनके मुखोंपर काति बढ गई थी, निराला जोश आरहा था । सूरतके लोग इनको उद्योगशील व कमाऊ जानकर बहुत ही प्रसन्न होते थे और जहॉ ये जाते थे व जिससे ये मिलते थे वह इनका सन्मान करता था। वास्तवमें देखा जावे तो व्यवहारमें द्रव्य और परमार्थमें आत्मज्ञान ही पूजे जाते हैं।

इनके हाथ मोतीका बहुत माल आने लगा और ये बहुत नफेके साथ बम्बईके ग्राहकोंमे फिरकर व दलालोंके द्वारा बेचने लगे। **सेठ पानाचंद माल खरीदनेमें अति चतुर थे, जबकि सेठ माणिकचंद माल बेचनेमें अति प्रवीण थे** । माणिकचदकी बातपर ग्राहकोंको तुरत विश्वास आजाता था और जो दाम यह बताते थे उसको सहजमें मान लेते थे । **माणिकचंदजीका सत्यवादीपना प्रसिद्ध था** । अपनी बड़ी उमरमें जब कभी यह किसीको शिक्षा देते थे तो यही कहते थे कि **सत्य बोलो, सत्यव्यवहार** करो, सत्यसे ही प्रतीति होती है तथा मैंने **सत्यसे ही रुपया कमाया है** । व्यापारमें विश्वासपात्रताकी आवश्यकता है और वह प्रतीतिपना सत्य वचन और सत्य व्यवहारसे जमता है ।

व्यापारमें कुशलता सत्यता व न्याय-परायणता ।

इस समय सेठ पानाचद और माणिकचद क्रमसे २२ और १९ वर्ष ही के थे, तथा मोतीचद २४ और नवलचद १६ वर्षके थे । चारों भाई मिलकर कोठीमें काम करते थे । किसी मुनीम गुमाश्तेको भी नहीं नियत किया था । सबने काम बाट लिया था। द्रव्य कमाते हुए रहते भी चारों ही भाई अपने पिताके अति दृढ उपदेशके कारण **ब्रह्मचर्यमें दृढ़ थे** । अभी तक इनमेसे किसीका लग्न नहीं हुआ था, तौभी किसीको भी किसी खोटे मार्गमें जानेका व्यसन न था । पिताश्री अब भी इनको अपने हाथसे रसोई बनाकर खिलाते थे । इनको दूसरे किसी नौकरकी रसोई खाना व खिलाना

मै इसका कुछ उद्यम करना उचित नही समझता हू क्योंकि मेरे पूज्य पिता मेरे हितमे पूर्ण उद्योगी है, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। वे जब उचित समझेंगे तब मुझे गृही बनावेंगे तबतक मैं अति स्वतन्त्र रहता हूँ और ब्रह्मचर्य्यको पाल, व्यायामकर, योग्य भोजन ले, व्यापारमे उद्यमी रह तथा सदाचारसे चल अपने धर्ममे विश्वास रखता हुआ पूर्ण सुखी हो रहा हूं। हे मित्र ! वास्तवमें यह स्त्री तो शरीरके वीर्य्यको नष्ट करनेवाली और बहुतसी आकुलताओंमे फंसानेवाली है। हा, गृहस्थको सतानके लाभार्थ पत्नीकी आवश्यकता होती हे।

मित्र भी बहुत विचारशील थे—बोले—" सेठजी ! आपके विचार बहुतही अच्छे है, मुझे बडा हीआनन्द हुआ है। असलमे ब्रह्मचर्य्यके समान इस मनुष्यका कोई मित्र नही है। परमात्माका ध्यान वही कर सक्ता है जो इसको अच्छी तरह पालता है। आप इसकी चिन्ता न करे। मै जानता हूं आपके पूज्य पिता बड़े ही गभीर विचारवाले और धर्मात्मा है। आपको अपने जीवनका आधार उनहीको समझकर उनमे भक्ति रखनी चाहिये। फिर मित्रने पूछा कि आजकल आपका व्यापार कैसा चलता है ? सेठ मोतीचद ने कहा कि मेरे छोटे भाई पानाचद और माणिकचद व्यापारमें बहुत कुशल और भाग्यशाली है उनके निमित्तसे बाजारमे बहुत अच्छा काम चल रहा है। यद्यपि अभी लक्षपति तो हम अपनेको नहीं कह सक्के पर सहस्रोंकी कितनी सख्या तक हम पहुँच गए हैं और पहुँचते जाते है। हमारे पानाचदकी निगाह माल खरीदनेमें ऐसी सुघड है कि वे जिस मालको लेते है उसमें बहुत अच्छा

नफा उठाते है। मित्र मोतीचदके इन शब्दोंको सुनकर चित्तमे कहने लगे कि वास्तवमे यह बहुत ही लायक मनुष्य है जो अपने छोटे भाइयोंक गुणानुवाद परोक्षमे कर रहा है और अपने आपको उनके सामने हीन जता रहा है, यही आर्जयन है, यही सज्जनता है, यही गुणग्राहकता है, यही एकताका कारण है। यदि परस्पर एक दूसरेके गुणोंको ग्रहण किया जाय और प्रत्यक्ष या परोक्ष एकसे ही भावोंसे गुणोंका कीर्तन किया जाय और **दोष व छिद्र देखनेमे कम दृष्टि दी जावे तो एकतादेवी उनसे कभी नहीं रूठती** है, जहॉ एक दूसरेके अवगुणको ग्रहणकर टीका की जाती है वहॉसे एकता रूठ जाती है और फूट चडालिनीका वास हो जाता हे यही गुणग्राहकताका गुण इनके पिता सेठ हीराचदमे हे। हर्षकी बात है कि इन भाइयोंम वही गुण हे तब ही ये चारो भाई एक साथ मिलकर व्यापार करते और रहते है- किसी प्रकारकी भिन्नता देखनेमे नही आती है। इस तरह अनेक बातें करते २ दोनो मित्र हवा खाकर लौट आए।

सेठ मोतीचद उस रात्रिको घरमे बैठे थे पर मित्रका वह प्रश्न इनके दिमागसे नहीं जाता था इससे कुछ चित्तपर उदासी सी छा रही थी। सेठ हीराचदजी नित्य रात्रिको अपने चारो पुत्रोंसे दिनभरकी बातें पूछा करते थे तब परस्पर मित्रवत गोष्ठी करते हुए पाचों जने अपना थोडा समय विताते थे। यह मित्रगोष्ठी भी एकताके स्थापनका एक मुख्य कारण है। इसके निमित्तसे किसी तरहका अविश्वासव गैरसमझपना नही होने पाता है। उस रात्रिको सेठ हीराचंदने मोतीचदको कुछ उदास देखा। सर्व भाइयोंके सामने तो सेठजीने

इसका कारण पूछना उचित नहीं समझा क्योंकि यह न्याय ही है कि जो अंत.करणका रहस्य है वह एकान्तमे ही कहा जाता हैं। जब मोतीचंद शयनालयको गए तब सेठ हीराचंद कुछ रात्रि वीतने पर उनको जगा उनकी उदासीका कारण मालूम करने लगे। मोती चदको मित्रके प्रश्नकी बात कहते हुए बहुत लज्जा आती थी पर पितासे किसी बातको छिपाना भी वे उचित नही समझते थे। उन्होंने थोडी देरबाद सन्ध्याकालकी वार्ताको कह दिया।

मोतीचंदका विवाह। सेठ हीराचद अपने मनमे विचारने लगे कि अब मुझे देर नहीं करना चाहिये और अपने पुत्रोंकी शीघ्र लग्न करना चाहिये। मोतीचदको कहने लगे कि तुमने उसे बहुत योग्य उत्तर दिया। हमने तुमारे लिये योग्य सम्बन्ध ठीक कर लिया है। मोतीचदने सिर नीचा कर लिया।

पाठकोंको पहले कहा जा चुका है कि हूमडोंका विस्तार ईडरकी ओर भी था। गुजरात देशमे **ईडर** एकदेशीराज्य है। वहाँपर अब भी वीसाहूमड और दशाहूमड जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, भट्टारककी गद्दी है, और एक प्राचीन दि० जैन शास्त्रभडार भी है। वहीं गाधी मोतीचद फूलचद वीसाहूमड एक धर्मात्मा दिगम्बर जैनी रहते थे। सवत १९१२ मे उनको एक कन्याका लाभ हुआ जिसका नाम **रूपवती** था। यह कन्या स्वरूपमे सुन्दर थी, इसके पिता भी बहुत बुद्धिमान और धार्मिक नियमोंसे परिचित थे।

इन्होंने **रूपवती**को बडे प्रेमसे पाला था, इसे शुरूसे ही श्रीजिनमदिरजीमें ले जाया करते थे। इस कन्यामे ऐसी आदत पड़

गई थी कि यह श्री जिनेन्द्रके दर्शनमें बडे भाव लगाती व खूब स्तुति पढकर नमस्कार करती थी। मदिरमे हरएक नरनारी इसे देखकर प्रसन्न होते थे। यह कन्या मातापिताकी अति आज्ञाकारिणी थी। उस समय ईडरमें भी कन्याओंकी शिक्षाका न तो कुछ प्रबन्ध था और न मातापिताओंको यह भाव ही पैदा होता था कि हम कन्याओंको पढावें। विना पुस्तकके ज्ञानके भी रूपवतीकी माताने इसे घरका सर्व कामकाज बहुत ही सुघड रीतिसे करना बता दिया था। रसोईकी विधि व शुद्धता, पानी छाननेकी विधि, अन्न बीनना, घरकी सफाई, वस्त्र सीना आदि सर्व कामोंको यह बहुत चतुराईसे करती थी। कभी २ पिता इसको अपने साथ धर्मोपदेश सुनानेको ले जाते थे यह बहुत रुचिसे सुनती और जो सुनती उसे धारण कर लेती थी, इसका चित्त धर्मकथा व धर्मसेवनमें खूब ही लवलीन रहता था। विवेक और दया भी इसके चित्तमें थे जिससे हरएक काममे जीवरक्षाका बहुत विचार रखती थी। यह कन्या मातापिता व कुटुम्बियोंकी अति ही प्यारी थी। माताके आग्रह होनेपर भी गाधी मोतीचदने रूपवतीकी लग्न अल्प वयमे करना ठीक नही समझा। गाधी मोतीचद यही चाहते थे कि किसी बहुत योग्य सम्बन्धके साथ इसका पाणिग्रहण किया जाय। गुजरातके हूमडोंमें उन दिनों सेठ हीराचंद और उनके पुत्रोंकी कीर्तिकी सुगध फैल गई थी और हरएक उनके उद्योगकी सराहना करता था। ईडरमें भी यही चर्चा होती थी। गाधी मोतीचदका मन भी यही चाहने लगा कि इस कन्याका सम्बन्ध बम्बईके जौहरी सेठके साथ करें, जिसमें इसका जीवन बहुत सुखसे बीते और यह दान व धर्म

खूब ही कर सके क्योंकि इसका चित्त अति ही आर्द्र और कोमल है। एक दफे गाधी मोतीचंद उस कन्याके साथ बम्बई पधारे और वहाँ मौका पाकर सेठ हीराचंदसे मिले और निवेदन किया कि हमारी कन्या रूपवतीको हम आपके श्रेष्ठ पुत्रको देना चाहते हैं।

हीराचदने उसका जन्मपत्र मॉगा तथा वह भी इच्छा प्रगट कि कि यदि आप रूपवतीको यहा लाए हो तो मैं उसे किसी मौकेपर देख भी लूँ। गाधी मोतीचद इस बातसे बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा कि कल श्री जिनमदिरजीमे जब वह दर्शन करने जायगी तब आप उसको देख सक्ते हैं। सेठ हीराचंद मदिरजीमे घटा आध घटा रोज सबेरे बैठते थे। दूसरे दिन गाधी मोतीचदके साथ रूपवती बहुत ही विनयके साथ द्रव्यको लिये दर्शन करनेके लिये श्री जिन मदिरजीमे गई, उस समय सेठ हीराचद शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। गाधीजीके साथ एक कन्याको दर्शन करते हुए देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए, उसकी चाल, ढाल, विनय भक्ति, स्तुति पठन, सौम्य और सुन्दर रूप सेठ हीराचदके मनमे नक्श हो गए और उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि इस कन्यासे ही मेरा पुत्र सुशोभित हो, यही सच्ची गृहिणी होगी। दूसरे समय पर गाधी मोतीचंद जब फिर सेठ हीराचदजीसे मिले तब परस्पर वार्तालापमें एक दूसरेकी पसन्दगी हो गई, केवल जन्म पत्रिकाओंका विचार ही करना शेष रहा। थोड़े दिनके बाद यह विचार भी हो लिया।

जिस दिन सेठ मोतीचंद और एक मित्रसे बम्बईके समुद्र-तट पर वार्तालाप हुआ था उसीके तीन मासबाद सवत् १९२८ में जब मोतीचंद २९ वर्षके थे सेठ हीराचंद इनके विवाहकी तय्यारिया

करने लगे । इस समय सेठजीके चित्तमें वडा भारी उत्साह था क्योंकि अपने जीवनमे यह पहला ही पुत्रका विवाह था जो इनको करना था। सूरतकी स्थितिसे अब इनकी स्थिति बहुत बदल गई है, बम्बईमे भी अब यह सेठोंकी गिनतीमे हे तथा अपनी हूमड जातिमे तो यह धनाढ्योंमें प्रसिद्ध है। इनका व्यापार ज्यों २ दिन वीतते जाते है चमकता जाता है। **पुण्यात्मा पानाचंद और माणिकचंद जिस सौदेमें हाथ डालते है लाभ उठाते है।** सेठ हीराचन्दने एक रात्रिको अपने चारों पुत्रोंको एकत्र कर सम्मति ली कि इस विवाहमे कितना रुपया खर्च करना चाहिये । जिस समय इस बातको छेडा गया। नवलचद जिनकी उमर १७ वर्षकी थी और जिनको कुछ वाहरी चीजोंका शौक अधिक था यकायक कहने लगे कि पिताजी! आजकल हम लोगोंका नाम बहुत प्रसिद्ध है, हमे इस विवाहमें खूब धन खरचना चाहिये जिसमे हमारी खूब प्रशसा हो और जातिम महत्पना प्रगटे । ईडर राज्यमे भी हमारी खूब ही प्रसिद्ध हो । इसकी बात सुनकर सेठ हीराचद हसे और बोले कि हमको बहुत उछलना कूदना नही चाहिये, हमे अपनी सादी चाल व सादा स्वभाव नही छोडना चाहिये । व्यापारका क्या भरोसा है? आज यदि लाभ है कल हानि हो जाय तो क्या किया जायगा? इससे हमको खूब विचार करके एक रकम इस निमित्त काढनी चाहिये और व्यापारमे किसी तरहकी जोखम आ जावे सो काम नहीं करना चाहिये। सेठ पानाचद बोले, पिताजी ! आप कोई शंका न करें। हमारे व्यापारमें हानिकी कोई आशका नहीं है । आपके प्रतापसे जो माल अपनी

निगाहमे आता है और खरीदा जाता है उसमें लाभ ही होता है। आप दिल खोलकर खर्च कीजिये। अपने भाग्यके अनुसार हम और बहुत कमा लेवेंगे। माणिकचंदजीने कहा कि भाई पानाचंद, यह तो तुम्हारा कहना ठीक है पर हरएक काममे पूर्वापर विचारकी जरूरत है। बाजारकी स्थितिको पलटते देर नही लगती है। इससे हम लोग कितना रुपया इस विवाहके निमित्त निकालें इसका पक्का आकडा बाधदेना चाहिये, पिताजी उसीमे सब काम निबटावेंगे। पानाचदजीने पितासे पूछा कि कितनी रकम आप खरचना चाहते हैं? सेठ हीराचंदजीने कहा कि विवाहमे जितना खर्च किया जाय उतना हो सक्ता है। १ हजारसे १० हजारतक खर्च हो सक्ता है, पर मेरी समझमें २०००) दो हजार रुपयेका अनुमान बाधा जाय तो वश होगा। सर्व भाइयोके ध्यानमे यह बात जच गई और तय होगया कि दो हजार रुपये खर्च किये जावें।

विवाहका समय निकट आते ही बम्बईमे तय्यारिया होने लगीं और नियत मितीपर बारात ईडर पहुची। सूरत और बम्बई-से बहुतसे भाई शामिल हुए। ईडरमे गाजेबाजे आदिसे बहुतही धूम-धाम छा गई। बम्बईसे बारात आई है इस खबरसे बहुतसे नरनारी उसके देखनेको उत्कृष्ट हो घरसे निकल आए। २९ वर्षके युवान वरको घोडेपर सवार देखकर बुद्धिमान लोग बहुतही गुण गाते थे कि वास्तवमें विवाह तो इसी उमरमें ही करना चाहिये। बारात गाधी मोतीचदके द्वारपर पहुची। उसके उपर एक खिडकीमें रूपवती वस्त्राभूषणोंसे सज्जित अतिशय यौवनमे परिपूर्ण बैठी थी।

व इसकी अवस्था १६ वर्षकी थी। यद्यपि ईडरमें और लोग अपनी २ कन्याओंकी लग्न १२, १३ वर्ष ही में कर देते हैं पर यह खास लग्न बम्बईवालोंके सम्बन्धके निमित्तसे इस अवस्थामें हुई। यदि देखा जाय तो १६ और २५ वर्षोंका सम्बन्ध बहुत ही प्रौढ और योग्य होता है। कन्या रूपवती अपने पतिको अति ढ जवान देखकर बहुत प्रसन्न हुई। जातिकी रसमके अनुसार लग्नादि क्रियायें हुईं। गाधी मोतीचदने बरातियोंका बहुत ही सन्मान किया, किसी प्रकारकी दिल मैली न हुई जैसी कि बहुधा आजकलके मूर्ख सम्बन्ध करने वालोंमे हो जाया करती है। शुभ मुहूर्त्तमें बरात विदा होकर ईडरसे सूरत आई। सूरतमे अपने जन्मके मकानमे ही सेठ मोतीचद आदि ठहरे। वहाँ अपनी नव वधूको देखकर यह बहुत ही गदगद वदन हो गए और ऐसी सौम्य व रूपवान वधूको पाकर अपने पुण्यके तीव्र उदयको मानते हुए। कुछ दिनों बाद रूपवतीका अपने पिताके घर आना हुआ। सेठ मोतीचद व्यापारार्थ बम्बई आ गए। अभी इनको अपनी पत्नीसे सासारिक प्रेम करनेका अवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

सेठ पानाचदका विवाह।

सेठ हीराचदजीने सूरतमे आकर सेठ घेलाभाई धरमचदजी तासवालाकी कन्या **फूलकुमरी**से पानाचदकी लग्न करनेका निश्चय किया, चार मास पीछे ही विवाहकी मिती नियत की। सेठजी बम्बई गए और पहलेकी तरह इस विवाहमें भी २०००) रु० खरचनेका निश्चय करके ठीक मिती पर विवाहका प्रबन्ध हुआ। पानाचदकी अवस्था २३ वर्षके अनुमान थी।

फूलकुमरी करीब १४ वर्षकी थी, पर शरीरमें सुकुमारपना अधिक होनेसे बहुधा अस्वस्थ रहा करती थी। शुभ मुहूर्तमे दोनोंका पाणिग्रहण हुआ । सूरत नगरमें इस विवाहकी खूब धूमधाम हुई । सेठ हीराचंद और सेठ घेलाभाई तासवालाने सबंधियोंका यथायोग्य सत्कार करनेमे कोई त्रुटि नहीं की ।

सेठ हीराचंद अपने दो पुत्रोंका विवाह कर बहुत ही सतुष्ट हुए । इनमें किसी तरहका अपयश न पाते हुए अपनेको कृतार्थ मानते हुए ।

रूपवतीका सुघडपना।

थोडे दिनोंके बाद मोतीचंद और पानाचंदकी पत्नियाँ बम्बईमें आ गई । अब सेठ हीराचंदको अपने हाथसे रसोई बनानेसे छुट्टी मिली। ये दोनों स्त्रिया घरका सर्व काम कर लेती थी। दोनोंमें विशेष चतुर रूपवती थी जो अकेले ही सर्व कामकाज करनेमें निरालस्य थी । पानाचंदकी स्त्री निर्बलशरीर होनेके कारण घरके काममें अधिक मदद नही दे सकती थी तौभी रूपवतीको इसका कोई दु ख न था, जैसा बहुधा स्त्रियोंमें हो जाया करता है कि परस्पर द्वेष व ईर्षाभावसे प्रेम नही रखते सो बात इन दोनोंमें न थी । रूपवती बहुत ही सहनशील, समझदार और धर्मात्मा थी । बहुत ही आनन्दसे सारे कुटुम्को हर तरह तृप्त रखती थी ।

रूपवतीको कन्या लाभ।

थोडे ही दिन पीछे रूपवती गर्भावस्थाको प्राप्त हुई । सेठ हीराचद और मोतीचंदके दिलमें बहुतही हर्ष हुआ । सेठ हीराचंदको आशा हुई कि अब पौत्रका मुख देखूगा और जन्मोत्सव भले प्रकार करूगा । ९ मास पीछे रूपवतीने पुत्री-

का जन्म दिया । यद्यपि इससे सेठ हीराचदजीकी वह आशा पूरी नही हुई क्योंकि ससारमे सर्व ही काम इच्छानुसार होना अतिशय दुर्लभ है तथापि पुत्रीके होनेमे भी यथायोग्य दान पूजा व उत्सव मनाया गया । गाधी मोतीचदको भी बहुत हर्ष हुआ । रूपवती इस कन्याको प्राप्त कर बहुत तृप्त हुई और बहुत होशियारीसे उसे पालने लगी । अब सेठ हीराचदके कुटुम्बकोएक धनाढ्य, न्यायवान गृहस्थीको जैसा सतोष होता है ऐसा सतोष रहने लगा, सो ठीक ही है, जब पुण्यका उदय होता है तब सासारिक अवस्थाए साताकारी प्राप्त होती हैं ।

पुण्योदयसे व्यापारमें वृद्धि ।

उधर व्यापारमे भी दिनपर दिन वृद्धि हो रही थी । जो मोतीका व्यापार पहले साधारण था वह अब बहुत बढ गया था। यह मोतीके बडे व्यापारी बाजारमे माने जाने लगे । सवत् १९३० तक इनके यहॉ लक्ष्मीका अच्छा वास हो चला । इस सालसे यह थोकबध माल एकत्रकर बम्बईमे व परदेशमे भी बेचने लगे। हूमड दिगम्बरियोंमें इनको सर्वसे पहले सफलीभूत सुनकर इधर उधरके बहुतसे दिगम्बरी हूमड व्यापारार्थ बम्बई आने लगे और अपने२ ग्राम लौटकर इन सेठोंके व्यापार, सादे स्वभाव और कीर्तिकी महिमा गाने लगे । यह भी एक बडे महत्वकी बात इन चारों भाइयोंमें थी कि **लक्ष्मीकी वृद्धिके साथ विनय, नम्रता और सादगी बढ़ती जाती थी**—अभिमान तो पास छूकर नहीं निकलता था ।

माणिकचंदका परोपकारी स्वभाव ।

चारों भाईयोंमें सेठ माणिकचन्दकी आदत मिलनसारीकी अच्छी थी। यह सबसे मिलते, उनके दुःख सुखको पूंछते और जो कुछ अपनेसे बनता मदद देते थे। पाठकोंको मालूम ही है कि यह रोज श्री जिनमंदिरजीमें प्रक्षाल पूजन स्वाध्यायादि कार्य्य बड़े प्रेमसे करते थे। बम्बई नगरमें व्यापारादि अनेक कार्योंके निमित्त बहुधा अनेक देशोंके जैनी भाई आते और जब वे दर्शनार्थ मंदिरजीमें जाते तो जहाँ तक सेठ माणिकचन्दजीकी दृष्टि पडती व मौका होता यह अवश्य उन सबसे मिलते, उनका हाल पूछते और उनके कामकाजमें हर तरह सहायता देते थे। बहुतसे दक्षिण व उत्तरके जैनियोके लौकिक और धार्मिक काम उक्त सेठकी मददसे हो जाते थे। इनके प्रतिदिनका थोडा समय इस प्रकारके परोपकारमें भी जाता था। कई भाई जो आजीविकार्थ बम्बई आते उनको यह आजीविकामें जोड देते व जब तक विना द्रव्य कमाए उनको दो चार मास रहना पडता यह उनके भोजन खर्चका व ठहरनेका प्रबंध भी कर देते थे। **छोटे व बड़े सबके साथ बहुत ही प्रीतिसे बात करना इनका एक जातीय स्वभाव था।** अन्य तीन भाइयोंमें मिलनसारीका गुण बहुत ही साधारण था। यदि कोई चाह करके बात करता तो ये सुनकर उसको उत्तर देते थे। ये तीनों भाई अपने नित्यके चालू काम करनेमें ही दत्तचित रहतेथे परोपकारकी खोज नहीं करते थे तौ भी अभिमानी व सकुचित चित्त नही थे। जिस परोपकारके काममें सेठ माणिकचंद द्रव्य खर्चनेकी इच्छा प्रगट

करते थे सर्व बड़ी ही खुशीसे राजी हो जाते थे। सेठ माणिकचंद परोपकारी व धर्मात्मा है यह देखकर सर्व भाइयोंको बहुत ही हर्ष होता था। इस कारण माणिकचंदजीका सुयश अभी ही से दूर दूर तक फैलना शुरू हो गया था। बहुतसे परदेशी हूमड बम्बईमे आकर जब यह मालूम करते कि सेठ माणिकचंदजी अभी तक कुमारे हैं तब उनके चित्तमें यह इच्छा हो उठती कि हम अपनी कन्या ऐसे ही योग्य पुरुषको परणावे तो उसका जन्म सफल हो।

सेठ माणिकचंदजीका विवाह।

शोलापुर जिलेके करमाला तालुकेके **नान्नेजजवाला** ग्रामनिवासी एक मुख्य हूमड साह पानाचंद उगरचंद दोभाडा भीएक दफे बम्बई आये और सेठ माणिकचंदको प्रत्यक्ष देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। इनके तीन कन्यायें और एक पुत्र था। जिनमें दो कन्याओंका विवाह हो चुका था और तीसरी कन्या कुमारी थी जो बहुतही सौम्य शरीर, गुणशाली और चतुर थी, जिसका नाम भी **चतुरमती** था। इसकी माताका नाम माणिकबाई था। इस कन्याके लाभसे मातापिताको बड़ा भारी हर्ष था और इसे सब ही चाहते थे। यह अपने मातापिताकी आज्ञानुसार चलनेवाली व माताके सिखानेसे घरके कामकाजमें अति प्रवीण हो गई थी। मातापिता यह चाहते थे कि इसको किसी प्रसिद्ध पुरुषके साथ ही परणाया जाय। सुरतके इन चारों भाइयोंकी कीर्ति दूर २ तक हूमडोंमें फैली हुई थी। शाह पानाचंद दोभाडा माणिकचंद सेठको कुमारा जानकर बहुत ही संतोषित हो अपने चित्तमें यही ठानते हुए कि हम अपनी **चतुरबाई**को इन्हींके

साथ परणाएगे । शाहजी सेठ हीराचंदसे मिले और अपनी इच्छा प्रगट की। सेठ हीराचद भी यह चाहते थे कि माणिकचदकी आयु अब २२ वर्षकी हो गई है अतएव इसका विवाह हो जाना ही मुनासिब है, पर सेठजी बहुत चतुर थे। वे हीरेको विना देखे हीरा कहनेवाले नहीं थे। शाह पानाचदजीको कहा कि यदि आपकी इच्छा अपनी कन्या देनेकी है तो एक दफे आप उसे लेकर बम्बई आइये, मैंउसे देखकर व जन्म पत्री जाचकर आपसे पक्का सम्बन्ध करूगा। साह पानाचंदको तो यह खटका था, शायद सेट माणिकचदकी सगाई कही और हो गई हो तो हमे निराश होना पडेगा सो अब वह शंका निकल गई और यह निश्चय हुआ कि अवश्य मेरी मनोकामना पूर्ण होगी क्योंकि वह कन्या भी एक भाग्यशाली है। कौन ऐसा है जो उसके गुणोंको पसन्द न करे ? पानाचदने सेठ हीराचदजीको कहा कि आपकी इच्छानुसार ही कार्य्य होगा। कुछ काल पीछे दोभाडाजी बम्बईमें व्यापारिक काम करके लौटे और अपनी पत्नी व चतुरमतीको साथ लेकर श्री कुथलगिरीकी यात्रा करते हुये बम्बई पधारे और अवसर पाकर सेठ हीराचदजीको खबर दी कि कल आप मदिरजीमे मेरी कन्याका निरीक्षण करे। दूसरे दिन साह पानाचद दोभाडा सपत्नीक चतुरमतीके साथ श्री जिनमदिरजी गए। उस समय सेठ हीराचद स्वाध्यायसे निवृत्त हो समतासे बैठे थे इतनेमें देखते क्या है कि एक कन्या चद्रमाके समान अपनी मुखकी सौम्यताको प्रगट करती हुई बहुत विनयके साथ मुह नीचा किये जमीनको देखती हुई हाथमें एक वाटकीमें सामग्री लिये हुए अति कोमलाङ्गी सुवडपनेको धारे हुए एक बडी स्त्रीके साथ मदिरजीके भीतर आई। पीछेसे शाह पानाचन्दजी

दोभाडा भी आए। इनको देखते ही सेठ हीराचन्दने निश्चयकर लिया कि यही वह कन्या है जिसके लिये माणिकचन्दको दोभाडाजीने चाहा है। इसको विनयसे दर्शन करते, सामग्री चढाते, स्तुति करते, प्रदक्षिणा देते व नमस्कार करते हुये देखकर हीराचन्दजी बहुतही राजी हुए तथा इसके गुणोंकी झलकसे हीराचन्दजीको निश्चय हो गया कि माणिकचन्दको हर प्रकार प्रसन्न करनेवाली यह कन्या होगी। उधर सेठ माणिकचन्दजी भी स्वाध्याय कर रहे थे। एकाएक वे उठे और उनकी दृष्टि इस कन्याके मुखपर पडी, पडनेके साथ ही इनका मन उसको अपने अंतःकरणमें रखकर लोभायमान हो गये। दक्षिण व गुजरातकी स्त्रियोंमें परदा रखनेका रिवाज न अब है और न पहिले था। यह परदेका रिवाज बंगाल, बिहार, युक्तप्रांत और पंजाबमें मुसल्मानोंके विशेष सम्बन्धसे ही चला है। वह कन्या अपनी माताके साथ एक कोनेमें जाप करने बैठ गई। साह पानाचंद भी जाप पाठ करने लगे। अपने स्वाध्याय करनेके स्थान पर सेठ माणिकचन्दजी फिर बैठकर एक और शास्त्रको निकाल बाहरसे देखने लगे पर इनका मन उस कन्याके ख्यालमें उलझ गया था। उधर वह कन्या जब अपनी माताके साथ उठी और चलते हुए जब फिर श्री जिनेन्द्रके सन्मुख नमस्कार करनेको आई तब नमस्कार करनेके पीछे चलते हुए उसकी दृष्टि सेठ माणिकचंद पर पडी और उसके हृदयने उसको यही गवाही दी कि यदि यह कुमारे हो तो मेरे पति होने योग्य यही है। इस कन्याकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके होगी।

दूसरे समयपर शाह पानाचंद दोभाडा सेठ हीराचंदजीसे

मिले और वातचीत करके व जन्मपत्र आदि देख दिखा कर इस सम्बन्धका पक्का निश्चय कर लिया और शीघ्र ही विवाहकी मिती तय करली।

एक दिन सेठ हीराचंद मोतीचंद और पानाचंदको माणिकचंदके इस सम्बन्ध होनेकी बात कह रहे थे व चतुरमती कन्याकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे, कारणवश सेठ माणिकचंद भी उस समय घरमें आए और उनके कानमें यह सब शब्द सुन पड़े। इन शब्दोंके सुननेसे सेठ माणिकचंदजीको जो हर्ष हुआ वह वचन अगोचर है। वह जिस रूपको अपने चित्तमें बिठा चुके थे, जिसकी मूर्तिका नक्श अपने अंतःकरणकी भूमिपर जमा चुके थे, जिसके पुण्य गुणोंकी सुगंध अपनेको स्पर्शित करानेके लिये आकर्षण कर चुकी थी, उसके लाभका दृढ निश्चय जानकर, उससे साक्षात्कार होनेका दृढ विश्वास कर व उस मूर्तिके साक्षात् ग्रहणका उमंग धारकर सेठ माणिकचंद अपनी युवावस्थाके निमित्त काम भावके विचारोंमे उलझकर मन मोदक बनाने लगे।

२२ वर्षकी आयु धारी सेठ माणिकचंदकी बारातमें बम्बई व सूरतके बहुतसे हूमडोंको लेकर सेठ हीराचंद दक्षिणकी ओर रवाना हुए। वहाँपर महाराष्ट्रदेशकी शोभा इनको गुजरातकी अपेक्षा एक विलक्षणता बताती थी। सेठ हीराचंदने अपने पुत्रोंसे सम्मति करके इस विवाहमें २०००) रु खर्च करनेका निश्चय किया। बहुतही धूमधामसे नान्नजजवला ग्राममें बारात पहुँची। गांववाले बम्बईके सेठों व सूरतके गुजरातियोंकी पगडियोंको देखकर आश्चर्यान्वित हुए और चतुरमतीके भाग्यकी सराहना करने लगे। सारे ही गांववाले

सेठ माणिकचंदको सिंह समान तेजस्वी, २२ वर्षका नवयुवक और बलिष्ठ देखकर बहुतही आनन्दित हुए और ऐसा उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करलेनेके निमित्त शाह पानाचंद दोभाडाकी बुद्धिमानीकी खूब प्रशंसा करने लगे।

शुभ महूर्तमें लग्नादिक क्रियाएँ हुई। जिस समय सेठ माणिकचंदका हाथ **चतुरमतीके** हाथसे मिलाया गया उस समय दोनोंको परस्पर स्पर्श होनेसे ऐसा हर्षभाव हुआ कि जैसा किसीको अमृतरसके पीने व चिन्तामणि रत्नके लाभसे होता है। सो बात ठीक ही है जहाँ प्रेमभावका सम्बन्ध होता है वहीं अपनी कल्पनासे रतिपना झलकता है। सासारिक सुख मनकी कल्पनाका फल है। इस विवाहमें श्री जिनमंदिरजीको व अन्य स्थानोंको दान धर्म भी अच्छी तरह किया गया।

रूपमतीकी पुत्रीका परलोक।

इस विवाहको पूर्ण करके और नवीन वहूको लिवाकर सेठ हीराचंदजी बम्बई आए और थोडे दिन सुखसे रहे कि एकाएक सेठ मोतीचंदकी पुत्री एक रात्रिको अतिशय शीत पवनके लग जानेसे बीमार पड गई। कुछ दिनतक बीमार रही। उसके अच्छे होनेके लिये खूब रुपये खर्च हुए पर वह अच्छी न हुई। उसकी आयुका अंत आन पहूंचा और वह सारे कुटुम्बको उदास करके व रूपवतीको अतिक्लेशित अवस्थामें छोड इस जडमयी शरीरको छोडकर चलदी—उसका आत्मा अन्य पर्यायको प्राप्त हो गया।

इस समय सेठ हीराचंदजीको जो दुःख हुवा, रूपमतीको

जो क्लेश हुआ व मोतीचंदको जो उदासी हुई उसको वे ही जानते है। **संसारका चरित्र ऐसा क्षणिक है कि किसीका भरोसा नहीं है** । जिस वस्तुपर यह आस्था की जाती है कि यह वस्तु हमारे पास बनी रहेगी वही वस्तु कालान्तरमे जब लुप्त हो जाती है तब इस क्षुद्र मनुष्यका कोई वश नहीं चलता और यह हाथ मलकर रह जाता है। जिस कुटुम्बको थोडे ही दिन पहले सेठ माणिकचंदजीके विवाहसे हर्ष हुआ था उसीको इस समय शोक प्रवाहमे बहना पडा।

केशरियाजीकी यात्रा। थोडे ही दिन पीछे सेठ हीराचंदजीके भाव श्री **केशरियाजकी** यात्राके हुए। गुजरात व मेवाडके जैनियोंको इस अतिशय क्षेत्रकी पूर्ण भक्ति है। यह क्षेत्र उदयपुर राज्यमे धुलेव व ऋषभदेव नामके ग्राममें है। जहाँ यह क्षेत्र है वहाँ अति प्राचीन श्रीऋषभदेवजी जैनियोंके प्रथम तीर्थंकरकी बहुत ही मनोज्ञ और सौम्य दिगम्बर जैन बिम्ब मूल मदिरजीमे विराजमान है। वही केशरियाजीके नामसे प्रसिद्ध हो गया है। प्राय जैनियोंमे भी ऐसे लोग पाए जाते हैं जो किसी लौकिक कामकी सिद्धिके लिये ऐसी कामना करते हैं कि यदि हमारा अमुक कार्य्य सिद्ध हो जायगा तो हम अमुक काम करेंगे। किसी प्रसिद्ध धनाढ्यने यह भावना की होगी कि हमारा अमुक काम हो जायगा तो हम अमुक तोलभर केशर चढावेंगे। उस कार्यकी सिद्धि उसके पूर्व पुण्यके उदयसे हुई पर उसने यही विश्वास कर लिया कि मैंने जो मानता मागी थी उसको श्री ऋषभदेवजीन पूर्ण कर दी, उसने वहा बहुतसी केशर चढाई। यह

ाते ज्यों २ प्रसिद्ध हुई और लोग भी ऐसा करने लगे। इसतरह स क्षेत्र व प्रतिमा दोनोंको केशरियाजीके नामसे पुकारने लगे। हि भव्य मूर्ति करीब ६ फुट ऊंची पद्मासन श्याम वर्ण अति सौम्य है। इस पर कोई सम्वत नहीं है इससे यह सवत लिखनेके रिवाजसे पहलेकी निर्मापित है। इसके चारों ओर और भी दि० जैन मूर्तियां एक धातुपटमें अंकित हैं। इस मूल मंदिरके चारों ओर और भी वेदियां हैं जिनमें दि० जैन मूर्तियां विराजमान हैं, मन्दिरके चारों ओर एक बड़ा भारी **कोट** है जिसको **सागवाडा** निवासी **हूमड़** जातीय दिगम्बर जैनी **सेठ धनजी करणजी**ने स० १८६३ में बनवाया था। इस क्षेत्रकी भक्ति करनेको दिगम्बर श्वेताम्बर सर्व जैनी जाते हैं। पहले सर्व प्रबन्ध दि० जैनियोंके भट्टारकोंके हाथमें था, पीछे उनकी ढीलसे राज्यने एक कमेटीके आधीन किया है जिसमें ८ मेम्बर हैं उसमें अधिकांश श्वेताम्बरी हैं, इससे वहां प्रतिमाओं पर केशर फूल व शृंगारादि होने लगा है। श्वेताम्बरियोंने मूल प्रतिमाजी पर कई बार चक्षु चढाना भी चाहा था परंतु इस प्रतिमाजीके अतिशयके कारण वे ऐसा न कर सके। यद्यपि यहां १०० घर दि० जैनयोंके हैं पर प्रायः सर्व मामूली व्यापारी हैं। मुखिया सेठ बच्छराजजी व सेठ ज्ञानलालजी हैं। यह मंदिर इतना प्रसिद्ध है व इसकी ऐसी मान्यता है कि **इसके चारों ओर शिकार खेलना व मत्स्यादि मारना मना है**। गांवके बाहर सूर्य कुंड नामका तालाब है जिसके किनारे पर इसी मनाहीका एक लेख है जिसमें दस्तखत जान सी० ब्रुक कैप्टेन सुप्र-हिटी टैंसस

मेवाड खेरवाडा ता० २२ मई सन् १८५४ है । इसकी अंग्रेजी नकल यह है—

NOTICE

To all whom it concerns the shrine of Rikhabdeva being one held in great sanctity by the Hindus of Gujrat and other countries, gentlemen and others encamping in the place are requested not to kill peafoul or peageons in the neighbourhood or to catch the fish in the small pucka tank, near the village or to kill animals there.

Kherwarah 22 nd May 1854.

John C Brooke
Captain Sule-Hilly Trocks,
Mewar.

इस क्षेत्रकी भक्ति करनेकी बहुत कालसे सेठ हीराचंदजीकी इच्छा थी सो अब सर्व कुटुम्बको लेकर सेठ हीराचदजी केशरियाजी पधारे। सेठ माणिकचंद पानाचंद और मोतीचद व्यापारार्थ बम्बई ही मे ठहरे। वहॉ जाकर इन्होंने बहुत कुछ दान पुण्य किया । यहॉसे श्रीतारंगाजी गिरनारजी और पालीतानाकी यात्रा बडे भावसे की और धर्ममें जी खोलकर पैसा लगाया । यात्रासे लौटकर श्री केशरियाजीकी वीतराग प्रतिमाकी महिमा अपने पुत्रोंसे कही जिसे सुनते ही माणिकचदजीसे न रहा गया वे अकेले एक नौकरको साथ ले केशरियाजी पहुचे और वहा बडे भावसे पूजन भजन करके बहुत दान पुण्य किया ।

सेठ माणिकचदजीका चरित्र लिखते हुए ता० २९ अक्टूबर

१९०२का गुजराती पत्र 'सत्यवक्ता' अपने अंक १९ पुस्तक १७मे इस भांति कहता है —

"तेओ स० १९३१मा पवित्र स्थान श्रीकेशरीआजीनी महान् यात्राए गया हता, ते समय त्या मोटो खर्च करी आवा धर्मने शोभा आपनारा मान्य भरेला कार्यो करी आव्या हता"

सेठ माणिकचंदजीको विद्या व धर्ममें शुरूसे ही प्रेम था। इसी कारण वहाँके दिगम्बर जैनियोंको आपने शास्त्रस्वाध्याय करने व अपने २ बालकोंको विद्या पढाने व धर्मके स्तोत्रादि सिखानेकी प्रेरणा की। केशरियाजीसे लौटकर सुरत होते हुए माणिकचदजी बम्बई आए।

अब सेठ हीराचदजी अपना समय धर्मध्यानमे अधिक देने लगे। इनको न तो अब घरके कामकी चिन्ता थी और न व्यापार की। चारों भाई बढे प्रेमसे इस तरह द्रव्य उपार्जनमे वृद्धि पा रहे थे जिस तरह दुइजका चंद्रमा प्रतिदिन अपनी कलाको बढाता जाता है।

सेठ नवलचंदका विवाह।

सेठ हीराचदके चित्तमे कभी २ जो ख्याल उठ आता था वह केवल अपने चतुर्थ पुत्र नवलचदके विवाहका था। नवलचदकी लग्नके लिये हीराचंदके पास प्रतिदिन इधर उधरसे आदमी आते व पत्र आया करते थे पर सेठ हीराचदने तो यही ही निश्चय कर रक्खा था कि २२ वर्षकी आयु जब तक नवलचदकी न होगी तब तक हम उसकी लग्न नहीं करेंगे। तथा सगाई भी १ वर्षसे अधिक पहिले नहीं करेंगे। दिन जाते देर नहीं लगती है। सवत १९३२के अतमें इनके पास **टेंभुरणी**

जिला शोलापुरनिवासी **दोभाड़ा देवचंद जीवराज** बम्बई आकर मिले और अपनी पुत्री **प्रसन्नकुमरी**का वर्णन किया। हीराचंदजीने जन्मपत्र दिया और लिया तथा पुत्रीके देखनेकी इच्छा प्रगट की। देवचंदजीने कहा—मैं दो मास बाद बम्बई आऊंगा तब मैं उसे लेता आऊंगा। यद्यपि वह ११ वर्षकी है पर शरीर ठिंगना है। मैं आपके पास ही उसे उस समय ले आऊंगा जब आपके पुत्र व्यापारार्थ घरसे बाहर जाते है। देवचंदजी अपने कहनेके अनुसार प्रसन्नकुमरीको लाए। सेठ हीराचंदजी उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। यह भी बहुत ही प्रसन्नचित्त, ठंडेमिजाज और लज्जावती थी। इसके मुखको देखकर हीराचंदजी राजी हो गए। और संवत् १९३३ में लग्नकी मिती निश्चित हो गई। ज्योंही देवचंदजी प्रसन्न-कुमरीको लियें हुए घरसे बाहर जा रहे थे कि उधरसे नवलचंद किसी कामके लिये घर आए थे सो इस कन्याको सिरसे पैर तक देखकर भौचकसे रह गए और वह कन्या भी इनके प्रफुल्लित और दृढ शरीर व मुखको देखकर आनन्दित हो गई। दोनों अपने २ रास्ते चलदिये पर अपने २ मनमे एक दूसरेके रूपकी झलकको न भुला सके। प्रेमका अंकूरा उसी दिन उग उठा। यह उसी प्रेम अंकूरेका प्रभाव है जिससे आज भी यह प्रसन्नबाई अपने पतिकी प्रेमपात्रारूप होती हुई व कई पुत्रपुत्रियोंकी माता होकर सेठ नवलचंदके अर्द्धांगिणीपनेके कर्तव्यको बजारही है।

इस शुभ लग्नमें सेठ हीराचंद एक बडी बारातको लेकर व ४०००) खर्चका निश्चयकर दक्षिण दिशामें नवलचंदके विवाहार्थ

पधारे । टेंमुरणी छोटासा कसबा है । बम्बईवाले व्यापारियोंका ठाठवाट पहनाव उढाव व वारातका उत्सव देखनेके लिये आस-पास ग्रामोंके इतनेलोग आगये थे कि कई दिन तक टेंमुरणीमें एक वडाभारी मेलासा होगया था और गरीवोंको भोजनादिसे भी तृप्त किया था । विधिके साथ लग्न होकर सेठ नवलचद नवोढा प्रसन्नकुमरीके साथ विदा होकर अति प्रसन्नतासे सर्व सघसहित बम्बई आए और जैसे और तीनों भाई सपत्नीक गृहीधर्ममें लीन थे ऐसे यह भी लीन होगए ।

सेठ हीराचंदजीको सतोष ।

अब सेठ हीराचद चारोंही पुत्रोंका विवाहकर और उन्हें व्यापार और गृहस्थधर्मके साधनमें तल्लीन कर अपने कर्तव्यको साधन कर बहुत ही सतुष्ट हुए और जब कभी यह अपनी उस सूरत नगरकी उस अवस्थाका मिलान जब कि इनकी स्त्रीका देहान्त हुआ था इस समयसे करते थे तो इनको अपने व अपने पुत्रोंके पुण्योदय पर बहुत ही तृप्तता होती थी । और यही मनमे आता था कि यद्यपि पूर्वजन्मकृत पुण्यकर्मका उदय ही लक्ष्मी, कीर्ति आदि सामग्रियोंके संयोग करानेमे कारण है तौभी इस जन्मकृत धर्मसेवनसे बाधा हुआ पुण्य भी इस जन्ममे अपना उदय दे सक्ता है क्योंकि हमने अनेकवार शास्त्रोंमें सुना है कि जो कर्म्म यह जीव बाधता है उसमे स्थिति अंतमुहूर्त्त तककी पड सक्ती है । इस-से यदि किसी पुण्य या पापकर्मकी स्थिति १० व २० वर्षकी पड़े तो इसी जन्ममें उसका सर्व फल भोग लिया जाता है । इस कारण यह बात बहुत ही उचित है कि बाल्यावस्थासे ही धर्मका

सेवन किया जाय । यह धर्म इस लोक परलोक दोनोंमें उपकारी है । धर्मके सेवनसे इस लोकमें भी मनमें शांति होती है और आगामी भी धर्मका उत्तम फल होता है । यह बडे आनन्दकी बात है कि हमारे चारों ही पुत्रोंका ध्यान धर्मके सेवनमें है । इस धर्मकी सगतिसे ही वे सदाचारी हैं और कीर्तिमान हो रहे हैं । हीराचदजी ऐसा विचार करते हुए अत्र चित्तमे अति शाति रखने लगे ।

चारो स्त्रियोंमें एकता ।

यह बात भी बडे आनन्दकी थी कि सेठ हीराचदजीके घरकी स्त्रियोंमें कोई तकरार नहीं थी । चारों ही स्त्रिया बडे हेलमेलके साथ रहती थीं । रूपमतीबाईकी शात प्रकृति व काम करनेकी चतुराई व सहनशीलता और धार्मिक झुकावका ऐसा प्रभाव था कि जिसके सामने अन्य तीनों स्त्रिया रूपमतीकी आज्ञामे चलती थी । वास्तवमे जिस घरकी स्त्रियोंमें सुमति होती है वहा अवश्य लक्ष्मी और आनन्दका निवास होता है । तथा वह घर ही वास्तवमे घर है जहा सुमति और एकता देवीका निवास है । उस घरमे पुरुषोंको एक आनन्द बाग नजर आता है । इसके विरुद्ध जिस घरकी स्त्रियोंमें अनैक्य व कुमति होती है वहा भावोंके अशुभ रहनेसे प्राय दारिद्य, दु ख और अपकीर्तिका निवास होता है और वह घर पुरुषोंके लिये एक नर्कके समान भासता है । बाहरके कामकाजसे त्रासित मुख होकर घरमे घुसते हुए उनको और अधिक त्रास भोगना पडता है । अपनी पत्नीसे मिष्ट व आनन्दित वचनोंके सुननेके स्थानमें उनको कटुक और दु खभरी घर भरकी शिकायतें इस तरह सुननेको

मिलती है जिससे हृदय बडी मारी चिन्ता और खेदमे पड जाता है । पर जहाँ सुमति व एकताका वास है वहाँ घरमें पहुचते ही स्त्रियोंके मुख पर प्रफुल्लता दीखती है । जब पति अपनी पत्नीसे मिलता है मिष्ट और प्यारकी भरी वार्तालापसे चित्त खिल जाता है। उसकी बाहरकी सारी थकावट दूर हो जाती है ।

पूर्व पुण्यका उदय ।

यद्यपि शुभ व साताकारी सम्बन्धकी प्राप्तिमें अतरग पुण्यका उदय निमित्त कारण है तौभी बाह्य पुरुषार्थकी भी आवश्यकता है क्योंकि अतरंग पुण्योदय होने पर भी धनकी प्राप्तिमे बाह्य कारण व्यापारादिका निमित्त मिलाना ही पडता है । इसके सिवाय श्री समन्तभद्राचार्य्यने भी दैव अर्थात् पूर्वपुण्यके उदय और पुरुषार्थके सम्बन्धमें एकान्त पक्षका निराकरण करते हुए यही कहा है—

अबुद्धिपूर्वापेक्षाया इष्टानिष्ट स्वदैवत ।
बुद्धिपूर्वापेक्षाया इष्टानिष्ट स्वपौरुषात् ॥

अर्थात्—जो कोई कार्य्य अबुद्धि पूर्वक अर्थात् अपनी बुद्धिके विना लगाए अकस्मात् होता है जिससे अपना इष्ट या अनिष्ट हो, जैसे बैठे २ अपने ऊपर मकानका गिर पडना वह कार्य्य अपने पूर्व कृत कर्मके उदयकी मुख्यतासे होता है पर जो बुद्धि पूर्वक कार्य्य होते है जैसे धनागम, भोजनपान उनमें अपने इष्ट या अनिष्ट होनेमे मुख्यता अपने पौरुषकी है यद्यपि इसमें भी सिद्धिका होना अतरग पुण्यकर्मका उदय है परतु पुरुषार्थ मुख्य इसलिये है कि यदि उद्योग न होता तो वह पुण्य कर्म यों ही झड जाता इसलिये पुरु-

पको तो सदा पुरुषार्थी ही रहना ही चाहिये। सेठ हीराचदका सन्तोष और चारों भाइयोंका अटूट परिश्रम ही इस उन्नतिमें मुख्य कारण हुआ है। यद्यपि अंतरग पुण्य कर्मका भी उदय है पर जैन सिद्धान्तानुसार प्राय बाह्यनिमित्तके न होने पर कर्म्म विना रस दिखलाए यों भी झड जाता है। जैसे किसीको भगवत् भजनमे २ घंटे लगे उसको उस समय किसी बातकी असाता नही है। उस वक्त मन्द असाता वेदनी कर्म अपना विना रस दिये ही झड रहा है। युवावस्था व गृहस्थाश्रमके सुख भोगते हुए चारो भाई अपने पूज्य पिताका बहुत ही भक्तिसे सन्मान करते हुए रहने लगे और दिन पर दिन व्यापार वृद्धि करके धन द्वारा अपने ऐश्वर्यको बढाने लगे।



अध्याय छठा ।

सन्तति लाभ ।

ज्यों २ बृटिश राज्यकी दृढता भारतमें होती गई त्यो २ विलायतके साथ भारतका व्यापार सम्बन्ध बढता गया। संवत १९३२ या सन् १८७५ मे जब यहा लार्ड नार्थब्रुक वायसरायका काम कर रहे थे तब भारतमे एक बडी भारी बात

व्यापार वृद्धिका कारण ।

यह हुई कि भारतकी रमणीकता हाल जानकर भारतकी सैर करनेके लिये बादशाह इग्लैण्डके पुत्र **प्रिन्स आफ वेल्स** बम्बईमे ता ८ नवम्बरके दिन पधारे, उनके स्वागतार्थ सारा बम्बई नगर खूब सजाया गया था, जगह २ ध्वजाए सुशोभित थी, २ मास पहलेसे सर्व नगरवासियोंने अपने २ मकान झाडने, पोतने और सवारने शुरू कर दिये थे। हम बादशाहके पुत्रसे मिलेंगे ऐसी उत्कठा देशीराजाओं व प्रतिष्ठित मनुष्य और धनपात्रोंको हुई, इससे हमें वस्त्र और आभूषण अच्छे २ बनाने चाहियें, इस भावके जगनेसे बम्बईमे **जवाहरातकी बिक्री खूब बढ़ी**। मोतियोंके कठोंकी बहुत मॉग हुई। इस समय सेठ माणिकचद पानाचदने बहुत अच्छे २ कठे तय्यार किये और दलालोंके द्वारा बिक्री कर बहुत लाभ उठाया। इन चारों भाइयोंमे मोतीको छाट कर ठीक रीतिसे ऐसा सजाना कि उन सबकी लडी एक विशाल शोभाका विस्तार करै इस बातका एक अपूर्व गुण था। राजकुमार दिहली, पटियाला, ग्वालियर, इन्दौर आदि स्थानोंमें भी गए थे

भारतके राजा महाराजा धनाढ्योंके आभूषण पहननेका वर्णन किया तबसे वहाँके लोगोंमें जवाहरात खरीदनेका जो शौक थोडा था वह बहुत ही बढ गया। बम्बईमें एक पारसी व्यापारी सेठ फरामजी एण्ड सन्सकी कम्पनी है। इन्होंने पहले पहल विलायके व्यापारियोंको जवाहरात भिजवानेका उद्योग किया। बम्बईमें एक जौहरी व्यापारी सेठ साकरचंद लालभाई श्वे० जैनी है, सबसे पहली इन्हींके मालको फरामजी कम्पनीने विलायत भेजना शुरू किया। माणिकचदजी सेठ फरामजीसे मिले और विलायत किस तरह माल भेजना उसका सर्व कायदा जानकर अपने भाई पानाचद और नवलचदसे कहा। इस समय मोतीचन्द बीमार थे। इनको भगदरका रोग हो गया था जिससे दूकान पर बहुत कम आते जाते थे। पानाचदने कहा कि जब हमारा व्यापार यहीं खूब चमक रहा है तब हमें इतनी दूर अपना माल भेजनेकी क्या जरूरत है? इतनेमें नवलचद साहस करके बोले कि भाई, व्यापार करनेमें हमें सकोच नहीं करना चाहिये, यहाँ तो हमें थोडासा ही लाभ मिलता है पर विलायतमें अभी ही मालकी बिक्री शुरू हुई है, वहा शाहजादेके लौटनेसे नया २ शौक बढा है, तथा अभी इस बाजारमें केवल एक ही व्यापारी माल भेजते हैं वहाँ दुगने तिगने हो जानेमें कोई सदेह नहीं है इससे विलायतके साथ व्यापार अवश्य शुरू करना चाहिये। माणिकचदजीने भी इस बातका समर्थन किया, पानाचदजी चुप हो रहे। तय हो गया कि फरामजी कम्पनीके मारफत माल भेजा जाय।

भी शरीर निर्बल और रोगी बना रहता था जिससे सेठ पानाचंदको पत्नीका यथेष्ट सुख प्राप्त करनेमें बहुत अन्तराय भोगना पडता था।

सेठ माणिकचंद और चतुरमतीमें अतिप्रेम था। चतुरमती गर्भवती हुई और मिती फागुण वदी १ संवत १८३४ के दिन एक कन्याको उत्पन्न किया जिसका नाम सेठ हीराचंदने **फूलकुंवरी** (फुलकौर) रक्खा। वृद्धावस्थामे पौत्रीका मुख देख हीराचंदकी आत्माको बहुत संतोष हुआ। इस कन्याके जन्मका यथोचित उत्सव किया। यह कन्या चतुरमतीके द्वारा दिन परदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगी। सेठ माणिकचंद कभी२ घरमे शामके वक्त भोजन करके इसे हाथमें लेकर खिलाते व इसका गुलाबके फूलसदृश मुख देखकर आनन्दित होते थे।

सेठ माणिकचंदको पुत्रीका लाभ।

इस संवतके चातुर्मासमे **अंकलेश्वर** (गुजरात) नगरमें **त्यागी महाचंद्रजीने** चातुर्मास किया था। यह त्यागी प्राकृत व संस्कृतके बडेभारी पंडित थे। इनको गोम्मटसार त्रिलोकसारादि अनेक ग्रंथ कंठ थे। इन्होंने कई ग्रंथोंकी रचना की है। अधिक निवास सीकर (राजपूताना) की तरफ रहता था। इनका रचा **एक जैनेन्द्रपुराण** सीकरमें मौजूद है जिसके कुछ भाग उनके शिष्य पंडित रिषभदास बडाछिन्दवाडा (मध्यप्रदेश) के पास देखनेमें आए है। इस ग्रंथमें चारों अनुयोगोंका वर्णन प्राकृत, संस्कृत और देश भाषा तथा छंदोंमें है, अभी तक इसकी प्रसिद्धि नहीं हुई है।

त्यागी महाचंद्रजीका परिचय।

इनका बनाया हुआ एक लघु जैनेन्द्र व्याकरण है। परतावगढ राज्य मालवामें नये दिगम्बर जैन मंदिरजीके भंडारमें इस व्याकरणके ३० पत्रे हमें देखनेको प्राप्त हुए, पूर्ण नहीं मिला। अकलेश्वरमें किसीके पास पूर्ण है ऐसा सुनते हैं। इसके ५००० श्लोक हैं ऐसा मालूम हुआ है। प्रारंभमें कर्तानि इस भांति प्रतिज्ञा की है।

" महावृत्तिं शुमत्सकलबुधपूज्या सुखकरीं ।
विलोक्योयद्, ज्ञान प्रभुविभयनदी प्रविहिताम् ।
अनेकैः सच्छन्दैर्भ्रमविगतकैः सदृढ भूता ?
प्रकुर्वेऽहम् तनुमति महाचन्द्र विबुधः ।

इसका भाव यही है कि जैनेन्द्र महावृत्तिको देखकर मैं यह वृत्ति लिखता हूँ।

अनेकांतासिद्धिः—सूत्रकी व्याख्या इस तरह की है:—

" प्रकृत्यादि विभागेन अस्तित्वनास्तित्वनित्यत्वानित्यत्व-सामान्यासामान्याधिकरण्य विशेषणविशेष्यादिक शब्दाना, सिद्धिरनेका स्वभावो भवेत् ।

पृष्ठ ३० वें में है कृष्णश्चकंबलश्च कृष्णकंबल " यहाँ समासका वर्णन है।

इनको बुध महाचंद्र कहते हैं। इन्होंने हिन्दी भाषामें बहुतसे पद व सामायिक पाठ बनाया है जो अति प्रसिद्ध है जिसकी प्रारंभिक कड़ी है—

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिये दुःख भारी,
जन्म मरण नित किये पापको है अधिकारी ।
कोडि भवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक,
धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक ।

इनके पद भी बड़े ही वैराग्यवर्द्धक व आध्यात्मिक है। कलकत्तेके ८४ वर्षके वृद्ध पडित अर्जुनलालजी इनके एक भजनको कभी २ कहा करते है जिसकी प्रारभकी कडी यह है ।

"सुन अत्राया रे रवि वद्दल छाया रे त्यू ही कर्म छिपाया मैला हो रह्या रे।
तू सिद्ध सरूपी रे नित अचल अरूपी रे जड़ पुद्गल रूपी माही रमि रह्या रे,

उस समय इनके पास केवल एक लगोट और एक चद्दरकी ही परिग्रह थी। मोरपिच्छिका तथा कमडल था। दिनमें केवल एक दफे भोजन करते थे तथा उस चातुर्मासमे केवल ४ वस्तु ही रक्खी थी। गेहू, इमली, लालमिरच और सूखी सागडीका साग, और सर्वरसोका त्याग कर दिया था। इतना होनेपर भी विना किसी शास्त्रको रक्खे हुए व्याख्यान देते हुए इतनी जोरके गभीर शब्द कहते थे कि बहुत दूरतक आवाज जाती थी। इनको किसी भी सवारीपर चढनेका त्याग था। चातुर्मासके बाद यह अकलेश्वरसे पैदल चलनेकी यहॉतक प्रशसा प्रसिद्ध है कि एक दफे इनको अकलेश्वरसे श्री कुथलगिरी प्रतिष्ठाके अवसरपर जाना था तब वहॉपर इनके शिष्य अमरेन्द्रकीर्ति तो रेलके द्वारा कुथलगिरी गए और यह पैदल ही ठीक मितीपर वहॉ पहुच गए थे।

त्यागी बुध महाचद्रजीने त्रिलोकसार पूजा बहुत ही मनोहर छन्दोंमें बनाई है। अंकलेश्वरके चातुर्मासमे आपने श्रावकको उपदेश देकर इस बृहत् पूजन करानेके समारभको कराया जिसका महूर्त बैशाख सुदी ३ का पडा। १९ दिनका पूजन विधान हुआ। नगरके बाहर पारसीवाडेके नाकेपर खेतकी वाडीमे एक वडा भारी मंडप बाधा गया था जिसमें एक बडे विस्तारके साथ चावलोंसे तीन लोकका

मडल पुरुषाकार बनाया गया। प्रतिदिन श्रीयुत महाचद्रजी बहुत गाजे बाजेके साथ स्वय उस अपनी बनाई भाषा पूजनको पढ़ते थे। तीन लोकके अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजनके समय स्थापना उस मडलमें ठीक उसी स्थानपर होती थी जहाँ कि चावलोंसे वह स्थान निर्देश किया गया था। छोटे २ लकडीकी स्थापनाए उतनी ही बनाई गई थी, जिनपर रकाबी रखकर स्थापनाके समय नियत स्थानपर रक्खी जाती थीं। बाहरसे आसपास ग्रामोंके बहुत भाई आते जाते रहते थे।

अकलेश्वरकी पूजामें सेठ माणिकचद।

इस समय कारणवश सेठ माणिकचदजी बम्बईसे सूरत आए। वहाँ अक्लेश्वरकी पूजा समारभकी बात सुनकर व त्यागी महाचद्रके दर्शनकी भावना करके सेठ माणिकचदजी अक्लेश्वर आए। पूजन समारभ देख व महाचद्रजीके दर्शन प्राप्तकर आप बहुतही राजी हुए। रात्रिको मडपमे खूब भजनगान हुआ करता था। गधर्व भी आए थे।

सजोतके शीतलनाथजी।

अक्लेश्वरसे ६ मील एक सजोत ग्राम है वहाँपर एक अति प्राचीन दिगम्बर जैन मदिर है जिसके भौरेमें चतुर्थकालकी बहुत ही शात वीतरागमई पद्मासन ३ हाथ ऊची **श्री शीतलनाथ स्वामीकी** प्रतिबिम्ब विराजमान है। इस बिम्बके दर्शनसे लेखकको जो आनन्द हुआ है वह बचन अगोचर है।

उस सजोतमें एक मेवाडा दि० जैनी **धर्मचंद हरजीव-**

धर्मचंदजीका सेठसे परिचय।

नदास फुटकल अनाजकी दूकान करते हुए रहते थे। इनको भजनभाव व नृत्यका शौक था। श्री शीतलनाथजीके सन्मुख भजनभाव करते हुए आनन्द मनाते थे। यह धर्मचंदजी धर्मके वडे रोचक थे। पहले लडकईमे तो इनको धर्मसे कुछ भी प्रेम नहीं था इसके दो वर्ष पहले महुवा निवासी एक खडेलवाल विद्वान् जैन **पंडित शिवलालजीने** अक्लेश्वरमें चातुर्मास किया था। यह पंडित बहुत विद्वान् व गभीर ध्वनिके थे। शास्त्र सभा प्रतिदिन करते थे और सर्व लोग सभामें जाते थे। धर्मचद दिलमे रुचि न रखनेपर भी शर्मके मारे शास्त्रमें बैठ जाते थे और ज्यो त्यों कर समय पूरा करते थे पर पडितजीकी दृष्टि धर्मचंद पर जम जाती थी। जिसदिन यह नहीं जाते दूसरे दिन पडितजी टोकते थे। इसपर अधिक भाव होनेका कारण यह था कि धर्मचदके पिता **हरजीवन रतनचंद** शास्त्रके जानकार व शास्त्रानुसार आचारके पालनेवाले तथा पडित शिवलालके मुलाकाती थे। एक गुण इनमे यह था कि यह भजन गान व कवितामें चतुर थे। अपने घरके चैत्यालयमे नित्य खूब गागाकर पूजन करते थे, इसी कारण इनके पुत्र धर्मचदको भी शुरूसे ही गाने बजानेकी रुचि हुई। यह परोपकारी भी थे। अंकलेश्वरके १०, १२ लडकोंको अपने घरमे भक्तामर सूत्रजी पूजा पाठ आदि पढाते थे। इन्होंने रविव्रत कथाका हिन्दीमे एक नाटक बनाया है जिसका नाम **रविव्रत आख्यान** है। इस नाटकको यह मदिर-जीमें खेलते थे। सर्वस्वाग कायदेसे भरवाते थे। कई इनके साथी भी थे। जिस स्थानपर मुनिका वर्णन आता है वहा नग्न मुनिका भेप न

बनवाकर एक बडा चित्रपट टागने थे और उसके पीछे एक भाई खड़े होकर मुनिका पाठ करते थे। उपदेश देते थे। इस आख्यानका एक पद नीचे दिया जाता है।

" कहो मुनि कौनसी करम गति'आई—टेक०
सेठ सेठानी पूछत मुनिसे, सुख गया दरिद्रता आई। कहो०
क्या मैने जैनधर्म भृष्ट कीया, क्या घृतमे तेल मिलाई॥ कहो०
क्या मैंने रात्रि भोजन नहीं पाला, व्रत निंदा झूठ मिलाई। कहो०
हरदास अरहत चरणवू वारवार बलि जाई॥ कहो०

शिवलालजीके द्वारा बार बार टोके जानेपर एक दिन धर्मचंदको लज्जा आई और यह शिवलालजीसे एकान्तमे मिलकर बोले कि हमें कुछ धर्मकी बात बतावें जिससे मुझे रुचि हो। तब शिवलालजीने कहा कि जो पुस्तक हमने तुम्हारे पिताको दी थी व जिसमें दशलाक्षणी व अष्टान्हिका आदि पूजन भाषा द्यानतराय कृत है, उसे ले आओ। इस पुस्तकको धर्मचदजी पहचानते थे क्योंकि दशलाक्षणीके दिनोंमे उस पोथीके द्वारा इनके पिता गावजाकर पूजन पढते थे और यह खडे हुए द्रव्य चढाते थे। उस समय पहले २ द्यानतराय कृत पूजनोंका प्रचार इसी पोथीसे हुआ। धर्मचदजी उस पुस्तकको लाए। शिवलालजीने उसमेसे नीचे लिखी तीन गाथाए बडी कठिनतासे धर्मचदजीको कठ कराई और उनका मतलब समझाया—

गाथा

गइ इदिय च काये। जोये वेये कषाय णाणेय
सजम दसण लेस्सा। भविया सम्मत्त सण्णि आहारे॥ १॥

धर्मचंदजीका सेठसे परिचय।

नदास फुटकल अनाजकी दूकान करते हुए रहते थे। इनको भजनभाव व नृत्यका शौक था। श्री शीतलनाथजीके सन्मुख भजनभाव करते हुए आनन्द मनाते थे। यह धर्मचदजी धर्मके वडे रोचक थे। पहले लडकईमे तो इनको धर्मसे कुछ भी प्रेम नहीं था इसके दो वर्ष पहले महुवा निवासी एक खडेलवाल विद्वान् जैन **पंडित शिवलालजीने** अकलेश्वरमें चातुर्मास किया था। यह पंडित बहुत विद्वान् व गभीर ध्वनिके थे। शास्त्र सभा प्रतिदिन करते थे और सर्व लोग सभामें जाते थे। धर्मचद दिलमे रुचि न रखनेपर भी शर्मके मारे शास्त्रमें बैठ जाते थे और ज्यों त्यों कर समय पूरा करते थे पर पडितजीकी दृष्टि धर्मचंद पर जम जाती थी। जिसदिन यह नहीं जाते दूसरे दिन पंडितजी टोकते थे। इसपर अधिक भाव होनेका कारण यह था कि धर्मचदके पिता **हरजीवन रतनचंद** शास्त्रके जानकार व शास्त्रानुसार आचारके पालनेवाले तथा पडित शिवलालके मुलाकाती थे। एक गुण इनमे यह था कि यह भजन गान व कवितामें चतुर थे। अपने घरके चैत्यालयमे नित्य खूब गागाकर पूजन करते थे, इसी कारण इनके पुत्र धर्मचदको भी शुरूसे ही गाने बजानेकी रुचि हुई। यह परोपकारी भी थे। अंकलेश्वरके १०, १२ लडकोंको अपने घरमे भक्तामर सूत्रजी पूजा पाठ आदि पढाते थे। इन्होंने रविव्रत कथाका हिन्दीमे एक नाटक बनाया है जिसका नाम **रविव्रत आख्यान** है। इस नाटकको यह मदिर-जीमे खेलते थे। सर्वस्वाग कायदेसे भरवाते थे। कई इनके साथी भी थे। जिस स्थानपर मुनिका वर्णन आता है वहा नग्न मुनिका भेष न

बनवाकर एक बडा चित्रपट टागने थे और उसके पीछे एक भाई खड़े होकर मुनिका पाठ करते थे। उपदेश देते थे। इस आख्यानका एक पद नीचे दिया जाता है।

" कहो मुनि कौनसी करम गति'आई—टेक०
सेठ सेठानी पूछत मुनिसे, सुख गया दरिद्रता आई। कहो०
क्या मैंने जैनधर्म भ्रष्ट कीया, क्या घृतमें तेल मिलाई॥ कहो०
क्या मैंने रात्रि भोजन नहीं पाला, व्रत निंदा झूठ मिलाई। कहो०
हरदास अरहंत चरणकू वारवार बलि जाई॥ कहो०

शिवलालजीके द्वारा बार बार टोके जानेपर एक दिन धर्मचदको लज्जा आई और यह शिवलालजीसे एकान्तमे मिलकर बोले कि हमें कुछ धर्मकी बात बतावें जिससे मुझे रुचि हो। तब शिवलालजीने कहा कि जो पुस्तक हमने तुम्हारे पिताको दी थी व जिसमें दशलाक्षणी व अष्टान्हिका आदि पूजन भाषा द्यानतराय कृत है, उसे ले आओ। इस पुस्तकको धर्मचदजी पहचानते थे क्योंकि दशलाक्षणीके दिनोंमे उस पोथीके द्वारा इनके पिता गावजाकर पूजन पढते थे और यह खडे हुए द्रव्य चढाते थे। उस समय पहले २ द्यानतराय कृत पूजनोंका प्रचार इसी पोथीसे हुआ। धर्मचदजी उस पुस्तकको लाए। शिवलालजीने उसमेंसे नीचे लिखी तीन गाथाए बडी कठिनतासे धर्मचदजीको कठ कराई और उनका मतलब समझाया—

गाथा

गइ इदिय च काये। जोये वेये कषाय णाणेय
सजम दसण लेस्सा। भविया सम्मत्त सण्णि आहारे॥ १॥

गुणजीवा पज्जत्ति । पाणा सण्णाय मग्गणा ऊये-।
उवऊगो विय कमसो १ वीसतु परूवणा भणिया ॥ २ ॥
झाणाविय पच्चाविय जाय कुलकोड़ि सजुया सव्वे ।
गाहा तियेण भणिया कमेण चौवीस ठाणाणि ॥ ३ ॥

भावार्थ—गति ४, इंद्रिय ५, काय ६, योग १५, वेद ३, कषाय २५, ज्ञान ८, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य २, सम्यक्त ६, सज्ञी २, आहारक २, गुणस्थान १४, जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, संज्ञा ४, उपयोग १२, यह वीस प्ररूपणा कही है । तथा ध्यान १६, प्रत्यय अर्थात आश्रव ५७, जाति ८४ लक्ष, कुलकोड १९९॥ इन चारोंको मिलाकर २४ स्थान क्रमसे जानने चाहिये । वास्तवमें इन गाथाओंके उलझावमे डालकर उसके सुलझानेके लिये जो परिश्रम करेगा वह जिनवाणीके रहस्यको जान जायगा । प० शिवलाल बडे बुद्धिमान और परोपकारी थे जिन्होंने धर्मचदके साथ बडा उपकार किया । इन गाथाओंको कठकर अब यह गति आदिका विशेष हाल जाननेके लिये भाषा शास्त्रोंको देखने लगे । इनको शौक इतना बढा कि ये सजोतमे अपनी अनाजकी दूकान पर पुस्तक रखते, सौदा देते २ जब छुट्टी पाते तब वाचते और उसमेंसे एक कापी पर नोट कर लेते थे । इस तरह यह अपनी स्त्रीके साथ सजोतमें धर्म सेवन करते रहते थे । पिताजीका देहान्त हो चुका था, सो इस धर्म विद्या सीखनेकी रुचिके दो वर्ष पीछे ही अकलेश्वरमें यह उत्सव हुआ था । इस महापूजाके कार्य्यमें धर्मचद मुख्य भाग लेते थे और महाचंद्रजीसे बहुत हित रखते थे । उनकी भले प्रकार वैय्यावृत्त करते थे । एक दिन

धर्मचदजीने महाचदजीसे प्रार्थना की कि इस उत्सवके सम्बन्धमें कोई पद बना दीजिये। महाचदजीने दूसरे दिन एक पद लिखकर धर्मचदजीको दे दिया। जिस रात्रिको सेठ माणिकचद मडपमें बैठे हुए थे उस रात्रिको धर्मचदने वह पद मडपमें गाया। इस भजनको सुनकर सेठ माणिकचन्दका प्रेम इस भजनपर हो गया। यह तो पाठकोंको मालूम ही है कि सेठ माणिकचद गुणग्राही और मिलनसार थे, यह मौका पाकर धर्मचदसे बात करने लगे। धर्मचद पहलेसे ही बात करना चाहते थे क्योंकि वे इनके गभीर सिंह सदृश अति सुन्दर मुख और शरीरको देखकर अपने मनमें यह जान रहे थे कि यह कोई बडा भारी सेठ है। इनकासा सुन्दर रूप धर्मचदके देखनेमे नही आया था। यह उस समय धोती, कोट और सुरती पगडी पहने हुए थे। दाहने कानमे सुन्दर दो गोल मोती और नीलमकी एक कड़ी अटकाए हुए, गलेमें मोतियोंका कठा डाले हुए, हाथोंमें सुवर्णके कडे पहने हुए एक राजाके समान दीखते थे, पर धर्मचदका साहस नही पडता था कि ऐसे प्रभावशाली व्यक्तिसे बात करे। जब माणिकचदजीने स्वय बात की तो यह बहुत ही हर्षित हुए और तब इनको मालूम हुआ कि यह सूरत निवासी बम्बईके प्रसिद्ध सेठ माणिकचद हैं। माणिकचदजीने धर्मचदजीके भजन गानेकी बहुत प्रशसा की और कहा कि आप यह भजन मुझे नकल करके बम्बई भेज देवें क्योंकि मैं ज्यादा ठहर नहीं सक्ता, कल ही मुझे बम्बई पहुचना है। धर्मचदजीने सहर्ष स्वीकार किया। धर्मचदकी स्थिति साधारण थी तथा इनको दिन रात यह दु ख रहता था कि इनको आजीविकाके लिये हिंसा-

कारी गल्लेका व्यापार करना पडता था। माणिकचंदसे मिलकर इनको यह भी आशा हुई कि कभी कोई लौकिक काम होगा तो इनसे निकल सकेगा। यह सेठ इतना धनाढ्य और पुण्यात्मा होने पर भी गर्व रहित है। हमारे पाठकोंको मालूम होना चाहिये कि यह धर्मचद वही परोपकारी तीर्थभक्त भाई धर्मचंद मुनीम, पालीताना दिगम्बर जैन कारखाना हैं जिनके उद्योगसे उस तीर्थका बहुत ही सुधार हुआ है व जिन्होंने अपने उपदेशसे हजारों यात्रियोंका कल्याण किया है व कर रहे है। इनकी अवस्था अब ६४ वर्षकी हैं। अपने प्रणके अनुसार ५ व ७ दिनमे धर्मचदने वह भजन नकल करके बम्बई भेज दिया।

वह भजन इस भाति है।

(राग जगलो)

मडलसार त्रीलोक सीरोमणी, पुर अंकलेसर माही हो २
मडलसार० ॥ टेक ॥

सवत् सत उगनीस तासपरि धरि पैंतीस समाय हो।
पंडित राज महेंद्र आवे चोथी शुक्ल चैत्राय हो ॥ १ ॥ मं०
अंकलेश्वरके सर्व पंच बुध राज समीप जु आय हो।
बोले उत्सव जिनवरकी प्रभावना करणी चाहि हो ॥ २ ॥ म०
चैत्र शुक्र पूनिम दिन मडप आरम्यो पुरवाही हो।
गज चालीस लब अति सोभित व्यास वीश गज पायहो ॥ ३ ॥ मं०
वदि ग्यारसी रवीवारे मडल भरणारभ कराय हो।
सुदि वैशाख, तिजी रवीवारे पूंजा प्रारभाय हो ॥ ४ ॥ मं०
तादिन श्री जिनचर सुलग्नमें रथ यात्रा करवाय हो।

नाचत भविजन सनन सनन सन सनन सन नाय हो ॥ ५ ॥ मं०
तननतनन तनतनन नननननन तान होत सुखदाय हो ।
छमछमछमछमछमछमछमछमछम घुंगरू नाद कराय हो ॥ ६ ॥ म०
साग्रदिसाग्रदिससाग्रदिसाग्रदि जह चलत सारगी घाय हो।
दम दम दम दम दम दम दम दम होत मृदग स्वराय हो ॥ ७ ॥ म०
घनन घनन घन घनन घट घना घनकाय हो ।
रिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरिरि रूपभश्वर सुखदाय हो ।८। म०
ससससससससससससससससर्न स्वर चलताय हो ।
गगगगगगगगगगगगगगग गधारो स्वर गाय हो ॥ ९ ॥ म०
पपपपपपपपपपपपपपप पचम नाद कराय हो ।
मममममममममममममम मध्यम स्वर सरराय हो ॥ १० ॥ म०
धधधधधधधधधधधधधधधध धैवेत स्वर सुरराय हो ।
निनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनिनि निहोत

निस्वाद सुखाय हो ॥ ११ ॥ मं०
ऐसे गावत और बजावत नरनारी चितलाय हो ।
श्रीजिनचलत पालखीमे जहा नर तिर्यंच दुतरफाय हो ॥१२॥ म०
फिरी श्रीजिनको उत्सव सजूत मडपमें पधराय हो ।
करि अभिषेक करि फिरी पूजन महाचद्र चितलाय हो ॥१३॥ म०
सप्तस्वर सजूत करी पूजा दिन पद्रहा तक ताय हो ।
बदि दुतियासनीवारे पूजन पुरण करी सुख पाय हो ॥१४॥ म०
देश देशके यात्री आये मडल जिन दरसाय हो ।
पूजन करी करि श्री जीनवरको सब हर्ष मनमाहि हो ॥१५॥ म०
श्री जीन प्रभावना ठाईम महाचद्र बुधराय हो ।

पा यह जन्म सफल लखि अपनौ सीकर नगर गया हि हो।
॥ १६ ॥ मंडल सार०

पाठकोंको इससे प्रगट होगा कि हमारे चरित्र नायक माणिक चदजी कैसे धर्मप्रेमी, विद्याप्रेमी और गुणानुरागी थे।

सेठ मोतीचदकी स्त्री रूपमतीको फिर गर्भ रहा था। जबसे इसको यह गर्भ हुआ तबसे इसका प्रेम दान व धर्मसे और भी अधिक हो गया था। इसके मनमें पूजा व शास्त्र सुननेकी ही गाढ रुचि रहा करती थी। जब संवत १९३४ का चातुर्मास निकट आया तब इसके मनमे यह भावना हुई थी कि मुझे ईडर जाना चाहिये और वही मेरेको प्रसूति हो तो अच्छा है क्योंकि यहा कोई बराबर सेवा करनेवाला नहीं है– चतुरबाईके एक छोटी कन्या है और पानाचद तथा नवलचदकी बहुएँ बहुत छोटी हैं। रूपमती बहुत बुद्धिमती थी। इसलिये अपने पतिसे इस बारेमे पूछा मोतीचदने भी यही उचित समझा और अपने पिता सेठ हीराचदजीको कहा। हीराचद-जीने भी इस बातको पसन्द किया और गाधी मोतीचदको पत्र दिया। गाधीजी स्वय आकर रूपमतीको ईडर लेगए। श्रीषोडशकारण व श्री दशलाक्षणी पर्वमें रूपाबाईने ईडरमे खूब धर्मध्यान और कुछ दान भी किया। गर्भावस्थामे ऐसे दान धर्मकी प्रवृत्तिको देखकर सर्व बुद्धिमान यही अनुमान करने लगे कि कोई अतिधर्मात्मा बालक रूपवतीके गर्भमे आया है। यह भी एक निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध है कि जैसा बालक गर्भमें आता है वैसी ही प्रवृत्ति माताकी हो जाती है। एक दरिद्री पापी पुत्रको गर्भमें रखनेवाली माता मिट्टीके टुकडे खाती

प्रेमचंदका जन्म।

और चने चबाती है व लडाई झगडा करना अच्छा समझती है। इस सम्वतमें बम्बई और मदरास हाते में पानीके कम पडनेसे इतना कठोर दुष्काल पडा था कि जिससे पार्लियामेन्टमे ऐसी रिपोर्ट की गई कि इस दुष्कालसे साढे तेरा लाख आदमी मर गए। ऐसे समयपर रूपावाईने बहुत कुछ अन्नादि बटवाया तथा बम्बईके उदार सेठोंने गुजरात व दक्षिणकी तरफ बहुतसा द्रव्य भेजकर दुष्काल पीडितोंकी सहायता की। इतनेमे आसौज वदी १४ का दिन आगया और प्रात काल शुभ नक्षत्रमे रूपमतीने एक बहुतही सौम्य मूर्ति **पुत्ररत्नको** जन्म दिया। इसके अति सुहावने मुखको देखकर माताको जो हर्ष हुआ वह कहा नही जा सक्ता। गाधी मोतीचदने अपनी पुत्रीकी सतति रत्नको निरखकर बहुत ही हर्ष माना और बडी धूमधामसे इस पुत्रका जन्मोत्सव किया। सर्व कुटुम्बको इसकी ओर बहुत ही प्रेम आकर्षित हुआ इससे सबने इसका नाम **प्रेमचंद** रक्खा। जन्मपत्र बनवाया गया। ज्योतिषियोंने इसको पुण्यशाली, विद्यावान तथा धर्मात्मा होगा ऐसा कहा। गाधीजीने श्री जिन मदिरजीमें बडे उत्सवसे पूजन कराई और कुटुम्बियोंको उचित दिन भोजन कराया व दु खियोंको दान बाटा। जिस दिन इस पुत्रका जन्म हुआ उसी दिन तार द्वारा बम्बई खबर भेजी गई। सेठ हीराचद, मोतीचद आदि सर्व ही कुटुम्बी जन व स्त्रियोंको पुत्र जन्म सुनकर बडा ही आनन्द हुआ क्योंकि यह सेठ हीराचदका प्रथम ही पौत्र था और चारों भाइयोंमें एक यही बालक जन्मा था। सेठ हीराचदने बम्बईके जिन मदिरजीमे वृहत् पूजन रचाई तथा दानके लिये भी द्रव्य निकाला।

सेठ मोतीचदको यद्यपि पुत्रके लाभसे बहुत सन्तोष हुआ पर इनको भगन्दरके रोगने बहुत व्याकुल कर रक्खा था। कितनी ही औषधियें की पर कुछ शान्त न हुआ—रोगको कम होनेके बदले वर्द्धित देखकर पूज्यपितासे कहा कि अब चातुर्मास वीत गया है ईडरसे कुटुम्बको बुलाना चाहिये मगसर मासमें रूपाबाई पुत्र रत्न **प्रेमचंद**के साथ बम्बई आई परंतु अपने पतिके रोगको बढा हुआ देखकर बहुत खेदित हुई। मोतीचदजी बीमारीसे बहुत दु खित थे पर अपने धर्मके स्मरणमे सावधान थे असातावेदनीय कर्मका उदय है ऐसा मानकर चित्तमे धैर्य लाते थे।

और जब कभी अपने पुत्रका मुख देखते तो प्रफुल्लित हो जाते थे क्योंकि यह पुत्र रत्न हरएकको बहुत ही प्यारा लगता था।

मोतीचंदका परलोक। पुत्रके जन्मको ५ मास ही वीते थे कि फागुणमासमें एकाएक मोतीचद बहुत ही अधिक बीमार हो गए और ऐसे वक्तमें कि जब रूपाबाई घर काममें लगी थी पिता और भाई सब घरसे बाहर थे। यह अपने कमरेमें लेटे हुए ही यकायक अरहत अरहत कहते हुए अपने इस शरीरको छोडकर चल दिये। थोड़ी देर बाद जब रूपाबाई छोकरेको लिये हुए कमरेमे आई और अपने पतिको बहुत ध्यानसे देखा तो इसे निश्चय हो गया कि इनका आत्मा इस शरीरको छोडकर चल दिया है। रूपाबाईका स्वरूपवान मुख एकाएक कुम्हला गया। उसके मुखको प्रेमचद आख खोलकर देखता है तो आश्चर्यमें भर जाता है। रूपाबाई एकाएक बैठ गई और नीचा मुख करके शोक सागरमें निमग्न हो गई।

ससारकी ही बडी विचित्र दशा है। ६ वर्ष पहले जिस स्त्रीको अपने पतिके सम्बन्धसे सासारिक सुखका लाभ हुआ व ९ मास ही पहले जिसको एक अति उत्तम पुत्रका लाभ होकर सन्तोष हुआ उसीको आज अपने प्राणप्रियका वियोग सहना पडा! कर्मोके उदयकी दशा बड़ी ही विचित्र है। जैसे कही धूप आती है और थोडी देर बाद वही पर छाहीं पड जाती है और जहा पर छाहीं होती है वहीं फिर धूप आ जाती है, ऐसे ही पुण्य कर्मके स्थान पर पाप और पापके स्थान पर पुण्य अपनी रगत दिखलाते हुए अज्ञानीको कभी महा आनन्द व कभी महाशोकमें डाल देते है परतु ज्ञानीके लिये एक मात्र नाटकका खेल है। ज्ञानी अपने शरीरके सम्बन्धको ही त्यागना चाहता है। उसके यह भावना है कि यह आत्मा शात आनन्दमय अवस्थाका लाभ लेवै और सदा ही मुक्त रूप रहे अतएव वह ऐसा विचारता है—

श्लोक—"प्तोऽहं देहसयोगाज्जल वानलसगमात्
इह देह परित्यज्य शीतीभूता शिवैषिणा (आ० शा० २५४)

भावार्थ—मैं देह सयोगसे उसी तरह दाहको पा रहा हू जिस तरह अग्निके सम्बन्धसे जल गर्म होकर जला करता है जो मोक्षके इच्छुक साधुजन है वे इस देहको त्यागकर शात हो गए है। ऐसा २ विचार करनेवाले ज्ञानीजीवको अपना व दूसरेका देह आत्मासे अलग हो जाय उसमे कोई विषाद नही होता। रूपाबाईने यद्यपि अनेक शास्त्र सुने थे और अच्छी तरह आत्मा और देहके भेद विज्ञानको जानती थी, केवल आत्मोन्नतिकी भावनासे ही धर्मको अतिप्रेमसे साधन करती थी तो भी इस समय यकायक

ऐसा कि यह अभी दीक्षा न ले और राजमदिरमें चले, पर सीताजीको शरीरसे प्रेम न था इसीसे शरीरके सम्बन्धी पतिसे भी प्रेम हट गया था--उनका प्रेम आत्माकी ओर आकर्षित हो गया था इसीसे आत्म कल्याण करना पतिकी क्षणिक सेवासे भी उत्तम समझकर सीताजी बनको ही चल्दीं थी। इस वर्णनको जब २ स्मृतिमें लाती थीं रूपाबाई पतिकी स्मृतिके दु खको भूलाती थीं और धर्ममे दिन पर दिन दृढ भाव करती जाती थी।

सेठ माणिकचद बडे विचारशील व दयालुचित्त थे। युवती रूपाबाईको वैधव्यमें देखकर इनका चित्त भीतरसे भर आताथा और यही विचार करते थे कि इसे किसी तरहका कष्ट न हो। एक दिन सेठजी अपनी भावजके पास जाकर उसको कहने लगे—माताजी, आप कोई चिन्ता न करें, अब आप मन लगाकर खूब दान पुण्य करें, तीर्थ यात्र करें, व्रत उपवास तप करें, पुत्र प्रेमचदको पालन करें, आपकी आज्ञा हम सब तरह माननेको तयार है, मोतीचदजी अपने हाथसे कुछ दान नहीं कर गए थे। अब आप इच्छानुसार दान धर्म करें, किसी तरहका सकोच मनमें न लावें। यह सर्व लक्ष्मी आपकी ही है।

रूपाबाईको इन बचनोंसे बहुत ही सन्तोष हुआ। इसके हाथ-खर्चको प्रति मास १००) कभी १५०) सेठ माणिकचंद दे दिया करते थे। रूपाबाई घरमे सबकी सम्हाल रखती हुई तीनों भाइयोंकी स्त्रियोंको सतोषित करती हुई, अपनेसे किसीको कष्ट न हो इस तरह वर्तन करती हुई और पुत्र प्रेमचदको बडी सुरक्षासे पाल्ती हुई रहने लगी। रात्रिको जलपान लेनेका भी त्याग कर दिया, शृंगार

करना बन्द कर उदासीन रूपमें कत्थई रगके कपड़े पहनने शुरू किये जैसा कि गुजरात देशमें रिवाज है। पान खाना त्याग दिया, दिनमें नियम करके दो तीन बार प्रमाणसे भोजन पान करने लगीं, प्राय सदा ही एक न एक रसको छोडने लगी, अष्टमी व चतुर्दशीको उपवास व एकासन करने लगीं, दोनों समय कभी तीनों समय बड़े भावसे जाप व सामायिक करने लगी। जैसा समय मिले पूजा सुनने व शास्त्र सुननेमें विताने लगीं। अब घरमे कामकी अधिकतासे रसोई करने वाले नियत हो गए थे, इससे स्त्रियोंके आधीन केवल सामानकी देख भाल व साग तर्कारी आदिकी तय्यारी करना इतना ही काम रह गया था। इधर इन सेठोंका व्यापार खूब बढ चला था। विलायतके हर सप्ताहके मेलमे इनके एक २ दो २ पार्सल पचास पचास हजार तकके जाने लगे थे, दूसरे तीसरे दिन विलायतसे मालके ऑफर तार द्वारा आने लगे थे।

व्यापारमे अटूट लाभ।

तारद्वारा विक्री होने लगी। दो तीन वर्षतक विलायतका व्यापार इतना जोरसे चला कि हरएक पार्सलमे इन्होंने दुगनेसे कम लाभ नही किया, विलायतमें जवाहरात पहननेका नया शौक पैदा हुआ था उससे मोतीकी खूब ही विक्री हुई। **माणिकचंद पानाचंदका फर्म** मालकी सुन्दरता, सफाई व छाटमें **विलायतमें भी प्रसिद्ध हो गया**। इन वर्षोंमें लक्ष्मीने सेठोंके घरको अच्छी तरह भर दिया।

इन दिनों **चीन** देशमें भी माल जाने लगा था। प्रसिद्ध सेठोंने वहा भी माल भेजना और अच्छा नफा करना शुरू कर दिया

विलायत, चीन, व भारत तीनोंके व्यापारमें तीनों भाइयोंने बहुत सचाईसे वर्तन करके अच्छा धन पैदा किया।

सेठ हीराचंदको लकवेका रोग।

इधर जब लक्ष्मीकी कृपा थी तब उधर और चिंता न हो ऐसा नहीं था। सेठ हीराचंदको संवत १९३९ में लकवाकी बीमारी हो गई जिससे वे बडी कठिनतासे मंदिर तक जाते थे, शेष घरमे ही पडे रहते थे। अपने पिताको कष्टावस्थामे देखकर कृत उपकारको न भूलनेवाले कृतज्ञ सेठोंका दिल बहुत दु ख पाता था पर प्रत्येक जीव भिन्नर है, हरएकका कर्म्म हरएकके साथ है, कोई महान हितु भी अपने मित्रक सुख तथा दु खको बटा नही सक्ता, हरएकको अपने बाधे कर्मका फल आप ही भोगना पडता है।

चुन्नीलाल झवेरचंदका सम्बन्ध।

इस समय इनके घरमे एक बालक और रहता था जिसका नाम चुन्नीलाल था, यह सेठ हीराचंदजीकी दूसरी कन्या मच्छाबाईका पुत्र था जिसकी लग्न सेठजीने गंगेश्वर गोत्रधारी सूरतके शाह झवेरचंद ब्रीजलालके साथकी थी और जिसका जन्म संवत १९२४ चैत्र सुदी ११ को सूरतमे हुआ था। यह बालक तीक्ष्णबुद्धि था। पिताकी स्थिति बहुत साधारण थी, यह किरानेकी दलाली करते थे। ... इसे ... पाचमी

एक वर्ष भी बम्बई आए नहीं हुआ था कि इसके पिताने सूरत बुलाकर इसका विवाह ११ वर्षकी उमरमे ही कर दिया। बम्बईके सेठोंने बहुत रोका पर उसने ध्यान नहीं दिया। इस कन्याकी उम्र ११ की थी और नाम जडावबाई था। विवाह होनेपर फिर चुन्नीलालको बम्बईमें भेज दिया। यह सेठोंके साथ रहकर दूकान व घरके काममे पड़ गया और अधिक पढने लिखने पर कुछ भी मन न लगाया, और कुछ काल पीछे मोती पोरनेका काम सीखने लगा।

द्वितीय पुत्री मगनमतीका जन्म।

इतने ही में सेठ माणिकचदकी पत्नी चतुरमतीको द्वितीय गर्भ रहा। इस समय सेठ माणिकचदको यह अभिलाषा हुई कि पुत्रका दर्शन हो तो अच्छा है। यह बात गृहस्थियोंमे प्राय स्वाभाविक ही है कि वे पुत्रीकी अपेक्षा पुत्रके अस्तित्वको उत्तम मानते है।

चतुरमतीको इस गर्भके रहते हुए अपने पतिसे अधिक प्रेम उत्पन्न होता था, यद्यपि प्रेमभाव पहले भी था, पर इस गर्भके कारणसे एक बहुत ही गाढ प्रीतिभाव पतिकी ओर झलक उठा था जिससे चतुरबाई सेठ माणिकचदकी खूब ही सेवा करने लग गई थी, बारबार इनको देखकर प्रसन्न हुआ करती थी।

चतुरबाईको धर्मके सम्बन्धमे जैसे रूपाबाईको खबर थी व रुचि थी ऐसी खबर व रुचि नही थी, साधारण रीतिसे दर्शन व जपकरना जानती थी, पर जबसे इसके यह गर्भ रहा यह चतुरमती धार्मिक कार्योंमें खूब मन लगाने लगी। मदिरजीमें

कभी २ पूजन सुनने बैठ जाती, कभी कोई शास्त्र पढता तो सुनने लग जाती, दान धर्म करनेमे भी खूब मन चलने लगा। इसकी ऐसी चेष्टा देख बुद्धिमान जन अपने दिलमे यही जानते हुए कि जो कोई जीव इसके गर्भमे आया है वह कोई पुण्यवान, धर्मात्मा और उत्तम जीव है । सेठ माणिकचद भी बडे चतुर थे, इनको भी अपनी पत्नीकी विलक्षण दशा देखकर मनमे यही भान हुआ कि हमारे पुण्य वृक्ष खिला है, किसी महान जीवने आकर मेरी स्त्रीके गर्भवासको पवित्र किया है । कुछ मासका गर्भ हो गया, तब सेठ माणिकचदने मनमें विचारा कि यहा रूपावाईके एक छोटे पुत्र प्रेमचदकी सम्हाल है, पानाचदकी स्त्री छोटी व निर्बल रोगी है, नवलचदकी वहू बहुत ही छोटी है, यहॉपर प्रसूति होनेसे बालककी सम्हाल नही हो सकेगी अतएव इसको अपनी माताके यहा भेज देना ठीक होगा । सेठ हीराचन्दजीसे आज्ञा ले आप अपनी स्त्रीको नान्नेज ग्राम पहुँचा आये । धीरे २ प्रसूतिका दिन आ गया और सं० १९३६ के मिती पौष वदी १० (गुजराती मगसर वदी १०) के दिन चतुरमतीने शुभ नक्षत्रमे एक चंद्रमुखी पुत्रीका जन्म दिया । यह कन्या बहुत ही सुन्दर शरीर, सौम्यवदन और गंभीर मुखवाली थी । माता देखकर बहुत प्रसन्न हुई और अपने पिताको इशारा कराया कि सेठ माणिकचंदजीको तार देकर बुला लिया जावे क्योंकि चतुरबाईका अति गाढ प्रेम सेठजीकी तरफ हो उठा था । तार पाते ही सेठ माणिकचन्द नान्नेज आ गए और पुत्रीकी जन्म कुडली ठीक करा उसका नाम मगनमती रखा । सेठजी एक माससे अधिक वहीं ठहरे । पुत्रीका गंभीर, सौम्य, गोल और विशाल मुख

व शरीरकी सुदरता देख अपनेको धन्य मानते हुए, यद्यपि इनको पुत्रीजन्म सुनकर कुछ खेद हुआ था पर जब इस पुत्रीको देखा तो सारा खेद जाता रहा, इसकी चैतन्यता व आखकी ज्योति इसे एक होनहार कन्या बतलाते थे। सेठ माणिकचदको इस कन्याकी तरफ इतना मोह हुआ कि जैसा किसीको पुत्र पर भी नहीं होता। कई मास बाद सेठजी फिर नाक्नेज आए और चतुरबाईको फुल्कुमरी और मगनमतीके साथ बम्बई ले आए।

सेठ हीराचंदका स्वर्गवास।

बम्बईके जौहरी बाजारमें ही सेठ हीराचद मयकुटुम्बके रहते थे। यद्यपि हीराचंदजी लकवेकी बीमारीसे दु खी रहते थे पर घरमें प्रेमचद व फूलकुमरीको इधर उधर खेलते कूदते, हसते, गिरते पडते और मगनमतीको भी चतुरबाईकी गोदमे जमीनपर त्रिसिलते हुए देखकर बहुत ही खुश हो जाते थे।

स० १९३७ के दशलक्षणीके दिन आ गए, बम्बईके श्रावक लोग धर्म-यानमें लीन हो गए, नरनारी सुन्दर वस्त्राभूपण पहन सवेरेसे ही मदिरजीमें जा पूजन पाठ पढने सुननेमे लग गए। भादो सुदी ९ की प्रात कालका समय था, पुष्पाजलि व अष्टमीके व्रतवाले सवेरेसे ही मदिरजी आ गए थे, सेठ माणिकचदजीने अष्टमीका उपवास किया था तथा यह प्रक्षाल पूजन नित्य ही करते थे सो उस दिन बडे सवेरेसे ही घरसे मदिरजी आ गए थे, ८ बजेके अनुमान पानाचदजी भी मदिर चले आए रूपाबाई, नवीबाई व चतुरबाई भी पुत्रपुत्रियोंके साथ मदिरजी आ गई थी, नवलचंदजी आनेकी तय्यारी-में थे—स्नान करके कपडे पहन रहे थे। उधर हीराचदजी अब

ऐसे अशक्त हो गए थे कि कुछ दिनोंसे इनका मदिर जाना भी बन्द हो गया था। पर प्रगट रूपसे कोई ऐसी बात नहीं थी कि जिससे सेठ हीराचदकी तवियत असाध्य व नाजुक समझी जाती हो। उधर तो भादो मासकी खटपट इधर हीराचदजीने एकाएक णमोकार मत्र कहते व श्री अरहंत सिद्धको नमस्कार करते हुए अपने ही सहवासमे प्राण छोड दिये।

एकाएक मरण जानकर तीनों ही सुपुत्र बहुत ही दु खित हुए। हम अपने पूज्य पिताकी कुछ भी सेवा न कर सके इसका पछतावा करते हुए जो उदासी इनके चित्तको हुई उसका वर्णन नही हो सक्ता है। माणिकचद्रजीका चित्त बडा कोमल था, इनके अश्रुओंकी धारा वह निकली थी पर ये समझदार। तुर्त सम्हालकर जीवको गया जान व केवल जड पुद्गलको देख उसमें अधिक जतु न पडे इस ख्यालसे शीघ्र ही सर्व सम्बन्धियोंको एकत्रकर स्मशान-में दग्ध क्रिया की। सेठ हीराचदजी ६० वर्षकी आयुमें अपने जीवनके कर्तव्यको बहुत ही नीति व परिश्रमसे पूर्ण कर, सेठ माणिकचद, पानाचद, नवलचद ऐसे उद्योगशील धर्म व जाति हितैषी तथा परोप-कारी पुत्रोंको छोड स्वर्गधाम पधारे। हीराचदजीके भाव मृत्युके समय आर्तध्यान रूप नहीं थे किन्तु श्री पचपरमेष्ठीके ध्यानमें अनुरक्त थे जिससे सेठजीकी आत्माको शुभभावोंके निमित्तसे अवश्य शुभ गति प्राप्त हुई होगी। मरण कालमें जैसे भाव होते हैं वैसी ही गति आत्माकी होती है। जिन जीवोंको निरन्तर धर्मध्यान, सामा-यिक, जाप, पूजन, भक्ति तथा स्वाध्यायका अभ्यास रहता है वे जीव

अवश्य मरण कालमें पूर्व अभ्यासके निमित्तसे शुभ भावोंको प्राप्त कर सकते है परतु जो अपने जीवनमें धर्मध्यानका अभ्यास नहीं करते हे उनके भाव मरणकालमें सासारिक संबधके चेतन अचेतन पदार्थोंमें उलझ जाते है जिससे आर्त्त व रौद्र ध्यानके वशीभूत हो वे नीच गतिमें चले जाते है, इससे हरएक प्राणीको उचित है कि वह अपनी आत्माक भविष्यको विचार कर धर्मकी शरणको कदापि न त्यागे, गृह सम्बन्धी कामोंको करते हुए धर्मका अभ्यास करना हरएक गृहस्थका मुख्य कर्तव्य है।

सेठ हीराचदके जीवन वृत्तान्तका अत इस अध्यायमें होता हे। इस सेठका जीवन वृत्तान्त मनन करने योग्य है। धैर्य्यको कायम रखते हुए, परिश्रमको न छोडते हुए अपने पुत्रोंको योग्य सुआचरणी व धर्मसेवी बनानेमे जो भाव उक्त सेठके थे वे प्रशसनीय थे। इन्होंने बालविवाहसे विरोध करके प्रौढ आयुमे जब पुत्र धन कमानेके योग्य हो गए तब उनका विवाह किया, यह बात इस कालमें बहुत ही अनुकरणीय व प्रशसनीय है। यदि छोटी आयुमें वे लग्न कर देते तो उनके पुत्रोंका उपयोग भोगविलासमें अधिक लीन हो जाता और एक महान गरीब व साधारण स्थितिसे एक धनाढ्य प्रसिद्ध व्यापारीकी अवस्थामे पहुचना स्वप्नमें भी दुर्लभ हो जाता। पुत्रोंको कष्ट न हो, उनका शरीर अशुद्ध घीसीके भोजनसे रोगिष्ट न हो इसलिये वर्षों तक जो सेठ हीराचदजीने अपने हाथसे रसोई बनाके खिलाई है यह एक अतिशयगभीर, सहनशील, प्रेमालु और दीर्घ दर्शी व्यक्तिका ही कार्य्य हो सक्ता है।

वर्तमान कालमें भी सेठ हीराचदजी ऐसे पिताओंकी जरूरत है

जो अपने स्वार्थका खयाल न करके अपने पुत्रोंको सुपुत्र बनानेमें पूरी २ चेष्टा करें, उनके सच्चे हितको देखें। हमारे पुत्र धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थके पालनमे प्रवीण हों यही भावना मातापिताके दिलोंमें यदि हो और वे उस भावनाकी सफलतामें प्रमादी न हों तो उनकी सन्तान अवश्य सुयोग्य बन सकती है। भारतका उद्धार उस समय तक होना कठिन है जब तक सतानकी रक्षा और शिक्षाका योग्य प्रबन्ध न होगा। हमारे पाठकोंको सेठ हीराचद्के जीवनसे पूरी २ शिक्षा लेनी चाहिये।



अध्याय सातवाँ ।

लक्ष्मीका उपयोग ।

शुभ कार्यमें देर न लगाना ।

सेठ माणिकचदजीको अपने पूज्य पिताके वियोगका बडा भारी दु ख था, रह रह कर यह खयाल आता था कि हमने कोई भी भारी दान अपने पितासे नहीं कराया यह हमने वडी भूल की। यद्यपि मेरे दिलमें तो बहुत दिनसे था कि पिताजीसे प्रार्थना करू कि वे कुछ आज्ञा देवें पर अभी क्या जल्दी है फिर करलेवेंगे इसी खयालसे मै पिताजीसे कुछ भारी दान न करासका। वास्तवमे जो दान धर्म आदि कार्य्य करने हों उनको जब सोचे तब ही कर डाले। पीछे करूगा, इस विलम्बसे बहुधा पछताना पडता है क्योंकि हम कर्मभूमियोंकी आयुकी समाप्ति होनेके कालका कोई निश्चित समय नही है। खैर, यद्यपि अब पिताजीकी आत्माको दानका पुण्य नहीं होगा तोभी मै उनका यश स्थिर करनेके लिये जहा तक मेरा बश होगा कुछ दानधर्मके बडे २ काम अवश्य करूगा। अब मुझे लक्ष्मीको केवल एकत्र ही नहीं करनी चाहिये किन्तु और भी अधिक दानमें लगाकर सफल करना चाहिये, कारण यदि मैं और पानाचद भाई मोतीचदकी तरह अकाल मृत्युके वश हुए तो फिर इतना धन प्राप्तिका परिश्रम वृथा ही चला जायगा, इस भाति विचार कर एक दिन माणिकचदजीने भाई पानाचद और नवलचदसे एकान्तमे बात की कि हमलोगोंने

अबतक रुपया कमाया तो बहुत पर कोई भारी काम नहीं किया। देखो न, पिताजीसे और न भाई मोतीचंदजीसे हमलोग कुछ दान करा सके, इसी तरह हमलोग भी मर गए तो हमारी यह लक्ष्मी हमारे द्वारा सदुपयोगमें न लग सकेगी। इससे अब कुछ काम करना चाहिये। पानाचदजीने बडे साहसके साथ कहा कि दान धर्ममें कहा पर क्या काम करना व किस तरह करना यह सब तुम्हारे सुपुर्द है, तुम विचार करके जिस काममें द्रव्य लगाना चाहो मुझसे केवल पूछलो और खर्च करो, किसी प्रकारका सकोच मत करो, मेरा चित्त तो व्यापारके सिवाय दूसरी बातोंके विचारमें कम जाता है तुम अच्छी तरह लक्ष्मीका उपयोग करो। नवलचदने भी इस बातमें अपनी पसन्दगी प्रगट करनेके अर्थ अपना प्रसन्न मुख दिखा दिया-कुछ उत्तर न दिया क्योंकि नवलचदजीको बात करनेमें बहुत सकोच होता था।

इस समय भारतमें बडे लाट लॉर्ड रिपनका जमाना था, यह लाट बडे दयालु, प्रजावत्सल व भारतमें शिक्षा आदिके प्रचार करानेमें उत्साही थे। इनके समयमें बहुतसी प्रबन्धक शक्ति स्थानीय हाकिमोंको दी गई कि वे द्रव्यको एकत्र कर अपनी शक्तिसे उपयोगी कामोंमें लगावें। इनके समयमे शिक्षा की ओर खास ध्यान दिया गया जिसके लिये सर विलियम हन्टरके नेतृत्वमें एक कमीशन नियत किया गया। इनके समयमें नेपाल और काश्मीरके सिवाय सर्व भारतकी जनसंख्या एक साथ पहले पहल सन् १८८१ में लिखी गई।

इस समय जैनियोंमें भी लिखने पढनेकी चर्चा कुछ ज्यादा हो चली थी। रेल्वेके निमित्तसे परदेश जाना आना भी बढ गया था। हूमडोंकी ऐश्वर्य्य वृद्धिका दक्षिणमे शोलापुर नगर अब भी प्रसिद्ध है। उस समय शोलापूरमें सेठ हीराचद नेमचद दोशी परोपकारके काममे प्रसिद्धि पारहे थे। यह सेठ हीराचद नेमचद निहालचद उत्रेश्वर गोत्र धारी दशा हूमडके रत्नबाईसे उत्पन्न दो पुत्रोमेसे छोटे पुत्र है। बड़े का नाम सखारामजी है, यह मूल निवासी ईडरस्टेटके वाकानेर ग्रामके हैं। नेमचद्रके पिता निहालचद भीमजी पहले व्यापारके लिये फलटनमे बसे और कपड़ेका काम शुरू किया। सवत १८९९ में इन्होंने एक दूकान शोलापुरमे भी की। सेठ हीराचद मगसर वदी ८ (गुजराती कार्तिक वदी ८) स १९१३के दिन शोलापुरमे जन्मे। १० वर्षकी उम्रतक सर्कारी शालामे मराठी पढी फिर स्कूल छोडकर सस्कृत, व्याकरण और काव्य-का अभ्यास किया और सागवाडाके भट्टारक राजेन्द्रभूषणसे जब वे शोलापुरमें ४ मास ठहरे, भक्तामर व सूक्तमुक्तावलीके अर्थ सीखे। सवत १९२६मे यह अपने पिताजीके साथ श्री गिरनार और सेत्रुजयकी यात्राको गए थे। जूनागढमे इनके पिताने अपने भानेजे शाह मोतीचद खेमचद और भतीजे दोसी तलकचद पदमसी आदिके योगमें एक दि० जैनमदिर नया बधवाकर स० १९२६ वैशाखमें प्रतिष्ठा करा दी और वहा चार महीना ठहरे। आयुकर्म समाप्त होनेसे नेमचद (गु०) वैशाख वदी १४के दिन स्वर्ग पधारे। यात्रासे लौटकर इन्होंने खानगी रीतिसे इग्रेजीका भी इतना अभ्यास

सेठ हीराचंद नेमचंदका सेठ माणिकचदसे परिचय।

कर लिया कि यह समाचार पत्र व पुस्तकें पढ़ लेते व चिट्ठीपत्री कर लेते थे। सं० १९३०में इनकी लग्न हुई। १७ वर्षकी उम्रसे यह कपडेकी दूकान सम्हालने लगे। शोलापुरमें स्पिनिंग एन्ड वीविंग मिल है इसके एजन्ट बम्बईनिवासी **सेठ वीरचंद दीपचंदजी** थे। इनके साथ सेठ हीराचंद कपडेका व्यापार करते थे। इनको धर्मशास्त्रोंके वाचनेके सिवाय बाहरी पुस्तकोंके पढनेका भी बहुत शौक था। संवत १९३६मे इन्होंने शोलापुरके बाजारमें एक लायब्रेरी (सार्वजनिक पुस्तकालय) स्थापित कराया और आप उसके मंत्री हुए। लायब्रेरीके निमित्तसे सेठ हीराचन्दजीकी सर्व साधारणमे बहुत मान्यता हो गई, यहा तक कि संवत १९३७में शोलापुरकी म्यूनिसिपालिटीमे आप सर्कारी मेम्बर नियत हुए। उस समय व्यापारियोंपर कर बढाया गया था उसको उक्त सेठने लोगोंकी तरफसे सर्कारसे लिखा पढी करके बहुत घटवा दिया इससे इनकी बहुत कीर्ति हुई, **जैन जातिमें जो कुछ जागृति इस समय फैली हुई है**, स्वाध्यायका जो प्रचार हो रहा है, ग्रन्थोंके प्रकाशनका जो कार्य्य हो रहा है, संस्कृत व धर्म विद्याकी पढाईमें विद्यार्थी दत्तचित्त हो रहे है **इस सर्वके मूल कारण उक्त सेठजी हैं**। अब भी आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं और जाति व धर्मसेवामें लीन हैं तथा बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाके सभापति हैं। सं० १९३७में शोलापुरसे आप किसी व्यापारी कार्य्यके निमित्त बम्बई आए उसी समय और भी शोलापुरसे जैनीमें व्यापारी बम्बई आए थे। सेठ हीराचंदजीको शास्त्र स्वाध्यायका नियम था, यह बम्बईके जिन मंदिरमें स्वाध्याय करने लगे इतनेमें नया

देखते हैं कि एक बहुत स्वरूपवान सेठ सिंहसमान दैदीप्यमान मुखाकृतिको रखनेवाले, धोती दुपट्टा ओढे हुए श्री जिनेन्द्रकी प्रक्षाल पूजा करके आये और शास्त्रस्वाध्याय करने लगे । सेठ हीराचंदने इनको प्रतापशाली व धर्मप्रेमी तथा स्वाध्यायमे अनुरक्त देखकर बात करनेकी इच्छा दिलमें धारण की । जब यह सेठ स्वाध्याय कर चुके तब ही अपना स्वाध्याय पूर्ण किया और इनसे कुछ पूछना ही चाहते थे कि इतनेमें सेठ माणिकचदने अपनी आदतके वश स्वय प्रश्न किया कि आपका कहाँ निवास है, कब आए इत्यादि । परस्पर वार्तालापसे सेठ माणिकचदने निश्चय कर लिया कि यह एक बुद्धिमान, चतुर, विद्वान्, शास्त्रके मर्मी तथा परोपकारी व्यापारी है । आपने सेठ हीराचन्दको अपनी दूकानपर बुलाया ।

माणिकचन्दजीने दूकानपर इनका बहुत सन्मान किया तथा हित जताया । यही प्रथम अवसर है जब सेठ माणिकचदने अपने जीवनके धर्मकार्यामें मुख्य मत्र देनेवाले सच्चे धर्मात्मा मित्रसे मिलनेका लाभ लिया । बातचीत होते हुए सेठ माणिकचदने पूछा कि आजकल जैन जातिमे कौन २सी आवश्यकताए है जिनमें धन व्यय करना चाहिये ? उत्तरमें सेठ हीराचदने कहा कि आजकल जैन जातिमें धर्मविद्याका बहुत कम प्रचार है, लोग स्वाध्याय बहुत कम करते है, तथा जो इग्रेजी पढते है उनको धर्म शिक्षा बिल्कुल नही मिलती, बहुतसे लोग स्वाध्याय करना भी चाहते है तो उनको ग्रथ बडी कठिनतासे मिलते है, प्राय पुजा पाठ आदिके ग्रन्थ लिखे हुए अशुद्ध देख पडते हैं इससे लोग अशुद्ध पूजा पढते हुए दीख पडते हैं, आपने अपनी गिरनार व पालीताना

की यात्राका हाल भी कहा कि तीर्थोकी व्यवस्था योग्य नही है, प्राचीन मदिर बेमरम्मत पडे है, अंतमे आपने बताया कि हमारी रायमें अब विना खास आवश्यकताके नवीन श्रीजिनमदिरजी बधवानेमें द्रव्यको न लगाकर प्राचीन मदिरोंका जीर्णोद्धार करना चाहिये, तीर्थोकी व्यवस्था सुधारना चाहिये, वहाका हिसाब ठीक कराना चाहिये, धर्मशालाओंकी दुरुस्ती कराना चाहिये, पाठशालाए आदि स्थापित करना चाहिये, जो इग्रेजी पढनेवाले छात्र धर्मशिक्षा लेवें उन्हें पारितोषिक व मासिक छात्रवृत्ति देनी चाहिये, शुभ ग्रथ लिखाने चाहिये व मेरी रायमें तो यदि ग्रन्थ छपाए जाय तोभी कुछ हर्ज नही है ।

इस बातको सेठ हीराचदने दबे शब्दोंमें इस लिये कहा था कि उस समय ग्रन्थ छपनेकी बात भी कोई नहीं करता था व जो ऐसा कहता उसे बहुत निन्द्य समझते थे । सेठ माणिकचदजी बडे गुणग्राही थे और उत्तम बातको उसी तरह अपनेमे लीन करते थे जैसे कोमल भूमिमे मेघका पानी समा जाता है, सेठ हीराचदकी बातोंको दिलमें जमाकर उनकी पूर्तिका मनन करने लगे ।

चद्रप्रभुके मन्दिरका पुनः जीर्णोद्धार ।

थोड ही दिनोंबाद सेठ माणिकचदजी **सूरत** गए और श्री चद्रप्रभुजीके बडे जिन मदिरको जिसके जीर्णोद्धारमें अग्निसे भस्म होजाने पर सेठ हीराचदजीने बहुत उद्योग किया था फिर जीर्ण दशामें देखकर उसका उद्धार करना ऐसा मनमें निश्चय किया और बम्बई आकर अपने भाइयोंसे सम्मति करके जीर्णोद्धारके वास्ते प्रबन्ध किया। मदिरके नीचे श्री चद्रप्रभु स्वामी



सेठ हीराचन्द नेमचन्द सोलापुर.

[देखो पृष्ठ १८९]





सेठ ठाकुरदास भगवानदास बंबई.

[देखो पृष्ठ ४०९]

की वेदी सिंहासनादिके बनवानेमे करीब २०००) आपने खर्च किये। मंदिरजीको ठीक करानेमें सेठ माणिकचंद प्राय सूरत आते जाते रहे। जब यह मंदिर बन चुका तब सम्वत् १९३९ में इसकी जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा उक्त सेठोंने बम्बईके दूसरे सेठ माणिकचंद लामचंद चौकसीके साथ मिलकर बहुत धूमधामसे की जिसमें ८०००) खर्च हुए। भट्टारक १०८ श्री **गुणचंद्र**जी प्रतिष्ठाकारक थे। दो तीन नवीन प्रतिमाएं भी आई थी इससे पंचकल्याणक विधान हुआ था। शोलापुरसे दो उपाध्याय विधि कराने आए थे। इस उत्सवमें गुजरातके बहुत लोग एकत्र हुए थे, संख्या १०००के होगी।

क्षुल्लक धर्मदासजी।

इस समयमें प्रसिद्ध **क्षुल्लक धर्मदासजी** भी आए थे। आप बड़े आत्मानुभवी थे, आपने सम्यग्ज्ञानदीपिका आदि कई ग्रंथ बनाकर छपवाए है। इनके सहपाठी **भट्टारक वीरसैन** कारंजा व पीतांबरदासजी पारोला आदि है। यह तीर्थभक्त भी थे, शिखरजीकी सेवामें बहुत लीन रहते थे, बहुतसी धर्मशाला इनके उपदेशसे बनीं, **राजा पालगंज उस समय पार्श्वनाथसिंह** थे, जो क्षुल्लकजीका बहुत सन्मान करते थे। राजाके मकानके पास प्राचीन दि० जैन मंदिर है जिसमें बहुत प्राचीन श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति अतिवीतराग ध्यानाकार है। यह मंदिर जीर्ण होगया था। आपने राजाको उपदेश देकर दुरुस्त करवाया और फिर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा की जिसका शिलालेख वहॉ पत्थरमें खुदा है। उसकी नकल यह है—

श्रीमत् श्रीसम्मेद शिखर मदिर जैन दि० तस्य जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा करापितं गादि पालगज राजासाहब श्री श्री पार्श्वनाथार्थिहजी प्रतिष्ठाचार्य श्री धर्मदासजी.... वदी २ सवत १९३९ मदिर पालगजमें अय सत्य ।

एक दफे राजाको कुछ द्रव्यकी जरूरत हुई । आपने देशमें घूमकर ७९०००) **जमा करके राजाको कर्ज दिलाए।** जब शिखरजीके पहाड पर **वाडेम** नामके अंग्रेजने **सूअरका कारखाना** किया था उसके उठानेमें आप प्रयत्नशील थे। कलकत्तेके राय बद्रीदासजीसे आपका पत्र व्यवहार रहता था। आपने ही बद्रीदासजीको दृढ किया कि इस हिंसाके कामको बन्द करानेका प्रयत्न करो । उस समय दिगम्बर श्वेताम्बरमें पूरा २ मेल था । आपके पत्रकी नकल '**जैन बोधक**' अंक ४१ माह जनवरी १८८९ में छपी है जिसके कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

पत्र मिती भादवा वदी ८ संवत १९४५

" चिठी आपकी श्री शिखरजीसै आई जिसका जवाब आपके पास भेजा था । चिठी १ खानदेशसे आई । श्री शिखरजीका आपकु बहुत फिकर है सो ऐसा ही चाहिजे । **आपन मजकू वी सबसैं पहले वाकफ कर्या था जबसै मैं इस कामकी पुरी २ तदवीर में हू।** धर्मप्रसादसै सर्व अच्छा होवैगा । आपकी चिठी पाते ही मैंने लाट साहबसे जुवानी सब हाल कहे पीछै अरजी दीनी । उन्होंने उसी वक्त नागपुरके कमीसनरके नाम हुकम जाहारी किया शिखरजीमें जाकर दर्यापत करो और जबतक दूसरा हुकम न हो **चरवीका काम** बंद रहै ।.. ....बहुत

शहरसे चिठी आई। आपने सर्वको खबर दिई आपकी तारीफ कहाताई लिखे। ''

सेठ माणिकचदने अकलेश्वर निवासी धर्मचदजीको खास पत्र देकर सूरत बुलाया था यह वही धर्मचद है जिन्होंने स० १९३४ मे अकलेश्वरकी त्रिलोक पूजा विधानके समय सभामे श्रीयुत त्यागी महाचद्र कृत भजन गाया था और जिसकी नकल सेठ माणिकचदको भेजी थी। धर्मचद नृत्य व गानमे बहुत चतुर थे। सूरतकी इस प्रतिष्ठामें इन्होंने अपने भजनोसे खूब भक्ति दरशाई जिससे नरनारियोंका चित्त धर्मप्रेमसे भर गया। एक दिन धर्मचदने सेठ माणिकचदजीसे एकान्तमें कहा कि मैं एक छोटेसे ग्राममें पडा हुआ हिंसाका धन्धा कर रहा हू, आप मेरे लिये कुछ काम बताओ जिससे मैं इस हिंसासे बचूं। सेठ माणिकचदजीने इस धर्मात्माकी बातको अपने हृदयमें धर लिया और उनसे कहा कि तुम कोई चिन्ता न करो, हम विचार करेंगे। इस उत्सवमे मदिरजीको ८०००) की उपज बोलीमें हुई, उसको सेठ माणिकचदने जमा कर बम्बईमें एक मकान खरीद इसको अब २००००)के करीब तक पहुचा दिया है।

इस वक्त प्रेमचद और फुलकुमरी ९ वर्ष और मगनमती ३ वर्षकी थीं। इन तीनोंको ऐसे मनोहर वस्त्राभूषणोंसे अलकृत किया गया था कि जो हजारों जैन नरनारी सूरतमें आए थे वे इनको देखकर मोहित हो जाते थे। सबोंके गलेमें मोतियोंके हार व हीरेके कठे बहुत ही शोभाको विस्तार रहे थे। जो सेठ हीराचदकी पूर्व स्थितिको जानते थे वे इन बच्चोंको देखकर सेठ हीराचदके उद्योगशील

और सदाचारी पुत्रोंके पुण्य और पुरुषार्थकी खूब ही सराहना करते थे।

सुरतकी प्रतिष्ठासे इन तीन पुरापार्थी पुरुषोंका यश और भी विस्तृत हो गया।

स० १९४० के जाडेके दिन आए। बम्बईमे एक दिगम्बर जैन गुजराती प्रसिद्ध धनाढ्य सेठ सौभाग शाह मेवराज रहते थे। इनकी भी धर्ममें बडी प्रीति थी तथा इनके भाई सुरत गद्दीके चद्रकीर्ति नामके भट्टारक थे, जिनका वर्णन अध्याय दूसरेमें आया है।

श्री गोमट्टस्वामीजी-की यात्रा सं.१९४०।

इन्होंने एक दिन बम्बई मंदिरमे वर्णन किया कि हमारी इच्छा दक्षिणकी ओर श्री **जैनबिद्री** और **मूलबिद्री**की यात्रा करनेकी है, जिनभाइयोंकी इच्छा हो साथ चलें। सेठ माणिकचदजी तुर्त तयार होगए। इनके उद्यत होते ही १२९ मनुष्योंका सत्र यात्राके लिये जुड गया। सेठ पानाचद और माणिकचंद और रूपाबाई आदि सर्व कुटुम्ब लडके बच्चे यात्राको रवाना हुए। घरमें केवल नवलचद सकुटुम्ब रहे ताकि व्यापारका काम बन्द न पडे। इस यात्रामे इन प्रसिद्ध मोतीके जौहरियोंने बहुत रुपया खर्च करना विचारा। कई महाशयोंको यात्रा करानेमे भली भाति मदद भी की। सेठ माणिकचंद बड़े परोपकारी थे। सबको आराम पहुचाकर आप आराम करते थे। रास्तेमें सबके टिकट, माल असबावका प्रबन्ध, ठहरनेके लिये स्थानकी तलाश, हिसाबका रखना, वहावालोंसे वार्तालाप करना यह सब काम बहुतही खटपटी निरालसी सेठ माणिकचंदके जिम्मे था।

सर्व सत्र सकुशल श्री जैन बद्री पहुंचा। मैसूर राज्यमें श्रवण बेलगोला नामका नगर मैसूर स्टेशनसे ५९ मील व फ्रेंचराक स्टेशनसे ३० मीलके अनुमान है। वर्तमानमें लोग बम्बईसे हुबली होकर आरसीकेरी स्टेशनसे जाते हैं यहासे भी ३० मील है। यहाँ **गोमट्टस्वामी**की बृहत मूर्ति है जो ९ मील दूरसे अपने भव्य दर्शन प्रदान करती है। उस समयकी कुछ व्यवस्था जो थी वह यहाँ "जैनबोधक" अङ्क ४ पुस्तक १ दिसम्बर सन् १८८५ के अनुसार लिखी जाती है जिस यात्राका वर्णन उस पत्रके सम्पादक सेठ हीराचंदने स्वय सम्वत १९४१ में यात्रा करके लिखा है—" बेलगोला ग्राममें ८ दि० जिनमंदिर हैं जिनमे पट्टाचार्यका मदिर दुरुस्त है शेष नहीं। मदिरोंमें घास बढ गई है, मडपमे पक्षियोंके घर हैं जिससे दुर्गंध आती है। यहाँ दो पहाड एक दूसरेके सन्मुख है, एक बडा जिसको **धोडपेटा** दूसरा छोटा जिसको **चिक्कपेटा** कहते हैं। बडेपर ८ व छोटेपर १४ दि० जैन मदिर है। व्यवस्था पट्टाचार्य्यके आधीन है। कई मंदिरोंके दरवाजे नहीं है जिससे पशु पक्षी उपसर्ग करते हैं। यहाँसे १ मील दूर **जिननाथपुर** एक ग्राम है, यहाँ दो प्राचीन मदिर हैं। एक प्रतिमा नहीं है, दूसरेमें श्री शातिनाथस्वामीकी बहुत प्राचीन प्रतिमा है जिसकी पीठपर लिखा है कि यह मंदिर **कोल्हापुरके भीमसेन सेनापतिने बनवाया**। इस मदिरका कुछ भाग गिर गया है सो गावका पटेल जैनी न होनेपर भी मंदिरकी दुरुस्तीका प्रयत्न करता है। सेठ हीराचद नेमचद लिखते हैं कि हमारे साथवालोंने १००) व बेलगुलगाववालोंने २००) इस प्रकार ३००) इसकी दुरुस्तीके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको दिये तथा

मंदिरोंमे दरवाजे लगानेको भी रुपये पट्टाचार्य्यको दिये है। इस संबधमें जब सेठ हीराचंद यात्रासे लौट आए तब पट्टाचार्य्यजीने सेठजीको **हिंदी भाषा**मे पत्र भेजा उसकी नकल "जैनबोधक" में है उसका कुछ साराश यहां दिया जाता है।

". .आपने श्री गोमट्टस्वामीके पहाड ऊपर और चिकपेटा ऊपर दरवाजे दुरुस्त करने वास्ते रुपये दे गए थे जिसमेंसे चिकपेटा ऊपर शातिनाथ महाराजके मदिरके दरवाजे तयार हो चुके है बाकीके तयार करनेके लिये लोहाके सिलापट्टी सब लाए है .. .गोमट्टस्वामीके पहाड़ ऊपर बडे दरवाजेको खिड़की तयार करके बिठाई है .. जिननाथपुरके मदिरके दुरुस्तीका काम ब्रह्मसूरि शास्त्री मूलविद्रीसे यहॉ आवेंगे तब उनके विचारोसे शुरू करेंगे... .काम पूरा करके आपको लिखेंगे चद्रप्रभ काव्य व्याख्यान सहित **छापनेको दिई है** . तयार होनेसे आपके वास्ते एक प्रति भेज देवेंगे आशीर्वाद

सही **भट्टारकजीकी द्राविड लिपिमें।**

हिन्दीको भारतकी राष्ट्रीय भाषा होनेका दावा।

इस पत्रकी कुछ नकल यहॉ इसलिये प्रगट की गई है कि हमारे पाठकोंको मालूम हो कि कनड़ी देशमें भी हिन्दी लिखने व पढनेका रिवाज है जिससे भारतकी यदि कोई भाषा व लिपि **राष्ट्रीय** होसक्ती है तो यह **हिन्दी भाषा** ही है। दूसरे यह कि पट्टाचार्यजी ग्रथोंके मुद्रणमें विरोधी न होकर सहकारी थे।

गोमट्टस्वामीका बडा पहाड एक ही पत्थरका है ऊपर चढनेपर १ बडा दरवाजा आता है उसके भीतर जाते ही एक दम खुली,

निर्मल, शातस्वरूप, बहुत विस्तीर्ण, मनोहर **बाहुबलि स्वामी**की नग्न मूर्त्ति नजर आती है। मूर्तिके दर्शनसे अंत करणमे एक प्रकारका आश्चर्य युक्त आनद होता है। १६हाथ चौडी और ४०हाथ ऊची ऐसी उत्कृष्ट ध्यानारूढ तेजस्वरूप मूर्तिकी तरफ रातदिन नेत्र लगाके बैठे तौभी तृप्ति नही हो सकती। बाहुबलिस्वामी प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवके पुत्र थे, इन्होंने दीर्घकाल तपश्चरण किया था जिससे चरणमें वल्मीक लगे है उनमेसे सर्प निकलके पावसे खेल रहे हैं। शरीरके ऊपर वेल चढी है ऐसा हुबेहुब भाव पत्थरमें मनोहर खुदा हुआ देखनेमें आता है। गोमट्टस्वामीके वाए हाथमें बालबोध अक्षर खुदे हैं–

**" चामुण्डराजे करवियलें
गंगरजे सुतालय करवियलें"**

इस ही अभिप्रायके सीधे हाथमे कानडी और द्राविड लिपिमे अक्षर खुदे है। **चामुण्डराय** विक्रम संवत् ६००के अनुमान हुए है+। उन्होंने सवय यह अक्षर लिखवाए है ऐसा ब्रह्मसूरि शास्त्री कहते हैं।

वाई तरफ जो कनडी अक्षर हैं उनका तात्पर्य है—

" नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्तीका शिष्य बसदी सेठीने कोट बधायके चौवीस तीर्थंकरोंकी प्रतिमाए स्थापित की।" यह प्रतिमाए श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिके पीछे प्रदक्षिणामें विराजित हैं। गोमट्टस्वामीकी वाई तरफकी इमारतमें एक तेलिया पत्थरपर लिखा है–

नोट–वर्तमानमें चामुण्डरायके होनेका सवत १०५० के लगभग माना जाता है। देखो, प्रशस्ति गोमट्टसार।

शके १२०२ प्रमाथी सवत्सरे कार्तिक सुदी १० सोमवार में सवुदेव गोमट्टस्वामीके वास्ते गदियानेकी दूध दररोज़ देऊगा।

तथा गोमट्टस्वामीके सीधे हाथकी तरफ इमारतमें कुष्माडिनी देवीकी मूर्ति है जिसके नीचे लेखका भावार्थ है--

"नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवतीका शिष्य बालचद्रदेव उनका शिष्य कीर्तिसेठीका पुत्र बम्मसेठीने इस यक्ष देवीकी प्रतिष्ठा की।"

कई स्थानोंमें पत्थरके खुदे हुए प्रतिमाके समीप वत्स सहित गौ, हस्ती, सूर्य्य, चद्र है, इसका हेतु ब्रह्मसूरि शास्त्री कहते हैं की दान देते समय ये चार साक्षी रखके दान देना ऐसा शास्त्राधार है जिससे यहाँ बताए हैं। चामुडराजाके पहले **कृष्णराजा** हुआ है उसके समयका शिलालेख चिक्कपेटा याने छोटे पहाड पर है। अक्षर धवल महाधवलके लिपिके हैं। इसका वर्णन वृहत् हरिवशमे है। **मैसूरका राजा कृष्णराजकी माता देवी रमणी जन धर्मी** थी जिसने चिक्कपेटाके ऊपर श्रीआदिनाथके जीर्ण मदिरको फिरसे बनवाया। इस ही मदिरमें श्री **भद्रबाहुका** चरित्र **चंद्रगुप्त** राजाके समयका पत्थरमें खुदा हुआ है। चिक्कपेटाके ऊपर श्री भद्रबाहुके पादुका लबे एक बालिस्त ८ अगुल है। वहाँ बाल्बोध अक्षरमें लिखा है-

"भद्रबाहु स्वामी पादुका जिनचंद्र पणमिंद"

और एक यंत्र निकला है।

	५	
२४	श्री	२
	४	

श्रवणबेलगुल गावमें एक तालाव है जिसको मैसूरके पहले **खजांची अण्णाप्पा सेठी जैनने बंधवाया था।** लम्बा फुट ३०० चौडा फुट ४०० है। पूर्व बाजूके दर्वाजेपर **जैन** प्रतिमा पत्थरमें खुदी हुई है।

वेलगुल गावके बडे मदिरको हालीवीडका राजा **नरसिंह** वल्लालका मत्री हुल्लपा **भडारीने** शाका १२०० के अनुमान बनवाया था। वहाँ कनडीमें शिलालेख है उसका भाव है— "नयकीर्ति मुनिका शिष्य भानुकीर्तिको शक १२०० बहुधान्य नाम सवत्सरे चैत्र शुद्ध १ रविवारके दिन सवणपुर नामका गाव (वेलगुलसे एक कोस पर है) जागीर दिया। दूसरा शिलालेख है जिसमें शाका १२८० कीर्ग सवत्सर भाद्रपद शुद्ध १ है। आगे नहीं पढा गया। यहाँके अनतनाथके मदिरको मूलसत्र देशीयगण कुदकुदाचार्यान्वय चारुकीर्ति पडिताचार्यके वक्त **मंगा** स्त्रीने बनवाया है। शाके १७९२मे खरनाम सवत्सरमें मैसुरके **राजा** कृष्णराजने श्री बाहुबलि स्वामीकी सेवार्थ चारुकीर्ति पट्टाचार्य्यको **९ गांव इनाममें** दिये हैं जो अब तक जागीरमे मौजूद है।

इन दोनों पर्वतोंपर १४४ शिलालेख हैं जिनकी नकल व इग्रेजीका उल्था राइस साहबने अपनी पुस्तकमें छपाया है जिसका नाम हैं "Inscriptions at Sravanbelgola" जो बगलोरके सर्कारी प्रेससे मिलती है। यहाँ पर मुनियोंका सदा निवास रहा है। बहुतसे लेखोंमें उनकी पट्टावली व समाधिमरणकी बात है। भद्रबाहु श्रुतकेवलीकी समाधि यहीं हुई। उस समय मौर्यवशी राजा चद्रगुप्त मुनि अवस्थामें मौजूद थे। उन्होंने ही अततक सेवा की थी।

ऐसे रमणीक अतिशय क्षेत्रके दर्शन प्राप्त कर सेठ माणिकचंदके सत्रको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ । बडे

सेठ माणिकचंदकी दया और सीढ़ियोका प्रवन्ध ।

पर्वत पर चढते हुए सेठजीने देखा कि वृद्ध पुरुष व स्त्रियोंको बहुत ही कष्ट हो रहा है, पत्थर चिकना ढालू है वारवार पैर फिसलता है । सेठजीका शरीर भी छोटा व भारी था । इनको भी पर्वत चढते हुए बहुत कष्ट हुआ। यह चढते २ विचारने लगे कि यदि इस पर्वतपर सीढिया बनजावें तो सदाके लिये यात्रियोंका कष्ट दूर हो जावे । अबतक लाखो हजारों ही यात्री हो गए होंगे किसीके दिलमे यह भाव पैदा नही हुआ । पाठकगण, इससे समझ लेंगे कि किस कदर भारी परोपकारबुद्धि सेठ माणिकचदमे थी । आप ऊपर गए, संत्रसहित परमानददायक श्री बाहुबलि स्वामीके दर्शन करके अपने जन्मको कृतार्थ मानते हुए । पानाचद भी बहुत ही प्रसन्न हुए । सर्वने वहा बडी भक्तिसे चरणोंका प्रछाल किया फिर अष्ट द्रव्यसे खूब भाव लगाकर पूजन करके महान पुण्य उपार्जन किया । दर्शन करते २ किसीका भी मन नही भरा ।

सीढ़ियोके चंदेमें १०००)

दूसरे दिन छोटे पर्वतोंके मदिरोंके दर्शन किये। श्री भद्रबाहुस्वामीके चरणोंको स्पर्शकर महान आल्हाद प्राप्त करते हुए। सेठ माणिकचदने अपने भाईसे सलाहकर अपने सत्रको एकत्रकर निश्चय किया कि बडे पहाडपर २००० सीढिया बनवादेनी चाहिये । ५०००) से अधिककी एक पट्टी की जिसमे आपने १०००)की रकम भरी । रुपया एकत्रकर पट्टाचार्यजीके सुपुर्द किया कि इससे सीढिया बनवा दी जावें। यह काम सेठ माणिकचद-

ने इतने महत्वका किया कि आजतक इन सीढियोंके द्वारा यात्रियोंको आराम पहुँच रहा है व आगामी पहुचेगा।

वहासे सबने श्री मूलबिद्री जानेका विचार किया और गाड़ियोंके द्वारा पैदल प्रस्थान किया।

मूलबिद्रीके रास्ते व मूलबिद्रीका कुछ हाल ऊपर लिखित जैन बोधकके अनुसार यहा कुछ दिया जाता है —

बेलगाड़ी द्वारा मूलबिद्रीकी यात्रा ।

श्रवणबेलगोलासे १ कोस **बसतीहेली** गॉवमें एक जिन मदिर है जिसकी प्रतिष्ठा **नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ती**के हाथसे हुई है। यहॉसे १२ मील **चंद्रायण पट्टण** गाव आता है। यहा जैनके २ घर है पर मदिरजी नहीं है। यहाँसे ८ मील **शांतग्राम** है जिसको **हालीवीड़ी राजा बल्लालकी स्त्री शांतलादेवीने बसाया था**। यहाँ शातिनाथजीका मदिर है, ४ जैन घर है। यहाँसे ८ मील **हासन** शहर है, २ जिन मदिर हैं, यहाँसे २० मील **हालीवीड** है यहा ३ जिन मदिर है **श्री आदिनाथजीके** मंदिरके बाहर प्रतिमाके नीचे एक लेख है जिसका भाव यह है —

" मूल सघ देशीय गच्छ गण पुस्तक कुदकुदान्वय, इगलेश्वर ग्राममें **माघनदि** भट्टारकके शिष्य दोय **श्री नेमिचद्र** भट्टारक देव और श्रीमत् **अभयचद्र** सैद्धातिक चक्रवती० जिसमें पहले है सो **बालचद्र** पडितदेवके शिक्षागुरु और दूसरे विद्यागुरु थे। बालचद्रने कहा था कि शाका शालिवाहन ११९७ भाव सवत्सर भाद्रपद शुद्ध १२ बुधवार मध्याह्न कालमें अपना अत होगा। एक मास तक

ऐसे रमणीक अतिशय क्षेत्रके दर्शन प्राप्त कर सेठ माणिकचंदके सत्रको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ। बडे पर्वत पर चढते हुए सेठजीने देखा कि वृद्ध पुरुष व स्त्रियोंको बहुत ही कष्ट हो रहा है, पत्थर चिकना ढालू है बारबार पैर फिसलता है। सेठजीका शरीर भी छोटा व भारी था।

सेठ माणिकचंदकी दया और सीढ़ियोंका प्रबन्ध।

इनको भी पर्वत चढते हुए बहुत कष्ट हुआ। यह चढते २ विचारने लगे कि यदि इस पर्वतपर सीढिया बनजावें तो सदाके लिये यात्रियोंका कष्ट दूर हो जावे। अबतक लाखो हजारों ही यात्री हो गए होंगे किसीके दिलमे यह भाव पैदा नही हुआ। पाठकगण, इससे समझ लेंगे कि किस कदर भारी परोपकारबुद्धि सेठ माणिकचदमे थी। आप ऊपर गए, सत्रसहित परमानंददायक श्री बाहुबलि स्वामीके दर्शन करके अपने जन्मको कृतार्थ मानते हुए। पानाचद भी बहुत ही प्रसन्न हुए। सबने वहा बडी भक्तिसे चरणोंका प्रछाल किया फिर अष्ट द्रव्यसे खूब भाव लगाकर पूजन करके महान पुण्य उपार्जन किया। दर्शन करते २ किसीका भी मन नही भरा।

दूसरे दिन छोटे पर्वतोंके मंदिरोंके दर्शन किये। श्री भद्रबाहुस्वामीके चरणोंको स्पर्शकर महान आल्हाद प्राप्त करते हुए। सेठ माणिकचदने अपने भाईसे सलाहकर अपने सघको एकत्रकर निश्चय किया कि बडे पहाडपर २००० सीढिया बनवादेनी चाहिये। ५०००) से अधिककी एक पट्टी की जिसमे आपने १०००)की रकम भरी। रुपया एकत्रकर पट्टाचार्यजीके सुपुर्द किया कि इससे सीढिया बनवा दी जावें। यह काम सेठ माणिकचद-

सीढ़ियोंके चंदेमें १०००)

ने इतने महत्वका किया कि आजतक इन सीढियोंके द्वारा यात्रियोंको आराम पहुँच रहा है व आगामी पहुंचेगा।

वहासे सबने श्री मूलबिद्री जानेका विचार किया और गाड़ियोंके द्वारा पैदल प्रस्थान किया।

मूलबिद्रीके रास्ते व मूलबिद्रीका कुछ हाल ऊपर लिखित जैन बोधकके अनुसार यहा कुछ दिया जाता है—

बैलगाड़ी द्वारा मूल-बिद्रीकी यात्रा।

श्रवणबेलगोलासे १ कोस **बसतीहेली** गॉवमे एक जिन मदिर है जिसकी प्रतिष्ठा **नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ती**के हाथसे हुई है। यहॉसे १३ मील **चंद्रायण पट्टण** गाव आता है। यहा जैनके २ घर है पर मदिरजी नहीं है। यहॉसे ८ मील **शांतग्राम** है जिसको **हालीवीड़ी राजा बल्लालकी स्त्री शांतलादेवीने बसाया था।** यहॉ शातिनाथजीका मदिर है, ४ जैन घर हैं। यहॉसे ८ मील **हासन** शहर है, २ जिन मदिर है, यहॉसे २० मील **हालीवीड** है यहा ३ जिन मदिर है **श्री आदिनाथजीके** मदिरके बाहर प्रतिमाके नीचे एक लेख है जिसका भाव यह है—

" मूल सघ देशीय गच्छ गण पुस्तक कुदकुदान्वय, इगलेश्वर आमम **माघनदि** भट्टारकके शिष्य दोय **श्री नेमिचद्र** भट्टारक देव और श्रीमत् **अभयचद्र** सैद्धातिक चक्रवती० जिसमें पहले है सो **बालचंद्र** पडितदेवके शिक्षागुरु और दूसरे विद्यागुरु थे। बालचद्रने कहा था कि शाका शालिवाहन ११९७ भाव सवत्सर माद्रपद शुद्ध १२ बुधवार मध्याह्न कालमें अपना अत होगा। एक मास तक

अनशन लिया पर्यंकासनसे समाधिस्थ हुए। तथा सार चतुष्टयका व्याख्यान नेमिचद्र बाचते हैं और उनके शिष्य बालचद्र सुनते हैं। दूसरी तरफ अभयचद्र बाचते है और बालचद्र सुनते हैं ऐसे चित्र हैं और लेख है। चित्र केवल **नग्न** हैं।

शातिनाथ मदिरमे मुनि प्रतिमाके नीचे लेख है—

" कुलभूषण सैद्धातिक शिष्य माघनदिके शिष्य शुभनदिके शिष्य चारुकीर्ति पडितदेव शाके १२०२ प्रमाधिनाम सवत्सरे कार्तिक वदी ९ शनिवार बालचद्रके शिष्य अभयचद्र समाधिस्थ हुए। "

यहाँ दूसरी मुनि प्रतिमा है। उसके नीचे लेख है—

" शाके १२२२ शार्वरी सवत्सरे चैत्र वदी ३ गुरुवार रामचद्र मलधारी समाधिस्थ हुए। यह बालचद्र पडित देवके शिष्य थे। मुनि प्रतिमाके बाजूमें **पीछी कमंडल** है।

पार्श्वनाथ मदिरमें एक फूटा हुआ शिला लेख है जिसपर शक १३३२ है। आगे नही बचा। यहाँ एक दूसरा शिला लेख है जिसपर शाका १५७० ईश्वर नाम संवत्सरे फाल्गुण शुद्ध ५ गुरुवार है। इस मदिरमें स्तभ है जिसपर लिंगायत लोगोंने शिवलिंग स्थापन किया था उसको जैनियोंने निकाल डाला, दोनोंमें झगडा हुआ जिसका फैसला वेलूरके कृष्णापा नाईक आयनवरू कलिकाल अष्टम चक्रवर्ती **व्यंकटादि** नायकने करके समाधान किया।

यहाँसे १० मील वेलूर गाँव है। यहाँ जिनमदिर नहीं है पर एक बडा विष्णु मंदिर है, उसके शिलालेखसे प्रगट होता है कि यह पहले जैन मदिर था फिर विष्णु मदिर किया गया है। वह लेख इस प्रकार है —

" श्रीमद्विशुद्धबोधाय शातायामलकीर्तये ।
स्याद्वाद सत्यवाक्याय, जिनेन्द्राय नमो नम ॥ १ ॥
जयतु जयतु शश्वत् शासन जैनमेतत् ।
सकलविपुलधर्म श्रीलतावद्धमूल ॥
सुदृढमिद्धरित्र्या यावदेषाधरित्री ।
वसतिवसतिरुच्चरर्हतस्थानलक्ष्म्या ॥ २ ॥ "

इसमें एक छोटीसी पाषाणकी चौवीसी मूर्ति फूटी पडी है । इस गावमें सस्कृत शाला है । ६० छात्र पढते है । कई न्याय भी सीखते हैं ।

यहाँसे २२ मील गिरा विजसली नामकी पहाडोंकी झाडीमें एक खेडा गाव है जहाँ इलायची व काली मिर्च बहुत होती है । ९६० तोलेका एक मन, इस तौलसे एक एकड भूमिमें २५ मन इलायची होती है । १ मनका दाम ५२) है ।

यहाँसे १५ मील जंगलमें एक चौकी है । वहाँसे १६ मील **निड़गल** गाव है । यहा श्री शातिनाथजीका मदिर है । यहाँसे **वेणूर** १९ मील है, यहा ८ जिन मदिर हैं । सर्कारसे २६८) साल ईनाम मदिरोंकी सेवार्थ मिलते है । यहा **श्री गौमट्टस्वामी**की मूर्ति है । श्रवण बेलगोलाकी मूर्तिसे आधे आकार होगी जिसके दक्षिणभागमें लेख है उससे प्रगट होता है कि शाका १९९९में तिम्म राजाने प्रतिष्ठा कराई । प्रतिमाजीके पगका तला २॥ हाथ लम्बा है । यहाँ उपाध्याय जैन ब्राह्मण है जिनको इन्द्र कहते है । उनके ८ व जैनियोंके अनुमान ४० घर है । इनमें रोटी व्यवहार है पर बेटी व्यवहार नहीं है । यहाँसे **मूलबिद्री** १२ मील है । यहा १८

जिन मंदिर हैं । सर्कारसे इन मदिरोंके लिये १०००) वार्पिक अनुमान मिलता हैं । यहीं **रत्नोंके बिम्ब** व **धवल, जयधवल** व **महाधवल** नामके ग्रंथ हैं जिनकी रक्षाके लिये एक कमिटी है उसके मेम्बरोंके नाम है —

१—कोंडे पदमराज शेट्टी

२—राजा कुनम शेट्टी

३—गुम्मण सेट्टी

४—नेमिराज उपाध्ये

इन चारोंके सामने इन रत्न बिम्बों व धवलादि ग्रथोंका दर्शन प्राप्त होता है । यह गाँव बगलोर जिलेमे है जहाँ जैनियोंके २००० के अनुमान घर है । यहाँ **मृत पुरुषकी मिलकियत भानजेको मिलती है ऐसा ही सर्कारी कायदा भी** है जिससे जैनी बहुत दरिद्री हुए व नष्ट हुए । यह रिवाज इसके १००० वर्षके अनुमानसे है जिसको **भूताल पांड्य** राजाने शुरू किया था । अब इसको सब नापसन्द करते है । यह रिवाज जैन उपाध्योंमें नही है। यह देश तौलव कहाता है। यहाँ उपाध्यायके घर १९ व जैनियोंके करीब २९ घर है । यहाँसे १० मील **कारकल** है । यहाँ १४ जिन मंदिर हैं । नेमिनाथ स्वामीके मदिरमे जो शिलालेख है उसमें शाका १३७९ ईश्वर नाम सवत्सर कार्तिक मासमें भैरवरायाने बनवाया। शातिनाथ मदिरमें लेख है सो उसे समस्त गुरुने शक १२७६ भाव सवत्सरमें फाल्गुण शुद्ध ९ बुधवारको बनवाया । चंद्रनाथ मदिरको शालि० शक १५१४ विनय नाम संवत्सर भाद्रपद शुद्ध ३ रविवार बरमण्णा शेठीने बनवाया । यहाँ भी वेणूरके समान श्री **गोमट-**

स्वामीकी बड़ी प्रतिमा पहाड पर है जिसपर लेख है उससे प्रगट है कि शाका १३५३में फाल्गुण सुदी १२ सोमवारको चंद्रवंसी भैरवेन्द्रके पुत्र श्री वीर पाण्ड्य राजाने प्रतिष्ठा कराई। यहाँ चतुर्मुख मंदिरमें बडा शिलालेख है। यहाँसे लोग जहाजमें जानेको १८ मील गाडी पर चल मंगलोर बंदर पर आते है। यहाँ भी एक जिन मंदिर है। २ घर जैन व १ उपाध्यायका है। यहाँसे जहाज पर बैठके २ दिनमें बम्बई पहुँचते है। टिकट ११) लगता है।

सेठ माणिकचंद संघसहित इसी मार्गसे यात्रा करके जहाज द्वारा बम्बई लौट आए। इन्होंने जैनबिद्रीके भंडारमें भी अच्छी रकम दी व रास्तेके मंदिरोंमें भी दान किया।

धवलादि ग्रन्थोंके उद्धारका विचार।

मूडबिद्रीके रत्नबिम्ब व धवलादि प्राचीन ग्रंथोंके दर्शन करते वक्त अच्छी रकम भेट धरी जिसे देख-कर वहाँके पंच और भट्टारकजी बहुत प्रसन्न हुए। सेठ माणिकचंदजीने दर्शन करते समय यह जरूर ध्यानमें लिया कि यह प्राचीन ग्रंथ जिन **ताड़पत्रों** पर है वे बहुत जीर्ण हो गए है। वहाँके लोगोंको सेठजीने कहा कि इनकी दूसरी प्रति करानी चाहिये। तब वहाँके लोगोंने कहा कि ये तो इसी प्रकार बहुत दिनोंसे है, हम तो दर्शन करके व कराके कृतार्थ होते हैं, हम गृहस्थी तो वाच ही नहीं सक्के, भट्टारकजी इस प्राचीन लिपिको पढ नहीं सक्के, हां, जैनबिद्रीमे **ब्रह्मसूरि शास्त्री** है वे ही इसको पढना जानते है।

इस तरह बडे आनन्दसे सेठजी यात्रा करके निर्विघ्न घर लौटे। रूपाबाईजीको इस यात्रासे बडा ही आनन्द हुआ। पुत्र प्रेमचंदजी

बडे भावसे दर्शन करता था । चतुरमती फूलकुमरी और मगनमती कन्याओंको हरएक यात्रामें साथ रखती थी और दर्शन पूजन कराके बहुत आनन्द मानती थी । पानाचदजीको भी इस यात्रासे बहुत धर्म लाभ हुआ ।

यात्रासे लोटकर सेठजीके चित्तमें उन प्राचीन ग्रंथोंके उद्धारकी बात जमी रही और यह विचार करके कि वह काम किस तरह सम्पादन हो। आपने शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचदको याद किया क्योंकि इनकी विद्वता व बुद्धिमानी सेठ माणिकचदके चित्तमे उल्लिखित हो गई थी । अपनी यात्राका समाचार सेठ हीराचदको लिखा और प्रेरणा की कि आप स्वय यात्रा करके उन ग्रन्थोंको देखें और उनके उद्धारका उपाय करें । सेठ हीराचदने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हम अबके अर्थात् सवत् १९४१के जाडेमे श्रीमूलबिद्रीकी यात्राको यथा सभव अवश्य जावेंगे।

प्रेमचंद, फुलकुमरी ओर मगनमतीको शिक्षा ।

अब सेठजीने प्रेमचद और फुलकुमरीको ६ वर्षसे अधिक जान इनके पढानेको एक अच्छी गुजराती शालामे भेजा तथा घर पर भी एक अध्यापक नियत किया तथा धर्मकी शिक्षा मुख जबानी इन बालकोंको माता रूपाबाई दिया करती थी व सेठ माणिकचदजी भी देते थे, तथा मगनमतीको तो यह बहुत चाहते थे, २॥ वर्षकी उमरसे सेठजी इसको अपने साथ

नोट—गुजराती सवत दीवालीसे जब कि मारवाड़ी सवत चैत्र सुदी १ से शुरू होता है इससे मारवाडी स० की अपेक्षा स० ३९८० है ।



सेठजी युवावस्थामें ३० वर्षके निकट.

. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ १८७)

भोजनके समय लेकर बैठते थे, फुरसतके समय खिलाते थे, धर्मकी बात बताते थे और पास ही शयन कराते थे। जब यह शाला जाने योग्य हुई तब इसको भी भेजा।

इस समय भारतमें लार्ड रिपनके पीछे लार्ड डफरिन वाइसराय थे। इनके समयमें अमीर काबुलसे जो कई वर्षोंसे झगडा चला था सो शांत हो गया, सरकारसे गाढी मित्रता हो गई और प्रति वर्ष एक लाख २० हजार पाउंड अमीर काबुलसे सर्कारको मिला करें, ऐसा ठहराव हो गया। तथा ब्रह्माका मुल्क जो अब तक स्वतंत्र था सो सन् १८८५में भारतमें मिला लिया गया, इससे ब्रह्मा और भारतमें व्यापारकी वृद्धि होने लगी।

सेठ हीराचंद नेमचंदकी जैनबिद्री मूलबिद्रीकी यात्रा।

सेठ माणिकचंदकी सूचनाके अनुसार सेठ हीराचंदजी जैनबिद्री और मूलबिद्रीकी यात्राको शोलापुरसे मगसर सुदी ६, सं०१९४१ को रवाना हुए और गुज० पोष वदी ११ को लौट आए। यह शोलापुरसे रायचूर आरकोनम होते हुए बेंगलोर शहर पहुंचे। वहाँ एक जिन मंदिर नया देखा परंतु उसमें प्रतिमाएं सब पुरानी देखी सिर्फ मूल नायक कायोत्सर्ग पीतलके बिम्बको सं० १९३९का श्रवणबेल गोलाके पारसनाथ शास्त्री द्वारा प्रतिष्ठित पाया। यहाँ प्रतिमाओंके इधर उधर दो भिन्न सिंहासनों पर पद्मावती देवीको विराजित पाया पर क्षेत्रपालकी स्थापना कहीं नहीं देखी। यहाँ २० जैन घर हैं मंडीमें जैन जिणापा मंदिरकी व यात्रियोंकी अच्छी सम्हाल रखते हैं। इनके पास कनडी भाषामें द्वादशानुप्रेक्षा छपी हुई [illegible]

सेठ हीराचंदको बहुत हर्ष हुआ कि इधर ग्रन्थोंके छपनेका रिवाज है । पूछनेसे मालूम भी हुआ कि इधर कोई विरोध नहीं करता है । इस समय सेठ हीराचदजीके दिलमें यह पक्का इरादा हो गया कि यात्रासे लौट कर जिस तरह बने ग्रंथोंके मुद्रण करके प्रचार करनेका कार्य्य हाथमें लेना चाहिये । यहाँसे मैसूर गए । वहाँ एक धनवान व्यापारी मोदीखाने तिमाप्पाके मकानमे उतरे थे। इनके यहाँ जिन चैत्यालय है तथा इनके ४ पुत्र है १ शातराजय्या, २ अनंत राजय्या, ३ ब्रह्मसूरिअय्या (इन्होंने मैट्रिकुलेशन तक इग्रेजी अध्ययन किया था), ४ पद्मनाभय्या। यहाँ सेठजीने ग्रथ भंडार देखा उसमें पुरुदेव चम्पू, जीवधर चम्पू, गद्यचितामणि आदि ग्रंथ देखे। यहाँ **नाग कुमार** और **राजण्णा** दो जैन सस्कृतके विद्वानोंसे मिले । यहाँ अप्पाऊ पिले फोटोग्राफरसे १२) रु० मे सेठजीने श्रवण बेलगोलाके दोनों पहाडोंके गोमट्टस्वामी तथा चारुकीर्ति पट्टाचार्यके ऐसे ४ फोटो लिये । यहाँसे शारग पट्टण होते हुए गाडी द्वारा श्रवण बेलगोला आए ।

श्रवण बेलगोलामें पहुचकर इन्होंने विद्वान शास्त्री ब्रह्मसूरिजीसे बहुत प्रीति उत्पन्न की। उन्हींके साथ वहाँकी यात्रा भी की तथा वहाँके भट्टारक पट्टचार्य्यजीसे भी बहुत स्नेह बढाया । मनमे यह विचारा कि जो ब्रह्मसूरि शास्त्री हमारे साथ मूलबिद्री चलें तो उन धवलादि ग्रन्थोंका महत्त्व प्रगट होवे और उनके जीर्णोद्धारका उपाय किया जावे । सेठजीने अपने संघसे पट्टी करके वहाँके मदिरादिकी मरम्मत-के लिये जो रुपया दिया इससे इनका प्रभाव बेलगोलाके जैनियों पर अच्छा पडा । ब्रह्मसूरिजीने अपना शास्त्र भडार भी दिखाया

जिसकी सूची 'जैन बोधक' अंक २९ मास जनवरी सन् १८८८मे मुद्रित है इसमें निम्न अपूर्व ग्रंथ है—

१–केवलज्ञान होरी जैन ज्योतिष ग्रथ श्लोक सख्या १०००० सस्कृत चद्रसेनकृत

२–क्रिया निघट १००० बौधमती व्याकरण

३–कारक निघट " "

४–न्याय विनिश्चय अलकार ३००००, वृहद् अनताचार्य कृत

५–त्रिविक्रम वृत्ति ४००० प्राकृत व्याकरण त्रिविक्रमदेवकृत

६–माघनद सहिता मूल टिप्पण ५००० माघनदि

७–पुरुदेव चपू ३००० हरिचद कविकृत

८–प्रायश्चित्त समुच्चय टीका ३०००

९–मूलाचार टीका ८००० कल्याणकीर्ति

१०–लोक विभागी ३०००

११–शास्त्रचार समुच्चयव्याख्या २००० माघनदि व्याख्या प्रभाचद्र कृत।

ये ग्रंथ प्रकाशित होने योग्य है—

ब्रह्मसूरि शास्त्रीको अनेक ऐसे काम थे जिससे वे सेठजीके साथ मूलबिद्री नहीं जा सक्ते थे परतु सेठ हीराचन्दने प्रेम व आग्रहसे तथा धवलादि ग्रन्थोंके पढनेकी उत्कठासे अपने सर्व परिवार सहित चलनेकी तयारी की। उस समय सेठजीके साथ लाला रिषभदास आगरा, बाबा दुलीचंदजी, तोडूमलजी उजैन, कस्तूरचदजी और भगतजी, पन्नालाल, चैणाचद कालुनवाले, मोतीचद फलटनवाले, नेमचद म्हसवडवाले आदि कई भाई थे। रास्तेमें सबके साथ धर्म चर्चा करते हुए मूलबिद्री पहुंचे। वहां श्री पार्श्वनाथ स्वामीके मदिरजीमें अब सर्व सज्जन

मासने धवलादि ग्रंथ जो सिद्धान्त ग्रन्थोंके नामसे प्रसिद्ध है दर्शनार्थ वहाँके पट्टाचार्य और पचोने निकाले उस समय सर्व संघको बडा आनन्द हुआ। ब्रह्मसूरी शास्त्रीका मूलविद्रीमे बहुत सन्मान था। पुराने ताडपत्र पर लिखे हुए कुछ पत्रोका सग्रह भीतर भटारसे पंच लोग निकाल कर लाते थे और उसीको दूरसे दर्शन कराकर भेट चढवाकर लोगोको बिदाकर देते थे। जब ब्रह्मसूरिजीने इन पत्रोंको पढा तो इनमें कुछ और ही वर्णन पाया। धवलादि ग्रथोंका कुछ भी अश न था क्योंकि सूरिजी वयोवृद्ध विद्वान थे। इनको मालूम था कि उनमे गुणस्थान मार्गणा स्थान आदि सम्बन्धी सूक्ष्म चर्चा है तथा श्री गोमट्टसार इन्हींके कुछ अशको लेकर श्री नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्तीने लिखा है तब सूरिजीको बडा आश्चर्य हुआ और पट्टाचार्यजीसे कहा कि यह तो सिद्धान्त ग्रन्थ नहीं है आप भीतरसे और ग्रथ निकलवाइये, उनमे श्री धवलादिको ढूढा जावे। पचलोग कुछ लज्जित हुए, भीतरसे और जीर्ण ताड पत्रों पर लिखे हुए ग्रन्थ लाए। उन सबको देखकर सुरी शास्त्रीने धवल और जयधवल ग्रंथोंको छाटकर अलग किया और उन्हें अति विनयसे बिराजमान कर सुरि शास्त्रीने बहुत ही मिष्ट ध्वनिसे मगलाचरण पढके उसका अर्थ किया तथा कुछ और भी सुनाया।

धवलादि ग्रंथोका पढ़ाजाना।

उस समय सेठजीने पचोंसे निवेदन किया कि यदि आप लोग शास्त्रीजीसे इस ग्रथको दोतीन दिन तक सुनैं तो आपको और हमे सर्वको विशेष लाभ होवे। उधर बाबा दुलीचंदजीने भी यही इच्छा प्रगटकी। उस समय थोड़ासा

ग्रथका वर्णन सुननेसे जो आनन्द सबको हुआ था उसको विचारते हुए उन लोगोंसे नाहीं न होसकी और वे इस बात पर राजी होगए। दूसरे व तीसरे दिन भी सर्व सबने शास्त्रीजीके मुखसे श्री धवल और जयधवलके इधर उधरके कई भाग सुनके बहुत आनन्द प्राप्त किया। सेठ हीराचद लिखते है कि इन पुस्तकोंकी लिपि जूनी कनड़ी है तथा सुनते समय हमने कुछ श्लोक लिख भी लिये थे। इस तरह सेठजीने अपनी खातरी करके कि यही धवल जयधवल हैं तथा अति जीर्ण होगए हैं इनकी नक्ल होनी चाहिये इस विचारको अपने मनमें रक्खा और ब्रह्मसूरी शास्त्रीसे सम्मति मिलाते रहे कि इनकी प्रति आप कर देवें तो बहुत अच्छा है क्योंकि उस लिपिको उस प्रान्तमें भी पढनेवाले सिवाय वृद्धसूरि शास्त्रीजीके और कोई नही था। सूरि शास्त्रीने कहा कि यह काम बहुत काल लेवेगा तथा यहॉके भाइयोंको भी समझाना होगा। यह काम कई वर्षोका है। मुझे व एक दोको और कई वर्षो तक ठहरना हो तब ही इनकी नकल होसक्ती है क्योंकि इनमें क्रमसे ६०००० और ७२००० **श्लोक** हैं।

धवलजयधवलकी प्रति- लिपिका विचार।

सेठ हीराचद मगलोर बदरसे जब बम्बई आए तब एक दिन ठहरे थे और सेठ माणिकचंदसे मिलकर सब हाल कहा। दोनोंने परस्पर बात की कि किसी उपायसे इन धवलादि ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि हो और बालबोधमें भी होकर हम सबको उनका लाभ मिले तो एक बहुत आवश्यक काम हो जावे। हीराचंदजी बहुत गभीर थे। सेठजीसे कहा कि हम कोई न कोई उपाय करेंगे, आप चिंता न करें।

सेठ हीराचंद शोलापुर लौटकर जैन जातिकी सेवामें विशेष दत्तचित्त हुए। उन दिनों हूमडोंमें कन्या विक्रय बालविवाह व कन्या बडी वर छोटेकी लग्न व वृद्धविवाह इन **तीन कुरीतियोंका बहुत रिवाज था।** शोलापुर जिलेमें

कुरीति निवारण चर्चा।

आकलूज निवासी वीसा हूमड सेठ गंगराम नत्थूराम प्रसिद्ध **नाथारंगजीवाले** भी बहुत परोपकारी व जातिकी कुरीतियों-को देखकर उनके लिये दुःखित थे व इनके मिटानेके लिये बहुत प्रयत्न शील थे। शोलापुरमे सेठ हीराचदको उद्योगशील जानकर गगारामजीने चैत्र सुदी २ बुधवार शाके १८०७ को एक पत्र लिखा कि ऊपरकी तीन कुरीतियोंके मिटानेका यत्न करै। उनके कुछ शब्द यहाँ दिये जाते है।

" येणें प्रमाणें तीन रीति चालू आहेत त्या आपले धर्म विरुद्ध आहेत व त्या पासून आपलें लोकात फार नीचत्त्व आलें आहे व पुढे काही दीवसानीं याचे परिणाम फार वाईट होणार आहेत या साठीं कांहीं या वहिवाटी सुधारण्या विषयीं प्रयत्न करण्याचें माझे मनात फार दिवसा पासून पालन घोळत आहे व मी गावो-गावच्या लोकाचे मत गरीब व श्रीमत याचे घेत असतों तरी या कामीं कोणाचें विरुद्ध मत फारसें नाहीं. मात्र खन्या अत करणानें झटणारा मनुष्य असला म्हणजे त्याचें प्रयत्नाने या वाईट चाली हळूहळू निघून जातील या विषयीं तुमचा अभिप्राय काय आहे ता कळवाल तर बरे होईल "

भाव यह हैं—यह तीन रीति धर्म विरुद्ध है। इनसे लोग नीच होते जाते है। कुछ दिनोंमे और भी खराब दशा होजाय

गी। इसके सुधारमें प्रयत्न करनेकी मेरे मनमे बहुत दिनोंसे है। मैंने गाव गावमें जाके गरीब व श्रीमतोंके मत लिये तो कोई मुझसे विरुद्ध मत नही धरते, मात्र अत करणसे उद्योग करनेवाला मनुष्य चाहिये तो यो कुरितिया धीरे २ निकल जायगी। आपका क्या" अभिप्राय है सो लिखे।

इस पत्रको देखकर सेठ हीराचदजीने शोलापुर जिलेके ग्रामोंके भाईयोंके अभिप्राय मगानेको 'जैनबोधक'का उदय। पत्र भेजने प्रारभ किये। कुछ दिनोंबाद **'जैन बोधक'** नामक एक मासिक पत्रकी पहली जिल्द छपवाकर सेप्टेम्बर सन् १८८५ का अक प्रसिद्ध किया और खास २ जैनियोंको जिनका आपको परिचय था भेजा। दिगम्बर जैनियोंमें इस समय तक केवल १ वर्ष पहले सबसे प्रथम एक ही मासिक पत्र और निकला था जिसको ज्योतिपरत्न **पंडित जियालाल जैन चौधरी** ने सन् १८८४ मे निकाला था इसका नाम **"जैन प्रकाश हिंदुस्तान"** रक्खा था। यह हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओंमें निकला था परतु अधिक दिन चल नहीं सका था। जैन बोधकने समाजके जाग्रत करनेमें बहुत उपकार किया है। इसको १८९८ तक स्वय हीराचदने फिर प० कल्लापा भरमाप्पा निटवेने सन् १९११ तक चलाया। फिर पाच वर्ष बद रहा और अब इस वर्ष यह फि शोलापुरसे जीवराज गौतमचद दोशी द्वारा सपादित होकर निकल लगा है। इस पत्रके पहले अकमें सम्पादकने पत्र निकलनेके मुख्य **उद्देश्य** प्रगट किये है उनका सार इस भाति है —

(१) अजैनोंको बताना कि जैन मत नास्तिक नहीं है।

(२) धार्मिक विद्याकी वृद्धि कराना।

(३) जैन विद्वानोंके कितने विषयोंमें भिन्न मतोंको मिलाकर एक मत करना।

(४) शकाओंको प्रगट कर विद्वानोंका समाधान प्रकाशित करना।

(५) यात्रा सम्बन्धी हाल प्रगट करना।

(६) तीर्थक्षेत्रों आदिका हिसाब मगाकर प्रगट करना।

(७) देश भिन्न होनेसे जो रीति भिन्न पड गई है उनको शास्त्रके अनुसार कराके परस्पर सबध दृढ कराना।

(८) विवाहादि कार्य शास्त्राधारसे चलवानेका प्रयत्न करना।

(९) विद्या व नीति मार्गकी वृद्धिकी प्रेरणा करना।

इसका पहला अक सेठ माणिकचदजीके पास भी भेजा गया था पर उसको किसी औरने लेलिया था—सेठजीके देखनेमें नहीं आया। एक दिन मंदिरजीमे सेठजीको किसीने एक छापी हुई पुस्तक देदी, उसको देखकर आपको बहुत ही हर्ष हुआ कि जैनियोंमें भी पत्र निकलना शुरू हुआ। आप यकायक सब बात गए। **सम्पादक** अपने मित्र **सेठ हीराचंदजी**को समझकर इनको इस बातसे बहुत खेद हुआ कि सेठ हीराचद नेमचंदने मुझे सीधे पत्र क्यों नहीं भेजा ? अभी तक सेठ हीराचंदके साथ सेठ माणिकचदका दिल खोलकर पत्र व्यवहार व मेल नहीं हुआ था। अतएव बहुत सन्मानके साथ सेठ माणिकचंदने अपनी दूकानके नाममे **एक पत्र** लिखा। पाठकोंको उचित है कि इस पत्रको खूब ध्यानसे पढे। इससे उनको

पता लग जायगा कि ३३ वर्षकी अवस्थामें सेठ माणिकचन्दजीके धर्म व जातिकी उन्नतिके सम्बन्धमें कैसे गंभीर व उदार विचार थे।

सेठ माणिकचन्दजीके पत्रकी नकल।

" स्वस्ति श्री सोलापुर महाशुभसुथाने पूज्याराध्य दोशी हिराचद नेमचद तथा शा० मोतीचद खेमचद तथा शेठसरवे जोग मुनई बदरथी लि० शा० हीराचद गुमानजी तथा चिरजीव भाई पानाचद तथा माणकचद तथा नवलचद शेठसरवेना घणू करीने धर्मस्नेह वाचजो जत अने सर्वे राजाखुशी छे आपनी राजी खुशीना कागल लग्यो बीजू हमो एहवु साभल्यु छे के आपने आपना जैन धरमने विषे तथा आपनी हुवड़नी नात विशे घणी मेहनत लेवा माडी छे ते साभली हमो घणा खुशी थया छइये वली तमोए मासिक चोपानियू काढयू छे ते पण घणू सारू उत्तम पगलू छे, वास्ते मेहरबानी करीने ए मासिक चोपायू हमोने मोकली आपज्यो, अने तेनो जे ल्वाजम होय ते अगाउथी हमारा पासेथी मगावी लेजो अने जे दिनथी पेहलो अक सुरू होय ते दिनथी मोकलज्यो वली आप सर्व पुन्यशाळी छो अने सरवे वाते सपूर्ण छो वास्ते करीने आपणे एक फड एहवु काढवू जे ते फडमाथी खर्च करीने बे आदमी सारा ज्ञानी अने गुणवान परीक्षा करीने राखवा तेमने सरवे मुलकमां मोकलवा अने ते गामोमा उपदेस करे अने नातनी वातोमा सुधारो करे अने ते सर्व गामोमाथी जे कोई ए फडमा नाणु आपवा धारे तेना पासेथी उघरावी एक मोहोटू फंड थवे तो खर्च वधारीने सवे देशावरमा एहवां उपदेश करतां माणसो राखी तहानां रिपोट दर महिने मगाववा अने तहा शू शूं बिगाडा छे ते सुधारवा अने धरममा केटलोक मिथ्यातनो

(१) अजैनोंको बताना कि जैन मत नास्तिक नहीं है।

(२) धार्मिक विद्याकी वृद्धि कराना।

(३) जैन विद्वानोंके कितने विषयोंमें भिन्न मतोंको मिलाकर एक मत करना।

(४) शंकाओंको प्रगट कर विद्वानोंका समाधान प्रकाशित करना।

(५) यात्रा सम्बन्धी हाल प्रगट करना।

(६) तीर्थक्षेत्रों आदिका हिसाब मगाकर प्रगट करना।

(७) देश भिन्न होनेसे जो रीति भिन्न पड़ गई है उनको शास्त्रके अनुसार कराके परस्पर संबध दृढ कराना।

(८) विवाहादि कार्य शास्त्रानुसार चलवानेका प्रयत्न करना।

(९) विद्या व नीति मार्गकी वृद्धिकी प्रेरणा करना।

इसका पहला अंक सेठ माणिकचंदजीके पास भी भेजा गया था पर उसको किसी औरने लेलिया था—सेठजीके देखनेमें नहीं आया। एक दिन मंदिरजीमें सेठजीको किसीने एक छापी हुई पुस्तक देदी, उसको देखकर आपको बहुत ही हर्ष हुआ कि जैनियोंमें भी पत्र निकलना शुरू हुआ। आप यकायक सब बाच गए। **सम्पादक** अपने मित्र **सेठ हीराचंदजी**को समझकर इनको इस बातसे बहुत **खेद** हुआ कि सेठ हीराचंद नेमचंदने मुझे सीधे पत्र क्यों नही भेजा ? अभी तक सेठ हीराचंदके साथ सेठ माणिकचंदका दिल खोलकर पत्र व्यवहार व मेल नहीं हुआ था। अतएव बहुत सन्मानके साथ सेठ माणिकचंदने अपनी दूकानके नामसे **एक पत्र** लिखा। पाठकोंको उचित है कि इस पत्रको खूब ध्यानसे पढ़े। इससे उनको

पता लग जायगा कि ३३ वर्षकी अवस्थामें सेठ माणिकचदजीके **धर्म व जातिकी उन्नतिके सम्बन्धमें कैसे गंभीर व उदार विचार थे।**

सेठ माणिकचन्दजीके पत्रकी नकल।

" स्वस्ति श्री सोलापुर महाशुभसुथाने पूज्याराध्य दोशी हिराचद नेमचद तथा शा० मोतीचद खेमचद तथा शेठसरवे जोग मुंबई बदरथी लि० शा० हीराचद गुमानजी तथा चिरजीव भाई पानाचद तथा माणेकचद तथा नवलचद शेठसरवेना घणू करीने धर्मस्नेह वाचजो जत अत्रे सर्वे राजाखुशी छे आपनी राजी खुशीना कागल लखज्यो बीजू हमो एहवु सामल्यु छे के आपने आपना जैन धरमने विशे तथा आपनी हुबड़नी नात विशे घणी मेहनत लेवा माटी छे ते सामली हमो घणा खुशी थया छइये वली तमोए मासिक चोपानियू काढयूं छे ते पण घणू सारू उत्तम पगलूं छे, वास्ते मेहरबानी करीने ए मासिक चोपायू हमोने मोकली आपज्यो, अने तेनो जे लवाजम होय ते अगाउथी हमारा पासेथी मगावी लेजो अने जे दिनथी पेहलो अक सुरू होय ते दिनथी मोकलज्यो वली आप सर्वे पुन्यशाली छो अने सरवे वाते सपूर्ण छो वास्ते करीने आपणे एक फड एहवु काढवू जे ते फडमाथी खर्च करीने वे आदमी सारा अने गुणवान परीक्षा करीने राखवा तेमने सरवे मोकलवा अने ते गामोमा उपदेस करे अने नातनी सुधारो करे अने ते सर्वे गामोमाथी जे कोई ए फंडमा आपवा धारे तेना पासेथी उघरावी एक मोहोटू फड व तो खर्च वधारीने सरे देशावरमा एहवा उपदेश करतां राखी तेहना रिपोट दर महिने मंगाववा अने तहां शु बिगाड़ा छे ते सुधारवा अने धरममा केटलोक

भाग पेशी गयो छे ते सुधारवो. तथा नातमां केटलाक वांधा तथा तड़ पड़ेला छे ते भेगा करवा तथा दापानो रिवाज काढी नाखवो अने बाललग्न थवा नई देवूं जेमके पाच वरसनी कन्या अने पाच वरसनो वर येहवा रीतना लग्नो नहाणपणमा वेवाह करी मुके छे ते पछी आगल जता घणा बिगाड़ा थाय छे वली वृद्ध उमरनाने पइसाना लोभथी कन्या आपे छे ने ते विचारी कन्याने बाल रंडापो आवे छे अने पछे आपना धर्म विरुद्ध चाले छे वास्ते खरो सुधारो ए करवानो छे. वली गुजरातमां रडवा कूटवानो पण घणो बिगाड़ो छे. ते विशे पण सुधारो करवो. वली जे गाममा आपणा जैन धरमी भाईनी वस्ती वधारे होय तहा जैन पाठशाला कढाववी अने तेनो लवाजम सरवेना माथे नाखवो एहवा प्रकारना सुधारा करवा माटे एक मंडली नेमवी अने तेनू फड चालू करवूं एहवा कामोना आरंभ तमोएज करवा मांडयो छे ते हमो घणा खुशी छईये अने अमारा लायक ए काममा काई काम बतावशो तो बनशे तेटली मेहनत करीशूं येज कामकाज लखज्यो जोइतू करतू मंगावज्यो हमारू ठेकाणु मुबइमा ममादेवी आगल जवेरी माणेकचद पानाचंदने पोचे ए प्रमाणे सरनामू करज्यो संवत् १९४१ जेष्ठ बीजा वद ९ सोमे

लि० माणेकचंदना जुहार वाचज्यो.

हमारे हिन्दीके पाठकगण ऊपरके पत्रका भावार्थ समझ गए होंगे तथापि जो जरूरी बातें हैं उनका भाव नीचे दिया जाता है:—

" आपने मासिक पुस्तक निकाली है यह बहुत ही उत्तम प्रयत्न शुरु किया है। आप एक फंड ऐसा निकालें

कि जिससे दो बहुत अच्छे ज्ञानी गुणवान मनुष्य परीक्षा करके रक्खे जाय और उनको सर्व मुलकमे भेजा जावे और वे ग्रामोंमें उपदेश करैं और जातिकी बातोंमें सुधार करै और इस फडमे यदि और लोग पैसा दे तो फडको बढाकर उसमेंसे सर्व देशावरोंमें उपदेश करनेके लिये मनुष्य रक्खे जाय और उनके कार्यकी मासिक रिपोर्ट मगाई जावे । वहाँ जो २ बिगाड हो उसे सुधराया जावे तथा धर्मंमे मिथ्यात्वका भाग बहुत घुस गया है उसको दूर करना चाहिये । ज्ञातियोंमें **तड़** पड गए हैं उनको मिलाना चाहिये । **कन्या विक्रय**का रिवाज दूर करना चाहिये और **बाललग्न** नहीं होने देना चाहिये । तथा गुजरातमे **रोने पीटनेके रिवाज**में सुधारा करना चाहिये । बडे २ ग्रामोंमें **जैन पाठशालाएं** स्थापित करानी चाहिये । इन कामोंके लिये एक सभा कायम करै । उसका फड चालू करै इन कामोंका आरभ आपने जो करना शुरू किया है इससे हमे बहुत ही खुशी है तथा हमारे योग्य कोई सेवा आप बतावेंगे तो हम यथाशक्ति मिहनत करेंगे"

अपने अत करणसे जाति व धर्मकी सेवामें अपनी शक्तिको योग देनेकी स्वीकारता बतानेवाली यह चिट्ठी थी इसीलिये सम्पादक **जैन बोधक**ने अपने अक २ अश्विन शाका १८०७ व अक्टोवर १८८५ सफा १७–१८ में प्रगट कर दी थी ।

सेठ हीराचदका जात्युन्नतिका प्रयत्न ।

सेठ माणिकचदजीके पत्रको पाकर हीराचदजी जाति सुधारके लिये और भी उत्साहसे काम करने लगे । तथा विद्वान उपदेशक नहीं मिल सके इसीलिये उक्त सेठजीके उपायको अभी काममें लेनेके पहले दिलमें ही रखते हुए परन्तु

स्वामी है, सवत १९८६ है। इस पर्वतसे दि० जैन शास्त्रानुसार गत चतुर्थ कालमें श्री युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन ऐसे तीन पाडव और ८ कोड मुनि मोक्ष पधारे है। सेठजी संघ सहित पहुचे तो वहाँ ठहरनेकी बहुत तकलीफ मिली क्योंकि पुरानी धर्मशालाको राज्यने रोक रक्खा था वहाँ कोई प्रबन्ध ठीक नहीं पाया जिससे चित्तमें बहुत उदासी हुई। उस समय वहाँ कोई मुनीम भी नही था, केवल पुजारी व नौकर थे, सो भी बहुत ही अव्यवस्थित। सेठजीने श्वेताम्बर समाजके वडे २ मदिर व रमणीक धर्मशालाए देखकर और अपनी स्थितिका मिलानकर बहुत ही खेद माना और दिगम्बरियोंके आलस्यकी अतिशय निन्दा की।

यहाँ पहले **भवानीप्रसाद** नामका एक दिगम्बरी चालाक मुनीम था सो सवत १९४१ तक काम करता रहा था। उस समय राजा पालीताना और श्वेताम्बरियोंमें बहुत झगडा चलता था। राजा और भवानीप्रसादका मेल था। इस अवसरको देखकर यह चाहता था कि शहरमें एक बडा मंदिर बनवानेको राजासे जगह लेलू। सो उद्योग करके राजासे इसने वह जगह जहाँपर अब नया मदिर है लेली। राजाने बिना किसी लिखा पढीके देदी। यहाँ कुछ मकान बने हुए थे। यह राजाको मुकदमेमें मदद करता था। भावनगरके दिगम्बर जैन पचोंके हाथमे यहाँका प्रबन्ध था। वहाँ दिगम्बरी व श्वेताम्बरीमे मेल था। श्वेताम्बरियोंने मुनीम भवानीप्रसादकी ऐसी शिकायतें की जिससे भावनगरके लोग भवानीप्रसादसे नाराज़ हो गए। भवानीप्रसादने जमीन लेकर भावनगरवालोंसे रुपया मागा कि मदिरका काम शुरु हो परन्तु उन्होंने मूनीमको रुपया नहीं भेजा तब इसने



सेठजी करीब ४० वर्षकी अवस्थामें

.V. P. Surat

(देखो पृष्ठ २४०

अनाजके व्यापारसे छुडाकर किसी अच्छे काममें लगा दो। सेठजीको अपनी बातका बहुत खयाल रहता था। आपने तुर्त कहा कि आप लोग सजोत पत्र देकर धर्मचंदजीको बुला लेवें, वह बहुत धर्मात्मा और सच्चा आदमी है। सेठजी तो सबको लेकर श्री गिरनार आदिकी यात्रा करते हुए केशरियाजी गए। वहॉ भावसे यात्रा करके खूब दान पुण्य करते हुए बम्बई लौट आए। उधर भावनगरके पचोंने तुर्त धर्मचंदको पत्र लिखा। धर्मचंद पत्र पाते ही गद्गद् हो गया। ग्रामकी छोटीसी दूकानमे काम करते हुए दु खी रहता था। इसकी स्त्री भी माल्मता बेचनेमे चतुर थी। प्राय गुजरातकी स्त्रियॉ छोटे२ दूकानदारोंको व्यापारमें मदद दिया करती है। **धर्मचंद**ने दूकान स्त्रीको सौंपी और आप तुर्त भावनगर आ गया। वहॉ वालोंने भी इसको जिनेन्द्र भक्त व धर्मात्मा देखकर इसे **मुनीम** नियत कर पालीताने भेजा। यह १ मास रहे पर स्त्रीके विना भोजन बनानेका कष्ट रहता था सो छुट्टी लेकर **घोघा** बन्दरसे जहाज पर सूरत आए। यहॉके दिगम्बर जैन पचोंको पालीतानामें नया मदिर बननेकी आवश्यक्ता व वहॉकी दु र्यवस्था वर्णन की। यहॉसे अक्लेश्वर जा सजोतकी दूकानको उठा माल्मता बेंच स्त्री सहित धर्मचंदजी पालीताना पहुचे और जहॉ प्रतिमा विराजमान थी उसीके एक तरफ यह स्त्री सहित रहने लगे और सर्व काम इन्तजाम कर सेवा पूजामें दत्तचित हो गए। सेठ माणिकचदको वारवार पत्र लिखा कि आप एक दफे यहा आकर व्यवस्था ठीक करावें।

पालीतानाके लिये सेठ नवलचंदका प्रयत्न ।

सेठ माणिकचंदने सं० १९४४में नवलचंद सेठको भेजा। सेठजी सपत्नीक आए और यात्रा करके बहुत आनन्दित हुए। धर्मचंदजी भजन भाव व पूजामें बहुत निपुण थे। नवलचंदजीका मन अपनेमें मोहित कर लिया। यह वहाँ धर्म सेवन करते हुए एक मास ठहरे। इस बीचमें इन्होंने सर्व व्यवस्था ठीक कराई। घोघा बन्दरमे **त्रिभुवन बाबा** नामके एक खटपटी दलाल थे। वह भी इनके साथ रहे। इन्होंने राज्यसे पुरानी धर्मशालाको छुडाया। (२१००)का व्याज जोड़के रु ३२४८) राजाको भावनगरमे जो १८०००) तीर्थके जमा थे उसमेंसे दिये। राज्य नये मंदिरवाली जमीनका रुपया मांगता था और इसी लिये वहाँ भी कुछ काम नहीं करने देता था अतएव सेठ नवलचंदने १०—) गजके भावमे फैसला करके रु० १४०००) उस १८०००) मेंसे देकर जमीनको अपने कब्जेमे किया और मंदिर बनानेका काम शुरू किया जाय इस विचारमें दृढ हुए।

पालीतानामें नये मन्दिरका प्रबन्ध ।

बम्बई आकर भाइयोंसे सब हाल कहा। सेठ माणिकचंदजी नवलचंदकी कारवाई पर बहुत प्रसन्न हुए और भावनगरवालोंको लिखा कि आप पांच आदमी चंदेके लिये बाहर निकलें तथा मंदिरका काम शुरु करा दें। जो रुपया खर्चको चाहिये वह हमारी दूकानसे मंगाते रहें, चंदा आने पर वसूल हो जायगा। अब इस शुभ कार्यमें देर न करें। भावनगर व घोघावालोंने इस बातको स्वीकार किया। सेठ माणिकचंदजीसे १०००) मंगाकर काम शुरु कराया।

और भावनगरके **सेठ नरोत्तम भीखाभाई** व घोघेके **त्रिभुवन बावा** आदि ९ महाशय पहले शोलापुर आए क्योंकि जैसे अब शोलापुर दान करनेमें प्रसिद्ध है ऐसे पहले भी था। वहाँसे तार करके बम्बईसे सेठ माणिकचंदजीको बुलाया। सेठजीको धर्मकार्य्यो मे बिल्कुल आलस्य न था। आप फौरन गए और वहाँके पंचोंको सर्व हाल समझा करके ३५००) रु० का चदा कराया। उस समय **सेठ हरीभाई देवकरणने** मदिर बनने पर **प्रतिष्ठा** कराना स्वीकार किया। इनके साथमें **सेठ रावजी कस्तूरचंद** हो गए और यह ठहरा कि प्रतिष्ठाके समय जो खर्च पडे उसके दो भाग हरीभाई देवकरण और १ भाग रावजी कस्तूरचंद खर्च करें तथा उस समय तीर्थके भडारमें ११०००) दोनों देवें। सेठ माणिकचंद-जी इस बातको पक्की कराके अपनेको बहुत ही पुण्यवान मानते हुए। आप बम्बई लौट आए और उन लोगोको और स्थानोमे चदा करने भेजा। मुनीम धर्मचंदजी धीरे २ सर्व व्यवस्था सुधारने लगे और बडे ही भावसे नए मदिरजीको तय्यार कराने लगे।

तीर्थके हिसाबका मुद्रण।

सेठ माणिकचन्दजीकी खास प्ररणासे मुनीम धर्मचन्दजी प्रति वर्ष आमद खर्चका हिसाब बनाकर भावनगर और बम्बई भेजने लगे। जैनबोधक अंक ३०–३१ मास फेब्रुआरी–मार्च सन् १८८८ में स० १९४३ और १९४४ का हिसाब [illegible] है—

हिसाब सं० १९४४ कार्तिक सुदी १ से फाल्गुण वदी ३० तक।

			खर्च
१५।=)।	शिलक	१३२॥।)।	इमारत खाते
५८२=)॥।	भंडार उत्पन	१०॥≡)।	शुभ खाते
३०=)	शुभ खाते	।)	जीवदया
१४॥।-)	जीवदया खाते	८१)	भावनगर
॥-)	फुटकल	२२।)॥	फुटकल
-)॥	केशर वास्ते	३०)	गोठी जवेर
२०)॥	भावनगरमे	१२)	रजपूत उका
२॥)	गोठी जवेर खाते	३)	रजपूत नत्रु
		॥।-)	चादवा बांधनेको लोहेके सिकचे कराये
६६५॥≡)		२९३)॥।	
		३७२॥=)।	शिलक
		६६५॥≡)	

बालकोंकी शिक्षा।

श्री सेत्रुजयकी यात्रासे लौटकर सेठजीने प्रेमचन्द व अपनी दोनों पुत्रियोंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। फूलकुमरीके साथ मगनमतीजीको भी गुजराती शालामे भेजने लगे। फूलकुमरीकी अपेक्षा इसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी, पढनेमें इसका मन भी अच्छा लगता था। शालासे सीख कर आवे उसे घर पर देखे। घर पर जो शिक्षक आता था वह भी बहुत भावसे तीनोंको शिक्षा देता था।

और भावनगरके **सेठ नरोत्तम भीखाभाई** व घोघेके **त्रिभुवन चावा** आदि ५ महाशय पहले शोलापुर आए क्योंकि जैसे अब शोलापुर दान करनेमें प्रसिद्ध है ऐसे पहले भी था। वहाँसे तार करके बम्बईसे सेठ माणिकचंदजीको बुलाया। सेठजीको धर्मकार्य्यो-में बिल्कुल आलस्य न था। आप फौरन गए और वहाँके पचोंको सर्व हाल समझा करके ३५००) रु० का चदा कराया। उस समय **सेठ हरीभाई देवकरणने** मदिर बनने पर **प्रतिष्ठा** कराना स्वीकार किया। इनके साथमे **सेठ रावजी कस्तूरचंद** हो गए और यह ठहरा कि प्रतिष्ठाके समय जो खर्च पडे उसके दो भाग हरीभाई देवकरण और १ भाग रावजी कस्तूरचंद खर्च करें तथा उस समय तीर्थके भडारमें ११०००) दोनों देवें। सेठ माणिकचद-जी इस बातको पक्की कराके अपनेको बहुत ही पुण्यवान मानते हुए। आप बम्बई लौट आए और उन लोगोको और स्थानोमे चदा करने भेजा। मुनीम धर्मचदजी वीर २ सर्व व्यवस्था सुधारने लगे और बडे ही भावसे नए मदिरजीको तय्यार कराने लगे।

तीर्थके हिसाबका मुद्रण।

सेठ माणिकचन्दजीकी खास प्रेरणासे मुनीम धर्मचन्दजी प्रति वर्ष आमद खर्चका हिसाब बनाकर भावनगर और बम्बई भेजने लगे। जैनबोधक अक ३०–३१ मास फेब्रुआरी–मार्च सन् १८८८ में स० १९४३ और १९४४ का हिसाब मुद्रित है—

हिसाब सं० १९४४ कार्तिक सुदी १ से फाल्गुण वदी ३० तक।

			खर्च
१५८=)।	शिलक	१३२॥)।	इमारत खाते
५८२=)॥।	भंडार उत्पन्न	१०॥≡)।	शुभ खाते
३०=)	शुभ खाते	।)	जीवदया
१८॥-)	जीवदया खाते	८१)	भावनगर
॥-)	फुटकल	२२।)॥	फुटकल
-)॥	केशर वास्ते	३०)	गोठी जवेर
२०)॥	भावनगरमें	१२)	रजपूत उत्रा
२॥)	गोठी जवेर खाते	५)	रजपूत नत्र
		॥।-)	चादरा धारनेको लोहेके सिकचे कराये
	६२५॥≡)		२९२)॥।
		३५२॥=)।	शिलक
			६६५॥≡)

श्री सेत्रुंजयकी यात्रासे लौटकर सेठजीने प्रेमचंद व अपनी दोनों पुत्रियोंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। फुलकुमरीके साथ मगनमतीजीको भी गुजराती शालामें भेजने लगे। फुलकुमरीकी अपेक्षा इसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी, पढनेमें इसका मन भी अच्छा लगता था। शालासे सीख कर आवे उसे घर पर देखे। घर पर जो शिक्षक आता था वह भी बहुत भावसे तीनोंको शिक्षा देता था।

बालकोकी शिक्षा।

सेठ माणिकचद बहुत मिलनसार थे। समाचार पत्र देखते रहते थे। सं० १९४३ व सन् १८८७के फेब्रुआरी मासकी १६ तारीखको महारानी क्वीन विक्टोरियाकी जुबिली भारतवर्षमें बडे धूमधामसे मनाई गई। उस दिन कोई भी मुसल्मानादि गौवध न करे ऐसी अर्जियां बम्बईके गवर्नरसाहबके पास भेजी गई। जैनियोंकी तरफसे अर्जी भिजवानेमे सेठ माणिकचदने बहुत प्रयत्न किया। इनका फल यह हुआ कि उस दिन किसीने भी गौवध न किया। मुसलमानोंने इस बातको अच्छी तरह मान लिया ऐसा जानकर ता० २२ फेब्रुआरीको नामदार गर्वनरने प्रशसाजनक यह प्रस्ताव प्रसिद्ध किया कि हिन्दू और पारसियोंकी इच्छानुसार मुसल्मान लोगोंने श्रीमती महारानी क्वीन विक्टोरियाके सन्मानार्थ जुबिलीक दिन जो गोवध न किया यह बहुत आनंदकी बात है। बम्बईके सर्व लोग परस्पर एकता रखते हैं यह तारीफकी बात है।

जुबिलीपर बम्बईमें गोवध बन्द।

बम्बईमें **बहिरामजी** डीनसाजी पाडे नामके गृहस्थ थे जो स्वत. मासाहारके त्यागी थे तथा अन्य पारसियोंसे मासाहार छुडाते थे। सेठ माणिकचदकी इनसे मुलाकात थी। इस गृहस्थने अगस्त १८८९मे एक मासाहाररहित भोजन दिया जिसमें २०० पारसी शरीक हुए। इनमें बहुतसे मासाहारके त्यागी भी कुछ प्रयत्न करनेवाले थे। भोजनके पीछे सभा भी हुई थी उसमें सेठ माणिकचदजी भी गए थे। बहिरामजीने अपने भाषणमे

पारसियोंमें मासाहारकी बन्दी।

कहा कि धान्य, वनस्पति और फलोसे कैसे २ उत्तम भोज्य बनते हैं इसीके दिखानेके लिये यह भोज्य दिया गया है। ऐसे भोजन-से क्षुधा भी तृप्त होती है व आवश्यक शक्ति भी पैदा होती है। मनुष्य अपने खानेके लिये गरीब पशुओंको मारे यह नेचरके नियमके विरुद्ध है। घोडा ऐसा शक्तिशाली प्राणी वनस्पति खाकर रहता है तब मनुष्योंको इसकी क्या जरूरत है? कलकत्तेमे जैसी मासाहार वर्जक मडली है वैसी यहाँ भी होना चाहिये तथा कहा कि थोडे दिन बाद पारसी स्त्रियोंके लिये भी ऐसा भोजन मे दूँगा। तथा सभामे रुस्तमजी होरमसजी मास्टरको पेश किया जो ३० वर्षसे मास नही खाते और सब तरह तन्दुरस्त थे। अतमे मासाहार न करनेसे क्या २ फायदे होते है ऐसी इग्रेजीकी पुस्तकें बाटी गई। सेठजी भी इस पुस्तकको लाए। सेठजी अपने पास जहॉ कहीं सफरमे जाते १०–१९ ऐसी पुस्तकें रखते थे और रेलमें समझदार लोगोको जिन पर शका होती थी कि यह मास खाते है बाटते रहते थे और जबानी भी बात करके उनसे इससे घृणा पैदा कराते थे। वास्तवमें भारतसे मासाहार मिटानेका उपाय शाकाहारका जीमन मासाहारियोको खिलाना व पुस्तक बाटना है इसीसे विलायतमें बडी सफलता हुई है।

कांग्रेस प्रारभ।

इसी वर्ष सन् १८८७के प्रारभमें कलकत्तेमें प्रथम ही कांग्रेस अर्थात् भारतकी राष्ट्रीय सभाका अधिवेशन प्रारभ हुआ जिसमें बाहरसे ३५० प्रतिनिधि पधारे। राजसम्बन्धी क्या २ सुधार करने इसपर विवेचन होकर प्रस्ताव पास हुए।

जुबिलीबागका निवास और ताराचंदका जन्म ।

सेठ माणिकचंदका कुटुम्ब पहले जब सूरतसे बम्बई आया तब एक किराएके मकानमें ही जौहरी बाजारमें रहता था । जब स० १९२७ में दूकान खोली तब वह भी एक किराएके मकानमें ही थी पर द्रव्यकी वृद्धि होनेपर स० १९३५में मोती बाजारमे एक बड़ा मकान ४ खनपर खरीद किया, जबमें उसीमें दूकान रक्खी व वहीं रहने भी लगे । तथा आज भी सेठ माणिकचंद पानाचंदका फर्म उसी मकानमे है । शहरकी घनी बस्तीसे कुछ दूर खुले स्थानपर तारदेव मुहल्लेमे एक **जुबिलीबाग** नामका स्थान था । इसको स० १९३८ में करीब २५०००) में खरीद किया था । अब इसमे बहुतसी दूकानें है भीतर कमरे है बीचमे बगला है आगे बगीचा है । इसीमे श्राविकाश्रम है । कई वर्ष बाद उस बागकी इमारतके ठीक होनेपर हवाकी स्वच्छताके कारण सर्व कुटुम्ब इस बागमे रहने लगा । सेठ नवलचंदकी स्त्री प्रसन्नकुमारीके कुछ वर्ष पहले एक पुत्रीका जन्म हुआ था पर उसका जीवन अल्पकाल ही रहा और वह चल बसी ।

स० १९४५ मिती कार्तिक सुदी २ का दिन सेठ नवलचंद और उनकी पत्नीको बडा ही आनन्दवर्धक हुआ क्योंकि उस दिन इनको एक पुत्रका लाभ हुआ । पुत्रके जन्मसे तीनों भाइयोंको बडा ही हर्ष हुआ । मंदिरजीमे पूजा कराई गई, यथोचित दान पुण्य किया गया सम्बन्धियोंको तृप्त किया गया, और पुत्रका नाम ताराचंद रक्खा । पुत्रकी रक्षाका सेठ नवलचंदने पूरा २ यत्न किया,

माता भी बडे यत्नसे रहकर पालन करने लगी। इन सेठोंके यहा स० १९३६से ही गाडी घोडा था। इससे जुबिलीबागसे शहर आनेजानेमें इनको कोई कठिनता नही थी । तथा जुबिलीबागका स्थान ट्राम्वेके पास ही है। टामके द्वारा कुछ ही मिनटमे चाहे जहा जा सके थे।

सेठ माणिकचदजीका ध्यान चारों तरफ रहता था। व्यापारके अवसर भी देखा करते थे। पाठकोंको मालूम ही है कि इनका खास व्यापार विलायतसे शुरू हो गया था। ३ वर्ष तक इनका विलायतका व्यापार ऐसा चला कि उसमे इन्होंने दुगने तिगने भी किये और बहुत रुपया कमाया पर आगे चलकर इतनी उपज नही रही। इसका कारण यह हुआ कि जब इन्होंने व्यापार शुरू किया था तबतो यह और साकरचद लालूभाई दो ही व्यापारी विलायतको मोती भेजने वाले थे। अब कई हो गए तथा विलायत वाले भी ऑफर बहुत खींच कर देने लगे। जो नए भेजने वाले थे वे थोडेसे ही नफेमें माल वेचने लगे। अतएव ३ वर्ष बाद मालमें सवाए व कभी २०) व १९) सैकडेसे अधिक लाभ नही होता था जिसमे फ्रामजी सन्सका कमीशन व खरचा बहुत पड जाता था।

जमीनका व्यापार।

सवत १९४९ में सेठ माणिकचदजीने हीरेके एक प्रसिद्ध मुलाकाती व्यापारी **सेठ अबदुल हुसेन**के साझेमें जमीनको खरीदने और बेचनेका व्यापार शुरु किया। इसमे भी इन्होंने कई लाख रुपया पैदा किया व बहुतसे मकान व जमीन अपने उपयोग व भाडा पैदा करनेके लिये अलग रख ली। दो तीन वर्ष तक इसका व्यापार भी खूब चला।

सेठ पानाचदकी द्वीतीय स्त्रीकी मृत्यु ।

पाठकोंको मालूम है कि सेठ पानाचदकी द्वितीय स्त्री नवीबाई भी कम सयोगसे सदा बीमार और अशक्त रहा करती थी । रुपाबाईजी बड़ी शातिसे सर्व बरदाश्त करती थी । किसीसे कभी लडने झगडनेका अवसर नहीं आने देती थी । श्री सत्रुजयकी यात्रासे लौट कर यह बहुत बीमार हो गई और थोड़े दिन दु ख सह कर शरीरको त्याग गई। इसके द्वारा सेठ पानाचदजीको सन्तति रत्नका लाभ नही हुआ । सेठ पानाचदजीको यद्यपि धनागम व प्रतिष्ठा लाभकी वृद्धिका सम्बन्ध खूब हुआ था पर इनको स्त्री व पुत्रके द्वारा अबतक मनको सन्तोष प्राप्त नहीं हुआ था । वास्तवमे यह ससार ऐसा असार है कि इसमे कोई भी प्राणी इतने भारी पुण्यके उदयको नही रखता है जो सब तरह निराकुल और सुखी रहे । इसीसे योगीजन सासारिक सुखकी आशाको छोडकर आत्मिक आनन्दके लाभको ही श्रेष्ठ लाभ मान उसीके लिये प्रयत्नशील रहते है ।

सेठ माणिकचंदके पगमें अमिट चोट ।

सेठ माणिकचदजी भी अब इसी जुबलीबागके बगलेमे रहते थे । प्रतिदिन रोटी खाके दूकान जाते थे । शामको लौट आते थे । धर्मसाधनार्थ श्री जिन मदिरजी कभी पैदल कभी गाडी पर जाते थे । इस समय फुलकुमरीकी उम्र १३ व मगनमतीकी ११ वर्षकी थी । पहली ४ व दूसरी ३ चौपडी गुजराती तक पढी थी । सेठ माणिकचंदजीको **ट्राइसिकिल** पर चढना सीखनेका शौक हुआ । आप रोज

शामको सीखते थे। एक दिन आप ठोकर खाकर इस तरह गिरे कि टागकी हड्डीमें ऐसी भारी चोट आई कि जिससे जन्म पर्यंत टाग सीधी न हुई। पैरका सावा उत्तर गया। अब उनका दौड कर चलना सदाके लिये बन्द हो गया। बहुतसे पारसी हड्डी ठीक करनेवालोंकी दवा की पर आराम नही हुआ। कुछ दिन तक जाना आना कम करना पडा। सेठजीको चोट लगी देखकर **चतुरबाईको** बहुत दु ख हुआ। यह बाई जरा सुकुमार अगी और अशक्तिके कारण कभी कभी कठोर मन हो जाती थी व चिड जाती थी। इस समयमें इमने नरके कामकाजक कारण दोनो छोकरियोंका पढना शालामें बन्द करा दिया। यद्यपि सेठजीकी टागमे हड्डीकी चोट आनेसे अशक्ति होगई थी तो भी आपका साहस किसी भी काममें कम नही हुआ था। अब आपको चलते वक्त एक लकडी रखनी पडती थी। लकडीके सहारे आप और मनुष्यों-की तरह रास्तेमे चलते थे व विना लकडी भी थोड़े बहुत कदम चल सक्ते थे। इन दिनों प्रक्षाल पूजनमे अतराय आगया था पर दर्शन व स्वाध्याय आप बराबर करते थे। दूकानपर जाकर व्यापार करनेमे कोई त्रुटि नहीं थी। वास्तवमे विचार किया जाय तो इस कर्म ग्रसित प्राणीको कोई न कोई विघ्न आही जाता है जिससे यह अपनी शक्तियोंको इच्छानुसार वर्तन करनेमें लाचारीसे असमर्थ हो जाता है। ऐसी दशामें भी जन्मभर आपने मिहनत की। प्रतिदिन शामको दो दो मील पैदल विहार किया है। कभी आलस्य प्रमादको अपनेमें नहीं आने दिया।

सूरतमें चन्दावाड़ी धर्मशालाका निर्मापण ।

एक दिन सेठ माणिकचंदने भाई पानाचद और नवलचदसे सम्मति की कि सूरतमे यात्रियोंके आरामका व अपनी बिरादरीके जमीन आदि उत्सव करनेका कोई स्थान नही है अतएव श्रीचद्रप्रभुजीके मदिरके पासके स्थानको लेकर एक सुन्दर धर्मशाला बनवा दीजाय तो बहुत अच्छा है। भाइयोंने पसन्द किया और इस कार्यमें २०००८) खर्च करनेका निश्चय किया। सेठ माणिकचद सूरत आए और नकसा वगैरह ठीक करके काम लगा गए। यह धर्मशाला सवत १९४८में बनकर तय्यार होगई। यह बहुत सुन्दर कमरोंसे शोभायमान है, हरतरहका आराम है। जीमनके लिये बडा स्थान है। इसका नाम भाइयोंने श्री चद्रप्रभुके नामसे **चन्दावाडी** रक्खा। तथा इसके खर्चको चलानेके लिये इसके आधीन बम्बईके पहले भोईवाडेमे एक मकान ले लिया और इस वाडी व मकानको सवत १९५६में एक ट्रूष्ट कमेटीके आधीन करके उसका ट्रष्ट कर दिया। इससे परदेशी जैन यात्रियोंको ठहरनेमें बहुत आराम मिलता है। पालीतानामें पाठकोंको मालूम ही है कि धर्मचद मुनीमके द्वारा मदिर निर्माणका काम चल रहा था परतु इससे ही सेठजीको सतोष नही हुआ वे हरमासके कामका व्यौरा मगाते थे और जब कभी आवश्यक्ता होती फौरन चले जाते थे।

स १९४८ तक आप ७ या ८ वार पालीताना गए।

पालीतानामें दौरे ओर मदद। इनके साथ इनकी पुत्री मगनमती सदा जाती थी। सेठजी इसको अपने पुत्रके समान मानते थे। हरतरहकी शिक्षा देते थे। मगनमतीका भी मन सदा पिता ही के साथ भरता था लडकईसे साथ २ भोजन करने व बैठनेकी आदत पड गई थी। पालीतानामे काम देखते देखते कभी दोपहर होजाती थी पर मगनमती पिताके विना भोजन नही करती थी उन्हीके साथ आप भी काम देखा करती, जब सेठजी खाते तब ही जीमती। कई २ घंटे तक कभी २ इसे अपनी भूख दाबनी पडती थी। स १९४८ तक मदिरके बननेमे बहुतसा रुपया बाहरसे आकर लगा तो भी सेठजीको थोरे २ करके १००००) पालीताना क्षेत्रके नाम लिख कर भेजना पडा।

पालीतानामें धर्मशालाके लिये जमीन। पालीतानामे एक वडी धर्मशालाकी आवश्यक्ता है ऐसा सेठजीके मनमें खटका करता था। नदीके तट भैरोंपुरा अब बसता है पहले वहा जगल था जब कभी सेठजी उधरसे जाते मुनीमजीको कहते थे कि देखो यह जमीन आगे चलके बहुत कीमती होजायगी इससे इसे मौका लगे तब जरूर खरीद लेना ज्यों २ ढीलकी गई दाम बढ गए आखिर ।।।) गज पर २७००)में जमीन खरीद ली। रुपया जो कम पडा सो सेठोंकी दुकानसे मगाया गया। यद्यपि मदिरजी स १९४८ मे तय्यार हो चुका था पर इसकी प्रतिष्ठाका महूर्त सवत् १९५१ मे बना था।

कभी २ सेठजीको अपने पुत्र न होनेका ख्याल आजाता था।

सेठजीको पुत्रकी आशा ।

यद्यपि मगनमतीके जन्मके पीछे एक पुत्रका जन्म हुआ पर वह ९ मास पीछे ही मर गया अब फिर चतुरमतीको गर्भ रहा था और सेठजीकी आशाके अनुसार इस वार भी पुत्रका जन्म हुआ। सेठजीने कोइ खास उत्सव नही किया। वह पुत्र धीरे २ बढने लगा।

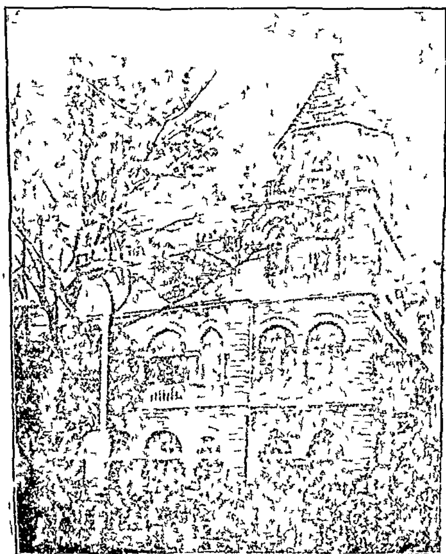
रत्नाकर पैलेसकी स्थापनामें करीब १॥ लाखका खर्च ।

चड़ावाडीको स्थापित करके बम्बइ आने पर परस्पर भाइयोंमें सम्मति हुई कि अपने सर्व कुटुम्बको एक साथ उत्तम वायुके स्थान पर रहने योग्य एक मनोहर बगला ऐसा निर्मापण करना चाहिये जिसमे एक चैत्यालय भी स्थापित किया जाय जिससे धर्म साधनमें किसीको कभी अन्तराय न पडे इसमें एक लाख डेढ लाख रुपयेके अनुमान खर्च करना विचार किया गया। सेठ माणिकचदने शास्त्रोमे स्वर्गीय महलों व चक्रवर्ती राजा आदिके महलोंका वर्णन पढा था। चित्तमे उमग हुई कि **इन्द्र महल** समान महल समुद्र तट पर बहुत ही रमणीक पाषाण और ईटका बनवाया जाय। बम्बईमे **चौपाटी** समुद्रके तट पर एक ऐसा स्थान है जहा पर शहरके सर्व ही भले नर नारी शामके वक्त सैर करने जाया करते हे। सेठजीने ऐसी जमीन इसके लिये तजवीज की जिसके एक ओर बी० बी० सी० आई रेलवे जाती है और दूसरी ओर समुद्र तट परकी बडी सडक है इस जमीनको २४०००) रु०में खरीदा

और इस विस्तार पूर्ण जगहमें ऐसा महल बनानेका नक़शा तय्यार किया कि जिसमें सड़ककी तरफ आगेको बागीचा हो, भीतर गाडी घोडा बांधने व सहीसोंके रहनेकी जगह हो। आगेको नीचे और ऊपर बडे २ हॉल हों जिनमें पांच पांच सौ आदमी बैठ सकें। हॉलके आगे ऊपर व नीचे सुन्दर बरामदा हो। चारों भाइयोंके आरामके लिये अलग २ कमरे हों व और भी पुत्रोंके लिये कमरे हों व कोई बाहरके महमान आवें उनके भी ठहरनेका स्थान हो। हरएक कमरेमें स्नान घर, पानी रखनेकी जगह हो, रोशनी व हवा खूब आ सके तथा इसीसे लगा हुआ एक हॉलमें चैत्यालय हो जिसके आगे भी १५० आदमीके बैठनेकी जगह हो और इस चैत्यालयके ऊपर कोई मकान न हो तीसरे खनमें भी कमरे हों और सबके ऊपर एक ऊंची टावर (Tower) हो जो दूरसे दीखे और जिसपर खडे होकर दूर तक समुद्र और नगरका दृश्य दिखलाई पडे। रसोईका स्थान एक कोन पर रक्खा कि किसी तरह धुआं किसी बैठने व सोनेके कमरेमें न जा सके। मलविसर्जनका स्थान और भी दूर रक्खा गया कि उसकी दुर्गंध कहीं भी नही आ सके। ऐसे महल बनानेका नक्शा बनवाया और सर्व भाइयोंने उसे पसन्द किया। इस समय प्रेमचन्द भी १४ वर्षके हो गए थे स्कूलमें बहुत मन लगाकर इंग्रेजी पढते थे। मेट्रिकुलेशनमें एक ही वर्ष पहुंचनेको भी रहा था। प्रेमचंदको नक्शा पसन्द कराया। रूपाबाई माता भी बड़ी चतुर थी उसे भी दिखलाया। सबकी राय पडने पर सेठ माणिकचंदजीने एक बहुत चतुर मिस्त्रीके सुपुर्द यह काम कर दिया। आप नित्यप्रति घंटा दो घंटा देख भाल रखते थे।

सेठजीका परोपकार व कार्यकुशलता।

इस समय आपकी अवस्था ४० वर्षकी थी। अपनी इस उम्रमें आप अपनेको ज्यों २ पुण्यशाली देखते थे त्यों त्यों अधिक यह धर्मम तल्लीन होते थे। अनेक गुजरात व दक्षिणके जैनियोंको यह आश्रय देकर कुछ मास अपने ही स्थान पर रखकर उनको भोजनादिकी सहायता करते थे फिर आजीविकामें जोड देते थे। आम सभाओंमें जाना समाचारपत्र बाचना, जो नई पुस्तक गुजराती भाषाकी निकले उसको पढना, कुछ समय भी वृथा न खोना, सबेरेसे रात्रि तक नियमित रूपसे हर एक काममे लगे रहना ही सेठ माणिकचन्दके समयका उपयोग था। जिस लक्ष्मीको इन्होंने और इनके भाइयोंने बुद्धिबलसे उपार्जन किया था उसका भलीप्रकार उपयोग करना यही इनकी भावना थी और व्यापारके समय व्यापारमें ऐसी चतुराईसे वर्तते थे कि इनके पास जो ग्राहक आता था वह लौट कर नही जाता था। जो दाम यह कह देते थे विश्वासके साथ दे देता था। बाहर लोगोंमें अधिक मिलने जुलनेसे जिस किसीको कुछ जवाहरातकी जरूरत पडती थी सेठ माणिकचन्दको याद करता था। यह उसकी मरजीके माफिक उसको माल दे देते थे और दाम इतना ठीक लेते थे कि दूसरा कोई भी नही दे सक्ता तथा उसे भी विश्वास आता और यदि वह दूसरोसे बजारमें जाच कराता तो ठीक पाता। अपने मेलके कारण यह बहुत रुपया कमाते थे इसलिये यह बात प्रसिद्ध थी कि जैसे सेठ पानाचन्द माल खरीदनेमे चतुर है वैसे सेठ माणिकचन्द माल बेचनेमें प्रवीण है।



सेठजीका भवन (रत्नाकर पे.
चौपाटी–मुम्बई.

(देखो पृष्ठ २३८) J \ | urat.

सेठ माणिकचंदजी जब इसतरह लक्ष्मीका उपयोग कर रहे थे तब शोलापुरके दानी सेठोंका मन भी दानमे उत्सुक हो रहा था। उनके मनको उपयोगी कार्योकी ओर आकर्षित करनवाले **सेठ हीराचद नेमचद** बडे प्रवीण थे। एक

शोलापुरमें चतुर्विध दानशाला।

दफे आपने उपदेश दिया कि लक्ष्मीका उपयोग चार प्रकारके दानसे करना चाहिये। गरीबोंको, अनाथ बालक व विधवाओको अन्न देना **आहारदान** है, रोगियोंकी आर्ति मिटानेके लिये पवित्र देशी औषधि देना **औषधि दान** है, मनुष्य पशु आदि सकटमे पडते हुए प्राणियोंका भय मेट कर रक्षा करना, पिंजरापोलमे मदद देना सो **अभयदान** है. धार्मिक व लौकिक विद्याकी वृद्धि करनेमें सहायता करना मो **विद्यादान** है। इससे धनपात्रोको कुछ अलग धन एकत्र कर उमके व्याजका उपयोग चारों दानोंमे सदा हुआ करे ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। शोलापुरकी मडलीक ध्यानमे यह बात आगई और ता १२ नवम्बर मन् १८९१ को नीचे प्रमाणे रु ३८११६) का फड करके उसका व्याज ।।) सैकडा उत्पन्न करके चारों दानोंमें खर्च हो ऐसा प्रस्ताव होकर चतुर्विध दानशालाका कार्य्य प्रारभ होगया। फल्टनके एक जैन वैद्य बलवन नेमाजीको वैद्य नियत किया गया। यह कार्य अबतक जारी है और इस फडक निमित्तसे बहुतसे गरीब छात्र शोलापुर पाठशालामे पढते हुए भोजन पाते रहे है। पशुशालाको मदत होती रही है। विद्यादानार्थ पाठशालाको मदत दी गई है। उसका रुपया मुख्य२ सेठोंक यहा जमा है। इसकी प्रबन्धार्थ एक कमेटी है पर उसका ट्रष्ट रजिष्टरी अब

तक नही हुआ है जिसकी बहुत आवश्यकता है ऐसी ध्रौव्य सस्था चारों दानोंके लिये हरएक नगरमें होना चाहिये । दानार्थ लक्ष्मी खर्ची हुई ही स्व और परका उपकार करती है —

नाम चदा देनेवाले दातारोंके ।

७५०१) सेठ हरीभाई देवकरण	६१०१) सेठ हरीचद परमचद
५७०१) ,, वस्ता खुशाल	४२०१) ,, मोतीचद परमचद
२५०१) ,, सखाराम खुशाल	१५०१) ,, रायचद खुशाल
१३०१) ,, रामचद साकला	१२०१) ,, सीखाराम नेमचद
११०१) ,, मोतीचद खेमचद	१००१) ,, नानचद खेमचद
१००१) ,, पदमसी निहालचद	१००१) ,, जोतीचद नेमचद
१००१) ,, गौतम नेमचंद	१००१) ,, पदमसी कस्तूर
१००१) ,, मलुरचद गणेश	१००१) ,, रामचन्द गोवनजी

रु ३८११६)

यह सस्था थोडे ही दिनोंमे वडी उपयोगी हो गई । जैन बोधक अगस्त सन् १८९२ मे कार्तिकसे ज्येष्ठ तक ८ मासके सदावर्त वटनेका हिसाब यह है कि ३७३ जैन व २९८९ अजैनोंको व्यवहारके पदार्थ दिये गए । इन ३३५७ मे ११७२ प्राणी बिलकुल अशक्त थे । तथा औषधालय मे ८०४ रोगीने दवा ली जिनमे ४१९ अच्छे हुए ।



अध्याय आठवाँ।



संयोग और वियोग।

फूलकुमरी और मगनमतीकी सगाई।

सेठ माणिकचंद जब २ सूरत जाते थे इनकी दोनों पुत्रियोंके लिये मागपर माग आती थी और निकट सम्बन्धी बार २ टोंकते थे कि इनका लग्न करना चाहिये अतएव सेठजी जब चंदावाडी धर्मशालाको खोलने स. १९४८मे सूरत गए थे तब फूलकुमरी और मगनमती दोनोंकी सगाई सूरतमें ही पक्की कर ली थी। सूरतमे एक विसा हुमड **त्रिभुवनदास व्रिजलाल** रहते थे जो मध्यमस्थितिके गृहस्थ थे। इनके पुत्रका नाम मगनलाल था यह साधारण पढा हुआ व किसी कुआचरणमे नहीं था तथा अपने पिताके साथ व्यापारमे लगा हुआ था। फूलकुमरीकी सगाई इसीके साथ पक्की हुई। इन दोनों बहनोंमें फूलकुमरी बहुत भोली व सीधी थी परंतु मगनमतीका रूपदर्शनीय था। इनके सम्बन्धको अच्छे २ चाहते थे। सूरतमे एक धनाढ्य व्यापारी तासवाला वेणीलाल केशुरदासकी कोठी प्रख्यात है। इनके दो पुत्र थे नेमचंद और जयचंद दोनों साथ २ रहते थे। किसीको कोई सन्तान न थी। तब नेमचंद ईडरसे खेमचंद नामके लडकेको दत्तक लाए। इसी खेमचंद नेमचंदके साथ मगनमतीकी सगाई पक्की हुई। इस लडकेको साधारण लिखना वाचना आता था। स्वभाव मर्यादाशील, मिलनसार प्रेमालु और धैर्यवान था। स्वरूपमे भी सुन्दर था पर धार्मिक शिक्षा व आचरणकी आदत न डाले जानेसे इसका मन

सांसारिक बातोंमें विशेष था। अपने सांसारिक मित्रोंके साथ पैसा खर्च करनेमें हाथ खुला था। बड़े आदमीका दत्तक पुत्र प्राय ऐसा ही होता है। उसको पैसे खर्चते हुए दर्द नहीं मालूम होता जब इसकी सगाई हुई तब इसकी अवस्था १९ वर्षकी थी।

दोनो पुत्रीयोंकी लग्न।

सं. १९४९में सेठ माणिकचन्दजी सर्व कुटुम्ब सहित सूरत गए और इन दोनों कन्याओंका विवाह लगातार एक साथ ही किया। इन विवाहमें सेठजीने बहुत रुपया खर्च किया तो भी वह १००००)से अधिक न होगा। तासवालेने भी बड़ी धूमधाम की गई। चंदावाडीमें ही सेठ माणिकचंदजीने समारंभ किया। दोनोंकी वरात व विदाका जुलूस बहुत सामानसे निकला। वर और वधूकी सवारी हाथीपर हुई। नगरमें गाजे बाजोंकी भरमार ऐसी हुई कि नगरभर इनके देखनेके लिये उमड आया। सूरतमें बिरादरीके कई जीमन दिये। बहुतसे सम्बन्धी व मित्र बाहरसे बुलाए गये थे उनकी खातिर की गई। नगरके प्रतिष्ठित पुरुषोंको दावत दी गई और नौकर चाकर मुनीम व सम्बन्धियोंको बहुत कीमती पोशाकें दी गई। इस समय फूलकुमरी १९ तथा मगनमतीकी १२ वर्षकी आयु थी।

पुत्रकी आशासे निराशता।

श्रीमती चतुरबाईकी गोदमें जो छोटा पुत्र था सो सूरतमें लग्नके समयपर ही यकायक बीमार होकर १। वर्षकी उम्रमें चल बसा। सेठजीको इस तरह पुत्रकी फिर निराशता हो गई। वास्तवमें संसार इसीका नाम है एक तरफ हर्ष होता है तो दूसरी तरफ शोक हो जाता है। थोडे दिन पीछे चतुरबाईको

फिर गर्भ रहा। तब सेठजीने खास दासिया नियत कीं कि वे गर्भकी सम्हाल व रक्षा करें।

सेठ नवलचंदके द्वितीय पुत्रका जन्म।

सेठ नवलचंदका प्रथम पुत्र ताराचंद इससमय ४ वर्षका था। इसका शरीर स्वास्थ्ययुक्त था। माता बडी ही यत्न रखती थी। पिता भी हरसमय सम्हाल करते थे। प्रसन्नबाईको फिर भी गर्भ रहा। संवत १९४९ आसोज वदी ३० के दिन शुभ मुहूर्तमें जुबिली बागके बगलेमें बाईने द्वितीय पुत्रको जन्म दिया। यह बालक बहुत ही सुन्दर शरीर व सौम्य वदन था। माता देखकर गद्गद् वदन हो गई। सेठोंको भी बडा हर्ष हुआ। विधि सहित सर्व उत्सव किया। दान धर्म खूब किया और पुत्रका नाम रतनचंद रक्खा। पानाचंद और माणिकचंदके कोई पुत्र न था इससे स्वाभाविक है कि इनके व इनकी पत्नियोंके दिलोंमें कोई ईर्षाभाव उत्पन्न हो। परंतु ये भाई ऐसे सरल प्रकृति व धर्मात्मा थे कि इनको अंत करणसे हर्ष हुआ। पानाचंद व्यापारकी धुनमें अधिक रहते थे। माणिकचंद और चतुरबाईका चित्त मगनमती पुत्री के कारण भरा हुआ था। ये इसे पुत्रकी भांति चाहते थे।

श्रीयुत पंडित गोपालदासजी।

आगरा निवासी पंडित गोपालदासजी संवत् १९४९ के आषाढ मासमें बम्बई रहनेके लिये आए। पंडितजीका जन्म संवत् १९२३में बरैया जातिधारी लक्ष्मणदास पिता और लक्ष्मीमती माताके द्वारा हुआ था। पिताका देहांत सं० १९३० में हो गया। माताने बहुत कष्टसे इनको मैट्रिकुलेशन तक

इग्रेजी पढायी। गणितमें यह बहुत चतुर थे। २० वर्पकी उम्रमें हाईस्कूल छोडकर अनाजकी दूकान पर लाभ न देखकर अजमेरमें जा स० १९४४मे रेलवे आडिट आफिसमे नौकरी की। पत्नीका सम्बन्ध १४ वर्पकी उम्रमे हुआ था। वहॉ पडित मोहनलालजीके पास दो वर्पमें गोम्मटसारका अभ्यास किया। स० १९४६में दर्शन और स्वाध्याय प्रतिदिन करनेका नियम किया। इस नौकरीसे काम चलता न देख आगरा आकर १ वर्ष व्यापार किया इतनेमें अजमेरके सेठ मूलचंदजीने आपको अजमेर बुलाकर अपनी दूकानपर क्लार्क नियत किया। सेठ माणिकचदकी दक्षिण यात्राका हाल सेठ मूलचदजीके कानोतक पहुंच चुका था तथा जैन बोधक पत्रमे जो सेठ हीराचदजीने अपनी यात्राका हाल छापा था उसको भी पढकर सेठ मूलचदजीको बहुतोंने सुनाया। विचार करते २ आप सवत १९४८मे दक्षिणकी यात्राको तैयार होकर प० गोपालदासजीको साथ ले बम्बई आए। यहासे आप जैनबिद्री मूलविद्रीको गए। मूलबिद्रीमे आपने श्री धवल जयधवलादि ग्रथोको जीर्ण दशामे देखकर उनकी प्रति करानेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको आग्रह पूर्वक कहा था। शास्त्रीने ३००के अनुमान श्लोक लिखे ऐसी सूचना भी सेठ साहबको बादमे की थी। उक्त सेठ साहबको विद्याका कुछ प्रेम था। शोलापुरमे आपने जैन पाठशालाकी परीक्षा ले ५०) का इनाम दिया। आपने प्रसिद्ध जैपुरके विद्वान पडित सदासुखजी की वृद्धावस्थामे अच्छी वैय्यावृत्त्य की थी तथा उनका समाधिमरण भी अजमेरमें ही हुआ ऐसा सुनते है। गोपालदासजी यात्रासे लौटकर कुछ दिन अजमेर ठहरे पर आजीविका यथेष्ट न

देखकर स १९४९ के आषाढ मासमे वम्बई आए। इनको व्याख्यान देने व शास्त्र वाचनेका अच्छा अभ्यास था। वम्बईके जैन मदिरमे भादोंके दिनोमें श्री दशलक्षणजी व सूत्रजीके अर्थ आपने बहुत अच्छी तरहसे वर्णन किये। उस समय सेठ माणिकचदजीने खूब ध्यानसे सुने। माणिकचदजीको विद्यावृद्धि, सर्व मुल्कमें जैन धर्मके प्रचार, कुरीतिके नाशका कितना बडा ख्याल था सो पाठकोंको उसी पत्रसे निश्चय हो गया होगा जो उन्होंने सेठ हीराचदजीको भेजा था व जिसकी नकल इसके पहले अध्यायमे दी गई है पर वम्बईमें कोई सहाई न मिलनेसे माणिकचदजी कुछ उद्योग न कर सके थे। अब २६ वर्षके नौजवान गोपालदासको अपने ऐसे विचारोंके धारी, परोपकारी और तीव्र बुद्धि देखकर इनको बडाही हर्ष हुआ। सेठजीने इनको अपने पास बुलाकर इनसे बहुत प्रेम जताया। रोज इनसे वार्तालाप करने लगे तथा सेठजीकी सहायतासे आप जवाहरातका व्यापार करने लगे और सुखसे बम्बई हीमे रहने लगे।

मुम्बई दि० जैन सभाकी स्थापना।

सेठ माणिकचदकी इच्छानुसार गोपालदासजीने अपने उपदेशोंसे बम्बईके भाइयोंको सभाके अनेक लाभ दिखाए। उस समय लोग सभा होना क्रिश्चान पादरियोंकी नकल करना समझते थे। सर्व भाइयोंकी मरजीसे मिती मागसिर सुदी १४ सवत १९४९ को मुम्बई दि० जैन सभा स्थापित हो गई जिसके मत्रीका कार्य सेठ माणिकचदजी और उपमत्रीका पद पडित गोपालदासजीको दिया गया। यह सभा प्रति सुदी १४ को होती थी जिसमे नाना प्रकारके व्याख्यान होते थे। इस सभाके प्रतापसे

बम्बईवालोंने धर्मरक्षाके अबतक अच्छे२ प्रशनीय कार्य किये हैं। तीर्थोंका सुधार व परीक्षालय द्वारा भारतकी पाठशालाओंकी परीक्षा लेना व सस्कृत विद्याकी उन्नति आदि कार्योंमें बहुत बडा काम किया है। सेठ माणिकचदजी बडे ही नियमित काम करनेवाले थे। प्रति सुदी १४ को नियमसे सभाको बुलाने और व्याख्यान कराते थे।

रत्नाकर पैलेसमें श्री चंद्रप्रभु चैत्यालयकी स्थापना।

स० १९४९ मे चौपाटीका **रत्नाकर पैलेस** भी बनकर तय्यार हो गया, जो भवनवासी देवोंके भवनको हसता था। पैलेसकी ऊची टावर दूरसे दिखलाई पडती था। समुद्रकी मनोहर ठंडी वायु हर वक्त इस महलकी वैय्यावृत्यमें ऐसी लीन थी कि इसे बिल्कुल स्वच्छ रखती थी। महलमें फर्शसे पत्थर जडा हुआ था। भीतों पर चित्रकारी व रग साजीका काम किया गया था। शीशेके कपाट रत्नाकर पैलेसके नामको सुशोभित करते थे। हरएक कमरेमें मनोहर पलग, कुरसी, टेबुल, अलमारी, लम्प, झाड आदि फरनीचर सजाया गया था। बीचके बड़े हालमें बैठकखाना था जिसमें सगमर्मरकी टेबुलें पडी थीं। चारों ओर कई कुरसिया पडी थी तथा टेबुलपर 'बम्बई समाचार' आदि पत्र रहते थे। हॉलके चारों ओर भीतके सहारे आराम कुरसिया मनोहर गद्देदार कुछ बैठने लायक और कुछ लेटने लायक थीं, कई बडे २ दर्पण लगाए गए थे, कई बड़ी २ तसवीरें व कही २ पर बडे सुन्दर खिलौने सजाए गए थे। सारा महल एक दर्शनीय प्रदर्शनी बन गयी थी। चैत्यालय भी बहुत ही

उत्तम काचकी भीतोंका अनेक चित्र सहित बनवाया गया। काचोंमें नारकियोंके दु:खोंके चित्र व कौन २ पापसे कौन २ दु:ख होता है ऐसा नक्शा दिया गया था। वेदी चादीकी सुन्दर रची गई। तीन तरफ भीतोंमें ऐसे काच जड़े गये थे जिससे एक मदिरके अनेक मदिर मालूम होते थे। स्फटिकमणिकी मूलनायक श्री चद्रप्रभुकी प्रतिमा चादीके सिंहासन पर अतिशय वीतरागता व ध्यानको प्रगट करनेवाली पौन हाथ ऊची सुशोभित हुई उनके सिवाय और भी कई छोटे २ स्फटिकके बिम्ब विराजमान किये गये। एक धातुका चौवीसी पट्ट भी विराजमान किया गया। चैत्यालयकी ऐसी मनोहर शोभा थी कि दर्शकको सैकड़ो ध्यानाकार प्रतिबिम्बोंके दर्शन उन काचोंके निमित्तसे होते थे। इस महलकी तैयारी होकर चैत्यालयकी बडी धूमसे व भक्ति व पूजा सहित प्रतिष्ठा की गई। सर्व कुटुम्ब एक साथ एक ही पैलेसमें रहकर धर्म कर्म साधन करने लगा। सेठ माणिकचदजी बडे प्रेमसे नित्य प्रक्षाल व पूजन करने लगे। स्वाध्यायके लिये कपाटोंमें लिखित व मुद्रित ग्रथ भी रक्खे तथा एक कपाट ऐसा भी रक्खा कि जो उस समय तक ग्रथ छपे थे उनकी कई २ प्रतिया भेटमें देने व न्योछावर लेकर देनेको रक्खी गई जिससे स्वाध्यायका प्रचार हो।

सेठ माणिकचदजीका यह कायदा था कि स्वाध्याय करते समय व बडे हॉलमें बैठते हुए जो कोई दर्शनके लिये आते उनसे धर्मकी बात पूछकर स्वाध्यायका उपदेश देते, तथा पुस्तक लेनेको कहते थे। रात्रिको व्यालु करके व समुद्र तटपर घूमनेके बाद तथा चैत्यालयमें दर्शन करके सेठजी सदर जीनेके सामने ही बडी कुरसीपर बैठ

जाते थे। और दर्शन करने आनेवालोंको चाहे धनाढ्य हों चाहे गरीब बडे प्रेमसे कुरसीपर बिठाकर उनका दुःख सुख पूछते थे। उनको धर्मोन्नति व आत्मोन्नतिकी प्रेरणा करते थे।

इस महल और चैत्यालयकी ऐसी प्रख्याति हुई कि बम्बईके लोग इसे एक देखने योग्य वस्तुओंमे गिनने लगे और देशी परदेशी जैनी अजैनी सब बिना रोकटोकके बगलेमे घूमकर देखने लगे। गुजरात व दक्षिणमे परदेका रिवाज नहीं है केवल ड्योढी पर एक जमादार रहता था जो आते जाते लोगोको देख लेता था। रात्रिको बगलेमे रोशनी ऐसी होती थी मानो दिन ही मौजूद है। चैत्यालयमे शामको प्रेमचद मोतीचद बडी भक्तिसे आरती पढते और करते थे। रूपाबाई अपने पुत्रके भक्तिभरे शब्द सुनकर प्रफुल्लित होती थी। बम्बईके जैनी अब चौपाटीकी तरफ शामको प्राय सर्व ही आने लगे और चैत्यालयके दर्शन नित्य प्रति करने लगे। तथा सेठजीसे उपदेश पाकर व वार्तालाप करके परस्पर लाभ लेते देते हुए।

तारामतीका जन्म। चतुरबाईको गर्भ था जिसकी सम्हाल सेठ माणिकचदजीने बहुत की थी। उसके सतानका जन्म उसी बगलेमे हो जहॉ गर्भ रहा है ऐसा भाव करके गुज० कार्तिक मास स० १९५० तक चतुरबाईजीका जाना चौपाटीके बगलेमे नही हुआ था जुबिली बागके बगलेमे ही मिती कार्तिक वदी १ को सेठजीकी पुत्रकी आशाको इसी तरह रखते हुए एक कन्याको जन्म दिया। यह कन्या भी सुन्दरमुख थी। शरीर बडा नर्म था। इसकी रक्षा पूरी २ की गई। सेठजीने साधारण रीतिसे जन्मोत्सव किया तथा इसका नाम **तारामती**

रक्खा । प्रसूतिका समय चले जानेके बाद कन्याको लेकर श्रीमती चतुरबाई चौपाटीके बगलेमें चली गई और स्वर्गपुरीके समान वहा निवास करन लगीं । यद्यपि मगनमतीकी एन हो गई थी पर इसका चित्त पिताजीके पास ही बहुत प्रसन्न रहता था । इस नए बगलेमे वह सूरतसे आकर महीने दो दो महीने ठहर जाती थी और समुद्र व चौपाटीकी बहारसे समागिक आनन्द मनाती थी ।

सेठ पानाचंद्रजीका तृतीय लग्न।

सेठ पानाचदजीकी अवस्था स० १९५०के प्रारभ मे ४९ वर्षकी थी । यद्यपि इनकी आतरिक इच्छा विवाह करनेकी नही थी पर कोई सतानका लाभ न होनेसे कुटुम्बी जन इनको विवाहका बहुत जोर दे रहे थे । इन्होंने भी स्वीकार कर लिया । इनका शरीर अभी भी भले प्रकार दृढ व उद्योग पूर्ण था। परतापगढ राज्य जिला मालवामे हूमड जातिके एक साधारण स्थितिक धारी सेठ शकरलाल नदलालजी थे जिनकी पत्नीका नाम चिमनाबाई था इनके एक कन्या रुक्मीबाई थी जो सीधे मिजाजकी व घरके कामकाज मे चतुर व दृढ शरीर थी, स्वास्थ्य भी अच्छा था । स्वरूप भी ठीक था । इसीके साथ सेठ पानाचदजीका विवाह परतापगढमे हो गया । विवाहमे कोई विशेष धूमधाम नहीं की गई । इसकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके थी। सेठ पानाचद तुर्त कन्या विदा कराके बम्बई लाए और चौपाटी बगलेमे ससारिक सुखमे भ्रमरके समान लिप्त हो गए । इनको यह आशा थी कि पुत्रका लाभ हो क्योंकि पुत्र विना एक गृहस्थी पुरुपकी शोभा नहीं है ।

इधर प्रेमचंद मोतीचंद स्कूलमें मैट्रिकुलेशन तक शिक्षा पाचुके थे। इनकी द्वितीय भाषा संस्कृत थी। अवस्था १६ वर्षकी हो गई थी। रूपाबाईजीने अब ज्यादा स्कूलमें पढ़ाना ठीक न समझा और व्यापारमें झुकाना ही उचित जानकर प्रेमचंदकी आगे पढ़नेकी इच्छा होने पर भी स्कूलसे उठाकर दूकानपर भेजना व मोती पुराना सिखाना शुरू किया। प्रेमचंदका मन बहुत सीधा था तथा अपनी पूज्य माताका परम भक्त था। माताकी आज्ञाका उल्लंघन पाप समझता था। सहर्ष माताकी इच्छानुसार व्यापार सीखने लगा। सेठ माणिकचंदका उसपर बड़ा हेत था क्योंकि प्रेमचंदका मन धार्मिक व परोपकारके कार्योंमें अच्छा लगता था। सभामें जाने आने व व्याख्यान सुनने-का अच्छा शौक था। कभी २ स्थानीय सभामें कुछ कहनेका भी अभ्यास करने लगा। जैन बोधक मराठी पत्र व मराठीमें छपी जैन पुस्तकोंको अच्छी तरह बाचता था। लौकिक पत्रोंको भी देखता था। जैन जातिकी उन्नति हो इस बातपर पूरा लक्ष्य था।

सेठ प्रेमचंदजीको व्यापारकी शिक्षा।

सेठ माणिकचंद पानाचंदका भानजा सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद बराबर इन्हीके साथ रहते व दूकानपर काममें मदद दिया करते थे। चौपाटी बंगलेमें यह भी अपनी पत्नी जड़ावबाईके साथ एक कमरेमें सुखसे रहने लगे। इनको व्यापारमें बहुत ध्यान देते हुए व अपने काममें पूर्ण सहकारी जानकर सेठोंने इनका कुछ भाग अपने फर्ममें नियत कर

सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद व्यापारमें शामिल।

लिया और अपने बराबर इनकी प्रतिष्ठा बाजारमे हो ऐसा अवसर इनको दे दिया। चुन्नीलालजी अपन तीनों मामाकी इच्छानुसार व्यापारमें खूब परिश्रम करने लगे।

जैनियोंमें विलायत जानेकी चर्चा।

सन् १८९२ क अप्रेल मासमे बम्बईक जैन युनियन क्लबमें एक जैनीने "**प्रवाससे फायदे**" इस विषयपर एक निबध इग्रेजीमे पढा था फिर गुजराती भाषामे कई भाषण हुए थे कि मद्यमास पदार्थ त्याग करक यदि जैनी समुद्र यात्रा करें तो कोई हर्जकी बात नही है।

अमेरिका प्रदर्शनीमे जैन विद्वान भेजनेकी चर्चा।

सन् १८९३मे **चिकागोमे** एक बडी भारी प्रदर्शनी अमेरिकावालोंने सगठित की थी तथा भारतक हरएक धर्मवालेको अपनेर धर्मक सिद्धान्तोको कहनके लिये बुलाया था। धर्म सम्बन्धी व्यवस्था करनेक विभागक अधिकारी **जान हेनरी बेरोज** थे। इस समय श्वेताम्बरी साधु आत्मारामजी महाराजका नाम बहुत दूर दूर तक प्रसिद्ध था। उनके पास उक्त अमेरिकनका एक पत्र आया जिसकी नकल यह है —

"पूज्य महाराज।

इस धर्म समाजमें आप खुद जातसे आय सकोगे? आपका दर्शन होनेसे हमकू बहुत आनन्द होगा जिस जैनधर्मकी अटल ध्वजा आप उडाय रहे हो उस धर्मका वर्णन और उपदेशका प्रकाश हरकोई आदमीके दिलपर सुगमतासे पडे ऐसा एक व्याख्यान लिखके यहा भेजनेकी आप कृपा करोगे? जो आप

इतना काम करोगे तो हम बहुत खुश हो जायगे और समाजके हेतुओंमें कितनेएक दरजे फायदा होगा। मेरे दूसरे रिपोर्टकी कितनी एक नकलें मैं आपके तरफ भेज॰ देता हूँ।

आशा है के आपके तरफसे ज्यादा खुलासा जल्दी मिलेगा।

चिकागो -यूनाइटेड स्टेट्स। ता० ३-४-९३

आपका सेवक
जॉन हेनरी बेरोज सभापति
(जैन बोधक जून १८९३)

इस पत्रको पानेके पहले भी पत्र आया था उसके अनुसार आत्मारामजीने बम्बईके जैनियोंको लिखा था कि अपने जैनमतकी तरफसे दो आदमी वहाँ भेजना बहुत जरूरी है। एक संस्कृत और मागधी भाषाके जानकार **पंडित अमीचंदजी** और दूसरे **वीरचंद राघवजी बी. ए**। तब ता० २५ मार्च सन् १८९३ को बम्बई जैन एसोसियेशन आफ इन्डियाने सेठ तलकचंद माणिकचंदके सभापतित्वमे एक सभा की। उसमे सेठ माणिकचंद आदि कई दिगम्बरी भी गए थे। एसोसियेशनने भेजना निश्चय करके खर्चके प्रबन्धके लिये एक कमेटी नियत कर दी जो अहमदाबाद, भावनगर और सूरतके महाजनोंकी सलाहसे सब बदोबस्त करै।

दिगम्बर जैनियोकी सभामें विलायत जानेका विचार।

ता० २ अप्रैलको सेठ हीराचंद नेमचंदजीके (जो सभाके कायमके उपसभापति थे।) सभापतित्वमें दिगम्बर जैनियोंकी सभा हुई। उपमंत्री पंडित गोपाल्दासजीने पेश किया कि दिगम्बरियोंकी तरफसे एक या दो भाइयोंको चिकागो भेजना चाहिये। इस समय सेठ हीराचंदजीने बम्बईमें भी दूकान कर ली थी और अधिकतर यहीं रहते थे तथा अप्रैल १८९३से जैन बो-

धक भी निर्णयसागर प्रेस बम्बईमे छपने लगा था। प० वन्नालाल आदि सभासदोंने आदमी भेजनेकी आवश्यक्ता बताई। सभामे एक मइरदासजी थे। उन्होंने कहा कि ऐसी क्या जरूरत है? यदि नही भेजे तो क्या नहीं चलेगा? तब सेठ हीराचद सभापतिने समझाया कि दिगम्बर मतका अस्तित्व बतानेको व जैनमत नास्तिक नही है किंतु यही साचा आस्तिक है आदमी भेजना ही चाहिये। दूसरी आवश्यक्ता यह है कि इस भारतमे हिंसा और प्राणीबध बहुत होता है तथा यहा जो वाइसराय आदि हाकिम आते है सो लडनकी पार्लियामेन्टके हुकमके अनुसार सब कानून चलाते है। इसमे ७०० सभासद है जिनमें कई मासाहार व मद्यपानके त्यागी हे। सन् १८३२में वहा सिर्फ ७ आदमी मद्यके त्यागी थे सो सन् १८९२ में फक्त यूनाइटेड किगडममें ७० लाख आदमी मद्यके त्यागी हो गए। मासाहारकी सौगन्ध करनेवाले हालमें ३५०० आदमी है। इतना तो जैनियोंके प्रयत्न विना हुआ है। अब जो जैनीलोग वहॉ उपदेशक भेजेंगे तो कितने ही मद्य व मासके त्यागी बन जायगे। जैन धर्मका व्यवहार चारित्र हिंसा मेटना व मद्य मास छोडना छुडाना है सो अपना जैनी उपदेशक पार्लियामेन्टके निष्पक्षपाती व कोमल हृदयी सभासदोंको जीव हिंसासे भारतमे हिंसा बद होनेका कानून होजायगा। यह बात असाध्य नहीं है पर कष्ट साध्य है। तब मगरदासजीने कहा कि **रसोई पानीका आगबोटमे कैसे बनेगा** इसपर सेठ **गुरुमुखरायजी**ने कहा कि **श्रीपाल राजा** धवलसेठके साथ **जहाजमे** बैठकर कई महिने तक समुद्रमें फिरा था सो वहा रसोई पानी सब कुछ उसका

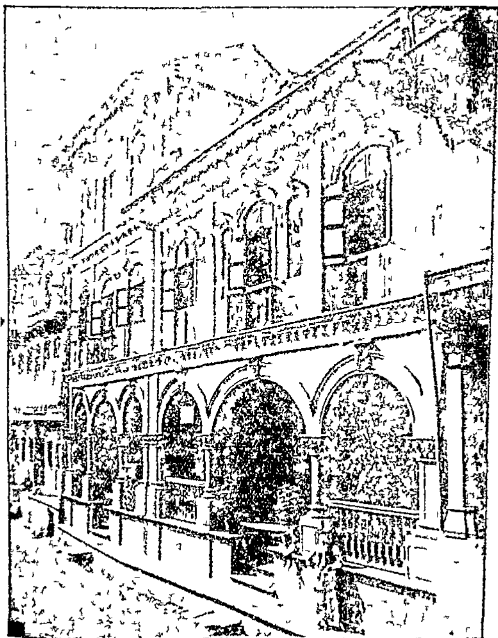
होता था कि नही ? **जहाजमे स्पर्शास्पर्शका कुछ दोष नहीं है।**

इसके पीछे **गोपालदासजीने** कहा कि **श्रीपालराजाका** प्रमाण भी है और अभी उस वक्तमे बहुत-से जैनी भाई बम्बईसे कोडियाल बंदर और मूलबिद्रीसे बम्बईको आगबोटमें बैठके आते है सो वहा रसोई पानी बनाके खाते है। गये साल सेठ मूलचन्दजी और दूसरे २०० आदमी जैनबिद्री मूलबिद्रीकी यात्राको गये थे उनके साथ मै भी था और **पडित लक्ष्मीचदजी** लश्करवाले भी थे सो हम सब मगलोर बदरसे आगबोटमे बैठके गोवा बदरको दो दिनमे आए थे। आगबोटमे अपना अलग चुला बनाके रसोई हुई थी, सो सेठ **मूलचंदजी** और मै और दूसरे भी कितनेक जैनी भाईयोंने उस आगबोटमे बैठके रसोई जीमना, पानी पीना सब किया था तो अमेरिका और इग्लैड जाते वक्त आगबोटमे अपना अलग चूल्हा बनाके और अलग पानी रखके शुद्धता पूर्वक रसोई करके जीम लेगा तो धर्मकी अथवा जातिकी भी कुछ हरकत दीखती नही है सो सब भाइयोंके दिलमे पसन्द होवे तो नीचे लिखी हुई चार बातोंकी अनुकूलता मिलनेसे आदमी भेजदेना ऐसा इस सभाकी अभिप्राय बडे २ शहरको भेजदेना।

प० गोपालदासजी-का विचार समुद्रयात्रामें।

चार बातोंकी तफसील—

१—अंग्रेजी और सस्कृत पढा हुआ एक जैनी मिले तो बहुत उत्तम, नहीं मिले तो एक सस्कृतका विद्वान और एक इंग्रेजीका



चंदावाडी धर्मशाला सूरत.

(देखो पृष्ठ २३६) J V P. Surat.

विद्वान ऐसे दो और तीसरा एक नौकर ऐसे तीन आदमीका संयोग मिलाना ।

२–उनके खर्चके वास्ते बन्दोबस्त होना।

३–भोजनकी शुद्धता होनी ।

४–जातिकी आज्ञा होनी ।

सबन उस अभिप्रायमें हां प्रगट की तब गोपालदासजीने जानेके योग्य विद्वानोंके नाम कहे–पंडित पन्नालाल झरगडलाल, भूरामलजी जैपुर बी ए, भाई मेहरचनी सुनपत। बाद सभा विसर्जन हुई। (जै० बो० अप्रैल १८९३) ये चिट्ठियॉ भेजी गई जिनपर **ब्रह्मसूरी शास्त्रीने** जो अभिप्राय भेजा उसका साराश यह है –

चिकागो जानेमे यदि मकारत्रय, जीवदया, तथा पंच नमस्कार रूप मूल गृहस्थधर्मका लोप नहीं होवे तो

ब्रह्मसूरि शास्त्रीका कुछ हानि नहीं है। इस बाबतमें प्रमादवशसे समुद्रयात्रामें विचार। अतीचार लगै तोभी उसको प्रायश्चित्त कहा है। प्रायश्चित्त ग्रंथ अकलंक स्वामीकृत, इंद्रनंदि आचार्यकृत, श्री नंदिगुरु प्रायश्चित्त और भी दोय तीन ग्रंथ है उनमे मकारत्रय मूलगुणको प्रायश्चित कहा है। **विदेशगमनको और समुद्रयान करनेके वास्ते कहीं भी प्रायश्चित नहीं कहा है।** महापुराणमे ऐसा लिखा है कि जिस २ उपायसे मार्ग प्रभावना होय वह उपाय मत प्रकाशके वास्ते अवश्य करना। **समंतभद्र स्वामीने** मत प्रभावनाके वास्ते अनेक देशोंमें सचार किया था। सो चिकागो अमेरिका खंडमें जाकरके अपने जैनधर्मका प्रसार करके स्थापन करना बहुत उत्तम है। इसमे शास्त्रको तथा

आचारको विरोध नहीं है ऐसा हमको दिखता है। दर्शनसे भ्रष्ट हुआ सो भ्रष्ट होता है । चारित्रसे भ्रष्ट हुआ सो पुन स्थितिकरण हो सकता है इसके वास्ते **समयभूषणके श्लोकः—**

मन शुद्ध भवेद्यस्य स शुद्ध इतिपठ्यते ।
विना तेन कृतस्नानोप्यय नैव विशुद्ध्यति ॥ १ ॥
कार्याकार्यविचारज्ञ सर्वभाषाविशारद ।
सर्वसास्त्रार्थवित्साधुर्धर्मस्य प्रतिपादक ॥ २ ॥
सगुणो निर्गुणोवापि श्रावको मन्यते सदा ।
नावज्ञा क्रियते तस्य तन्मूला धर्मवर्तिना ॥ ३ ॥
येन येन हि कृत्येन धर्मवृद्धि प्रजायते ।
तत्तत्कुर्वन यतिर्मान्यो भवेदत्र न सशय ॥ ४ ॥
सम्यग्दर्शनशुद्धाना तपसाल्पेन जायते ।
कर्मक्षयस्ततो नून तदेव प्रतिपाल्येत् ॥ ५ ॥
सम्यक्त्वमूल सर्व स्याज्ज्ञान चारित्रमेव वा ।
विना तेनापरे नैव कुर्याता मोक्षसाधन ॥ ६ ॥

दिगम्बर जैन समाज इस तरह सम्मतिके वादविवाद ही में पड गई और चिकागो भेजनेका कुछ वीरचद राघवजीका भी प्रबन्ध नहीं किया। उधर श्वेताम्बर-

चिकागो गमन। समाजने सब प्रबन्ध करके **श्रीयुत वीरचंद राघवजी बी. ए** को ता ४ अगस्त १८९३के दिन जहाजमें बिठाके चिकागो भेज दिया। आत्मारामजी महाराजने एक निबन्ध हिन्दीमे तयार करके वीरचदजीको दे दिया कि इसका तर्जुमा करके सभामें सुना देवें ।

सेठ माणिकचंदजीको बडा भारी उत्साह था कि कोई दिग-

म्बरी जैन विद्वान चिकागो जावे और सत्य जैनधर्मका सिद्धान्त प्रतिपादन करे। पर उद्योग करनेपर भी न कोई जानेवाला वीर ही तय्यार हुआ और न समाजने रुपयेका प्रबन्ध किया, इससे सेठजीको बहुत हताश होना पडा।

चौगले बेलगावको छात्रवृत्ति।

इंग्रेजी विद्याकी जैनियोंमें उन्नति हो और साथम वे जैनधर्मको भी जाने इस प्रकारकी उत्तेजना देनेमे सेठ माणिकचद और सेठ हीराचद नेमचदका पुरा ध्यान रहता था। सेठ हीराचदके बम्बई रहनेसे माणिकचदको धार्मिक व परोपकारके कार्योंमे अच्छी२ सम्मति मिलने लगी और असमर्थ जैन परदेशी छात्रोंको मासिक छात्र वृत्तियाँ देना प्रारम्भ की।

पाठकगण जानते ही होंगे कि दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके मुख्य सचालक व दक्षिणके जैनियोमे जागृति फैलाने वाले **श्रीयुत अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगले बी ए एल एल बी. वकील** बेलगाव हैं। यह पूना दक्षिग कालेजमे पहला वर्ष बी ए पास कर चुके थे। इनको सर्कारसे १९) मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी, पर इनके अधिक बीमार होनेके कारण वह मिलना बद हो गई थी, स्थिति गरीब थी, विना मदद आगे पढना बद होता था। सेठ माणिकचदजीके पास इनका पत्र आनेसे एक वर्षके लिये आपने और हीराचदजीने ६) छ रु मासिक छात्रवृत्ति देनी चालू कर दी और धर्मग्रथ देखनेकी प्रेरणा की। इस सहायताका फल यह हुआ कि कुछ दिनों बाद इसने सस्कृतमे एक जिनस्तुति बनाके सेठोंके पास भेजी जिसका नाम **तापापहार स्तोत्र** है सो यहा दिया जाता है—

श्रीतापापहारस्तोत्रम् ।

स्वात्मस्थित त परमात्मसज्ञ सर्व गतं कालकलामतीतम् ।
विश्वेश्वर विश्वविकाशहेतु वदे विभु वंद्यमगम्यतत्वम् ॥ १ ॥
तापापहारे कुशलो जनाना मदापहारेऽपि मदाश्रितानाम् ।
त्रिलोकनि श्रेयसदत्तदृष्टिस्तापात्स न पातु जिनो वेरेण्यः ॥ २ ॥
इद्रादिदेवा भुवनैकनाथ स्तोतु प्रवृत्ता अपि यं न शक्ता ।
तस्यानुरूप स्तवन विधातुं शक्त कथ स्यामहमल्पबुद्धि ॥ ३ ॥
रत्नाकरस्थान् पृथुरत्नराशीन्व्योम्नि स्थितान्तारकमत्रयान्वा ।
गणान् गुणाना भवतश्च देव व्यनीगणन् के मनुजास्त्रिलोक्याम् ॥ ४ ॥
तथाऽपि विश्वेश यथाक्षम त्वा स्तवीमि भक्त्या भवतापशान्त्यै ।
अल्पश्रुतोऽस्मीति न वीतराग तन्मय्युपेक्षा भवता विधेया ॥ ५ ॥
आस्तामभेयो जिन सत्स्तवस्ते नामापि ते तापमपाकरोति ।
दूरे वसत्येव शशी तथापि प्रीणाति खिन्न समुखोऽस्य रश्मि ॥ ६ ॥
दुर्व्याधिसर्पा भवकाननस्था सहस्रश सन्ति निसर्गदुष्टा ।
तान्वारयेत्स्तममस्तशक्तो मर्त्योऽप्यपाशास्त्वयि बद्धभक्तिः ॥ ७ ॥
कुष्ठाभिभूतश्च्युतजीवनेच्छो यष्टिं विना सचरितु त्वशक्त ।
त्वत्पादपद्मद्वयदत्तमौलि सद्यो भवेत्काचनतुल्यकान्ति ॥ ८ ॥
भो भो भवाब्धौ मनुजा पतन्तो श्रयत्वमेता जिनभक्तिनौकाम् ।
सुख तयात्येष्यथ यूयमेन भीम विपन्नक्रकुशाकुलोर्मिम् ॥९॥
किं भूषणे कुडलककणाद्यैर्मनोज्ञवेषैश्च विनाशशीलै ।
य स्थैर्ययुक्ता जिनभक्तिमाला धत्ते स धीरो गतवचन स्यात् ॥१०॥
त्वद्भक्तिमालावृतदेहवर्म वाह्य कथ मामरिरुच्छिनत्ति ।
मच्चित्तवासे त्वयि सहतारावतद्भिगामप्यवसानमेव ॥ ११ ॥

गंगेति गंगेति जना वदन्ति का वाऽस्ति गंगा तव भक्तितोऽन्या ।
तस्या कथ भक्तिसुरापगाया मग्नस्य मे क्लेशततिर्न गच्छेत् ॥ १२ ॥
तापापहाराय महौषधानि तन्त्राणि मन्त्राणि च योजयन्ति ।
जानन्ति ये नैव तव प्रभाव तन्त्रादिमन्त्रादिगुरुस्त्वमेव ॥ १३ ॥
ध्यानाकुलाना मुनिपुगवाना प्रकाशयस्त्व गिरिगह्वराणि ।
त्रैलोक्यदीपोऽसि न वायुवश्यो विकीर्णनीरध्रतमस्तिजाल ॥ १४ ॥
मदस्य वृत्ति सकलेन्द्रियाणामनिरुध्य च त्वा हृदये मुनीन्द्रा ।
त्वामेव लब्ध्वा गलितान्तरा जयन्ति जन्मोत्थमोघदु खम ॥ १५ ॥
चित्र प्रभो यत्सुरसुन्दरीणा लीलाकटाक्षैर्धनुरैर्मनस्ते ।
नाऽभूद्विलोल त्वथवा सुमेरो शृग चल जातु चलान्न वायो ॥१६॥
किमत्र चित्र यदि नाम काम प्रहर्तुकाम सपदि प्रनष्ट ।
न दर्शने दीपविनाशनार्थं समुत्पतन् किं सहसा पतग ॥ १७ ॥
जिनेन्द्रचन्द्रेण विनातिघोर जगत्तमो नैव विनाशमेति ।
उच्चारमात्रेण यदीयनाम्नो घोराणि दु खानि जना जयन्ति ॥ १८ ॥
कृत्स्नैरवेद्यो जिन विश्ववत्ता सर्वैरदृश्योऽप्यसि विश्वदृश्वा ।
गुरुर्गुरूणामगुरुर्गुरो सन्ननीश्वरस्त्व जगदीश्वरोऽसि ॥ १९ ॥
अचिन्त्यमप्यर्थितमर्थयुक्तैरचिन्त्यमर्हन्ननुचिंतये त्वाम् ।
आवद्मान सुरवृन्दवद्य वदे जिनेंद्र जितरागमोहम् ॥ २० ॥
विश्वेश्वर मन्मथधूमकेतु योगीश्वर नित्यमसह्यमेकम् ।
गुरुं लघु स्थूलमथापि सूक्ष्म त्वा सर्वरूप प्रवदन्ति सत ॥ २१ ॥
अशोकभामडलपुष्पवृष्टिश्वेतातपत्रत्रयचामरौघा ।
दिव्यध्वनिश्चासनदुदुभी च प्रदर्शयन्त्येव तवेश्वरत्वम् ॥ २२ ॥
समीहितार्थप्रतिपत्तिहेतु त्वा ज्ञानराशिं विमल वरेण्यम् ।

शक्राधिदेवं सदयं शरण्य शक्रादिदेवा शरणं व्रजन्ति ॥ २३
यथोचित भक्तिविराजमानैर्यक्षैरसख्यैरनुगम्यमान ।
त्वत्पापशाखानखढिव्यदीप्त्या विभ्राजमान कुरुते किरीटम् ॥ २४ ॥
यमोऽपि मत्त महिप प्ररूढ पत्नीसमेतो वृतधर्मदण्ड ।
बद्धाजलिस्तिष्ठति देव नम्र क्रूर प्रकृत्याऽपि हि पूजयस्त्वाम् ॥२५॥
प्राप्ताश्च शेषा प्रतिहारभूमि नाथा दिशामादरपालिताज्ञा ।
कल्पद्रुपुष्पाणि तवाङ्घ्रियुग्मे किरन्ति भक्तिप्रणतोत्तमाङ्गा ॥ २६ ॥
गभीरमद्रध्वनिपूरिताशा प्रशस्तवाचो वृतदिव्यवीणा ।
गन्धर्वपूगास्तव कीर्तिमच्छा गायन्त्यहो भक्तिविशुद्धदेहा ॥ २७ ॥
ध्यायन्ति ये पूज्यमनन्तवीर्यं नाथ त्रिलोक्य करुणापयोधिम् ।
असंशय ते क्षतकर्मबन्धा कल्याणभाजो मनुजा भवन्ति ॥ २८ ॥
तस्मात्प्रमादानवधूय जन्तो सरक्षणार्थं भवदु खसङ्घात् ।
लोकस्य निष्कारणबन्धुमेत श्रीशान्तिनाथ भज शान्तिहेतुम् ॥ २९ ॥

स्तोत्रैर्मन्त्रे कठिनतपसा चाथ भक्त्याप्रणत्या
य स्तुत्या वा विशदहृदय सेवते देवदेवम् ।
पुण्यात्मान कथमिव नत सश्रयते नृवर्यम्
लक्ष्मीर्विद्याऽभिमतफलदातापशान्तिश्च मुक्ति ॥ ३० ॥
या चौगुलेत्युपाह्वन अण्णप्पा नामधारिणा ॥
जिनभक्त्यावनम्रेण वणुग्रामनिवासिना ॥
स्तुतिस्तापापहाराख्या जिनस्य रचिता तु सा ।
तनोतु विदुषो हर्ष पिकस्येवाम्रमजरी ॥ युग्मम् ॥

इति सर्व शुभम् ।

" करकृतमपराध क्षतुमर्हन्तु सन्त ॥ "

इति महाराष्ट्रदेशे पुण्यपत्तनवर्तिनि दक्षिणविद्यालय आंगलविद्यादि संस्कृतकाव्यालंकारव्याकरणाद्यधीयानेन वेणुग्रामनिवासिना चौगुलेत्युपनाम्ना अण्णाप्पाभिधानेन विरचितं श्रीतापापहारस्तोत्रम् ।

सेठ माणिकचंदजीकी इंग्रेजी पढनेवालोंको छात्रवृत्ति दिये जानेकी खबर दूर दूर फैल गई थी ।

बाबू अजितप्रसादजी का विलायत जानेके लिये निवेदन ।

लखनऊ निवासी बाबू **अजितप्रसाद एम. ए.** एल एल बी वकील, सम्पादक, इंग्रेजी जैन 'गजट'से हमारे पाठक अच्छी तरह परिचित हैं । आपने सेठजीको पत्र दिया कि मैं सिविल सर्विस पास करनेके लिये विलायत जाना चाहता हूं । मैंने इसी वर्ष (सन् १८९३) बी० ए० पास किया है, उम्र १९ की है । हररोज स्वाध्याय करता हूं । दर्शन भी करने जाता रहता हूं । मुझे विलायत जानेको रुपया कर्ज चाहिये । उस समय इनके पिता कमसरियटमें क्लर्क थे । इतनी शक्ति नहीं थी जो द्रव्यका प्रबन्ध कर सकें । दि० जैन समाजमें विलायत भेजनेमें भिन्न २ सम्मति होनेके कारण सेठजीने स्वयं मदद नहीं दी किन्तु जैन बोधक अगस्त १८९३मे इनका पत्र प्रगट कराकर अन्योंको प्रेरणा करा दी कि सहायता करें, पर इसका कोई भी प्रबन्ध नहीं हुआ। वास्तवमें बहुतसे छात्र धनकी मददके बिना अपनी इच्छानुसार विद्या सम्पादन करनेसे वञ्चित रह जाते हैं ।

अपने डेरेपर आकर सेठ हीराचद और सेठ माणिकचदजी बातें करने लगे कि अभी जैनियोंमे सभाका

सेठ हीराचद और सेठ माणिकचंदजीकी वार्तालाप।

शौक बहुत कम है तथा अज्ञानता बहुत है। इसका कारण यही है कि हमारे भाई शास्त्र स्वाध्याय नही करते। इसके न होनेमे एक अतराय सुलभतासे ग्रथोंको नही प्राप्त करना है। यदि ग्रथ मुद्रित हो जावे तो हरएक भाई इच्छानुसार लेकर पढ सक्ता है। देखो अपने मदिरोंमे प्राय पोथियोमे भक्तामरजी, सूत्रजी, व पूजा पाठ अशुद्ध लिखे मिलते है। लोग अशुद्ध ही पाठकर जाते है। अर्थ पर तो कुछ ध्यान देते नही, पर छापनेमे यह फायदा है कि एक प्रति शुद्ध करली गई तो उससे हजारों प्रति शुद्ध तय्यार हो सक्ती है, देखो मैं आपको (पुस्तक हाथमें देकर) यह **भक्तामर-** स्तोत्र दिखाता हू इसमें गुजराती भाषामे अर्थ व पद्य देकर आमोद निवासी **सेठ हरजीवन रायचंद शाहने** छपवाया है। इससे हमारे गुजराती भाई स्तोत्रका शुद्ध पाठ भी कर सकेंगे व अर्थका भी बोध होगा कितना बडा लाभ है। गुजराती अर्थ सहित यह पहली ही पुस्तक है जो गुजरातके दिगम्बर जैनीने छपवाई है। सेठ माणिकचदने उस पुस्तकको इधर उधर पढा। बडे ही प्रसन्न हुए और उसका पता ठिकाना अपनी नोटबुकमें लिख लिया। आगे चलके सेठ हीराचदजीने कहा कि अब ग्रथोंका मुद्रण बद नही हो सक्ता। आप जानते ही है कि मैंने **क्रियाकोश, नेमदूत काव्य, रत्नकरंड श्रावकाचार, संस्कृत पूजापाठ, भजन-सद्बोध मालिका** आदि कई ग्रथ प्रसिद्ध कर दिये है

व अपने पत्रद्वारा भी ग्रथोंका भाव प्रगट कर रहा हूं। सोनपतवाले पडित मथुरादासजीके भाई मेहरचदजीने **सज्जनचितवल्लभ** टीका सहित व नाना रामचद्र नाग जैन ब्राह्मणने निर्वाणकाद, रूपचद कृत पच मगल व त्यागी महाचद्रकृत समायिक पाठ भाषा छपवाए है तथा मदरासमे आपर्ट साहबने **शाकटायन** व्याकरण छपाया है जो १०)मे मिलता है तथा बडौदाके महाराजने समविशतक व नीतिवाक्यामृत, जैन ग्रथोंको गुजराती व मराठी भाषातर कराकर छपानेका विचार किया है। षट्दर्शन समुच्चय, द्वयाश्रय महाकाव्य, बुद्धिसागर आदि जैन कार्योंके प्रकाशके लिये बगलोरके मैसुर आर्चेलडिक्ल आफिसमे काम करनेवाले प० पद्मराजराणाने **काव्यांबुधि प्रकाश** मासिक पुस्तक निकालना प्रारभ किया है ।

सेठ माणिकचदजीने कहा—पडित प्यारेलालजी कितना ही मना करें परतु मुद्रित ग्रथोंका प्रचार अब बन्द नहीं हो सकता और ऐसा विना हुए इस कालमें ज्ञानकी वृद्धि भी नहीं हो सक्ती। इतना वार्तालाप करके दोनों निद्रित हो गए ।

बम्बई लौटकर सेठ माणिकचद आनन्दसे अपने कार्य्य व्यवहारमे लीन हो गए । यह अपने बगलेमें रोज प्रात काल अनेक समाचार पत्रोंको पढा करते थे । एक दिन एक अखबारमें वीरचद राघवजीके पत्रकी नकल वाची जो उन्होंने जैन एसोसियेशन आफ इंडियाको भेजी थी और जिसमे चिकागो व अन्यत्र जैनधर्मके व्याख्यानोंसे क्या २ लाभ हुआ सो लिखा था। यह पत्र जैनबोधक अक १०९ माह सप्टेम्बर १८९४ में मुद्रित है जिसको उपयोगी जानकर हम उसकी पूरी नकल नीचे प्रगट करते है —

नकल पत्र वीरचंद राघवजी।

"में अगाउ चे पत्र सवीस्तर लख्या पछी हु फरीथी सविस्तर लखी शक्यो नथी तेनु कारण अहिनी स्थिति संपूर्ण समज्या पछी जाणवामा आवशे आ देशमा भाषणो आपवानी पण ऋतु होय छे गरमीना दिवसोमा भाग्येज भाषणो आपवामा आवे छे अहिं शिया-ळाओमा तथा पानखर ऋतुमा बहु भाषणो आपवामा आवे छे हु अही सप्टेंबरनी शरूआतमा आव्यो ते वखते पानखर ऋतु शरू थई हती, जुदा जुदा धर्मो विषे वादविवाद चलाववा माटे करवामा आवेला मेलावडानी बेठक पण ए वखते शरू थई गई हती अने ते सप्टेंबरनी आखरे खलास थई गई हती हिंदुस्तानना धर्म सबंधी ए मेलावडामा सारा भाषणो थवाथी लोकोनी रुचि ए धर्मो उपर वधारे थवा लागी हती मेलावडामा जुदा जुदा धर्मो संबंधी एटला बधा भाषणो थवाना हता के, दरेक प्रतीनिधिने फक्त त्रीस मिनीट बोलवा देवानी परवानगी मळी हती. तेने लीधे ब्राह्मण धर्म, बोद्धधर्म तथा जैनधर्म वच्चे शो फेर छे ते लोकोने यथास्थिति मालम पडयु न हतु लोकोनी मात्र एटली खात्री थई हती के, हिंदुस्तानना धर्मो खीस्ती धर्म करता वधारे उत्तम छे आटली असर लोकोना मन ऊपर थया पछी एकदम हिंदुस्तान पाछा चाल्या आववु ए मने ठीक लाग्यु नही जैनधर्म ए बौद्धधर्म तथा ब्राह्मण धर्म करता जुदो छे एम समजाववानी मारी फरज हती अत्यार सुधी अहिंया केटलाक लोको एम समजता हता के, हिंदुस्तानना लोको तमाम बौद्धधर्मना छे घणा लोको वळी एम धारता हता के, हिंदुस्तानमा तमाम लोको ब्राह्मण धर्मना छे जैनधर्म ए शु तेने

विषे लोकोने जरा पण खबर नही हती आ मेळावडो थयो त्यारे लोकोने मालम पड्यु के " जैन " ए नामनो पण एक धर्म छे **सर एडवीन आरनोल्ड** नामना एक अंग्रेज गृहस्थे " **लाइट ओफ एशिया** " नामनु पुस्तक (जेमा गौतम बुद्धनु जन्मचरित्र कवीता रूपी आपेलु छे) प्रसिद्ध कर्यु हतु अने ते आ देशमा बहु फेलाव्यु हतु, तेने लीधे बौद्धधर्म धर्म जगाए जगाए प्रसिद्ध थयो हतो परतु जैन धर्म सबधी लोको पयोगी पुस्तक अंग्रेजी भाषामा छपायलु नही होवाथी ए धर्म सबधी लोकोने कशी माहीती न हती आवा कारणोने लीधे मारा मनमा एवो विचार थयो के हु आ देशमा जैन धर्मने माटे आव्यो अने ए धर्मने माटे माराथी बने तटली उन्नति न थाय त्या सुधी मारु अही आववु नकामु हतु आ देशमा लोकोनी खीस्ती धर्म उपरथी श्रद्धा ओछी थती जाय छे त्यारे एवे प्रसगे मारी फरज छे के, जैन धर्म सबधी ज्ञान आ देशमा मारे फेलाववु जोइए मेळावडो खलाश थयो एटले **चिकागो शहेरमा जुदी जुदी जगाए भाषणो** आपवानो मारो विचार थयो परतु ऋतु ठडी थडी हती तथा खुली जगामा भाषणो आपी शकाय नहिं तेवु होवाथी ते माटे खास बदो-बस्त करवा अहिना केटलाक उमदा विचारना **पादरीओने** मळ्यो अने तेओए पोताना देवलोमा **मने भाषण करवानी परवानगी** आपी चिकागोना लोकोने जाहेर रीते मालूम पड्यू के मेळावडो पुरो थया पछी हु अही थोडो वखत रहेवानो छु तेथी घणा लोको हु जे मकानमा रहु छु त्या मने मळवा आववा लाग्या जैन धर्म सबधी कर्मनु स्वरूप केवु छे ते तथा स्वर्ग, नर्क, मोक्ष, देवलोक, आ-

त्मा, पुण्य, पाप वगेरे घणा घणा विषयो उपर मारे ए लोको साथे वातचीत थई केटलाक लोकोए मने कह्यु के जैन प्रतिनिधि तरीके मारी फरज छे के हिंदुस्ताननी जुदी जुदी फिलसुफी अथेति षट् दर्शननु स्वरूप मारे समजाववु जोईए अने साबित करवु जोईए के जैन दर्शन सघळा दर्शनोमा उत्तम छे ए उपरथी जे मकानोमा हु रहु छु त्या एक वर्ग उघाडवामा आव्यो, तेमा आशरे ९० पुरुषो तथा स्त्रीओ **जैन धर्म अने तेनां तत्व** शु छे ते सबंधी ज्ञान मेळववा माटे आववा लाग्या ता १९ मी मे सुधी में ए प्रमाणे कर्यु हु चिकागोना जे भागमा रहु छु तेने एंगलवुड कहे छे त्याथी आशरे दश माईल उपर बीजु एक वेस्ट चिकागो नामनु परु छे त्याना लोकोए पण मने कह्यु के तेओ आटले दूर मारा भाषणो साभळवा आवी शके नहिं तेथी मारे ते जगोए जई भाषणो आपवा जोईए त्या एक जाहेर मकान नही हतु अने मकान भाडे लेवा जईए तो पार विनानो खर्च थई जाय तेथी मो पोटमेन नामना एक उमदा दिलना ग्रहस्थना घरमा गोठवण करवामा आवी हती, त्या पण ता. १९ मी मे सुधी मे भाषणो आप्या एंगलवुडमा युनवर्सेलीस्ट चर्च नामनु एक ख्रीस्ती देवल छे, त्या पण मे एक भाषण आप्यु हाइडपार्क नामनु एक परु छे, त्याना **प्रेसबीटेरियन चर्च** नामना देवळमा पण मे एक **भाषण** आप्यु ओल सोलस चर्च नामना देवळमा ३ वखत में भाषणो आप्या हता हाइडपार्क नामना बीजा एक परामा में भाषणो आप्या कुक काउनटी नार्मल स्कूल नामनी अत्रे एक प्रख्यात शाळा छे तेना प्रोफेसरो तथा विद्यार्थीओ समक्ष मे एक भाषण आप्यु हतु इलीनेइस प्रेस

विमेनस कल्व हजूर पण मे एक भाषण आप्यु हतु कोरीसन चर्चमा एक सत्र जडज शेरमेनना घरमा त्रण अने इवीग क्लबमा एक भाषण आप्यु हतु 'धी फर्स्ट सोसायटी ओफ स्पीरिच्युआलीस्ट' नामनी एक मंडलीनी सभामा चार वखत मे भाषणो आप्या हता ए सिवाय बीजी त्रणी जगाए मे जाहेर भाषणो आप्या छे, ए जाहेर भाषण सिवाय मारी स्थापित विद्याशाळामा मे वारवार भाषणो आप्या ते तो जुदा अने सैकडो लोको हु जे मकानमा रहु छु त्या मळवा आवी धर्म सबधी चर्चा करे ते पण जुदी आवी रीते अत्यार सुधी मारो तमाम वखत भाषणो आपवामा तथा लोको साथे धर्मनी चर्चा करवामा गयो छे एक पण दिवसनी रातना १२ वागा अगाऊ सुवा पाम्यो नथी. शियाळो खतम थयो छे तेथी भाषणो आपवानी ऋतु पण खतम थई छे. वसत ऋतु चाले छे अने गरमी पडवा लागी छे तथी लोको थडी जगाओमा जवा लाग्या छे' एटले हवे हु फुरसद लई शक्यो छु अत्यार सुधी मे चिकागो तथा तेनी आसपासना पराओमा भाषण आप्या छे चिकागो तथा शहेरमा पदर लाख माणसनी वस्ती छे तेथी त्या आटला भाषणो आपवानी जरूर हती, परतु युनाइटेड स्टेट्स मोटो देश छे अने बीजा शहरोमा पण भाषणो आपवाथी जैन धर्मनी कीर्ति जगाए जगाए फेलाशे, एवा हेतुथी हु बीजा शहेरोमा भाषणो आपवानो इरादो राखु छु सपटेम्बर मास पछी भाषणो आपवानी ऋतु शुरु थशे तेटला वखतमा जुदा जुदा विषयो उपर भाषणो आपवानु हु नक्की करी राखीश. ओगस्ट मासनी ता ९–१२ तथा १९ ना रोजे न्युयार्क पासे आ-

वेला लीलीडेल नामना शहेरमा हजारो लोको समक्ष जैन धर्म उपर भाषणो आपवा माटे त्याना लोकोए मन बोलाव्यो छे. ते वखते हु त्या गईश हिंदुस्ताननां लोको विषे ख्रीस्ती धर्मना मिशनरीओ आ देशमा एटला बधा खोटा विचारो दर्शावे छे के ते विचार दूर करवानी हिंदुस्तानमा जन्मेला दरेक गृहस्थनी फरज छे दाखला तरीके आ मेलावडामा हाजर रहेला लडनना एक मीशनरी डाक्टर पेन्टेकोस्टे हिंदुस्ताननां तमाम लोकोनी वर्तणुक उपर मोटो हुमलो कर्यो हतो जैन धर्म सबधी ते कशु बोल्यो नहतो पण सामान्य रीते हिंदुस्ताननां लोको विरूद्ध तेणे भाषण आप्यु हतु बीजे दिवसे जैन धर्म सबधी भाषण आपवानी मारी वारी हती, तेथी जैन धर्मसबधी भाषण आपवा पहेला मे टुकामा ए मीशनरीने सारी रीते जवाब आप्यो हतो आ मेलावडानी मुख्य असर ए थई छे के, अहिना लोको ख्रीस्ती धर्म उपर श्रद्धा ओछी राखवा लाग्या छे अहिना ख्रीस्नी देवलमा जनारा लोको केटला छे तेनी तपास करता मालम पडे छे के चिकागोनी वस्तीमाथी **दर बसे माणसे** फक्त एकज माणस रविवारे देवळमा जाय छे बाकीना माणसो बीलकुल देवळमा जता नथी परन्तु मे ख्रीस्ती देवलमा भाषणो आप्या हता त्यारे जे लोको कोईपण दिवसे त्या आव्या न हता ते मारा भाषणो साभळवा आव्या हता जैन धर्मनी खूबीथी **मीसीस चार्ल्स हारवडे** नामनी एक बाइ एटली बधी खुशी थई छे के तेणीए मासाहारनो त्याग कर्यो छे तेणीए तथा तेणीना पतिए चोथु व्रत आदर्यु छे, अने हु हिंदुस्तान पहोंचीश त्यार पछी हु पसन्द करूं तेवा एक जैन छोकराने पुरेपुरी केळवणी आपवाने



श्रीमती मगनबाई और उनके पति
श्रीयुत खेमचंदजी.

(देखो पृष्ठ २४४)

J V. P. Surat

जेटलो खर्च थाय तेटलो आपवाने तेओए कबुल कर्यु छे अमेरिकाना केटलाक वर्तमान पत्रोए जैनधर्म विषे पोताना उत्तम मतो जाहेर कर्या छे त्याना 'धी आई' नामना एक पत्रमा गई ता० २३ मी मार्चना अकमा एवु लखाण करवामा आव्यु छे के भाषणनो विषय जैनधर्म अने ते धर्म विषे मी० गाधी अहींना मेळावडामा पोताना लोको तरफथी भाषण करवाने आव्या हता जुदा जुदा देशोमाथी आवेला अनेक विद्वान प्रतिनिधीओए मेळावडामा अने ते खलास थया बाद पूर्व देशना धर्मो विषे जे भाषणो कर्यों हता, ते तमाम धर्मो करता बुद्धिवान अमेरिकन लोकोनु वलण जैनधर्म तरफ वधारे सारीरिते ढळ्यु छे "

यह पत्र गुजरातीमे है तोभी हमारे पाठक समझ गए होंगे। इससे यह झलकता है कि वीरचदने अपने लगातार व्याख्यानोंका ऐसा असर जमाया कि इनके पास ९० के करीब स्त्री पुरुष जैन तत्वज्ञान सीखनेके लिये आने लगे तथा पादरियोंने गिरजाघरमे भाषण देनेकी इजाजत देदी। एक स्त्री और उसके पतिने चौथा व्रत लिया तथा ४ जैन बालक पूर्ण धर्म विद्या पढे इसके कुल खर्चको उठाना मजुर किया। दूसरे किसी दिन सेठजीने एक चिकागोकी मेमकी चिट्ठीका तर्जुमा एक पत्रमे पढा जिसमे इग्रेजी भी छपा था। वह पत्र यह है—

"To the Editor of the Pioneer"

The Jain Community was very ably represented by Mr Veerchand Raghaojee Gandhee B A of Bombay, who made an exceedingly

favourable impression and continues to do so in the lecture courses which he is still delivering in verious parts of the country

Chicago 30, January } Merwin Marie Snell

भावार्थ।

सम्पादक "पायोनियर"

वीरचंद गांधी बी ए बम्बईने जैन जातिकी तरफसे बहुत योग्यता दिखाई, बहुत बडा असर पैदा किया और अब जो देशके भिन्न २ भागोंमे व्याख्यान दे रहे हैं उससे असर बढता जाता है–

चिकागो, ३० जनवरी। द मरविन मैरी स्नेल
(जैन बोधक जून १८९४)

एक दिन सेठ माणिकचंदको महासभाके अधिवेशनकी याद पड गई। शास्त्रोंके छपने न छपनेकी चर्चा दिलमे आ गई। सेठजीके दिलमे सेठ हीराचंदजीका बहुत बडा मान था। प्रेम भी खूब था। हरएक बातमे इनकी सम्मति लेते थे। धार्मिक मित्र ही मानते थे इससे सेठ हीराचंदके समान सेठ माणिकचंदजी भी ग्रंथ मुद्रणके पक्षपाती थे। इनको पूर्ण विश्वास था कि विना मुद्रित ग्रंथोंके स्वाध्यायका प्रचार नहीं हो सक्ता। इतने हीमे इन्होंने उस भक्तामरजीको याद किया जो गुजराती अर्थ सहित छपा हुआ मथुरामें देखा था।

सेठ हरजीवन रायचन्दसे परिचय।

पता इनकी नोटबुकमें लिखा ही था। आपने श्री भक्तामरजीकी बहुतसी प्रतियां मंगाकर अपने घरमें व दूसरे पाठ करनेवालोंको बाँटनेके लिये सेठजीने प्रथम ही एक पत्र सेठ हरजीवन रायचंदको आमोद लिखा जिन्होंने अनुवाद करके प्रकाशित किया था। यह नरसिंहपुरा जातिके एक सुशिक्षित गृहस्थ हैं, जैन शास्त्रोंके मननका अभ्यास है, तत्त्वको समझते हैं, परोपकारी हैं, गुजरातमें माननीय हैं। सेठजीका पत्र पाते ही सेठ हरजीवन रायचंदको बहुत हर्ष हुआ। क्योंकि यह तो इनके कर्ण गोचर हो ही चुका था कि बम्बईमें सेठ माणिकचंद जौहरी एक बड़ा ही धर्मात्मा, परोपकारी व मिलनसार सेठ है। इनके प्रतापसे बहुतसे गुजराती बंधुओंने बम्बईमें धन्दा प्राप्त किया है। सेठ हरजीवन रायचंदने पुस्तकें भेजीं व उत्तरमें एक लम्बा चौडा पत्र लिखकर गुजरात देशके अज्ञानकी दशा बतलाई। यह पत्र बाचकर सेठजीको बहुत ही सन्तोष हुआ। सेठजी जैसे पत्थर परखानेमें जौहरी थे वैसे मनुष्यकी भी पहचान करनेवाले सच्चे जौहरी थे। ऐसे विद्याप्रेमी, परोपकारी पुरुषोंके लाभको महान लाभ समझते थे। इस पत्रका उत्तर सेठजीने दिया और उपदेश किया कि वे कुरीतियां बन्द करनेमें, व स्वाध्यायके प्रचारमें परिश्रम करें। तथा बालकोंके लिये पाठशाला खोलें। यहींसे इनका सम्बन्ध प्रारंभ हुआ। अब तो वर्षमें दोचार दफे परस्पर पत्र व्यवहार होने लगा। धर्म सम्बन्धी पुस्तकोंका गुजरातीमें भाषान्तर करनेको कई दफे सेठजीने लिखा।

सेठ माणिकचदजीको पालीताना सेत्रुजयके उद्धारका बहुत बडा ध्यान था और ऐसा ही मुनीम धर्मचदजीको था जो सच्चे दिलसे तीर्थकी उन्नतिमे दत्तचित्त थे। दक्षिण हैदराबाद निवासी सेठ पूरणमल हणुमतराम पाड्याकी विधवा बाई रामबाई **पालीताना** पधारी थी। आप धर्मचदजीके उपदेशसे २०००) के दानका उपयोग नीचे प्रमाणे कार्योंमे करनेको कह गई —

एक विधवाका २०००) का दान।

२००) पालीतानाकी नई धर्मशालामे कोठरी नग १ बनाना।
११००) पहाडपर शातिनाथजीके मदिरके मोटे मडपमे सगमर्मर पत्थर लगाना।
५००) ग्रामके नये मदिरजीमे जो गभारा है उसमे चादीके द्वार जडे जावें।
२००) स० १९५१ की प्रतिष्ठाके समय नए मदिरमे एक प्रतिमा पधराई जावे।

इस खबरको सेठ माणिकचदने स० १९५० जेठ वदी १४ सोमवारके दिन लिखकर जैन बोधकमे छपाने भेजी दी जो इस पत्रके अक १०७ जुलाई १८९४मे मुद्रित है। इस पत्रके नीचे सेठजीका यह रिमार्क था—

" एकठा काम करवाने बे हज़ार रुपीया बाई आपी गया छे वेने संघ तरफथी अने हमारी तरफथी धन्यवाद आपिये छिये। अमे घरवे बधुजनोने विनती करिये छीये के एहवा उदार दिलना भाईयेने पईसा सारी ठेकाणे वापरवाने हालमा घणुथी उत्तम

ठेकाणु श्री शोलापुरना चतुर्विध दानशालामा मदत करवी ए ठेकाणु घणु लाभनु छे । ”

पाठकोंको इससे मालूम होगा कि विद्यादान आदि ४ प्रकार-के दानोंका व उसके होनेवाले कार्य्यका कैसा महत्त्व सेठ माणिक-चदजीके दिलमे था ।

बम्बई दि० जैन सभा सेठ माणिकचदके मन्त्रित्त्व व पडित गोपालदासके उपमन्त्रित्वमें बहुत कायदेसे काम करने लगी । इसका प्रथम वार्षिकोत्सव मगसर सुदी १४ को हुआ । सालमें १५ अतरग व १९ उपदेशक सभाएं हुई । इस समय सभाके आधीन ३ खाते चालू थे ।

दि० जैन सभा बम्बईके कार्य्य ।

खाता	आमद	खर्च	बचत
सभा	२२३॥)	१२४)॥।	९९।≡)।
पाठशाला	३६४॥≡)॥	२६५)॥	९९॥≡)
पुस्तक	३४८॥।=)॥	१९३।-)	१५५॥-)॥
कुल	९३७=)	५८२।=)।	३५४॥≡)॥।

जैन पाठशालामे प० जीवराम शास्त्री पहले नियत हुए । फिर प० निवामाचार्य व एक ज्योतिष शास्त्री भी रखा गया । इसका उपयोग स्वय गोपालदास और प० पन्नालालजीने भी लिया । स० १९५१ मगसर सुदी १४ तक प० गोपालदास शाकटायन, समा-सोत, चद्रप्रभुकाव्य ६ सर्ग, सर्वार्थ सिद्धि पूर्ण, राजवार्त्तिक अध्या-य, परीक्षामुख परिच्छेद १॥, अलकार चिंतामणि प्रथमपरिच्छेद,

कुवलयानद पौन, गृहगणित स्पष्टाधिकारसे पूर्वतक, जिनेन्द्रव्याकरण थोडा, आदिनाथ पुराण पत्रे ९९—इतने विषय अपनी तीव्र बुद्धिके कारण पढ चुके थे तथा प० पन्नालाल शाकटायन पट्लिंग, चदप्रभु काव्य २॥ सर्ग, परिक्षामुख १ परिच्छेद ही कर सके थे। पुस्तक खातेसे लिखित ग्रथ गोम्मटसार अष्टशती आदि भडारमे मगाये जाते थे। तथा सभाने एक परितोषिक भडार भी कायम कर लिया था कि अमुक २ विषयोंमे परीक्षा देकर जो भारतमे कोई जैन विद्यार्थी उतीर्ण हो उनको ईनाम दिया जाय अर्थात् परीक्षालयकी नीव जेठ सुदी १ स १९५१ को डाली गई थी।

पशु हिंसावदीका प्रयत्न और सूरतके लोगोंद्वारा मानपत्र।

दमहरे आदि तिहवारोंपर बहुतसे रजवाडो आदिमे पशुवध होता था उसको रोकनेके लिये कई दयावान जैनी भाई प्रयत्न कर रहे थे। उनमे हमारे सेठ माणिकचदजी भी थे। प्रयत्नसे क्या नही होता? धरमपुरके महाराणाने अपने राज्यमे होनेवाले पशुवधको बद किया तब सूरतके लोगोंने राजाको मानपत्र दिया उसका जवाब जो राजाने दिया वह जैन बोधक अक ११२ दिस० १८९४ मे मुद्रित है, जिसका साराश यह है—

मै सन् १८९१मे राज्यगद्दीपर बैठा तब ही से मैं ऐसे रिवाजसे विरुद्ध था। मैंने बम्बई, सूरत बडौदा आदिके विद्वानोंसे ७५ मत शास्त्रीय प्रमाण सहित इस हिंसाके विरुद्ध मगाए तबसे मैं बद करना चाहता था सो इस साल बद करा दिया है

तथा आमरण तालुकेमे भी कर दिया गया तथा मेरे राज्यमे चैत्र सुदी १९ के दिन मनुष्यको बडी निर्दयतासे मारते थे व मनुष्यके कपालपर तल्वारका जख्म करते थे सो सब बद करा दिया है आदि ।'

इसके बाद नगरसेठ गुलाबदासने महाराणा साहब व कुवरको हार पहराया ।

रुक्मणीबाईको विवाह होनेके बाद ही वह गर्भवती हुई और ९ मास बाद एक कन्याको जन्म दिया।

सेठ पानाचदको पुत्रीका लाभ ।

यह पहली सतति थी जो सेठ पानाचदको प्राप्त हुई सेठ । पानाचदने सामान्य रूपसे उत्सव किया । माता कन्याको पालने लगी।

पालीताना राज्यमे जिस नये मदिरको बडे परिश्रमसे सेठ माणिकचद और नवलचदने तय्यार कराया था उसकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त माघ शुक्ल ९ स० १९५१ नियत था। जिसके लिये २ मास पहलेसे खास तयारिया करानेके लिये सेठ माणिकचदजीने मुनीम धर्मचदको ताकीद की थी । नई धर्मशालाके जमीनमे दो दो सौकी लागतके १० कोठे बनवाए तथा जो २००) दे उसीका नाम लिखा जाय ऐसा प्रस्ताव किया । ठहरनेके लिये श्वेताम्बरी धर्मशालाए भी ली गई । भावनगर व गोघाके भाई एक मास पहलेसे यहा रहकर सब प्रबन्ध करने लगे । प्रतिष्ठाकार शोलापुरके **सेठ हरीभाई देवकरण** और **रावजी कस्तूरचदजीने** १ मास पहलेसे अपनी ओरसे

पालीताना मंदिरकी प्रतिष्ठा ।

भोजनशाला खोल दी थी कि किसी जैनी भाईको भोजनपानका कष्ट न हो । बम्बईसे तीनों भाई सर्व कुटुम्ब सहित पालीताना कई दिन पहलेसे आ गए थे । शोलापुरके बहुत महाशय तथा गुजरात देशके व कुछ उत्तर हिन्दुस्थानके यात्री करीब ९०००के जैनीभाई एकत्र हो गए थे । **भट्टारक कनककीर्ति** प्रतिष्ठाकारक थे। श्री शातिनाथ स्वामीके धातु व पाषाणके मनोहर बडे २ बिम्ब निर्माण कराए गए थे । मंदिर भी बहुत ही रमणीक स्वर्गपुरीके मंदिरके समान तय्यार हुआ था । रगावेजी व पत्थर व चादी-का काम था । जो यात्री पालीताना गए है उनको उस मन्दिरकी शोभा याद होगी । इस समय सूरतकी गादीके भट्टारक श्री गुणचद्रजीको निमंत्रण नही किया गया था तोभी आप आगए थे । दोनो भट्टारक अपने २ मान पुष्ट करने व पैसा एकत्र करने-की ही धुनमे थे उपदेश व धर्मचर्चाका ख्याल न था । दोनोंमे बात बातपर तकरार होती थी । ज्ञान कल्याणकका दिन माघ सुदी ४ रात्रिको ७ बजे था परन्तु श्री गुणचद्रजी भट्टारकने बडा ही विघ्न किया और कहा कि मेरे आम्नायवालोने जितनी प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई हैं उनको सूरमत्र हमदेंगे तथा हमे कितना रुपया दोगे ? जबतक यह पक्का न होगा कल्याणक न होने देंगे। सूरमत्र देनेके समयमे परस्पर मतभेद होनेसे रात्रिके १२ बज गए तब कल्याणक हुए । यहा तब **भाट** लोगोंने झगडा किया कि प्रतिमाके आभूषण हमको मिलने चाहिये पर पुलिस व राज्यका उत्तम प्रबन्ध होनेके कारण कोई फिसाद न होकर सर्व शाति रही और सानन्द प्रतिमा माघ सुदी ९ को विराजमान करदी गई । प्रतिष्ठा-

कारकोंने २२००) यहांके ठाकुर साहबको **नजराना**के दिये। प्रतिष्ठाकारकोंने अपने प्रणके अनुसार रू० ११०००) श्रीजिनमंदिरजीके भंडारमे भी दिया और सर्व खर्चा। उठाया सेठ पानाचन्द माणिकचन्द और नवलचन्दजीने भी रू० २१००) भंडारमे दिये। तीनों भाइयोंने इस प्रतिष्ठाको निर्विघ्न पूरी करनेमें पूर्ण परिश्रम उठाया।

पालीताना धर्मशालाका प्रबन्ध।

मंदिर प्रतिष्ठाके बाद सेठ माणिकचंदको चिंता हुई कि धर्मशालाका काम पूरा होना चाहिये। उसके लिये आपने अनुमान पत्र १२०००) रु० का बांधा जिसमे २५००) का एक बंगला तथा कुछ कमरे ४००) रु० व कुछ २००) रु० वाले बनन तजवीज किये। यात्रामे आए हुए लोगोंसे बहुत कुछ भरवाए, ४००) आपने दिये और १२०००) का प्रबन्ध कराके काम जारी करनेकी सूचना मुनीम धर्मचंदको की। जो १००००) का कर्ज सेठोंने मंदिर निर्माणके लिये दिया था सो इस प्रतिष्ठाकी आमदसे वसूल हो गया।

रूपाबाईकी १२३४ उपवासकी तपस्या।

सेठ प्रेमचंदकी माता अपनी वैधव्य अवस्थामें व्रत उपवास करनेमें बहुत ही दक्ष थी। हर समय धर्मध्यानमें अपना काल बिताना यही इसे इष्ट था। सं० १९९१ मे बाईने १२३४ **बारहसौ चौतीस उपवास**के करनेका नियम धारण किया।

संवत् १९५२ में सेठ माणिकचंदजीने हीराचंद नेमचंदजीसे पूछा कि आपके जैन बोधकसे मालूम हुआ कि रायबहादुर सेठ मूलचंदजी अजमेरके प्रयत्नसे श्री धवलादि ग्रंथोंकी नकल होनी शुरू होगई है तथा ३००श्लोक पहले लिखे भी गए थे सो क्या वह काम जारी है या बन्द हो गया।

धवलजयधवलके उद्धारकेलिये चंदा।

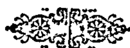
तब सेठ हीराचंदने कहा कि वह काम यों बन्द होगया है कि सेठजी उस प्रतिको अजमेरके लिये चाहते थे सो वहांवालोंने इनकार किया इससे वह काम योंही रह गया। तब सेठ माणिकचंदने कहा कि यदि वे ग्रंथ सड जायगे तो फिर कहांसे आएंगे ? दूसरे आप कहते थे कि वे जिस लिपिमें हैं उसे सिवाय ब्रह्मसूरि शास्त्रीके दूसरा कोई जानता नहीं है तथा शास्त्रीजीकी उम्र ९९ वर्षकी है। यदि यह कालवश होगए तो नकल भी न हो सकेगी। इससे यदि वहांवाले दूसरे स्थानपर ग्रन्थ देना नहीं चाहते तो अभी यही प्रबन्ध कीजिये कि उसकी वहां दो नकलें हो जाय एक कनडी लिपिमें व एक बालबोध हिन्दी लिपिमें, इतना काम बहुत शीघ्र होना चाहिये। तब सेठ हीराचंदने कहा कि इसके लिये तो वे लोग अवश्य कबूल कर लेंगे पर हमें ब्रह्मसूरि शास्त्रीके साथ दो प्रवीण लेखक और रखने पड़ेंगे जो कनडी व बालबोधमें लिख सकें। इस सबके लिये कमसेकम १००००) का प्रबन्ध होना चाहिये सो कैसे हो, तब सेठ माणिकचंदने कहा कि १००) सौ सौ रुपयेके १०० भागकर लिये जावें पहले दस रुपये करके १०००)तहसील कर काम शुरू किया जावे। जब काम

चलने लगे तब फिर २५) पचीस २ वसूल किये जावें। इस तरह काम पूरा किया जावे । हीराचंदजीके दिलमें यह बात जम गई, उसी समय ब्रह्मसूरि शास्त्रीको यह सब हकीकत लिखी । वहाँसे उत्तर आया कि इसमें कोई हर्ज नहीं है । मूडबिद्रीवाले खुशीसे स्वीकार करेंगे तथा मैं पूर्ण परिश्रम करके प्रति लिपिका प्रबन्ध कर दूंगा । फिर सेठ हीराचंदजीने जैन बोधक अंक १२९ मास मई १८९६में यह बात प्रकाशित की और सौ सहायक मांगे । इस अपीलको देखते ही सेठ माणिकचंद पानाचंदजीने १०१) का एक भाग लेना स्वीकार किया। उन्हीका अनुकरण धरमचंद अमरचंद, शोभागचंद मेघराज, माणिकचंद लाभचंद, सेठ जवारमल मूलचंद, गुरुमुखराय सुखानंद आदि १३ बम्बईके व गांधी हरीभाई देवकरण आदि १९ शोलापुरके व अन्य फलटन, दहीगाव, इंदी आलंद व सेठ हरसुखराय फूलचंद आदि ११ कलकत्ताके सब मिलाकर आक्टूबर १८९६ तक सब १४२२९) की स्वीकारता हो गई । लाला रूपचंद सहारनपुरने **जैन गजट** पत्रमें मालूम कर १००) की सहायताका पत्र जुलाई मासमें पंडित गोपालदासजीको बम्बई भेजा । सेठ हीराचंदजीने जबानी पक्की बात करनेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको शोलापुर बुलाया । वे मार्गसिर सुदी ४ को आए तब सेठ माणिकचंदजीको बुलानेके लिये तार दिया । तार पाते ही सेठ माणिकचंद गांधी रामचंद नाथाके साथ सुदी ६ को शोलापुर पहुंचे । शोलापुरकी मंडलीके सामने ब्रह्मसूरि शास्त्री को १२५) मासिक व आने जानेका खर्च देनेका ठहराव हुआ तथा शास्त्रीजीने पौष मासमें मूलबिद्री जाकर प्रति-

लिखना कबूल किया । इनके पास **गजपति उपाध्याय** भी लिखनेके लिये नियत किये गए । दोनो महाशयोंने मूलबिद्री जाकर मिती फागुण सुदी ७ बुधवारको पुस्तकोंके लिखनेका काम शुरू कर दिया । फिर शाके १८२७ चैत्र सुद १० को ब्रह्मसूरि शास्त्री-का पत्र शोलापुरवालोंके नाम आया कि जयधवलके १५ पत्रे अर्थात् १५०० श्लोक लिखे गए । इतनेमे मगलाचरण, मार्गणास्थल और गुणस्थानकी चर्चाका निरूपण है । पुष्पदत आचार्यने प्राकृत भाषामे सूत्र बनाए उसके ऊपर गुणधर महाराजने ललितपद न्यायसे सस्कृत और प्राकृतमे टीका बनाई है ।

सेठ माणिकचद हीराचद ऐसे धर्मात्मा पुरुषोंके उद्योगसे रुपया भी एकत्र हो गया तथा कई वर्ष तक **ब्रह्मसूरि शास्त्री** जीते रहे पर वे ग्रथोकी लिपिको पूर्ण किये विना ही **कालके वश** हो स्वर्ग पधारे । तबसे **गजपति उपाध्यायने** धवल व जयधवलकी दोनो प्रति लिखकर पूर्ण कर ली है । तथा इस वर्ष तीसरे **महाधवल** ग्रथकी प्रति करानेका काम सेठ हीराचदजी मूलबिद्री जाकर प्रारभ करा आए है । तथा इस बातकी कोशिश चल रही है कि इन ग्रथोकी कई प्रतिया होकर भिन्न २ स्थानोमे रहें जिससे पठनपाठन हुआ करे व एक स्थलमे विघ्न आनेपर भी प्रतियोंकी अनुपलब्धि न हो पर मूलबिद्रीके पट्टाचार्य और भाई अभी तक वृथा ममत्व करके ऐसा करनेपर राजी नही हुए है ।

श्री धवल ग्रथके जीर्ण ताडपत्रके पत्रे ५९२ है सो कनडी प्रति जो अब हुई इसके २८०० व बालबोध लिपिके १३२२ पत्रे है । इसमे ७३००० श्लोक है ।



स्याद्वादवारिधि, न्यायवाचस्पति वादिगजकेसरी स्वर्गीय
पंडित गोपालदासजी बरैया.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ २४३

मगनबाईजीको पुत्रीका जन्म।

मगनबाईजीका विवाह सूरतमे जिस कुन्टुबमें हुआ था वे यद्यपि प्रतिष्ठित और धनाढ्य थे पर एक बहुत साधारण बुद्धि और संकुचित हृदयके थे। सास व पति दोनो यही चाहते थे कि यह रात्रि दिन घरका काम काज किया करे, सीना परोना करे, अनाज फटके दले। मगनबाईजीको पुस्तक बाचने व कुछ धर्म ग्रथ देखनेका शौक था परन्तु सास व पतिके भयसे इनका धर्म व अन्य पुस्तकोंका देखना, लिखना, पढना बिलकुल बन्द हो गया था केवल प्रतिदिन चद्रप्रभु स्वामीके मदिरके दर्शन करना व जाप देना इतनी ही धर्म क्रिया होती थी। यह मदिर उनके घरके निकट ही है। यदि कदाचित् भूलसे कभी कोई पुस्तक हाथमें लेती व सास ससुर देख लेते तो बहुत ही क्रोधित होते थे। साधारण ससारिक प्राणीकी तरह रहते हुए इस कन्याका चित्त भीतरसे प्रफुल्लित नही रहता था। जो अपने पिताकी सुहवतमें बैठती, उनकी बातें सुनती, अनेक समाचार पत्र व पुस्तके बाचती व धर्म ग्रथकी भी स्वाध्याय करती उसका मन केवल घरके धन्धोंमें कैसे ठीक रह सक्ता था ? इससे मगनबाईजी थोडे दिन यहॉ रहकर पिता द्वारा बम्बई बुला ली जाती थी। वहा चित्त प्रसन्न रहता पर पतिसे इसको प्रेम, यह पतिमें अनुरक्त व उसकी भक्त सो बम्बई ज्यादा न ठहरकर सूरत चली आती। खेमचद और मगनबाईको सं० १९५२में एक पुत्रीका लाभ हुआ। खेमचदकी माता व पिताको पौत्रीके लाभसे बहुत हर्ष हुआ। मगनबाई-जी चद्रमुखी समान सुन्दर पुत्रीको प्राप्त कर प्रेमसे पालने लगीं

और अब अधिक सूरतमें ही रहने लगी। धीरे २ धार्मिक रुचि घट गई, ममारिक रुचि बढ गई। पुस्तक देखनेकी भी याद न रही सो कायदेकी बात है। जिस विषयका सस्कार अधिक रहता है वही पक्का हो जाता है और वह पिछले असरको धो डालता है।

प० गोपालदासका व्याख्यान व वीरचद राघवजीका परिचय।

ता० १७ मई सन् १८९६को जैन यूनियन क्लब बम्बईमें पडित गोपालदासजीका "अष्टकर्म" पर व्याख्यान हुआ। इसमें सेठ माणिकचद-जी आदि दिगम्बरी, वीरचद राघवजी, फतेहचद कपूरचद **लालन**, हीरजीभाई आदि श्वेताम्बरी भाई मौजूद थे। व्याख्यान बहुत ही युक्ति पूर्ण और विद्वत्ता-पूर्ण हुआ। वीरचद राघवजी व हीरजीने व्याख्यानकी प्रशसाम धन्यवाद प्रगट किया। सभाके पीछे राघवजी और प० गोपालदासका परस्पर वार्तालाप होनेसे दोनों विद्वानोंको बहुत आनन्द हुआ।

वीरचदजीका पुनः विदेश गमन।

श्वेताम्बर जैनसमाजने **वीरचंद राघवजीके** कार्यको इस कदर सराहना दी कि उनके चित्तमें फिर अमेरिका जानेका विचार हुआ और सन् १८९६ में ही अपने स्त्री बच्चों सहित प० फतेहचद कपूरचद **लालनके साथ अमेरिका रवाना हो गए**। खेद तो इस बातका है कि ऐसा फल देखकर भी किसी दिगम्बर जैन विद्वानको भेजनेका प्रबन्ध दिगम्बर जैन समाजने नहीं किया और न कोई दिगम्बर जैनग्रेजुएट

ही तय्यार मिला कि वह जावे। हरएक काम साहस और पूर्ण प्रयत्नसे होते हैं। जहां प्रमाद है वहा कार्य्यसिद्धि कोसों दूर है।

सेठ हीराचद नेमचद व सेठ माणिकचद जैनियोंमें ऐसे प्रख्यात हो गए थे कि हरएक मुख्य कामके लिये सेठ हीराचदको प० लोग इनकी याद करते थे। पं० लालनने

लालनका पत्र। चिकागोसे सेठ हीराचंदको ता २ फर्वरी १८९७ को एक पत्रद्वारा श्री ज्ञानार्णव और आप्तमीमासाकी वचनिका व दूसरे अध्यात्मज्ञानके ग्रंथ मंगवाए और लिखा कि यहा बहुतसे अमेरिकनोंने मासाहारका त्याग कर दिया है।

सेठ माणिकचंदजीके मंत्रित्व और प० गोपालदासजीके उपमंत्रित्वमें बम्बई सभा बहुत कुछ जैनसमाजके

बम्बई दि० जैन परीक्षालय। उद्धारार्थ प्रयत्न करने लगी। पाठकोंने वह गुजराती पत्र वाचा ही होगा जो सेठ माणिकचदने जेठ दूजा वदी ९ संवत् १९४१को सेठ हीराचदको लिखा था कि एक मडल ऐसा स्थापित हो जो सम्पूर्ण मुल्कोंमें जैन धर्मज्ञानको फैलावे, कुरीति मिटावे आदि। उसी अपने अतरग भावकी पूर्ति सेठ माणिकचदजी, प० गोपालदासजी आदिकी सहायतासे धीर२ करने लगे। वास्तवमें विचार कब होता है और कार्य्य कब होता है। जहाँ [illegible] होता है वहाँ कालान्तरमें यदि कोई [illegible] वह पुरा

वर्षके १७ शहरोंकी पाठशालाओंके १४६ छात्रोंने रत्नकरड, द्रव्यसग्रह, प्रमेयरत्नमाला, चद्रप्रभुकाव्य आदिमे परीक्षा दी, १०९ पास हुए और ११७) का इनाम बाटा गया । उस समय बम्बई, जैपुर, खुरई, शोलापुर, हिसार, सिरसावा, अलीगढ, दिल्ली, मुरादाबाद, कामा, प्रयाग, शिवनी, शेरकोट, वर्धा, अमागढ, रोहतककी पाठशालाएं शामिल हुई थी । अधिकसे अधिक विषय धर्ममें तत्वार्थसूत्र, व्याकरणमें कातत्र, काव्यमे धर्मशर्माभ्युदय, न्यायमे प्रमेयरत्नमाला थे । आज भी वही परीक्षालय सेठ रावजी सखाराम दोशी शोलापुरके प्रयत्नसे नियमित रूपसे चल रहा है । यद्यपि पाठशालाओंकी सख्या बहुत नही बढी—२०-२५ ही शामिल होती है पर पठन विषय बढ गया है । अब गोम्मटसार, राजवार्तिक, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमार्तड, शाकटायन, जैनेन्द्र, यशस्तिलक आदिमें छात्र परीक्षा देते है ।

जैनधर्मपुस्तक प्रचार ।

इस धर्मके प्रचार बढानेके लिये सेठ माणिकचदने चौपाटीपर एक पुस्तकालय खोल दिया था । जितनी जहा कही भी पुस्तकें छपती थीं उनकी बहुतसी प्रतिया मंगा लेते थे और उन्हे चौपाटी दर्शनार्थ आनेवाले भाइयोंको न्योछावर लेकर व बहुतोंको योंही देते थे । पाठशालाओंमें अर्धमूल्यपर व कहीं भेट भी भेजते थे। सवेरे रात्रिको आप अपना कुछ समय व उपयोग इस काममें भी लगाते थे। जैन बोधक अंक १३४ माह अक्टूबर सन १८९६ मे आपने नोटिस भी छपवा दिया था कि तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीका हमारे यहाँसे मगाई जावे ।

सेठ पानाचन्दको और पुत्रीका लाभ ।

सेठ पानाचन्दकी पत्नी रुक्मणीबाईकी पुत्री लीलावती अब २॥ वर्षके करीब हो गई थी तब फिर एक पुत्री का जन्म हुआ । यद्यपि सेठ पानाचन्दकी यह भावना थी कि पुत्रका दर्शन हो तो शुभ है क्योंकि "सेठ माणिकचन्द पानाचन्द" जब फर्मका नाम था तब जो व्यापारी व मित्रवर्ग इनसे मिलते व इनसे व दूसरोसे इनके पुत्रोके सम्बन्धमे प्रश्न करते उसे उत्तर देते वक्त एक प्रकारका सकोच भाव चित्तमे आजाता था, परतु इस सम्बन्धमें मनुष्यका पौरुष सफल होना उसके बिल्कुल आधीन नही है । इस पुत्रीका नाम सेठजीने **रत्नमती** रक्खा और जन्मके समय यथायोग्य पुजा पाठ व उत्सव कराया । रुक्मणीबाई इस पुत्रीको भी बहुत भावसे व लाड प्यारसे पालने लगी ।

मगनबाईजीको और पुत्रीका लाभ

जैसा पहले कहा गया है संवत् १९५२ में मगनबाईजीके एक पुत्रीका जन्म हुआ था। तबसे यह अधिकतर सुरत रहती थी और गृहस्थीमे खूब रचपच रही थी इष्ट वियोगका निमित्त होने वाला था इससे वह पुत्री जिसे मगनबाईजी गोदमे रखकर और उसका प्रसन्न मुख देख देखकर मनमें हर्षित होती थी—जैसे कोई पक्षी किसी फूलपर आसक्त हो उसको बारबार स्पर्श करै तैसे यह उसके मोहमे लवलीन थी। पर वह जीव बहुत अल्प आयुकर्मको बाधकर आया था। करीब १ वर्षके ही जी कर उस पुत्रीने मगनमतीकी गोदको खाली कर दिया। जैसे किसीके पास १ हजारकी थैली हो और उसे कोई लूटले तब उ-

सको जो दु ख होता है उससे असत्य गुणा दु ख इस समय मगनबाईजीको हुआ । इसको खानापीना न रुचने लगा । नीचा मुख किये आसू बहाया करे । पति खेमचदको भी शोक हुआ था पर उसके समारिक मित्र अनेक सो उनके सग नगरमे रमने हुए थोडे दिनोंमे शोक भूल गया । पिता माणिकचदजीका अपनी पुत्री मग नबाईपर निज पुत्रसे भी अधिक प्रेम रहता था । पुत्रीके इष्ट वियोगसे उन्हें भी कष्ट हुआ पर चित्त थाँभकर एक शिक्षापूर्ण पत्र अपनी पुत्रीको ऐसा लिखा कि जिसके पढते ही इसका चित्त शात हुआ और पिछली धार्मिक बातें सुनी सुनाई याद हो आई । सेठ माणिकचदजी अपनी पुत्रीको महीनेमे दो चार पत्र भेजने ही रहने थे—सदा शिक्षा देते रहते थे व किसी२ बातमे सम्मति भी पूछते रहते थे । मगनबाईजीको दो वर्ष बाद फिर गर्भ रहा । खेमचदको आशा होने लगी कि अब पुत्रका लाभ होगा, पर अपना विचारा कुछ होता नहीं । सवत् १९५४ मे दूसरी पुत्रीका जन्म हुआ । यह भी सुन्दरशरीर सुडौलअग व मनहारिणी थी । इसे देखकर माताको बहुत सुख हुआ ।

इसका नाम **केशरमती** रक्खा गया। मगनबाईजी इस पुत्रीको पाकर बहुत ध्यान व यत्नसे इसकी रक्षा करने लगी । प्राय छोटे २ बच्चे माताकी असावधानीसे मर जाते है । जो माताए अशुद्ध व अनिष्टकारी भोजन करतीं, रोगी रहतीं, आलस्य करती, समय पर दुग्ध नहीं पिलाती, गर्मी सर्दी हवाका यथोचित यत्न नहीं करतीं उनकी सन्तानका जीना बहुत कठिन हो जाता है। यह

एक रत्नको हाथसे गमा चुकी थी अतएव अब बहुत ही सावधानी से केशरकी रक्षा करने लगीं ।

सेठ नवलचंदको पुत्रीका लाभ ।

श्री शिखरजीकी यात्रासे लौटनेके बाद प्रसन्नबाईजी धर्म सुखसे रहने लगी । पुत्र ताराचंद इस समय ९ वर्षके थे । शालामें पढते थे । रतनचंद ५ वर्षका था जो अपने सुन्दर शरीर और हंस मुखको प्रगट करता हुआ सर्व कुटुम्बको अपनी रमणक्रियासे आनन्दित करता था । अब मिती श्रावण सुदी १२ सं० १९५४ को प्रसन्नबाईजीको एक पुत्रीका लाभ हुआ । यह भी बहुत सुन्दर मुख गुलाबके फूल समान थी । सेठजीने अब भी यथायोग्य जन्मोत्सव किया और इसका नाम माणिकमती रक्खा । माताने जैसे पहली दो सन्तानोंको यत्नसे पाला—किसी तरहका ऐसा निमित्त न आने दिया जिससे अकाल मृत्यु हो, उसी तरह अब यह इस पुत्रीको भी बडी ही सावधानीसे पालने लगी ।

सेठ प्रेमचंदजीकी लग्न ।

इस वक्त सं. १९५४ में सेठ प्रेमचंद सब तरहसे व्यापारमें कुशल, धर्ममे लवलीन व सदाचारसे वर्तन करनेवाले हो गए थे । सेठ माणिकचंदजी और माता रूपाबाई इनको बहुत चाहती थी । अब यह २० वर्षके हो गए । माताने बाल अवस्थामें विवाह करनेका बिल्कुल भी विचार नहीं किया था क्योंकि रूपाबाई बहुत ही विचारशील थी । भावनगरमें एक सेठ गुलाबचंद अमरचंदजी बागडिया थे उनकी कन्या **चंचलबाई** थी जो यद्यपि स्वरूपवान थी पर कुछ सुकुमारागी तथा अशक्त थी इसीके साथ सगाई हुई । बारात

ावनगर बडी धूमसे गई। सेठोंने वहा अच्छी रकम खर्च करके बहुत ाम किया। रूपाबाईजीने वहा धर्मकी खूब प्रभावना की इसम ५०००)से कम खर्च न पडे होंगे। सेठ प्रेमचद चचलबाईको व्याह कर सुखसे रहने लगे।

अ-यापक ।

सवत १९५५ के प्रारभमे बम्बईमे प्लेगका जोर था। तब सेट माणिकचदजी आदि सूरत आए और ेठ माणिकचद स्वय यहा कई मास चदावाडी धर्मशालामे ठहरे। सेठजी नित्य श्रीचद्रप्रभुके बडे मदिरजीमे सेवा पूजा करते, जाप देते व बैठते उठते थे। क दिन इन्होंने विचार किया कि यहाँ कोई ऐसा साधन अब ही है जिससे बालकोंको कोई दर्शन, व भगवानके नाम भी बतावे था कुछ बालक यहाँ सीखने योग्य मालूम पडते हैं। आपने लोगो-ो कहकर बालकोंको २ घटेके लिये मदिरजीमे बुलाया और बतक आप कई मास तक सूरत रहे नियमित रूपसे बालकोको रोज रात्रिको दर्शन, स्तुति, णमोकार मत्र, निर्वाणकाण्ड भाषा, च मगल आदि सिखा कर उनका बहुत ही उपकार किया और उन ालकोंको इनाममे भी बार २ छोटी-२ धार्मिक पुस्तकें, रूमाल आदि ेते थे जिससे बालकोंका उत्साह बढता था।

सेठ माणिकचदजीमे और धनाढ्योंकी भाति समयका दुरुपयोग करने व आलस्यमे पडे रहनेकी आदत नहीं थी। जैसे चीटी हमेशा काम करती नजर आती है ऐसेही सेठ माणिकचद सदा ही कोई न कोई काम करते हुए ही देख पडते थे। सूरत ऐसे विलासप्रिय नगरमें दूसरे धनाढ्य जैसे राग रगमे लगे थे ऐसी रुचि सेठ

माणिकचंदजीकी नहीं थी। इसीसे सेठजीके चित्तमें बालकोंपर दया आई और उनको **स्वयं धर्मशिक्षा देकर** अटूट ज्ञानदान किया। यह उदाहरण इस बातके प्रगट करनेके लिये बस है कि सेठ माणिकचंदको धार्मिक शिक्षाका कितना प्रेम था।

मूलचंद किसनदास कापड़ियाका प्रथम परिचय।

थोड़े दिन बाद कुछ कार्यवशात् सेठ माणिकचंदजी सूरत आये थे तब एक दिन सेठजी चंद्रप्रभुके मंदिरजीमें धर्मकार्यसे निबट कर पाटे पर बैठे थे तब एक बालकको दर्शन करते हुए देखकर इनके मनमें आई कि यह कुछ होनहार मालूम होता है, इंग्रेजी पढ़ता मालूम होता है। उसको कुछ उपदेश करना चाहिये। यही वह **मूलचंदजी कापड़िया** थे जो इस समय भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं, "दिगम्बर जैन" मासिकपत्रके सम्पादक हैं, जैनमित्र साप्ताहिक पत्र-के प्रकाशक, 'जैनविजय' प्रेसके स्वामी और रात्रिदिन जैन जातिकी सेवामें लीन हैं। उस समय इनकी आयु १७ वर्षकी थी। यह बीसा हूमड मंत्रेश्वर गोत्रधारी सूरतनिवासी सेठ किसनदास पूनमचंद कापडियाके तृतीय पुत्र हैं।

इंग्रेजी छठी स्टेन्डर्डमें पढ़ते थे पर धर्म साधनमें सिवाय दर्शन करनेके कुछ नहीं जानते थे। जब यह दर्शनकर चुके तब सेठजीने इनको बुलाया। पास बैठाकर पूछा कि तुम कुछ धर्मकी बात जानते हो। जबाब ना का पानेपर फिर सेठजीने यह जानकर कि यह संस्कृतके साथ इंग्रेजी पढ़ते हैं कहा कि धर्मज्ञानके बिना धर्म-सेवन नहीं हो सक्ता है—केवल इंग्रेजी पढ़नेसे लाभ न होगा। तुम

मेरी साथ चन्दावाडीमें चलो। मैं एक पुस्तक तुमको दूगा जिसको तुम हररोज पढना। इस बालकको बडा ही हर्ष हुआ जब इसने एक गभीर मुख धनवान सेठको अपनेसे इस तरह बात करते हुए देखा। सेठजी अपने पास हमेशा ही कुछ धर्मकी व कुछ मासाहार रोकनेकी पुस्तकें बाटनेके लिये रखते थे। उस समय सेठ हीराचन्द नेमचन्द द्वारा मुद्रित **श्री रत्नकरडश्रावकाचार** हिन्दी और मराठी अर्थ सहित इनके पास था वही इनके योग्य है ऐसा समझकर उनको चन्दावाडीमे ले जाकर वह पुस्तक दी और प्रतिदिन बाचनेका नियम दिलाया। मूलचद इस पुस्तकको पाकर बहुत प्रसन्न हुए और खुशी २ अपने घर गए। अब यह सेठसे कभी २ मिलने लगे और धर्मकी बातें मालूम करने लगे। थोडे दिन बाद सेठजी बम्बई लौट गए।

मगनबाईजीका वैधव्य।

सेठ माणिकचदजीको स० १९५५ **भारी शोकोद्पादक** रूपमें आया। श्रीमती मगनबाईजीकी गोदमें जब केशर ११ मासकी खेलती कूदती थी, अपनी मुलकनसे माता पिताको प्रसन्न करती थी तब यकायक एक दिन सवेरेके समय खेमचदका मग्ज गर्म हो गया, खून चढ गया, पलगमें लेट गए, माता व स्त्री भी आ गई, पिता भी आए, तरह २ के उपचार होने लगे। पर देखते २ बाया इतनी बढी कि दो घटे भी पूरे नहीं हुए थे मगनमती बड़े सकोचमे पुत्रीको लिये हुए बैठी देख रही थी, माता दवाई दरमतमें लगी हुई थी कि यकायक खेमचदने आखें फाड दीं, देखते २ जीव शरीरसे निकल गया। सारे अग उपाग आत्मा

विना अनात्मभूत जड़ हो गए– आकार रहते हुए भी चेतना विना किसी कामके न रहे। माता वारवार पुकारती है-"खेमचद, खेमचद" पर खेमचद शब्दको समझनेवाला चेतन ही जब नहीं तब कौन मुखको प्रेरणा करे कि तू हा कह। वेबोल, प्राणरहित, मुर्दा शरीर जानकर माता जमीनपर गिर पडी । **मगनबाई हाय हाय करती हुई धाड़े मारकर रोने लगी** । केशरके भी रुआई आ गई। इतनेमे जितने और घरमे थे आए। खेमचंद चल बसे इस खबरने सर्वको शोकसागरमे डुबा दिया । इस समय सबसे अधिक नुकसान यौवनवती १९ वर्षकी अति स्वरूपवती, सुशील, पतिप्रेमिनी मगनमतीको हुआ था । उसके दिलको थामनेवाला, उसके मुखको प्रेमसे निरखनेवाला, उसे स्नेहभावसे प्यार करनेवाला, उसके यौवनरूपी मकरदका पिपासु भ्रमर, उसके एक मात्र जीवनका आधार, उसके दुःख सुखमें एक अनुपम साथी इस वर्तमान पर्यायसे चल बसा और इसे अपने जन्म-भर एकाकी विधवा अवस्थामे छोड गया। वह घर जो थोडी देर पहले गार्हस्थ्यमई सुखमे डूबा हुआ था सो बातकी बातमें शोकके अधकारसे व्याप्त हो गया । यदि किसीका राज्य छिन जाय, धन लूट जाय यहा तक कि उसे वस्त्र रहित कर दिया जाय तो भी दुःख नही होता है जितना कि एक जीवनके आधार इष्ट वस्तुके सदाके लिये वियोग हो जानेपर होता है । वास्तवमे यह **संसार असार है**, यह एक माया जाल है, जो इसमें लुभाता है वह सदा त्रास पाता है, जो ज्ञानी होता है और अपनी आत्मीक विभूतिको पहचानता है वह जब अपने शरीरमें ही नही लुभाता उसके सम्बन्धी अन्य वस्तुयोंसे कैसे प्रेम करेगा ? ऐसे ज्ञानीके



श्रीमती मगनबाई वैधव्यावस्थामें.

(देखो पृष्ठ ३०३) J V P. Surat.

लिये किसीका सयोग व वियोग हर्ष या विषादका कारण नहीं है पर ऐसे ज्ञानी जगतमे विरले है । अनादि मिथ्यात्वके सस्कारसे मानते हुए भी तुर्त परके लोभमे फस जाते हैं। खेमचदके शरीरकी दाहादि क्रिया हुई । मगनमतीने शृगार उतारा । सौभाग्यके वस्त्र आभूषण डालकर उदासीन कपडे पहने क्योंकि अब इसका जीवन वीतराग विज्ञान स्वरूप धर्मके साथ ही रमण करनेमे बीतनेवाला था । बम्बई तार दिया गया। समाचार पाते ही सेठ माणिकचन्दको इतना कष्ट हुआ कि जैसा कोई हृदयमे वज्रका आघात करे। इस समयका दु ख सेठजीको अपने जन्ममे और कभी नही हुआ था। सेठजी इसे अपने पुत्रके स्थानपर मानते थे । इसकी युवानीमे इसके ऊपर विधवापनेका पत्थर गिरते हुए स्वाभाविक है कि ऐसे दयापूर्ण-मायालु पिताको दु ख हो। माता चतुरबाईजीने जब सुना। उसके रोने कूटने विलखनेका पार नहीं रहा । महान त्रास रूप अवस्थामे डूब गई। इसकी हाय हायने सर्व कुटुम्बको जमा कर दिया। माता रूपाबाई आदि सर्व ही ऐसे दु खित हुए कि जिसका वर्णन नही हो सका । सबके मुख फीके पाला पडे वृक्षकी तरह हो गए। परिणामोंकी विचित्र गति है । एक जातिके भाव एक अन्तमूहूर्तसे अधिक नही रहते । नाना सकल्प विकल्पोको करते हुए जब सेठजीके चित्तमे शास्त्रोंकी बातें याद आने लगी—सती सीता, अजना, द्रोपदी, चन्दना, अनतमती आदि सतियोंके चरित्र स्मृतिमे आए । जब शभूकुमार व चद्रनखाका चरित्र याद आया तब चित्तमे धैर्य हुआ कि ससारमें सर्व ही प्राणी अपने बाधे हुए कर्मोंके वश हैं। यह दु ख कोई नया नहीं है बडे २ पुण्याधिकारियोंके ऊपर

भी ऐसे सङ्कट आ जाते है, आप सम्हले और फिर सर्व कुटुम्बको संसारकी असारता दिखाते हुए सम्हालने लगे ।

अब विधवा मगनबाईजीको रह २ कर पतिकी यादके साथ पिताकी सगति याद आने लगी । सेठजी भी यही विचारने लगे कि अब मगनबाईको यहीं अपने पास रखना चाहिये और उसके आत्माका कल्याण हो ऐसा मार्ग उसे बताना चाहिये। यदि वह सूरत रहेगी उसका जीवन विगड जायगा । उसकी सासको धर्मविद्याका प्रेम नहीं है । यह वहा पुस्तक तक न देख सकेगी । घरके कामकाजमें ही फसकर अपना जन्म खराब करेगी जैसा कि प्राय होता है कि स्वार्थी सास व श्वसुर अपनी विधवा बहूको पढने लिखने व धर्मके तत्व जाननेकी ओर नही लगाते। बस उसको एक दासीक समान घरमें रखते है। बर्तन मजवाना, अनाज फटकवाना, लडकीको खिलाना आदि काम अच्छी तरह लेते है तब कही सबके पीछे बचा खुचा व रूखा मूखा भोजन खानेको देते है अथवा यदि उम्र छोटी हुई व धनाढय हुई तो सास श्वसुर उसे गहने कपड़ेसे लादे रखते है। वह सीना परोना करती है व खाली बैठे २ बुरे विचारोंकी सडक अपने दिलमें बना लेती है। ऐसा विचार कर सेठजी १ महीने पीछे ही मगनबाईजीको बम्बई ले गये। चौपाटीके बगलेमें जब यह आई तब माता चतुरबाई इसको लिपट गई और धाडें मार २ कर रोने लगी । । चतुरबाईका मन सूक्ष्म बातको गृहण करने योग्य न था। ---म्बके मोहमे अति लवलीन थी। शरीरकी सुकुमालता, पुत्रके जीवित

विधवा मगनबाईको पिताद्वारा विद्याभ्यास ।

न रहनेकी चिन्ता, शरीरका अस्वस्थ रहना, वे तीनों ही कारण ऐसे थे कि जिनसे उसका चित्त आकुलताका स्थान बन रहा था। अब चौथा अपनी प्राणप्यारी पुत्रीके पतिवियोगका महान क्लेश जिससे चतुरबाईकी चिन्ता और संकटका ठिकाना न रहा। उसके दिल्से यह सदमेंपर सदमे दूर ही नहीं होते थे। सेठ माणिकचंदजी और स्वयं मगनबाई बहुत समझाती थी पर मोहकी लहरोंने उसे ऐसा विह्वल कर रक्खा था कि उसको बिल्कुल धैर्य नहीं होता था। चित्तके शोकसे शरीर और अधिक अस्वस्थ होगया था।

इधर सेठ माणिकचंदजी अपने पुत्र समान मगनबाईकी आत्माको जानते थे। २, ३ मासमे ही एक वयोवृद्ध, अनुभवी, उदासीन एक विद्वान पंडित माधवजीको मगनबाईको संस्कृत और धर्म पुस्तक पढानेके लिये नियत किया और मगनबाईको सेठने आज्ञा की कि तुम रात्रिदिन विद्या साधनमें ही ध्यान दो इसीसे तेरा भला होगा। तू घरके कामकाजमे भी मत फसे और न व्रत उपवास कर शरीरको सुखावे, तुझे विद्या आजायगी तो तू स्वपरोपकार करके अपना जन्म सफल करेगी। सेठजीके शब्द ये थे—

"व्हेन, घरनू कामकाज अने व्रत उपवास बाजुए मुकीने भणो"

सेठजी मगनबाईको बहन कहकर पुकारते थे। सेठजीने चतुरबाईको भी समझा दिया कि तुम मगनबाइसे कुछ घरका काम न लेना, इसे मन लगाकर विद्याभ्यास करने देना। परमोपकारी पिताकी ताकीदसे मगनबाईजीका चित्त धीरे २ धर्मसाधन व वैराग्यमे जमता गया। पंडितजीके द्वारा धीरे २ बाईने संस्कृत मार्गोपदेशिका व्याकरण दो भाग, थोडा अमरकोश, थोडी लघुकौमदी, थोड़ी न्यायदीपिका

पढी तथा दि० जैन परीक्षालयद्वारा प्रवेशिकाकी तीन परीक्षाए धर्म मे पास की। इसवक्त लाहौरके बाबू ज्ञानचदने आत्मानुशासन और मोक्षमार्ग प्रकाशको तथा देवबदके जैनीलालने बड़े रत्नकरड-श्रावकाचारको छापकर प्रसिद्ध कर दिया था। सेठजी छपी पुस्तकें रखते है यह प्रसिद्ध हो गया था, इससे जो कोई भी पुस्तक छपाना था सो पहले सेठजीके यहॉ भेजता था। सेठजी स्वय पसद कर यदि उपयोगी समझते तो उसकी बहुतसे कापिया बाटने व न्योछावर लेकर देनेके लिये मंगा लेते थे। नए छपे हुए ग्रथोंको वैराग्यउत्पादक जान सेठजीने मगनबाईजीसे बाचनेको कहा। धीरे २ मगनबाईजीने आत्मानुशासन, रत्नकरड श्रावकाचार, व मोक्षमार्गप्रकाशका स्वाध्याय करके अपनी परिणतिमे बहुत फेर कर लिया और स्वाध्यायको बराबर जारी रक्खा।

प लालनका उपदेश।

प फतहचद **लालन**को अध्यात्मज्ञानका अभ्यास था और यह सेठ माणिकचदजीके पास मिलने आया करते थे। मगनबाईजी चौपाटी बगलेपर सेठजीके पास ही रात्रिको बैठकखानेमे बैठती थी। जब सेठजी आनेवालोंसे बात करते तब यह भी सुनती और अपने अनुभवको बढाती थी। प लालन द्वारा आत्माकी कथनी सुननेसे मगनबाईजीको अध्यात्मिक रुचि भी हो गई। युवावस्था होनेपर भी इनके भाव वैराग्यमें भर गए और यह पिताकी आज्ञामे चलती हुई, शास्त्रीसे विद्या अभ्यास करती हुई, स्वाध्यायमे मन लगाती हुई अर्थात ज्ञानके सुखमें मगन होकर धीरे पतिवियोगके शोकको बिलकुल भूल गई और अपने जीवनको ज्ञान मित्रके साथ कल्लोल करनेमें सफल

मानने लगी। यह सब पूज्य परोपकारी सेठ माणिकचंदका ही प्रताप था जिससे आज मगनबाईजी दि० **जैन स्त्री समाज**में बहुत ही स्तुत्य काम कर रही हैं और **श्राविकाश्रम** द्वारा अपने समान अनेक बाइयोंको आत्मरचिताली और परोपकारिणी बनानेका उपाय कर रही हैं।



अध्याय नवां।

समाजकी सच्ची सेवा।

संवत् १९५६का महा विकट साल आ गया। इस वर्ष चारो ओर भारतमे दुष्काल ही दुष्काल आ गया।

सं० १९५६के दुष्कालमें ५०००) की मदद।

गुजरात, काठियावाड, मेवाड भी अन्न और जलके महाकष्टसे पीडित हुआ। सेठ माणिकचन्दजीका चित्त करुणादानसे द्रवीभूत होयगा। इस निकटवर्ती प्रान्तके अकाल पीडितोकी सहायताके लिये सेठजीने रु० ५०००) दान किया तथा **बडौदा**मे सेठ फकीरचन्द प्रेमचन्द जे० पी० ने **एक हिन्दू बालाश्रम** खोला उसमे भी आपने ३००) दिये। बम्बई दि० जैन सभाके सभासदोंको एकत्र कर आपने बेतुल आदि मध्य प्रदेशके जैनी भाइयोके आए हुए पत्र सुनाकर प्रगट किया कि एक जैन-अनाथालय भंडार स्थापित होना चाहिये। चूंकि आप स्वयं दातार और अग्रगण्य थे। आपकी सूचनाको बम्बईके भाइयोंने मान्य करके ता० ९ नवम्बर १८९९ को यह भंडार खोला तथा २११४) का चंदा तुर्त हो गया जिसमें आपने १०१) दिये व सबसे अधिक सेठ जीतमल कन्हैयालालने ५०१) व सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीने २२२) प्रदान किये। लाला नेमनाथ हाथरसवालोंने इसमे बहुत मदद दी। सभाकी ओरसे भारतवर्षीय दि० जैन महासभाकी आज्ञानुसार बेतुल शहरमें बाबू गोविन्द लाहनू हेडमास्टर वर्नाक्युलर स्कूलकी मारफत एक आहारदानशाला खोली गई इसके द्वारा ता० ७-१२-९९

को २५ अनाथ जैनबालक रहने गए। इनको भोजन वस्त्रके सिवाय धार्मिकशिक्षा आदि देनेका भी प्रबन्ध कराया गया। आकलूज व पंढरपुरमें भी ऐसी आहार दानशालाएं खोली गई। बैतुलमें ३० बालक हो गए उनकी रक्षा सभा द्वारा बराबर होती रही। ९ लड़कोंको बैतुलसे नागपुर विद्याभ्यासके लिये भिजवाया गया।

जैन विद्यार्थियोंके कष्ट निवारणार्थ बम्बईमें जैन बोर्डिंगका विचार।

सूरतके एक दिगम्बर जैन छात्र केशवलाल डाह्याभाईने मेट्रिकुलेशनकी परीक्षा पास की थी और कालेजमें भरती होनेके लिये बम्बई आया था उस समय यहां हिन्दुओंका केवल एक ही बोर्डिंग था जिसका नाम **गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंग हाउस** था। यह छात्र उसीमें रहनेके लिये गया। उसके कार्यकर्ताओंने इसको स्थान नहीं दिया। तथा सुपरिन्टेन्डेन्टकी बातचीतसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह इसी लिये स्थान नहीं देते हैं कि यह केशवलाल जैनी है। इसको बड़ी निराशता हुई, तब इसने यह सब हाल विद्यार्थियोंके पिता सेठ माणिकचंदजीसे कहा। आपको उस वक्त बड़ा भारी ख्याल आया कि जैसे यह आज भटकता है व निराश्रय होकर अपमान सहता है ऐसे और भी छात्र भटकते होंगे व उदास होकर व शिक्षण लेनेसे बन्द रहते होंगे। जैनियोंमें अब इंग्रेजी पढ़नेकी रुचि हुई है तब कालेजमें भी पढ़ने आवेंहीगे अतएव परदेशी जैन छात्रोंको आश्रय देनेका कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। उस छात्रके तो ठहरनेका सेठजीने तुर्त प्रबन्ध कर दिया और रात्रिको सेठ हीराचंद नेमचंदजीसे सम्मति ली कि क्या करना चाहिये। परम सच्चे मित्र हीराचंदजीने

सम्मति दी कि आपके पास लक्ष्मीकी कृपा है इससे आप एक जैन बोर्डिङ्ग स्थापित करें, दक्षिण व गुजरातके अनेक छात्रोंको बडा भारी लाभ पहुचेगा । बेलगाव निवासी अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी ए. भी उस वक्त कालेजमे पढते हुए चौपाटीपर सेठजीके बगलेमे ही रहते थे सो रात्रिको सेठजीके साथ बैठकर बातें करते थे और प्रेरणा करते थे कि आप कोई धर्मका काम करो मुख्य समति बोर्डिंगकी देते थे जिससे भी सेठजीको इस कार्य करनेपर विशेष रुचि हुई और यह बात सेठजीके दिलमे गड गई । वास्तवमे जिस मित्रके ऊपर विश्वास और प्रेम होता है उसकी बात तुर्त ही दिलमें बैठ जाती है फिर आपने दूसरे दिन अपने भाई पानाचद, नवलचद और प्रेमचदसे सलाह ली । अपने पुत्र समान मगनबाईजीको भी बिठाला और सब हकीकत बयान की । प्रेमचदके विचार बहुत ऊंचे थे और सेठ माणिकचदकी भाति धर्म व विद्याकी उन्नतिमे पूर्ण लवलीन थे । प्रेमचद बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि **काकाजी**, आप इस कामको अवश्य करें । सेठ पानाचदने कहा कि अभी तक हम लोगोंने अपने **पूज्य पिताके स्मरणमें** कोई काम नही किया है इससे उन्हींके नामसे बोर्डिंग कायम किया जाय तथा **लाख पौन लाख रूपये** लगाकर बहुत अच्छी इमारत तय्यार की जाय जो देखनेमें व आराममें भी ठीक हो । सेठ नवलचदजीने भी कुछ विरोध नही किया तब स्थानकी सलाह हुई तो जुबिली-बागके पास ही स्थान बनाना निश्चित हुआ क्योंकि वह स्थान शहर व कालिजोंसे बहुत दूर नही है और हवा भी अच्छी है । तथा यह भी तय हुआ कि इसी वर्ष इस कामको पूरा करना

चाहिये। दूसरे ही दिनसे सेठजीने स्थानकी तजवीज करना व नकशा बनाकर और पसन्द कराकर होशियार मिस्त्रीके द्वारा काम प्रारम्भ करा दिया।

बम्बईमें दि० जैन प्रान्तिक सभाका स्थापन।

इसी वर्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन **महासभा**का चतुर्थ अधिवेशन मिती कार्तिक वदी ९ सं० १९५६से ७ मुताबिक ता २३ अक्टूबर १८९९से २९ तक श्री जम्बूस्वामीकी निर्वाण भूमि चौरासी मथुरामें हुआ। इस समय इस सभाके महामंत्री **मुंशी चम्पतरायजी** डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर, कानपुर थे जिन्होंने महासभाका कार्य्य बड़ी ही रुचिसे अपने जीवन पर्यन्त किया और अनेक विघ्नोंके आनेपर भी इसे स्थिर रक्खा। महासभाको बाकायदा महासभा बनानेमें स्वर्गवासी बाबू बच्चूलालजी प्रयाग निवासीने अपनी उम्रभर जी तोड परिश्रम किया था। उन्हींके उद्योगसे इस महासभाकी रजिष्ट्री सर्कारी एक्ट नं० २१ सन् १८६० ई० के अनुसार हुई। इस वर्ष महासभाने **प्रस्ताव नं० १** इस विषयका स्वीकृत किया कि "तमाम भारतवर्षमें प्रान्तिक सभाएं कायम की जावें जो सर्व प्रकारसे इस महासभाके उद्देश्योंको प्रचलित करनेमें सहायता देवें" तथा इस कार्य्यके करनेका भार बाबू बनारसीदास एम ए हेडमास्टर विक्टोरिया कालेज लश्करके सुपुर्द किया गया। यह महासभाके ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी कई वर्षोंतक रहे और रातदिन इसकी उन्नतिमें जी तोड परिश्रम किया। आपने ही महासभाके दो प्रभावशाली वार्षिक अधि-

और **सहारनपुरमें** कराए तथा बहुतसी पुस्तकोंकी मददसे इंग्रेजीमें एक जैन इतिहास सिरीज न० १ Jain Itihas Series पुस्तक रची जिसके प्रचारसे यह अज्ञान अंधकार कि जैनी नास्तिक हैं या बौद्ध या हिन्दू धर्मकी शाखा हैं या प्राचीन नहीं हैं बिलकुल उड गया। जैन इतिहास सोसायटी कायम कर जबतक आप लस्कर रहे बहुत काम किया। सहारनपुरमें वकालत करनेके पीछे व परस्पर महासभाके कार्यकर्ताओंमे मनमिलान न रहनेसे आपने यकायक जैनजाति सम्बन्धी सब काम छोड दिया। यह जैन कौमके अभाग्यकी बात है। बाबू बनारसीदासने बम्बई प्रान्तिक सभा स्थापित होनेके लिये बम्बई सभाके मत्री सेठ माणिकचन्दजीको पत्र लिखा उसके अनुसार मिती कार्तिक सुदी ९ स० १९९६ को बम्बई सभाकी प्रबन्धकारिणी सभाकी बैठक हुई।

इस सभामे यह निश्चित हुआ कि प्रान्तिक सभा स्थापित हो तथा उसकी नियमावली बनानेका कार्य सेठ माणिकचद हीराचद, सेठ रामचदनाथा, प० गोपालदासजी और प० पन्नालालजीके सुपुर्द हुआ और मिती कार्तिक सुदी १४ को उपदेशकसभाकी बैठकमें सेठ हरसुखराय अमोलकचदके सभापतित्वमे वह नियमावली पास की गई तथा तय हुआ कि प्रान्तके मुख्य २ भाइयोंको भेजकर सभासद बनाए जावें और तब इसका काम शुरू किया जावे। बम्बई सभा सेठ माणिकचद और प० गोपालदासजी ऐसे उत्साही सचालकोंके द्वारा बहुत कायदेसे ऐसे २ काम बराबर करती रही जिससे सारे भारतवर्षको लाभ हो। इस वक्त सभाके पास पाठशाला खातेके सिवाय उपदेशफडका खाता भी था जिसके द्वारा उपदेशक

भेजकर दौरा कराया जाता था। मिती मगसर सुदी ८ से बाबू जुगलकिशोरजी देवबन्द उपदेशक नियत हुए थे जिन्होंने कुछ दिनों तक बहुत स्थानोंमें भ्रमण कर उपकार किया। सरस्वती भंडार खातेसे संस्कृतादि ग्रंथ संग्रह किये जाते थे, पारितोषिक भंडारसे परीक्षालयद्वारा भारतवर्षके विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उत्तम छात्रोंको ईनाम दिया जाता था। औषधालय खाता था जिससे दवाई बटती थी।

सेठ माणिकचंदजी व्याख्यानदाता।

सभामें कभी २ सेठ माणिकचन्दजी भी व्याख्यान देते थे। सं० १९५३ में मिती आषाढ सुदी १४ की सभामें आपने ४ शिक्षाव्रत पर गुजराती भाषामें सेठ हरसुखराय अमोलकचंदके सभापतित्वमें बहुत गंभीरतासे कहा था।

प्रेमचंद मोतीचंद व्याख्याता।

सेठजीके भतीजे सेठ प्रेमचंद मोतीचंद जौहरीमें बहुत अच्छी योग्यता थी। यह भी हर एक सभामें आते और कभी २ व्याख्यान दिया करते थे। श्रावण सुदी १४ को सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें आपने सप्त तत्वोंका वर्णन बहुत योग्यतासे किया जिससे पं० गोपालदास व अन्य सभासदोंको ऐसा निश्चय हुआ कि यह अपने काका माणिकचंदकी भांति परोपकारी व समाजसेवक होगा।

प्रेमचंदजीका द्वितीय विवाह ।

प्रेमचदजीकी प्रथम स्त्री चचलबाई बहुत अशक्त तथा बीमार रहती थी । १ वर्ष ही के पीछे ही वह इस शरीरको छोड कर चल दी । माता रूपाबाई तथा प्रेमचदका ऐसा ही भवितव्य था यह जान शात मन रहे । इस वर्ष माताने प्रेमचदका द्वितीय विवाह ग्वालियर राज्यके **जावद** निवासी एक वीसाहूमडकी कन्या **चम्पाबाई**जीके साथ किया । यह कन्या स्वरूपवान, सरल स्वभावी, और आज्ञानुसार चलनेवाली थी । इसके लाभसे माता व प्रेमचदको बहुत सन्तोष हुआ ।

फूलकुवरीको कन्याका लाभ ।

सेठ माणिकचदजीकी प्रथम पुत्री फूलकुवरीको एक कन्या जन्मी जिसका नाम **कमलावती** रक्खा तथा जन्मोत्सव करके इसकी रक्षाका पूरा यत्न किया । इसके दो वर्ष बाद दूसरी पुत्री हुई जो सिर्फ पाच दिन ही जीवित रहकर मृत्युके वश हो गई इस समय फूलकुवरीको भी असाध्य बीमारी हो रही थी और एक मास बाद वह भी चल बसी ।

सेठ पानाचंदजीको पुत्रका लाभ ।

सेठ पानाचदकी स्त्री रुक्मणीबाई सतानकी रक्षामे बहुत चतुर थी तथा इसके इस समय सतति–वियोग करानेवाले कर्मोंका उदय न था । लीलावती ४ वर्ष और रतनमती २ वर्षकी थी तब भी यह बाई पुन गर्भवती हुई । इस समय पानाचदको यद्यपि पुत्रकी निराशासी थी पर पुण्यके उदयसे शुक्र०

मिती आश्विन वदी १४को बाईने एक पुत्ररत्नको उत्पन्न किया। पुत्रका लाभ देख पानाचन्दजीको और विशेष कर माणिकचन्दजीको बहुत ही हर्ष हुआ क्योंकि अब तक इन दोनोंके कोई भी पुत्र जीवित नहीं था और बाजारमें ये मान्य गिने जाते थे। सेठ माणिकचंदजीने खूब धूमधामसे मंदिरजीमें पूजन कराई, दान बांटा, वस्त्रादि दिये, गाना बजाना हुआ। बड़े भाईके चित्त प्रसन्नताके अर्थ इस जन्मोत्सवको इसतरह किया कि जिससे इसकी बहुत प्रसिद्धि हुई व माता रुक्मणीको बहुत संतोष हुआ। अपनी ५१ वर्षकी आयुमें पुत्रलाभ होनेसे सेठ पानाचंदको अकथनीय आनन्द हुआ। सेठजीने इसकी रक्षाका पूरा २ यत्न किया।

बम्बई सभामें शिखरजी व जैनमित्र। मिती मार्गशीर्ष वदी १० संवत १९५६ को सेठ माणिकचंदजीने बम्बई सभाकी प्र० कमीटि बुलाई। ८ सभासद एकत्र हुए। सभापति सेठ हरसुखराय अमोलकचंद किये गये, उपमंत्री पं० गोपालदासजीने भारतवर्षीय दि० जैन महासभाका वह प्रस्ताव नं० ३ जो उसने ता० २४-१०-१८९० को पास किया था, पेश किया। वह प्रस्ताव यह था।

"महासभा प्रस्ताव करती है कि श्री सम्मेद शिखरजीके झगड़ेके विषयमें जो सबकमेटी मेले हायरसमें स्थापित हुई थी वह अब तोड़ दी जाय और उसका चार्ज बम्बई सभाके सुपुर्द हो। इस कामके खजाञ्ची सेठ माणिकचंद पानाचंदजी जौहरी, बम्बई निवासी नियत किये जावें। जिन भाइयोंके पास इस विषय सम्बन्धी द्रव्य हो वह उक्त सेठ साहबके पास मय हिसाब किताबके भेज देवें और आगेको भी उन्हींके पास भेजते रहें (एक

नकल इस प्रस्तावकी बजरिये चिट्ठी बम्बई सभाको भेजी जावेगी)

सेठ नवलचन्दजी सवत् १९९३ में **शिखरजी** गए थे तब ६०००) का चंदा करके सीतानालेसे कुन्थनाथ स्वामीकी टोंकतक ५००० **सीढ़ियां** बनवानेका काम मुनीम हरलालजीके सुपुर्द कर आए थे। सीढियोंका काम चलाया गया। ७०० सिढिया बन गई थी। इतनेमें श्वेताम्बरी लोगोंको यह बात पसन्द न आई। ये सीढिया सर्व जैन स्त्रीपुरुषोंके आरामके लिये बनवाई गई थी इस बातका कुछ भी विचार न करके श्वेताम्बरी भाइयोंने ता १२ जनवरी सन् १८९९ को रात्रिके समय चोरीसे २०९ सीढिया तुडवा डाली और इस अनुचित क्रियासे महान कर्मका बंध किया। इसपर फौजदारी मुकद्दमा हुआ जिससे श्वेताम्बर कोठीके दो भाइयोंको कुछ दिनकी सजा व मुचलके हुए। इस समय हरलालजी मर गए थे। रावजी बीसपथी कोठीके मुनीम थे। इसीने यह फौजदारी मुकद्दमा चलाया था। बम्बई सभाने सर्व जैनियोंको सूचनार्थ ४००० विज्ञापन हाथरसके मेलेपर बांटे तथा महासभाको सूचना दी। उसने मुकद्दमेकी पैरवीके लिये एक कमेटी बनाई थी उसने प्रमादवश कोई यथोचित कार्रवाई न की। उधर श्वेताम्बरियोंने हाईकोर्टमें अपील की जिससे दिगम्बरियोंकी तरफसे ठीक पैरवी न होनेसे असफलता हुई इसीपर महासभाने उक्त प्रस्ताव पास किया था।

सभासदोंने इस प्रस्तावको स्वीकार किया तथा निश्चय किया कि वकीलोंकी राय लेकर दीवानीमें मुकद्दमा चलाया जाय और एक होशियार आदमी कोशिश करनेके लिये नियत किया जाय। इसी अतरंग सभामें सभाके कार्योंको विस्ताररूपमें लानेके

लिये प० गोपालदासजीने एक मासिक पत्रकी आवश्यक्ता बताई। सबके ध्यानमें जचने पर "**जैन मित्र**" पत्रके निकालनेका निश्चय किया गया। सम्पादक प० गोपालदासजी वरैया और प्रोप्राइटर सेठ **माणिकचंदजी** नियत हुए। आपने स्वीकार किया तथा पत्रमें यदि घाटा रहे तो दो वर्षके वास्ते अधिकसे अधिक १००) साल सेठ माणिकचंद पानाचंदजी और ५०) साल सेठ नाथारंगजीने देना स्वीकार किया। सेठजीको समाजोद्धारका कितना प्रेम था इसका यह भी एक नमूना है।

सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगका महूर्त।

बम्बईमें शीघ्र ही बोर्डिंगका मकान सेठ माणिकचंदजीके प्रयत्नसे तय्यार हो गया जिसका वास्तुविधान (मुहूर्त) मिती मगसर सुदी ६ को बडी धूमधामके साथ किया गया। इस बोर्डिंगका नाम सेठ पानाचंद आदि सेठोंने अपने पूज्य पिताके स्मरणके लिये उन्हींके नामसे सेठ **हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग** रक्खा। बोर्डिंगके लिये २६०४ वार जमीन ली गई थी। इस पर तीन खनकी सुन्दर इमारत छात्रोंके रहनेके लिये बनाई गई जिसकी इमारतकी स्थावर मिल्कियत २५०००) की तथा बोर्डिंगके मकानके सामने इसी जमीनमें ४००००) की मिल्कियतका एक मकान बनाया गया जिसका भाडा बोर्डिंगके खर्चमें लगे तथा ५०००) की खुली जगह गिरद स्ट्रीटके नाकेपर रक्खी गई। कुल ७००००) स्थावर मिल्कियतमें १२५०) फरनीचर, ४५०) रसोईके वर्तन इस तरह ७१७००) ट्रष्टी फंड खाते रखकर यह रकम चारों सेठोंकी तरफसे नीचे लिखे ट्रष्टियोंको ५ अप्रेल सन्

१९००को सुपुर्द करके ट्रष्टडीड रजिष्टर कराया गया जिसकी इंग्रेजी नकल पाठकोंके ज्ञानहेतु अंतमे दी गई है।

ट्रष्टी—

१ सेठ पानाचंद हीराचंद
२ सेठ माणिकचंद ,
३ सेठ नवलचंद ,,
४ सेठ प्रेमचंद मोतीचंद
५ सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी शोलापुर　　[बम्बई.
६ सेठ राजा धरमचंद राजा दीनदयाल प्रसिद्ध फोटाग्राफर,

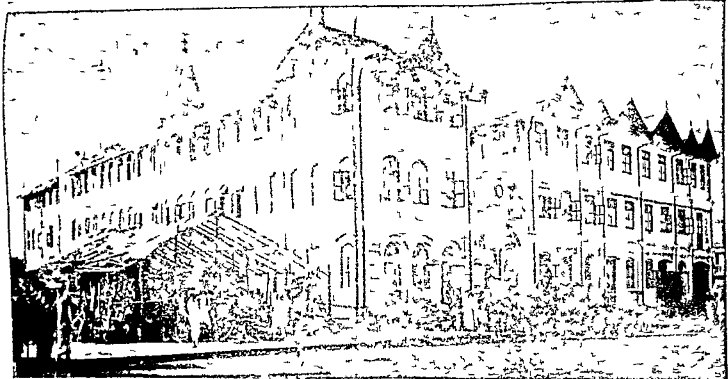
इस बोर्डिङ्गके तीन मजलोंमे सुपरिन्टेन्डेन्टके रहनेके स्थान व रसोइघरके सिवाय २२ कमरे है जिनमे ४७ छात्र रह सक्ते है। ट्रष्टडीडमें खास ३ नियम हैं कि—

(१) हीराचंद गुमानजीके वशमेसे दो ट्रष्टी हमेशा कमेटीमे रहेंगे यदि वशमें कोई न रहे तो उनके निकट सम्बन्धियोंमे रहेंगे।

(२) ट्रष्टीकी सख्या कमसे कम ३ व अधिक ८ होगी।

(३) ट्रष्ट कमेटी व उसके द्वारा नियत प्रबन्ध कारिणीमे सब मेम्बर दिगम्बर जैन होंगे।

(४) इसमें मेट्रिकुलेशन पास जैन छात्र भरती किये जाते हैं उनमें सबसे पहले सस्कृत द्वितीय भाषा रखनेवाले दिगम्बरी छात्रोंको, फिर अन्यभाषा रखनेवाले दिग० छात्रोंको फिर संस्कृतवाले श्वेताम्बरी छात्रोंको फिर अन्यभाषा वाले श्वे० छात्रोंको स्थान दिया जाता है फीस किसीसे नहीं ली जाती। इट्रेन्ससे नीचे व चौथे क्लासके



सेठ हीराचन्द गुमानजी बोर्डिंग स्कूल-बम्बई. (देखो पृष्ठ २१९)

Jain Vijaya P Press,

ऊपरके छात्र मेनेजिंग कमेटीकी रायसे भरती होते हैं।

(५) दिगम्बर जैनधर्मकी शिक्षा सर्वको लेनी होगी व वार्षिक परीक्षा देनी होगी।

(६) नित्य दर्शन पूजाके लिये एक दिगम्बर जैन चैत्यालय रहेगा।

(७) २३ कमरोंमेंसे ४ संस्कृत विद्यार्थियों रहनेके लिये रहेंगे।

(८) जो ४००००)की मिलकियतका मकान है उसका खर्च देकर जो भाडा बचेगा उसमेंसे ५) रु सैकडा अमानत खाते जमाकर ३००) रु० साल दिगम्बर जैन मंदिरके खर्चके लिये निकालकर बाकी गरीब छात्रोंको छात्रवृत्ति देनेमे खर्च किया जायगा जिसमे ५०) सैकडा बोर्डिंगमें रहनेवाले छात्रोंको, ४०) सैकडा परदेशमें पढनेवाले छात्रोंको और १०) सैकडा जैन धार्मिक शास्त्रोंको मुख्यतासे पढनेवालोंको दिया जाय।

ता० १७ जून सन् १९०० को ऊपरके ६ ट्रष्टियोंके सिवाय नीचे लिखे मेम्बर प्रबन्धकारिणीमे और शामिल किये गए-७ प० गोपालदासजी बरैया, ८ सेठ गुरुमुखराय सुखानंद, ९ गांधी रामचंद नाथा, १० पंडित धन्नालाल काशलीवाल, ११ परीख चुन्नीलाल प्रेमानंद, १२ जौहरी चुन्नीलाल झवेरचंद, १३ अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी ए एल एल बी। इनमेंसे ट्रष्टके इस नियमके अनुसार कि सेठोंके वंशमे जो बडा ट्रष्टी होगा सो सभापति रहेगा, जौहरी पानाचंद हीराचंद सभापति, खजान्ची झवेरी प्रेमचंद मोतीचंद सेक्रेटरी, हीराचंद नेमचंद आ० माजिस्ट्रेट शोलापुर तथा ज्वाइन्ट सेक्रेटरी जौहरी चुन्नीलाल झवेरचंद नियत हुए।

ऊपरके छात्र मेनेजिंग कमेटीकी रायसे भरती होते हैं।

(५) दिगम्बर जैनधर्मकी शिक्षा सर्वको लेनी होगी व वार्षिक परीक्षा देनी होगी।

(६) नित्य दर्शन पूजाके लिये एक दिगम्बर जैन चैत्यालय रहेगा।

(७) २३ कमरोंमेसे ४ सस्कृत विद्यार्थियों रहनेके लिये रहेंगे।

(८) जो ४००००)की मिलकियतका मकान है उसका खर्च देकर जो भाडा बचेगा उसमेंसे ५) रु सैकडा अमानत खाते जमाकर ३००) रु० साल दिगम्बर जैन मदिरके खर्चके लिये निकालकर बाकी गरीब छात्रोंको छात्रवृत्ति देनेमे खर्च किया जायगा जिसमे ५०) सैकडा बोर्डिंगमें रहनेवाले छात्रोंको, ४०) सैकडा परदेशमें पढनेवाले छात्रोंको और १०) सैकडा जैन धार्मिक शास्त्रोंको मुख्यतासे पढनेवालोको दिया जाय।

ता० १७ जून सन् १९०० को ऊपरके ६ ट्रष्टियोंके सिवाय नीचे लिखे मेम्बर प्रबन्धकारिणीमे और शामिल किये गए—७ प० गोपालदासजी बरैया, ८ सेठ गुरुमुखराय सुखानद, ९ गाधी रामचद्र नाथा, १० पडित धन्नालाल काशलीवाल, ११ परीख चुन्नीलाल प्रेमानद, १२ जौहरी चुन्नीलाल झवेरचद, १३ अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी ए एल एल बी। इनमेंसे ट्रष्टके इस नियमके अनुसार कि सेठोंके वशमें जो बडा ट्रष्टी होगा सो सभापति रहेगा, जौहरी पानाचद हीराचद सभापति, खजाञ्ची झवेरी प्रेमचद मोतीचद सेक्रेटरी, हीराचंद नेमचद आ० माजिस्ट्रेट शोलापुर तथा ज्वाइन्ट सेक्रेटरी जौहरी चुन्नीलाल झवेरचद नियत हुए।

वर्तमानमें ट्रष्टी इस प्रकार है—

१ जौहरी नवलचंद हीराचंद—प्रमुख।

२ सेठ हीराचंद नेमचद दोशी शोलापुर—मत्री।

३ जौहरी ताराचद नवलचद।

४ मि० लल्लूभाई प्रेमानद परीख एल. सी ई

५ जौहरी ठाकुरदास भगवानदास—उपमंत्री।

तथा मनेजिंग कमेटीमे ऊपरके सिवाय नीचे लिखे मेम्बर और हैं—

६ सेठ गुरुमुखराय सुखानद।

७ पडित धन्नालालजी

८ सेठ लल्लूभाई लक्ष्मीचद चौकसी

९ ,, रामचद नाथारगजी

१० ,, चुन्नीलाल हेमचद जरीवाला।

११ ,, लाला प्रभूदयालजी।

१२ ,, अमृतलाल विट्ठलदास वामी

१३ ,, पानाचद रामचद दोशी।

१४ ,, हीरालाल जयचद दोशी।

इस वोर्डिंगका काम नियमित रूपसे जून १९०० से प्रारभ किया गया उस समय रा० रा० चौगुले बी० ए० सुप० नियत हुए व दि० ३ और श्वे० १० ऐसे १३ छात्र भरती हुए। सन् १९०१ की परीक्षाके समय ३७ छात्र थे जिनमें केवल १० दिगम्बरी व २७ श्वे० थे। इनमें सस्कृत द्वितीय भाषा रखनेवाले २२ थे। पर सन् १९१२ में २४ दि० व ११ श्वे० थे व सस्कृत

भाषावाले ३२ छात्र थे। तथा सन् १९१४ में २९ दि० व १३ श्वे० व सस्कृत भाषावाले ३९ थे तथा वर्तमानमे ३७ दि० व १४ श्वे० छात्र हैं व सस्कृत भाषावाले ४९ हैं। दिगम्बरियोंकी अब सख्या बढनेका कारण उनमें शिक्षाकी ओर अधिक झुकाव है। श्वे० की कमीका कारण एक तो स्थानका अभाव, दूसरे मदिरपथी व स्थानकवासियोंके भिन्न २ बोर्डिंग खुल जाना है। जिस समय यह हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंग, खोला गया उस समय बम्बईके हिंदुओंमें सिवाय गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंगके और कोई न था।

सन् १९०१ मे बोर्डिंगमें रहनेवाले ९ छात्रोंको ४२) मासिक व परदेशमे पढनेवालोंको २६) रु० मासिक छात्रवृत्ति दी गई थी। इनमे सूरत निवासी केशवलाल डाह्याभाई नामका वह छात्र भी है जिसके निमित्त यह बोर्डिंग खोला गया। इसे १०) मासिक सहायता दी गई। सन १९१२ की सालमें बोर्डिंगवासी १७ छात्रोंको अधिकसे अधिक १८) मासिक तक कुल रु० २३४१) सालमें दिया गया। इनमे एक श्वे० छात्र भी शामिल था। तथा परदेशमें पढनेवाले १० दिग० छात्रोंको २७०) रू० व अहमदाबाद बो० के छात्रोंको ४८०) ऐसे ७५०) दिये गए।

धार्मिक शिक्षा सन् १९०१ में द्रव्य संग्रह, रत्नकरड श्रावकाचार तथा न्यायदीपिकामे हुई थी जिनमें क्रमसे ६, १३ व १ छात्र परीक्षामें लिखित प्रश्नों द्वारा बैठे थे, सर्व पास हुए। सन् १९१२ में धर्म शिक्षाके तीन क्लास थे, जिसका क्रम इस भांति था—

न० १—रत्नकरड श्रावकाचार ७९ श्लोक और तत्वार्थसूत्र ३ अध्याय।

न० २–तत्वार्थसूत्र ४ से ६ अध्याय और पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ९० श्लोक ।

न० ३–तत्वार्थ सूत्र ७ से १० अ० और द्रव्यसंग्रह पूर्ण।

सन् १९१२ मे ३९ इग्रेजी पढनेवालोंमेंसे १८ छात्रोंने परीक्षा दी थी जिसमे १९ पास हुए थे। तथा सन १९१४ में ४२ में से २९ ने परीक्षा दी थी १५ पास हुए। इस बोर्डिंगमे कसरतशाला, रीडिंगरूम, लाइब्रेरी भी है। छात्रोंको इतना आराम व पढनेका सुभीता है कि सर्कारी परीक्षाओंमें यहाके छात्रोंका बहुत अच्छा फल रहता है।

धर्म शिक्षा लेकर जो छात्र यहासे निकल कर जाते है उनमेंसे अधिकाश धार्मिक आचार व उसकी उन्नतिके ऊपर अपना स्वभाव रखते हुए देखनेमे आते हैं जिनके कुछ उदाहरण ये है–

१–दि० बलवत बाबाजी बुगटे, मैट्रिकुलेशन पास, पैतृक कृषिकर्म, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभामे खास भाग।

२–दि० लट्ठे अणाप्पा बाबाजी, एम ए, सर्कारी काम, द० म० सभामे खास भाग तथा Jainism पुस्तक रची है।

३–श्वे० मेहता मकनजी जूठा, बी ए बारिष्टरी, श्वे. समाजमें धर्म व जातिकी उन्नतिमें अग्रसर।

४–दि० परीख लल्लूभाई प्रेमानन्द, एल सी ई, बम्बईमें असिस्टेन्ट कलेक्टर इन्कटैक्स, अहमदाबाद, रतलाम बोर्डि० व

आविकाश्रम बम्बईके मन्त्री व प्रान्तिक सभाके मुख्य कार्याध्यक्ष।

५–श्वे० बरोडिआ उमेदचन्द दौलतचन्द जूनागढ, बी० ए०, श्वे० जैन कन्फरेन्सके मन्त्री।

६–दि० शाह नानचन्द पूनाभाई, भरूच, बी०ए०, मास्टर हाईस्कूल बड़ौदा, नित्य धार्मिक क्रियामें लीन व दि० जैन पाठशालाके निरीक्षक।

७–श्वे० उदानी मनीलाल डुंगरचन्द जेतपुर, एम० ए०, वकील, जाति उन्नतिके कार्मोमें तय्यार।

८–,, अक्ले यशवंत सागप्पा बेलगाम, बी० ए०, सर्कारी रेवेन्यूमें चाकरी, धर्ममें बहुत प्रेम है।

यहांसे जो उत्र पढ़के गए हैं वे अच्छे२ पदों पर प्रतिष्ठित हैं पर उनकी धार्मिक प्रसिद्धिका पता नहीं है जैसे—

१–श्वे० परीख परभूलाल वाघजी गोंडल, एल एल बी, मुनसफ, गोंडल।

२–,, कोठारी प्रभाशाकर त्रीकमजी एल० एम० एड० एम०, चीफ मेडिकल आफिसर उत्तरपुर (बुंदेलखंड)।

३–,, मोदी अमृतलाल बर्द्धमान वासदा, एम० ए० एल० एल० बी०, नायब दीवान वासदा स्टेट जिला सूरत।

४–श्वे० नाणावटी चदुलाल बालाभाई बडौधा, बी० ए०, चीन देशमें शांगहाईमें व्यापार।

५–श्वे० शाह त्रिभुवन ओघवजी भावनगर, बी० ए० एल० एल० बी०, सोलीसिटर ।

६–श्वे० शाह सोमचंद करमचंद राजकोट, बी० ए० एल० एल० बी०, चीफ वकील नवानगर काठियावाड ।

इत्यादि ऊपर लिखित व्यवस्था दिखानेका प्रयोजन यह है कि बोर्डिंगके आश्रयसे कितना लाभ हुआ है । जब तक स्वतंत्र **जैन कालेज** मुख्य २ प्रान्तोंमे न हो तब तक ऐसे बोर्डिंगोंके होनेसे छात्र ऊची शिक्षा लेकर लौकिक उन्नति करेंगे तथा धार्मिक शिक्षाके बीजसे अवश्य उनके जीवनमे धर्म शिक्षा रहित छात्रोंकी अपेक्षा आचरण आदिमें फर्क रहता है ।

यहा पर जो छात्र रहते है उनको दिवसमें शामकी व्यालू करने व कंदमूल आदि अभक्ष्य पदार्थ न देनेका नियम है ।

सन् १९१६ दिसम्बर तक जबसे बोर्डिंग खुला उसका संक्षिप्त नक्शा और भी दिया जाता है ।

१६ वर्षका संक्षिप्त नकशा ।

शुरूसे ३११ श्वे० छात्रोंने लाभ लिया
" २३३ दि० छात्रोंने "
" १८ ने एल एल बी परीक्षा पासकी
" १८ " बी० ए० " "
कुल २४९८०) छात्रवृत्तिमें खर्च किया गया

विद्यार्थी लोनफंड।

इस बोर्डिंगकी कमेटीके आधीन और भी कई फंड हैं जिनका योग्य उपयोग होता है—उनमें एक बहुत उपयोगी फंड **विद्यार्थी लोनफंड** है। इसमेंसे विद्यार्थियोंको कर्ज दिया जाता है **ताकि उनका** अभ्यास न छूटे। इसके लिये सेठ माणिकचंदजीने ता० २९-१०-१९०४ को ५००) अपनी पुत्री **फूलकौरकी यादगारमें** दिये थे। इसमें रुपया आते जाते रहकर सन् १९१२ के अन्तमें रु० १०१९ ॥।≈)। थे इसमेंसे विलायत इंजीनियरीका अभ्यास करनेको जाते हुए **वोरा छोटालाल हरजीवनदासको** ३००) दिये गए थे। यह स्था० स्वे० भाई आजकल बड़ौदा कलाभवनके प्रिन्सिपल हैं। तथा ९०) बनारसीदास जलेसरको बी ए. के अभ्यासके समय दिये गए थे। यह अब वकालत करते हैं। यह सब रुपया पीछे आगया है। सन् १९१२ में ४ छात्रोंको २२३॥≈)॥ कर्जके दिये गए थे। छात्रोंको थोड़ीसी मदद मिलने पर व अपना अभ्यास अच्छी तरह आगे चला सकते हैं। ऐसे२ फंड धनाढ्योंको कायम करके छात्रोंकी सहायता करनी चाहिये।

सेठ माणिकचंदजीका शास्त्र प्रेम।

प्राचीन शास्त्रोंके उद्धारका प्रेम सेठ माणिकचंदमें कितना था इसका एक नमूना तो धवलादि ग्रंथोंकी पुनरावृत्ति है सो आगे बता चुके हैं। दूसरा यह है कि जब विद्वानोंसे आपने मालूम किया कि स्वामी समन्तभद्राचार्यने श्री उमास्वामी कृत दशाध्याय तत्वार्थसूत्र पर **गन्धहस्त महाभाष्य** नामकी ८४००० श्लोकोंमें वृत्ति बनाई थी तथा अब जिसका पता कहीं नहीं

लगता है तब आपने 'जैनमित्र' अक २ फर्वरी १९०० में यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि जो कोई इस ग्रथका हमको दर्शन मात्र करा देंगे उन्हें हम बडी खुशीसे ५००) रु० इनाम देवेंगे।

सूरतमें ही० गु० जैन पाठशालाकी स्थापना।

अपने पूज्य पिताकी यादगार कायम रखनेके लिये स० १९५६ में जैन बोर्डिंगके सिवाय दूसरा स्तुत्य काम सेठ माणिकचदजीने यह किया कि सूरतमें एक "हीराचद-गुमानजी जैन पाठशाला" मिती चैत्र सुदी ९ के दिन सवेरे खपाटिया चकलाके श्री चद्रप्रभुके मदिरजीमे स्थापित की। इसका महूर्त बडी धूमधामसे किया गया जिसका सर्व प्रबन्ध सेठ चुन्नीलाल झवेरचदने किया। सेठ हरगोविन्ददास देवचद मोती रुपावालोंके सभापतित्वमें सभा हुई। बालक और बालिकाओंको इनाम दिया गया तथा तीन शिक्षक नियत करनेका ठहराव हुआ। मिती वैसाख सुदी ३ तक इसमें ३० लडके व लडकिया हो गई थी जो संस्कृत, धर्म शिक्षा व इग्रेजी आदि पढते थे जिनमें प्रवेशिकाके ग्रंथ पढनेवाले ५ छात्र थे। इन्हींमें हमारे उत्साही **मूलचद किसनदास**जी कापडिया भी थे, जिनको सेठजीने रत्नकरड श्रावकाचारकी पुस्तक देकर उत्साहित किया था तथा इन्हींको पाठशालाका प्रथम उपमत्री और पीछेसे मंत्री भी किया था। यह पाठशाला कई वर्षो तक ठीक चली फिर सुस्त हो गई। छात्रोंने आना बन्द किया पर मूलचदजीने बराबर विद्याभ्यास जारी किया जिससे आपने शास्त्रीके पास चद्रप्रभ काव्य तक देख लिया व व्याकरण तथा धर्ममें महासभाके परीक्षालयसे रत्नकरड श्रावकाचार,

तत्वार्थसूत्र, द्रव्यसग्रह, कातंत्र पचसन्धि षट्लिंग और चद्रप्रभ काव्य छह सर्गमें परीक्षाए भी पास कीं और दो परीक्षाओंमें तीन ३ रुपये पारितोषक भी प्राप्त किये।

सुरतमें दि० जैन मंदिरका जीर्णोद्धार।

सूरतमें एक अति प्राचीन मदिर जूना पडा हुआ था जिसके भूमिघरमें ३ बडे भव्य प्रतिबिम्ब थे, जिनमें एक जो श्री पार्श्वनाथजीकी है उस पर सवत् १२३५ है और दो पर कुछ भी लेख नहीं है। इस मदिरका जीर्णोद्धार रु० ७०००) खर्च कर **शेठ चुन्नीलाल झवेरचंदने** कराया तथा इसकी जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा मिती वैसाख सुदी ३ के दिन थी। वास्तुविधान, ध्वजारोहणादि कार्यको विधि पूर्वक करानेके लिये नादणी (कोल्हापुर) के पडित कलाप्पा भरमाप्पा निटवे आए थे। उत्सव बडी धूमधामसे किया गया था।

ललिताबाईका परिचय।

उत्सवमें श्राविकाश्रम बम्बईमें मुख्य आनरेरी सचालिका श्रीमती ललिताबाई अकलेश्वरसे आई थी। यह मुनीम धर्मचदजी सेत्रुजयकी भानजी है। उस समय यह सस्कृतका अभ्यास कर रही थीं। सेठ माणिकचदजीको इसके मिलनेसे बहुत हर्ष हुआ तथा मगनबाईजीको तो एक द्वितीय हस्त ही मानों मिल गया। इसकी भी वैधव्य दशा थी। उमर मगनबाईजीके बराबर ही थी। सेठजीने इस बाईको भी विद्याभ्यासमें खूब दत्तचित्त रहनेके लिये प्रेरित कर दिया। इस समय वे भूमिघरकी प्रतिमाए ऊपर वेदी पर विराजमान की गई। इस मदिरका नाम श्री शातिनाथजीका मदिर प्रसिद्ध हुआ।

राजा लक्ष्मणदासजी-का देहान्त और धर्मशालाका विचार।

सेठ माणिकचदजीको यह जानकर बहुत शोक हुआ कि भारतवर्षीय दि० जैन महासभाके सभापति **राजा सेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई०** मथुरा अपनी केवल ४५ वर्षकी आयुमे १९ नव० सन् १९००के दिन इस ससारसे कुच कर गए। सेठजीको अपनी स्थितिपर ध्यान आया कि मेरी अव स्था अब ४८ वर्षकी है। कालचक्र हरसमय सिर पर घूम रहा है इससे मुझे जो कुछ करना हो सो शीघ्र कर लेना चाहिये। आप सोचने लगे कि बम्बईमें दि० जैन यात्रियोंको जो श्री पालीताना, गिरनार, पावागढ, आबू, तारगा आदिकी यात्रा करते हुए बम्बई आते है ठहरनेकी बडी भारी तकलीफ होती है इससे इनके लिये शीघ्र एक बडी भव्य **धर्मशाला** बन जावे तथा उसमें एक **लेकचर हॉल** भी हो जिससे जैन व जैनेतर विद्वान् अपने अनुभवकी बातें सुनाकर सर्व साधारणका कल्याण करें। दूसरे मेरी इच्छा है कि **गुजरात** व **दक्षिण**मे शीघ्र ऐसे ही **बोर्डिंग** स्थापित हों तथा जो जैनियोंमे **कुरीति** व **अनेकता** फैली है सो मिटै इत्यादि काम जितनी जल्दी हो मुझे करने चाहिये।

जैनियोंमें ८४ जातिके इतिहासके लिये इनाम।

एक दिन अपने विचार किया कि जैनियोंमें ८४ जातिया है पर सिवाय दोचारके और किसीके इतिहासका पता नही तथा प्राचीन शास्त्रोंमें तो सिवाय ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र चार वर्णोंके और जातियोंका पता नहीं चलता। येजातियॉ कैसे हुई इसकी चर्चा भी सभाके मेम्बरोंसे

चलाई पर चित्तको सन्तोष न हुआ तब आपने एक नोटिस 'जैनमित्र' व ' जैनगजट 'में अपने नामसे मुद्रित कराया। यह जैनमित्र अंक १०-११ प्रथम वर्ष सन् १९००में व जैन गजट अंक ४ छठा वर्ष सन १९०१मे मुद्रित है। वह इस भांति है—

५०) रू. इनाम।

" पुराण और शास्त्रोंके देखनेसे मालुम होता है कि पहिले समयमे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार जातियेंही थी। यद्यपि शूद्र जातिके गुणकर्मानुसार खाती, रंगरेज, दरजी, धोबी, कुम्हार, लुहार, आदि जातियें प्राचीनकालसे प्रसिद्धिमे है, परंतु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तथा खासकर जैन वैश्योंमे जुदी २ जातियें अग्रवाल, खंडेलवाल, ओसवाल, जैसवाल, परवार, सैतवाल, बघेरवाल आदि नहीं थी और वर्तमानमें प्रसिद्धि है कि जैन जाति कुछ समय पहले ८४ विभागोंमें विभक्त (बटी हुई) थी, जिनमे की **२०-२५ जातियां** वर्तमान समयमें **मोजूद** भी है और अग्रवाल, खंडेलवाल आदि कई जातियोंकी उत्पत्तिके इतिहास भी प्रसिद्ध है सो इन बातोंके विचारनेसे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि हमारी **यह पवित्र जैन जाति** (वैश्य जाति) **एक ही थी** परंतु पीछेसे अनेक कारणोंसे अनेक जातियाँ (टुकडा) हो गई और उनमेंसे ६०-६० जातियाँ हम लोगोंके जन्मसे ही नष्ट हो गई और रही सही जातियाँ दिनों दिन नष्टहोती जाती हैं जिसका उपाय अनेक जातिहितैषी महाशय अहो रात्रि सोच रहे है परंतु अभी **तक नष्ट होती हुई जैन जातियोंके** उद्धारका

कोई भी उपाय दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हमारी इच्छा है कि जातिहितैषी भाइयोंको पहिले यह बात जानना चाहिये कि—

(१) हमारी बहुत बड़ी पवित्र जैन जातिके ८४ टुकड़े क्यों हुए ?

(२) और सिवाय २०--२९ जातियोंके अन्य जातिया शीघ्र ही क्यों नष्ट हो गई ?

(३) और अब वर्तमानमें कौन २ सी जाति कहा २ पर कितनी २ मौजूद है ?

(४) और उनमेंसे कौन २ सी जाति शीघ्र ही नष्ट होने वाली है ?

(५) और उनके नष्ट होनेके मुख्य २ कारण कौन २से हैं?

(६) तथा नष्ट होती हुई उन जातियोंकी वृद्धि (उन्नति) करनेके कौन २ उपाय है —

इन ७ **प्रश्नोंका उत्तर** प्रमाण सहित सविस्तर मिले विना जातिहितैपियोंके जात्युन्नति कारक उपाय करने हमारी समझमें तो वृथा ही है। इस कारण हम हमारी जातिके परम-हितैपी शोधक विद्वानोंसे **हाथ जोडकर प्रार्थना** करते है कि जो महाशय उक्त प्रश्नोंके उत्तररूप एक "**जैनजाति दर्पण**" नामक इतिहासकी पुस्तक लिखकर भेजेंगे उनको जातिहित साधनेका महान पुण्य और यशकी प्राप्तिके सिवाय उन पुस्तकोंमेंसे ५ **विद्वानोंकी कमेटीद्वारा** जो सबसे अच्छी और प्रमाणीक समझी जायगी उसके रचयिताको ५०) रू. **नकद इनाम** दिये जायंगे। आशा है कि हमारी इस प्रार्थना पर विद्वज्जन

अवश्य ही ध्यान देंगे। जिनको यह पुस्तक बनाना हो वे प्रारंभसे पहले हमको सूचना देकर प्रारंभ करें नहीं तो वह पुस्तक कमेटीमें पेश नहीं हो सकेगी।

जैनियोंका हितैषी—

जौहरी माणिकचंद पानाचंद,,

पोष्ट कालबादेवी, बम्बई।

इस ऊपर लिखित विज्ञापनको पढनेसे सेठ माणकचंदजीमें **जातिप्रियता** कितनी चरम सीमाकी थी उसका **साक्षात् पता** लगता है। जैसे आज कल कोई २ विद्वान् जैन जातिकी कमीके कारणोंको ढूंढ रहे हैं व उसकी वृद्धिके उपायोंको सोच रहे हैं ऐसे ही सेठजीको चिंता थी।

विज्ञापन देने पर भी अबतक इस जैनजातिदर्पणको किसीने भी नहीं लिखा इसका कारण यही है कि **हमारे जैन विद्वान प्राचीन खोज लगानेमें परिश्रम नहीं उठाते।** अब भी यदि कोई इस पुस्तकका पाठक इस सूचनाके अनुसार पुस्तक तय्यार करे तो वह सेठजीकी स्मृतिमें ही समझी जायगी।

पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगा कि जातियोंकी संख्या आदिका ठीक २ पता लगानेके लिये सेठजीने

दि जैन डाइरेक्टरी बनानेका बीज। अनुमान २००००) खर्च कर दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी तय्यार कराके छपाई है जिसका मूल्य ८) है इसके देखनेसे जातियोंकी कमीका पूरा २ पता चलता है पर जो २ विचार ऊपर दर्शाए गए हैं उन ७ प्रश्नोंके उत्तरमें अभीतक किसीने कलम नहीं उठाई है।

बम्बई प्रान्तिक सभाका कार्यारंभ।

इस सभाके स्थापित होनेका पक्का विचार तो कार्तिक सुदी १४ स० १९५६ को बम्बईकी सभामें हो चुका था पर प्रान्तके सभासदोंको नियमावलीके अनुसार एकत्र करनेमे करीब १ वर्षके बीता। मिती आश्विन सुदी २ स १९५७ को इसका एक परोक्ष अधिवेशन होकर २१ सभासदोंकी सम्मतिसे ८ प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

प्रबन्धकारिणी सभा २८ सभासदोंकी नियत हुई उनमेंसे मुख्य सभासद व कार्यकर्ता यह हुए—

सभापति—सेठ माणिकचद पानाचदजी।

उपसभापति—राजा दीनदयालजी।

महामंत्री व 'जैनमित्र'के सम्पादक—पंडित गोपालदासजी बरैया।

कोषाध्यक्ष—सेठ गुरुमुखराय सुखानद।

मंत्री विद्याविभाग-अण्णाप्पा फड्याप्पा चौगुले बी ए।

मंत्री उपदेशक विभाग—सेठ नाथारंगजी।

मंत्री तीर्थक्षेत्र–सेठ चुन्नीलाल झवेरचद जौहरी।

पुस्तकाध्यक्ष–पंडित पन्नालालजी।

शोलापुर, बेलगाव, आमोद, सोजित्रा, आदिके सेठ हीराचद, कुबेरप्पा मरमाप्पा हगले, हरजीवन रायचद, शाह सावलदास प्रभुदास आदि सभासद हुए। मगसर सुदी १५ स १९५७को बम्बई सभाने अपने उपदेशक भंडार, अनाथालय, जैनमित्र, व शिखरजी

सम्बधी काम प्रान्तिक सभाके जिम्मे कर दिये और यह अपना काम जोर शोरसे चलाने लगी ।

सेठ माणिकचदजीकी दानार्थ प्रेरणा।

जैसे सेठ माणिकचदजी स्वय दान करते थे वैसे दूसरोंको भी प्रेरित करते थे। बम्बईके **सेठ माणिकचंद लाभचंद चौकसी**की विधवा पत्नी नवलबाई गु भादो वदी ११ सं १९५६ को गुजर गई। इसको धर्म व विद्याकी रुचि थी। सेठ माणिकचदजी इसको धर्मार्थ खर्च करनेकी सदा प्रेरणा करते रहते थे। मरणके पहले इसने १२०४२) का दान करके यह वसीयत नामा किया कि—

९००१) रु के व्याजसे बम्बईमें एक जैन पाठशाला अपने पतिके नामसे चले।

२०६५) शुभ खातेमें ट्रष्टियोंकी इच्छानुसार।

६०२) मेंसे १००) चादीकी प्रतिमा बम्बई मदिरमें, २९०) सोनेका छत्र सूरतके जूने मदिरमें, ९१) फलटनके आदिनाथ मदिरमे छत्र व उपकरण, २०१) कर्मदहन, जिन गुणसपत्ति, सोलह कारण व दशलक्षणीके उद्यापनमें।

३१५) शिखरजी, गजपथा, चपापुर, तारगा, गिरनार, मागीतुगी, पावापुर, कुथलगिरि, पालीताणा, केशरिया, दहीगाव, सूरतके विद्यानद स्वामी इन १२ स्थानोंमें २५) पचीस २ रुपये व १५) बम्बईके तेरापथी मदिरमें चादीका छत्र।

२०९) मरण क्रियामें खर्च।
२८९४) सम्बन्धियोंको बांटा जाय।
कुल १२०४२)

सेठ माणिकचद पानाचद, सेठ प्रेमचद धरमचंद, सेठ हीराचंद नेमचद शोलापुर, शाह भगवनदास कोदरजी तथा शाह लल्लूभाई लक्ष्मीचद ट्रष्टी नियत हुए।

श्री० चतुरबाईका परलोक गमन।

श्रीमती मगनबाईके पतिके वियोगसे माता चतुरबाईके दिलको बडा भारी धक्का लगा। एक तो वह पहले ही बीमार रहती थी अब अधिक बीमार रहने लगी। जब जब यह मगनबाईजीको देखती इसके आसू भर आते थे। दूसरा दुःख उसके दिलमे पुत्रका जीवित न रहना था। इसको ३ पुत्र व ४ पुत्रियोंका लाभ हुआ पर केवल ३ लडकियें ही जीवित रहीं, शेष सन्तानें केवल गर्भका भार देकर ही व कुछ दिन माताकी गोदको भरी हुई करके खाली कर गईं। शरीरकी **अस्वस्थता** और मनकी दुर्बलता दोनोंने इसको ऐसा दबाया कि गु० मिती मगसर सुदी ८ सं० १९५७ रात्रिको इनको भरोसा हो गया कि अब मेरा जीवन नहीं रहेगा, मगनबाईको पास बिठा लिया। मगनबाईको अंतरंगमे बडा खेद हुआ। सेठजी भी आगए और एक दफे प्रेमदृष्टिसे देखकर बोले—तेरे स्मरणार्थ हम २०००)का दान करते है। इसकी दान सूची भी आप कहते गये और मगनबाईजी लिखती गईं। इस भांति दान किया—

१०००) बम्बईके हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंगके विद्या-



सेठजीकी द्वितीय पत्नी नवीबाई.

J V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ २४२)



सेठजीकी प्रथम पत्नी श्रीमती चतुरबाई.

देखो पृष्ठ (१४३) J. V. P. Surat.



सेठजीकी द्वितीय पत्नी नवीबाई.

J V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ २४२)

थियोंको जो धर्मकी परीक्षामें प्रथम रहे उसे इसके ब्याजसे प्रति वर्ष इनाम देना।

१००) जीवदयाके लिये।
१००) बाहरगावके मंदिरोंमें उपकरण।
१००) बम्बईमें दशलक्षणी पर्वके १० दिन ४ वर्ष तक २५) की पूरी गरीबोंको बाटना।
१००) सुगंधदशमी व्रत और फलदशम व्रतका उद्यापन करना।
१००) अन्य धर्मकी टीपोंमें देना।
१००) बम्बईके उपदेशकभंडारमें।
१००) बम्बई प्रान्तिक तीर्थक्षेत्र खातेमें।
५०) केशरियाजीमें सोनेका छत्र भेजना।
५०) सम्मेदशिखर भंडार।
५०) पालीताना ,,
५०) पावागढ ,,
२५) गजपन्था ,,
५०) पावापुर ,,
५०) शोलापुरकी चतुर्विधदानशाला।
२५) गिरनार भंडार
२५) चंपापुर ,,
२५) औषधालय केकडी।
१६) सूरत जैन पाठशालाके बालकोंको इनाम।
५०) मगनबाईको गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी अहमदाबादका लाइफ मेम्बर बनाना।

डालना चाहिये। प्रस्ताव पाचवा यह पास किया कि **जैन समाजकी स्त्रियोंमें धार्मिक व तदविरुद्ध सांसारिक शिक्षाका** प्रचार किया जाय। ७ वें प्रस्तावमे पं० धन्नालाल उपदेशक विभागके मत्री और सेठ **प्रेमचन्द मोतीचन्द जौंहरी** सरस्वती भडारके मंत्री नियत हुए। सभामें सेठजीके मित्र पालीतानेके मुनीम **धर्मचन्दजी** भी पधारे थे। आपने सत्रुजय तीर्थपर धर्मशालाकी सहायताके लिये लोगोंका ध्यान खींचा। सुदी १२ के दिन तीसरी बैठकमें भी हमारे सेठजी ही सभापति हुए। इस जल्सेमे पडित गोपालदासने बम्बईमे एक सस्कृत विद्यालयके स्थापित होनेकी आवश्यक्ता बताकर अपील की तो तुर्त १३८५)का चन्दा हो गया, जिसमे १०१) सेठजीने अपने पूज्य पिताके नामसे दिये। इस प्रतिष्ठामें जैनसिद्धातके महत्वपर प० गोपालदासजीके पब्लिक व्याख्यान बहुत प्रभावशाली हुए।

प्रांतिक सभामे स्त्रीशिक्षाका प्रस्ताव पास होनेपर माघ सुदी १२ दुपहरको ६०० स्त्रियोंने एकत्र हो **प्रांतिक सभाके साथ स्त्रीसभा** की। इसमें अकलेश्वरकी ललिता-

स्त्रियोंकी प्रथम सभा। बाई, शोलापुरकी रखाबाई, आक्लूजकी ज्ञानीबाई, बम्बईकी माता रूपाबाई और **मगनबाईजीने** धर्म, आचरण, मिथ्यात्व और कुरीति निवारणपर व्याख्यान दिये। **मगनबाईजीने** अनित्यपचाशतके संस्कृत श्लोक सार्थ सुनाए, जैन कन्याशाला स्थापित करनेकी प्रेरणा की व पढने पर जो दिया। अनेक स्त्रियोंने पढना स्वीकार किया। इसमें अजैन प्रतिष्ठित स्त्रिया भी आई थी जो व्याख्यान सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।

सेठ माणिकचन्दजीने पं० गोपालदास और धन्नालालजीको मानपत्र।

माघ सुदी १३ की रात्रिको सर्व सभाकी ओरसे पंडित गोपालदास बरैया और पंडित धन्नालालजी कासलीवाल-को मानपत्र दिया, क्योंकि इन दोनों विद्वानोंके प्रयत्नसे सभामें आगन्तुकोंको बहुत धर्मलाभ हुआ था। शास्त्रस्वाध्यायकी आवश्यकता बताए जाने पर २५० भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया था। सेठ नाथारंगजीने ६ जिवनारें दीं। १३९७) मंदिर भंडार व ३०१) संस्कृत विद्यालय बम्बईको दिया तथा ४९० धर्मपरीक्षा, सटीक, ४५० अकलंकस्तोत्र सटीक व ४९० मोतियोंकी जापें सेठ हीराचंद नेमचंदकी रायसे धर्मप्रचार हेतु बांटीं।

महारानी विक्टोरियाका वियोग।

इसी वर्ष ता० २२ जनवरी १९०१ को भारतपर अखंड राज्य करनेवाली महारानी (एम्प्रेस) विक्टोरिया परलोकको सिधार गईं। आपने १८ वर्षकी उम्रमें सन् १८३७ को राज्य ग्रहण करके ६४ वर्ष राज्य किया। इनके पीछे महाराजा सप्तम एडवर्ड सिंहासनारूढ हुए।

द० म० जैन सभामें सेठजीको अभिनन्दनपत्र।

दक्षिण महाराष्ट्र प्रांतमें जैनियोंकी संख्या बहुत है जो मराठी कनडी भाषाके बोलनेवाले व अधिक खेतीका व्यापार करनेवाले हैं। इस प्रांतकी दशाके सुधार हेतु एक सभा ३ वर्षसे स्थापित हुई थी। इसकी तीसरी बैठक माघ सुदी १ ता० २१-१ १९०१से कोल्हा-

पुरके पट्टाचार्य **लक्ष्मीसेन भट्टारक**के सभापतित्वमें श्रीअतिशय क्षेत्र **स्तवनिधि**पर हुई। इसीमे नियमावली ठीक की गई तथा चौंगले बी० ए० एल एल० बी० कील जो बम्बई बोडिंगके सुप्रिंटेंडेंट रह चुके थे व सेठ माणिकचंदकी छात्रवृत्तिसे विद्या लाभमे उत्तेजित हुए थे, ऑनरेरी सेक्रेटरी नियत हुए। कोल्हापुरमे सस्कृत पाठशालाके लिये १०००)का चंदा हुआ तथा यह तय हुआ कि बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी सेठ माणिकचंद पानाचदजी जौहरीने एक बोडिंग स्कूल बनाकर अंग्रेजी व संस्कृत विद्याभिलाषी जैन विद्यार्थियोके लिये उत्तम प्रकारकी तजवीज की है व विशेष करके दक्षिणके विद्यार्थियोको अत्यानदसे उत्तेजन देते हैं इसलिये उनका अत्यत उपकार मानकर इस सभाकी **ओरसे उन्हें एक आनद प्रदर्शक पत्र भेजा जाय** तथा इसी भांति इस कार्यमें उत्तेजना देनेके कारणभूत शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचदको भी एक अभिनदनपत्र भेजा जाय।

सेठ माणिकचंदका द्वितीय विवाह। आकलुज बिम्बप्रतिष्ठाके समयपर शोलापुर, फल्टन आदिके बहुतसे जैनी पधारे थे। सेठ माणिकचदजीको मिलकर अनेकोंने जोर दिया कि आपके पुत्र नहीं है, पुत्र विना आप ऐसे प्रसिद्ध सेठकी शोभा नहीं है, तथा यद्यपि आपकी अवस्था करीब ४९ वर्षकी है पर आपका शरीर दृढ परिश्रमी और मन तन्दुरुस्त है, आप अवश्य विवाह करा लेवें। सेठजीकी बिलकुल इच्छा नहीं थी कि मैं ऐसा करूं, किन्तु यही भावना थी कि अब हमें धर्मसेवा व परोपकार ही करना है, तौ भी जब भावज

रूपाबाई व सेठ पानाचन्दने बहुत जोर दिया तब आपने स्वीकार कर लिया।

फल्टनमें एक बीसा हूमड हरीचन्द दोशु थे उनकी लड़की नवीबाई उर्फ फूलुबाई है, उसीके साथ सेठजीका, चतुरबाईके विवाह मरणके ४ मास पीछे ही, चैत्र मासमें साधारण रीतिसे हो गया। सेठजी पुत्रकी आशासे नवीबाईको लेकर बम्बई आगए। वह पढ़ी लिखी नहीं थी इसलिये सेठजीने उनको अध्यापिका रखकर लिखना पढ़ाना सिखाया।

रा० ब० सेठ मूलचंदजीका वियोग और सेठ माणिकचंदके चित्तका विचार।

जैन समाजमें उस समय राय बहादुर सेठ मूलचंदजी अति प्रख्यात थे। आप धर्मपालनमें बड़े प्रवीण व शास्त्रके ज्ञाता थे। आपने यद्यपि कोई विद्योन्नतिका महा स्तम्भ नहीं खड़ा किया, पर अजमेरमें पाषाणकी नसिया बनवाकर उसमें सुवर्णकी अयोध्या, ऋषभदेवके कल्याणकोंका दृश्य बनवानेमें व श्रावक मुहल्लेमें मनोहर सुवर्ण व मीनेकी पचीकारी सहित मंदिर बनवाने व उसमें सुवर्णमें समोशरण स्थापित करनेमें बहुत द्रव्य लगाया तथा उस मंदिरमें स्थान स्थानपर चर्चा श्लोक, स्तुति, स्तोत्र लिखवाए। आजके दिन अजमेरमें ये दर्शनीय पदार्थ हैं। जैन अजैन सब दर्शनका लाभ लेते हैं। मिती आषाढ सुदी ३ ता० १८ जून १९०१ को आप भी इस पुद्गलमई शरीरको यहीं छोड़कर चल बसे। आपके मरणके समाचार पाकर सेठ माणिकचंदजी अपनी तरफ देखते हुए। उसी समय इनको

अपने परिग्रहप्रमाण व्रतकी याद आ गई और यह सम्मिलित जायदादका हिसाब विचारने लगे। अपने प्रमाणके अनुमान लक्ष्मीको होती हुई देखकर आपने यह इरादा किया कि अबकी दिवालीपर दूकानका सब हिसाब बनवाकर पक्का निश्चय करके फिर अपना सम्बन्ध कार्य्यसे हटा लूगा और रात्रि दिन धर्म व जातिसेवामे अपना शेष जीवन बिताऊगा।

बम्बईमें रथोत्सव और प्रान्तिकसभाकी बैठक।

मिती आसोज सुदी ८ से १२ तक बम्बईमे रथोत्सव हुआ। खुरजे व मेरठसे रथ आये थे। दो जलेब बडे धूमसे निकली थी, जिनमे ३०६१।) की उपज हुई। माणिकचन्द पानाचन्दने १२९) देकर चवर ढोरनेकी बोली ली थी तथा १००१) देकर एलिचपुरके सेठ लालासा मोतीसाकी तरफसे तानासावजीने श्रीजीकी खवासीकी बोली ली थी। इसमे शोलापुर आदिके अनेक भाई पधारे थे। बम्बई प्रान्तिक सभाकी बैठकमें राजा दीनदयालके पुत्र **राजा धर्मचद** सभापति हुए। सेठ माणिकचदजीने स्वागतकारिणी सभाके प्रमुखकी ओरसे भाषण पढा। सभामें मुख्य प्रस्ताव बम्बई संस्कृत विद्यालयके लिये ध्रुवभडार करनेका हुआ।

संस्कृत जैन विद्यालयकी स्थापना।

आश्विन सुदि ९ के प्रात:काल हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिङ्ग स्कूलके मकानमें संस्कृत जैन विद्यालयका शुभ मुहूर्त किया गया। राजा दिनदयालके हाथसे विद्यालय खोला गया। छात्रोंको तीन विद्वानोंके द्वारा धर्मशास्त्र, व्याकरण और न्यायका पाठ दिया गया।

सभामें ७ वाँ प्रस्ताव सेठ माणिकचंदजीने उपस्थित किया कि बालविवाह, वृद्धविवाह और कन्याविक्रयका रिवाज बन्द किया जावे।

इस जल्सेमें एक दिन सेठ प्रेमचंद मोतीचंदने जिनवाणीके उद्धारके लिये बहुत जोरदार भाषण दिया था। सभामें विद्यालयके ध्रुवभंडारके लिये १२०००) के अनुमान चन्दा हो गया। इसमें सेठ माणिकचंद पानाचंदने १००१) दिये थे।

गु० सं० १९५७ के अंतका सर्व हिसाब तय्यार हो गया। सेठ माणिकचंदने अपना परिग्रहप्रमाण व्रत पूर्ण होता हुआ जान सेठ पानाचंद और नवलचंद तथा प्रेमचंदको बिठाकर कहा कि हम अब दूकानमें शामिल नहीं रह सक्ते, क्योंकि हमारा नियम अब हमें साथमें व्यापार नहीं करने देता है। भाइयोंको सेठ माणिकचंदके नियमका हाल नहीं मालूम था। सब बड़े आश्चर्य्यमें पड़े कि अति परिश्रमी सेठ माणिकचंद जिनके द्वारा व्यापार दिनपर दिन उन्नतिपर है इस तरह क्यों सम्बन्ध छोड़ते हैं। इनको समझाया भी पर इन्होंने तो अब पेन्शन लेनी विचारी थी। अपनेको समाजसेवाके लिये बलि देना था, परोपकारार्थ तन मन धन लगाकर स्वहित करना था। इसी बातपर जोर दिया कि हमारा भाग अलग कर दिया जाय। तब पानाचंदजीने खूब विचार करके जो जमीन व मकानोंकी स्थावर मिलकियत थी, उसको बांट दिया। सेठ माणिकचंदके भागमें प्रसिद्ध जुबिलीबागके सिवाय कई और मकान भी आए। जवाहरातकी कीमत जोड़कर विभाग किया गया।

सेठजीका व्यापारसे पृथक् होना।

सेठ माणिकचदने और भी कहा कि इस धनमेंसे कुछ धर्मादा निकालना चाहिये फिर भाग करना चाहिये।

रु० २ लाखके दानका सकल्प।

इस पर बम्बईमे धर्मशाला आदि बननेके लिये **दो लाख**का धन धर्मादेके लिये निकालकर शेषका भाग हुआ। दूकानका सम्बन्ध अब सेठजीने छोड दिया, तोभी आप प्रतिदिन ४ या ५ घटे दूकानपर बैठते थे। वहापर धर्म सम्बन्धी पत्रव्यवहार किया करते थे। किसीको यह प्रतीत नही होता था कि इन्होंने अपना सम्बन्ध दूकानसे छोड दिया है। सेठ माणिकचदजीने बडी दोनो पुत्रियोंके नामपर एक २ मकान खरीद दिये और ताराबेनके नामसे रोक रु० जमा किये जिससे इनको अपने जीवनमे कोई कष्ट न हो।

मगनबाईकी निर्लोभता।

मगनबाईकी खास जायदाद कई लक्ष रु० की थी और यही अपनी सास ससुरके पीछे उस सब धनकी स्वामिनी थी, पर पिता माणिकचदने उसका मन उस धनसे फेर दिया। यही कहा कि तेरे पालनके लिये यहा कुछ कमी नहीं है, यदि जो तू अभी श्वसुरालके धनके लोभमे पडेगी तौ तू अपने आत्माका हित नही कर सकेगी। मगनबाई उसी वक्त इस बातको समझ गई। उस भारी सम्पत्तिसे मोह हटा लिया और बम्बईमे ही एक पुत्रकी भाति सेठ माणिकचदजीके साथ रहने लगी। कभी२ दो चार दिनको परदेशीकी भाति श्वसुरालमे हो आती थी। यह बडे सन्तोषसे पुत्री केशरको पालती और धार्मिक विद्याका अभ्यास करती थी।

सेठ पानाचन्दकी शिखरजीकी यात्रा।

इसी संवत् १९५८ में सेठ पानाचन्दजी अपनी पत्नी रुक्मणीबाई और दो कन्याएं व छोटे पुत्रके साथ श्री शिखरजीकी यात्रार्थ गए। साथमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द जौहरी और सेठ पानाचन्दके साले मोतीलाल और झवेरलाल भी थे। बड़े आनन्दसे यात्रा की, पर जब श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर पहुंचे तब वहां यह मालूम किया कि राय बद्रीदासजी (श्वे०) कलकत्तेवाले यहां प्रतिमाजी विराजमान करना चाहते हैं तथा आमंत्रण पत्रिकाएं निकाली हैं। आपने चिट्ठीमें सब समाचार माणिकचन्दजीको लिखे और शिखरजीसे शीघ्र ही बम्बई लौट आए।

बम्बईमें खबर होते ही श्रीमान् **लॉर्ड कर्जन**को तार दिया गया कि श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर जैसे सदासे चरण पादुकाओंका स्थापन है वैसे ही रहे–प्रतिमा विराजमान न की जावे। तथा जब पानाचन्दजी बम्बई आये तब वहांकी तय्यारीका हाल कहा कि राय बद्रीदास माह सुदी १३को चरणोंके स्थानपर प्रतिमा विराजमान करनेवाले हैं। और सेठ माणिकचन्दको जोर दिया कि वे स्वयं जावें और इस बातको रुकावें। सेठ माणिकचन्द तीर्थरक्षामें पूर्ण लौलीन थे। जबसे महासभाने यह काम बम्बई सभाके आधीन किया तबसे ही रात्रिदिन शिखरजीकी सुव्यवस्थाके ही प्रबन्धमें थे। आपके उद्योगसे सीढी तोडनेके हर्जेमें श्वेताम्बरियोंपर ५०००) की दीवानीमें नालिश की गई थी जिसके लिये समाजने ६०००) के करीब चन्दा एकत्र किया था सो खर्च करके रु० १८४९) की

डिगरी ख्वे० पर जज साहबने दी थी । एक चिन्तासे मुक्त हुए ही थे कि दूसरी यह फिकर हुई ।

शिखरजीकी रक्षार्थ सेठ माणिकचंदका दौरा और उपसर्ग निवारण।

आप उसी दिन चलनेको तय्यार हुए । आपके साथ सेठ पानाचंद रामचंद शोलापुर, सेठ नाथारगजी गांधी आकलूज, ल्लूभाई प्रेमानंद बोरसद, वालचंद व हीराचंद आदि भाई भी गए । आप नागपुर होते गए और वहांकी पाठशालाके लिये ६५००) का चंदा कराया । वहांकी फूट मेटी व सेठ गुलाबसाव आदि तीन भाई शिखरजीके लिये साथ हुए । शिखरजी पहुंचे । गीरीडी व आराके भाई आए । वहां लाला मुलतानसिंह दिल्लीवाले मिले । उन्होंने चरण उखाडनकी बात कही व मुकदमेमें पूर्ण मदद देनेका वचन ही न दिया, किन्तु अपने सबसे १०००) जमा कराके दे दिया । कोशिश चल ही रही थी कि लार्ड कर्जनने रांचीके डिप्टी कमिश्नरको जरूरी प्रबन्धके लिये हुक्म दिया । वहांसे चरण उखाडनेकी मनाईका हुक्म आ गया । उस समय सेठजीने बीसपंथी कोठीके हिसाबादिको संतोषजनक न पाकर वे आरा गए । वहांके पंचोंको समझाया । उन्होंने चैत्र सुदी १ तक सब हिसाब प्रसिद्ध करने व १ साल तक अच्छी कार्रवाई करनेका वचन दिया । सेठ माणिचंदजी फिर बम्बई आ गए । यहां आने पर खबर आई कि प्रतिष्ठा होनेकी तारीख पर २०० कान्सटेबल, दारोगा व सुप०को भेजा गया जिससे मूर्तिकी प्रतिष्ठा न हो सकी । चरण सदाकी भांति विराजित रहे । सर्कारके इस न्यायसे सेठजी व सर्व दिगम्बर जैन समाजको सन्तोष हुआ । इसी वर्ष सेठ माणिकचंदने

पजीकी वाडी नामके स्थानको ३२०००) मे खरीद किया, पर यह स्थान पीछेसे धर्मशालाके योग्य न जान कर यों ही रहने दिया।

श्रावक मडली शोलापुरने सेठ माणिकचदजीके धार्मिक कृत्यो पर मुग्ध होकर ता० ६ अक्टूबर १९०१ को एक **मानपत्र** अर्पण किया जिसकी नकल इस भाति है–

मानपत्र–

जवेरी शेठ माणेकचद पानाचद जोग्य.

प्यारा धर्मबधु,

जत अमे नीचे सही करनारा सोलापुरना दिगबर जैन श्रावको आप साहेबनी स्वधर्म विषे अत्यत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपने आपवानी रजा लईये छीये ते कृपा करी स्वीकारशो.

आपणा जैन बधुओ स्वधर्म सबधी तेमज राजकाज सबधी केवलणीमा घणा पछात पडेला जोईने तेमने धर्म सबधी अने राजकाज, वदकीय, शिल्पशास्त्र वगेरेनी ऊचा प्रकारनी केळवणी मेळववानु अतिशय जरूरनु साधन जे "बोर्डिंग हाऊस" ते मुबई जेवा म्होटा शहेरमा पोताना पोणो लाख रुपिया आशरे खर्च करीने आपे बाधी आप्यु तेथी आपनी धर्मकृत्योमा खरी उदारता प्रगट थाय छे.

श्री सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर ज्या वीस तीर्थंकर अने असख्यात मुनी मोक्ष पाम्या छे त्या जात्राळुना सगवड माटे पगथिया करवानु काम चाल्यु हतु ते आपणा श्वेताबर भाईओए वगर कारणे उखाडी नाखीने क्लेश वधार्यो, ते काममा आपे आगेवान थई महेनत लईने सरकारनी अदालतमा जय मेळव्यो तेथी आपणे ठेकाणे स्वधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे

जयधवल, महाधवल जेवा प्राचीन ग्रन्थोना जीर्णोद्धार करवामा

पण आप साहेब आगेवान थई सर्व भाइओनी मददथी नाम चलाव्यु छे तेथी ज्ञानवृद्धि माटे आपनी अत्यत उत्कंठा देखाई आवे छे

श्री गवहस्तमहाभाष्य नामना अत्यन्त उपयोगी परतु अदृष्ट थयेला धर्म पुस्तकनी तपास लगाववी आपनारने पाचसो रुपियानु इनाम आपे जाहेर कीधु तेथी आपना विषे प्रवचनवात्सल्य गुण रहेलो जणाई आवे छे

तेमज आपणा केटलाक गरीब अने निराश्रीत जन बन्धुओने विद्याभ्यास करवा माटे योग्य पारितोषिक अने स्कालर्शिपो आपीने उत्तेजन आपो छो, तेथी जनधर्मना यथार्थ दाननो मार्ग आप बतावी आपो छो

एवीज रीते स्वधर्म सबधी हरएक काममा आप पोताना तन, मन, धनथी महेनत करीने अमारा जेवा धर्मबंधुओने पण साथे लेई पुण्यनो लाभ आपो छो एवा तमारा सदगुणो जोईने अमने घणो सतोष थयो छे ते सतोषना बे बोल आ मानपत्रमा टांकीने आपने भेट करी छे, त आप मानपूर्वक अगिकार करशा एवी अमे उमेद राखिये छीये

शोलापुर, तारीख ६ अक्टोबर सन् १९०१	आपना, सद्गुण चाहनारा।

आकलूजकी बिम्बप्रतिष्ठाके समय सरस्वती भटारके मत्री सेठ प्रेमचद मोतीचन्दको किया गया था।

सेठ प्रेमचदकी सरस्वती भक्ति।

जनसे आपने बहुत कुछ उद्योग किया। आपने मई १९०१ के जैनमित्रमें एक प्रभावशाली लेख प्रकाशित करके शास्त्रोंकी रक्षाका उपाय बताया था। इस लेखमे आपके अतरग भावको झलकानेवाले कुछ वाक्य यह थे—"हमारे भाइयोंके लक्षों करोडोंका व्यापार

होता है। एक सौ रुपयाके व्यापारमें -) आना इस कार्यमें भी दे दिया करें "

"धर्मकार्यमें किसीकी अप्रतिष्ठा नहीं होती, जैसे अलीगढके सय्यद अहमदखां सिनाई हिन्दने जगह२से मांगकर कालेज बना दिया कि जिसमें लक्षोंका धन जमा होगया। हालमें अभी २००००)सर्कारने भी दिया है। हम हमारे भाइयोंसे एक लाख रुपया भी एकत्रकर कालेज न बना सकें। भाइयो! विचार देखो! परभवमें सिवाय पुण्यकर्म (धर्म) के दूसरा सुख देनेवाला नहीं है।" यह शरीर जिसको मनुष्य अपना मान रहा है चितापर ही नष्ट जाता है, केवल शुभ या अशुभ जो किया हुआ अर्थात् कमाया हुआ कर्म है वही जीवके साथ जाता है।" "भाइयोंको अपने तनसे धनसे मनसे प्राणी मात्रका भला करनेवाली जिनवाणीका शीघ्र ही जीर्णोद्धार करना चाहिये। बम्बईके गत रथोत्सव व प्रतिकमसभा बम्बईकी तीसरे दिनकी बैठकमें सरस्वती देवीकी रक्षा पर भाषण देते हुए कहा था कि यदि ५००) रु की सहायता हो तो ईडरके भंडारका उद्धार हो सक्ता है तथा आपने प्रेरणा करके पन्नालाल चाकलीवालको दो मासके लिये ईडर भेजा।

ईडरके सस्कृत प्राकृत ग्रंथोंकी प्रशस्ति।

इन्होंने जाकर बहुतसे ग्रंथोंकी सूची आदि बनवाई तथा ईडरके पंचोंने कई बंडल सस्कृत ग्रंथ सेठ माणिकचदजीके पास भेज दिये। सेठजीने एक विद्वान् शास्त्रीको नियत कर उन ग्रंथोंके पत्र ठीक कराकर सुन्दर वेष्टनोंमें बाधे तथा उनके मंगलाचरण व अंतिम प्रशस्ति, ग्रंथके नंबर व हकीकत सहित

रजिष्टरोंमें लिखवा ली और ग्रंथ ईडर भेज दिये। यह रजिष्टर सेठ माणिकचंदके चौपाटीके चैत्यालयमें है। विद्वानोंको उससे बहुत हाल मिल सक्ता है। अभी तक ईडरके भंडारका पूर्ण उद्धार नहीं हुआ है।

सेठ प्रेमचंद और सेठ माणिकचंद जैन जातिके पत्रोंको बराबर बाचते थे। जैनगजट अंक ८ ता० १ मार्च

बाबू बच्चूलालजीका अकाल मरण।

१९०२ में यह पढकर कि महासभाके मुख्य कार्यकर्ता व गजटके सहाई तथा सभाजोद्धारक पूर्ण उद्योगी बाबू बच्चूलालजी प्रयाग निवासी ता० १ मार्चको स्वर्ग पधारे। दोनों सेठोंको बहुत शोक हुआ, पर इस परसे ये और भी धर्मसाधनमें दत्तचित्त हो गए।

सम्वत् १९५९ मिती कार्तिक वदी ५से १० मुताबिक ता० २२-१०-१९०२ से २६ तक मा०

सेठ माणिकचन्दका महासभामें गमन और तीर्थक्षेत्र कमेटीका स्थापन।

दि० जैन महासभाका वार्षिक जलसा चौरासी मथुरामें बडी धूमधामसे हुआ। बहुतसे विद्वान व जातिके मुखिया एकत्र हुए थे। बम्बईसे सेठ माणिकचन्दजी, सेठ रामचन्द नाथा, सेठ गुरुमुखराय, प० पन्नालाल, प० जवाहरलाल शास्त्री गए थे। उसी समय पं० गोपालदासजी भी आए थे। ता० २२ अक्टूबरको प० गोपालदासके पेश करने व सेठ माणिकचन्द, बाबू देवकुमार, मुंशी चम्पतरायके समर्थनसे **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी** स्थापना हुई, जिसके सभासद ३५ चुने गए। सेठ माणिकचन्दजी महामंत्री और



सेठजीके ज्येष्ठ भ्राता सेठ पानाचन्द हीराचन्दजी

(देखो पृष्ठ १०२) J V P Surat.

सेठ चुन्नीलाल मनेरचन्द और लाला रघुनाथदास सरनौ सहायक महामन्त्री नियत हुए। जबसे बम्बई प्रान्तिकसभाने यह खाता खोला था और चुन्नीलालजीको तीर्थक्षेत्रका मन्त्री नियत किया था तबसे यह तीर्थोंके सुधारमे, हिसाब मगाने आदिमे पूर्ण प्रयत्नशील थे।

सेठ चुन्नीलालका परिश्रम। सेठ चुन्नीलालजीने भादवा सुदी ९ तक प्रातिक सभा बम्बईकी रिपोर्टमे अपनी जो रिपोर्ट प्रगट कराई है उससे विदित हुआ कि आपने ३८ स्थानोंमे व्यवस्था व हिसाबके फार्म भेजे व पत्र-व्यवहार किया जिससे २१ स्थानोंक फार्म भरकर आए तथा उन्होंभाई शिवलाल इस्पेक्टरद्वारा तीर्थोंका निरीक्षण भी कराया। आपने अपनी रिपोर्टके अन्तमे ये शब्द दिये हैं—

इस प्रकार २१ फार्म आए ह। यद्यपि सर्वकी हिसाब प्रथा उत्तम नहीं है, दो चारको छोड और न हिसाबोंको देख सतोप हो सक्ता है तौभी हम सचे दिलसे प्रबन्धकर्ताओं और मुनीमोंकी फार्म भेजनेकी मिहरबानीका धन्यवाद देते हैं।

दिहली दर्बार। महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहणके उपलक्ष्यमें भारतके वाइसराय लार्ड कर्जनने ता० १ जनवरी सन् १९०३को दिहलीमें एक बडा भारी दर्बार किया था, जिसका एम्फी थियेटर दिहलीसे ९ मीलपर बना था जिसमे २९ ब्लोक थे। भारतके राजा महाराजा रईस आदिके सिवाय, नेपाल, फारस, अफगानस्तान आदिके भी प्रतिनिधि आए थे। १२००० से अधिक भीड थी। विलायतसे डयूक आफ कोनाट भी पधारे थे। लाट साहबने दर्बारमें

महाराज एडवर्डका तार सुनाया जिसके कुछ शब्द ये हैं:—" मेरी यही आन्तरिक अभिलाषा है कि मैं भी माताके सदृश भारतीय प्रजाका सुशासन करके उनका प्रेम और भक्तिका लाभ करूं। मैं भारतके समस्त करद राजाओंको पुन विश्वास दिलाता हूं कि मैं उनकी स्वाधीनताका सन्मान, अधिकार और स्वत्त्वका आदर करता हूं तथा उनकी उन्नति और भलाई होनेसे प्रसन्न होता हूं "

दर्बारके दिन जैनियोंने भी अपने २ मंदिरमें विशेष पूजा की व बृटिश साम्राज्यकी जय मनाई व दान वांटा। बम्बईमे भी ऐसा हुआ। जैपुरमे भी महासभाके सभासदोंने जल्सा करके महासभाकी ओरसे एक अभिनंदनपत्र लाट साहबको महाराज जैपुरके द्वारा भेजा।

द० म० जैन सभा-द्वारा अभिनंदन पत्र।

दक्षिण महाराष्ट जैन सभाका पांचवा वार्षिक अधिवेशन ता० २७ और २८ जनवरी सन् १९०३ को क्षेत्र स्तवनिधि पर हुआ। सभापति श्रीमन्त पायप्पा अप्पाजीराव देसाई थे। सभाने एक वर्ष पहले एक दक्षिण महाराष्ट्र विद्यालय खोला था उसमें ११ विद्यार्थी पढते थे उसकी रिपोर्ट सुनाई गई। इस सभाने जैन शिक्षण फंडमें २००००) का फंड कर लिया था। सभामें शिक्षाप्रचारके प्रति कोल्हापुरके महाराजका आभार माना गया तथा **सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरी बम्बई** और सेठ **हीराचंद नेमचंद शोलापुरका** शिक्षाप्रचारके अर्थ अभिनंदन पूर्वक आभार माना गया। वास्तवमें जो सच्चे दिलसे परोपकारार्थ तन मन धन लगाते है वे जगतमें विना चाहे भी परम कीर्ति लाभ करते है।

प्रेमचंदका अचानक स्वर्गवास और स्वहस्तलिखित दान पत्र।

जिस व्यक्तिपर माता रूपाबाईको अवलम्बन था, जो हीराचंद गुमानजीके कुलका सेठ माणिकचंदकी तरह एक रत्नमय दीपक था, जिसके स्वभाव, धार्मिक क्रिया व समाजसेवाको देखकर परोपकारियोंको सन्तोष होता था कि सेठ माणिकचंदके पीछे यही दिगम्बर जैन समाजमें जागृति फैलाएगा, जिसका परिणाम बहुत शांत, विचारशील और उदार था, जो संस्कृत इंग्रेजी व वर्तमान देश चाल व्यवहारसे अच्छी तरह परिचित था, जो जिनवाणीका ज्ञाता अभ्यासी व पूर्ण भक्त था, जिसका अखंड वात्सल्य और प्रेम अपनी जैन जातिसे था वही प्रफुल्लित चमकता हुआ तारा यकायक अपने चहु ओरके मनुष्योंकी दृष्टिसे इसी संवत १९५९मे चैत्र सुदी १४ की रात्रिको लुप्त हो गया!

शरीर पिंजर वैसा ही दीख रहा है पर शरीरमें अनेक चेष्टाओंको करानेका जिम्मेदार चैतन्य आत्मा यहांसे चल दिया है। यद्यपि शरीर छोडते समय इनकी अवस्था २५ वर्षकी थी पर यह गाफिल नहीं हुआ था। रात्रिको ही अपनी तबियत जब एकाएक बिगडी तब आपने अपनी माता, स्त्री तथा काकाओंके सामने अपने ही हाथसे नीचे लिखा **दानपत्र** लिखकर हस्ताक्षर कर दिये—

१—माटुंगा रोडकी जमीन जो अनुमान २००००) की है वह तथा अपनी जिन्दगीके बीमाके ५०००) यह दोनों रकमें हीराचंद गुमानजी जैन [illegible] मेटीको इस शर्तपर देना **"प्रेमचंद** [illegible] **खाता"** खोलकर

रकमके व्याजसे गुजराती प्रथम पुस्तकसे इग्रेजी चौथी क्लास तक विना मावापके निराधार विद्यार्थियोंको स्कालरशिप दी जावे।

२-मेरी माताश्रीके **बारहसौ चौतीस उपवास**के व्रतका उद्यापन ५०००) के खर्चसे करना।

३-अमनगर (ईडरके निकट) के स्टेशनपर " प्रेमचंद मोतीचंद धर्मशाला " नामसे १०००) खर्च करके एक धर्मशाला बनवाना।

४-निम्न लिखित तीर्थोंमेंसे प्रत्येक तीर्थको इक्कावन इक्कावन रु की रकम भेजना-१ श्री सम्मेदशिखर, २ श्री चम्पापुर, ३ श्री पावापुर, श्री गिरनार, ५ श्री केशरियाजी, ६ श्री पावागढ, ७ श्री गजपथाजी, ८ श्री मागीतुगी ९ श्री पालीताना, १० श्री तारगाजी, ११ श्री सिद्धवरकुट, १२ श्री सोनागिरजी, १३ श्री कुथलगिरजी, १४ श्री ईडरका मदिर, १५ श्री चतुर्विधदानशाला सोलापुर।

इस तरह रु० २१७६५) का **दानपत्र** अपनी माताको देकर आपने मौन धारण कर लिया, हाथ जोड सबसे क्षमा मागी और शात मनसे भीतर २ अपने शुद्ध आत्मस्वभावका चिन्तवन करते२ बाहरसे णमोकार मत्रकी ध्वनि सुनते२ स्वर्ग पधारे। **चंपाबाई** अपनी १५ वर्षकी आयुमें ही वैधव्यताको प्राप्त हो गई। **माता रूपाबाई**को पुत्रके वियोगसे बहुत शोक आया, पर धर्मके ज्ञानके कारण अपने चित्तको थाम व कर्मका उदय विचार शात चित्त हो गई। सेठ माणिकचद बहुत विलाप करने लगे, क्योंकि सेठजीको इसके गुणोंपर अतिशय प्रेम था। पानाचद और नवलच-

न्दजीको भी बहुत शोक हुआ, क्योंकि यह दूकानके काममें भी बहुत चतुर था। बम्बई बोर्डिंगकी ट्रष्ट कमेटीमें कोषाध्यक्ष और बम्बई प्रांतिक सभाके सरस्वती भंडार खातेका काम आपने अपने जीवन पर्यंत बहुत ही योग्यतासे सम्पादन किया था इससे बम्बईकी जैन समाजको आपके वियोगका बहुत ही ताप हुआ। आपने संस्कृतका अच्छा अभ्यास किया था व मराठी लिखना पढ़ना भी आप अच्छा जानते थे। सेठ हीराचंद नेमचंदकृत मराठी **व्रतकथासंग्रह** और '**महावीरचरित्र**का गुजराती भाषामें बहुत ही उत्तम उल्था किया था और उसे प्रकाशित कराया था। इसने प्रसिद्ध तीर्थोंकी यात्रा भी कर ली थी। यह बहुत ही दयालु, सहनशील, साहसी व विचारशील था। इसके **चित्रसे** इस मध्यक गुण स्वयं झलक रहे हैं। हमारी समाजके नव युवक धनाढ्योंको सेठ प्रेमचंदके जीवनचरित्रसे शिक्षा लेनी चाहिये और अपनेको विषय कषायोंसे बचाकर धर्म व नीतिसे परोपकारमें तन मन धन लगाते हुए अपने जीवनको व्यतीत करना चाहिये।

नवींबाईके प्रथम पुत्रका जन्म।

सेठ माणिकचंदजी नवीबाईके साथ अपने गृही कर्मको निभाते थे कि नवीबाईके गर्भ रहा। सेठजीको बहुत संतोष हुआ और मनकी इच्छानुसार नवीबाईने मिती वैशाख सुदी १२ को एक पुत्रका जन्म दिया। पुत्रलाभसे सर्व कुटम्बको हर्ष हुआ। वास्तवमें संसार कैसा विचित्र है कि जिस घरमें १ मास पहले शोक छाया हुआ था उसीमें आज पुत्रजन्मका उत्सव मनाया जाने लगा। नवीबाई पुत्रको बहुत सम्हालसे

पालने लगी। सेठजीने भी दासिया नियत की कि इसे कोई कष्ट न हों।

बंबई प्रांतिक सभाका द्वितीय वार्षिकोत्सव और शोलापुरकी बिम्बप्रतिष्ठा।

सेठ रावजी नानचंद गांधीने शोलापुरमे जिनबिम्ब पंच कल्याणकोत्सव मिती ज्येष्ठ सुदी ६ से ९ सं० १९६० तक बहुत ही समारोहके साथ पासु गोपाल शास्त्री द्वारा कराया। बाहरसे करीब २००० के भाई आए थे। हमारे **सेठ माणिकचंद** आदि बम्बईके अनेक सज्जन पधारे थे। सेठ रावजी नानचंदने नया रथ तैयार कराया था सो पंचायतीमे अर्पण किया तथा प्रतिदिन सबका भोजनसे सत्कार किया। प्रांतिक सभाके सदस्योका बहुत सन्मान किया और ९०१) सभाको भेंट किये। प्रांतिक सभाकी ४ बैठकें हुई। सेठ हरीभाई देवकरणवाले **सेठ बालचंद रामचंद** सभापति हुए। आपने कहा कि इतनी बातोका प्रबन्ध किया जाय कि-दि० जैन धर्मशास्त्रके ज्ञाता विद्वान् तयार हो, जैन धर्मानुसार लग्न, विवाह, मृत्यु आदि क्रियाए होवें, व्यर्थव्यय रोका जावे, मृत्यु पीछे रोने कूटनेका रिवाज बंद हो, बाल्यविवाह व कन्याविक्रय रोका जावे व तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्थाका सुप्रबंध हो। १८ प्रस्ताव पास हुए जिसमें मुख्य ये थे-(१) महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहाणोत्सवमें हर्ष (२) सर्कारसे प्रार्थना हो कि विद्याविभाग आरोग्य संबंधी तथा जेलखानेकी रिपोर्टोंमें जैनियोंका अलग खाना हो (३) मृत्युके पीछे छाती कूटनेका रिवाज जोधपुर मारवाडकी तरफसे इस गुजरातमें आया है। मारवाडके रजवाडोंमें जब राजगोतीका

मरण होता था तो रानियें रोने व छाती कूटनेके लिये महलोंसे बाहर नही होती थी। वे सब अपनी दासियोंको बाहर भेजती थी वे ही रडती पीटती थी। दासियोंको इस प्रकार करनेमे उनका स्वार्थ सधता था—उनको कपडे वगैरह मिलते थे।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदने पेश किया कि जिस २ तीर्थ क्षेत्रका हिसाब आया है उन्हें धन्यवाद दिया जाय व जहा २ से हिसाब नहीं आया उसको प्रेरणा की जाय।

तीसरे दिन सेठ माणिकचदजीने प्रगट किया कि शोलापुरके चतुर्विधदानशालाके वैद्यक विभागमें जो छात्र पढेगा उसे प्रथम वर्ष ६) दूसरे वर्ष ७) व तीसरे वर्ष ८) मासिक मिलेगा इस शर्त पर कि इस प्रान्तके किसी पवित्र औषधालयमें २५) महीने पर औषधालयका काम करै। जिन्होंने जैन पद्धतिसे विवाह कराए थे उनको सभापति द्वारा छपे हुए मनोहर धन्यवाद पत्र दिये गए। प्रान्तिक सभाके फडमे २१३५) आए तथा बाबी निवासी रामचद्र अभयचदके निकट १०००) की एक धर्मादाकी रकम थी उसके व्याजसे एक विद्यार्थीको वैद्यक पढाई जाय ऐसा जाहर किया गया। इस शिक्षाकी उत्तेजना देनेका अभिप्राय सेठजीका यही था कि हम बम्बईमे औषधालय कायम करै तब उस वैद्यका उपयोग हो।

वैद्यक शिक्षाकी उत्तेजना।

जगत्में किसी भी प्राणीकी एकसी दशा नहीं रहती इसीसे यह जगत परिवर्तनशील है। जिसको जीता जागता, काम करता हुआ सवेरे देखते है वही शामको चेतन रहित होता है। जब तक

सेठ पानाचदका स्वर्गवास।

वह आत्मा अपने स्वाधीन स्वभावको नहीं पाता है तब तक इसका जन्म मरण नहीं मिटता है । आयु कर्मका प्रेरा यह जीव शरीरमें अपनी उम्रसे अधिक नही रह सक्ता ।

मिती कार्तिक वदी ११ संवत् १९६० की रात्रिको सेठ पानाचंद हीराचंदका शरीर अति अशक्त हो गया। तबियत तो कई दिन पहलेसे खराब थी । यथाविधि औषधि होती थी । इस समय सेठ माणिकचद, नवलचद, चुन्नीलाल, रूपाबाई, रुक्मणीबाई, मगनबाई आदि कुटुम्बी पास बैठे है, सेठ पानाचंद बराबर होशमें है, पंडित वशीधर जो उस समय सस्कृत विद्यालय बम्बईके छात्र थे अब शोलापुर जैन पाठशालामें शास्त्री है, पास बैठे हुए समाधि-मरण आदिके पाठ पढ रहे हैं, पानाचंदजी बडे ध्यानसे सुन रहे हैं। माणिकचदजीको इस समय यही ध्यान है कि भाईका मन किसी भी तरह आर्त्त रौद्र ध्यानमें नहीं फसे, धर्म ध्यानमे लीन रहें जिसमें दुर्गतिसे बचकर सुगतिमें जावें इसलिये जब कभी उन्हें मालम होता कि इनका ध्यान और तरफ हुआ है तब ही सेठ माणिकचद यह वाक्य कहते—"भाई, पडितजी कहते है उधर तुम्हारा ध्यान है ना ? तब वह धीरेसे कहते कि मेरा ध्यान है, बराबर चालू रक्खो। मिलकियनके विभागके समय **धर्मशाला** आदि कार्योंके निमित्त करीब २ लाखके दानका संकल्प हो ही चुका था। इस समय आपने कहा कि भाई, मेरी प्राइवेट मिलकियतमेंसे १५०००) वागड देशके हूमड छात्रोंमे विद्या प्रचारके लिये खर्च करना तथा १००) तीर्थ क्षेत्रोंमें देना । सेठ माणिकचंदने तुर्त लिख लिया। सेठ माणिकचंदने कहा—भाई, और भी कुछ दान करना

हो सो करो। भाईने कुछ उत्तर न दिया। इतनेमें देखते २ आंखें फिरने लगीं तब पच नमस्कार मत्रकी घोषणा प्रारभ हुई। सामने तीनों सन्तान भी बैठी थी–लीलावती ७ वर्षकी, रतनबाई ५ वर्षकी व पुत्र ठाकुरभाई ३ वर्षका था–तीनों माताके पास बैठे है। सेठ माणिकचदका सख्त हुक्म था कि कोई रोने न पावे न कोई शोर करे। उस स्थानपर इतनी शाति थीकि यदि कोई मखमलके गद्दे पर भी पग धरे तो उसका शब्द सुन पड़े। वास्तवमें मृत्यु होते समय पूर्ण शाति रहनी चाहिये जिससे मरनेवालेके भावोंम भी शाति रहे, कोई विकल्प न पैदा हो। उस रात्रिको सेठ पानाचदने चारो प्रकारके भोजन व औषधि तक लेनेका त्याग कर दिया था। सेठ माणिकचदके पूर्ण प्रबधसे पानाचदजीका आत्मा धर्म ध्यानमें लीन होता हुआ शातता पूर्वक इस चर्महाडके पींजरेसे निकलकर स्वर्गधामको पधारा।

सेठ पानाचद जवाहरातकी परीक्षामे बम्बईभरमें प्रधान समझे जाते थे। आप बहुत ही शात, विचारशील, उदार चित्त व निराश्रितको आश्रय देनेवाले थे। परोपकारार्थ मेरा धन खर्च हो यही इनके चित्तमें रहा करता था, क्रोध करना तो जानते ही नहीं थे, मौन रखकर विचारनेकी आदत थी। यह कैसे गभीर प्रकृतिके व दृढ मिजाज व शात पुरुष थे, यह बात उक्त सेठजीके चित्रके दर्शनसे भले प्रकार झलक उठती है। आपने अपने ५४ वर्षमें धर्म अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थोको यथायोग्य पालन करके गृहीके कर्तव्यको सदाचार, सद्वर्ताव और नेक नियतीसे अच्छी तरह निवाहा आपके वियोगसे बम्बई भरमे **शोक** छा गया। जौहरी बाजारमें

कई दिन तक बड़ी उदासी रही । दूसरे दिन प्रात काल दग्ध क्रियाके अर्थ जब ले गए तब सैकडों मनुष्योंकी भीड थी। विरादरीके सिवाय जौहरीबाजारके दूकानदार दलाल आदि जिसने सुना फौरन हाजिर हो गये थे।

अब रुक्मणीबाई जो कि बहुत धीर प्रकृतिकी थी, यद्यपि इसे विशेप पुस्तकोंका अभ्यास नही था तो भी कुछ अक्षर ज्ञान था, बडी शातिसे अपने तीन सततिरत्नोंका पालनपोपण करने लगी लीलावतीको शालामें भेजन लगी । इस कुटुम्बमे पार्सियोंकी भाति यही रिवाज था कि लडका हो या लडकी शुरूसे विद्याभ्यासमें लगाकर चतुर बनाना फिर लग्न करना । छोटी उम्रमें मगाई करना बडा पाप समझते थे ।

सेठ हरजीवन रायचदकी सम्मतिकी कदर।

पानाचदजी भी चल दिये । प्रेमचद इसके पहले ही न रहे थे। अब सेठ माणिकचदको रात्रि दिन यही ध्वनि रहने लगी कि जो कुछ करना है उसमें एक दिन भी ढील नही लगाना चाहिये । सेठ प्रेमचद गुजरातके छात्रोंम शिक्षा प्रचारके अर्थ जो दान कर गए थे, उमसे सेठजीने यही सोचा कि **गुजरात**के किसी स्थानपर एक **जैन बोर्डिंग** खोला जावे तो ठीक हो । आपको विश्वास था कि **आमोदके शेठ हरजीवन रायचंद** एक विचारशील, धर्मात्मा और शास्त्रके ज्ञाता गृहस्थ है । आपका परिचय स० १९५० मे हुआ था जब श्री भक्तामरजी गुजराती टीका सहित सेठजीने मगाई थी तबसे पत्रव्यवहार बराबर रहता था । **सूरत**मे जब चुन्नीलालने मदिर प्रतिष्ठा कराई थी

तब भी आपको बुलाया था। आपसे साक्षात् मिलकर बहुत प्रीति प्रगट की थी तथा सूरतके बडे मंदिरजीमे तब छपे हुए नोटिस बांटकर आम सभा की गई थी। उस समय इन्होंने ऐक्य पर बहुत अच्छा भाषण दिया था। सेठ हरजीवनको भी गुजरातके बालकोंको धर्म विद्याके साथ लौकिक विद्या दी जावे इसकी बड़ी चिन्ता थी तथा यह सेठजीको अपने पत्रोंमे इस त्रुटिको दूर करनेके लिये लिखा करते थे। अब सेठजीने इनको पूछा कि गुजरातमे एक बोर्डिंग स्थापन करनेका हमारा विचार है जिसमें मेट्रिक तक छात्र रहकर पढ़ें, शेष कालेजकी पढाई बम्बई बोर्डिंगमे रहकर करें तथा बडौदा, सूरत, अहमदाबाद ये तीन मुख्य नगर है इनमेंसे कौनसी जगह तुमको पसंद है, कारण सहित लिखो। तब सेठ हरजीवनने **अहमदाबाद**को पसन्द किया कि यह बडा व्यापारी नगर है। सब तरह विद्याका साधन है। जिनके बालक रहेंगे वे बारम्बार आकर देख भी सकेंगे, क्योंकि मालके लिये उनको आना ही पडता है तथा यहा कालिज भी है, अच्छा है मिले हे आदि। सेठजीको यह बात बहुत पसन्द आई तब हरजीवन रायचंदको लिखा कि गुजरातके लोग अपने छात्रोंको भेजेंगे या नही, क्योंकि वे लोग ऐसा समझते है कि धर्मके खातेमें हम अपने लडकोंको क्यो रक्खें? तब आमोदके यह परोपकारी सज्जनने उत्तर दिया कि इसकी आप चिन्ता न करें तथा एक पत्र आमोदके दिगम्बर जैन पचानका भिजवाया उसमें पचोंने हिम्मतके साथ लिखा कि मुहूर्त्तके दिन हम १० विद्यार्थिओंको साथ लेकर आवेंगे, आप निश्चिन्त रहो। तब सेठजीको बहुत ही संतोष हुआ और तुर्त ही **मार्गशीर्ष सुदी ६** को

बोर्डिंगका महूर्त अहमदाबादमें किया जाय ऐसा निश्चित करके गुजरातके भाइयोंको बुलानेके लिये पत्र दे दिये।

गुजरात दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल—अहमदाबाद।

सेठ माणिकचंदजीका सदा ही यह कायदा रहा है कि पहले यह किसी नवीन कायको शुरू करके उसकी परीक्षा करते थे। जब वह चल जाता था तब उसको सदाके लिये ऐसा पक्का कर देते थे कि वह कभी किसीके तोडे न टूट सके। बम्बई बोर्डिंगकी स्थापनाके समय इस नीतिको इसलिये नहीं काममें लिया कि बम्बईमें जैनियोंके छात्र अवश्य ही आवेंगे इस बातका सेठको दृढ निश्चय था। यहाके काममें सदेह था इसीलिये पहले सेठजीने ३ वर्षके निर्वाहके लिये ९०००) बोर्डिंगमे दिये तथा २५ छात्रोंका प्रबन्ध करके एक मकान भाड़ेका लेकर बोर्डिंग खोलनेका महूर्त बड़ी धामधूमसे किया। इसमे ईडर, कलोल, सूरत, सोजित्रा, अकलेश्वर आदि गुजरातके बहुतसे भाई पधारे थे उनमें मुख्य जयसिंहभाई गुलाबचद, हरजीवन रायचद आमोद, मोतीचद ईडर पधारे थे। बबईसे पडित गोपालदास बरैया, लल्लूभाई प्रेमानददास परीख तथा सेठ माणिकचंदजी आए थे। मगसर सुदी ६ स० १९६० के प्रात काल प्रथम ही मगल कलशके साथ नगरमे १ वरघोडा निकाला गया। फिर स्थानपर आकर श्री जिनवाणीकी पूजा करके एक सभाका अधिवेशन बडे समारोहके साथ किया गया जिसमें अहमदाबादके प्रतिष्ठित भाइयोंको छपे हुए कार्ड द्वारा स्वय सेठ माणिकचन्द कई भाइयोंके साथ जाकर निमन्त्रण कर आए थे वे सब शामिल हुए जैसे—रावबहादुर केशवलाल

हीरालाल, जौहरी लल्लूभाई रायचंद, रा० ब० लालशंकर उमियाशंकर, रा० ब० हरगोविन्ददास द्वारकादास कांटावाला, प्रोफेसर आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव, डॉ० जोसेफ बेनामिन इत्यादि भाई पधारे थे। सभापतिका आसन रा० रा० दीवान बहादुर अम्बालाल शाकरलाल देशाई एम ए एलएल बी ने ग्रहण किया था। प० गोपालदासजीने विद्याभ्यासकी आवश्यक्ता एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर बताई तथा लल्लूभाई प्रेमानंददास आदि वक्ताने बोर्डिंगका हेतु समझाया, फिर सभापतिने एक शिक्षापूर्ण भाषण देते हुए कहा—"जिस प्रकार यात्रा करनेवालोंमे जिनके पास पर्यटनकी पूरी २ सामग्री रहती है वह आगे और जो साधनहीन होते है व पीछे पड जाते है उसी प्रकार ससार यात्रामें जो जाति विद्या साधनसे हीन है वह अवश्य ही पीछे रह जाती है। इस सस्थाके स्थापन कर्ता उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान् नहीं है, परतु वह "**द्रव्यका सदुपयोग किस तरह करना चाहिये**" इस विषयके सच्चे मर्मज्ञ जौहरी हैं आदि कहा।" इस समय कहा गया कि जो कोई सहायता करेंगे वह सहर्ष स्वीकार की जायगी। तब **आकलूजके** भाईने १०) मासिक एक वर्षके लिये दिया। ८१ गृहस्थोंकी एक विजिटर्स कमिटी बनी। जो ३) वार्षिक दे वह इसका मेंबर हो सक्ता है। इसमें करमसद, इडर, जहर, नरसीपुर, सोनासन, बडौदा, ओरान बोरसद, अहमदाबाद, सूरत आदिके भाई मेम्बर हुए। बोर्डिंगका प्रबन्ध बम्बई बोर्डिंगकी मनेजिंग कमेटीके आधीन रहा। मन्त्री

लल्लूभाई प्रेमानददास एल सी ई नियत हुए। शुरूमे ही इसमें ३८ छात्रोंकी भरती हो गई अपने द्रव्यसे पढानेवालोंके लिये २५) प्रति छ माहीके लिये लेने नियत हुए। इसमें पहले दरजेसेलेकर छठे दरजे अंग्रेजीतकके छात्र भरती हुए।

रूपाबाईका व्रतोद्यापन।

रूपाबाई संसारके चरित्रोंसे भली प्रकार अनुभव लेती हुई जबसे प्रेमचद पुत्रका वियोग हुआ तबसे और भी अधिक उदासीन रूपमें धर्म साधनमें लीन हो गई। तप करके जैसे अनतमती, चदना आदि सतियोंने अपनी पर्यायोंको सफल किया था ऐसे ही यह बाई करती थी। छोटे २ व्रतोंके साथ इसने १२३४ के उपवासोंका आरभ सवत १९५१ में किया था सो ९ बर्षमें उनको निर्विघ्न पूर्ण किया तथा जैसे प्रेमचद सेठ मरते समय ५०००) इस उद्यापनमें खर्च करनेको कह गए थे उसी प्रमाण सेठ माणिकचद और नवलचदने रूपाबाईजीकी आज्ञासे पूजनका महा समारभ रचा। चौपाटीके बगलेमे ही बडे हॉलमें सजधजकर मडप किया गया। जहा कई रोज नित्य पूजन भजन गान हुए। बाहरसे भी खास २ भाइयोंको बुलाया गया था।

धर्मचदजीकी स्त्रीका वियोग।

सेठ माणिकचन्दके परम मित्र भाई धरमचदजी भी सपत्नीक पालीतानासे बम्बई आ गये थे। यहा कर्म-योगसे इनकी स्त्रीको प्लेगका रोग हो गया और कई दिन बीमार रहकर माह सुदी ४ सं० १९६०को इस पर्यायको छोड़कर चल

दी। उस समय सेठोंने इनको बहुत धैर्य्य बधाया। माह सुदी ९ के आस पास कई दिनों तक चौपाटीका मंदिर नर-नारियोंसे भरा रहता था। भगवत्के गान भजन नृत्य खूब होते थे। जैनी भाई-योंका भोजनादिसे सत्कार, मंदिरोंमें दान आदि करके यह उद्यापन बड़े भावसे करके रूपाबाईको बहुत सन्तोष हुआ। तथा इस व्रतके हर्षमें ५०००) गुजरात दि० जैन बोर्डिंग स्कूलको दिया गया तथा बोर्डिंगमें विद्यार्थी अच्छी तरह रहनेकी रिपोर्ट जानकर सेठ माणिकचन्दने निश्चय किया कि प्रेमचन्दजीका कहा हुआ २१०००) शीघ्र लगा दिया जाय तथा ५०००) बोर्डिंगके मकानके लिये भी निकालनेका विचार दृढ़ किया।

सेठजीकी प्रथम पुत्रीकी मृत्यु।

इसी वर्ष सं० १९६०में सेठ माणिकचन्दकी प्रथम पुत्री फूलकौरका यकायक मरण हो गया। सेठजीको यह भी एक भारी शोकका स्थल आन पहुंचा, पर ज्ञानी और विचारवान सेठने इसे भी थिरतासे सहन किया। फूलकौर कसु (कमला) कन्याको छोड़ गई जिसकी प्रतिपालना और रक्षाका भार मगनबाईजीने अपने हाथमें ले लिया।

स्तवनिधिमें द० म० जैन सभा।

कोल्हापुरसे थोड़ी दूर एक अतिशय क्षेत्र स्तवनिधि है। वहां दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन माघ सुदी १४ ता १६ जनवरी सन् १९०४ से १८ तक था। इसमें अध्यक्ष सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर नियत किये गए थे। सेठ हीराचंदके लिखने ही **सेठ माणिकचंदजी** भी

तुर्त रवाना हुए । शोलापुरसे सेठ बालचंद रामचद व सेठ रामचद नाथा आदि कई महाशय पधारे । पहली सभामे कोल्हापुरके एक विद्यार्थीको जिसने प्राचीन जैन ग्रथोंके उद्धार पर भाषण दिया था सेठ माणिकचदजीने प्रसन्न हो ५) इनाममे उसी समय दे दिया । यह सेठजीके विद्या प्रेमका नमूना है । सभापतिका भाषण बहुत विद्वतापूर्ण हुआ, उसको सुनकर मि० यादवरावजी एम ए. एलएल बी कमिश्नर कोल्हापुर जो अजैन थे बहुत प्रसन्न हुए और उठकर कहा कि–" जैन धर्मके मन्तव्य बहुत उत्तम है । अहिंसा धर्म बहुत ही श्रेष्ठ है आदि ।" तीसरे दिन सेठ माणिकचदजीने इस बातपर व्याख्यान दिया कि चदेमें स्वीकार किया हुआ मूल द्रव्य "**व्याज देते रहेंगे**" इस मशासे घरपर नही रखना चाहिये, उस द्रव्यसे डरना चाहिये । इस भाषणके असरसे बहुतसा बाकी रूपया लोगोंने अदा करदिया । वास्तवमे यह बात अनुचित है कि जब हम कुछ दान करें तो उस द्रव्यको, अपने ही पास जमा रक्खें इससे हमारा ममत्व लगा रहता है अतएव उस द्रव्यको तो अपने यहासे निकाल कर दे डालना चाहिये । हा, यदि कोई रकम व्याजपर अपने यहा जमा करावे तो फिर जमा करना चाहिये । उसी रकमको विना निकाले लोभ नही घटता है ।

सभाने प्रसन्न हो सेठ माणिकचदजी और सेठ हीराचदजीको निम्न लिखित **मानपत्र** दिया–



सेठजीकी पुत्री फूलकौरबाई.

(देखो पृष्ठ १६२) J. V. P. Surat.

त्यांस उपदेश करून आणि त्याजविषयीं प्रेम बाळगून या प्रांतातील जैनसमाजात जी किंचित् विद्यावृद्धि होत आहे त्याचें श्रेय आपल्यास आहे. पाऊण लाख रुपये खर्चून आपण जे विद्यालय मुंबईस जैन विद्यार्थ्यांकरिता बांधिलें आहे त्या योगानं चिरकाल आमच्या समाजास फायदा होईल यात शंका नाही.

आपल्या दानशूरतेची उदाहरणें देण्याचें काही कारण नाहीं तथापि इतकें म्हटल्या शिवाय आम्हास राहवतच नाही की हिंदुस्थानातील लक्षावधि जैन लोकात आपण या गुणानें केवळ अद्वितीय आहा ज्याच्या औदार्याची सर्व देशभर पसरलेली मनोहर स्मारकें जैनांच्या धार्मिकतेची साक्ष जगास देत आहेत त्या माहात्म्याचा पुण्य श्लोक मालिकेंत आपणास गणण्यास बिलकूल हरकत नाहीं

जैन लोकाची सर्व प्रकारें उन्नती व्हावी, त्याची स्थिती ऊर्जित व्हावी, व्यापारात, शिक्षणात व धार्मिकतेंत त्याना यश मिळत जावे, या चिंतेंत आपण सर्वदा व्यापृत आहा व या उद्देशानें आपण प्रत्येक धार्मिक चळवळीस उत्तेजन देत आहा याबदल आपलें अभिनंदन करून श्री जिनेश्वरकृपेनें या आपल्या सदुद्योगात आपणास अखंड सिद्धि मिळो अशी आम्हीं प्रार्थना करितो तसेंच जैनसमाजाच्या उद्धारासाठी असेंच यत्न पुढेंही चालविण्यास आपल्यास जिनेश्वर देवोंत अशी ही आमची विनवणी आहे.

स्तवनिधि क्षेत्रमें एक दिन कन्याविक्रयकी हानिकारक रीतिपर चर्चा हुई उस समय बताया गया कि अपनी कन्याओंको बेचनेके समान निन्द्यकर्म और नहीं है तथा जो लोग ऐसे द्रव्यसे बने हुए ज्ञाति भोजनमें शरीक होते हैं वे भी महा निन्द्य काम करते है। यह भोजन उच्छिष्टके समान है। उस समय हमारे सेठजीने इस बातकी **प्रतिज्ञा** की कि हम ऐसे भोजनको नहीं खावेंगे इनके साथ निम्नलिखित भाइयोंने और भी नियम लिये—

कन्याविक्रयके द्रव्यसे ज्ञातिभोजनमें शरीक न होनेकी प्रतिज्ञा

१—सेठ हीराचद रामचद (हरीभाई देवकरण) शोलापुर
२— ,, हीराचद नेमचद ,,
३—शा वालचन्द जीवराज ,,
४—सेठ रामचन्द नाथारगजी बम्बई

सेठ माणिकचदमे गुणग्राहकताका अच्छा गुण था। आपमे यह आदत थी कि गुणोंको ग्रहण करें—दोषोंकी तरफ ध्यान न देवें। सेठजीने जैनमित्र अक ८,९ वैशाख, जेठ १९६०, मे बम्बई प्रातिक सभाके सभापतिकी हैसियतसे एक धर्मात्मा सेठकी मृत्युपर अपना शोकोद्गम प्रगट किया है।

उदार पुरुषका सन्मान।

शोलापुरमें एक धनाढ्य अग्रेसर दानवीररत्न सेठ रावजीभाई कस्तुरचदजी थे जो मिती चैत्र कृ० १४को अपनी ९६ वर्षकी आयुमें परलोक सिधारे। इस नरने अपने पिताकी सम्पत्तिको मुबई, शोलापुर, पूना आदि स्थानोंमें व्यापार करके

लोकबहादुर रावजी कस्तूरचंद शोलापुर।

बहुत वृद्धि-गत किया और अपने जीवनमे निम्नलिखित उल्लेख योग्य धर्मकार्य्य किये।

(१) स० १९३३ फागुण सु० २ को रु० ५००००) खर्च कर श्री तारगाजीमें जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

(२) स० १९३४ मे सम्मेद शिखरजीकी यात्रामें हजारों खर्च किये।

(३) स० १९३८ में श्री केशरियाजीकी यात्रामें संघ सहित जाकर १००००) खर्च किये।

(४) स० १९४८ मे श्रीगोमट्टस्वामीकी यात्रा बड़ी धूमधामसे की, हजारों रुपये खर्च किये।

(५) सं० १९४८ में चतुर्विधि दानशालाको बडे भावसे स्थापन कराया।

(६) स० १९५१ में पालीतानामे सेठ हरिभाई देवकरणके साथ बिम्बप्रतिष्ठा कराई उसमे ५००००) पचास हजार रु० खर्च किये।

(७) स० १९५७ में बम्बई संस्कृत विद्यालय फडमे १०००) दिये।

पालितानाकी प्रतिष्ठाके समय इनका पुत्र रामभाऊ २५ वर्षकी आयुमें परलोक सिधार गया। आपने कुछ भी शोक न करके स्वयं शाति रक्खी व औरोंको धैय्य बंधाया। शोलापुरके जैनियोंमें इनकी बहुत बडी प्रतिष्ठा थी तथा यह **लोक बहादुर** कहाते थे।

वैशाख वदी ३ सं० १९६० को सेठ चुन्नीलालने फल्टनमें पाठशालाकी स्थापनाके समय एक मनोहर भाषण देकर उसके लाभ बताए व एक घड़ी प्रदान की। इसमें गांधी नाथारंगजीकी तरफसे २५) मासिक ५ वर्ष तक देना स्वीकार किया गया था।

फल्टनमें सेठ चुन्नीलालका विद्याप्रेम।

सेठ माणिकचंदजीकी परोपकारार्थ सेवा जगतके जीवोंके लिये दृष्टान्त रूप है। द० महाराष्ट्र जैन सभाको उन्नति देनेके लिये उसके शिक्षणफंडकी वसूलीके लिये जैसे आपने रत्ननिधिकी सभामें अपने भाषणसे बहुतसा रुपया एकत्र करा दिया वैसे इसके लिये भ्रमण करना भी स्वीकार किया। ता० २० मई १९०४को सेठ माणिकचंदजी शिक्षण फंडकी वसूलीके लिये आनेवाले थे पर कार्य बाहुल्यके कारण न आ सके पर उसी रोज रा० रा० ए० बी० लट्ठे, रा० रा० हजे ऑन० जनरल सेक्रटरी, रा० रा० बलवंत नानाजी बुगटे बेलगाव आगए थे और अपने व्याख्यानोंसे तृप्त कर रहे थे। इतनेमें सेठ माणिकचंदजी अपने मित्र सेठ हीराचंदजीके साथ बेलगाव स्टेशनपर ता० १ जूनको पधारे। स्टेशनपर बड़े भारी समारोहके साथ स्वागत किया गया। होसूरमें श्री लक्ष्मीसेन स्वामीके मठमें स्थान दिया गया। कोल्हापुर आदिसे भी कुछ लोग आए थे। एक दिन माणिकचंदजीके, दूसरे दिन रा० रा० दत्तात्रय आण्णा बुगे शोलापूरके सभापतित्वमें सेठ हीराचंदजीके दो व्याख्यान हुए। जैनधर्मकी बड़ी महिमा हुई।

शिक्षण फंडके लिये सेठजीका भ्रमण।

एक नवयुवकने तुर्त परस्त्रीत्यागका व्रत लिया। फंडके लिये कहा गया तो रा० रा० चिमप्पा अण्णा लेंगडेने ५०१) तुर्त रोकडा दिये, करीब २०००) की भरती हुई। किसीने नए आंकड़े भरे। रा० रा० व्रवाणेने १००) ग्रथ स्वाध्यायार्थ बाटनेके लिये देना कबूल किये। वास्तवमें शास्त्रदान बहुत कल्याणकारी है। सर्व मंडलीसे सत्कार प्राप्त कर रुपया एकत्र कर दोनों सेठ, लट्ठे और अन्य लोग कोल्हापुर गये। वहा रा० रा० भैर सेठ, पाटील मजिस्ट्रेट, शास्त्री कल्लाप्पा भरमप्पा निटवे आदिने स्वागत किया। प्रो० बीजापूरकरने सेठजीको बुलाकर पानसुपारी की। यहा उस समय डक्कन कालेजके प्रोफेसर पाठक श्री लक्ष्मीसेन स्वामीके मठमें ग्रथ देखने आए थे। यहासे **किणीसगांव** गए। यहा ८००) रु० जमा हुए, फिर **वड़गांव** गए, वहा २३२) रु० एकत्र किये। किणीसमें गरीब जैन बालक विद्या पढे इसके लिये एक शिक्षक रखनेका खर्च सेठ हीराचंदने देना कबूल किया। फिर **कोल्हापुर** आए। रा० रा० आपा दादा गोंदा पाटीलकी अध्यक्षतामें उपदेश हुआ। पाटीलजीने ४००) शिक्षण फंडमें देना कबूल किये।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी इमारत बनानेकी स्वीकारता।

यहॉपर हीराचंदजीकी रायसे **सेठ माणिकचंदजीने** विद्यालयके लिये एक सुदर इमारत तय्यार कराना स्वीकार किया तथा महाराज कोल्हापुरकी जब भेट हुई तब सर्कारने भी यथाशक्य मदद देना कबूल करके चौफालयाके मालाकी जगह इमारतके लिये दान की। इस काममें दीवान साहब, रा० सा० सावंत मामलेदार, बापूसाहब आदिने खूब परिश्रम किया।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी इमारतका महूर्त।

सेठजी तुर्त बम्बई आए और भाई नवलचंदकी राय लेकर अनुमान २२०००) इस कोल्हापुर बोर्डिंगकी बहुत सुन्दर इमारत बनानेके लिये खर्च करना निश्चित करके पत्रव्यवहार करके ता० १५ अगस्त १९०४ को नीव डालनेके लिये तजवीज हुई। यह भी तय हुआ कि महाराज कोल्हापुरके हाथसे महूर्त्त हो। इसी तारीखपर बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी, शोलापुरसे सेठ हीराचंदजी व अन्य ग्रामोंसे बहुत आदमी आए थे। शहरके अधिकारी व सभ्य पुरुष सब उपस्थित थे। ठीक २ बजे दोपहरको महाराज छत्रपति थो० एजन्ट सहित आ विराजे, तब मि० लट्ठे एम० ए० ने इग्रेजीमें एक लम्बा भाषण दिया, जिसमे कहा कि यह द० म० जैन सभा अप्रैल सन् १८९९ में स्थापित हुई है, परतु सन् १९०२ से एक शिक्षण फड १२०००) का किया गया और विद्यालय यहा स्थापन किया गया है। फिर इसको बोर्डिङ्गमे बदला गया उसमें अब ३० छात्र है जो हाईस्कूलमें पढते है तथा फड अब ४००००) का है इसमे से ६०००)का फड रोकडा आया हे जो बम्बईके **प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद पानाचद जौंहरीके** यहा जमा है। बाकी रुपयेका लोग ४) सैकडेका व्याज देते है। बोर्डिङ्गके मकानकी बडी जरूरत है जिससे १०० छात्र रह सके, जो धर्मशिक्षा लेते हुए रहें। इसके लिये महाराजने विक्टोरिया मरहठी बोर्डिंगके पास बहुत अच्छा स्थान दिया है जिसपर सुदर इमारत बनाना सेठ माणिकचंदजीने कबूल किया है। उसकी नीव आज श्रीमन् महाराजके द्वारा

डाली जायगी। तब सेठ माणिकचदजीने महाराजको विनती की कि नीव रक्खे तब महाराजने **चांदीकी थापीसे चूना रक्खा**। इस तरह सेठ माणिकचदने कोल्हापुरमे अति सन्मानके साथ बोर्डिंग बनानेका महूर्त किया। इस उत्सवको पूर्ण करके सेठजी जो कि अब परोपकारमें ही अपना जीवन अर्पण कर चुके थे बम्बई होते हुए **अहमदावाद** आए।

अहमदावाद बोर्डिंगको ३५०००)का दान।

यहॉ ता० २२ अगस्तको बोर्डिंगका नामकरण संस्कार था। सेठ माणिकचदजीने हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी मेनेजिंग कमेटीमे ता० २७ मार्च १९०४के दिन यह प्रस्ताव पेश किया कि नीचेकी शरतोंसे हम ३५०००) कमिटीके आधीन करते है कि गुजरात दि० जैन बोर्डिंग अहमदावादका नाम फेर कर हमारे स्वर्गीय भतीजे **प्रेमचंद मोतीचंद**का नाम उसमें दिया जावे–

(१) २९०००) कायम फडके लिये (२) ५०००) बोर्डिंगके मकानके लिये (३) १०००) प्रेमचदकी माता रूपाबाईके १२३४के उपवासके उद्यापनके हर्षमें। इस तरह ३९०००)का व्याज बोर्डिंगके छात्रोंके रहने व भोजनादिमें खर्च हो। प्रबन्ध इस कमिटीके हाथमे रहे तथा यह कमिटी अपनी तरफसे एक ऑनरेरी सेक्रेटरी मनेजिंग कमिटीके मेम्बरोंमेंसे नियत करे। यह मत्री वार्षिक रिपोर्ट बम्बई बोर्डिंगके मत्रीको भेजे जो यहाकी रिपोर्टके साथ छपकर बाहर प्रगट हो। यह रकम गवर्नमेंट सिक्युरिटीवाले आचरियेमें या अच्छा भाड़ा आवे ऐसे मकानमें रोकना। इस रकमका

ब्याज उपरके हेतुके विरुद्ध कभी खर्च न करना तथा इस बोर्डिंगको कभी उखाडना नहीं। यदि कदाचित कोई विद्यार्थी न आनेसे बोर्डिंग न चले तो बम्बई बो०के ट्रस्टी अपनी सम्मतिसे इसका उपयोग गुजरातके दिगम्बर जैन धर्म पालनेवालोंके अंदर विद्या प्रचारार्थ खर्च करें। इस प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार किया गया।

इसीके अनुसार ता० २२ अगस्त १९०४ को प्रात [illegible] अहमदाबाद बोर्डिंगके मकानमें रावबहादुर लालशंकर उमिया[illegible] सभापतित्वमें सभा हुई। उस समय २५०००) देकर नाम [illegible] महत्त्व प्रगट किया गया। जयसिंहभाई गुलाबचंद मनि[illegible] शा० हरजीवन रायचंद व प० लालन आदि[illegible] मंत्रीने पुस्तकालयके लिये अपील की तो [illegible] एक गुप्त नाम भाइने १०) मासिक [illegible] १५००) का चंदा हुआ। गुजरातके बहुत [illegible] सभामें रा० रा० लट्ठे एम० ए० भी [illegible] अंग्रेजीमें भाषण दिया था। ता० २३ [illegible] रामचंद गांधीने बालविवाहके विरुद्ध [illegible] श्रोताओंपर अच्छा असर हुआ। [illegible] नाम चिरस्मरणीय रहनेकी [illegible] हुआ।

अहमदाबादसे सेठ मा[illegible] [illegible]

चोरसदमें भ्रमण और मानपत्र। [illegible]

व २००) की पुस्तकें दीं तथा अन्य उपस्थित सज्जनोंने ४००)की मदद दी। सर्व जैन मंडली सेठजीके उपदेश व विद्याप्रेमको देखकर अति प्रसन्न हुई और परम हर्षमें भरकर एक **मानपत्र** प्रदान किया जिसकी नकल इस भांति है—

मानपत्र.

झवेरी शेठ माणेकचंद पानाचंदनी पवित्र सेवामां

प्यारा धर्मबंधु,

आजे अमो बोरसद निवासी दिगम्बर जैनो आप साहेबनी स्वधर्म अने केळवणी प्रत्ये अत्यत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपवानी तक लइये छीये ते स्वीकारी आभारी करशो

श्री जयधवल, महाधवल जेवा प्राचीन ग्रंथोना जीर्णोद्धार करवामा आपे आगेवानी भाग लई सर्वे भाइओनी मददथी काम चलाव्यु छे तेथी आपनी धर्म शास्त्रज्ञान वृद्धिमाटे अत्यंत उत्कंठा जणाई आवे छे आपे सूरत जेवा पौराणिक शेहेरमा जैनी यात्राळुओनी उतरवानी सगवड माटे 'जैन हॅाल' जेवु **चन्दावाडी** नामनु मकान बधाववा पाछळ रु० २००००) नो खरच करी जैन कोम उपर जे उपकार कर्यो छे ते आपनी जैन भाइओ प्रत्येनी उदार लागणी बतावे छे

आपणा जैनी भाईओ स्वधर्म अने राजकाज सबधी, राजकीय, वैद्यकीय, शिल्पशास्त्र अने इग्रेजी गुजराती साहित्य वीगेरेनी ऊचा दरज्जानी केळवणी मेळववामा अत्यावश्यक साधन जे बोर्डिंग स्कूल छे ते मुम्बई जेवा मोटा शहेरमा श्वेतांबरी, दिगबरीनो भिन्न

भाव राख्या विना पोताना आशरे **पोणोलाख** रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री शेठ हीराचंद गुमानजीना स्मरणार्थे आपे बांधी आपी समस्त जैन कोम उपर जे उपकार कर्यो छे ते प्रशंसनीय छे अने ते आपनी धर्मसहित ऊचा धोरणनी इग्रेजी केळवणी आपवानी अपक्षपात लागणी प्रदर्शित करे छे

तेमज गुजरातमा अमारी दिगम्बरी जैन **कोम**मा केळवणीना वोहोळो फेलावो करवा माटे भोजन, अभ्यास वीगेरे बधी सगवडो पुरी पाडनारी एक बोर्डिंगस्कूल आपना कैलासवासी भत्रिजा शेठ प्रेमचद मोतीचन्दना नामथी अमदावादमा रु० ४००००) ने खरचे उघाडी तथा कोल्हापुरमा एवीज सगवडवाली जैन बोर्डिगनु मकान पोताने खरचे बधावी आपी स्वधर्मी भाईओ प्रत्येनी शुद्ध लागणी अने धर्मकृत्यमा भारे उदारता प्रकट करी छे

मुंबई जेवी अलबेली नगरीमा कोई पण कोमने उपयोगी थई पडे तेवी एक भव्य धर्मशाळा बाधवा पाऊळ **दोढ लाख** रुपीआ धर्मादा काढ्या छे ते आपनी गरीबो प्रति दयावृत्तिनी लागणी प्रकट करे छे छेवटमा आपनी आवी आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तम सेवाने माटे तथा विद्या अने विद्वान् प्रति आपनी सदैव शुभ लागणीओ माटे अमो आपने आ मानपत्र आपता श्री जगत्कर्ता (!) पासे अंत करणपूर्वक प्रार्थना करीए छीए के आप दीर्घायुषी थाओ ने परमात्मा आपने आवा उत्तम कार्यो करवाने सदैव सन्मति आपो,

एवु इच्छी आ मानपत्र मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राखीए छीए तथास्तु

बोरसद २६ ओगस्ट १९१४.

आपना सद्गुण चाहनारा—

परी० प्रेमानंद नारणदास
शा० भाइजी पानाचंद
शा० मथुरदास पानाचंद
शा० छगनलाल मूलजी
शा० काळीदास जेशींग बीन किशोरदास
शा० धरमचंद ताराचंद
शा० शीवलाल पानाचंद

कुंथलगिरि क्षेत्रपर सड़कके लिये १००१) का दान।

श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि जिनके उपसर्गको बलभद्र श्री रामचद्रने दूर किया था कुथलगिरि पर्वतसे मोक्ष पधारे है। यह पहाड उत्तम मदिरोंसे शोभित है। दक्षिणमे बारसी टाउन स्टेशनसे १० कोसहै। रास्ता बडा खराब है। बैलोंको बहुत तकलीफ होती है। पिंपलगावसे तो बहुत ही खराब है। रास्तेमें सावगावकी नदी व पर्वत बहुत कठिन है। गाडी छ बैल लगनेपर भी नहीं चलती। यहासे भूम राज्यके वाकपड तक चढ उतर बहुत कठिन है। इतनी दुर सडक बाधनेको १० या १२ हजारका अदाज किया गया है व सर्कार भूमने चौथाई खर्च देना कबूल किया है

तब **सेठ माणिकचंदजीने** १००१) दिये तथा इसके प्रबन्धके लिये एक कमेटी ७ महाशयोंकी बनी । सेठ माणिकचद पानाचंद जौहरी बम्बई, गाधी रामचद नाथा बम्बई, दोशी हीराचद नेमचद शोलापुर, गाधी वालचद रामचद शोलापुर, शा हीराचद प्रेमचद परढा, सेठ नानचद वालचद धाराशिव, सेठ रावजी सखाराम भूम । यह सडक जहा तक मालूम है अब तक बनी नही है ।

सेठजीको फिर भी पुत्रवियोगका दु ख व १०००) का दान ।

नवीबाईके सयोगसे सेठ माणिकचन्दको १॥ वर्षके अनुमान हुआ पूनमचद नामके एक पुत्ररत्नका लाभ हुआ था इससे सेठजीको बहुत सतोष हुआ था। परतु आप बोरसदसे बम्बई आए कि पुत्रको बिमार पाया । उसकी औषधिका प्रबन्ध बहुत कुछ किया पर वह जीव उच्च गोत्री होनेपर भी अल्पायु था सो सेठजी और उसकी माताको यकायक शोकसागरमे डुबाकर ता० २८ अगस्तकी सध्याको शरीर छोड चल बसा । सेठजीको रज तो बहुत हुआ पर धैर्य और ज्ञान तथा अनुभवने यही शिक्षा दी कि शोक करना वृथा है । कौन पुत्र और कौन पिता ? यह सब माननेका रिश्ता है । **जिसका मेरेसे भला हो वही मेरा पुत्र है** । आप अपने जातिके बालकोंको ही अपना पुत्र जानते थे और जहा तहा उनमें धार्मिक और लौकिक ज्ञानके प्रचारार्थ तन मन धनसे मदद करते रहते थे । आपसे जब कभी कोई पुत्रकी बात करता आप यही उत्तर देते कि मेरे जातीय बालक ही सब मेरे पुत्र है । मुझे पुत्रकी कामना नहीं है ।

उदारचित्त दानी सेठने पुत्रकी स्मृतिके लिये १,०००) का दान इस प्रकार किया–

२०) जैन महाविद्यालय, मथुरा ।
६०) दि० जैन प्रान्तिक सभा, बम्बई ।
४०) पजाब, अवध, मालवा और नागपुरकी दि०जैन प्रान्तिक सभाओंके सहायतार्थ ।
१००) सेठ प्रेमचद मोतीचद दि० जैन बो० स्कूल,अहमदाबाद,
१००) श्री कुंथलगिरिकी सडकके लिये ।
१००) द० महाराष्ट्र जैन बोर्डिंग, कोल्हापुर ।
९०) सिद्धक्षेत्र गजपथाजी ।
२५) जैन अनाथालय, हिसार ।
२५) ,, जैपुर ।
१००) पिंजरापोल–सूरत ।
५०) रक्तपित्त औषधालय–बम्बई ।
५०) महाजन अनाथ बालाश्रम–सूरत ।
२५) ,, अहमदाबाद ।
२५) भोजनशाला–सूरत
२३०) फुटकल (इच्छित कार्योंमे)

१,०००) कुल

पाठकोंको इससे शिक्षा लेनी चाहिये कि सेठजी अपने पैसेसे कितने विचारके साथ उपयोगी कामोंमें दान किया करते थे ।

सेठ नाथारंगजी गांधीवाले सेठ हरीचंदजी नाथा आक्लूज (शोलापुर)का आसौज वदी ९ सं० १९६१

सेठ हरीचंद नाथाका मरण और २५०००) का दान।

के दिन अपनी ६६ वर्षकी आयुमें समाधि मरण हुआ। आपने उस दिन २५०००) का दान विद्यार्थियोंके उत्तेजन व जिनवाणीके प्रचार आदि दानके अर्थ सफल करके व अन्य पुण्य दान करके मरणसे दो घंटे पहले सर्व बाह्य अभ्यंतर परिग्रहको त्याग आत्म ध्यानमें उपयोग लगा दिया और उसी अवस्थामें आत्मा निकल स्वर्ग धामको पधारा। यह बडे उदारचित्त थे। उस समय इनसे छोटे छः भाई रामचंद नाथा आदि मौजूद थे। आप बडे बुद्धिशाली थे। पिताकी स्थिति साधारण थी। जब वे मरे तब यह २२ वर्षके थे। इन्होंने ऐसा व्यापार चलाया कि बडे व्यापारी हो गए और अपनी दूकानें पंढरपुर, आक्लूज, बीजापुर, गद्दूर, मोरेना, बम्बई ऐसी ७ जगहें खोल दीं। यह उदारचित्त भी थे। आक्लूजकी प्रतिष्ठामें १८०००) खर्च किये। यह दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बईके उपसभापति थे। सेठ माणिकचंदके हजारों लाखोंका दान इनकी बुद्धिमें अंकित हो रहा था। लक्ष्मीको अपने हाथसे कमाकर जो अपने हाथसे ही उपयोगी कामोंमें लगाते है वे ही सच्चे बुद्धिमान व चतुर धर्मात्मा है।

लक्ष्मी ठगनी व चंचल हैं। जो इसे संग्रह करते है और दान धर्ममें नहीं लगाते है उनके तीव्र मोह उपजा करके यह उन्हें ठग लेती है और वे जीव इसके ठगे अपने अशुभ भावोंके अनुसार नर्क निगोदमें व निन्द्य पशुगतिमें जा महान कष्ट उठाते है परन्तु

जो इसको दासीके समान समझकर मोह नही करते सदा इससे अपने आत्माका काम लिया करते है वे इसके द्वारा महान पुण्य बांध परभवमें अटूट सम्पदाके स्वामी होते है अतएव लक्ष्मीको नित्य दान धर्ममें बहुत विचार पूर्वक खर्च करो, जैसे प्रसिद्ध सेठ माणिकचन्दजी अतिशय आवश्यक कामोमें लगाकर इसकी सफलता करते रहते थे। उक्त सेठका जीवन भारतवर्षके धनपात्रोंके लिये अतिशय अनुकरणीय है। सेठजी सार्वजनिक संस्थाओंमें भी दान करते रहते थे जैसे बालाश्रम सूरत, अहमदाबाद आदि।





(देखो पृष्ठ १७६) सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दि० जैन बोर्डिंग स्कूल अहमदाबाद।

अध्याय दशवां ।

महती जातिसेवा प्रथम भाग ।

सन् १९०५के प्रारम ही से सेठ माणिकचदके जीवनचरित्रमें नया गुल खिलता है । अब तक सेठजीकी परोपकारताका केन्द्र अपनी और अपनी पत्नी इन दोनोंके जन्मस्थान दक्षिण और गुजरातकी ही तरफ था पर अब क्षेत्र बढते २ सारा भारतवर्ष हो गया । सर्व दिगम्बर जैन जातिका कल्याण पहले आप कवल मनसे ही चाहते थे पर अब वचन और कायसे भी करना प्रारम किया, यहा तक कि सारे भारतके भाई आपकी परोपकारताको कभी भूल नहीं सक्ते ।

अंबालामें महासभाका जलसा और सेठ माणिकचदको धन्यवाद ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिक अधिवेशन स्थान चौरासी मथुरा ही मे होते थे पर लाला बनारसीदास जॉइन्ट जनरल सेक्रेटरी महासभाके दृढ प्रयत्नसे इसका दशवा वार्षिक अधिवेशन अम्बाला छावनीमें ता० २८ दिसम्बर १९०४ से ता० ३० तक बडे भारी समारोहके साथ हुआ था । पहली बैठकमे लाला सलेखचद रईस नजीबाबाद सभापति हुए थे तब प्रस्ताव न० ४ इस तरहका पास हुआ कि " महासभा **सेठ माणिकचंद पानाचदजी** साहब जौहरी बम्बईनिवासीको **धन्यवाद** देती है कि उन्होंने पडित कन्हैयालाल शेरकोट

निवासीको १२०) इनाम देकर इसके लिये उत्साहित किया है कि उसने पीलीभीतके ललित हरी आयुर्वेदीय विद्यालयसे **वैद्यराज** और **वैद्यरत्न**की परीक्षामे उत्तीर्ण पत्र हासिल किया है। ”

सेठजी अपनी धनवृद्धिके प्रारभसे ही परदेशी विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियें दे देकर उत्साहित करते रहते थे। इससे सेकडों तीव्र बुद्धि छात्र जो धनकी सहाय विना अपने पढनेकी उमंगको दबा कर बैठ रहते सो पढकर अपनी विद्याकी उमंगको पूर्ण करते हुए। कन्हैयालालजी शेरकोटकी पाठशालाका तीव्रबुद्धि छात्र था जिसके अध्यापक प० यमुनादत्त शर्मा थे। इनकी पढाईके फलसे प्रसन्न हो पंडित गोपालदास और बच्चूलालजीकी सिफारिशसे उक्त पंडितजीको एक मानपत्र भा० दि० जैन महासभाने ता० २६ अक्टूबर १८९९ स० १९५६ को दिया था तथा कन्हैयालाल स० १९५७ की परीक्षामें प्रवेशिका चतुर्थखडके पाचों विषयोंमे उत्तीर्ण हुआ था उसको २॥) मासिक छात्रवृत्ति श्रीमान् **सेठ माणिकचंद पानाचंद**की ओरसे दी गई थी।

छात्रवृत्ति देनेका अपूर्व फल।

यही पं० कन्हैयालाल आज कई वर्षोसे कानपुरके दि० जैन औषधालयमें इतनी योग्यतासे काम कर रहे है कि वहाके सर्जन अंग्रेजने उस औषधालयकी प्रशसा की है। रोगी इनके हाथसे बहुत शीघ्र अच्छे होते हे। नगरमें इनकी चाह भी खूब हो गई है जिससे वह प्राइवेट मकानोंमे देखनेसे १००) व २००) मासिक कमा लेते हे।

ता० २९ दिसम्बर १९०४ को मथुराके सेठ द्वारकादासजी अंबाला पधारे। उनका स्वागत बहुत धूमधामसे हुआ। हाथीपर सवारी नगरमें घूमी। ता० ३० दि० की सभामें द्वारकादासजी सभापति हुए तब प्रस्ताव ५ इस विषयका पास हुआ

तीर्थक्षेत्र कमेटीकी दृढता।

कि प्रस्ताव न० १० अष्टम वर्षकी दुरस्तीमें महासभा तजवीज करती है कि कमेटी जो तीर्थक्षेत्रोंकी निगरानीके वास्ते महासभाके ७ वें वर्षमें नियत हुई थी वह बदस्तूर कायम रहे। उसके कार्यकर्ता भी वे ही रहे तथा महासभा अधिकार देती है कि वह अपनी नियमावली अपने ही मेम्बरोंसे मजूर कराके कार्रवाई करे। प्र० न० ६ में महाविद्यालयके लिये एक डेपुटेशन पार्टी बनी जिसने उसी वर्ष मध्यप्रान्तमें घूमकर करीब ६०००) एकत्र किये व धर्मकी प्रभावना की। उस समय भी ६॥ हजारका चंदा हुआ जिनमें २०००) लाला सलेखचंद किरोडीमलजी रईस नजीबाबादने दिये। जैनगजट जो कई वर्षोसे मासाहिकसे पाक्षिक चल रहा था उसकी संतोषजनक कार्रवाई देख फिर साप्ताहिक करनेके लिये प्रस्ताव न० ८ पास हुआ व प्र० न० ७में तय हुआ कि आगामी अधिवेशन **सहारनपुरमें** किया जाय।

बम्बई दि० जै० प्रान्तिक सभाके प्रस्तावानुसार सेठ माणिकचंदजीने सभापतिकी हैसियतसे जैनियोंकी संख्या जेलादिमें भिन्न दिखानेके लिये एक मेमोरियल बम्बई गवर्नरकी सेवामें भेजा था जिसका जो जवाब आया वह इस भांति है—

अर्जीका जवाब व बम्बई गवर्नरसे भेट।

शिक्षा खाता, बम्बई कौसिल, ता० १ अगस्ट १९०४
व नाम–सेठ माणिकचद पानाचंदजी
प्रेसीडट दि० जैन प्रान्तिक सभा, बम्बई।

महाशय! आपके ता० ४ जुलाई १९०३ के पत्रका उत्तर इस प्रकार देनेको मुझे आज्ञा हुई है–

(अ) आगामी वर्ष जब परिक्षापत्र जाचके लिये आवेंगे तब देशकी शिक्षा सम्बन्धी दशाकी सूचीमे जैनियोंको पृथक् दिखलानेकी बात पर ध्यान रक्खा जायगा।

(ब) जुडीशियल और ऐडनिस्ट्रेटिवकी सूचीके तीसरे खानेमें बौद्ध और जैन एकत्र दिखलाए जाते हैं इसमे रदबदल करनेकी आवश्यक्ता नहीं है।

(क) ज्युडीशियल और ऐडमिनिस्ट्रेटिवकी सूचीके आठवें (जन्म रण सम्बन्धी) खानेमे जनियोंको पृथक् दिखलाना अशक्य है।

२– सेनेटरी (आरोग्यता)के कमिश्नर साहबकी रिपोर्टमे जैनियोके पृथक् विवरण देनेके विषयमे आपको फिर लिखा जावेगा।

आपका सेवक जे० स्लेडन, गवर्नमेंट सेक्रेटरी।

(जैनमित्र वर्ष ६ अ० ९)

बम्बई बोर्डिंगमें सभा व सेठजीका यश गान।

सन् १९०४ दिसम्बरमें राष्ट्रीय सभा अर्थात् कांग्रेसका २०वां अधिवेशन बम्बईमे हुआ था। सभापति सर हेनरी काटन हुए थे। प्रदर्शनी भी बडी शानके साथ हुई थी। इस निमित्त परदेशी बहुतसे जैनी भी बम्बई पधारे थे। ता० ३१ दिसम्बरकी रात्रिको ७ बजे हीराचद गुमा-

नजी जैन बोर्डिंगमें श्रीयुत शोलापुर निवासी **सेठ वालचद रामचंदके** सभापतित्वमें सभा हुई थी । बोर्डिंगके कार्य विवरणको सुनकर इसकी उपयोगिता प्रगट हुई, ५० बसीवरको धार्मिक विषयमें निपुणताके अर्थ एक सुवर्ण पदक दिया गया और शेष धर्मशिक्षामें उत्तीर्ण बोर्डरोंको इनाम दिया गया । **सेठ माणिकचद व प्रेमचदकी** तीन वार जय कही गई । ३००) उपस्थित मडलीने लाइब्रेरीमें दिये । सेठ माणिकचदको अपनी जातीय सेवाका यश मिलते हुए देखकर बहुत सतोष हुआ ।

स्तवनिधिपर द० म० जैन सभा । दक्षिण महाराष्ट जैन सभाका वार्षिक अधिवेशन माघ वदी १४ से माघसुदी २ ता ३से ६ फर्वरी १९०९ तक स्तवनिधि क्षेत्रपर बडे समारोहसे हुआ । अध्यक्ष श्रीयुत सेठ नेमीलाल गुलाबसाह नागपुरवाले हुए थे । वरारसे बहुत महाशय आए थे । **सेठ माणिकचंदजी** स्वागत कमिटीके प्रमुख थे सो पहले ही पहुचे थे । ता १ को स्टेशनपर सभापतिका स्वागत किया गया । शिक्षणफडमे ३०००) की उपज हुई । रा० रा० दादा तात्या चिवटे कुरुदेवाडने १००) उत्पन्नकी जमीन दी। क्षेत्र भडारमें ३०००) के अनुमान आय हुई सो क्षेत्रमें मरम्मतकी आवश्यक्ता जान **सेठ माणिकचदजीके** यहा जमा करा दी गई । सभामें ८ वाँ प्रस्ताव इस विषयका रा० रा० लट्ठे एम ए० ने पेश किया कि जैनियोंकी सख्याकी कमीके कारणोंको दूर किया जाय उसके लिये सभा सम्मति देती है कि दुर्व्यसन जन्य रोगोंके फैलाव व बालविवाह आदि कारणोंको रोका जाय । इसका समर्थन

श्रीमान् शेठ माणिकचंदजीने बहुत जोरके साथ किया।

सेठजीकी पत्नी स्त्री समाजकी अध्यक्षा ।

सेठ माणिकचदजी सपत्नीक स्तवनिधि पधारे थे। ता० ९ फर्वरीकी रात्रिको स्त्रियोंकी एक महती सभा हुई जिसका अध्यक्ष स्थान सेठजीकी धर्मपत्नी **नवीबाई**जीको दिया गया था। इसमे १५०० से अधिक स्त्रिया थी। इस सभामे श्रीमती डाक्टरनी कृष्णाबाईने स्त्रीशिक्षा पर बहुत ही असरकारक भाषण दिया। जैन समाजकी तरफसे एक अगूठी नजर की सो डाक्टरनी बाईने विद्याखातेमें दान कर दी। इस अगूठीका नीलाम सभामें १५०) रु० में हुआ तथा दो इनाम और भी आए थे सो भी १२०) रु० मे नीलाम हुए। इस रुपयेसे स्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी जाय ऐसा ठहराव हुआ।

धर्मादेका द्रव्य ।

महाराष्ट्र सभाके जलसेमे स्वयं **शेठ माणिकचंदने** १२ वा प्रस्ताव यह पेश किया—“ बाहरसे आए हुए व्यापारियोंसे माल विक्री अथवा गाडी पर सैकडा पीछे कुछ धर्मादा वसूल करनेकी इस ओर प्रथा है, परतु यह धर्मादेका द्रव्य नाच तमाशोंके सिवाय किसी उत्तम लाभकारी कार्योंमे कभी नहीं लगाया जाता है इसलिये प्रत्येक स्थानके मुखिया पच महाशयोंसे प्रेरणा की जाती है कि वे उक्त धर्मादा द्रव्यको किसी सार्वजनिक कार्यमें लगानेका प्रयत्न करें। इसको वर्णन करते हुए सेठजीने समझाया कि व्यापारमें जो हम धर्मादा जमा करते हैं वह हमारी जातीय मिलकियत नहीं है परंतु धर्मके लिये वह पब्लिकका पैसा है। अतएव उसको धर्म व

परोपकार कार्यमें खर्च करना चाहिये। उससे खेल तमाशे कराना अधर्म है। उस पैसेको अमानतमें आप रखनेवाला है ऐसा समझे और खर्च करता रहे। बहुतसे लोग ऐसे रुपयेको अपनी वहियोंमे जमा करते चले जाते है पर उसका उपयोग नहीं करते। जब वह द्रव्य ज्यादा हो जाता है तब परिणाम गिर जाते है और वे उनको छिपाकर रहने देते हैं खर्चका नाम भी नही लेते।" इस प्रस्तावका समर्थन रा० रा० अणाप्पा भरमाप्पा चिवटे और विष्णुपंत शास्त्रीने किया। प्रस्ताव पास हुआ। इसका लोगोंपर अच्छा प्रभाव पडा। आगामी वर्षके लिये **शेठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई** कोषाध्यक्ष नियत हुए।

श्रीमती मगनबाईजी- की तीर्थयात्रा।

संवत् १९६१ के जाडोंमे शोलापुरके सेठ रावजी नानचंद श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्राको रवाना हुए। सेठजीने उन्हीके साथ श्रीमती मगनबाईजीको अकलेश्वरकी विदुषी बाई व मगनबाईकी सहधर्मिणी ललिताबाई व रसोइया आदि १० मनुष्योंके साथ यात्रार्थ भेज दिया। सेठजीने मगनबाईजीको संस्कृत व धार्मिक विद्या पढाकर व अनेक गुजराती व हिन्दी उपयोगी पुस्तकें तथा नित्य समाचारपत्र देखनेकी आज्ञा देकर इस योग्य कर दिया कि मगनबाईजी विना संकोचके यात्राका कुल प्रबन्ध कर सकती, टिकट मगा सक्ती, असबाब तुलवा सक्ती, व आवश्यकतानुसार बात कर सक्ती थीं। गुजरात देशमें इस तरहका परदा नहीं है जैसा कि उत्तर भारतमें है कि स्त्री एक गुड़ियाकी तरह होती है। वह स्वयं यात्रा नहीं कर सक्ती। उसके हाथ

पैर मुह सब ढका हुआ रहता है । उसको कुछ खबर नहीं । असवावमें एक स्त्री भी मानी जाती है जिसे उठा कर ले चलना पडता है । गुजरातकी स्त्रिया मुह नहीं ढकती–जरूरत पडनेपर कायदेके साथ देखभाल व बातचीत कर सकती है । अनपढ गुजराती स्त्रियोंकी अपेक्षा मगनबाईजी परदा न रखनेका पूरा लाभ ले सकती थी । वह पढी लिखी ऐसी चतुर थी कि जो बातें पुरुषोंको न मालूम उनका इसे ज्ञान था । चौपाटी बगलेपर जब सेठजी रात्रिको दीवानखानेमें बैठने तब यह भी दूसरी कुर्सीपर बैठती और जो २ बातें सेठजी लोगोंसे करते उनको सुनती व कभी जरूरत होनेपर बीचमें भी बोलती थी । कुछ व्याख्यान देने व परोपकार करनेका भी शौक हो चला था । वृत्ति भी वैराग्य रूपमें थी, इसीसे सेठजीने मौका दिया कि इमको प्रवासका अनुभव हो और यह जातिसेवाके लिये तय्यार हो । ललिताबाई भी इसीके समान सस्कृत व धार्मिक विद्यामे चतुर थी, परिणति वैराग्य रूप थी । दोनोंका मेल भी था । दोनों एक दूसरेकी रक्षा करें, एक दूसरेका स्थितिकरण करें इसीलिये दोनोंका साथ सेठजीने कर दिया । कई मास यात्रामें विताए । बुन्देलखंडकी यात्राए भी की । शिखरजीकी यात्रा बड़े भावसे की । फिर लौटते हुए काशी, अयोध्या होती हुई लखनऊ पधारी ।

लखनऊमें बाबू धरमचद फतहचद जौहरीका नाम सेठजीने नोट करा दिया था सो चौकमें आई और बडे मदिरजीके निकट स्थानमें उक्त जौहरियोंने बहुत सन्मानके साथ ठहराया ।

चौकका मदिर बहुत सुन्दर बना है । भीतर संगमर्मरका जडाव

व रगावेजी अच्छी है। पाच वेदियाँ हैं।

बाबू शीतलप्रसादका परिचय। मूलनायक **श्री नेमिनाथ स्वामी**की बडी ही शात दो गज ऊची पद्मासन प्रतिबिम्ब म-य वेदीमें विराजित है। दर्शन करते हुए जी नहीं तृप्त होता है। दूसरी वेदिया क्रमसे श्वेत वर्ण चद्रप्रभु, चौवीसी, श्वेतकापापाण श्री पार्श्वनाथजी व श्री शातिनाथजी की ४ हैं। शातिनाथकी प्रतिबिम्ब प्राचीन है, परम वीतरागता झलकाती है करीब २। हाथ ऊची पद्मासन है। दर्शन करते २ जी नहीं तृप्त होता है ऐसे ही चौथी वदीमे श्री पार्श्वनाथजीकी बडी ही प्रसन्नमुख आत्मिक आनद रसको पीती हुई एक भव्य प्रतिबिम्ब है। इसी वेदीके आगे मगनबाई और ललिताबाई दोनों शुद्ध धोए वस्त्र पहने सामग्री लिये हुए बहुत ही ललित उचारणके साथ अष्ट द्रव्यसे पूजा कर रही थीं, करीब ९ प्रात कालका समय था। इन दोनों स्त्रियोंको नित्य श्री जिनेन्द्रकी पूजा करनेका अभ्यास था। जिस समय ये पूजा कर रहीं थी, मंदिरजीमें कई श्रावक शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। यहा पहले कभी किसीने स्त्रियोंको अष्ट द्रव्यसे पूजा करते हुए नहीं देखाथा सो सब आश्चर्यमें डूब रहे थे और सोच रहे थे कि ये कौन है, किस देशको स्त्रिया हैं।

उन स्वाध्याय करनेवालोंमें एक **बाबू शीतलप्रसाद** भी थे जो उस समय मदिरजीके पासवाले मकानमें अपने बडे भाई लाला सतूमलके कुटुम्बके साथ रहते थे। शीतलप्रसादकी उस समय अवस्था २६ वर्षकी होगी। यह अग्रवाल वशज गोयल गोत्रीय लाला मक्खनलालके पुत्रोंमेंसे एक थे। दो सीतलप्रसादसे

बडे और एक छोटा था। पर उस समय केवल दो बडे भाई ही मौजूद थे। अनतलाल जवाहरातका और सबसे बडे सतलाल टोपी चिकनका काम करते थे। सबसे छोटा भाई पन्नालाल था जो अपनी १८ वर्षकी आयुमे इस समयके ८ या ९ मास पहले ता० १५ मार्च १९०४को प्लेग रोगसे पीडित हो परलोक सिधारा था। इसीके दो दिन पहले शीतलप्रसादकी स्त्री भी प्लेग रोगसे मरण कर गई थी। यह स्त्री एक वैष्णव अग्रवालकी पुत्री थी पर जिन धर्ममे ऐसी गाढ श्रद्धावान थी कि किसी कुदेवादिकको नहीं पूजती थी। माता पिताने कुछ विद्या नही पढाई थी। पतिको विद्या पढाने-का शोक सो रात्रिको सोनेके पहले आध घटा अक्षर व पुस्तकज्ञान कराकर सोनेकी आज्ञा मिलती थी। पतिकी कृपासे थोडे ही दिनोंमे जैन धर्मकी पुस्तक पढने लगी थी। पतिसे गाढ प्रेम था। शरीर अस्वस्थ रहा करता था, इसीके चार दिन पहले ता० ९मार्च १९१३को शीतलप्रसाद-की माता श्रीमती नारायणदेवी यकायक एक ही दिन प्लेगमे बीमार रहकर परलोक सिधार गईं। यह नारायणदेवी साक्षात् देवी ही थी। इनको आलस्य छू तक नही गया था। आप सवेरेसे रात्रि तक परिश्रम करनेमे ही सुख मानती थी। शीतलप्रसादके पिताका ११ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। शीतलप्रसाद उस समय सर्कारी रेलवे हिसावके दफ्तरमें क्लर्क थे। माता इन्हीके साथ थी। इनको बहुत चाहती थी। नारायणदेवी रसोई क्रियामें बहुत निपुण थीं। स्वादिष्टमे स्वादिष्ट भोजन बनाना जानती थी। थोड़े खर्चमे स्नेह भरा भोजन बनाकर अपनी आयु पर्यन्त छोटे पुत्रोंको खिलाती रही। घरमे सफाई रखनेमें चतुर थीं। समय बचनेपर लखनऊके चिकनका

रसीदा काढकर महीनेमें ८) व १०)रु. के अनुमान पैदा कर लेती थी। बड़ा ही सरल मिजाज था। ऐसी माता व आज्ञाकारिणी स्त्री व छोटे भाईके समागममें कुछ दिन शीतलप्रसादको स्वर्गके समान सुख मालूम होता था और अपनेको साता होनेका बडा गर्व था कि मैं सतोषमें दिन बिता रहा हूं, पर ससारकी दशा क्षणभगुर है, अतराय कर्म किसीकी स्थितिको एकसी नही रहने देता। लखनऊमें प्लेग प्रकोप हुआ। और ता० ९ से १५ मार्चके भीतर वे ही तीन साथी जिनके उपर शीतलप्रसादके शरीरका वैय्यावृत्त निर्भर था यकायक इस हाडमई देहको छोडकर चल दिये। इस घटनासे शीतलप्रसादके चित्तको जो आघात पहुचा वह वर्णनके बाहर था। पर श्री ज्ञानार्णव, स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि शास्त्रके पढनका ऐसा भारी असर चित्तमें था कि शोककी तरङ्ग आती थी और जाती थी पर इतनी बलवती नही हुई थी कि आखोसे आसुओंकी धारा बहा निकाले। शीतलप्रसादको रोते न देखकर लोग आश्चर्य करते थे। भा० दि० जैन महासभाके साथ शीतलप्रसादका सम्बन्ध बहुत पुराना हो चुका था। जब बाबू सूर्यभानने जैनगजट जारी किया था और उसकी प्रतियें श्री शिखरजीमे बाटी थी उसमेंसे एक प्रति शीतलप्रसादके पिता मक्खनलालको प्राप्त हुई थी जो यात्राको गए थे, उस समय शीतलप्रसाद कलकत्तेमें थे और अपने मझले बडे भाई अनन्तलालके साथ जवाहरातका व्यापार व दलाली करते थे। पिताने वह जैन गजट शीतलप्रसादको दिया उसीको पढकर शीतलप्रसादके भीतरकी ज्ञान चिनगारी जग उठी और इसने जैनगजट मगाना शुरू किया व उसमें लेख भी भेजने शुरू किये।

सबसे पहला लेख ता० २४ मई १८९६ के अक २३ में छपा है जिसमें पडितोंसे प्रार्थना की गई है कि–

" ऐ जैनी पडितो, यह जैनधर्म आप ही के आधीन है। इसकी रक्षा कीजिये, ज्योति फैलाइये, सोतोंको जगाईये और तन मन धनसे परोपकार और शुद्धाचारके लानेकी कोशिस कीजिये कि जिससे आपका यह लोक और परलोक दोनों सुधरें आदि "।

शीतलप्रसादके कुटुम्बकी कलकत्तेकी जैन बिरादरीमें बडी मान्यता थी। इसका कारण यह था कि इनके पूज्य पितामह लाला मगलसैनजी सस्कृत और फारसीके विद्वान् होनेके सिवाय जैन धर्मके अच्छे मर-मी थे। यह जैन मदिरमे सभाका शास्त्र पढकर धर्मोपदेश देते थे। गोम्मटसार व समयसारकी चर्चाका अच्छा अभ्यास था। लखनऊके शाहजीकी कोठीमें कोषाध्यक्ष थे। इनको गणितमे लीलावतीका अच्छा ज्ञान था। कभी २ इग्रेज लोग गणितका प्रश्न हल करनेको इनके पास आते थे। शीतलप्रसादपर इनका बडा प्रेम था। कभी यह लखनऊ आते तब १० वर्षके बालकको अपने साथ श्री मदिरजी ले जाकर जो शास्त्र आप पढते सो बचवाते थे। जैनगजट और महासभाके साथ शीतलप्रसादका यहा तक गाढ सम्बन्ध हो गया था कि जब यह कलकत्तेसे लखनऊ सन् १८९८ के अनुमान गए तबसे करीब २ प्रतिवर्ष ही श्री चौरासी मथुराके दर्शन किये और महासभामें शरीक हुए। जैनगजट पत्रपर अतिशय प्रेम था। बाबू बच्चूलाल प्रयागके देहान्त होनेपर जैनगजटका मुद्रित होना शीतल-प्रसादके द्वारा लखनऊमें अक १० सप्तम वर्ष ता० १ अप्रैल १९०२ से शुरू हुआ, तब यह पत्र पाक्षिक था। उस समय शीतलप्रसाद

घोष कम्पनीके यहा अमीनाबादमें ९०) मासिकके एकौन्टेन्ट थे। लखनऊमें मिडिल क्लास तक शिक्षा पाकर कलकत्ते व्यापारार्थ गए। वहा कई वर्ष रहे। एक वर्ष सील्स फ्री कालेजमें पढकर ता० १९ अप्रैल १८९९ को इन्ट्रेन्स परीक्षाके प्रथम विभागमें उत्तीर्ण पत्र प्राप्त कर लिया था। द्वितीय भाषा शुरूसे हिन्दी और सस्कृत थी। लखनऊमे आकर टामसन सिविल एन्जीनियरिंग कालेज रुडकीकी फोर्थ ग्रेड एकौन्टेन्टशिप नामकी परीक्षा ११ फर्वरी सन् १९०१में पास की। १॥ वर्ष पीछे फिर अवध रेलवे एक्जामिनरके दफ्तरमें इस गरजसे भरती हुए कि शीघ्र ८०) मासिक पानवाले एकौन्टेन्ट हो जावेंगे और तब १५०) तक बढकर आगे तरक्की करेंगे। पहले इन्हें स्वाध्यायका शौक न था। जब लखनऊमें इंग्रेजी पढते थे तब नित्य दर्शन व कभी २ प्रक्षाल पूजन व कभी शास्त्र सुनते थे। दर्शन करके जीमना यह नियम ८ वर्षकी उम्रमें लिया था इसीसे धर्मकी लग्न लगी रही। यदि यह नहीं होती तो इंग्रेजी स्कूलकी सगतिमे पढकर जैसे और बालक धार्मिक क्रिया छोड बैठते है वैसे यह भी छोड बैठते पर दर्शनके नियमने धर्म मार्गपर कायम रक्खा। स्वाध्यायका अभ्यास कलकत्तेमे बाबू ऋषभदास प्रयाग निवासीको एक दिन पडित सदासुखजी कृत रत्नकरड श्रावकाचार पढते हुए सुनकर प्रारभ हुआ था। जब तक जैनगजट लखनऊमें शीतलप्रसादके द्वारा छपता रहा बाबू देवकुमार आरा निवासी सम्पादक थे। शीतलप्रसादको लेख लिखने व समाचार देखनेका शौक था। बहुतसे लेख स्वय लिखकर समाचार छाटकर यह दिया करते तथा प्रूफको जाचकर

त्रको तय्यार कराकर आरा भिजवा देते थे। यह पाक्षिक रूपमें अंक ५ दशम वर्ष ता० १६ जनवरी १९०९ तक निकला। फिर शीतलप्रसादके खास उत्साह व परिश्रमको देखकर व देवकुमारजीकी हार्दिक इच्छा व मददको जानकर महासभाने इसको **साप्ताहिक** करनेका प्रस्ताव अम्बालाके अधिवेशनमें पास किया उसके पीछे ही ता० १ फरवरी १९०९से अंक नं० ६ से साप्ताहिक रूपमें निकलने लगा और इस प्रकार यह पत्र लखनऊमें ता० ११ नवम्बर १९१० तक छपता रहा। जब इसके सम्पादक बाबू जुगलकिशोर देवबन्द हुए तब शीतलप्रसादका खास सम्बन्ध जैन गजटसे छुट गया। शीतलप्रसादके चित्तमें जबसे उनकी स्त्री माता व भाईका एक साथ मरण हुआ, **संसारसे उदासी** आ गई थी। यद्यपि दफतर रेलवेमे जाते थे पर मन त्यागके सन्मुख हो रहा था। जब ये दोनों बाइया पूजन कर चुकी तब शीतलप्रसाद साहस करके उनका नाम ठिकाना आदि पूछने लगे। सेठ माणिकचदको यह अच्छी तरह जानते थे। जैनमित्र, जैनगजटमें इनके कार्योंकी महिमाके सिवाय मथुराके मेलेपर प्रत्यक्ष देखा था। यद्यपि उस समय वार्तालाप करनेका कोई अवसर नहीं मिला था यह जानकर कि यह सेठ माणिकचन्दजीकी पुत्री है, बाबू शीतलप्रसादको बडा हर्ष हुआ, तब श्रीमती मगनबाईजीने पूछा कि क्या यहा कोई श्राविका पढी हुई है ? उस समय लखनऊमें श्रीमती पार्वतीबाईको शास्त्रका कुछ अभ्यास था व धर्मसे लग्न थी, उन्हीका नाम व पता बताया क्योंकि शीतलप्रसादको भोजन करके दफतर जाना था अतएव यह फिर मिलेंगे ऐसा कहकर चल

दिये। शामको दफ्तरसे आ भोजन करके खबर भिजवानेपर श्रीमती मगनबाईजी मिली तब इन्होंने बाबू अजितप्रसाद वकीलका पता पूछा व मिलनेकी इच्छा प्रगट की। सेठजीने सब नोट करा दिया था कि अमुक नगरमें अमुकरसे मिलना। शीतलप्रसाद इनको व इनकी पुत्री केशरमतीको एक मनुष्यके साथ बाबू अजितप्रसादजीके मकानपर ले गये। उस समय जिस ढगसे बाईजीने बातचीत की उससे मालूम होता था कि इनको दुनियाका, सभा सोसायटी आदिका अच्छा अनुभव है। दो दिनतक दो२ घडी धर्म चर्चा करनेसे व प्रश्नोत्तर करनेसे दोनों बहनोंको धर्मका अधिक लाभ मालूम हुआ। इनको शीतलप्रसादजीने स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ उत्तेजित किया और प्रेरित किया कि जैनगजटमें मुद्रित करानेको लेख भेजें तो शुद्ध करके छपादिये जावेंगे। बाइयोंने स्वीकार किया।

उज्जैनकी बिम्बप्रतिष्ठा और सेठजी का समागम।

मालवाके प्रसिद्ध प्राचीन नगरमें नएपुराके मदिरका जीर्णोद्धार कराकर बिम्बप्रतिष्ठाका पचकल्याणकोत्सव इन्दौरके सेठ तिलोकचद कल्याणमलजीने चैत्र सुदी ९ से १२ स० १९६१ तक कराया था। १६००० के अनुमान जैनी भिन्न२ प्रान्तोंके एकत्रित थे। अजमेरके सेठ नेमीचदजी, पाटनके विनोदीराम बालचद, लश्करके राजा फूलचद आए थे। बम्बईसे सेठ माणिकचदजी सकुटुम्ब व श्रीमती मगनबाई सहित पधारे थे। साथमें पालीतानाके मुनीम धरमचद हरजीवनदास व अक्लेश्वरकी ललिताबाई भी थी। प्रतिष्ठाकारक पडित बापूलालजी रतलाम और प० नरसिंहदासजी थे। त्यागी दौलतरामजी, अनरान-

मजी, जानकीलालजी, शीलचदजी, मुन्नालालजी आदि भी आए थे। दौलतरामजी गोम्मट्टसारके ज्ञाता, विद्वान व वैराग्य सयुक्त थे। इस उत्सवमे लखनऊसे शीतलप्रसाद भी आए थे। जबसे इन की पत्नीका देहान्त हुआ था तबसे धार्मिक कार्योंमें विशेष मन था सो रेलवे दफ्तरसे छूटी लेकर इस महान उत्सवको देखने व उपदेश करने चले आए थे। शीतलप्रसादको सभामे व्याख्यान देनेका बहुत शौक था। कलकत्तेमे मासिक व पाक्षिक सभामे व लखनऊकी सभाओमें व महासभाके अधिवेशनोंमें भी व्याख्यान दे चुके थे। इस उत्सवमें सभा होना बडा कठिन था। कोई खास प्रबन्ध नहीं था। **सेठ माणिकचंदजी**को भी सभाका बहुत शौक था। चैत्र सुदी १२ की रात्रिको आपने ठान लिया कि सभा अवश्य कराएगे। आप एक छोटेसे मडपमे गए। वहा स्वय खडे होकर बिछौना बिछवाया, बुलावा दिलवाया और प्रथम ही १०—२० आदमियोंको लेकर बैठ गए, इतनेमे सभा जुड गई। उस समय सेठ माणिकचन्दके उत्साह व परिश्रमको देखकर बडा आनन्द होता था। इसी रात्रिको हकीम कल्याणरायजी, शीतलप्रसादजी, पन्ना लालजी गोधा, चिरजीलाल अनाथाश्रम हिसार, और माणिकचद विद्यार्थीके व्याख्यान हुए। सेठ माणिकचन्दजी और पं० धन्नालालजीके उद्योगसे मालवा प्रातिक सभाकी नियमावली सशोधित हुई, कार्य-कर्ता नियत हुए व १९००)का चदा सभाके खर्चके लिये हो गया। मेलेमें आए हुए १५० लडकोंकी परीक्षा ली गई। परीक्षकोंमें प० धन्नालाल, प० लक्ष्मीचन्द वागीदोरा, लाला भगवानदास तथा शीतलप्रसादजी आदि कई भाई थे। तथा श्रीमती श्रृगारबाई (जो



श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी गृहस्थावस्थामें.

J. V. P Surat. (देखो पृष्ठ १९३)

गोमट्टसारको अच्छा समझती थी तथा जिनका चारित्र बहुत उज्वल था), मगनबाई, ललिताबाई, हगामीबाई आदि विदुषी स्त्री मडलीने ९९ कन्याओंकी परीक्षा ली। सर्व बालक बालिकाओंको यथोचित इनाम दिया गया। एक दिन सेठ माणिकचन्दजी दुपहरको अपने बडे डेरेमें बैठे हुए थे, वहापर सेठ अमरचदजी शीतलप्रसादजी व धर्मचन्दजी थे। शीतलप्रसादजी उस समय सेठ माणिकचन्दजीसे खुले दिलसे बात नही कर सक्ते थे, केवल माणिकचन्दजीको बडे धर्मात्मा सेठ जानकर उनकी बातें सुननेको दूर बैठे थे। मगनबाईजी भी थी, जो सेठ अमरचन्द बडनगरवालोंसे कुछ धर्मचर्चाके प्रश्न कर रही थी (यह अमरचन्दजी अब गृहवास छोडकर उदासीनाश्रममें शाततांके साथ धर्मसेवन कर रहे है)। उस समय बागट देशके ९०–६० भाई सेठजीके सामने आकर बैठ गए। ये हूमड जातिके थे। ये लोग बडे ही दीन वचनोंसे कहने लगे कि हमारे बागड प्रान्तमे धर्मका विच्छेद हो रहा है, कोई सम्बोधने नहीं आता है और न कोई पाठशाला ही है। आप दया करके वहा पधारें और अपने जाति भाइयोंका उद्धार करें। सेठ माणिकचदजीने बड़े ही वात्सल्यभावसे उनसे वार्तालाप की, वहाका सब हाल पूछा और उपदेश दिया कि आप लोग कन्याविक्रय न करें, न बालविवाह वृद्धविवाह करें, स्नानादि करनेमें विवेक रक्खें, शास्त्रको पढा करें व बालकोंक पढानेके लिये पाठशालाएँ खुलवावें, उसके लिये थोडी बहुत मदद हम भी देवेंगे इत्यादि आश्वासन दिया और यह भी कहा कि हम शीघ्र ही कोई उपदेशक आपके प्रान्तमें भेजेंगे। इतने बडे धनाढ्य सेठकी इतने प्रेमके साथ

साधारण वस्त्र पहने हुए व ठीक २ बात करना न जाननेवाले बागडक भाइयोसे बात करते हुए देखकर शीतलप्रसादके चित्तपर सेठजीकी सादगी, निगर्वता, जातिप्रेम, व धर्मोन्नतिके उत्साहका बड़ा भारी असर पडा।

मगनबाईजीका प्रथम लेख।

जैनगजट अंक २२ ता० १–६–०५में सबसे पहले श्रीमती मगनबाईद्वारा लिखित "स्त्रीशीक्षा" पर एक छोटासा लेख मुद्रित है। इसमें दिखलाया है कि "मालवा बुंदेलखंड आदि प्रांतोंमें मैने यात्रार्थ पर्यटन करते बड़ी ही आश्चर्योत्पादक किम्बदन्ती सुनी । उस देशमें हमारी जैन स्त्रियें बतलाती है कि पढनेसे स्त्रिया विधवा होती है, दोष लगता है ...।" इन वाक्योंसे पाठकोंको उस समयका हाल मालूम होगा कि जब लोगोंका स्त्रीशिक्षासे बहुत कम प्रेम था तथा विधवा होनेका भय बहुत घुसा हुआ था, परतु अब १०–११ वर्षमें यह भय बिल्कुल मिट गया है। जैसा शीतलप्रसादजीसे प्रण किया था उसीके अनुसार मगनबाईजीने यह पहला लेख भेजा व आगामी भी भेजती रही थीं।

अहमदाबादमें बोर्डिंग-के लिये नया मकान।

सेठ माणिकचंदजीको यह बात पसन्द न थी कि उनकी स्थापित की हुई कोई भी सस्था अधूरी स्थितिमें रहे, इसीलिये वे रात्रि दिन फिकरमें रहते थे कि अहमदाबाद बोर्डिंगको किरायेके मकानसे निकालकर अच्छे अपन खास बोर्डिंगमें रखना चाहिये। इसके लिये आप बीचमें अहमदाबाद आये और सेठ हरजीवन रायचंद आमोद वालोंको

साथ ले एक दलालके साथ बहुतसी जगहोंको देखने गए । साथ वालोंने जो जगह पसंद की सो सेठजीके ध्यानमें न आई । हाल जहां बोर्डिंग है उस जगहको सेठजीने अपनी दीर्घ दृष्टिसे स्वयं पसन्द की तब और भी सहमत हो गये । इस जगह मकान भी बना हुआ था । कुल जमीन ४०४४ वर्ग गज थी । बोर्डिंग फंडमेंसे १६०००) देकर यह मकान खरीद लिया गया । आज यह ५००००) की मिलकियतका हो गया है । सेठजी कितने अनुभवी थे इस बातका इसीसे अच्छा पता लगता है ।

सेठजीका दया दान। सेठ माणिकचंदजीका चित्त जैसे जैन जातिके उद्धारमें लीन था ऐसे ही सर्व मनुष्यसमाजकी तथा पशु पक्षीकी भी रक्षाका पूर्ण ध्यान था । जूनागढ़ निवासी एक दयालु ब्राह्मण **लाभशंकर लक्ष्मीदास** है, उन्होंने अपने जीवनका उद्देश्य जीवदया प्रचार बना लिया है । लंडनमें जो जीवदयाकी सभा सुसायटियें है उनसे इनका खास सम्बन्ध है । वहांके इस विषयके समाचारपत्र भी आप मंगाते रहते है व वहांकी छपी पुस्तकोंको वितरण कर मांसाहारका त्याग कराने व पशुरक्षा करानेका यत्न करते रहते है । सेठ माणिकचंदजीसे आपकी पूर्ण मुलाकात थी । सेठजी लाभशंकरकी सम्मतिसे अपना बहुतसा रुपया जीवदयाप्रचारमे खर्च करते रहते व इंग्रेजी पुस्तकोंको मुफ्त ही बांटते रहते थे । लंडनमे **ह्यूमेनीटेरियम लीग**की एक जीवदया सम्बन्धी संस्था है इसका मासिक पत्र भी मंगाते थे तथा इस समय उस संस्थाको ३१ पाउन्ड याने ४६५) रु० भेजकर सहायतापहुंचाई

थी । वास्तवमें जो महापुरुष होते हैं उनका उपयोग जीवमात्रके हितमें प्रवर्तन करता है । आपने थोडे दिन पहले कालेज व स्कूलोंके बडे मुसल्मान विद्यार्थियोंसे इंग्रेजी पुस्तक देकर अहिंसापर उनके विचारानुसार निबंध लिखवाकर जो उत्तम रहे थे उनको इनाम दिया था। सेठजी जानते थे कि पुस्तक बाचते व लिखते २ मनुष्यके विचारोंमे फर्क पडता है । विचारोंके पलटनेसे ही पशुहिंसा व मांसाहार त्यागका कर्तव्य हो सकता है ।

सेठजीका चंदेके लिये भ्रमण ।

द० म० जैन सभाकी ओर आपका बहुत प्रेम था । उस प्रान्तमें शिक्षाका प्रचार हो इसलिये जो शिक्षण फंड हुआ था उसकी वसूलीके लिये उक्त सेठजी श्रुतपंचमी अर्थात् जेठ सुदी ५ के करीब **नांदणी** गावमे गए और भट्टारकजीके मठमे ठहरे थे। वहा क्या देखा कि श्रुतपंचमीके धार्मिक उत्सवके लिये भी आतिशबाजी और रोशनीकी तय्यारी हो रही है तथा प्रति वर्षके समान वेश्यानृत्य भी होनेवाला है। इसपर सेठजीको बडा आश्चर्य हुआ । आपने भट्टारकसे इन सब कुप्रथाओंको बंद करनेके लिये निवेदन किया । भट्टारक भी समझ गए और इनकी बन्दीका आज्ञापत्र जारी कर दिया ।

१ दयाप्रेमी मुसल्मानका समागम ।

यहा सेठजीको एक **माणेकभाई** नामके मुसलमानसे भेट हुई, जिसके कुटुम्बमें कोई मांस नहीं खाता तथा जिसके उपदेशसे नांदणीके सब मुसल्मानोंने मांस खाना छोड दिया था । सेठजीको ऐसे व्यक्तिसे मिलनेसे बहुत आनन्द हुआ । आपने उसको जीवदया प्रचारार्थ और भी दृढ कर दिया ।

ईडरके भंडारसे करीब ४०० ग्रंथ सेठजीके यहां आए हुए थे जो संस्कृत व प्राकृतके प्राचीन थे। बम्बई

सेठजीकी सरस्वती भक्ति।

आते ही इन्होंने एक विद्वान् इसलिये नियत कर दिया कि जो ग्रंथोंका सूचीपत्र बनावे। उसमें इतने विषय लिखे जानेका निश्चय किया—नाम ग्रंथ, आचार्य्य, लेखक, भाषा, पत्र व श्लोक संख्या, प्रति लिखनेका समय आदि मंगलाचरण, अन्य प्रशस्ति और सहज-लभ्य इतिहास। इसके तीन रजिस्टर सेठजीके चौपाटीके बंगलेपर मौजूद हैं, विद्वान् देखकर लाभ उठा सकते हैं।

सेठ माणिकचंदजीको, जबसे व्यापारसे निवृत्त हुए रात्रि दिन धर्म व जातिसेवाका ही ध्यान था। धर्मके

सेठजी द्वारा स्याद्वाद पाठशाला काशीकी स्थापना।

निमित्त पगसे रुक २ कर चलनेपर भी रेलकी व बैलगाड़ी तककी यात्रा करनेमें कभी कष्ट व प्रमाद नहीं होता था, सवेरेसे १२ बजे रात्रि तक यही विचार रहा करते थे। जेठ सुदी १० सं० १९६२ ता० १२ जून १९०५ को काशीमें दिगम्बर जैन जातिकी ओरसे संस्कृत धार्मिक विद्याकी उन्नतिके अर्थ श्रीयुत प० पन्नालाल बाकलीवाल, बाबा भागीरथजी और प० गणेशप्रसादजीके उद्योगसे पाठशाला खुलनेका महूर्त्त था। उसका उद्घाटन सेठ माणिकचंदजी करें ऐसी प्रेरणा होनेपर सेठजी बम्बईसे तुर्त ही **काशी** पधारे और मैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। शहरवालोंने आपका बहुत सन्मान किया। पाठशालाका महूर्त मैदागिनी जैन मंदिरमें सवेरे ८ बजे हुआ। उस समय बाहरके

खास २ भाई आए थे। आरासे बाबू देवकुमार ऑनेरेरी मजिस्ट्रेट व किरोडीचदजी रईस, लखनऊसे बाबू अजितप्रसाद एम० ए० एल० एल० बी० वकील और बाबू शीतलप्रसाद, देहलीके लाला मोतीलाल, बरुवासागरके लाला मूलचद रईस, झासीके लाला गबदूमलजी, आगरेसे लाला बनशामदासजी आये थे। सभामे शहरके दिग० व श्वे० भाइयोंके सिवाय श्वेताम्बर यशोविजय पाठशालाके अध्यक्ष यति धर्मविजयजी, इन्द्रविजयजी व बौद्धोंके महाबोधि सोसायटीके आसि० सेक्रेटरी भी आये थे। बाबू नानकचदजी बी० ए० हेड मास्टर सागरके पेश करने और बाबू देवकुमारके समर्थनसे सेठ **माणिकचंदजीने** अपनी अयोग्यता प्रगट करते हुए सभापतिका आसन लेकर णमोकार मंत्र पढकर पाठशालाका परदा हटाया और अध्यापकोंको पाठ पढाने की आज्ञा दी। पाठ हो जानेपर प० गणेशप्रसादजीने व्याख्यान दिया कि **काशी** ही सस्कृत व धार्मिक विद्या प्राप्तिका स्थान है। इसका अनुमोदन अजितप्रसादजी और नानकचदजीने किया। फिर यति धर्मविजयजीने पाठशालाकी चिरस्थायिता चाहते हुए सेठजी भक्त, शूर और दानी है ऐसा सिद्ध किया। बाबू शीतलप्रसादजीने नियमावली व प्रबन्धकारिणी सभाके नाम सुनाए। बाबा भागीरथजीने मूल फड स्थापनकी प्रार्थना की। बौद्ध साधुने इग्रेजीमें हर्ष प्रगट किया। बाबू शीतलप्रसादजीने सर्वको धन्यवाद दिया। बाबू देवकुमारजीने शोलापुरसे आया हुआ बम्बई दिगम्बर जैन **प्रान्तिक सभाका सहानुभूति सूचक तार** सुनाया। इन्हीं दिनोंमें सेठ मोतीचद प्रेमचद शोलापुरकी तरफसे बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव था तथा बम्बई प्रा० सभाका नैमित्तिक अधिवेशन जेठ सुदी ७ और ८ को

को था। गाधी रामचद नाथा सभापति थे। इसमें **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद** भी बम्बईसे शामिल हुए थे। इन्होंने तीर्थक्षेत्रों के प्रबन्धके उपाय प्रचारमें लाए जावें ऐसा प्रस्ताव किया। जबसे प्रांतिक सभाने तीर्थक्षेत्र सुधार खाता कायम किया सेठ चुन्नीलाल तीर्थोंके सुधारमे बराबर दत्तचित्त रहे। शिखरजी बीसपथी कोठीका प्रबन्ध ठीक करानेके सिवाय व इसीके कुछ दिन पहले ता० २६ मई १९०५को आप पावापुरीजी गये। वहा मुनीम राजबजीने भडारके छत्रचमरादि गिरो रख डाले थे। इनके जाते ही वह भागा। सेठजीने पावापुरीका प्रबन्ध तीर्थक्षेत्र कमेटीक हाथमे लिया। तलकचद ईश्वरदास और पुजारी हीरामनको काम सौंपा। शोलापुरके तारको सुनकर सबको बडा हर्ष हुआ। पश्चात् सभापति साहबको पुष्पमालादिसे सन्मानित करके सभाका कार्य समाप्त किया।

इस पाठशालाके लिये उक्त तीनों सस्थापकोंने १००) मासिकका प्रबन्ध बाहरसे कर लिया था तथा काशीमे ता० १४ मई १९०९की सभामे ३०) मासिक काशीके भाइयोंने व २०) बाबू देवकुमारजीने देना स्वीकार किया था।

सेठजीकी २९) मासिककी मदद।

सेठ माणिकचदजीने २५) मासिक सहायता देना स्वीकार किया सो अपने जीवन पर्यंत बराबर दिया तथा बादमे भी उनके जुबलीबागके ट्रस्टियोंने देना प्रारभ किया है। उस समय १९ महाशयोंकी प्रब० कमेटी बनी थी। सभापति सेठजी व मत्री बाबू देवकुमारजी, उपमत्री बा० जैनेन्द्रकिशोर आरा व कोषाध्यक्ष बाबू छेदीलालजी नियत हुए थे। बाबू देवकुमारजी अपने बुजुर्गोंकी बनवाई हुई

हुई ,गगातटपर श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीके मंदिरके नीचेकी वडी धर्मशाला पाठशालाके लिये नियत कर दी। यह स्थान काशी भरमें वडा ही रमणीक है। नौकामें जानेवालोंकी दृष्टि इस बड़ी इमारतको देख चकाचौंध खाजाती है। महूर्तके दिन ५ छात्र भरती हुए, २ सुयोग्य विद्वान् अध्यापक नियत किये गए।

यह पाठशाला अब स्याद्वाद महाविद्यालयके नामसे प्रसिद्ध है। इसने समाजमे सस्कृत विद्याकी रुचि पैदा करा दी है। ३१ जुलाई १९१९ तक ४० विद्वान् यहासे शास्त्रीय विशारद आदिकी सर्कारी व बम्बई परीक्षालयकी परीक्षाओंको पास करके गए है जो समाजका काम कर रहे है। जैसे—

१ न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी—अधिष्ठाता जैन पाठशाला, सागर
२ ,, प० माणिकचदजी—अध्यापक जैन सिद्धात विद्यालय, मोरेना।
३ पडित बद्रीप्रसाद अध्यापक, जैन पाठशाला, कचनेर।
४ प० वृजलाल ,, जैन महाविद्यालय, मथुरा।
५ प० सिद्धामल ,, जैन पाठशाला, ललितपुर।
६ प० कुमारैय्या ,, जैन पाठशाला कारकल (दक्षिण)
७ प० उमरावसिंह ,, स्याद्वाद महाविधालय-काशी।
८ वर्णी नेमिसागर धर्म प्रचारक, दक्षिण प्रान्त।

सेठ माणिकचंदजीको इस सस्थासे इतना प्रेम था कि जैसा आगे मालूम होगा। आपने स्वय २०००) देकर २००००) के करीब चिरस्थायी फंड करा दिया व ६०) मासिककी मदद **जौहरी महाजन कांटा बम्बईसे** सदाके लिये करा दी।

सेठ माणिकचंदजीकी ज्येष्ठ भगिनी मञ्जाबाईके एक पुत्र सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद थे और दूसरी एक कन्या घोली बहन थी। इसके और सेठ भगवानदास कोदरजीके एक परोपकारी साहसी पुत्र **ठाकुरदास** उत्पन्न हुआ था। यह पढ़नेमें शौकीन था। १२ वर्ष तक सूरतमें रहकर शालामें अभ्यास किया, फिर बम्बई जाकर अपने मामा चुन्नीलालके साथ रहने लगा और सन्स्कृत द्वि० भाषा सहित इंग्रेजीका अभ्यास करते हुए मैट्रिक पास किया और प्रिवियम तक शिक्षा ली। स० १९९९ से जौहरी माणिकचंद पानाचंदजीकी दुकानमें बैठने लगे। यह जिस काममें लगाया जाता था दिलसे करता था ऐसा देखकर सेठ माणिकचंदजीने इसके लिये दिगम्बर जैन डाइरेक्टरीका काम नियत किया। दि० जैनियोंकी कहां२ वस्ती कुल भारतमें है, किस२ जातिके हैं, कहां२ मंदिर व पाठशाला हैं इत्यादि व्यवस्थाके जाने विना कुल समाजका सुधार नहीं हो सक्ता। इस कामको आवश्यक जानकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने अपने हाथमें लिया था पर द्रव्य व उत्साहके अभावसे यह काम कुछ चला नहीं। सेठजीके चित्तमें इसकी बड़ी भारी आवश्यक्ता प्रगट हुई थी। ठाकुरदासजीने फार्म छपवा कर सर्व स्थानोंमें भेजे पर बहुत ही कम भर कर आए। तब सेठजीकी सम्मतिसे प्रवीण मनुष्य भेजे विना फार्म भरकर नहीं आसक्ते ऐसा निश्चयकर **जैनमित्र** वर्ष ६ अ० ९ में यह नोटिस दिया कि दौरा करानेके लिये जैनी भाई चाहिये।

सेठ ठाकुरदास भगवानदास और दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी।

ठाकुरदासके **लगातार परिश्रमसे** और सेठ माणिकचद पानाचंदके करीब २००००) के खर्चसे यह डाइरेक्टरी छपकर सन् १९१४मे १४३१ सफोंकी पुस्तक तय्यार हो गई है जो ८) मे बम्बई या सूरतसे प्राप्त होती है ।

कोल्हापुर जैन बोर्डिंगकी नई इमारतका वास्तुविधान ।

सेठ माणिकचदजी काशीसे लौटकर आए कि उनको कोल्हापुर जानेकी फिकर पडी। वहाकी इमारतके लिये आपने २२०००) का निश्चय किया था तथा उत्तम कारीगर भेजकर अपने पसन्द किये हुए नकशेसे इमारत बधवाई थी । पत्र व्यवहार करके निश्चय किया गया कि नई इमारत खोलनेकी क्रिया भी कोल्हापुर महाराजके करकमलोंसे ही कराई जाय । इसके लिये ता ९ अगस्त १९०९ नियत हुई । इस समारभके लिये इमारतके आगे एक सुशोभित शामियाना लगाया गया था । बम्बईसे सेठ माणिकचद, परोपकारी सेठ रामचद्र गाधी व नवयुवक होनहार ठाकुरदास भगवानदासको लेकर पहुचे। शोलापुरसे सेठजीके मित्र सेठ हीराचद नेमचद, बालचद रामचद तथा अन्य आसपासके कई नगरोंसे बहुत जैन मडली उपस्थित हुई । सबेरे ७॥ बजे सब सभा जुड गई । राज्यके सरदार आने लगे । ठीक ९ बजे **श्रीमन्महाराज छत्रपति सरकार शाहु महाराज** कर्नल फरिसके साथ दरबारमें पधारे । प्रथम ही कोल्हापुर विद्यालयके मत्री रा रा अण्णाप्पा बाबाजी लढ्ढे एम० ए० ने इंग्रेजीमे भाषण दिया जिसमें महाराज साहबकी कृपाकी अतिशय सराहनाकी कि जिन्होंने सभाके शिक्षणफडमे २०००) **नकद,** ३००)

वार्षिक व प्रत्येक कक्षामें **एक फ्रीशिप** तथा बोर्डिंग बाधनेको **जमीन** प्रदान की तथा सेठ माणिकचंद पानाचंद जोहरीके कुटुम्बकी प्रशंसा की और प्रगट किया कि आज यह इमारत उनके पूज्य पिताके नामसे प्रसिद्ध होगी अर्थात् " **सेठ हीराचंद गुमानजी** विद्या मंदिर " तथा इसके खोलनेके लिये महाराजसे प्रार्थना की तब महाराजकी तरफसे दीवान साहब रा० ब० सज्जनीसने भाषण देते हुए कहा कि—

" प्राचीन कालमें जैन लोग अत्यन्त उन्नतिमें प्राप्त थे । उस समय उनके महत्व भोगनेके व सुधार करनेके- **जैन समाजपर अजैन** बहुतसे प्रमाण है । जैन शास्त्रकारोंने ज्ञान- **विद्वानकी सम्मति।** भटारको बडा करके महत् सहायता की । " अहिंसा परमो धर्म " के तत्त्वको उन्होंने बहुत ही उत्तम रीतिसे पाला । अब भी ये उसी उन्नतिको पहुचे । इसके लिये अब इन्होंने आलस्य छोडा । सेठ माणिकचंद और उनके बंधुओंने जो शिक्षणकी सुगमताके लिये यह भव्य इमारत तय्यार करा दी है उसको खोलते हुए मुझे बडा ही आनंद आता है " । फिर महाराज साहबने इमारतको खोला । सेठ माणिकचंदजीने हारतुरोंसे महाराजको सन्मानित किया । सभा सानन्द विसर्जन हुई। तब महाराज और कर्नल फेरिसने इमारतको अच्छी तरह देखकर यही कहा कि बहुत अच्छी इमारत तय्यार कराई गई है । उस समय मकानका फोटो भी लिया गया ।

दोपहरको द० म० जैन सभाका नैमित्तिक अधिवेशन शोला-

ठाकुरदासके **लगातार परिश्रमसे** और सेठ माणिकचद पानाचंदके करीब २००००) के खर्चसे यह डाइरेक्टरी छपकर सन् १९१४मे १४३१ सफोंकी पुस्तक तय्यार हो गई है जो ८) मे बम्बई या सूरतसे प्राप्त होती है ।

कोल्हापुर जैन बोर्डिंगकी नई इमारतका वास्तुविधान।

सेठ माणिकचदजी काशीसे लौटकर आए कि उनको कोल्हापुर जानेकी फिकर पडी । वहाकी इमारतके लिये आपने २२०००) का निश्चय किया था तथा उत्तम कारीगर भेजकर अपने पसन्द किये हुए नकशेसे इमारत बधवाई थी । पत्र-व्यवहार करके निश्चय किया गया कि नई इमारत खोलनेकी क्रिया भी कोल्हापुर महाराजके करकमलोंसे ही कराई जाय । इसके लिये ता ९ अगस्त १९०५ नियत हुई । इस समारभके लिये इमारतके आगे एक सुशोभित शामियाना लगाया गया था । बम्बईसे सेठ माणिकचद, परोपकारी सेठ रामचद्र गाधी व नवयुवक होनहार ठाकुरदास भगवानदासको लेकर पहुचे । शोलापुरसे सेठजीके मित्र सेठ हीराचद नेमचद, बालचद रामचद तथा अन्य आसपासके कई नगरोंसे बहुत जैन मडली उपस्थित हुई । सबेरे ७॥ बजे सब सभा जुड गई । राज्यके सरदार आने लगे । ठीक ९ बजे **श्रीमन्महाराज छत्रपति सरकार शाहु महाराज** कर्नल फेरिसके साथ दरबारमें पधारे । प्रथम ही कोल्हापुर विद्यालयके मत्री रा रा अण्णाप्पा बाबाजी लट्ठे एम० ए० ने इंग्रेजीमें भाषण दिया जिसमें महाराज साहबकी कृपाकी अतिशय सराहनाकी कि जिन्होंने सभाके शिक्षणफडमे २०००) **नकद,** ३००)

वार्षिक व प्रत्येक कक्षामे **एक फ्रीशिप** तथा बोर्डिंग बाधनेको **जमीन** प्रदान की तथा सेठ माणिकचद पानाचद जोहरीके कुटुम्बकी प्रशसा की और प्रगट किया कि आज यह इमारत उनके पूज्य पिताके नामसे प्रसिद्ध होगी अर्थात् " **सेठ हीराचद गुमानजी** विद्या मदिर " तथा इसके खोलनेके लिये महाराजसे प्रार्थना की तब महाराजकी तरफसे दीवान साहब रा० ब० सबनीसने भाषण देते हुए कहा कि—

जैन समाजपर अजैन विद्वानकी सम्मति।

" प्राचीन कालमे जैन लोग अत्यन्त उन्नतिमें प्राप्त थे । उस समय उनके महत्व भोगनेके व सुधार करनेके बहुतसे प्रमाण है । जैन शास्त्रकारोंने ज्ञान-भडारको बडा करके महत सहायता की । " अहिंसा परमो धर्म " के तत्त्वको उन्होंने बहुत ही उत्तम रीतिसे पाला । अब भी ये उसी उन्नतिको पहुचे । इसके लिये अब इन्होंने आलस्य छोडा । सेठ माणिकचद और उनके बधुओंने जो शिक्षणकी सुगमताके लिये यह भव्य इमारत तय्यार करा दी है उसको खोलते हुए मुझे बडा ही आनद आता है " । फिर महाराज साहबने इमारतको खोला । सेठ माणिकचदजीने हारतुर्रेसे महाराजको सन्मानित किया । सभा सानन्द विसर्जन हुई । तब महाराज और कर्नल फेरिसने इमारतको अच्छी तरह देखकर यही कहा कि बहुत अच्छी इमारत तय्यार कराई गई है । उस समय मकानका फोटो भी लिया गया ।

दोपहरको द० म० जैन सभाका नैमित्तिक अधिवशन शोला-

पुरके प्रख्यात सेठ वालचंद रामचंदके सभापतित्वमें हुआ। शिक्षा खातेमें २०००) की आमद हुई। सेठजीको अभिनंदन देने वाले तार व पत्र दोनों भट्टारक, लल्लुभाई प्रेमानंद व गुरुमुखराय सुखानंद आदिके आए थे सो अध्यक्षने सुनाए। सभाके आश्रयमें बेलगांवमें एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित हुई तथा शास्त्री रक्खा गया।

द० म० जैन सभाका नैमित्तिक अधिवेशन

रु० २५०००)के दान की व्यवस्था।

सेठ नाथारंगजीवाले सेठ पन्नालालजी मरते समय २५०००) दान कर गए थे, उसकी व्यवस्थाके लिये ट्रस्ट कमेटी नियत हुई जिसमें **सेठ माणिकचंदजी** व सेठ हीराचंद नेमचंद भी ट्रष्टी नियत हुए। तय हुआ कि इसके व्याजसे ४०) सैकडा धर्मशिक्षामें, २२।।) सैकड़ा इंग्रेजी शिक्षामें, २२।।) रु सैकडा प्राचीन जैन ग्रंथोद्धारमें व शेष जैन अनाथोंकी मददमें खर्च हो। इस फंडसे पंचाध्यायी, परीक्षामुख, प्रमेयकमल मार्तंड, अष्टसहस्री आदि कई उपयोगी ग्रंथ मुद्रित हुए हैं व बहुतसे छात्रोंको सहायता मिल चुकी है।

हीराबाग धर्मशाला (बम्बई)में १२५०००) का दान।

सेठ माणिकचंदने कोल्हापुरसे लौटकर वर्षाकाल शांतिसे व्यतीत करते हुए भादों मासके दशलक्षणी पर्वमें बम्बईमें धर्मजागृति फैलाई तथा बडी भारी फिकर यह हुई कि धर्मशाला शीघ्र बन जानी चाहिये। आपने कावसजी पटेल तालावके पास कांदावाडीके नाकेपर एक बहुत ही मौकेकी जगह तजवीज की जो शहरके बिलकुल बीचमें

ट्राम गाड़ीके सामने व जैन मदिरके पास है। इसीपर प्रवीण कारीगरोंके द्वारा बडी ही सुन्दर धर्मशाला बनवाई, जिसके तीन खन किये। आगेको एक महा सुन्दर **लेक्चर हॉल** याने व्याख्यान भवन बनवाया जिसके ऊपर गैलेरी रक्खी व सामने प्लेटफार्म बनवाया। इस धर्मशालामे करीब १७०६ चौरस गज जमीन है, तीन तरफ रास्ता है, पूर्व और उत्तरकी तरफ ब्लाकोंके नीचे दूकानें है। पूर्व तरफके ब्लाकके दक्षिण भागमें एक आफिस रूम है, उसके पूर्वमे लेक्चर हाल है। उत्तर तरफ ब्लाक **सी** के मजला ऊपरके भागमें यात्रियोंके ठहरने, रसोई व पाखानेकी जगह है। इसके दक्षिणमे खुला चौक हैं। फिर दक्षिणमें ब्लाक **बी** है। इसके ३ मजले है। हरएकमें रहने, रसोई व पाखाने नलका प्रबन्ध है। इसके तीसरे खनको टूस्ट डीडके अनुसार केवल दिगम्बर जैन यात्रियोंके उपयोगके लिये रक्खा गया है। आफिस रूमके ऊपर एक बडा कमरा किसी प्रतिष्ठित कुटुम्बके लिये है। सी ब्लाकमे १० कोठरी, ६ रसोईघर, बीमें १२ कोठरी ६ रसोई घर है। इनमेंसे दो कोठरी दवाखानेके लिये है। सब मिलके दवाखाना सिवाय २६ रूम और १२ रसोईघर है, जिनमें ४०० आदमी ठहर सक्ते हे। मकानके नीचे २१ दुकानें है, जिनका किराया आता हे। इस महान धर्मशालाके निर्मापणमें एक लाख पचीस हजार (१२५०००) की रकम उदार सेठोंने लगाकर ऐसी आराम देनेवाली जगह बना दी है कि बम्बईमें इसके समान दूसरी कोई हिन्दुओंकी धर्मशाला नहीं है। सेठोंने अपने पूज्य पिताके नामसे इसे प्रसिद्ध किया है, जिससे इसे **सेठ हीराचंद गुमानजी धर्मशाला** या '**हीराबाग**' कहते हैं।

इसके खोलनेकी क्रिया ता. ९ दिसम्बर १९०५को ४ बजे दिनके की गई। शहरके प्रतिष्ठित जन निमंत्रित किये गए थे। न्यायमूर्ति चंदावकर, डॉ० सर भालचंद्र, आनरेबल गोकुलदास कहानदास पारेख, मजि० करसनदास छबीलदास, सर करीमभाई इब्राहीम आदि मंडली उपस्थित थी। प्रथम ही **शेठ माणिकचंदजी**ने कहा "बम्बईमें हिंदू व जैन यात्रियोंके अधिक आनेके कारण उनको ठहरनेकी बहुत तकलीफ होती थी उसको दूर करनेके लिये ऐसी धर्मशाला बांधनेकी इच्छा हमारे बडे भाई पानाचंदको थी पर खेद है उनके सामने हम तय्यार न कर सके। अब इस इमारतको मगसर सुदी १ सं० १९६१ में शुरू करके मगसर सुदी १२ स० १९६२ के दिन हम इसे पूर्ण कर सके है। इसके खोलनेके लिये हम **सर हरकिशनदास नरोत्तमदास नाइट**से प्रार्थना करते है।" तब अध्यक्ष सर हरकिशनदासने कहा कि "**इस धर्मशालाके बनानेवाले बहुत ही गरीब स्थितिके थे पर पूर्ण परिश्रमसे संपत्ति मिलाकर** यही कार्य नहीं इसके पहले अनेक कार्य किये हैं। यह धर्मशाला सर्व हिंदुओंके लाभके लिये बंधवाई गई है इससे इनकी उदारता व सर्व जन हितपना अच्छी तरह झलक रहा है।" इत्यादि कहकर धर्मशालाके दीवानखानेका ताला खोला। सभा सानन्द समाप्त हुई।

सेठ माणिकचंदजीका हरएक काम पक्का होता है। आपने ता० १०-६-०७ को इसका ट्रष्ट डीड रजिष्टर करा दिया और जो हीराचंद गुमानजी बो०क ट्रष्टी हैं वे ही इसके नियत किये तथा उसकी एक प्रबन्धकारिणी कमिटी भी रच दी। इसके ट्रष्टमें

नियम है कि जो भाडेकी आमदनी हो उसमेंसे टैक्स, चालू रिपेर-बीमा वगैरहका खर्च निकालकर जो बचे उसका इस तरह भाग करना—

३०) रिजर्व फडमें (काम पडनेपर खर्च हो)
४०) औषधालयमें।
१०) बम्बई प्रान्तिक सभाके प्रबध खातेमें (जब तक ऑफिस बम्बईमे रहे।)
२०) दिगम्बर जैन गरीब लोगोंकी मददमें।

१००)

इसके खास नियम है कि यहा मट्टीका तेल न जलाया जाव, काचके ग्लासमें खोपडेका तेल जले। जुआ रमना, मासभक्षण, मदिरापान, व्यभिचार, जीवहिंसा, नाच तमाशा आदि नहीं हो सकेगा। एक सुपरिटेन्डेन्ट नियत है उसके पाससे बर्तन, गद्दे, कुर्सी, टेबुल सब मिलता है।

	सन् १९१२	सन् १९१४
दिगम्बर जैन	२९९७	३९३७
श्वेताम्बर जैन	८२९	८७३
हिन्दू	७९७९	४९६२
	११००१	९७७२

दवाखाना भी शुरूसे है। सन् १९१२ में २७७२६ बीमारोंकी हाजरी थी, जिनमें नये बीमार ९९८६ इस प्रकार थे (शेष १७७४० पुराने थे।)

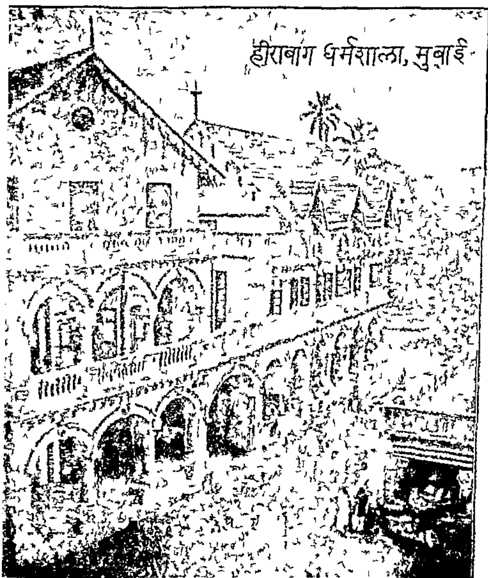
दिगम्बर जैन	१०४४
श्वेताम्बर जैन	४७०
ब्राह्मण	१५२१
बनियें	६९१
परचूरण हिन्दू	२२६०
कुल	५९८६

सन् १९१४ में २९५४९ की हाजरी थी जिनमें नये बीमार ६२७२ इस प्रकार थे—

दिगंबरी जैन	१०७०
श्वेताम्बरी जैन	६२१
ब्राह्मण	११०८
बनियें	६९०
परचूरण हिन्दू	२७८३
कुल	६२७२

दवाखानमे शोलापुर औषधालयमे पढ़ा हुआ दि० जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्याय है, जो बहुत ही योग्य है। दवा करनेमे नामाकिन हो गया है।

लेक्चर हालमें सन् १९१२ मे ८५ व १९१४ में १३० भाषण हुए। **आफिस रूपमें** हीराबाग धर्मशालाकी आफिसके सिवाय भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व बम्बई प्रांतिक सभा व जैनमित्रके आफिसोंको भी उदारतासे स्थान दिया गया। ट्रष्टकी नकल पीछे दी हुई है।



हीराबाग धर्मशाला बम्बई.

(देखो पृष्ठ ४१२) J V P. Surat.

दिगम्बर जैन	१०४४
श्वेताम्बर जैन	४७०
ब्राह्मण	१५२१
बनियें	६९१
परचूरण हिन्दू	२२६०
कुल	५९८६

सन् १९१४ में २९५४९ की हाजरी थी जिनमें नये बीमार ६२७२ इस प्रकार थे—

दिगम्बरी जैन	१०७०
श्वेताम्बरी जैन	६२१
ब्राह्मण	११०८
बनियें	६९०
परचूरण हिन्दू	२७८३
कुल	६२७२

दवाखानमें शोलापुर औषधालयमें पढा हुआ दि० जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्याय है, जो बहुत ही योग्य हैं। दवा करनेमें नामांकित हो गया है।

लेक्चर हालमें सन् १९१२ मे ८५ व १९१४ में १३० भाषण हुए। **आफिस रूपमें** हीराबाग धर्मशालाकी आफ़िसके सिवाय भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व बम्बई प्रांतिक सभा व जैनमित्रके आफिसोंको भी उदारतासे स्थान दिया गया। ट्रस्टकी नकल पीछे दी हुई है।



हीराबाग धर्मशाला बम्बई.

(देखो पृष्ठ ४१२) J. V. P. Surat.

इस धर्मशालाके न होनेके पहले दिगम्बर जैन यात्रियोंको महान कष्ट होता था, न तो उन्हें हिन्दू लोग जगहकी कमीसे ठहरने देते न श्वेताम्बर लोग ठहरने देते थे। बिचारोंको गलियोंमें मारे मारे फिरना पडता था, पर इस धर्मशालाके होनेसे दिगम्बर जैन यात्रियोंक ठहरनेका कष्ट बिल्कुल दूर हो गया। हरएक परदेशी जैनी गाडी द्वारा व पैदल सीधा धर्मशालाम आकर ठहर जाता है और सब तरहसे आराम पाता है।

मगनबाईजीके उपदेशका असर।

श्रीमती मगनबाईजीने लखनऊमें श्री पार्वतीबाईजीको प्रेरित किया था कि व प्रति चौदसको स्त्रियोंको उपदेश किया कर। तदनुसार बाईजीने एक **श्राविका तत्त्वबोधिनी** सभा स्थापित की और प्रति चौदसको स्त्रियोंको उपदेश देने लगी। वास्तवमे सच्चे मनसे दिया हुआ उपदेश अवश्य लाभकारी व चमत्कारक होता है।

सहारनपुरमें महासभा और सेठजी सभापति।

सन् १९०५क बडे दिनोंम सहारनपुर जैन समुदायक सवयसे प्रफुल्लित हो गया। ता० २४ डिसम्बरको रथोत्सव हुआ, जिसमें वैष्णव भाई भी श्रीजीकी भेट चढाते थे व न्यामतसिंहके भजन जैनधर्मकी प्रभावना करनेवाले बडे ही चित्ताकर्षक हुए थे। ता० २९ डिस० को ७। बजे सबेरे स्टेशनपर २५० से अधिक प्रतिष्ठित पुरुष महासभाक होनेवाले सभापति बम्बईनिवासी **सेठ माणिकचंद हीराचंद जौहरी** के स्वागतार्थ एकत्रित हुए। आप सकुटुम्ब श्रीमती मगनबाइ व सेठ

हीराचन्द नेमचंद, सेठ माणिकचंद मोतीचंद आल्द और मि० लठे एम ए सहित ठीक समयपर गाड़ीसे उतरे। उसी समय स्वागतार्थ निम्न लिखित ऐड्रेस पढ़के सुनाया गया—

नकल स्वागतपत्र ।

श्रीमान् सद्धर्मप्रचारक, सत्तीर्थसमुद्धारक, जातिहितसाधक, जिनवालकधर्मधारकानेकछात्रागारकारक, विद्योन्नतिप्रिय,

दानवीर मुम्बानगर निवासि श्रेष्ठिवर्य्य माणकचन्दजी साहब सभापति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाकी सेवामें

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाकी ओरसे स्वागत विषयक अभिनन्दनपत्र ।

(पद्धरि छन्द ।)

श्री मण्डित निर्मलगुण विशाल । शुभ आनन शशि सोहे रसाल ॥
निज अखिल अशुसे हम अताप । वर दूर प्रगट कीनो प्रताप ॥१॥
पद कमल धरत भू भइ पवित्र । माना बहु शोभा लइ विचित्र ॥
हम जैननके बड भाग्य आज । श्रीमान पधारे गुण समाज ॥२॥
मुख चन्द्र विलोकत हृदय दुख । विनशो, शुभ पायो बहुत सुक्ख ॥
विद्यावर्द्धक वृष जैनपाल । आओ स्वागत हम करें हाल ॥३॥
गणजैन करे वाणि विकाश । तास्र जिन वृषको हो प्रकाश ॥
जय जय जय हो श्रीमान वीर । व्यापि चहु दिशि कीरति गँभीर ॥४॥
हैं जैन जातिमें दानवीर । वृषयाचक जनकी हरे पीर ॥
आपहिंसे भई इह जाति आज । शोभित, इससे ये सरे काज ॥५॥
विद्या बिन वृष दुखित निहार । श्रीमान भये अतिही उदार ॥
जहँ तहँ विद्याके धाम खोल । परचारी जिनवाणी अमोल ॥६॥
श्री तीर्थराजके अप्रबन्ध । सब दूर किये कर सुप्रबन्ध ॥
यह आपहिको अखिल प्रसाद । सुख दियो जैनिनको अगाध ॥७॥

चिरकाल रहो जय आप नाम । सब जैनिनको बहु मोद धाम ॥
ये ही विनती जिनराज मुग । हम करैं चरणमें आश पूर ॥८॥

सोरठा ।

परम शर्म दातार । जैनधर्म जयवन्त हो ॥
मिथ्या मतको टार । सम्यप्रगट करो सदा ॥९॥

इति शुभम् ।

फिर हाथीपर विराजमान करके गाजे बाजे सहित नगरमें घूमते हुए बगलेपर आ उपस्थित हुए । इस दिन २ बजेसे जैन यगमेन्स एसोसियेशनका अधिवेशन हुआ । शेठजी सभापति हुए । गत वर्ष स्वीकार किये हुए तमगे बाँटे गए व आगामीके लिये अनुमान ९० के नवीन प्रण हुए, जैसे एक ५०)का तमगा उसे मिले जो २०० आदमियोंसे मदिरापान छुडावे, व ५०) नकद और ९०)का तमगा मि० जैन वैद्य जैपुर उसे देवें जो १००० आदमियोंसे मासत्याग करावे । रायसाहब फूलचन्द इंजिनियर लखनऊने १००) मासिक उसे देना स्वीकार किया जो ३ वर्ष तक जापानमें शिल्प विद्या सीखे । बाबू माणिकचन्द खडवाने बी ए पास होनेपर जानेकी इच्छा प्रगट की । इसपर राय फूलचन्दजीको " **जैनभूषण** " का पद दिया गया था । जहा तक माळूम है अभी तक कोई भी जापान नहीं भेजा गया है । रायसाहबको अपना वचन पूरा करना चाहिये । ता २६ को फिर एसो०का जल्सा था । मंडप सभाके लिये अलग बना था, स्त्रीपुरुषोंसे भर रहा था । स्त्रियोंके बीचमें खडे हो **श्रीमती मगनबाईजीने** स्त्रीशिक्षापर १ घटा बहुत ही असरकारक भाषण दिया, जिसपर प० अर्जुनलाल सेठी बी ए. को महासभाकी ओरसे

९०) का सुवर्ण पदक दिये जानेका हर्ष प्रगट किया । अध्यापिकाओंकी तय्यारीके लिये ४०) मासिक व १४०) नकदका फड हो गया । सेठ हीराचंद नेमचंदने जेलमें जैनियोंका खाता जुदा रहे ऐसी प्रार्थना सर्कारसे किये जानेका प्रस्ताव किया । बादशाह एडवर्डको धन्यवादके बाद राजकुमार प्रिन्स आफ वेल्स, जो भारतकी सेर कर रहे थे उनको वधाईका तार लखनऊ दिया गया।

ता० २७ दिसम्बरको पहले प्रोफेसर जियाराम एम० ए० के सभापतित्वमे अनाथालय हिसारने अपील करके ३०००) का चंदा एकत्र किया, फिर महासभाका कार्य्य हुआ । सभापति सेठजीने अपना हिन्दीमें व्याख्यान खूब समझाके सुनाया । इसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीसे शिखरजी आदि तीर्थोंका कैसा सुधारा हुआ है व आगामी होगा इसके लाभ बताए, महाविद्यालयके लिये जैपुर स्थान ठीक बताया और कहा कि यहा पंडित **टोडरमल, जयचंद** आदि बडे विद्वान् परोपकारी हो गये है तथा आज पं० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० है, जिन्होंने २००) **मासिककी आमद छोड़कर महाविद्यालयकी सेवामे अपना जीवन समर्पण कर दिया** है । एकताको रखने और धर्मप्रचार निमित्त रुपयोंका बृहत् कोष करनेकी प्रेरणा भी की । महामंत्री डिप्टी चम्पतरायने दशम वर्षकी रिपोर्ट व हिसाब सुनाया । मुंशी बाबूलाल एम० ए० एल एल० बी० मुरादाबादने डेपुटेशन पार्टीकी रिपोर्ट पढी । दिगम्बर जैन सभा भावनगर और बाबू देवकुमार आराके सहानुभूति सूचक तार पढे गए । ता० २८ की बैठकमें प्रस्ताव हुए । जैन कालेजके लिये १०००) नगद व ३०००) से अधिक वादे हुए । ता०

२९ की बैठकमें जैन कालेजके लिये हजारोंका **चंदा** हो गया। इस सबका जोड ३०७५३)* का है। सबसे बडी रकम है—

१००००) लाला खूबचंद रईस मेरठवाले हाल सहारनपुर।
५०००) चौधरी खूबचंदजी
२०००) बद्रीदास पार्श्वदास
१०००) लाला रूपचंद रईस
१०००) सेठ द्वारकादास रईस, मथुरा।
१०००) सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरी, बम्बई।
१०००) बाबू अजितप्रसाद वकील, देहरादून।

यह चंदा महासभाके कार्यकर्ताओंमें फूट होनेके कारण सिवाय एक दो रकमोंके अबतक (सन् १९१६ तक) वसूल नहीं हुआ है। वर्तमान महासभाके कार्याध्यक्षोंको उचित है कि इसे वसूल कराके दातारोंको पाप बन्धसे मुक्त करें, क्योंकि स्वीकार की हुई रकम न देना महा पाप है।

रात्रिको सभामें **मगनबाईजीने** रत्नकरंड श्रावकाचार बांचा। सेठ हीराचंद नेमचंदका धर्मकी उत्तमतापर विद्वतापूर्ण भाषण हुआ।

हकीम कल्याणराय उपदेशकको महासभाकी ओरसे **सुवर्ण-पदक** दिया गया। महासभामें प्रस्ताव न० ६ महाविद्यालयको मथुरासे सहारनपुर लानेका हुआ। N W रेल्वेका किराया घट जानेसे २००० मनुष्योंकी भीड हो गई थी। इस मौकेपर **सेठ माणिकचंदको** बहुतसे नवयुवकोंसे परिचय हुआ।

* यह सूची जैनगजट अंक २३ ता० १६ जून १९०६में मुद्रित है

बाबू शीतलप्रसादको सेठ माणिकचन्दसे विशेष परिचय।

बाबू शीतलप्रसाद जो थोड़े ही दिन पहले सेठ माणिकचन्द जीसे काशीमे या उज्जैनमें मिले थे, इस अवसरपर भी आए थे और महासभा आदिक कामोंमे बहुत ही सटपट दौडधूप करते दिख लाई पड़ थे। सेठ माणिकचन्दजी सभापति थे, उनके पास प्रस्तावादिकोंके विचारने व मडपमें बुलानेके लिये कई दफे जाना हुआ तब सेठजीसे कई दफे बातचीत हुई। आपने **शीतलप्रसाद**जीका सर्व हाल मालूम किया। यह भी जाना कि यह स्त्रीके देहान्त हो जानेके शादसे उदासचित्त है। दफ्तरमें भी ता० १९ आगस्त १९०५ को स्तीफा दे दिया है तथा इच्छा धर्म व जातिकी सेवा करनेकी है। तब आपने कहा कि मैं भी अपना सब समय इसी समाजसुधारकी खटपटमें बिताता हू और यह चाहता हू कि आप ऐसे धर्मबुद्धि व परिश्रमीका समागम रहे तो मेरेसे बहुत कुछ काम हो सके, सो आप बम्बई आवें, वही इच्छानुसार कुछ धन्धा करें व हमें मदद देवें। शीतलप्रसादजीके चित्तमे सेठ माणिकचन्दजीका सरलचित्त, धर्मप्रेम, जातिसुधारका परिश्रम व धर्मात्माओंसे हार्दिक प्रेम आदि गुणोंने ऐसा असर किया कि उन्होंने निश्चय कर लिया कि हम लखनऊ होकर तुर्त ही बम्बई आवेंगे और आपके साथ रह धर्म व समाजकी सेवा करेंगे। शीतलप्रसादजी लखनऊ आए। अपने दो बडे भाइयोंसे कहा कि हम बम्बई जाना चाहते है। इस बातको सुनकर जवाहरातका काम करनेवाले अनन्तलालजीको बहुत दु:ख हुआ, क्योंकि विलायतसे जवाहरातके व्यापारके काममे व्यापारियोंके

साथ पत्रव्यवहार करनेका काम सब यही करते थे और जो माल वहा विकता था उसपर १) सैकडा कमीशन लेते थे। जब शीतलप्रसादने जानेका हठ नहीं छोड़ा तब अनन्तलालने कहा कि हमारे कामका कोई प्रबन्ध कर जाओ, तब अपने मित्र पुत्तनलाल अग्रवालको नियत करके शीतलप्रसादजी अपनी आवश्यक पुस्तकोंको लेकर बम्बई आए। जिस दिन सहारनपुरसे घूमते हुए माणिकचद बम्बई पहुचे उसी दिन यह भी पहुचे। सेठजीको इन्हें देखकर बडा भारी हर्ष हुआ। सेठजीने अपने चौपाटीके बगलेपर ही बडे सन्मान के साथ रक्खा, तबसे यह वहीं मित्रके समान रहने लगे। अनन्तलालजीसे कभी २ माल मगाकर व बाजारका माल लेकर यह एक दो घन्टा दलालीमें घूम लेते थे, शेष समय सेठजीके साथ विताने, उन्हीके साथ २ भोजन करके दोपहरको गाडीपर दुकान आना, यहा धर्म सम्बन्धी पत्रव्यवहार करना और शामको व्यालूके समय बगलेपर आना, बाद सामायिक करके शास्त्र स्वाध्याय व सेठजीसे वार्तालाप करना। सेठ माणिकचदजी अपने धर्ममित्रकी तरह वर्ताव करते थे, किसी प्रकारके सन्मानमें कमी नहीं करते थे।

स्तवनिधिपर सेठजीका गमन

बम्बई पहुचते ही सेठजीको दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके वार्षिक अधिवेशन स्तवनिधिपर जानेकी फिक्र पड गई। यह अधिवेशन पौष सुदी १४ ता० ९ जनवरी १९०६ से माह वदी १ ता० ११ जनवरी तक होनेवाला था। सेठ माणिकचंदजी अपनी सुपुत्री मगनबाई सहित तथा बाबू शीतलप्रसाद और सेठ लल्लूभाई लक्ष्मीचद चौकसीके साथ कोल्हापुर

पधारे । उसी दिन स्टेशनपर मैसूरके श्रीमान् **अनंतराज सेठ** मोतीखनी म्यूनिसिपल कमिश्नर अपने भतीजे वर्द्धमानैया सहित पधारे । आपका स्वागत सेठ माणिकचंदजी आदिने बड़े हावभाव व गाजे बाजेके साथ किया ।

स्तवनिधि क्षेत्रका हाल ।

स्तवनिधि क्षेत्र कोल्हापुर शहरसे २८ मील है । यह स्थान छोटी२ पहाडी व टीलोंसे तीन ओर घिरा हुआ है । इस क्षेत्रका असल नाम **तपोनिधि** है, क्योंकि यहा जैन मुनि आकर तप किया करते थे । इस पहाडीपर एक १० फुट लम्बी ३ फुट चौडी गुफा है, जिसमें **श्री वर्द्धमानस्वामी** मुनि बैठकर ध्यान करते थे, उनका इससे ३ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। एक बड़ा मंदिरका घेरा है जिसमे ५ छोटे२ जिन मंदिर है । प्रथम मंदिरमें श्री पार्श्वनाथजीकी खडगासन १ गज ऊंची प्रतिबिम्ब अति वीतराग स्वरूप है । इसीमे १ क्षेत्रपालका मंदिर है । इसकी मान्यता बहुत होती है तथा पहाडपर भी एक क्षेत्रपालका मंदिर है जिसे ब्रह्मदेवका मंदिर कहते है । ता. ९ जनवरीको सभाकी प्रथम बैठक हुई । २००० स्त्रीपुरुष एकत्र थे । सभापति **अनंतराजय्याने** आसन ग्रहण किया, पास ही सेठ माणिकचंदजी विराजे । वार्षिक रिपोर्ट मंजूर होते ही लोगोंने रुपया जमा कराना शुरू किया । रात्रिको तात्या केशव चौपडे भिलौरी जिला सांगलीनिवासीने भजन व कीर्तनके साथ अच्छा उपदेश दिया व श्रीपालचरित्रका वर्णन किया । दूसरे दिन फिर सभा हुई । सभापतिने कनडी भाषामें

अपना व्याख्यान पढा जिसमें कोल्हापुर बोर्डिंग और सेठ माणिकचंदजीकी बहुत प्रशंसा की । फिर प्रस्ताव हुए कि सभाकी रजिष्टरी की जाय, जिसका काम सेठ माणिकचंदजीके सुपुर्द हुआ । युवराज प्रिन्स और प्रिन्सेस ऑफ वेल्सको भारतवर्षमें पधारनेकी बधाईका, महाराज कोल्हापुर और सेठ माणिकचंदको कोल्हापुर बोर्डिंगकी सहायतार्थ धन्यवादका भी प्रस्ताव हुआ । शिक्षणफंड एकत्र करनेके लिये **डेपुटेशन पार्टी**का प्रस्ताव हुआ, जिसका समर्थन शीतलप्रसादजीने किया । पार्टीमें १० महाशयोंने एक या आधा मास भ्रमण करनेकी स्वीकारता दी । इनमें मुख्य **सेठ माणिकचंदजी** सबसे पहले तय्यार हुए । रात्रिको फिर सभा हुई, उसमें रावसाहब अकळेने बम्बई यूनिवर्सिटीमें जैन ग्रंथ भरती होनेका प्रस्ताव करते हुए कहा कि मदरास यूनिवर्सिटीमें कनारी भाषामें **मल्लिनाथपुराण** और **पम्प रामायण** ये दो जैन ग्रंथ पढ़ाए जाते हैं । जैन जातिमें सत्य उपदेशका प्रचार त्यागी जन करें। इस प्रस्तावको **त्यागी पार्श्वनाथस्वामीने** पेश किया, जो पहले कनरीके मास्टर थे और १ वर्षसे नर त्यागा था । आपने अपने भ्रमणकी रिपोर्ट बताई कि ४० गावोंमें दौरा किया जिनमें ३४ मंदिर, ६ धर्मशालाएं, ८७२ पंचम, ३६९ चतुर्थ और ९९ कासार जातिके नर हैं । कुल २१६३ श्रोताओंमेंसे २ने पूर्ण ब्रह्मचर्य, १७ने परस्त्री–त्याग, १६ ने रात्रिभोजन–त्याग, २१ ने दर्शन व ८४ ने और व्रत लिये । वास्तवमें त्यागियोंका यही कर्तव्य है कि जहॉं जावें सदाचार व धर्मवृद्धि युक्त नियम हर्ष पूर्वक उपदेश देकर करावें । आठवा प्रस्ताव **सेठ माणिकचंदजीने** पेश किया कि

व्यापारादिमें जो **धर्मादाका पैसा** लिया जाता है उसको धर्म मार्गमें लगाया जाय तथा उसमेंसे ।) द० म० जैन सभाको व ।।।) पांजरापोल व अन्य उपयोगी कामोंमें लगाया जावे। आपने एक अच्छा असरकारक भाषण मराठी भाषामें दिया, जिसमें कहा कि- "परिणामोंकी विचित्र गति है जिस समय दान करना चाहे उसी समय दानके पैसेका अलग कर देना चाहिये। सभामें चंदा लिखकर देनेमें ढील नही करनी चाहिये। भाइयों! हमको सभामें विश्वास रखना चाहिये और सभा भी आपहीका विश्वास रखती है। **यदि विश्वास रखकर काम न किया जाय तो जगतमें कोई काम नहीं हो सक्ता;** और तो क्या वह अन्न जिससे हम पेट भरते है कदापि पैदा नहीं हो सकता। **किसान लोग पृथ्वीके विश्वासपर सैकड़ों रुपयेका धान्य पृथ्वीमें देते हैं तब ही उसके कारण उससे घना धान्य पैदा करते हैं।** अब हमें विश्वास रखकर परस्पर सहायता करना योग्य है और धर्मादेके रुपयेसे कृष्ण सर्पके समान भय करना योग्य है"। इस प्रस्तावके होनेपर निपाणी, ओठे, हलकरणी, वेड, कलमके पंचोंने अपने यहाके धर्मादेका रुपया समाजके फंडोंमें देना स्वीकार किया। वास्तवमें जहा धनाढ्य दातार दान करानेका प्रस्ताव करता है वहा उसका असर अवश्य होता है। ९ वा प्रस्ताव पशुओंपर दयाका तथा १० वा स्वदेशी वस्तु प्रचारका हुआ। इस पर **शीतलप्रसादजीने** भी समर्थन करते हुए कहा कि स्वदेश प्रेम हमको बाधित करता है कि हम देशी वस्तुओंकी उत्पत्तिको बढावें तथा आप कष्ट सहकर भी उनको व्यवहारमें लावें। वर्द्धमानैय्या

मैसूरने भी इसका समर्थन किया। ता० ११ को तृतीय सभा हुई। कार्यकर्ता नियत हुए। अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष **शेठ माणिकचंद हीराचंद जौहरी बम्बई** नियत हुए।

सेठ माणिकचंदजीको मानपत्र।

सभापति अनतराजैय्याने चांदीके कास्केटमें एक मानपत्र श्रीमान् **शेठ माणिकचंदजी**को अर्पित किया तथा प्रशंसामें कहा कि "इनके पूज्य पिता **शेठ हीराचंदजी** वास्तवमें हीरेके तुल्य अद्भुत गुणधारी थे तथा जिनके पुत्र सेठ मोतीचंद मोतीके तुल्य, सेठ पानाचंद पन्नारत्न तुल्य, सेठ माणिकचंद माणिक्य रत्नके समान तथा सेठ नवलचंद नीलरत्नके समान शोभनीय हैं। इनका कुटुम्ब निर्मल रत्नोंका भंडार है जिसमें सेठ माणिकचंदजीका धर्मकी ओर विशेष राग है तथा इनकी धार्मिक प्रीति सर्व सज्जनोंको राग उपजाती है सो माणिक्य रत्नमें राग होना ही उचित है। इस निर्मल कुटुम्बका निवास भी बम्बईके रत्नाकर पैलेसमें अधिक शोभनीक है।"

मानपत्रकी नकल इस भांति है—

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभेचें

मानपत्र

श्रीमान् दानवीर शेठ माणिकचंदजी हिराचंदजी

अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा

मु० श्रीक्षेत्र स्तवनिधि यांचे सेवेसी.

श्रेष्ठि महाशय !

सहारनपुर येथील महासभेच्या अधिवेशनाचें अध्यक्षस्थान

सुशोभित करून व अखिल भारतीय जैन मंडळाचे धन्यवाद संपादन करून आपण येथें आला आहां. अशा प्रसंगीं आपलें अपूर्व औदार्य, अप्रतिम समाजप्रेम, अढळ धर्मतत्परता इत्यादि सद्गुण पाहून आह्मा दाक्षिणात्य जैनसंघांत जो हर्षोद्रेक होत आहे त्याला आपल्यापुढें आह्मीं थोडी वाट करून देत आहों. याबद्दल क्षमा करावी अशी विनती आहे.

जैन समाजांत आपलें स्थान अनभिषिक्त राजाचेंच आहे असें म्हणण्यास आह्मास बिल्कुल शंका नाही. आपल्या समाजाविषयीं उत्कंठ प्रीति आपल्या अंतःकरणांत प्रज्वलित आहे, व या प्रीतीला दृश्य फल कोणत्या उपायांनी मिळेल हें ठरविण्यास आपलें मन रात्रंदिवस उद्युक्त असतें, आपले विचार प्राचीन आचार्यप्रणीत शास्त्राविषयीं अचल भक्तीनें युक्त असल्यामुळें जैन शासनाच्या सनातन तत्वाचें पुनरुज्जीवन करण्यास आपण तत्पर आहां तसेंच परिस्थितीच्या भेदामुळें ज्या नवीन सुधारणाची समाजास अवश्यकता आहे त्याहि आपण पूर्णपणें जाणत आहां आणि या सर्व ज्ञानास कृतीत उतरविण्यास ज्या साधनांची अवश्यकता असते ती आपल्यास पूर्णत्वानें लाभली आहेत. तात्पर्य कुशाग्र बुद्धी, सदय अंतःकरण, उदार वासना, यथेच्छ संपत्ती, अखंड कीर्ति इत्यादि सद्गुणामुळें व सामग्रीमुळें आज आमच्या समाजांत आपण उच्चतम पदावर स्वभावतःच विराजमान झाला आहां.

आपण समाजहितासाठीं आजवर सहासात लक्ष रुपये खर्चिले आहेत आणि ते अशा प्रकारें खर्चिले आहेत कीं त्याचा उपयोग चिरकाल सर्व समाजास उत्तमप्रकारें होत राहील. यामुळें आपले

औदार्य व चातुर्य यांचें मिश्रण 'सोने व सुगंध' याच्या मिश्रणाप्रमाणें झालें आहे. याबद्दल आपणा प्रमाणेंच आपले उदार बधु श्री० शेठ पानाचद, शेठ नवलचद वगैरेहि आम्हा सर्वांस पूज्य झाले आहेत.

आपली स्तुती कोणतहि शब्द योजिले तरी जास्त होणार नाहीं करिता थोडक्यात आम्ही जिनेश्वराच्या चरणाजवळ एवढीच प्रार्थना करितों कीं आपणास, आपल्या बधुवर्गास व कुटुबीयास अशाच प्रकारें समाजसेवा करण्यास उदड आयुष्य, आरोग्य आणि वैभव प्राप्त होवो

आपला—

श्री स्तवनिधि } **अनतराज शेट्टी मोतीखनी।**
पौष्य १९ शके १८२७ } अध्यक्ष दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा।

इस मानपत्रको स्वीकार करते हुए **सेठ माणिकचदजी**-ने कहा कि " मैंने व मेरे कुटुम्बने जो कुछ भी धर्म कार्य्य किया है वह कुछ आश्चर्यजनक नहीं, केवल अपनी शक्ति अनुसार अपना किंचित् कर्तव्य पालन किया है । जैन जातिके सर्व धनाढ्यों का यही कर्तव्य है कि **इस जैन जातिमें विद्याकी कमी है उसको मिटानेके लिये अपने तन मन धनसे चेष्टा करें** । वास्तवमें यह सेठजीके वाक्य बड़े ही अमूल्य है । हरएक धनवानको हृदयमें धरकर सेठजीके समान उदार होना चाहिये ।

रात्रिको स्त्रियोंकी १ बड़ी सभा हुई । २९०० की सख्या थी । **श्रीमती मगनबाईने** अध्यक्षस्थान ग्रहण किया था । इसमें ८ बाइयोंने थोडा २ भाषण दिया । डाक्टरनी कृष्णाबाईने

१ घंटा शिक्षाकी जरूरत पर खूब विवेचन किया, फिर अध्यक्षाके भाषणसे सारी सभा प्रसन्न हो गई। वार्षिक छात्रवृत्ति व १९०) का चंदा हुआ।

स्तवनिधि क्षेत्रमें संगमर्मरका जड़ाव।

सेठ माणिकचंदजीको मंदिरकी भी अच्छी भक्ति थी। आपने स्तवनिधिके सर्व मंदिरोंमें संगमर्मर जडानेका काम शुरू करा दिया जिससे स्वच्छता व शोभा दोनों रहें।

सेठ माणिकचंदको हर्ष।

कोल्हापुरसे आकर सेठ माणिकचंदजीने समाचारपत्रमें यह पढ़कर बहुत हर्ष प्रगट किया कि श्वेतांबर जैनी **बाबू पन्नालाल** जो मरते समय **८ लाख रुपया** निकाल गए थे उसमें एक बड़ा मकान बनकर १ जैन हाईस्कूल और दवाखाना ता० ९ जनवरी १९०६ को बम्बई **गवर्नर लार्ड लैमिङ्गटन** के हाथसे खोला गया। खोलते समय लार्ट महोदयने कहा " जैनियोंका इतिहास घना जानने योग्य है। इनका धर्म जीवदयाके सिद्धांतको पालनेवाला है। मैं जैन जातिका बहुत सन्मान रखता हूं। ये लोग उद्योगी तथा उदार दिलके होते हैं। बच्चोंको मानसिक **शिक्षाके साथ २ धर्मशिक्षा अवश्य देनी योग्य** है, क्योंकि धर्मशिक्षा ही से यह लोक तथा परलोक दोनों सुधरते हैं।

उस समय पन्नालालजीके सुपुत्रोंने २५५००) हाई स्कूलके फंडमें दिये।

हीराबाग धर्मशालाका उपयोग, पानीपतका संघ और बंबईमें रथोत्सव।

हीराबाग धर्मशालाको चालू हुए १॥ मास भी नहीं बीता था कि इसमें श्री गिरनारजीकी यात्रा करके आनेवाले तीन बडे संघ आए। सबसे मुख्य संघ १६० भाई बहनोंका इच्छाराम कम्पनीवाले **लाला बद्रीदास रईस पानीपत**के साथ था। संघके साथ श्री मंदिरजी व कई विद्वान शास्त्री पंडित व कवि मुंशी मगनरायजी थे। बद्रीदासजीके भाई दरबारीलालजी व पुत्र लक्ष्मीचंदजी सुमेरचंदजी संघकी वैय्यावृतमें लीन थे। दूसरा संघ २००की संख्याका **श्रीमन्त सेठ पूरणसाह** सिवनी छपाराके साथमें और तीसरा १५७ की संख्याका दिल्लीसे **लाला मोतीलाल** जौहरी और **जौहरीमल खजांची**के साथ आया था। हीराबागने सबको स्थान दान कर दिया था। ता० १९ जनवरीको **श्रीमती मगनबाई**ने हीराबागके लेक्चर हॉलमें शिक्षाकी उत्तेजनापर स्त्रियोंको भाषण देकर धार्मिक प्रतिज्ञाएं कराई थी। पानीपत वालोंके भाव बम्बइमें रथोत्सव करनेके हुए। इस समय राजा दीनदयाल फोटोग्राफरके पुत्र **राजा ज्ञानचंदजी** बम्बईमें थे। आपके व सेठ माणिकचंदजीके उद्यमसे ता० २१ जनवरीको शोलापुरके मनोज्ञ चित्रित रथमें श्रीजीकी सवारी गाजे बाजे और जुलूसके साथ मुख्य २ बाजारोंमें होती हुई फिर लौटकर हीराबागमें आई। कालबादेवी रोडपर बाजा बजनेकी मनाई थी, पर इस समय वहां भी बाजा बजता गया था। जैनी स्त्रीपुरुष २०००के साथ थे। दर्शकोंकी भीडका पार न था। बिना किसी

द्वेषके सर्व कौमें भगवत्‌के दर्शनसे आनन्दित होती थी। ता १६ जनवरीको सेठ माणिकचंदने सर्व मुख्य भाइयोंको लेजाकर **सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग**का निरीक्षण कराया तथा वहाँ बोर्डिंगकी ओरसे एक सभा हुई। सभापति **लाला बद्रीदास पानीपत** हुए। पडित मगतराय व चोखेलाल खनाचीने बोर्डिंग देखकर हर्ष प्रगट किया। सभापतिने १०) दस दस रुपये मासिककी एक संस्कृत व १ इंग्रेजी विभागमे ऐसी दो छात्रवृतिए १ वर्षको दी।

स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाओंका प्रबन्ध।

बाबू **शीतलप्रसाद**जीको स्त्रीशिक्षा प्रचारकी बहुत रुचि थी। यह जैनगजटमे इसकी उत्तेजनाके बराबर लेख दिया करते थे। इनको विश्वास था कि विना स्त्रीशिक्षाके प्रचारके समाज कभी सुधर नहीं सक्ता। लखनऊमें इन्होंने श्रीमती **पार्वतीबाईको** कुछ विद्याका सहारा देकर स्त्रीशिक्षाके प्रचारमे उत्तेजित किया था। फिर जबसे मगनबाईजीका समागम हुआ इनको वारवार लेख लिखने, उनको शुद्ध करने, व्याख्यान देने व स्त्रीशिक्षा-प्रचारमे तन मन धन लगानेकी प्रेरणा की तथा तात्त्विक दृष्टिके लिये श्री अर्थप्रकाशिकाजीका स्वाध्याय कराया। नित्य बगलेपर रहते हुए शीतलप्रसादजीका मगनबाईजीको यही उपदेश होता था कि अध्यापिकाएं जबतक तयार न होंगीं तबतक कन्याशालाए खुल नहीं सक्तीं। इससे बम्बईमें एक आश्रम खोला जाय उसमे विधवा व श्राविकाओंको रखकर सिखाया जाय। मगनबाईजीको यह बात पसंद आगई थी, पर जब

सेठ माणिकचंदजीसे मगनबाई वर्णन करती तब सेठजीके ध्यानमें यह बात यकायक नहीं आती थी। एक दिन सवेरे जब [illegible] जीसे स्वाध्याय करके सेठजी दीवानखानमें बैठे थे तब शीतलप्रसाद जीने मगनबाईजीके सामने सेठजीको [illegible] खूब [illegible] कहा कि आप यदि जैन जातिका उद्धार करना चाहते हों तो [illegible] माताएं धर्मात्मा व शुभाचरणी नहीं होंगी, समाजका उद्धार नहीं हो सक्ता, क्योंकि जबतक माताएं अच्छी न होंगी [illegible] पैदा हो सक्ते। स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाएं तय्यार [illegible] प्रयत्न करना चाहिये। सेठजीने कहा कि बाहरसे कोई [illegible] नहीं है। तब बहुत जोर देकर शीतलप्रसादजीने कहा कि [illegible] उद्यम तो करें। तब सेठजीने अपने एक मकानमें [illegible] खाली कर दीं और मगनबाईजीको आज्ञा दी कि [illegible] बुलाओ फिर और प्रबन्ध हो। तब मगनबाईजीने [illegible] १९०६ के जैनगजटमें यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि [illegible] श्राविकाश्रम खोलनेका प्रबन्ध हुआ है, फार्म [illegible] कर भेजें तथा स्वीकारतापर यहां आवें। यहां [illegible] व शिक्षाका कुल प्रबन्ध किया गया है। [illegible] चलने वाले **श्राविकाश्रम**का बीज भूत है।

मगनबाईजीको यह भी प्रेरणा की [illegible] पढ़ी लिखी [illegible] स्त्रियोंसे पत्रव्यवहार [illegible] बाहरकी पढी लिखी यहा स्त्रीशिक्षाकी [illegible] उद्योग [illegible] स्त्रियोसे पत्रव्यवहार। इस पत्रव्यवहार [illegible] **गंगादेवी** [illegible] वरी मासमें लिखा कि मैंने मदि[illegible] तक

nd ent the rovi- ninal 1900

पढाना शुरू किया है, ४ स्त्रिया छहढाला पढती है तथा अष्टमी चौदसको उपदेशिका सभा की जायगी। ईडरसे जानकीबाई अध्यापिकाने लिखा कि प्रतिमासकी सुदी १४ को 'स्त्री धर्म प्रकाशिनी सभा' नामकी सभा हुआ करेगी तथा रात्रिको ७ से ८ तक श्रीरत्नकरडश्रावकाचार स्त्रियोंको सुनाना शुरू कर दिया है।

कपड़ेके मनोहर जूते।

त २५ फर्वरी १९०६ को हीराबागमें कविराज घेलाभाईकी अपूर्व स्मरणशक्तिका परिचय पानेके लिये एक सभा हुई थी। उसमें सेठ माणिकचदजीने एक विलायती जूतोंका बहुत सुन्दर और मजबूत जोडा दिखलाया था जो केवल कपडेका बना था, पर बनावट, रग, तथा पालिशमे विलायती चमडेके जूतेसे किसी बातमें कम नही था। विलायतमें वेजीटेरियन सोसायटी है जिसके सभ्य बनस्पति भोजी और मदिरा, मास, चर्बीसे अत्यन्त परहेज करनेवाले हैं। इसीने सेठजीके पास नमूनेके तौरपर भेजाथा। सेठजीने बतलाया कि लंडनमें ५०—६० क्लब मास वर्जित भोजनके है। प्रत्येकमे ४००—५०० मनुष्य भोजन करते है। चमड़ेसे भी हिंसा होती है ऐसा समझकर यह जूता तय्यार कराया गया है। हमारे देशवासी भाइयोंको उचित है कि चमड़ेका व्यवहार कम करें।

ललिताबाईका कार्य्य।

श्रीमती मगनबाईजीके पत्रव्यवहारसे प्रेरित हो श्रीमती **ललिताबाई** अंक्लेश्वरने जैनगजट अंक ११ वर्ष ११ ता० १६ मार्च १९०६ में 'जैन भगनियों प्रति उत्तेजना' ऐसा लेख प्रगट किया तथा सूचना दी कि वह अपने गावमें ४ स्त्रियोंको मा-

गोपदेशिका नामकी संस्कृत व्याकरण पढाती है।

जबसे सेठजीने बम्बईमे हीराबाग धर्मशाला बनवाई इनकी दान व उदारताकी प्रसिद्धि आम लोगोंमें बहुत हुई। सर्कारके यहा जब ऐसे परोपकारी व जाति व देशहितके काम करनेवालोंकी खबर पहुचती है तब वह प्रतिष्ठा देनेका विचार करती है। यद्यपि बहुतसे आदमी प्रतिष्ठा पानेके लिये सिफारिश कराते है अथवा अफसरोंके द्वारा करार कराते है कि हम अमुक रकम अमुक खातेमे देंगे हम पदवी दिला दी जाय। सेठ माणिकचदजीको न प्रतिष्ठाकी इच्छा थी न किसी उपाधिकी, स्वत ही इनको बिलकुल खबर ही नहीं थी। इनके पास सर्कारी पत्र आया जिसकी नकल नीचे हैं कि तुम बम्बई शहरमें **जष्टिश ऑफ दी पीस** अर्थात् **शांतिके न्यायाधीश** नियत हुए। इस पदसे नगरमें मजिष्ट्रेटकासा हक हो जाता है। जिस कागजपर यह दस्तखत कर दें उसे फिर और रजिष्ट्रार या मजिष्ट्रेटसे हस्ताक्षर करानेकी जरूरत नहीं है।

सेठ माणिकचद हीराचंदजीको जे पी की पदवी।

नकल पत्र सर्कारी।

Commissioner of the piece for the city of Bombay

This is to certify that Mr Manekchand Hirachand was by nomination of Government in the Judicial Department no 1433 dated the 14th March 1906 appointed under the provisions of section 23 of the Code of Criminal Procedure 1898 to be a Justice of the Peace

within the Limits of the City of Bombay during the pleasure of Government

By order of His Excellency the Right Honourable the Governor in Council

Judicial Department
Bombay Castle
30th March 1906

(Initial)
Chief Secretary
to Government

भावार्थ–

पीस कमिश्नर बम्बई शहरसे यह प्रमाणपत्र दिया जाता है कि मालेके मुआजिम न्याय विभागके १४वी मार्च सन १९०६से नियम १४३३ नबरके सरक्युलरके मुताबिक मि० माणिकचद हीराचन्दको १८९८के क्रिमिनल प्रोसीजर कोड कलम २३के मुताबिक गवर्नमेंटकी मर्जीमे आव वहा तक बम्बई शहरकी सरहदमें जस्टिस आफ दी पीस नियुक्त किये गये ।

राइट आ० गवर्नर इन कौसिलके हुक्मसे
सही गवर्नमेंटके चीफ सेक्रेटरी ।
न्याय विभाग **बम्बई केसल** ३० मार्च १९०६

बम्बईमे सस्कृत विद्यालयके छात्र पडित **लालाराम**ने इस सन्मान अर्पणके समाचार जानकर संस्कृतमें एक कविता बनाकर सेठजीको भेट की सो इस भाति है–

॥ श्री ॥

श्रुत्वार्पिता भूपवरैरुपाधि माणिक्यचान्द्रीं नरभूपमान्याम् ।
नद्योदिशोवारिधिरा सुरम्या दिक्स्थायिनोजैनजना प्रहृष्टा ॥ १ ॥
माणिक्यगोन्वि स्वयमेव रम्या चन्द्रस्य कान्ति सुखदा सुशुभ्रा ।
भास्येव ताभ्यामनिशं ततोऽद्य जैनैर्नृपैर्मान्यतयाधिकस्त्वम् ॥ २ ॥

विद्याप्रदानादिविद्प्रकारै-रुपग्रहैर्योपकृता हि जैना ।
सर्वोपकार परमद्य धीन्द्य सम्राडपि त्वा स्मरति प्रहृष्ट ॥ ३ ॥
कीर्तिस्त्वदीया जगति प्रसिद्धा श्रुता न चेत्कजनसर्पराजे ।
तथापि ता कर्णसुधाप्रदात्रीं कथ न श्रूयात्समनस्कमिन्दो ॥ ४ ॥
वदान्यशरोजिनधर्मनेमि विद्यार्थिवर्गस्महायभृत ।
चिरायुष धर्मपरायण त्व धमप्रसादेन लभस्व पुनम् ॥ ५ ॥

प्रमुदितो विनीतश्च लालाराम-छात्रः ।

फल्टनके दि० जैन भाइयोंने चैत्र सुदी ११ की खास सभा-द्वारा एक छपाहुआ मानपत्र भेटमे जे पी पदवीके हर्षमें भेजा, रुकडी जिला कोल्हापुरके समस्त सभाए। श्रावक और मडलीन ता २१ मार्च १९०६ को दस्तखती एक सन्मानपत्र छपा हुआ भेजा तथा ता १५ जुलाईको हीराचद गुमानजी बोर्डिंगके छात्रोने भी इसी हर्षमे मानपत्र अर्पित किया था । इन तीनों मानपत्रकी नकलें इस भाति है—

नकल मानपत्र (फल्टन)

दानवीर श्रीयुत सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे० पी० यांचे सेवेशीः—

सम्यग्घमुना विमल चरित्र विभाति रत्नत्रयरोचि रम्यम् ॥
लोके यदीय स च दानवीरो माणिक्यचन्द्रो मणिवच्चकास्ति ॥१॥
केचिन्निवासरहिता कतिचिच्च रोगैराक्रांतदेहलतिका कतिचिद्दरिद्रा
विद्याजडा कति च केचन धर्महीना यस्याश्रयाज्जगतिशातिमवापुरम्याम् ॥२
क्षपाकरस्येव क्षयो न दृष्टो दोषाकरत्व न च विश्रुत ते ॥
मित्रोदये नैव रुप दधासि तले धरित्र्यास्त्वमपूर्वचन्द्र ॥३॥

मुद दधानो मिपता जनाना चन्द्रोज्ज्वला पुण्यप्रभा तनोषि ॥
घातोश्चदेरर्थमकारि सार्थस्तेनात्र लोके प्रथितोऽसि चन्द्र. ॥४॥

श्रेष्ठिवर्य महाशय !

हल्लीं या शहरात चालू असलेल्या उत्सवाचे व परिषदेचे अनुरोधानें आपण येथें येण्याची आम्हावर मेहेरबानी करून आमच्या जैन समाजावर जो अनुग्रह केला आहे, त्या प्रसगाचा फायदा घेऊन आपल्या समाज विषयक पुण्यशाळी सत्कृत्याबद्दलच्या पूज्यताजनित प्रेमाला शब्दरूप देण्याचा यत्न करण्याची आम्हास उत्कठा आली आहे व ती पूर्ण करून घेण्याची आपण परवानगी द्याल अशी उमेद आहे

भरतखडात जैनधर्माची प्रभा वारवार उज्ज्वल करावयासाठीं ज्या विभूति आमच्यामध्ये जन्म पावल्या आहेत त्याच्या सन्मान मालिकेंत अधिष्ठित करावयासारखे सत्पुरुष आपल्यारूपानें आमच्या कालात जन्मले आहेत हें आमच्या समाजाच्या पुण्योदयाचेंच लक्षण आहे, असें प्रत्येक जैनास वाटत आहे

हें उच्चस्थान भारतीय जैन समाजाच्या एक मतानें प्राप्त होण्यासारखी अनेक सत्कृत्यें आपण केली आहेत हे सर्व विश्रुत आहेच आपल्या अनुपम औदार्यामुळें आमच्या समाजातील बहुतेक मोठ्या संस्था आज पोशिल्या जात आहेत, इतकेंच नव्हे तर मुंबई, कोल्हापुर, अहमदाबाद, आगरा, वगैरे ठिकाणच्या विद्याग्रहासारख्या उत्तम संस्था या आपल्या थोर दानवीर्यापासूनच जन्मल्या आहेत.

मागासलेल्या जैनजातीची उन्नति करणाच्या आपल्यासारख्या आमच्या समाजातील थोड्या विभूतींचे जैनसमाजावर

मोठे उपकार आहेत या प्रयत्नानें लुल्या पडलेल्या भारतीय जैन-समाजात चेतना उत्पन्न होऊन त्या योगानें ह्या प्राचीन जैन समाजाचा अभ्युदय होईल अशी आम्हास खात्री आहे हें लक्षात घेऊनच इतर जातीतील पुढारी आपल्या सत्कृत्याचें अभिनंदन करितात, याचें ढळक उदाहरण येथील प्रभु श्रीमान् सरकार हेच होत. त्यानी केलेल्या आपल्या सत्कारास कारण आपली थोरवी तर आहेच पण ही गोष्ट जैनजातीच्या उन्नती विषयीच्या त्याच्या कळकळीची एक साक्ष आहे याबद्दल आह्मी समग्न जैनलोक श्रीमत सरकारचे ऋणी आहोंत

मुंबई या सूरत सारख्या मोठ्या व्यापार प्रसिद्ध व जेथें जैन व जैनेतर हिंदू तीर्थवासी याना उतरल्याशिवाय गत्यन्तरच नाही असें ह्मटलें तरी चालेल, अशा ठिकाणीं **हिराबाग** धर्मशाळेसारख्या भव्य धर्मशाला बाधून उतारू लोकाची गैरसोय नाहींशी केली अशा रीतिनें जैन व जैनेतर समाजावर ही अनेक उपकार केले आहेत।

ह्या आपल्या दानशौंडित्वाबद्दलच स्पृहणीय प्रख्याती झाली आहे, असें नहीं आपलें सौजन्य, आपली जैनधर्माविषयीं अपार श्रद्धा, जैनसमाजाच्या उन्नति विषयी आपले अव्याहत परिश्रम आणि आपल्या समाजातील अनाथ व गरजू लोकास मदत करण्याविषयी आपली निरलस तत्परता इत्यादि अनेक गुणामुळें आपण सर्व समाजास पूज्य व प्रिय झालेले आहा

मुंबई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा, द० म० जैन परिषद्, भारतवर्षीय दि० जैन महासभा इत्यादि सभाचे अध्यक्ष, मुंबई

शहरातील 'जस्टिस ऑफ दी पीस', तीर्थक्षेत्रप्रबंधकारिणी सभेचे महामंत्री इत्यादि अनेक जबाबदारीची, व समाजोपयोगीं कामें अंगावर घेऊन इतर कोणासही न करिता येतील अशा उत्तम तऱ्हेनें व प्रचण्ड स्वार्थत्याग करून आपण तीं बजाविलीं आहेत व त्यामुळें आपण सर्व जैनसमाजास कायमचे आपले ऋणी करीत आहा

आपल्या अगच्या सद्गुणाचें वर्णन करणें अशक्य जाणून त्या उद्योगास न लागता शेवटीं आह्मांस इतकेंच सांगावयाचें आहे कीं आपला कित्ता थोडाबहुत तरी बळविण्याची आमच्यातील पुढारी लोकास आपलें तेजस्वी उदाहरण पाहून इच्छा जाहल्यास समाजानें आपल्या उपकाराविषयीं थोडी तरी कृतज्ञता दर्शविली असें होईल आपल्या अपार औदार्याचें अनुकरण करण्यासारखी सुस्थिति जरी फारच अपूर्व असली तरी आपला साधेपणा, निरलसपणा, वगैरे गुणात आपला कित्ता पुढें ठेवण्याचें काम तरी प्रत्येकानें केलें पहिजे.

असा कित्ता आमच्या पुण्योदयानें आम्हांस आज सजीव स्वरूपाचा मिळाला आहे तो असाच आमच्या पुढें चिरकाल राहो, अशी आमची परमेश्वराजवळ प्रार्थना आहे आपल्यास व आपल्या कुटुम्बास शुभ कर्मजनित सर्व फलें अखण्ड प्राप्त होवोत अशी जैनसमाजाची इच्छा पुनरपि प्रदर्शित करून, हें मानपत्र आपल्यास सादर करावयाची परवानगी घेत आहों

फलटण एप्रील १९०७

आपले कृपाभिलाषी—फलटण दि० जैनसमाज तर्फे—

१ शेठ दोशी माणिकचंद रावजी, २. होचंद माणिकचंद दोशी वकील, ३ शा० रामचंद हेमचंद (अध्यक्ष

स्त्रा० क० फलटण), ४ दोशी रूपचद लखमीचद, ५. शा० रामचद सुरचद

नकल मानपत्र (रुकडी)

श्रीमत्सकलगुणगणसपन्न राजमान्य राजच्छ्री शेट माणिकचंद पानाचंद जव्हेरी मुंबई जस्टिस ऑफ धी पीस्।

याचे सेवेसी—रुकडी गावचे आम्ही समस्त श्रावक व इतरजन आपलें अभिनन्दन करितों कीं—

आपली धर्मसबधी व इतर औदार्याची कीर्ति सरकारचे कानावर जाऊन त्यानीं आपला थोरपगा मनात आणुन सरकारानी आपल्यास 'जस्टिस ऑफ धी पीस' ही बहु मानाची पदवी दिली असें आम्हास कळल्यावरून आम्हास फार आनद झाला व याजबद्दल आम्ही सर्व जैन व ब्राह्मण वगैरे लोक श्रीजीनाचे मदिरात जमून आनद-प्रदर्शक सभा भरवून आपल्या थोरपणास उचित असा मान मिळाल्या बद्दल आनद मानला, व सरकारचे आभार मानिले, आणि आपलें असेंच यशस्कर व जनास सुखकर असें आयुष्य वृद्धिंगत होवो म्हणुन परामेश्वराची प्रार्थना केली

हा आनद आपल्यास कळविण्याकरिता हे अभिनदनपर पत्र आह्मी नम्रता पूर्वक आपल्यास लिहून पाठविलें आहे तें आमचे तर्फे चिरजीव रा० रा० बाबगोंडा आणा पाटील रुकडीकर हे आपणास अर्पण करितील, त्याचा आपण प्रेमानें स्वीकार करावा अशी विनंति आहे कृपा लोभ असावा ही विनति ता० २१ मार्च १९०६

आपले—रूकडीकर समस्त श्रावक व इतर मडली

कन्हैयालाल जैनको बुलाकर अपनी

वम्बईमें औषधालय। सहायतासे एक पवित्र जैन औषधालय खुलवा दिया जिससे अशुद्ध दवाओंसे बचकर जैन व अजैन शुद्ध औषधियें सुगमतासे प्राप्त करें।

सेठ माणिकचंदजी शीतलप्रसादजीके साथ सम्मति किया ही करते थे। एक दिन आपने कहा कि यह

बुन्देलखंडमें बोर्डिंग-की आवश्यक्ता। बम्बईमें बुन्देलखंडके जो यात्री आते हैं और इस चौपाटी चैत्यालयका दर्शन करनेके बाद मुझसे मिलकर बातचीत करते है तब उधर शिक्षाकी बहुत कमी मालुम होती है तथा ग्रामोंमें रहनेवालोंके लिये पढनेका साधन नही है, इससे आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं है, इस लिये बुंदेलखंडके उद्धारके लिये कहीं न कहीं बोर्डिंग खोलनेकी आवश्यक्ता है। दोनोंकी सम्मतिमे **जबलपुर** स्थान ठीक जंचा क्योंकि वह मुख्यनगर है तथा वहा कालेज और स्कूल भी हैं, ट्रेनिंग कालिज भी है। जैनियोंकी स्थिति भी अच्छी है। शीतलप्रसादसे सेठजीने कहा कि वहा बोर्डिंग स्थापित करानेका सिलसिला डालना चाहिये। शीतलप्रसादजी महासभाके महाविद्यालयकी डेपुटेशन पार्टीके साथ कुछ ही मास पहले जबलपुर, सिवनी, छिंदवाडा आदिमें दौरा कर चुके थे जिससे वहाके हालातसे परिचित थे। आपने सब स्थानोंके धनाढ्योंका हाल बताया और यह सम्मति दी कि श्री कुंडलपुर (दमोह) का मेला जो चैत्रमे होता है उसमें आप पधारें और वहा मुख्य २ भाइयोंको बुलानेकी प्रेरणा करें। फिर वहासे जबलपुर चलकर इसका यत्न करें। यह बात निश्चित हो गई

तब शीतलप्रसादजीने जबलपुर, सिवनी, छिन्दवाडा, दमोह आदिके भाइयोंको सुचना दी कि **शेठ माणिकचंदजी** श्री कुडलपुरकी यात्रार्थ आवेंगे, आप लोग मित्रमडलीसह पधारें।

श्री कुडलपुरकी यात्रा ।

सेठ साहब बाबू शीतलप्रसाद और श्रीयुत नाथूराम प्रेमीके साथ ता० १९ मार्चकी शामको बम्बईसे चलकर ता० १६ को बीनास्टेशनपर आए। यहासे २ मील दूर एक धर्मशालामें ठहरे। यहासे शहर बीना-इटावा २ मील था। दर्शनार्थ गए। यहासे शामको ही चलकर १२ बजे रात्रिको दमोह स्टेशनपर पहुचे। बाबू गोकुलचद वकील जिनको पहलेसे खबर की गई थी, १०० भाइयोंको लेकर स्वागतार्थ स्टेशनपर आए थे। बडी भक्तिसे नगरमें लाए और धर्मशालामें ठहराया। यहाँ १२९ घर परवारोंके हैं, सख्या ४९० है, जिनमदिरजी ६ है। वर्षाके कारण ता० १७ व १८ को यहीं ठहरे। ता० १७की रात्रिको मदिरजीमें सभा हुई। धर्म विषयपर व्याख्यान हुआ। ता० १८ की शामको बैलगाडीमें चढकर २० मील चल ता० १९ को सबेरे **कुडलपुर** क्षेत्रमे आए। यह क्षेत्र दमोह स्टेशनसे २० व बादकपुरसे १९ मील है। कुडलपुर एक रमणीक और मनोहर गाव है, जो पहाडकी तलहटीमें बसा हुआ है। पहाडका आकार कुडलके समान है। पर्वतपर २२ तथा तलहटीमें २१ जिन मदिर है। पर्वतसे सबसे ऊचा उत्तरकी ओर ब्रह्मचरियाजीका मदिर है जिसपर पहुचनेको नीचेसे ५०० सीढिया ऐसी बनी है कि एक बालक भी सुगमतासे चढ सक्ता है। पर्वतके मध्य भागमें **श्री वर्द्धमान स्वामीका**

विशाल पत्थरका बना हुआ मदिर है जिसमें लाखों रुपयोंकी लागत आई होगी । इसमें श्री **वीरभगवान**की एक विशाल और दर्शनीय पद्मासन योग प्रतिमा है जिसकी ऊचाई ४॥ गज व चौडाई ३ गजके अनुमान है । यह प्रतिमा बहुत प्राचीन कालकी है । संवत नही है, दर्शन करते मन तृप्त नहीं होता । मदिरजीके जीर्णोद्धारका एक शिलालेख सवत १७५७का है जो द्वार पर लगा है। पहाडपर और मदिरोंमें जानेके मार्गमें भी पत्थर जडा हुआ है इससे सर्व मदिरोंकी वदना ३ घंटेमे हो जाती है । सेठ साहबके आगमनको जानकर सिवनीसे श्रीमान् **सेठ पूरणशाह** आनरेरी मजिस्ट्रेट, खूबचदजी, पन्नालालजी, मिट्ठनलालजी, जुगराजसाहजी, छिन्दवाडासे सिंहई खेमचद आनरेरी मजिस्ट्रेट आदि, जबलपुरसे सिंहई गरीबदासजी, भोलानाथजी आदि बहुतसे भाइयोंको लेकर आए थे । कुल सख्या २००० की होगी । मेलेके प्रबन्धक **सेठ बिन्द्रावनजी** दमोह थे । सेठ माणिकचदजी साहबकी चेष्टा और प्रेरणासे ता० १९, २०, २१ को दिनमे तीर्थकी सभाए और रात्रिको उपदेशक सभाए हुई । दिनकी सभाओंमें क्रमसे सेठ माणिकचदजी, सेठ बिंद्रावनजी और सवाई सिंहई खेमचन्दजी सभापति हुए । इनमें ८ प्रस्ताव पास हुए । सेठजी सच्चे तीर्थभक्त व सुधारक थे । आपकी पूर्ण प्रेरणासे इस क्षेत्रके प्रबन्धार्थ एक कमिटी ७ सभासदोंकी बनी जिसके सभापति व कोषाध्यक्ष सेठ बिन्द्रावन व मत्री बाबू चन्नेलालजी हुए । पहला प्रस्ताव यही स्वीकार कराया गया । यहा १९ दिन मेला रहा करता था जिससे लोग आते जाते रहते थे—जमने न थे, इससे दूसरा प्रस्ताव

सेठ माणिकचन्दजीने स्वय किया कि सिर्फ ४ दिन मेला रहे, तीन दिन धर्म, जाति और तीर्थ सुधारके लिये सभाए हों और चौथे दिन यात्रा निकले। इसका समर्थन स्वय सेठ बिन्द्रावनजीने किया। इस क्षेत्रपर लोग बिना मलाहके नए मदिर बनवा दिया करते थे जिनके प्रबन्धकी फिक्र प्रबन्धकर्तापर आ जाती थी। इससे यह प्रस्ताव हुआ कि नया मदिर प्रबन्धकारिणी सभाकी बिना आज्ञा न बने। और भी जो कोई काम इस क्षेत्रपर द्रव्य खर्च कर करना हो तो प्र० सभाकी राय ले लेवै। प्रस्ताव न० ४ **कन्याविक्रयके विरुद्ध** पास हुआ। इसके समर्थनमे स्वय सेठजीने व्याख्यान दिया तथा कहा कि यदि किसी गरीब लडकी वालेके पास रुपया न हो तो बिरादरी प्रबन्ध कर दे, वह लडकेवालेसे न लेवै। इस प्रस्तावको शीतलप्रसादजीने उपस्थित किया था व नाथुरामजीने भी समर्थन किया था। ९ वा प्रस्ताव था कि वृद्ध व निर्बल गाय बैल पशुओंको कसाइके हाथ न बेचकर **पिंजरापोल** द्वारा रक्षित रक्खा जाय। इसको शीतलप्रसादने पेश किया और सेठ माणिकचन्दजी, जुगराजशाह आदिने जोरके साथ पुष्ट किया। छठा प्र० सभाओंके स्थापित करने, ७वा विदेशी अशुद्ध चीनी (सक्कर) न वर्तने, ८वा जैन पद्धतिसे विवाह करानेपर था। इस समय सेठ **माणिकचंदजीने** प्रगट किया कि विवाह पद्धतिकी पुस्तक छपी हुई हमारे पाससे मगाली जावै। मेलेमें आए हुए कटनी, जबलपुर आदि पाठशालाके ६९ बालक और १७ बालिकाओंकी परीक्षा **बाबा दौलतराम** और ब्रह्मचारी बालकरामके सामने ली गई। ७५) का इनाम बाटा गया। चैत्र वदी १३ के तीसरे

पहर पालकीपर श्रीजी विराजमान हुए। फूलमालकी बोली १०२५) मे सिंहई डालचंद दमोहने ली। सेठजीको सस्कृत विद्याकी उन्नति के लिये स्याद्वाद पाठशाला काशीका बहुत बडा ध्यान था। इसके लिये ३२९) की सहायता स्वीकृत हुई। सेठ साहबसे सर्व ही छोटे बड़े उनके ठहरनेके स्थानपर मिलने आते थे। सेठजी उनको विद्या पढने और कुरीति मेटनेका उपदेश देते थे व बोर्डिंगकी जरूरत है कि नहीं ऐसी सम्मति लेते थे। जबलपुर वालोंकी सम्मति देखकर कि यदि बोर्डिंग होवें तो सर्वसे श्रेष्ठ बात है, आप ता० २३ की दोपहरको चलकर ता० २४ मार्चको **जबलपुर** आए।

जबलपुरमें बोर्डिंगकी खटपट।

स्टेशन पर भाइयोकी बहुत भीड थी। सिंहई डालचंद नारायणदासजी यहा उदार बुद्धि धर्मात्मा थे। उन्होंने सेठजीको अपनी धर्मशाला लार्डगंजमे ठहराया और बहुत ही प्रेम प्रदर्शित किया। सेठजीने २, ३ दिन शहरके मुख्य २ भाइयोंसे मिलने व उनको बोर्डिंगके लिये तय्यार होनेके लिये भारी चेष्टा की। सेठजीको आलस्य बिलकुल न था। शीतलप्रसादके साथ हरएक प्रतिष्ठित भाईके यहा जा जाकर उसे इस कामके लिये मजबूत किया। आप शहरके प्रतिष्ठित अजैनोंसे भी मिले जिससे जैनियोंको जिन्हे कभी बोर्डिंग ऐसे काम करनेका ढग नहीं मालूम है मदद मिले। यहा पर **रायसाहब मुन्नालालजी** पेन्शन याफ्ता बहुत प्रतिष्ठित व परोपकारी पुरुष थे उन्होंने सेठजीके विचारकी पूर्ण सराहना की और हर तरह मदद देनेको

तय्यार हुए। सिंहई गरीबदास जो जबलपुर जैन बिरादरीके मुखिया हैं व अन्य कई साहबोंने कहा कि यहा पर पाठशालाएं कई दफे हो होकर टूट गई है किसीको शौक नहीं है, तब बोर्डिंग कैसे चलेगा ? सेठजीको अनुभव था। आपने कहा कि आप लोग १ वर्ष तक बोर्डिंगको चलाकर देखें, मुझे तो विश्वास है अवश्य चलेगा और आप लोग सब तरहसे समर्थ है।

जबलपुर बोर्डिंगके लिये ७४००) का दान।

आपके यहा लाला भोलानाथने अपने परलोक गत पुत्र कस्तुरचदके स्मरणार्थ २००००) सर्कारको स्कूलके मकानके लिये दे डाले हैं इसी तरह मैं एक वर्षके लिये २००) मासिक अर्थात् २४००) बोर्डिंगके लिये देता हू, आप भी कुछ प्रबन्ध करो। तब सिंहई गरीबदासजीने अपनी पचायन जोडी और वादानुवादके वाद ठहराव किया कि जबतक बोर्डिंग रहे यह पचायत ९१) मासिक बराबर देती रहे। इसीका मासिक चदा लिख लिया गया। तब ता० २७ मार्चकी रात्रिको जैनियोंकी आमसभा हुई। सभापति परोपकारी अजैन रायसाहब मुन्नालालजी हुए। एकमत होकर बोर्डिंग, स्थापनका प्रस्ताव पास किया गया। २१ मेम्बरोंकी प्रबन्धकारिणी कमिटी बनी। सभापति उक्त रायसाहब, कोषाध्यक्ष सिंहई डालचद नारायणदास और मत्री बाबू दयालचद अकौन्टेन्ट डिवीजनल जज नियत हुए। बोर्डिंग खोलनेका महूर्त **वैशाख सुदी** ३ स० १९६३ ता २६ अप्रैल १९०६ नियत हुआ।

कुंडलपुरमें सिवनीवालोंका बहुत अग्रह था कि जबलपुर होकर आप यहा अवश्य पधारें। सेठजी ता० २८ मार्चकी रात्रिको सिवनी पहुचे। स्टेशनपर श्रीमन्त सेठ **पूरणशाह** आनेरेरी मजिस्ट्रेट बहुतसे जैनी व अनेक अजैन प्रतिष्ठित भाइयोंके साथ जे० पी० महाशयके स्वागतार्थ स्टेशनपर आए। गाजेबाजेके साथ अपनी कोठीपर लाकर ठहराया। यहाँ बिरादरीमें ३ वर्षसे ऐसी फूट पडी हुई थी जिससे सारी बिरादरीको महान कष्ट था व धर्मके सर्व कार्य बन्द थे। सेठजीने निश्चय किया कि इसको अवश्य मिटाना चाहिये। ता० २९ के दिन और सारी रात इसीका प्रयत्न किया गया। सेठजीने जजकी तरह हरएक बयान शीतलप्रसादजीसे कलम बद्ध कराए व गवाहिया ली–जाच की। जो जिसने कहा उसको अच्छी तरह सुना और ता० ३० को सवेरे अपना फैसलानामा सुना दिया। सर्व बिरादरीने पहले ही फैसला मजूर करनेकी स्वीकारता दे दी थी। इस फैसलेको सुनकर सर्व बिरादरीको हर्ष हुआ, सब गद् गद् वदन हो गए। यहॉ तीन पक्ष थे सो एक हो गए, तब उसी दिन यहाके भाइयोंने सानन्द रथोत्सव किया। श्रीजीके रथको सर्व भाई स्वयं खीचते थे। बाजारमें गाते बजाते बागमें पहुचे। यहा २ घंटे अभिषेक व पूजा करके लौटकर पचायती मदिरजीमें आए। फूलमालकी बोली श्रीमन्त सेठ पूरणशाहने रु ७५१) में ली थी। रात्रिको धर्मशालामें पुन सभा हुई, २९०से अधिक मनुष्य जमा थे। सेठजीको **सभापति** किया गया। सर्व बिरादरीने सेठजीको जे० पी० पद

सिवनीमें स्वागत और फूटको मिटाना।

मिलनेके कारण व फूट मेटनेमें भारी परिश्रम करनेके कारण एक निम्न लिखित अभिनन्दनपत्र दिया और बहुतर धन्यवाद प्रगट किया—

नकल मानपत्र (सिवनी)।

सवैया तेईसा ।

पुन्य प्रताप बढो जगमे यश छाय रहो महि मडल भारी ।
खोल दिये चट शाल अनेक रचे धर्मालय हेतु दुवारी ॥
तीर्थनके उद्धारके कारण जैनसमाज भई आभारी ।
धर्मप्रचारक दानी वीर समान न अन्य भयो अवतारी ॥ १ ॥
ऐसिवनी मध जैनसमाज विषे चिरकाल ते द्रोह बडो अतिभारी ।
उपदेशक औ डिपुटेशनके श्रमते न हटी यह फूट हत्यारी ॥
यह अवसर मुंबई सेठ प्रभाव ते मेल भयो क्षण एक मझारी ।
माणिकचन्द प्रदानिक जसटिस आफ दि पीस महा पदधारी ॥ २ ॥
ज्ञान विज्ञान महा गुण खान प्रसिद्ध विशुद्ध चरित्र प्रसारी ।
कीरत बेल बढी जगमें लहके बहु मानन पत्र पुकारी ॥
जैनसमाज एकत्रित सिवनी देत हैं मानहि पत्र पुकारी ।
मानकचन्द प्रदानिक 'जसटिस आफ दी पीस', महा पदधारी ॥ ३ ॥
तीरथ राजके काज रखी तुम लाज कियो पुरुषारथ भाई ।
अकलुज अरु शोलापुर जबलपुर मुम्बपुरी विद्योन्नति जारी ॥
आननकी सुपरिक्षण लये दिये परितोषक तोषक कारी ।
प्रेम कियो हम पै इत आय जयो जग मे तुम सेठ उदारी ॥ ४ ॥

ता० ३० मार्च सन् १९०६

द० **जुगराजसाह**—मन्त्री,
प्रबन्धकारिणी सभा, जैन पचायत, सिवनी ।

फिर मंदिरजीके सुप्रबन्धार्थ एक प्रबन्धकारिणी सभा और दूसरी जात्युन्नतिके लिये--जातिके झगडे तय करनेके लिये सभा स्थापित हुई। सवाई सि० खेमचंद छिंदवाडाके पेश करने और सिंहई जुगराजसाहके समर्थनसे पाठशाला खोलनेका निश्चय किया गया। लोगोंमें बहुत उत्साह था। सभा रात्रिको २ बजे समाप्त हुई। यहासे सेठजी सीधे बम्बई पधारे।

सेठजीका बम्बई सभा द्वारा हर्ष प्रकाश।

चैत्र सुदी १४ स० ६२की रात्रिको बम्बई स्थानीय सभाका एक अधिवेशन मि० लल्लूभाई प्रेमानन्द एल सी ई की अध्यक्षतामे हुआ। बम्बईके सभी मुख्य भाई उपस्थित थे। तब शीतलप्रसादजीने सर्कारकी ओरसे जे० पी० का पद मिलनेके उपलक्ष्यमें सभाकी ओरसे सेठजीको अपना पूर्ण हर्ष प्रगट किया तथा यह कहा कि "जिस दिन आपको यह पदवी मिली उस ही दिन आप कुडलपुरकी यात्रा पधारे। यात्रामे रात्रि दिन जाति व धर्मकी सेवा करनेवाला एक धनवान सेठजीके समान दूसरा देखनेमे नहीं आया। आपने जबलपुर ऐसे कठिन स्थानमे बोर्डिंग स्थापनका निश्चय कराया व सिवनीकी फूट मेटी, ये दोनों बड़े ही भारी काम किये है। आपको सर्कारने जो यह पद दिया है आप उसके सर्वथा योग्य है। काशी स्याद्वाद पाठशालाके छात्रोंने संस्कृतमें एक अभिनन्दनपत्र पत्रमें भेजा था सो वैद्य कन्हैयालालजीने बाचकर सुनाया, फिर सभापतिने सेठजीके करकमलोंमें अर्पित किया।

मगनबाईजीके उद्योगका फल।

स्त्रीशिक्षाके प्रचारार्थ जो श्रीमती मगनबाईजी पत्रव्यवहार कर रहीं थी उसके फलसे शोलापुरके सेठ हीराचन्द नेमचन्द आनरेरी मजिस्ट्रेटकी सुपुत्री श्रीमती कंकुबाई भी स्त्रीसमाजकी सेवामें दत्तचित्त हुई और सप्त तत्त्वपर एक लेख भेजा जो जैनगजट अंक १७ ता० १ मई १९०६ में मुद्रित है।

जबलपुरमें बोर्डिंगका महूर्त।

जब सेठजी जबलपुर बोर्डिंगकी बात पक्की करने आए थे उस समय बोर्डिंगके लिये बहुतसे मकानोंको तलास किया। जैन बिरादरीमें **सिंहई सद्दूलालजी** धर्मात्मा व प्रेमी भाई थे। आपने सेठजीको अपना नया बनवाया हुआ मकान दिखलाया। इसमें अभी प्रवेश भी नहीं हुआ था। सेठजीको २५ बालकोंके रहने योग्य साफ सुथरा देखकर पसन्द आ गया। तब सिंहईजीने कहा कि एक वर्षके लिये विना किराए लिये बोर्डिंगके लिये मैं यह मकान देता हूं, उसीमें महूर्त करना निश्चित हो गया था। नरसिंहपुरमें पन्नालाल मास्टर एक धर्मबुद्धि भाई था इसका हाल मुन्नालाल राजकुमार द्वारा मालूम हुआ था सो इसको सेठजीने बुलाकर सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत कर दिया तथा मेज, कुर्सी बर्तन आदि सामान मगानेकी सर्व सूची कर दी थी तथा शीतलप्रसादजी द्वारा एक नियमावली भी बनाकर दे दी थी। ता ११ अप्रैलकी सभामें यह नियमावली पास कराली गई थी और महूर्तके लिये सर्व प्रबन्ध हो रहा था। कुछ बालक भी बुलाये गए थे।

इतनेमें महूर्त्तका दिन निकट आनेसे **सेठ माणिकचंदजी** शीतलप्रसादजी और श्रीमती मगनबाईजीके साथ ता २४ अप्रैलको जबलपुर पधारे और जल्सेका बहुत उत्तम प्रबन्ध कराया। नगरके प्रतिष्ठित भाइयोंको निमत्रण भेजा व कई जगह आप भी बुलाने गए। **राजा गोकुलदासजी रईस**-के हाथसे बोर्डिंग खुले ऐसा निश्चय किया।

मिती बैशाख सुदी ३ अर्थात् अक्षयतृतीयाके दिन ता-२६ अप्रैल० ६ को सबेरे ही श्रीसरस्वती पूजन करके ८ बजे मगल कलशको लिये हुए सर्व मंडली गाजे बाजेके साथ लार्डगजकी धर्मशालासे बोर्डिंगके मकानमे पधारी और वहा मगल कलश पधराया। फिर लार्डगजकी पाठशालाके मकानमें आए। वहा सर्व जैन अजैन १००० मनुष्य एकत्र हुए। नगरके बड़े२ सभी प्रतिष्ठित पुरुष आए थे। राजा गोकुलदासजीने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सभापतिने बोर्डिंगकी आवश्यक्ता बताते हुए सेठ माणिकचदजीकी उत्तजना और कष्टकी सराहना की। फिर बाबू दयालचद मत्रीने नियमावली, कमेटीके मेम्बर व प्रवेशार्थ आए हुए छात्रोंके ग्रामादि बताए। फिर शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगके लाभपर एक मनोहर व्याख्यान दिया। इसका समर्थन व्यवहारी रघुवीरप्रसादजी, प० काशीप्रसाद चौधरी, पडित गिरधारीलाल पेन्शनर तथा **रायबहादुर बिहारीलाल खजांची** भार्गव बैंकर्न किया। आपने कहा कि भार्गवोंमें ६ बोर्डिंग हैं और सबसे पहले आगरामे खुला था। रायसाहब मुन्नालाल अकौन्टेन्टने सर्वको धन्यवाद दिया। फिर सर्व मडली बोर्डिंगके मकानको पधारी। राजा साहबने मकानका ताला खोला

तथा मकानकी सुन्दरता व सुपरिन्टेन्डेन्टके ऑफिसको देखकर प्रसन्नता प्रगट की। इस दिन नरसिंहपुर, कठेली, पिपरिया, मौरसिरके ९ छात्र भरती हुए थे, परन्तु थोडे ही दिनोंमे २३ छात्र हो गए। २ वर्षांतमें १७ रहे, इनमें ४ संस्कृत, २ हाई स्कूल शेष ११ मिडिल स्कूलकी कक्षाओंमे रहे। धार्मिकशिक्षा सुप० द्वारा नित्य दी जाने लगी और वार्षिक परीक्षा भी होने लगी। यद्यपि सेठजीने केवल २४००) की ही मदद दी थी, पर धर्मके प्रभावसे १ वर्षमे १३९१॥≈) १ खर्च होकर रोकड ११२२।)९ रही। इस तरह यह बोर्डिंग कई वर्ष तक चलता रहा। सेठजी सिंहई नारायणदासको जो कई लाखके धनी थे पर पुत्र नहीं था, बारबार जब वे मिलते थे यही उपदेश करते थे कि आप इस बोर्डिंगको चिरस्थाई कर देवें, द्रव्य इसीमे लगाना सफल है। इस उपदेशके बार२ असरसे सिंहई नारायणदास और उनकी धर्मपत्नीने एक कोठी १५०) मासिककी आमदनीकी दे दी तथा मरते समय २००००) बोर्डिंगका मकान बनानेके लिये बाबू कछेदीलाल वकील बी ए एल एल बी. आदि ट्रस्टियोंके सुपुर्द कर गए। सिंहईजीके दो स्त्रियें थी। दोनों विद्या प्रेमणी थी। बाबू कछेदीलालने बहुत ही हवादार स्थानमें जमीन लेकर बोर्डिंग बनवाया। इसके बनवानेमें ४००००)लगे सो सब सिंहई-जीके स्टेटसे लगे। यह बोर्डिंग एक दर्शनीय मकान बनगया है। ४० से अधिक छात्र रह सक्ते है। वर्तमानमे सेक्रेटरी बाबू कछेदीलालजी ही है।

जबलपुरकी स्त्री समाजमें जागृति ।

श्रीमती **मगनबाई**जीके व्याख्यान सुननेके लिये यहाके स्त्री व पुरुष बहुत उत्सुक थे सो ता० २७ अप्रैलके सबेरे पाठशालामें स्त्री व पुरुषकी सम्मिलित सभा हुई थी। हाजरी ५०० थी। फीमेल ट्रेनिंग कालेजकी लेडी सुप्रिन्टेन्डन्ट मिस **रास** भी कालेजमें पढनेवाली ३ जैन स्त्रियोंको लेकर ठीक ७ बजे पधारी और सभापतिके आसनको सुशोभित किया। श्रीमती बाईजीने विद्याकी आवश्यक्ता पर १॥ घंटा बहुत ही असरकारक व्याख्यान दिया। फिर भगवतीबाई, जमनाबाई, गौरीबाई तथा मुन्नीबाईने भी अपने २ व्याख्यान पढे। मिस साहबाने मगनबाईजीके कथनको सहराते हुए कन्याशाला होनेपर बहुत जोर दिया। उसी समय स्त्रिया दान करने लगी। ५) मिस साहबाने भी देने कहे तथा दूसरे दिन एक प्रशंसाजनक पत्रके साथ ५) अपने और १) अन्य छात्रका ऐसे ६) भेज दिये। रात्रि तक मासिक व नकद सब मिलकर १५००) रु० का चदा हो गया। यह रुपया जबलपुर बोर्डिंग हाउसकी कमेटीके आधीन सेठजीने किया, वह कन्याशाला खुलवावे। रात्रिको भी मगनबाईजीका उपदेश स्त्रियोंमें विनय व शीलव्रतपर हुआ।

छिन्दवाडामें सेठजीका भ्रमण।

वैशाख सुदी ६ ता० २९ अप्रैलको श्रीजीकी सवारी बडे समारोहसे निकली। सिवनीसे सेठ पूरणशाह भी आये थे। रात्रिको सभामें पाठशालाके लिये कहा गया तब निश्चय हुआ कि चिरस्थाई फंडकी जो पट्टी हुई है उसको

जमा खर्च करके पक्का किया जायगा और अध्यापक मिलनेपर काम जारी होगा। सेठ माणिकचदजीने जबलपुर बोर्डिंगका हाल कहकर सहायताके लिये प्रार्थना की तो उसी समय सेठ पूरणशाहने २५०) प्रदान किये तब औरोंने भी लिखाया।

दूसरे दिन ता० ३० की शामको मगनबाईजीने स्त्रियोंके कर्तव्यपर व्याख्यान देकर गाली गवानेका त्याग कराया। रात्रिको यहा एक आम सभा **राय मथुराप्रसाद** वकीलके सभापतित्वमे हुई। डिस्ट्रिक्ट जज आदि नगरके प्रतिष्ठित पुरुष आए थे। शीतलप्रसादजीने धर्मविद्याकी आवश्यक्तापर १॥ घटा व्याख्यान दिया। सभापति साहबने इसकी पुष्टताकी व सेठ माणिकचदजीने सभापतिको धन्यवाद दिया। दूसरे दिन यहासे सेठजी सिवनी पधारे। रात्रिको शीतलप्रसादजीने तत्त्वज्ञानके ऊपर व्याख्यान दिया और बोर्डिंगके लिये मददको कहा तो बहुतसे भाइयोंने सहायता दी। कुल चदा सिवनीका ७८३) और छिन्दवाड़ेका ५३१) हो गया। सेठजी शीतलप्रसादजीके साथ यहासे गीरीडी (शिखरजी) गए और मगनबाईजी बम्बई आए।

श्री शिखरजी बीसपथी उपरैली कोठीका चार्ज।

सेठजीका ध्यान चारों तरफ था। गीरीडी जानकी जरूरत यह थी कि शिखरजीकी उपरैली बीसपथी कोठीका कुल चार्ज रिसीवरके हाथमें—ट्रष्ट कमेटीके हाथमें लिया जावे। शिखरजी बीसपथी कोठीका प्रबन्ध हरलालजीके मरनेके बाद बहुत खराब था। प्रबन्ध आरावालोंके हाथ था। बम्बई सभाने बारबार चाहा कि आरावाले एक कमेटी

करके प्रबन्ध करें पर कुछ नही हुआ । उधर मेनेजर राघवजी और आरावालोंमें तकरार हो गई तब आरावालोंने अपना कब्जा किया, पर ४००००) पुर्लियाके कोर्टमें था उसको लेनेके लिये आरावाले और राघवजीके मुकद्दमा चला जिसमे १९ या २० हजार खर्च पडे । अतमें राघवजीको हुक्म मिला कि आरावालोंके ऊपर असल दावा करो, परतु द्रव्य न होनेसे राघवजीने ग्वालियरके **भट्टारक**को मुकद्दमा लडनेके लिये खडा किया । उसने पुरलिया कोर्टमे दरखास्त दी कि रुपै हमें मिलना चाहिये । यह गड़बड देखकर सभाकी ओरसे सेठ चुन्नीलाल झवेरचद व रामचद नाथा आकलुज आदि मधुवन गए तो मालूम किया कि आरावालोंने भट्टारकजीको २००००) देनेका लालच देकर अपने कब्जेमें कर लिया है तब बम्बईवाले मधुवन गए । कोठीके हिसाबकी बहिया आदि मगीं सो मिली नही । कहा गया कि आरा गई है । ३ मनके ३२९ चादीके उपकरण भी आरा गए है, उस समय देखा गया तो मदिरोंमे घीके स्थानमे तेलके दीपक जलते थे । गरीब भिक्षुकोंके नामका पैसा कोठीके नौकर खा जाते थे । ऐसी दुर्व्यवस्था देख वे तुर्त ग्वालियरके भट्टारक और आरेवालोंसे मिले । ११ मनुष्योंकी कमेटी बनाई । नियमावली भी बनी तथा उसकी रजिष्ट्री करानेका निश्चय किया गया, परतु आरावालोंने बहाने कर दिये । इतनेमे सुना कि भट्टारकजी व आरेवाले छपरेमें कुछ सलाह कर रहे है। इस गडबडीसे विश्वास उठ जानेपर बम्बईवालोंने पुर्लिया कोर्टमें ४००००)के रक्षणार्थ अर्जी दे दी कि यह दिगम्बर जैन सम्प्रदायद्वारा नियमित कमेटीको मिलना चाहिये, इतनेमें आरावालोंने भट्टारकजीसे मिलकर

एक इकरारनामा रजिष्टरी कराया जिसमें भट्टारकजीको १२०००) नक़द और ६००) वार्षिक कोठीसे देना निश्चय किया तथा उसमें यह भी लिखा था कि भट्टारकजी, उनके चेले व अन्य किसी दि० जैनीको हमसे पूछनेका अधिकार नहीं है तथा उसी समय ३१००) नक्द कोठीके भंडारसे दे भी दिये तथा पुरलिया कोर्टमें दरखास्त दे दी कि ९०००)भट्टारकजीको, शेष आरावाले प्रबन्धकर्ता शिखरचंदको मिलना चाहिये। ऐसी २ कार्रवाइयोंसे तीर्थक्षेत्र कमेटीको निश्चय हो गया कि बिना कोर्ट द्वारा हस्तक्षेप किये कोठीका प्रबन्ध सुधर नहीं सक्ता और न भंडार ही रक्षित रह सक्ता है। तब सेठ माणिकचंदजीने मुकदमा न० १ सन् १९०३ दायर कर दिया। उस पर कोर्टने तुर्त एक रिसीवर **साकरचंद देवचंद** जैनी बोरसदनिवासीको नियत करके प्रबन्ध उसके हाथसे कराया। इसपर आरावाले घबड़ाए और नागपुरमें आकर सेठ गुलाबशाहजी-के द्वारा बम्बईवालोंसे सुलहकर ली, तब केवल छपरावाले बाबू गुलाबचंदजी तथा ग्वालियरके भट्टारक ही मुद्दालय रहे। बम्बई वालोंने स्वय छपरा जाकर समझानेका प्रयत्न किया, पर कुछ सफलता नहीं हुई। अंतमें रांचीके जुडिशल कमिशनर मि० डबल्यू एच विन्सेन्टने ता० २९ जून १९०५ को फैसला दिया कि पुराने सब प्रबन्धकर्ता हटा कर नए नियत हों। ता २२ दिसम्बरको कुछ नियम नियत करके ७ ट्रूष्टी तय कर दिये, जिसकी अंग्रेजी नक्लका उल्था नीचे प्रकार है—

उपरैली कोठीके प्रबन्धके नियम।

१—मंदिरकी कुल जायदाद नीचे लिखे सात ट्रूष्टियोंकी कमेटीके

आधीन रहेगी और मंदिर तथा तत्सम्बन्धी सर्व मकानादिकी कार्रवाई यह कमेटी करेगी ।

१—बाबू देवकुमार, आरा.
२—सेठ शिवनारायण, हजारीबाग
३—सेठ माणिकचंद हीराचंद, बम्बई
४—सेठ हीराचंद नेमचंद, सोलापुर
५—बाबू नन्दकिशोरलाल, आरा.
६—सेठ चुन्नीलाल प्रेमानंद, बोरसद
७—सेठ नेमीसाह, नागपुर

२—ट्रष्टियोंका यह कर्तव्य होगा कि वह इस बातको देखें कि मंदिरका लहना यथोचित रीति और विचारपूर्वक वसूल होता है, सर्व खर्च सावधानी (होशियारी) से किया जाता है, तथा जो कुछ खर्च किया जाता है वह धार्मिक कार्य्य तथा सर्वसाधारणके परोपकारके अर्थ ही है ।

३—इस कमेटीको अधिकार रहेगा कि वह ट्रष्टके उचित प्रबन्धके लिये बहुत ही सन्तोषप्रद और आवश्यक रीतिया काम करनेके लिये परस्पर तय करले और ऐसे नियम अपने सभाके जल्सेके स्थान, समय और कार्य्य प्रणालीके बनावे कि जो आवश्यक मालूम हों—जब सब मेम्बरोंकी किसी प्रस्ताव पर राय न मिले तो वह प्रस्ताव बहु—सम्मतिसे स्वीकृत हो जायगा, परन्तु उसके विरोधकोंको अधिकार रहेगा कि वह इस कोर्टमें कोई भी प्रार्थना उस प्रस्तावके विरुद्धमें कर सक्ते हैं ।

४—जमा खर्चका हिसाब प्रतिवर्ष किसी सुयोग्य परीक्षक (auditor) द्वारा जाचा जायगा और इस कोर्टमें भेजा जायगा और आवश्यकतानुसार ऐसी रीतिसे छपाकर प्रसिद्ध किया जायगा

जैसा कि यह कोर्ट कहेगी और कमेटीकी इच्छा होगी। यह कमेटीकी इच्छापर छोड़ा जाता है कि वह अपना हिसाब तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा अन्य किसी योग्य व्यक्तिसे जचवाए–इस विषयमें कमिटीके ऊपर भार देनेकी आवश्यकता नहीं है।

५––यदि कमेटीका कोई मेम्बर कालग्रस्त होवे व सायमें काम चलानेके अयोग्य हो तो शेष ट्रष्टियोंका यह कर्तव्य है कि इस बातकी रिपोर्ट कोर्टको करे उस समय कोर्ट जैसी आज्ञा उचित समझेगी देगी अथवा यदि आवश्यक होगी तो नया ट्रष्टी नियत कर देगी।

कमेटीको इतना अधिकार दिया जाता है कि किसी ट्रष्टीका स्थान खाली होनेपर वह नया ट्रष्टीका नाम पश करै कोर्टको अधिकार है कि वह इस नामको स्वीकार करे व नाहीं कर दे।

६––इस कोर्टको यह अधिकार रहेगा कि वह किसी ट्रष्टीको विशेष कारणोंके आजाने पर उसको उचित सूचना देने तथा उसकी अच्छी तरह जाच किये जानेके पश्चात् उस ट्रष्टीको अधिक काम करनेको अयोग्य समझकर कमेटीसे जुदा करदे- कोर्टको यह भी अधिकार है कि वह अपनी आज्ञा तथा कार्यप्रणालीके किसी अशको न्युनाधिक (कमती बढती) करे और बदल देवे तथा यह भी अधिकार है कि न ३ पैरा (वाक्य) के अनुसार प्रार्थना पाने पर कमेटीद्वारा स्वीकृत विषयोंको बदल सके व काट देवे।

यही विश्वास रखना चाहिये और यह आशा रहनी चाहिये कि कोर्ट कोई ऐसे ही खास मामलोंके सिवाय कार्य्यके बीचमें दखल नहीं देवेगी।

इस प्रबन्धक नियमावलीका उद्देश्य यही है कि मंदिरका प्रबन्ध एक योग्य और विश्वास योग्य कमेटीद्वारा होवै और कोर्टको जितना कम मौका दखल देनेका दिया जावै उतना ही अच्छा है।

कोर्टने बीचमें दखल देनेकी अपनी शक्ति इसीलिये रक्खा है कि अनावश्यक गड़बड़ न होने पावे। और किसी ट्रष्टीकी ओरसे (कारण वशात् कोई आवश्यक्ता होने पर) कोई अयोग्य वर्ताव न हो।

७—कमिटी जब चाहे इस कोर्टसे किसी मामलेमें सलाह तथा शिक्षा ले सक्ती है।

ता० २२ दिसम्बर १९०५

डबलू० एच० विन्सेन्ट—ऑफिशियल जुडिशल कमिशनर।

इस आज्ञाके अनुसार तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सेठजी सिवनीसे सीधे गीरीड़ी आए, और और ट्रष्टियोंको भी बुलाया था सो हजारीबागसे सेठ शिवनारायण, आरासे बाबू देवकुमारजी और नंदकिशोरलाल तथा बोरसदसे चुन्नीलाल प्रेमानंद आए। सेठजीने **शीतलप्रसादजी**के द्वारा एक नियमावलीका मसौदा तय्यार कर रक्खा था। गीरीड़ीकी बीसपथी धर्मशालामे मिती ज्येष्ठ वदी १ सं० १९६३ ता० ९ मई १९०६ को २॥ बजे दिनके ५ ट्रष्टियोंकी कमेटी हुई। सेठ शिवनारायणजी सभापति हुए। नियमावली पास की गई तथा मंत्री परीख चुन्नीलाल प्रेमानंद नियत हुए। इनहीको कोठीका चार्ज देना तय हुआ। सभापति बाबू देवकुमारजी, कोषाध्यक्ष सेठ माणिकचंदजी और निरीक्षक बाबू नंदकिशोरलाल आरा नियत हुए। यह भी नियम हुआ कि किसीको नया मंदिर व धर्मशाला बनवानी हो व नई प्रतिमा विराजमान करनी हो तो कमेटीसे आज्ञा लेवें। खर्चका वार्षिक बजट ९०००) का पास हुआ।

इस प्रस्तावके अनुसार सेठ चुन्नीलालने रिसीवरसे सर्व सामानका

चार्ज ता० १० मईको लिया और **डाह्याभाई शिव-लालको** कोठीका मैनेजर नियत किया। ज्येष्ठ वदी १ तक सरवाया १०४५६६८।)॥ का था। इस समय ११८९३-) आसामियोंसे, २९९७३।-) यात्रियोंसे, ४९१९३॥=) छोटा नागपुर बैंकमें, ३१००) भट्टारक सत्येन्द्रभूषणके पास व ३८३३॥=) की रोकड थी। तथा २ सामान पाया इसका हाल रिपोर्ट नं० १ उपी १९०७ में, जो उपरैली कोठीसे प्राप्त होगी, दिया हुआ है।

ऊपरके कथनसे मालूम करेंगे कि बीसपथी कोठीके उद्धारमें सेठ माणिकचदजीको कितना परिश्रम करना पडा है, तथा वृथाके ममत्वसे कितना धर्मका द्रव्य बर्बाद होता है। इस कोठीके उद्धारके मुकद्दमेमें १००००)के अनुमान खर्च हुआ जो शिखरजीके भडारको ही सहना पडा। ऊपरके फैसलेकी हाइकोर्टमें अपील की गई थी जिससे ४ ट्रस्टी और बढाए गए थे। सेठ माणिकचदजीने चार्ज आते ही उद्योग करके पुराने मध्यके मदिरजीका जीर्णोद्धार कराया जिसमे २००००) भडारका खर्च किया तथा धर्मशाला आदि सब ठीक कराई। अब बीसपथी कोठीका प्रबन्ध पहलेसे बहुत अच्छा हो गया है, यात्रियोंको हर तरहका आराम है।

किसी भी मदिर या तीर्थके भडारमे बहुत द्रव्य एकत्र न रखके उसको उपयोगी कामोंमें लगाते रहना चाहिये। स्थान दुरुस्तीके सिवाय शास्त्रभडार बढाने, शास्त्र लिखवा कर बाटने, जिस तीर्थ या मदिरके निर्वाह या जीर्णोद्धारके लिये द्रव्यकी जरूरत हो वहा मदद करने, तीर्थपर सस्कृत धार्मिक विद्याका अभ्यास करानेमें द्रव्यको लगाते रहना चाहिये। जो भडारसे खर्च होता रहता है तो प्रबन्ध भी

अच्छा होता रहता है, केवल जमा ही करते जाना यह नीति अच्छी नहीं है। पाठकोंको यहापर यह भी विचारना है कि सेठजी ५९ वर्षके करीब थे। एक पैर जमीनपर जमता न था, लकडीके सहारे चलते थे तौभी आलस्य बिलकुल न था। तीव्र गर्मीके दिनोंमें भी आप धर्मकार्यके प्रबन्धके लिये बम्बईसे इतनी दूर आए थे।

सूरतमें मानपत्र और ५०००)का दान।

बम्बई लौटकर चौपाटीके दीवानखानेमें एक रोज सेठजी, श्रीमती मगनबाई और शीतलप्रसादजी बैठे हुए थे। स्त्रीशिक्षाकी बात चली तब यह प्रश्न उठा कि सूरत नगरमें कोई जैन कन्याओंके लिये पढनेका साधन रूप कन्याशाला नहीं है सो यह बडे अचंभेकी बात है। तब सेठजीने कहा कि वहाकी मंडलीका शिक्षाकी तरफ बहुत कम ध्यान है, तौभी मै प्रयत्न करूंगा कि वहा कन्याशाला होवे और यह मैं अपनी स्वर्ग प्राप्त पुत्री **फुलकुंवर**के नामसे खुलवाऊंगा। कई दिन पीछे ही आप शीतलप्रसादजीको लेकर सूरत पधारे। जे पी का पद मिलनेके पीछे आप पहेल पहल ही सूरत पधारे थे, इसलिये यहाके दिगम्बरियोंने परस्पर सम्मति करके निश्चय किया कि अपने नगरके वतनीको जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है उसका हमें मान करके एक मानपत्र अर्पण करना चाहिये।

ता० २९ मई १९०१ की रात्रिको नवापुराकी फूलवाडीमें सभा भरी। उस समय सेठ मूलचंद किसनदासजी कापडिया आदि कई वक्ताओंके व्याख्यान हुए। शीतलप्रसादजीने बालक व बालि-

कार्योंकी शिक्षापर अत्यन्त जोर दिया व सेठजी धर्मकार्योंमें कितने निरालसी व अपने आरामको बलि देनेवाले व रात्रिके ६ घंटे सिवाय सदा जागृत रह काम करनेवाले हैं ऐसा वर्णन किया। सेठ कालीदास वगतचंदने सूरतकी सर्व दिगम्बर जैन समाजकी तरफसे निम्नलिखित मानपत्र चंदनके कास्केटमें अर्पित किया –

नकल मानपत्र (सूरत)

श्रीमान दानवीर शेठ माणिकचंद हीराचंद झवेरी जे० पी० मुंबाई.

मेहेरबान साहेब,

आपना व्यवहारिक तथा धार्मिक कामोनी योग्य कदर बुझीने नामदार कृपाळु ब्रीटीश सरकार तरफथी आपने 'जस्टीस ऑफ धी पीस' (सुलेहना अमलदार) नी मानवती पदवी आपवामा आवेली छे के जे पदवी हमारा धारवा प्रमाणे आखा हिंदुस्तानना दिगंबरी जैनोमा कोइने नथी ते माटे अत्रेनी आपणी जैन दिगंबरी पांचे गोठ तरफथी अमारा खरा अंत करणथी आ मानपत्र आपवानी रजा लइए छीए

आपे अत्रेना आपणा दाडीआ गच्छना देरासरनो जीर्णोद्धार कराव्यो छे तथा सार्वजनिकने माटे चंदावाड़ी नामनी मोटी अने सुंदर धर्मशाळा बनावी छे तथा जैन पाठशाळा आपना तरफथी चाले छे

मुंबई, कोल्हापुर, अमदावाद वीगेरे ठेकाणे आपे बोर्डिंग हाउसो खोलीने ए बतावी आप्यु छे के हालना समयमा जैन श्रीमंतोए

अजमेरके प्रसिद्ध सेठ नेमीचंदजी साहब बम्बई पधारे। आपकी बम्बईमे बहुत ऊची और प्रतिष्ठित दूकान 'जवारमल मूलचंद' के नामसे है। आपको शास्त्रोंका ज्ञान है तथा धार्मिक नित्य नियमोंके पालनेमें इतने सावधान है कि यदि शरीर अस्वस्थ न हो तो आप प्रतिदिन श्री जिनेन्द्रकी अष्ट द्रव्यसे पूजा करके व स्वाध्याय करके भोजन करते है। यदि परदेशमें भी जावें और ९, १० भी बज जावें तो भी वहा मंदिरजीमे पूजन स्वाध्याय करके भोजन करते है तथा आप हर एकको जो मिले उससे स्वाध्याय करनेके लिये पूछते है। व्याख्यान देनेका भी आपको अभ्यास है। हीराबाग धर्मशालाके लेक्चर हॉलमे ता० १९ जुलाईकी रात्रिको नोटिस बाटकर परोपकारी मि० ए० बी लठ्ठे एम० ए० के सभापतित्वमें सभा की गई, उसमे सेठ नेमीचदजी सोनीने 'विद्योन्नति'पर एक अति प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा संस्कृत विद्याकी जैनियोंमे आवश्यक्ता बताई और जो स्याद्वाद पाठशाला ता० ११ जून १९०५ को काशीमे स्थापित हुई थी उसकी अति प्रशसा की व काशी ही पडितोंके पैदा करनेका स्थान है ऐसा कहा और सेठ माणिकचदजीको इसके स्थापनके लिये धन्यवाद दिया तथा कहा कि उसको चिरस्थाई कर देना चाहिये जिसमें वह सदाको चलती रहे। आपके व्याख्यानके कुछ वाक्य उपयोगी जानकर नीचे दिये जाते हैं—

हीराबागमें सभा और स्याद्वाद पाठशाला काशीके लिये १५०००)का संकल्प।

"यहा तक हम बे खबर है कि हम लोग अपने बालकोंको धर्मविद्या तकका ज्ञान नहींकराते हैं इसी कारण देखनेमें आता है कि लोग न भाव

सहित जिनेन्द्रका दर्शन पूजन करते हैं न शास्त्रस्वाध्यायमें मन लगाते हैं । लौकिक विद्याकी भी प्राप्ति नहीं करते, जिससे कोई यंत्र आदि निर्माण कर व व्यापारको विदेशोंमे बढ़ाकर लक्षोंका धन एकत्र करें व सर्कारी बडे २ ओहदे प्राप्त करें जिससे १०००) व ८००) मासिककी प्राप्ति हो । दान भी हम लोग यथोचित नहीं करते । मेले, प्रतिष्ठाओंमें व अपने पुत्रपुत्रियोंके विवाहोंमें लाखों हजारों खर्च करना ठीक समझते हैं किन्तु आवश्यकीय आहार व विद्यादानमें नहीं । हमारी जैन जातिमें पुराने विद्वान धीरे २ अस्त होते जाते हैं, परतु हम नए विद्वानोंके उत्पन्न करनेका दिल लगाकर कुछ प्रयत्न नही करते । काशीमें यद्यपि स्याद्वाद पाठशाला नियत हो गई है तथापि विना ध्रौव्य फंडके बालूकी भीतिके समान है यदि एक मेला करनेकी भांति कोई भाई इस पाठशालाको चिरस्थाई कर दे तो कितनी धर्मकी उन्नति हो । लोग पुनर्विवाह करनेके पक्षको पकडनेको दौडते हैं, पर यह पक्ष नहीं करते कि हम अपनी कन्याओंका विवाह १२ वर्षसे कम उमरमें न करेंगे, न हम लोग अपनी कन्याओंको पढ़ाते हैं । अफसोसकी बात है, क्या हम लोग श्री आदिनाथ भगवानसे भी बढ गए ? क्या उनको मालूम नही कि श्री आदिनाथजीने अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरीको अपने आप पढाया था । सद्विद्या पढनेसे कदापि हानि नहीं हो सक्ती । ”

सेठ माणिकचन्दजीने सेठ साहबके व्याख्यानकी बहुत प्रशंसा की तथा निवेदन किया कि यदि हमारे सेठजी चाहें तो आज यह चिरस्थाई हो जावे । सभा सानन्द समाप्त हुई। रात्रिको ही सेठजीने

शीतलप्रसादजीके साथ सम्मति की कि यदि एक २ हजार रुपया लोम देवें तो यह पाठशाला सहजमे चिरस्थाई हो जावे । राय ठहरी कि कल सेठजीके पास चलना चाहिये और कहना चाहिये कि एक हजार आप देवें तथा १०००) मैं लिखनेको तय्यार हू। दूसरे दिन दोपहरको शीतलप्रसादजीके साथ सेठ माणिकचदजी सेठजीकी दूकानपर गए और कहा कि मै एक हजार देता हू आप भी एक हजार देवें। तब सेठ नेमीचदजीने कहा कि जबतक आप १५ नाम हजार २ वाले न लिखवा लेंगे तबतक मैं रुपया न दूगा। सेठजीने स्वीकार किया तथा तय हुआ कि पाठशालामें इस सम्बन्धी एक पाटिया टागा जावे जिसमें ऐसे दातारोंके नाम सुनहरी अक्षरोंमे लिखे जावें । उसी समय एक कागजपर मसौदा लिखा गया तथा शर्त १५०००) की डाली गई कि यदि ये न भरें तो यह चदा रद्द होगा । प्रथम ही सेठ नेमीचदने **जवारमल मूलचंद** (अपनी दूकान)के नामसे १०००) लिखे, फिर दूसरा नाम अपने पूज्य पिता का सेटजीने लिखा, उसी दिनसे सेठजीको फिकर हुई कि शीघ्र १५०००) पूरे करने चाहिये ।

बम्बईके प्रसिद्ध कोठीवालोंके पास कई वार जाकर व काशी, कलकत्ते, भातकुलीमें घूमकर सेठजीने ता ३१ दिसम्बर १९०६के लगभग १५ नाम पूरे करलिये । वह नामावली इस भाति है —

१—सेठ जवारमल मूलचद, बम्बई	१०००)
२—सेठ हीराचद गुमानजी ,,	१०००)
३—सेठ तिलोकचंद हुकमचद ,,	१०००)

४—सेठ गांधी बालचंद उगरचंद ,,	१०००)
५—सेठ हरमुखराय अमोलकचंद ,,	१०००)
६—गांधी रावजी साकलचंद ,,	१०००)
७—सवाई सिंहई रिखमसाह गुलाबसाह, नागपुर	१०००)
८—बाबू देवकुमारजी, आरा	१०००)
९—लाला रूपचंद रईस, सहारनपुर	१०००)
१०—लाला कुन्नीलाल बनारसीदास, बनारस	१०००)
११—लाला छेदीलालजी ,,	१०००)
१२—लाला हनूमानदास बाबूनंदनजी ,,	१०००)
१३—लाला खड्गसैन उदयराज ,,	१०००)
१४—बाबू धन्नूलाल एटर्नी, कलकत्ता	१०००)
१५—जौहरी माणिकचंद हीराचंद जे पी० बम्बई	१०००)
	१५०००)

यह फंड बढ़ता रहा यहां तक कि ता ३१ जुलाई १९१५ तककी रिपोर्टमें रु २३५००) का हो गया था।

सेठजीका स्वर्गवास हो गया नहीं तो वे इसे ॥) सैकडेके व्याजसे ६००) मासिक खर्चके योग्य १। लाखका फंड कर देते, परंतु उनके जीवनचरित्रको पढकर उदारचित्त धनाढ्योंका कर्तव्य है कि इसके फंडको शीघ्र पूरा करा देवें ताकि यह संस्था अमर रहकर सेठ माणिकचंदजीकी स्मृतिको कायम रखनेके सिवाय सेठ नेमीचंदजीकी इच्छानुसार संस्कृत विद्वानोंको उत्पन्न करती रहे।

हीराबागमें तीर्थक्षेत्र कमेटीका दफ्तर होना।

सेठ माणिकचंदजीने एक दिन शीतलप्रसादजीसे कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटीका मैं महामंत्री हू तथा वह कमेटी स्वतत्रतासे काम करनेको महासभा द्वारा स्थापित हुई है पर उसका कोई दफ्तर कायदेसे नहीं है। उसका काम शिथिलताके साथ बम्बई प्रान्तिक सभाके द्वारा ही चलता है। उसीके द्वारा बीसपथी कोठी शिखरजीका मुकद्दमा किया गया जिसमे करीब ८०००) का कर्जा बम्बई प्रान्तिक सभाका है। प० गोपालदास बरैया महामत्री प्रान्तिक सभाके हिसाबको इसी कारण न पास करते है न प्रसिद्ध करते है। वे कहते है कि इस रुपयेको चुकाना चाहिये, सो यदि तुम थोड़ा परिश्रम लो और दफ्तरकी सार सम्हाल रक्खो तो दफ्तर हीराबागमें खोला जाय और मैनेजर नियत करके कायदेके साथ सब काम तीर्थोके उद्धारका कराया जाय तथा इस रकमका भी जमा खर्च होकर बम्बई प्रान्तिक सभाका हिसाब पास हो तथा हमारी दूकान पर जो तीर्थोंके लेनदेनके बहुतसे खाते है वे भी सब यही बदल दिये जावें। शीतलप्रसादने सेठजीकी सम्मतिको बहुत ही पसद की और यथासंभव मदद देनेके लिये कहा, तब सेठ माणिकचंदजीने हीराबागके दफ्तरवाले हॉलमे कायदेके साथ ता **१ अगस्त १९०६** को दफ्तर खोलनेका महूर्त्त किया तथा बाबू बुधमल पाटनी जो सस्कृत और इग्रेजीके जानकार धर्मात्मा भाई थे मैनेजर नियत किया तथा सर्व सभासदों, तीर्थक्षेत्रके प्रबन्धकर्ताओं व अन्य महाशयोंको

जैनगजट, जैनमित्र तथा जिनविजयमें सूचना प्रगट कर दी कि दफ्तर खुला है इस लिये तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी सर्व पत्र व्यवहार व रुपया आदि नीचे लिखे पते पर भजना चाहिये-माणिकचद हीरा-जे पी, महामंत्री, भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग धर्मशाला, गिरगाव-बम्बई ।

वागड प्रान्तका दौरा व सेठजीके वचनकी सत्यता ।

उज्जैनकी बिम्बप्रतिष्ठामे सेठ माणिकचदजीसे वागड प्रान्तके बहुतसे जैनी भाई मिले थे और निवेदन किया था कि हमारे प्रान्तमे उपदेश करावे, ओर अधकार है । तबसे सेठजीको ध्यान था कि किसीको भिजवाया जाय । इन दिनोंमे महा सभामें कोई योग्य उपदेशक न था तब मालवा प्रान्तिक सभाके उपदेशक विभागके मत्री लाला हजारीलाल नीमचसे सेठजीका पत्र व्यवहार चल रहाथा कि आप अपने यहाके उपदेशकको अवश्य भेजें । मत्री महाशयने स्वीकार करके मिती आसोज सुदी ११ स १९६३से प० कस्तूर-चदजी उपदेशकको दाहोद, लेमडी, जालह, रामपुरसे उदयपुर स्टे-शन तक ५० ग्रामोंमे घूमनेका प्रोग्राम देकर भेज दिया जिसकी सूचना जैन गजट अक ५१ ता० १ नवम्बर ०६में मुद्रित कर दी । वास्तवमे जो बडे पुरुष होते हैं उनको अपने वचनोंका बड़ा भारी ध्यान रहता है । उपदेशकजी दौरे पर रवाना होगए हैं ऐसा जानकर तुर्त सेठजीने १००) उपदेशक भडारकी सहायतार्थ नीमच भेज दिये ।

शेठ प्रेमचद मोतीचद दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका वार्षिक अधिवेशन ता० ३० सितम्बर १९०६ को

अमदावाद बोर्डिगमें सभा।

बडे समारोहके साथ हुआ । इसमें सेठ माणिकचदजी शीतलप्रसादजीके साथ गए। ५०० गृहस्थ बाहरसे आए थे। सभापतिका आसन मि० चिनूभाई माधवलालने ग्रहण किया । आपने शिक्षा सम्बन्धी मनोहर भाषण दिया था । मियागावके भगवानदास हरजीवनदासने १०००) व धनजीशाह मोतीचंद करमसदने १५१) मदद दी । आमोदवाले सेठ हरजीवन रायचद भी आए थे। सेठजीको गुजरातके भाइयोंकी स्थिति देखकर बहुत दया आती थी और इसके सुधारनेके लिये इनकी समझमे एक **गुजराती मासिकपत्र** निकालनेकी खास आवश्यकता दीखती थी, जिसके लिये सम्पादकी करने योग्य आपने सेठ हरजीवन रायचन्दको तजबीज किया था । हरएक वार्षिक सभामे सेठजी इनको प्रेरणा करते थे । इस वर्ष विशेष जोर देकर कहा । साथमें यह भी कह दिया कि आप एक योग्य सवैतनिक कारकूनको रखकर उससे काम लेवें जिसका वतन मै अपनी तरफसे देनेको तय्यार हूं । इस बातको सुनकर हरजीवन रायचदने सेठजीके आश्चर्यकारक जाति प्रेमकी आति प्रशंसा की और यह कहा कि मैं यथाशक्ति इस कामके करनेका यत्न करूगा। पत्रका नाम **दिगम्बर जैन** रखना तजवीज हुआ । यद्यपि सेठ हरजीवन रायचद इस कामके योग्य थे पर ग्राममें रहने और बहुधन्धी होनेके कारण समय न निकाल सके और वह दिगम्बर जैन एक वर्ष तक फिर भी न निकला ।

सेठ हरजीवन रायचंद लिखते हैं कि सेठजीको अपने धनवानपनेका जरा भी मान न था। भोजन और शयन भी गुजरातके आनेवाले सर्व भाइयोंके साथ एक पंक्तिमें ही करते थे, किसी भी तरहका अपमान भाव अथवा मोटापन या जुदाईकी जरा भी भावना किसीके मनमें नहीं आने देते थे। बोर्डिंगके कायदा कानूनकी चर्चा बहुत ही शांतिपूर्वक तथा न्यायसे करते थे। हरएक ग्रामके मुख्य गृहस्थीकी मुलाकात लेकर वहांकी वस्ती, शिक्षा, मंदिरकी स्थिति आदि संबंधी बहुतसा हाल मालूम कर उनको योग्य सम्मति व मदद देते थे। शीतलप्रसादजीने इस वर्ष सेठजीमें यह बात प्रत्यक्ष देखी और इनके सादे मिजाज, सादे खानपान, रहनसहनको व सबके साथ मिलनसारी देखकर बड़ा ही हर्ष माना।

सेठजीका सरल स्वभाव।

तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरके खुलते ही व मुकद्दमेंकी रकमका जमाखर्च होते ही बम्बई प्रान्तिक सभाका हिसाब व रिपोर्ट तय्यार हो गई तब परोपकारी सभासदोंने श्री गजपंथाजी पर अधिवेशन करना निश्चय किया। इसके प्रबन्धार्थ हीराबागमें एक सभा हुई जिसके सभापति **सेठ माणिकचंदजी** हुए। अधिवेशनके खर्चके लिये १९००) का बजट हुआ व २५ महाशयोंकी स्वागत कमिटी बनी। सभापति सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद, मंत्री दोशी पानाचंद रामचंद, सहायक मंत्री लल्लुभाई प्रेमानंददास तथा पंडित लालाराम, और कोषाध्यक्ष सेठ सुखानंदजी हुए।

श्री गजपंथाजी पर बम्बई प्रान्तिक सभा

वर्षातके मौसममें सेठजी बम्बई ही मे ठहरे और तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमे अपने दिनका बहुतसा समय देने लगे। भादो मासमें आपने शीतलप्रसादजीके द्वारा गुजराती दि० जैन मंदिरमें सवेरे दशाध्याय सूत्रजीके अर्थ बँचवाये तथा रात्रिको शास्त्रीद्वारा अनेक प्रकारका उपदेश कराया।

बम्बईमें सेठजीका सम्मान सर्व ही करते थे। श्वेताम्बरी विद्वद् मडली भी बडे आदरसे देखती थी।

मागरोल जैन सभामें सेठजी सभापति। यहा श्वेताम्बर जैनियोंकी एक मागरोल जैन सभा है उसका एक अधिवेशन ता १० सितम्बर०६के रोज हुआ और सेठ माणिकचद हीराचद जे पी को सभापतिका आसन दिया। इस सभामे अहमदाबाद निवासी मि० नगीनदास पुरूषोत्तमदास संघवीने 'आहारशुद्धि' पर एक मनोहर व्याख्यान दिया था।

सेठ माणिकचदजीकी दूसरी सुसराल फल्टनमें थी इसलिये फल्टन जानेका बहुत अवसर पड़ता था।

फल्टन सरकारसे मित्रता व कन्याविक्रय निषेध। वहाके राजासे भी आपकी मित्रता हो गी थी। सेठजी मकान बनानेके काममे ऐसे अनुभवी थे कि अच्छे इनीनियर जिस बातको नहीं सोच सक्ते वह इनके ध्यानमे आती थी। सेठजीने बोर्डिंग व हीराबाग धर्मशालाके सिवाय बम्बईमें कई बडे २ आलीशान मकान अपनी बुद्धिसे बनवाए थे जो आज तक मौजूद हैं। चौपाटीका रत्नाकर पेलेस समुद्रकी सुन्दर पवन लेनेके लिये बम्बईमें एक अनुपम महल है। महाराज फल्टन एक दफे

इसी बगलेमें ठहरे थे। आपको बहुत ही आराम मिला तब हीसे मित्रता हो गई थी। मकान बनवानेके काममें सर्कार फलटन आपसे सम्मति लेती थी व आपके द्वारा बम्बईसे सामान भी मगवाती थी। इसी वर्षके भादो मासमें सेठजीका गमन फलटन हुआ तब वहा एक जैनियोंकी सभामें आपने कन्याविक्रय बद करनेका ठहराव पास कराया। इसको अमलमें लानेके लिये फलटनके दो तीन मुखियोंने वचन दिया। इसकी खटपट करनेके लिये सेठजीने रु० २५) सभाको भेट भी किये।

सेठजी बरार प्रा० सभाके सभापति और भ्रमण।

बरार और मध्य प्रदेश दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा भी कई वर्षसे धीरे २ कुछ २ सुधार बरारकी ओर कर रही थी जिसके मुख्य कार्यकर्ता रा रा जयकुमार देवीदास चौरे बी ए बी एल वकील अकोला थे। इसका चौथा वार्षिकोत्सव मिती कार्तिक वदी ५–६ ता० ६ व ७ नवम्बर १९०६ को **भातकुली** अतिशय क्षेत्रमें होने वाला था। यह क्षेत्र अमरावती नगरके पश्चिम १० मीलके अनुमान है। रास्ता बहुत टूटा फूटा खराब है। बैल गाडी ३ घंटेमें जाती है। यहा चतुर्थ कालकी अति मनोज्ञ **श्री आदीनाथ स्वामी**की पद्मासन दिगबर जैन मूर्ति है। आसपास इसकी बहुत महिमा है। इसके लिये सेठ माणिकचदजीकी सभापति होनेकी स्वीकारता ले ली गई थी। बम्बईसे सेठ माणिकचदजी अपनी सुपुत्री मगनबाईजीके साथ तथा शोलापूरके सेठ हीराचद नेमचन्दके पुत्र बालचद तथा बाबू शीतलप्रसादके साथ अमरावती गए। वहाके भाइयोंने

मास खाना त्यागा होगा। उसके उर्दू तर्जुमेको इसलामिया हाईस्कूल बम्बईके सेक्रेटरीको दिखाया। उनके अनुरोधसे १००० उर्दू नक्लें छपवाई। उस सेक्रेटरीने उस उर्दू तर्जुमेको पढकर मुझसे कहा कि मेरी तबियत मास खानेसे हट गई है और मैं धीरे २ छोडता जाता हू। फिर सेठजीने कहा कि एकताके लिये सभाए स्थापित करना चाहिये। खापर्डे और डा० मुजेके स्वदेशी वस्तुओंके प्रचारपर बहुत ही असरकारक व्याख्यान हुए। ता० ७ नवम्बरको महिला परिषद् हुई, २५०० स्त्रिया होगी। सौ० गुजाबाई प्रमुख हुई। श्रीमती मगनबाईने स्त्रियोंके कर्तव्यपर बहुत ही असरकारक भाषण दिया। सौ० सीताबाई आदिने भी कहा। मगनबाईजीने पढी हुई स्त्रियोंको जैन पुस्तकें बाटी। बहुतसे प्रस्ताव पास हुए उनमे धर्मादेका सदुपयोगके प्रस्तावपर सेठ माणिकचदजीने बहुत जोर दिया। कारंजा, अमरावती, अजनगाव आदिकी पाठशालाओंके छात्रोंकी परीक्षा बाबू शीतलप्रसाद आदिने ली।

सेठ माणिकचदजीके पास मिलने प्राय हरएक गावके मुखिया लोग आते थे। उनको सेठजी शिक्षा प्रचार, कुरीति निवारणके उपदेश देनेमें अपना समय लगाते थे। आपने यहा भी स्याद्वाद पाठशालाके चिरस्थायी करनेके खयालको नही भुला था। सेठ गुलाबसाहजीको समझाकर एक नाम भराया।

श्री मुक्तागिरजीकी यात्रा।

भातकुलीसे अमरावती होकर आप अपनी मडली सहित श्री **मुक्तागिर**जीकी यात्राको पधारे। उस वक्त ४० मीलका बैलगाडीका रास्ता था। एलिचपुर होते हुए तीर्थपर पहुचे। यह तीर्थ सिद्धक्षेत्र है। यहासे ३॥ करोड मुनि मोक्ष

पधारे है। पहाडपर ४८ दि० जिनमदिरजी है जिनमें प्रतिबिम्ब व चरणपादुकाए है। इनमे कई बहुत प्राचीन है। यह पर्वत बडा रमणीक है। यहा पहाडसे पानीका झरना बडी दूरसे सदा गिरता है जिससे अपूर्व शोभा रहती है। तलहटीमे १ मदिर व धर्मशाला है। मुनीम बापूजी लक्ष्मण आगरकर मिले। इन्होंने बहुत अच्छी तरह ठहराया। इस तीर्थकी यात्रासे सबको परमानन्द हुआ। बेतूलके एकष्टा अ० कमिश्नर रायबहादुर बाबू हीरालाल बी०ए०के पास इस तीर्थ सम्बन्धी एक ताम्रपट है उससे राजा श्रेणिक (बिम्बसार) व उसके पिता उपश्रेणिकका इस पर्वतसे सम्बन्ध मालूम पडता है। यह श्रेणिक २॥ हजार वर्ष हुए श्रीमहावीर स्वामीके उपदेशका मुख्य श्रोता था। यहा पर निकट ही जो एलिचपुर नगर है वह एल नामके जैनी राजाके नामसे प्रसिद्ध हुआ है जो सवत् १११९ मे हुआ था (देखो इम्पीरियल गैजेटियर आफ इडिया वाल्यूम १२) इस पर्वतपर केशरकी वृष्टि कभी २ होती है यह बात सर्व प्रसिद्ध है। यूरुपियन लोग इस तीर्थक दर्शनको आते है। उनका यह श्रद्धान है कि जो एकबार भी इस पर्वतका दर्शन कर जाता है उसकी तरक्की होती है और धन भी प्राप्त होता है। ता० २४ नवम्बर १९०९ को यहा डिप्टी कमिश्नर दोबारा आए थे तब आपने रिमार्क लिखा है—

"I was much struck with the cleanliness of the plain and arrangement made for visitors" अर्थात् मैं इस क्षेत्रकी निर्मलतासे और यात्रियोंके लिये योग्य प्रबन्धसे बहुत प्रसन्न हुआ।

यहा पर ता० २७-१२-१९०९ को एच० कैम्पल, मिस

कैरनेन्डर लूसी बरनट ऐसी इग्रेजोंकी एक पार्टी आई थी उसने बहुत अच्छा रिमार्क किया है—

This charming place due to the charity and munificence of the Jain Community, so full of beauty and interest perched in such commanding surroundings wrought upon us all sorts of spell One would well believe that the green moss-grown water fall was fashioned, as we were told by our guide, by the fairies, The images of the Gods, their expressive countenances mysterious and brooding, with foreheads that seem to hide within themselves great thoughts withdrawn and unspeakable, the court yards, the temples and all their beauty, brought great enjoyment to our party

(Sd) H CAMPBELL
MISS KIRNANDER
LUCY BURNETT

भावार्थ—हम लोग इस महा रमणीक स्थानको देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। इस स्थानकी इतनी सुन्दरता, जैन समाजकी उदारता और दान परायणताके निमित्तसे ही हुई है। जैन देवोंकी मूर्तिया उनके प्रसन्न मुख तथा मस्तक जो कि मानो अकथनीय गंभीर विचारोंको अपने आपमे धारे मग्न किये हैं। यहाका मैदान, मंदिर और इनकी मनोहरताने हम लोगोंको बहुत ही आनन्द प्रदान किया। इस तीर्थके व्यवस्थापक तानासा राजाजी निवृत्तर एलिचपुर है। सेठजीने यहाकी त्रुटियें मालूम कीं कि कुएकी जरूरत है व

२ मील सडक बहुत ही खराब है सो एलिचपुर आकर लालाजी मोतीसाके यहा ठहरे और इन दो कामोंके लिये कहा तथा हिसाबादि तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें बराबर भेजे जानेकी प्रेरणा की।

यहासे अमरावती आकर नागपुर आए। सेठ गुलाबसाहजीके यहा १ दिन ठहरे। उनको ५००००) का ट्रष्ट रजिष्टरी करनेके लिये मसौदा लिखाया। वहासे रामटेक यात्रा करने गए।

नागपुरसे २४ मील रामटेक है। एक छोटी लाइन गई है।

रामटेककी यात्रा।

यहा श्री शातिनाथ स्वामीकी दिगम्बर जैन खडगासन मूर्ति १९ फुट ऊची अतिशय मनोज्ञ है। चौथे कालकी मालूम होती है। यहाकी यात्रा करके सर्व लोग बम्बई आए।

सेठ माणिकचंदजी-की धर्मप्रचारकी चिंता।

जैन जातिमें कितना अज्ञान, व्यर्थ व्यय व कुरीतिका प्रचार है इस बातको अपनी इधर उधरकी यात्रासे व चौपाटीपर दर्शन करने आनेवाले भिन्न २ देशोंके यात्रियोंसे मालूम करके तथा यह भी शिकायत मालूम करके कि कोई उपदेशक आता जाता नही है तथा उपदेशकोंका दि० जैन समाजमें अभाव देखकर इसकी पूर्ति कैसे हो इसका उपाय सोचते रहते व शीतलप्रसादजीसे पूछते रहते थे। शीतलप्रसादजीने एक दिन यह सलाह दी कि उपदेशकीय परीक्षा कायम की जाय। उसका पठनक्रम नियत किया जावे तथा इनाम दिया जाय। सेठजीने इस बातको स्वीकार किया, तब शीतलप्रसादजीने एक पठनक्रम व नियमावली बना दी जिसे सेठजीने बाबू सूरजभान वकीलको

कार्रवाईके लिये भेज दी। बाबूजी उस समय भा० दि० जैन महासभाकी ओरसे उपदेशक फंडके मन्त्री थे। आपने उसे जैन-गजट वर्ष ११ अंक ४४–४८ मे प्रसिद्ध की। इसके तीन विभाग रक्खे–उत्तम, मध्यम, प्रथम।

जो दि० जैन परीक्षालयकी पंडित परीक्षा पास हो वे उत्तम, जो सम्कृत सहित एन्ट्रेन्स तक योग्यता रखते उपदेशकीय परीक्षा। हो वे मध्यम और जो हिन्दी अच्छी जाने व प्रथम देवें। प्रत्येक परीक्षामें उत्तीर्ण दो उत्कृष्टको इनाम इस भांति नियत किया—

	नं० १ को	नं० २ को
उत्तमा परीक्षा	१२५)	१००)
मध्यमा ,,	७५)	६०)
प्रथमा ,,	५०)	४०)
		४५०

प्रत्येक परीक्षामें ४ विषय नियत किये—

उत्तमामें—आप्त परीक्षा, आप्त मीमांसा सार्थ पाठ्य पुस्तककी तरह, स्वाध्याय–समयसार आत्मख्याति और मोक्षमार्गप्रकाश। लेख लिखना ८ फुलस्केप सफोंपर और २ घंटे तक व्याख्यान देना।

मध्यमामें—पाठ्य पुस्तक–तत्वार्थसूत्र सार्थ कंठ, द्रव्यसंग्रह सार्थ कंठ, रत्नकरंड श्रावकाचारमें सम्यक्त लक्षणके श्लोक, स्वाध्याय–पद्मपुराण व पद्मनंदि पंचविंशतिका, लेख ८ सफेपर व व्याख्यान १॥ घंटे।

प्रथमामें--गद्य पुस्तक-रत्नकरंड, तत्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह तीनों सार्थ पाठ, न्याय-रत्नकरंड श्रा० सदासुखजीकृत, बडा पद्मपुराण और आदिपुराण, लेख ६ सफे, व्याख्यान ||| घंटा।

कलकत्तेमें महासभा और कांग्रेसपर सेठजीका गमन।

सन् १९०६ के दिसम्बरमें कलकत्तेमें राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस)की बड़ी धूम थी, इसका २२ वां अधिवेशन था और देशभक्त परोपकारी वृद्ध मि० **दादाभाई नौरोजी** कांग्रेसके सभापति होनेवाले थे। साथमें प्रदर्शनी भी थी। ऐसे मौकेपर कलकत्तेके दिगम्बर जैनी भाइयोंने जैन यंगमेन्स एसो० और भा० दि० जैन महासभाको भी निमंत्रित किया। सेठ माणिकचंदजीका विचार महाराष्ट्र सभाके अधिवेशनमें शरीक होनेके लिये श्री स्तवनिधिक्षेत्रपर जानेका था, क्योंकि आप उसके सभापति थे, पर शीतलप्रसादजीने जोर दिया कि इस सभामें तो आप प्रति वर्ष जाया ही करते हैं। अबके आप कलकत्तेमें चलें और वहांकी प्रदर्शनी व कांग्रेसको देखें तथा महासभामें भी शरीक हों। आपके पधारनेसे महासभाकी बहुत शोभा होगी। तथा लौटते हुए आप काशीमें उस संस्कृत शालाको भी देख आवेंगे जिसे आपने स्थापित किया था व जिसकी चिरस्थायिताके लिये आपको इतना ध्यान है। सेठजीने इस रायको मंजूर किया तथा बम्बईसे अपनी सुपुत्री मगनबाई व निज कुटुम्ब व पुत्रियों सहित शीतलप्रसादजीके साथ कलकत्ते आए। कांग्रेस देखनेके निमित्तसे सेठ हीराचंद नेमचंदके पुत्र वालचंदजी भी कई मित्रोंके साथ एक ही डब्बेमें आए। सेठजी सदा ही अपनी प्रतिष्ठा और आरामके

ख्यालसे सेकन्ड क्लासमें ही यात्रा करते थे और अपने साथवालोंको भी अपने ही डिब्बेमें बिठाते थे। सेठजीका कहना था कि यदि यात्रामे शरीरको कष्ट हुआ तो जिस कामके लिये अपनी यात्रा होती है वह काम अच्छा न होगा। शीतलप्रसादजीको सेठजी सदा ही अपने साथ बडी प्रतिष्ठासे बिठाते थे और हर तरह उनके शरीर, प्रकृति, व धर्म साधनकी रक्षा करते थे। अपनी स्त्रीके देहान्त होनेके बाद शीतलप्रसादजी चारित्रमें अपना अभ्यास बढा रहे थे सो जबसे लखनऊ छोडकर बम्बई रहने लगे थे तबसे बराबर सवेरे और शाम सामायिक करते, अष्टमी व चौदस-को उपवास करते थे, रात्रिको जलपानका त्याग था, दर्शनपाठ या स्वाध्यायके विना भोजन नही करते थे। इन सब बातोंकी स-म्हाल सेठजी पूरी २ रखते थे। प्राय अष्टमी चौदस आजानेपर इसी निमित्त ठहर जाते थे। कलकत्तेमें पहुचते ही **बाबू धन्नू-लाल अटार्नी** सभापति स्वागतकारिणीने बहुतसे सभासदोंके साथ सेठजीका बहुत ही सन्मान पूर्वक स्वागत किया और उनको मनोहर गाडियोंपर लेजाकर धर्मशालामे ठहराया। सेठजी जब रेल गाडीसे उतरे थे तब देखते क्या है कि एक पगडी पहने हुए चश्मा लगाए हुए युवकने बहुत ही झुककर सेठजीको प्रणाम किया। सेठ-जीके चित्तमें इस महाशयकी ऐसी विनयका बहुत ही असर हुआ। यह महाशय वही बाबू धन्नूलालजी थे जिनके चित्तमे सेठजीकी परोप-कारता व दानवीरताकी कथा अकित थी। उसी गुणग्राहकताने एक अटार्नीको इतना नम्रीभूत कर दिया था। महासभाके अध्यक्ष लाला रूपचदजी सहारनपुर नियत हुए थे। आप ता० २४ दिस-

म्बरको सबेरे पधारे । आपका स्वागत बडी धूमसे हुआ । स्टेशनपर कनात बिछाई गई थी, बैंड बाजा बजा था । बाबू धन्नूलालने अभिनंदनपत्र पढकर अर्पण किया । १०० गाडियोंकी कतारके साथ सवारी नगरमें घूमकर स्थानपर आई । कलकत्तेमें जैनियोंकी बडी प्रख्याति हुई । उनके साथ हकीम कल्याणराय उपदेशक भी थे।

कांग्रेसका मंडप १२००० मनुष्योंके बैठने योग्य व ३००० के खड़े होने योग्य बना था । खचाखच भरा हुआ था, इसके जल्से ता० २६, २७, २८, २९ दिस० को हुए । दादाभाई नौरोजीका व्याख्यान बडा प्रभावशाली हुआ । अति महत्त्वके प्रस्ताव बंगभंगके विरोध, आफ्रिकामें भारतियोंपर अन्यायका प्रतिवाद, प्रारंभिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य्य, तथा स्वदेशी आन्दोलनके हुए । कांग्रेसकी प्रदर्शनी २२ एकड जमीनमें थी । प्रदर्शनी इतनी भारी थी कि गलियोंकी लम्बाई ३ मील थी । इसको ता० २१ दिस० को स्वयं बड़े लाट लार्ड मिन्टोने खोला था । प्रदर्शनीसे मालूम हुआ कि देशी कारीगरीकी चीजें बनानेके लिये लोगोंका ध्यान बढ रहा है । चीनी बनानेकी देशी कल देखनेमें आई । वह बहुत ही योग्य थी । एक ही समय इख डालकर शक्कर बना ली जाती थी । ता० २४ दिस० को दिनमें और ता० २९ दिस० की रातको जैन यगमेन्स एसोशियेशनके तथा ता० २९ दिस० के दिनमें व ता० २६ की रातको व ता० २७ के दिन रात्रिमें महासभाके जल्से **लाला रूपचंदजी**के सभापतित्व और बाबू धन्नूलालजीके उपसभापतित्वमें हुए ।

बाबू धन्नूलालका स्वागतार्थ व्याख्यान बहुत ही विद्वतापूर्ण,

प्रौढ और मनोहर हिन्दी भाषामे था । एसो० में मुख्य दो प्रस्ताव हुए । एक तो मेम्बरोंमें दर्शन स्वाध्यायके प्रचारकी कोशिश की जावे और उसकी रिपोर्ट हर साल प्रगट हो । दूसरे एक ट्रैक्ट कमेटी इंग्रेजी पुस्तकोंके बनाने व संशोधनके लिये बने । महासभामें मुंशी चम्पतरायजीने रिपोर्ट सुनाई, फिर **सेठ माणिकचंदजी**ने प्रस्ताव किया कि महासभा **दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी** तय्यार करै उसका कुल खर्च मैं दूगा । महासभाने धन्यवाद सहित स्वीकार किया व बाबू **सूरजभान वकीलको** इसका मंत्री नियत किया । यद्यपि इसका काम सेठ ठाकुरदास भगवानदासने पहले ही शुरू कर दिया था पर घूमनेवाले डाइरेक्टर न मिलने व व्यापारमे सलग्न होनेके लिये वह काम कुछ हुवा न था तथा बाबू सूरजभानसे प्राइवेट बात करनेपर सेठजीको यह मालूम हुआ था कि इनके द्वारा यह काम बहुत जल्द और बहुत अच्छी तरह होगा ।

मगनबाईजीको स्वर्ण पदक ।

श्रीमती **मगनबाईजी**को वह **स्वर्णपदक** जो सहारनपुरमे देना प्रस्तावित हुआ था महासभाकी खास बैठकके समय सभाके सामने बुलाकर दिया गया और इनकी सुकीर्त्ति वर्णन की गई । श्रीमती मगनबाईजीको परदेकी आदत न थी और न उन्हें पुरुषोंकी सभाके सन्मुख आते संकोच था। आपने स्वर्णपदक लेते हुए अपनी मिष्ट ध्वनिसे श्री जिनेन्द्रको नमस्कार करके अपनी लघुता प्रगट करते हुए महासभा द्वारा सन्मानित होने पर अपना अति हर्ष माना और धन्यवाद दिया । सभाओंकी

स्थिरताके लिये तय हुआ कि व्याख्यानोंकी छोटी २ पचीस पुस्तकें प्रकाशित हों । पं० मेवारामजीका व्याख्यान बहुत प्रभावशाली हुआ था । लाला रूपचन्दजीने १०००) महासभाके महाविद्यालयमें जो सहारनपुरके चंदेमें लिखा था सो प्रदान कर दिया ।

सेठ माणिकचन्दजीने कलकत्तेके कई धनाढ्योंसे स्याद्वाद पाठशालाके लिये हजार २ की रकम भरानेका उद्योग किया, पर सफलता केवल एक **बाबू धन्नूलाल अटार्नी** पर हुई। आपने एकही दफे कहनेसे स्वीकार कर लिया तथा लाला रूपचन्दजीने भी १०००) लिखाए । श्रीमती मगनबाईजीने मंदिरजीमें कई स्त्री-सभाएं करके शिक्षा व धर्मकी जागृतिपर उत्तेजित किया ।

इसी अवसरपर सेठजीने शिखरजीकी उपरैली कोठीकी प्रबन्धकारिणी सभाका अधिवेशन भी कलकत्तेमें नियत किया था और सर्व मेम्बरोंको खबर की थी। उसीके अनुसार ता० ३० दिसम्बर १९०६ को बैठक हुई, जिसमें बाबू देवकुमारजी, सेठजी, पं० नंदकिशोरजी, छेदीलालजी, शीतलप्रसादजी, सेठ नेमीसाह नागपुर व चुन्नीलालके द्वारा क्रमसे नियुक्त थे। ९॥ मासका हिसाब व रिपोर्ट पास की गई। बडे मंदिरजीके जीर्णोद्धारके लिये बम्बईसे मिस्त्री भेजकर रिपोर्ट लेना तय हुआ। आगामी वर्षके लिये बजट पास किया गया। मालूम हुआ कि कोठीका चार्ज लेनसे अब तक बहुत कुछ प्रबन्ध सुधरा है।

काशीमें सेठजीका आगमन ।

कलकत्तेसे चलकर सेठजी सीधे बनारस आए और मैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। यहां आप ३, ४ दिन ठहरे और उदारचित्त धनाढ्य जैनी भाइयोंको समझाकर, स्वयं उनके घर तकमें जाकर पाठशालाके चिरस्थाई फंडमें हजार हजारके

नाम भरा लिये । लाला कुंजीलाल, बनारसीदास, और बाबू छेदीलालजीसे तो कलकत्तेमे ही भरा लिये थे, अब बाबू हनुमानदास, बाबू नदनजी तथा लाला खडगसैन उदयराजजीसे भराए । खडगसैनजीकी दो विधवा स्त्रियें थी। इनको समझानेमें मुख्य परिश्रम श्रीमती मगनबाईजीने किया था । यहा तक १४ नाम हो गये थे और सेठ नेमीचदजीसे १५वें नामकी शर्त थी । एक नाम आपने अपना और भरके १५ नाम पूरे कर दिये और रुपया तहसीलना शुरू करा दिया । **साहस इसीको कहते हैं** । यदि एक और धनाढ्य उनके साथ भ्रमण करनेमे पूरी २ मदद देता, और सेठजी १० व २० शहरोंमें घूम लेते तो १०० नाम भराना कोई बात न थी पर जैन जातिके दुर्भाग्यसे ऐसा न हो सका और वह फड २३०००) ही पर रुक रहा है ।

ता० ७ जनवरीको स्याद्वाद पाठशालाकी प्रबन्धकारिणी सभामें आप सभापति हुए । कई जरूरी प्रबन्धक कार्रवाइयोंके साथ साथ वार्षिक अधिवेशन आगामी फाल्गुण सुदीमें करना निश्चित किया।

पडित शिवकुमार शास्त्री द्वारा परीक्षा ।

जिस पाठशालाके लिये सेठजीको इतना प्रेम था उसकी जाच भी कराना आप जानते थे जिससे खातरी हो कि पाठशालाका काम ठीक होता है या नहीं । आप एक दिन कई विद्यार्थियोंको लेकर काशीके प्रसिद्ध विद्वान् पडित **शिवकुमार शास्त्री**के यहा पधारे और प्रार्थना की कि आप इनकी परीक्षा लेवें । पडितवर्यने परीक्षा लेकर यह सम्मति प्रदान की—

माघ कृष्ण पचम्या मत्स्थाने स्याद्वाद पाठशालायाश्छात्रा स्वपरीक्षादानार्थमुपस्थिताश्च परीक्षादानोत्तरभारकृताभ्यामुत्त्वेन निर्णीता।

भावार्थ—माघ कृष्ण पंचमीको मेरे स्थानपर स्याद्वाद पाठशालाके छात्र आए। परीक्षा ली। अभ्यास अच्छा किया है ऐसा निर्णय हुआ।

विद्याप्रेमी सेठ माणिकचंदजीको सिवाय अपने परोपकार कामके और कोई शौक किसी तरहका न था। जिस शहरमें जाते थे वहां श्री जिनमंदिर व कोई प्राचीन स्थान तो देखते थे, पर अन्य किसी मेले ठेले तमाशे आदिमें जानेकी बिलकुल रुचि न रखते थे। खानपान भी बहुत सादा था। तथा सबेरेसे जब तक कोई काम नहीं कर लेते थे तब तक मध्यान्हका भोजन नहीं रुचता था। सेठजीकी यह मंशा थी कि भैदागिनीके बगलमें स्थान लेकर एक कायदेका मकान स्याद्वाद पाठशाला व बोर्डिंगके लिये बनवा दें। उस स्थानके लिये आपने बहुत प्रयत्न किया। पोष्ट-मास्टर लाला रघुनाथ दासको कई सौ रुपये उसके लिये भेजे उन्होंने बयाना भी दिया, पर वह सेठजीके मरणकाल तक ठीक न हुई। इस दफे आपने काशीसे **सिंहपुरी** व **चंद्रपुरी**में भी जाकर दर्शन किये। श्री श्रेयांसनाथका जन्मकल्याणक सिंहपुरी तथा श्री चंद्रप्रभुजीकी चंद्रपुरी है।

आप बनारससे सकुशल बम्बई आए। श्री गजपंथाजीमें बम्बई प्रान्तिक सभा होनेवाली थी उसकी फिकर होगई। जाति व धर्मकी सेवामें धनाढ्य लोग धनके खर्चनेवाले तो बहुत मिलेंगे

पर धनके दानके साथ शरीर व वचनसे भी दिन-रात मिहनत करनेवाले बहुत कम दीख पड़ेगे। इसी अद्भुत गुणके कारण जैन जनता सेठजीको बात बातपर याद करती है तथा अब इनके स्थानको पूर्ण करनेवाला कोई दीखता नही है।



ग्यारहवां अध्याय।

महती जातिसेवा द्वितीय भाग।

सेठ माणिकचंदजी कलकत्तेके प्रवाससे लौटकर बम्बईमे अपनी नित्य क्रियामें लवलीन हो गए। इस अवस्थामें भी जब सेठजी बम्बई रहते तब चौपाटी चैत्यालयमे स्वय श्री जिनेन्द्रकी स्फटिकमणिकी मूर्तियोंका अभिषेक करते थे, णमोकार मत्रकी जाप दे शास्त्र स्वाध्याय करके जो मुद्रित पुस्तकें चैत्यालयमें रक्खी थी उनको देखते थे तथा बाहरसे बहुतसे स्थानोंकी माग आती थी उनके लिये पुस्तकोंके छांटनेका काम ठाकुरदास भगवानदासके सुपुर्द था। ठाकुरभाई स्वय करते व और छोटे लडकोंसे कराते थे, जो बहुधा चारों भाइयोंके कुटुम्बमे कोई न कोई बगलेमें रहते थे। तथापि सेठजी उनकी जाच रखते व कभी आवश्यक होनेपर स्वय भी पुस्तकोंको छांटकर अलग २ बिना बधा बदल रख लेते थे और उन्हें फिर दूकान जाते हुए ले जाकर भिजवा देते थे। प्राय जैन पाठशालाओं और खास २ स्वाध्यायके लिये प्रार्थनारूप मागनेवालोंको आधे मूलयमे व भेट रूप भी भिजवाते थे। कई हजार रुपया इस काममे अटका रखा था। सेठजीके जीवन तक बाहर भेजनेका जितना काम होता था उतना अब नहीं होता है, तथापि अब भी चौपाटीपर पुस्तकालय है जिसमे सर्व प्रकारकी सस्कृत प्राकृत भाषाकी पुस्तकें रहती हैं। मदिरजीसे निकलकर जब तक रसोईका

सेठ माणिकचंदजीकी दिनचर्या।

समय होवे तब तक आप गाड़ीपर बैठकर कभी बोर्डिंग, कभी कोई मकान, कभी किसीसे मिलनेके काममें चले जाते थे । वहासे आकर रसोई जीमकर सबके साथ दूकान जाते थे । रास्तेमें हीराबाग धर्मशालामें उतर जाते थे। जबतक गाडी औरोंको जौहरी बाजार पहुचाकर न लेट आती तबतक आप शीतलप्रसादजीके साथ धर्मशालामें घूमकर सर्व जाच करते, दफ्तरमें आकर सुप० धर्मशालासे हाल मालूम करने, रोजके फार्मको देखते कि जिसमें यात्रियोंकी आमद लिखी जाती है, फिर तीर्थक्षेत्र कमेटीके मैनेजरके पास बैठकर जरूरी पत्र पढ क्या जवाब देना सो समझाकर जब गाड़ी आती तब दूकानपर जाते थे। वहापर तीर्थक्षेत्रोंके सिवाय और अनेक तरहके धार्मिक सामाजिक पत्रोंको पढकर उनका उत्तर लिखते व लिखाते थे। अब सेठजीका सम्बन्ध सम्पूर्ण भारतवर्षसे होगया था। महासभाके सम्बन्धमे भी बहुत लिखा पढी होती थी। सेठजीके सामने ही सेठ नवलचन्द, चुन्नीलाल, ठाकुरभाई व्यापारका काम करते थे । कोई २ माल खरीदते समय सेठजीसे सलाह लेते थे तथा जो ग्राहकगण फुटकल मोती लेने आते वे सेठजीकी सलाहसे लेते और जो दाम यह कहते उसे विना दुःखे दे देते थे। सेठजी बड़े न्यायशील व परोपकारी थे। वे विना कोई अपेक्षा रक्खे ऐसे दाम कहते कि उससे कम कही बाजारमें उसे न मिल सके जिससे उनका मन भी प्रसन्न रहे और दूकानवालोंको भी योग्य लाभ हो । तीर्थक्षेत्र कमेटीके लिखे हुए पत्र दूकानपर आते उनको शुद्ध करके हस्ताक्षर करके भेज देते थे । कोई २ आवश्यक तीर्थक्षेत्रके पत्र दूकानपर ही लिखते लिखाते थे। अपना उपयोग सर्व जैन जातिके सुधारे सम्बन्धी भावोंमें उलझाए रखकर ज्ञानके

्ले २ जब गाड़ी आती तब उसीमें सबके साथ बैठकर चौपाटी
ते और शामसे पहले २ व्यालू करके पैदल समुद्र तटपर टहलने
ते थे । वहासे आकर चैत्यालयके दर्शन व जाप कर व कभी
ा-याय कर दीवानखानेमें ऐसी जगह बैठते थे जो जीनेके सामने
जिससे हरएक दरवाजेसे आता जाता सेठजीको दिखता था
र सेठजी उनको देखते थे । इस मनोहर चौपाटी चैत्यालयके
र्शनको बहुत मनुष्य आते थे, उन सबको सेठजी यदि वे स्वय न
ाए तो बुलाकर कुर्सियोंपर बिठाते थे, उनके धर्मकी, सुख
ुखकी बात पूछते थे व यदि कोई धार्मिक काम हुआ तो उसमे
थाशक्ति मदद देनेको तय्यार रहते थे। रात्रिके १० व १०॥
क इस तरह बिताकर रात्रिको दुग्धपान करके शयनालयमें जाते थे।
वेरे अति ही सवेरे उठकर फिर नित्य क्रियामे लग जाते थे।
ापकी यह इच्छा थी कि जहा २ मुख्य प्रान्तिक .कालेज है
ौर उनके आसपास दि० जैनी है वहा एक २ बोर्डिंग अवश्य
ापित हो जावे जिससे इंग्रेजी पढे छात्र धर्मज्ञान व धार्मिक
ारित्रमे विमुख न हों । सेठजीको यह भी विश्वास था कि ,यदि
ोई ग्रेजुएट धर्मको जान जायगा तो वह अपने हितके सिवाय अपने
ख व वचनोंसे बहुतोंका हित कर सकेगा। **जबलपुर** बोर्डिंगके
ापनके बाद व उसको चलते हुए देखकर आपने यह सकल्प किया
के **लाहौर, अलाहाबाद** तथा **आगरा**में भी बोर्डिंग होना चा-
िये। शीतलप्रसादजी सेठजीके साथ ही दूकानपर बैठते थे और कभी २
टा दो घंटेके लिये बाजार चले जाते थे। शीतलप्रसादजीको
ालूम था कि इन बोर्डिंगोंके स्थापन करानेके लिये किन२से पत्रव्यवहार

किया जाय। लाहौरके निमित्त पहले बाबू चदूलाल ओवरसियरसे, फिर बाबू रामलालजीसे, आगराके निमित्त लाला गोपीनाथजी बजाज और बाबू देवीप्रसादजीसे, प्रयागके लिये बाबू ऋषभदास, बच्चूलाल शिवचरणलाल आदिसे पत्रव्यवहार होने लगा। शिखरजीकी बीस-पंथी कोठी सम्बन्धी पत्रव्यवहार प्राय. सेठजी ही को करना पडता था। मैनेजर डाह्याभाई शिवलाल हरएक काममें सेठजीकी सम्मति मागता व आज्ञा लेता था और सेठजी तुर्त जवाब देकर उसका समाधान करते थे।

गजपंथाजीपर बम्बई प्रा० सभाका अधि-वेशन।

सिद्धक्षेत्र श्री गजपथाजीपर मिती माघ सुदी १३ स० १९६३ से १५ तारीख २७–२८–२९ जनवरीको बम्बई प्रान्तिक सभाका चतुर्थ वार्षिक उत्सव होनेवाला था। इस उत्सवका सब प्रबन्ध बट चुका था। मडप तथा केम्पका प्रबन्ध **सेठ माणिकचंदजीके** सुपुर्द किया गया था इससे शीघ्रही सेठजीको वहा जानेकी फिकर पडी। श्री गजपथ पर्वत बम्बई प्रान्तके नासिक स्टेशनसे १० मील व नासिक शहरसे ५ मील है, पासमे मसरूल ग्राम है। यह दिगम्बर जैनियोंका प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र है। यहासे सात बलभद्र और आठ क्रोड़ मुनीश्वरोंने मोक्ष प्राप्त की है।

पर्वत ४०० फुट ऊचा है। सीढिया ३२५ बनी है। ऊपर दो प्राचीन गुफाओंमें खुदे जिन मदिर हैं जिनमें पर्वतमें उकेरी अति प्राचीन दि० जैन प्रतिबिम्ब है। दो चरणपादुकाएं है। एक बडी मूर्ति पार्श्वनाथ स्वामीकी कुछ २ खंडित है। ऊपर व नीचे जलके

कुड है। नीचे क्षेमेंद्रकीर्ति भट्टारककी समाधि है। गाव म्हसवड़में एक सुन्दर शिखरबन्द मंदिरजी है जिसे उक्त भट्टारककी प्रेरणासे शोलापुरके प्रसिद्ध सेठ **रावजी**के पिता **नानचंद** फतहचदजीने स० १९४२में बनवाया था व स० १९४३में प्रतिष्ठा कराई थी। मंदिरजीके चारों तरफ कोट है। इसके भीतर दो धर्मशालाए हैं, जिसमे ३०० मनुष्य ठहर सक्ते हैं। उत्तम धर्मशालाओंके बननेकी जरूरत है। यहाका हवा पानी बहुत ही अच्छा है। बम्बईके जैनी बीमार होनेपर यहीं आते हैं और अच्छे भले चंगे होकर लौट जाते हैं। इस अधिवेशनके सभापति श्रीमान् **राजा ज्ञानचंदजी** फोटोग्राफर हैदराबाद व बम्बई नियत हुए थे। ता० २६के ७॥ बजे सबेरे **दानवीर सेठ माणिकचंदजी,** प० धन्नालालजी, बाबू शीतलप्रसादजी आदि अनेक सज्जनोंके साथ राजासाहब नासिक स्टेशनपर पधारे। दिगम्बर जैन प्रान्तिकसभाके पट्टे लगाए हुए वालन्टियरोंने गाजे बाजेके साथ स्वागत किया। सेठ दीपचंद वीरचदके बंगलेमें आराम करके सवारी शहरमें घूमते निकाली गई, जगह २ ध्वजा पताकाए टगी थीं। इस जल्सेमें प० गोपालदासजी, सेठ सुखानन्दजी, सेठ रावजी नानचद शोलापुर आदि बहुतसे महाशय शरीक थे। देशभक्त पाटनकर और खरे प्रतिदिन सभामें उपस्थित होते थे। ता० २७ को प्रथम बैठक हुई। सेठ चुन्नीलाल झवेरचदजीने स्वागतार्थ भाषण पढा, फिर सेठ माणिकचदजीके पेश करने व सेठ रावजी नानचद और सेठ नेमीलाल नागपुरके समर्थनसे राजा ज्ञानचदजी सभापति हुए। आपने अपना भाषण पढा, इसी तरह दूसरी बैठक ता० २८ की रात्रिको, तीसरी ता० २९ को हुई। यहा उल्लेख योग्य प्रस्ताव जो सभामें पास हुए वह ये थे—

(१) अमीर काबूलको धन्यवादका तार भेजा गया जो उन्होंने अपने वास्ते दिल्लीके मुसल्मानोंको गाय वधसे मना किया (२) **सेठ माणिकचंद हीराचंद जष्टिस आफ दी पीस हुए** इस लिये समान हर्ष प्रगट किया (३) स्वदेशी वस्तु प्रचार तथा वाणिज्यवृद्धिका प्रस्ताव पंडित गोपालदासने पेश किया, जिसका समर्थन देशभक्त मि० एन० पी पाटणकर बी० ए० एलएल० बी० ने एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर किया (४) सखाराम वेणीचंद फलटणको सेठ बालचंद रामचंद शोलापुरकी ओरसे सुवर्ण **पदक** इस लिये दिया गया कि कन्याके पिताके न चाहनेपर भी इसने जबतक अपना विवाह जैन पद्धतिसे नही हुआ विवाहके लिये तय्यार न हुआ, नियत महुर्त भी टाल दिया तब दूसरे महुर्तमें जैन विधिसे ही विवाह कराया (५) वैद्यराज और वैद्यरत्न कन्हैयालालजीको **सुवर्णपदक** प्रदान किया गया (६) सेठ नेमीचंद अजमेरके रायबहादुर होनेपर हर्ष प्रकाश किया गया । आगामी वर्षके कार्याध्यक्षोमे सेठ **माणिकचंद हीराचंद जे० पी० ही सभापति** रहे । उपदेशक फंडके मंत्री जौहरी ठाकुरदास भगवानदास व परीक्षालयके सेठ रावजी सखाराम शोलापुर हुए । सेठ हीराचंद नेमचंदकी सुपुत्री कंकुबाई व **श्रीमती मगनबाईने** स्त्रियोंमे जागृति की । ता० २९ की रात्रिको एक खास आम सभामें कंकुबाईजीने बहुत ही उत्तम व्याख्यान दिया ।

नासिककी पिंजरापोलके लिये चंदा हुआ, जिसमे सेठ माणिकचंदजीने १०१) प्रदान किये । प्रान्तिक सभाके लिये अपील हुई उसमें भी सेठजीने २०१) सबसे पहिले दिये । इस जल्सेमें **सूरतसे** सेठ

मूलचंद किसनदासजी कापडिया अकेले ही पहुंचे थे और सब कार्योंमे सेठ माणिकचंदजीके साथ रहकर बराबर योग देते थे। आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ सिद्धक्षेत्रपर करनेका बडौदेसे सेठ लालचंद कहानदास द्वाराआया हुआ एक पत्र पढा गया, तब सेठ रावजी भाई सखाराम (सोलापुर) ने कहा कि नहीं, आगामी अधिवेशन इहीगावमें करना चाहिये, इस पर सेठ मूलचंद किसनदास कापडियाने खडे होकर जोशीली भाषामें कहा कि हमारा गुजरात प्रांत बहुत अंधकारमें है और वहां कभी ऐसा अधिवेशन नहीं हुआ है इसलिये वहां पर ही होना चाहिये आदि, जिससे आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ तीर्थपर करना ही निश्चित हुआ।

आगरामें बोर्डिंगके लिये सेठजीका दौरा व प्रयत्न।

पहले कहा गया है कि आगरामें जैन बोर्डिंग खोलनेकी प्रेरणा सेठजी पत्रद्वारा कर रहे थे उसीके असरसे हकीमसिंह जैनी डाक्टरने उद्योग कर-के फर्वरी मासमें लोगोंको एकत्र करके जो पत्र सेठजीके लाला गोपीनाथ बजाज और बाबू देवीप्रसादजीके पास आए थे उनको पेश किये और जैन बोर्डिंगकी बडीभारी जरूरत बताई। सर्व साहबोंने बोर्डिंग होना ठीक समझ कर इसका प्रबन्ध शुरू किया, पर वह कुछ चल न सका। तब सेठजीसे पत्र द्वारा प्रार्थना की गई कि यहां २४से ३१ मार्च सने१९०७तक रथोत्सव है उसमें आप पधारें तो सब प्रबन्ध हो जाय। बार २ पत्रोंके आनसे सेठजी शीतलप्रसादजीके साथ पंजाब मेलसे रवाना होकर ता० २६ की शामको आगरा पहुंचे। लाला गोपीनाथ आदि अनेक भाई स्वागतार्थ स्टेशनपर

किन्तु हमारे हृदय अत्यन्त प्रेमसे उमड रहे है और आपकी सेवा करनेके लिये चित्त अतिशय उत्कठित हो रहा है, परन्तु आपको सन्तुष्ट करनेके लिये उपायन्त्रकी अप्राप्तिमें फूठ नहीं पखरी ही सहीकी उक्तिसे यह छोटासा सम्मेलन करके आपके पवित्र कर-कमलोंमें हृदयके उचित उल्लासको अभिनन्दनपत्रका स्वरूप देकर अर्पण करते है ।

यद्यपि आप सर्वथा समदृष्टि दयावान और सच्चे सज्जन, निज धर्महितैषी है, स्वयम् ही आपकी हमारे जैनी भाइयों तथा अन्य मतियोंपर भी बडी कृपा रहती है, तौभी हम लोग अपने हृदयकी दुर्बलतासे सदैव जैनसमाजपर केवल अधिक कृपा कटाक्ष रखनेकी प्रार्थना करते है । आशा है, कि आप हम लोगोंकी दृढतापर क्षमा करेंगे । और सविनय निवेदन है कि यह मानपत्र जो आपकी सेवामें अर्पण करते हैं इसे आप सादर सहर्ष स्वीकार करके हम लोगोंको अनुगृहीत करेंगे किमधिकम् ।

वीर सवत् २४३३ मिती
चैत्र सुदी १३ तारीख २७
मार्च सन् १९०७ ईसवी

आपके कृपाभिलाषी प्रेमी समस्त आगरा
निवासी जैन भाइयोंकी ओरसे—
दलीपसिंह
अग्रवाल जैन—उपमन्त्री ।

फिर शीतलप्रसादजीने धार्मिक शिक्षाकी महिमा बताते हुए आगरामें जैन बोर्डिङ्गकी कितनी आवश्यका है इसको दिखाते हुए जो बातचीत दिनमें कालेजके छात्रोंसे हुई थी उसका भाव कहा, जिसको सुन कर सभाके चित्त भर आए । इसका समर्थन डाक्टर दलीपसिंह अग्रवालने किया ।

उसी समय सेठजीने आगरा बोर्डिंगके लिये जमीन खरीदने-
को ४०००) देना कबूल किया, उपस्थित
आगरा बो० के लिये भाईयोंने ९ कमरोंके लिये पाच पाचसौ
४०००) का दान। रुपये स्वीकार किये। लाला गोपीनाथजीने
३ हजारका एक मकान व दो कमरे मजूर
किये। बहुतोंने मासिक चदा लिखाया व एक मुष्ट रकम भी लिखी गई। थोडी देरमें २००००) बीस हजारसे अधिकका चदा हो गया। इस जलसेमें रायबहादुर घमडीलालजी मुजफ्फरनगर भी थे। आपने भी २ कमरे बनवाना स्वीकार किये। प्रबन्धार्थ एक कमेटी बनी, जिसके मत्री राय० ब० घमडीलाल व उपमत्री डॉ० दलीपसिंह हुए। दूसरे दिन अतरग कमेटीमें नियमावली पास की गई तथा तय हुआ कि मोतीकटरेकी धर्मशालामें इसका महूर्त ता० १ अप्रैल सन्०७ को कर दिया जाय। कुछ छात्रोंने रहना स्वीकार किया था, सो सेठजीके सभापतित्वमें सवेरे मोतीकटरेमें सभा हुई। बहुत भाई पधारे थे। आचार और शिक्षापर बाबू शीतलप्रसाद और लाला लाडलीदास हेडमास्टर नार्मल स्कूलने मनोहर व्याख्यान दिये। सेठजीने बोर्डिंगका एक कमरा खोला और सभा सानन्द समाप्त हुई। उस समय सभाका फोटो भी लिया गया। सेठजीकी यह रीति थी कि पहले मामूली स्थानपर बोर्डिंग शुरू करना फिर उसके लिये मकान तय्यार कराना इसीसे यह मुहूर्त किया गया। पर जिन छात्रोंने आनेका वादा किया था वे भी न आए, इधर उत्साही दलीपसिंह आगरासे चले गए जिससे बोर्डिंगकी कार्रवाई वैसी ही रही। फिर पत्रव्यवहार होता रहा तब आगरावालोंने यही कहा कि

जब तक नया बोर्डिंग न बनेगा तब तक, कालेजके, छात्र नहीं आ सक्ते। तब सेठजीने बाबू देवीप्रसादजीको जमीन लेनेके लिये कहा। बाबूजीने हरि पर्वत थानेके पास एक बड़ीभारी जमीनका टुकड़ा करीब ३६००) में ठीक किया तब सेठजीने ४०००) भेज दिये। जमीन पक्की लेली गई पर मकान बननेका बहुत दिनों तक कोई भी यत्न न हुआ। पीछे फिर सेठजी एक दफे आगरा आए और बहुत जोर देकर मकान बननेका महुर्त कराकर चले गए। फिर भी कुछ कार्रवाई न हुई। एकदफे शीतलप्रसादजीने बहुत समझा बुझाकर कमरोंका पहले आधा रुपया वसूल करवाकर कमरे शुरू करवाए। धीरे२ आठ कमरे तय्यार हो गए, पर सेठजीके जीवन तक यह बोर्डिंग चालू नहीं हुआ था; परन्तु ता० २१ नवम्बर १६ क भैरोंसिंह जैनके पत्रसे विदित हुआ कि बोर्डिंगका काम शुरू हो गया है। आगरेमें लाला गोपीनाथ और सेठ माणिकचंदजीका संयुक्त फोटो भी लिया गया।

श्री सम्मेद शिखरपर बगले बननेका प्रस्ताव।

आगरासे लौटकर आते ही सेठजीके चित्तको महा दुःखित कर देनेवाला डिप्टी कमिश्नर हजारीबागका नोटिस ता० २६ मार्च १९०७ का मिला जिसमें लिखा था कि पहाड़पर बंगले बननेके लिये जमीन पट्टेपर देनी है इससे दिगम्बरी और श्वेताम्बरी मुखिया हमसे ५ मई सन् ०७ के अनुमान मिलें जिसमें उनके मंदिरोंको हानि न पहुचे ऐसा विचार किया जाय। यह नोटिस देखते ही सेठजी व अन्य बम्बईके जैनी भाई अचम्भित हो गए। क्योंकि सदासे ही यह पर्वत अति पवित्र

रूपमें सुरक्षित चला आता है । यह पर्वतराज है। दिगम्बर जैनियोंके मन्तव्यानुसार भरतक्षेत्रके अनते तीर्थङ्कर इसीकी भूमिसे मोक्ष गए हैं व आगामी जावेंगे तथा उनके मध्य अनते मुनि सम्पूर्ण पर्वतपर ध्यानकर मोक्ष पधारे हैं। इस वर्तमान हुंडावसर्पिणी कालमे कालदोषसे ४ तीर्थंकर अन्य स्थानोंसे मोक्ष गए है । सेठ माणिकचदजी तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री थे इसलिये इस पर्वतकी रक्षाका सम्पूर्ण बोझ इनके ऊपर आन पडा । अब रात्रिदिन सेठजी इस भारी चिन्तामे फसे । आपने कमेटीकी तरफसे इस नोटिसकी नकल एक पत्र द्वारा सर्व पंचायतियों और सभाओंमें भेजदी । तथा यह भी लिखा कि विचारवान भाई जो मिलनेको जावें अपने नाम भेजें । ठीक तारीख डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर उपरैली कोठीसे मालूम कर लेवें । इसी बीचमें **कानपुरमें** बिम्बप्रतिष्ठा थी जिनमें भा० दि० जैन **महासभाका** नैमित्तिक अधिवेशन था । १९००० जैनी एकत्र थे । इस खबरको पाते ही महासभाने सभाद्वारा प्रस्ताव करके कि हम लोग पहाडपर ऐसी बस्तीके बिल्कुल विरुद्ध है, ता० २२ अप्रैल १९०७ को तार किया और यह भी लिखा कि दो मास समय बढाया जावे । और भी पंचायतियोंसे तार व अर्जियें इसके विरुद्ध भेजी गईं ।

यहांसे सेठजी ता० १ अप्रैलको चल **अजमेर** आए । राय बहादुर **सेठ नेमीचंदजीने** स्टेशन पर भली प्रकार स्वागत किया । दिन भर यहां ठहरे । सुवर्णकी अयोध्या, कैलाश आदि ऋषभदेवके पंचकल्याणककी रचना देखी । फिर सेठजीने शीतलप्रसादजीके

सेठजीका दौरा अजमेर, उदयपुर, केशरीयाजी।

साथ मेयो कालेज, दयानंद अनाथालय, हिंदू औषधालय तथा जैन औषधालय देखा । दयानंद अनाथालयमें ६३ कन्या व १३० बालक देखे। इनको कपडा बुनना सोना, दरी व निमार बनाना, कुर्सी टेबुल बनाना व रंगना आदि सिखाया जाता है । यहा कपडेके जुते अच्छे बनते हैं जो १।)में आते हे । दयानंद प्रेस व हाईस्कूल भी है । तैयार अनाथ इनमें काम सीखते या पढते है । रात्रिको श्री जिन मदिरजीमें सभा हुई । प० नरसिंहदासजीने मगलाचरण किया तब शीतलप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण दिया । सेठजीने १०) जैन व १०) हिंदू औषधालयको दिये । ता० २ को चलकर ता० ३ अप्रेलको **उदयपुर** आए । यहा ५ तक ठहरे । स्टेशनपर जैनियोंने बडी धूमधामसे स्वागत किया । प्रतिदिन खडेलवालोंके मदिरजीमें शीतलप्रसादजीके व्याख्यान होते थे ।

उदयपुर पाठशाला-को ६०००)

यहा सेठजीकी भावज रूपाबाईजीने दो वर्पसे एक जैन पाठशाला खुलवा दी थी, जिनका कुल खर्च बम्बईसे भिजवाती थीं । पाठशालाकी सेठजीने परीक्षा लिवाई । काम ठीक देखकर ता० ३ की सभामे सेठजीने सबको जाहर किया कि रूपाबाईजी प्रेमचन्दके स्मरणार्थ इस पाठशालाके लिये ६०००) प्रदान करती है। अब इसके व्याजसे इसका खर्च चलेगा। रुपया हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंगकी ट्रस्ट कमेटीके आधीन रहेगा तथा पाठशालाका नाम **"सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन पाठशाला उदयपुर"** रहेगा । सर्वने सानन्द स्वीकार किया । सेठजीकी रायसे पाठशालाका स्थान

बदला गया व इस नामका पाटिया लगाया गया। प्रबन्धार्थ १३ महाशयोंकी १ कमेटी बना दी। सभापति जवारमल मूलचन्दके मुनीम शाह छोगालाल, मंत्री कालूराम और रंगलालजी नियत हुए। तथा एक जैनधर्मवर्धिनी सभा कायम कराई जो प्रति चौदसको हुआ करे। यहां छह जातियोंके २५९ घर व ४ दि० जैन मंदिर और २ नसिया है।

यहांसे चलकर ता० ६ को टांगोंके द्वारा ३० मीलपर एक **परसाद** गांवमें आए। यहां ४० घर दि० जैनी थे। १ जैन मंदिर है। शिखर गिर पड़ा था सो फिरसे बन रहा है। मुखिया गौतमचंद बालचंद हैं। सेठजीने सबको जमाकर उपदेश देकर पाठशाला खुलवाने पर राजी किया तथा ५) मासिक मदद देना कबूल की।

ता० ७को सबेरे चलकर **धुलेव** गांव पोष्ट रिखभदेव आए। यहां १०० घर दि० जैनियोंके हैं। मुख्य सेठ बच्छराज उगनलाल हैं। गांवमें ब्राह्मण गोटी यात्रियोंको अपने घर पर ठहरा लेते हैं। सेठजी हेमचंद गौतमचंद गोटीके घरपर ठहरे और ता० ८ की दोपहर तक रहे। यहां पर श्री **ऋषभदेवजी**का एक किलेके समान मंदिर है जिसमें ६–७ फुट ऊंची पद्मासन श्याम वर्ण श्री ऋषभदेवकी दि० जैन मूर्ति चतुर्थ कालकी है। इसके चारों ओर एक धातु पटमें अन्य दिगम्बर मूर्तियां अंकित हैं। इस मध्य मूर्तिका सबेरे जल और दूधसे न्हवन होता है फिर केशर चढ़ाते हैं व पुष्पोंसे प्राय ढक देते हैं। ७ से १२ तक दर्शन ठीक नहीं होता। पीछे सर्व अंगको शुद्ध करते हैं और केशर छुड़ानी पड़ती है जिससे चरणकी अंगुलियां घिस गई हैं। १ बजेके अनुमान फिर

जल और दूध चढता है। पीछे सुवर्ण व रत्नोंकी आगी व मुकुट पहनाया जाता है, पुष्पादि चढाए जाते हैं। रात्रिको आगी उतार कर सारे अंगमें गुलाल उडाते हैं। आगीका चढाना सं० १७०२ से शुरू हुआ ऐसा यहाके श्रावकोंसे मालूम हुआ। दिगम्बर जैन यात्री प्रतिमाजीके अभिषेक समय दर्शन व पूजा करते हैं। यहा चारों तरफ मंदिरोंमें दि० जैन बिम्ब हैं जिनके प्रतिष्ठाकारक मूलसंघी व काष्ठासंघी भट्टारक हैं। यद्यपि यह सर्व मंदिर दिगम्बर जैनियोंके लक्षोंके व्ययसे बने हैं पर अब इन सर्वका प्रबन्धका अधिकार उदयपुर राजाके आधीन ८ मेम्बरोंकी एक कमेटी करती है जिसमें उस समय २ वैष्णव व ६ श्वेताम्बर जैनी मेम्बर थे, दि० कोई नहीं था। मुख्य मेम्बर म्हेता मनोरसिंहजी, मगनलाल पूजावत, महेता बखतसिंह हाकिम हैं। एक ही वेदीमे एक ओर श्वेताम्बरी दूसरी ओर दिग० पूजन होती है। गाव धविडासे धुलेव तक २ मीलका रास्ता बहुत खराब है। सेठजीने बडे भावसे दर्शन किये तथा देखा कि यहा केवल एक हिन्दी मदरसा है जिसमे २ अध्यापक है, अधिकाश दि० जैन छात्र है पर धर्म शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं है। सेठजीने वहाके लोगोंको बुलाकर समझाया कि जैन पाठशालाका प्रबन्ध करें, उन्हें मासिक सहायता भी दी जायगी। पत्रव्यवहारका पता उगनलाल मेहता दुकान सेठ धनराज रतनचद पोष्ट रिखभदेव जिला मेवाड लिखलिया। यहा ईडरके पचोंकी बनवाई हुई एक बडी **धर्मशाला** है जिसमें ठहरनेका आराम है। दिगम्बर यात्री बहुत आते हैं। यहांसे चलकर **परसाद** गांवमें फिर आए। पाठशालाके लिये उत्तेजन करके

१०) नकद दो मासके लिये दिये। फिर **उदयपुर** आए। तालावके बीचमें राजा साहबका शिव महल देखा, जिसमें काचकी नकासीका काम अति प्रशसनीय है। यहा चितेरा पन्नालाल वल्द गोपाल मेवाडा सुतार कानीकी हाटमें रहता है उसीके हाथका यह काम है। यहाके पहाडोंमे सगमर्मर पाषाणकी खान है। यहा चक्रियों द्वारा पत्थरका सिमट पिसवाकर राजा साहबके काममें आता है। यह बहुत उत्तम होता है। यदि मशीनमे तय्यार हो तो वह बहुत लाभदायक हो जावे। रात्रिको सभामे बालविवाह कन्याविक्रय आदि पर भाषण हुए। शीतलप्रसादजी और सेठजी दोनोंने बहुत जोर दिया। कई भाइयोंने कन्याका **विवाह १२ वर्षसे कममें न करनेका प्रण लिया**। औरोंने स्वाध्यायादिके नियम लिये। सेठजी यहा हाकिम वखतसिंहजीसे मिले और कहा कि धुलेव मदिरकी प्रबन्धकारिणी कमेटीमे दिगम्बर जैनी भी मेम्बर होना चाहिये तथा सेठजीने प्रार्थना की कि दो मीलकी सडक ठीक करा दी जावे। उक्त महाशयने कमेटी द्वारा विचार करना स्वीकार किया।

रतलाम बोर्डिङ्गकी फिक्र।

यहासे सेठजी **रतलाम** आए और यहाके लोगोंसे मिले व स्कूल आदि देखे। सेठ पानाचदजीकी इच्छा **बागडके हूमड** जातिके बालकोंको शिक्षा प्रदान करनेकी थी। रतलामसे बागड करीब है इससे सेठजी रतलाममें एक बोर्डिंग खोलना चाहते थे। १ दिन ठहरकर सुरत आए।

अब तक फुलकौर कन्याशाला नहीं खुली थी। सेठजीने तुर्त एक मकान नवापुरामें ढूंटा और एक वृद्ध शिक्षकको तलाश किया

जो सर्कारी कन्याशालामें पढा चुका था तथा मईमें महूर्त किया जाय ऐसा निश्चय कर आप बम्बई आ गए।

फल्टनमें बिम्ब प्रतिष्ठा और मानपत्र।

इतने ही में फलटन स्थानमें मिती चैत्र सुदी ९से बिम्ब प्रतिष्ठा थी तथा बम्बई प्रान्तिक सभा और दक्षिण महा० जैनसभाका नैमित्तिक अधिवेशन था। सभापति सेठ हीराचद नेमचदजी नियत हुए थे। यह सेठजीके मित्र थे तथा सेठजी दोनों सभाओंके सभापति थे इसके सिवाय भी फल्टनसे खास सम्बन्ध था इसलिये सेठजी फल्टन जानेका विचार करने लगे। यह प्रतिष्ठा सेठ वस्ताराम पूनारामकी ओरसे हुई थी जो मरते समय १००००) पचोंके आधीन कर गए थे। सभाका अधिवेशन चैत्र सुदी ११ से शुरू हो गया था, पर श्रीमान् सेठजी चैत्र सुदी १२को शीतलप्रसादजीके साथ पहुचे। आपके स्वागतार्थ वस्तीके बाहर सैकडो जैनी पहुच गए थे। मुख्य २ भाई मिले फिर फल्टनवालोंने फूलोंकी माला गलेमे डाली। सेठजी सेठ हीराचंद नेमचदके साथ गाडीमें बैठे। दि० जैन प्रान्तिक और द० म० जैन सभाके वालन्टियरोंने घोडोंको गाडीसे हटाकर स्वय गाडी खीचना शुरू किया। सेठजीको यह बात पसद न आई। आप गाडीसे उतरने लगे तब वालन्टियरोंने उतरने न दिया और गाडीको स्वय खींचते हुए धीरे २ बैड बाजेके साथ ५०० से ऊपर भीडके मध्यमें सभामडपमें लाए। उच्चासनपर बिराजमान कराके स्वागतकारिणी सभाके सभापति सेठ रामचद हेमचद म्हसवडने स्वागतका भाषण किया जिसका समर्थन बलवत बाबाजी बुक्टे सम्पादक "जिनविजय" ने किया और कहा कि आज आपने जिस व्यक्तिका इतना आदर किया

है उसका क्या क़ारण है ? आप लोग विचारते होंगे सो इस सभ्य मूर्त्तिके सन्मानमें इसका विद्यानुराग ही कारण है। आपने सबसे अधिक द्रव्य विद्या हीके लिये अर्पण किया है। जैनियोंमें अनेक आपसे भी धनाढ्य पडे हुए हैं परतु परोपकारी और शिरोमणि आप ही है। सभाके अधिवेशन ता० २७ अप्रैल तक हुए। जन संख्या २००० से अधिक थी। ता० २६ अप्रैलको शीतलप्रसादने श्री शिखरजीके दु खको कहकर प्रस्ताव किया कि सभाकी ओरसे बगले बननेके विरुद्ध तार जाना चाहिये। इसका समर्थन स्वय सेठजीने किया और कहा कि अपने पूज्य महापर्वतकी सर्वस्व भूमिको रक्षित रखना हमारे भाइयोंका कर्तव्य है। प्रस्ताव पास होकर दोनों सभाओंकी ओरसे तार दिया गया। सभामे चदेकी अपील होनेपर सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटीको २०१), सयुक्त सभाको ९१) तथा पीजरापोल फल्टनको ५१) इस तरह ३०३) का दान किया, तथा सेठ हीराचदने भी १०२) सयुक्त सभा व ११) पिंजरापोलको दिये। कोल्हापुर सर्कारने बन्दर मारनेकी मनाईका हुक्म जारी किया इससे धन्यवाद दिया गया। श्रीयुत नारायण गोविंद कीचक मुंसिफ साहबके सभापतित्वमें सेठजी और सेठ हीराचद नेमचदको **मान-पत्र** दिये गए। वास्तवमें इस समय ये ही दोनों वीर जैन समाजका अविद्यारूपी राक्षसकी सेनाको हटानेके लिये **रामलक्ष्मणकी तरह उद्योगशील** हो रहे थे अथवा सारे भारतकी जैन समाजमें चद्र और सूर्यकी भाति प्रकाशमान थे। रात्रिदिन परोपकारतामें तनमन धन व्यय करना इन वीरोंका कर्तव्य था। इस उत्सवमें श्रीमती मगनबाई तथा ककुबाईने स्त्रियोंमें उपदेश देकर ज्ञानमार्गकी

वृद्धि की। ता० २७ अप्रैलको एक महिला परिषद बड़ी धूमधामसे हुई। अध्यक्षस्थान श्रीमती ककुबाईने ग्रहण किया था। कई स्त्रियोंके भाषण हुए। ९०० भाषाप्रवेशकी पुस्तकें बाटी गई। स्त्री शिक्षार्थ कुछ चंदा भी हुआ। फल्टनमें एक धनाढ्य कुटुम्बके भ्राताओंमें जायदाद सम्बन्धी कुछ फूट पडी हुई थी। सेठजी और हीराचन्दजीने दो दिन परिश्रम कर इस फूटको मेटकर ऐसा उम्दा **फैसला** कर दिया जिससे सर्वको समाधानी हुई। जष्टिश आफ दी पीसकी उपाधिको सार्थक किया।

बम्बईमें सभा और सेठजी सभापति।

फल्टनसे लौटकर सेठजी बम्बई आए ही थे कि सर्व दिगम्बर जैन सघकी एक सभा ता० ६ मई १९०७ की सोमवारकी रात्रिको दूसरे भोईवाडेके मंदिरजीमे हुई। सेठजीको ही सभापतिका आसन ग्रहण कराया गया। पडित धन्नालालजीने पर्वतराज श्री शिखरजीपर आनेवाले उपसर्गकी बात सविस्तर सुनाई तथा प्रस्ताव किया कि डिप्टी कमिश्नरको तार किया जावे व यहासे ९ महाशय ता० २९ मईके लिये जावें। मि० मालगावे आदिने पुष्टि की। सर्व सम्मतिसे नीचा लिखा तार भेजा गया—

"Digambar Jain Community of Bombay protest against granting building leases to Europeans etc on Parasnath Hill as it will cause extreme dissatisfaction to the entire Jain society The whole hill being sacred nothing should be done there to hurt the religious feelings of the Jains, as carrying of flesh, wine and

other forbidden things on the hill is totally against Jain views, hence such proposal should entirely be dropped "

भावार्थ–बम्बईका दि० जैन संघ पहाडपर मकानोंके लिये युरुपियन आदिको पट्टे जमीन देनेके विरुद्ध है, क्योंकि इससे सर्व जैन जातिको महान असंतोष होगा। पूर्ण पर्वत पवित्र है। मास मदिरा व अन्य निषेध पदार्थ पर्वतपर ले जाना जैनधर्मसे विरुद्ध है, कोई काम जैनियोंके परिणामोंको दुःखी करनेवाला न होना चाहिये इससे इस विचारको बिल्कुल छोड देना चाहिये। यह सभामें प्रगट हुआ कि डिप्टी कमिश्नरके पास चारों ओरसे तार व अर्जियोंकी वर्षा हो रही है। कलकत्ता, शोलापुर, सूरत, भावनगर, अहमदाबाद, इन्दौर, मद्रास आदि प्रसिद्ध २ स्थानोंसे तार पहुंच गए हैं।

डिप्टी कमिश्नरका दूसरा नोटिस।

इतनेहीमें डिप्टी कमिश्नर हजारीबागका दूसरा नोटिस ता० २९ अप्रैल १९०७का आया कि हम ऐसी कोई बात नहीं कर सक्ते जिससे पर्वतके मालिक-को हानि पहुंचे। जैनियोंका सिवाय मंदिरोंके पर्वतपर कोई हक नहीं है। यदि अधिक हक मांगा जायगा तो पट्टे देते हुए कोई भी शर्त जैनियोंके लाभकी नहीं रख सकेंगे। यदि अदालती कार्रवाई न हो तो डि० क० पर्वतपर जैनियोंकी पूजामें हानि न पहुंचे इस बातका पट्टा देते समय स्मरण रखनेकी आशा कर सक्ते है। इस नोटिसको पढकर सेठजी व अन्य भाई बहुत ही हताश हुए। कमेटीके महामंत्रीकी तरफसे ता० १० मईकी दस्तखती सूचना जैनमित्र ता० १४ मई १९०७ में प्रगट

की जिसमें यह भी बताया कि कलकत्तेके अटार्नी बाबू धन्नू लालने डिप्टी कमिश्नर साहबसे मिलकर समझाना स्वीकार किया है। अन्य जैनी वकील भी ता० २९ को पहुचे तथा सर्व भाई तन मन धनसे सहायता करनेको तयार हो जावें।

मई मासहीमें सेठजीके भ्राता सेठ नवलचदके सुपुत्र ताराचदका,
विवाह सूरतमे शाह किसनदास अमीचदकी
सेठ नवलचदके पुत्र पुत्री मानकौरसे बडी धूमधामसे हुआ। हाथी
ताराचदका विवाह। पर .बरातका वरघोडा निकला था। प०
फल्टनसे लौटकर सेठजी बम्बा शास्त्रीने जन पद्धतिसे विवाह
जैन संघकी (सूरत गया था। जातिक बडे

बम्बईमें सभा और की सोमवारकं
सेठजी सभापति। मदिरजीमें हुई ०७ को चदावाडीमे मरेर ९
आसन ग्रहण नाई देवकरणके प्रपौत्र सेठ
लालजीने पर्वतराज श्री शिखरजीपर आ लापुरनिवासीक सभापतित्वम

बहुत आवश्यक्ता बताई। उसी समय दातारोंने ९८४) का दान किया, जिसमें सेठ नवलचंदने अपने पुत्रके विवाहोत्सवमें २५०) व सेठ माणिकचंदजीने श्रीमती मगनबाईके नामसे १२५), छोटी पुत्री ताराबाईके नामसे १२५), व फूलकौरकी माताके नामसे १२५) इस तरह ३७५) दान किये। फिर सर्व भाई कुंभ कलश लेकर नवापुरा आए। शालाके मकानमें सरस्वती पूजन होकर २५ कन्याएं भरती हुईं जिनको णमोकार मंत्रके साथ२ पाठारम्भ कराया गया।

डिप्टी कमिश्नरकी मुलाकात।

ता० २५ मईको मधुवनमें सवेरे ७ बजे हजारीबागके डि० क० मि० फेरी साहबसे जैनी लोग मिले। कलकत्तेसे बाबू धन्नूलाल आदि, बम्बईसे लाला प्रभुदयाल, पानाचंद रामचंद आदि, फीरोजपुरसे लाला देवीसहाय, जैपुरसे सेठ सर्वसुखदास आदि व श्वे० लोग राय बद्रीदास आदि एक साथ मिले। जैनियोंने बहुत कुछ समझाया पर साहबने यही कहा कि बंगले बनना निश्चित हो गया है। मंदिरोंके पास थोडी २ जगह छोड़ दी जायगी। आपलोग कल पहाडपर सवेरे मिलें। वहां बाबू धन्नूलाल आदि-८ महाशय पहुंचे। साहबने टोंकोंके कुछ पास ही

सेठजी इन्दौरमें।

सभामें सेठ हुकमचंदजी ईन्दौरसे नहीं आए थे, तब सेठजी इन्दौर गए। वहा रात्रिको बडे मदिरजीमें सभा हुई। शीतलप्रसादजीने सर्व हकीकत सुनाई, तब सेठ हुकमचदजीने सर्वसे सम्मति करके तुर्त २९०००) का चदा इन्दौर पचायतीका कर दिया। यहासे सेठजी बम्बई लौटे। पत्रद्वारा चदेका उद्योग किया, तब शोलापुर पचानने २५०००) व जैपूर पचानने २१०००) के चदेकी स्वीकारता भेजी। इसी तरह सेठजीके बार बार पत्रव्यवहारसे बडी रकमें और भी स्वीकृत हुई जैसे—

९९२०) पचान जिला बिजनौर मा० साहु सलेखचद जुगमंदरलाल, नजीबाबाद
९०००) पचान गया
२९४१) ,, मऊ छावनी
२१००) राजा ज्ञानचंद, सिकन्द्राबाद
२०१९।-) पचान, नसीराबाद
२०००) ,, देहरादून
१५००) श्रीमन सेठ पूरनसाह, सिवनी
११००) पचान, बडनगर
११०५) ,, ललितपुर
१०७३) ,, नीमाड प्रात
१०७१) ,, पढरपुर
१०३१) ,, अलवर
१००१) रा० रा० हरधर धरणप्पा, रायचूर

१००१) राजा फूलचंद, लश्कर
१०००) पनाज, बनारस
१२००) ,, माडरा (गुजरात)
२०००) ,, पामपाडा, जिला उदेपुर
२५००) ,, ईडर
२०००) मित्रसेन जम्बूप्रसाद सहारनपुर
२१००) चन्द्रीदास दरबारीलाल इन्द्राराम कं० अम्बाला

सेठजीके उद्योगसे रूपयेका चंदा २ लाखका चंदा। १०–१५ दिनके भीतर सेठ माणिकचन्दने अपनी दानवीरता व उदारताके असरसे करीब **दो लाख** कर लिया। जो स्वय दान करता है वह दूसरोंसे भी दान करा सक्ता है। सेठजीके वचनोंको उल्लंघन करना सहज बात नहीं थी। जिससे जो कहते वह मान लेता था। सेठजी बडे न्याय चित्त, विचारवान, गंभीर, सहनशील, परिश्रमी तथा धर्म व जातिकी सेवार्थ अपने तनको विदेश भ्रमण आदिके अनेक कष्ट देकर भी न्योछावर करनेवाले थे। यह इन्हींकी दम थी जो बातकी बातमें इतना भारी चन्दा हो गया। वृद्ध लोग कहते हैं कि जहा तक हमारा होश है इतना भारी चदा कभी नहीं हुआ था।

बड़े लाटका पत्र। जो तार तीर्थक्षेत्र कमेटीने ता १८ जूनको बडे लाट साहबकी सेवामें भेजा था उसका जवाब जी बी एच फेल डिपुटी सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट आफ इन्डियाने अपने पत्र नं० १७४९ ता. १६ जुलाई १९०७ को सेठजीके पास इस आशयका भेजा कि " छोटे

सेठजी मधुवनमें तीर्थरक्षामें अनुरक्त थे कि ता० २६ को तार पाया कि सेठ चुन्नीलालका देहान्त हुआ । सुनते ही आपको यकायक मूर्छा आ गई । जैसे किसीका दाहना हाथ टूटनेसे दु ख होता है ऐसा दु ख सेठजीको हुआ । थोडी देरमे सचेत हुए, फिर भी शोकमें बैठ गए । आखोंसे आसुओंकी धारा बहने लगी । सेठजीको यह शोक इस कारणसे नही हुआ था कि वह इनके भानजे थे, पर शोकका कारण यह था कि तीर्थोंकी रक्षामे व बम्बई प्रान्तिकसभाके कामोंमें जो अपूर्व सहायता प्राप्त होती थी वह बद हो गई। शीतलप्रसादजी पासमे ही थे । सेठजीको अनेक दृष्टात देकर ससार-की असारता व शरीरकी क्षणभगुरता समझाई तथा तीर्थभक्तिमें निश्चल ठट रहनेकी प्रेरणा की । सेठजी स्वय भी विचारशील थे। अन्तर्मुहूर्त ही क्लेशित परिणामी रहे फिर तुर्त सचेत होकर अपने उसी तीर्थभक्तिके काममे लग गए । किसीसे उस बातका वर्णन न किया, न कोई जान ही सका ।

सेठजीको चुन्नीलाल-की मृत्युकी खबर ।

शिखरजीमे ता० २६ को बीसपथी कोठीमें दिनके एक सभा **लाला सुलतानसिंह** दिहलीके सभापतित्वमें हुई जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीद्वारा तयार किया हुआ मेमोरियल शीतलप्रसाद-जीने सुनाकर मजूर कराया और मेम्बरोंके दस्तखतसे पहाडपर लाट साहबके पास दूसरे दिन भेजा गया। फिर लाट साहबसे मिलनेके लिये प्रतिनिधियोंकी एक नामा-

शिखरजीपर लोर्ड फ्रेज़रका आना ।

वली लिखी गई। रात्रिको भी मंदिरजीमें सभा हुई। कुल नाम ६९ चुने गए। ता० २७ को सवेरे लाट साहब आए। दिगम्बरी मंदिरजी व धर्मशालाका निरीक्षण कर पर्वतपर एक बंगलेमें गए तथा ता० २८ को सवेरे प्रतिनिधियोंको मिलना था। लाट साहबने थोडे ही आदमी बुलाये थे तब ६५ मेंसे २८ नाम छांटे गए। सवेरा होते ही कोई डोलीपर कोई डोली न मिलनेसे पैदल रवाना हो गए। राय ब० रूपडीलाल, लाला ज्ञानचंद, सेठ हुकमचंद, बाबू धन्नूलाल अटार्नी, राय० ब० नत्थीलाल, लाला रामलाल आदि १९ दिग० ठीक समय पर पहुंचे उनको लेकर लाट साहब पार्श्वनाथस्वामीकी टोंकसे कुंथुनाथस्वामीकी टोंक तक आए फिर सीतानाले तक आए। श्वेताम्बरियोंको भी बुलाया था पर इनमेंसे कोई न पहुंच सका। उस दिन सर्व ही दि० यात्री धोए हुए धोती दुपट्टे पहनकर पूजाकी सामग्री लेकर पहाड पर वन्दनार्थ गए थे। लाला साहबके दिलमें चारों ओर नग्न सिर यात्रियोंको पूजा करते देखनेसे बडा भारी प्रभाव पडा। बहुतोंसे लाट साहबने बात भी की। इसदिन बहुतसे यात्रियोंने उपवास किया। सेठजी पैरमें चोट होने व डोली न मिलनेसे पर्वतपर न जासके। जैनियोंने अच्छी तरह पर्वतकी पवित्रता समझाई। लाट साहब २ बजे बंगलेपर लौटे तब राय बद्रीदास आदि ७-८ श्वे० व कुछ दिगम्बरी मिले। इस अवसर पर श्वेताम्बरी करीब १०० क ही कुल आए थे जब कि दिगम्बरी २५०० के करीब जमा हुए थे। इस समय कोई बात नहीं की। ता० २९ को सवेरे लाट साहब नीचे उतरे। तथा दिगम्बरी मंदिरमें कपड़ेके जूते पहनकर गए। यहांपर श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरसे मिले। उन्होंने

एल० सी० ई० आदि आए थे । और सूरतसे मूलचन्द किसनदास कापडिया भी आए थे । प्रोफेसर आनन्दशङ्कर बापूभाई ध्रुव एम० ए० एलएल० बी० के प्रमुखत्वमें जलसा हुआ । गुजरात विभागसे ४०० गृहस्थ आए थे । प्रमुख साहब व चीनूभाई माधोभाई सी० आई० ई० ने विद्यार्थियोंको बहुत बोधदायक उपदेश दिया । बोर्डिंगके सहायतार्थ ११००) के अनुमान द्रव्य आया । इस समय छात्र २५ थे ।

" दिगंबर जैन " मासिकके लिये प्रयत्न ।

सेठजीने रात्रिको आमोदवाले हरजीवन रायचंदको 'दिगम्बर जैन' पत्र न निकालनेके कारण बहुत कुछ कहा तब हरजीवनजीने बिल्कुल इनकार कर दिया । सेठजी उदास हो गए और विचारने लगे कि किसको सम्पादक किया जाय । इतनेमें शीतलप्रसादजीने सूरतनिवासी **मूलचद किसनदास** कापडियाकी तरफ इशारा करके कहा कि यह नवयुवक उत्साही, धर्मप्रेमी व कुछ शास्त्रका ज्ञाता मालूम होता है, उसे ही सम्पादक बनाना चाहिये ।

मूलचन्द किसनदास कापड़ियाको संपादक होनेकी सेठजीकी सूचना।

पहले तो सेठजीके ध्यानमें यह बात नहीं आई चुप हो रहे, तब शीतलप्रसादजीने अपने अनुभवसे कहा कि यह उत्साही है । यदि उद्योग करेंगे तो अवश्य पत्रको चला लेंगे । तब सेठजीने मूलचन्दजीको **सम्पादक** होनेको कहा, सुनते ही मूलचदजी चौंक पडे और बोले कि मैंने आजतक कभी एक लेख भी नहीं लिखा है । मुझे इसका अनुभव बिल्कुल नहीं है । मैं व्यापारमें

फसा हूं। मैं पत्रकी सम्पादकी कैसे कर सकूंगा ? तब सेठजीने समझाया कि तुम साहस करो तथा हरजीवन रायचंदजी सहायता करेंगे। छोटेलाल अंकलेश्वरने भी लेखादिसे मदद देनेका वादा किया फिर भी मूलचंदजीने इनकार किया तब शीतलप्रसादजीने कहा कि साहस करो मासिकपत्र चलाना कोई बात नहीं है हमने तो साप्ताहिक पत्रको लौकिक बहुतसा काम करते हुए भी चलाया है। बारबार कहनेसे मूलचंदजीकी अंतरंग ज्ञानशक्तिने गवाही दी कि तू कर सकेगा। मूलचंदजीने उस समय वचनसे इस बातको स्वीकार कर कहा कि मैं सूरत जाकर इसके लिये यथाशक्ति प्रयास करूंगा। शीतलप्रसादजीने पीठ ठोकी। आज उसी मूलचंदजीने इस **दिगम्बर जैन** पत्रको इस सभाके पीछे ही कार्तिक मार्गशीर्षका सम्मिलित अंक निकालकर व बराबर उन्नत रूप व एक समान समय पर प्रगट करते रहकर इस सीमाको पहुंचा दिया है कि दिगम्बर जैन समाजके सर्व पत्रोंके ग्राहकोंसे अधिक ग्राहक इस पत्रके हैं अर्थात् अनुमान २००० हैं और इसे साधारण सर्व ही दशाके जैनी भी रुचिसे लेते हैं। हिन्दी भाषी देशमें भी इसका अच्छा प्रचार है। प्रति वर्ष खास अंक अनेक विद्वानोंके उत्तमोत्तम लेख व अनेक चित्र सहित १५० व २०० सफोंका निकालकर अच्छा सन्मान प्राप्त किया है। जैनियोंके और पत्र हरवर्ष जब घाटा सहन करते हैं तब यह पत्र ही नफा करके उसे धर्मद्रव्य समझ उसे पत्रकी विशेष उन्नति व उपहारकी पुस्तकोंके देनेमें लगाता है। इस बोर्डिंगमें चैत्यालय शुरूसे ही था। यह सेठजीका कायदा रहा है कि जितने छात्र बोर्डिंगमें रहें वे दर्शन अवश्य करें। यदि मंदिरजी निकट

नहीं है तो चैत्यालय अवश्य होना चाहिये। इसी भावसे बम्बई वोर्डिंग व कोल्हापुर बोर्डिंगमें चैत्यालय था वैसा ही यहा हुआ था। इसकी शोभा माता रूपाबाईके द्वारा दिनपर दिन बढती थी। इस वर्ष माताने चादीका छत्र, कटोरी व जर्मन सिलवरका कलम भेट किया था।

दि० श्वे० की फूट मेटनेको तारगाजी की यात्रा।

सेठजी यहासे लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द और शीतलप्रसादजीको लेकर श्री **तारंगाजी** सिद्धक्षेत्र रवाना हुए। साथमे बम्बईके श्वे० भाई रायचन्द लल्लुभाई भी थे। यहा आनेका यह कारण था कि तारगाजीपर एक कुड है जिसकी मोहरीसे दि० श्वे० दोनों पानी लेते हैं। उस मोहरीको दि० कोठीके आदमी मरम्मत कराना चाहते थे। श्वे० के आदमियोंने झगडा करके रोका। फरियाद पुलिसतक गई। इसीको परस्पर निबटानेके लिये आना हुआ था। ता २१ अक्टूबर ०७ को गुजरातके वडनगर स्टेशनपर आए। वहा श्वे० सेठ फतहचन्द साकलचन्दजी अनेक भाइयोंके साथ स्टेशनपर मिलने आए थे। उस दिन उन्हीके यहा ठहरे। उन्होंने ही कच्ची रसोई बनवाई थी जिसको श्वे० व दि० भाइयोंने बैठकर एक साथ खाई थी। यहासे मील गाडीपर ५। वहा

शोलापुरके सेठका बनवाया हुआ है इसीके आसपास ४ वेदिया है। श्वे० का एक बडा मंदिर ३० लाखकी लागतका कहा जाता है। सेठजीकी खबर पाकर सेठ पूनमचंद साकलचंद आदि महाशय ईडरके व सुदासण, दाता, माटवास, खेरालु आदिके दि० जैनी व कई श्वे० जैनी भी आए थे। ता २२ की रात्रिको दोनों सम्प्रदायवालोंकी कमेटी होकर यह तय हुआ कि यह तीर्थ दोनोंका है। जिस आदमीने दि० को रोका उसने भूलकी। वह नौकरीसे अलग किया गया तथा दि० कोठीवाले बगिचेके भीतरके रास्तेसे भी कुंडका पानी ले सकते है। दि० व श्वे० दोनों ही यात्रियोंके आरामके लिये अपने २ प्रबन्धक कार्यको कर सकते हैं, कोई किसीके काममें बाधा न डाले।

मुनीम द्वारा यह मालूम हुआ कि कोट शिलापर दो दिगम्बरी देहरियोंको मरम्मत करनेमें श्वताम्बरी रोकते है तब ताः २२ को सबेरे दि० श्वे० भाई सेठजीके साथ ऊपर गए। सेठजीका पैर एक अशक्त था तौभी आप बडे साहसके साथ लकडीके पहाडपर चढे चले गए। यह १ मील ऊंची है। १ देहरी दिगम्बरी देहरी मिली जिसको चांद सूरजकी देहरी हैं उसके भीतर ही यह लेख था—

"संवत् १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्री मूलसंघे गच्छे बलात्कारगणे आचार्य कुन्दकुन्दान्वय भट्टारक श्री स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरुपदेशात् हूमड गाधी नरपति भार्या .... "

इसी देहरीकी मरम्मतमें श्वे० रोकते थे सो यह दि०

नही है तो चैत्यालय अवश्य होना चाहिये। इसी भावसे बम्बई वोर्डिग व कोल्हापुर बोर्डिगमें चैत्यालय था वैसा ही यहा हुआ था। इसकी शोभा माता रूपाबाईके द्वारा दिनपर दिन बढती थी। इस वर्ष माताने चादीका छत्र, कटोरी व जर्मन सिलवरका कलस भेट किया था।

दि० श्वे० की फूट मेटनेको तारगाजी की यात्रा ।

सेठजी यहासे लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द और शीतलप्रसादजी-को लेकर श्री **तारंगाजी** सिद्धक्षेत्र रवाना हुए। साथमे बम्बईके श्वे० भाई रायचन्द लल्लुभाई भी थे। यहा आनेका यह कारण था कि तारगाजीपर एक कुड है जिसकी मोहरीसे दि० श्वे० दोनों पानी लेते है। उस मोहरीको दि० कोठीके आदमी मरम्मत कराना चाहते थे। श्वे० के आदमियोंने झगडा करके रोका। फरियाद पुलिसतक गइ। इसीको परस्पर निवटानेके लिये आना हुआ था। ता २१ अक्टूबर ०७ को गुजरातके बडनगर स्टेशनपर आए। वहा श्वे० सेठ फतहचन्द साकलचन्दजी अनेक भाइयोंके साथ स्टेशनपर मिलने आए थे। उस दिन उन्हीके यहा ठहरे। उन्होंने ही कच्ची रसोई .. थी जिसको श्वे० व दि० भाइयोंने अलग २ बैठकर एक खाई थी। यहासे ११ मील गाडीपर तलहटी आए। वहा .. आश्रय स्थान नही था। पहाडपर १ मील चढनेसे कोठी व ... आती है यहा दि० के २ मदिर है। एक बहुत प्राचीन है ... मूलनायक **श्री संभवनाथ स्वामी**की बहुत मनोज्ञ .. रहित प्रतिमा है। दूसरा मदिर भी आदिनाथ स्वामीका

शोलापुरके सेठका बनवाया हुआ है इसीके आसपास ४ वेदिया है। श्वे० का एक बड़ा मदिर २० लाखकी लागतका कहा जाता है। सेठजीकी खबर पाकर सेठ पूनमचद मानकचद आदि महाशय ईडरके व सुदासण, दाता, माटवाम, खेरालु आदिके दि० जैनी व कई श्वे० जैनी भी आए थे। ता॰ २२ की रात्रिको दोनों सम्प्रदायवालोंकी कमेटी होकर यह तय हुआ कि यह तीर्थ दोनोंका है। जिस आदमीने दि० को रोका उसने भूलकी। वह नौकरीसे अलग किया गया तथा दि० कोठीवाले बगिचेके भीतरके रास्तेमे भी कुइका पानी ले सकते है। दि० व श्वे० दोनों ही यात्रियोंके आरामके लिये अपने २ प्रबन्धक कार्यको कर सकते है, कोई किसीके काममें बाधा न डाले।

मुनीम द्वारा यह मालूम हुआ कि कोट शिलापर दो दिगबरी देहरियोंको मरम्मत करनेमें श्वताम्बरी रोकते है तब ता: २२ को सवेरे दि० श्वे० भाई सेठजीके साथ ऊपर गए। सेठजीका पैर एक अशक्त था तौभी आप बडे माहसके साथ लकडीके सहारे पहाडपर चढे चले गए। यह १ मील ऊची है। १ देहरी छोडकर दिगम्बरी देहरी मिली जिसको **चांद सूरजकी देहरी** कहते है उसके भीतर ही यह लेख था—

"सवत् १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे आचार्य कुन्दकुन्दान्वय भट्टारक श्री शुभचद्र स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरुपदेशात् . हूमड ज्ञातीय गाधी नरपति भार्या ..."

इसी देहरीकी मरम्मतमें श्वे० रोकते थे सो यह दि० लेख श्वे०

भाइयोंको अच्छी तरह वंचाकर उनके मनका समाधान किया गया। आगे दूसरी एक दिगम्बरी देहरी है जिसमें बहुत मनोज्ञ दिग० जैन प्रतिमा पद्मासन विराजमान थी। यहां दिग० लोग पूजा मडाना चाहते थे सो श्वे० रोकते थे। इस प्रतिमामें श्वे० मूर्तिके चिन्ह जो कमरमें कडोरा व आसनमें लंगोटका चिन्ह होता है सो न थे तौभी श्वे० ने हर्ष सहित कबूल नहीं किया। नीचे आकर सेठ फतेहचंद माकलचंदके सामने तीसरे पहर बात होकर यह तय हुआ–**चांद सूरजकी** देहरीको व उसके जानेके मार्गको दि० लोग दुरस्त करें हमें कोइ उजर नहीं है। पर दूसरी देहरीका झगडा बाकी रक्खा और यह कहा कि हम अपने सेठ व साधुको दिखाकर निर्णय करेंगे, यद्यपि हमें दिगम्बरी मालूम होती है तबतक न इस पर चक्षु चढेंगे न आगीकी रचना होगी। पूजा दोनों करें–मरम्मत उस समय तक कोई न करावे।

यह **सिद्धक्षेत्र** इस कारणसे है कि यहांसे वरदत्त सागरदत्त आदि मुनीन्द्र व साढे तीन करोड मुनि मुक्ति पधारे हैं। सिद्ध-शिला दूसरी ओर है। वहां एक गुफाके पास दो स्थानोंपर पुरानी दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं। ऊपर जाकर एक दिगम्बर देहरीमें चारों ओर ४ प्रतिमाएं व उनके चारों ओर चरण हैं। दोमें जीर्णोद्धार सम्वत् १६११ और १९२१ है। दिगम्बरी कारखानेका प्रबन्ध ईडरके पंचोंके आधीन था पर व्यवस्था कायदेसे नहीं होती थी, तब ता० २१ की शामको सब दिगम्बरियोंको समझाकर सेठजीने प्रबन्धकारिणी सभाके लाभ समझाए और तीर्थक्षेत्र कमेटीके आधीन एक प्रबन्धकारिणी कमेटी बना दी जिसके सभापति लल्लूभाई

लक्ष्मीचद बम्बई, कोषाध्यक्ष मोतीचद लीलाचद ईडर व मत्री वणीचद उगरचद ईडर नियत हुए। नियमावली भी बनाकर देदी गई।

ता २४ को चलकर दिग० व श्वे० पार्टी सीरपुर गावमे आई। यहा श्वे० के ६० व ७० घर हैं।

झगडेका फैसला। रात्रिको उपाश्रयमे सभा हुई। शीतलप्रसादजीने एकता, विद्योन्नति, बालविवाह निषध पर १॥ घंटा व्याख्यान दिया। डाह्याभाई नगीनदास श्वे० ने समर्थन किया। फिर सेठजीने **बालकोंकी छोटी अवस्थामे सगाई न की जावे** इस पर बहुत जोर दिया। यहा ऐसा बुरा कायदा था कि जो जैनी कन्या व पुत्रकी सगाई उसकी ४ वर्षकी उमर तक न करे उसे ५) दड हो! इससे बहुतेरे जन्मते ही सगाई कर देते है। ऐसी खोटी बडी करनेका कारण मुसल्मानोंका जोर जुल्म हो सक्ता है।

यहा जैनियोंके दो घडे थे उसके मढनेका अधिकार सेठजी, शीतलप्रसादजी, सेठ फतहचद और डाह्याभाईके आधीन किया गया। सवेरे चलकर बडनगर आए। सेठ फतहचदके वहा ठहरे। उन्होंने बहुत सन्मान किया तथा सीरपुर गावका फैसला लिखके दे दिया गया। ता० २६ को सूरत आए। फूलकौर कन्याशालाका निरीक्षण किया। उस समय ७९ कन्याए थीं जिनमें २३ दिग०, १४ श्वे० व शेष उच्च हिन्दू वर्णोंकी थीं। एक अध्यापिका व दो अध्यापक पढाते थे। जैन धर्मकी शिक्षाके साथ व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता था।

तारंगीजी पर्वतपर पहले **कैंगर** नामकी लकडी होती थी जो जलती व सडती नहीं है।

अग्निमें न जलने-वाली लकडी। ऐसी कुछ लकडिया स्वे० मंदिरमें लगी हुई पाई जाती है। अब भी यह लकड़ी यहासे थोडी दूर ब्रह्माकी खेडक पास धूलिया दालरण गावमें होती है।

यहासे सेठजी बम्बई आए। मिती कार्तिक सुदी १४ ता० १७ नवम्बर ०७को दूसरे भोईवाडेके मंदिरमें

बम्बईमें शिखरजी-की सभा। शिखरजी सम्बन्धी सभा हुई। सेठ **माणिकचंद**जीके पेश करने व लल्लुभाई परीखके समर्थनसे सेठ सुखानदजी सभापति हुए। इसमें शीतलप्रसादजीने पर्वतरक्षा कमेटी जो १२ महाशयोंकी शिखरजी पर बनी थी उसकी कार्रवाई सुनाई कि बाबू धन्नूलालजी छोटे लाटको समझानेके लिये दारजिलिंग गए व ता० ६ नवम्बरको फिर छोटे लाट शिखरजी आए तब सेठ परमेष्ठीदास धन्नू बाबू आदि कई साहब मिले तब छोटे लाटने बहुत कठोर शब्द कहे कि हम पर्वतपर बगले बनावेंगे, केवल टोंकके चारों तरफ कुल जमीन छोड देंगे। इस बातको सुनकर सभाने अदालती कार्रवाई करनेका प्रस्ताव किया व धन्नूबाबूको धन्यवाद पत्र भेजा जो वह अटार्नी होनेपर भी शिखरजीकी रक्षामें इतने दृढ प्रयत्नशील होकर दौडधूप कर रहे हैं। सेठजीने सभाकी ओरसे खुरजेके सेठ हरसुखराय अमोलकचदको खुरजेकी सभाकी सफलताके लिये धन्यवाद दिया।

बम्बई बोर्डिंगमें उत्सव।

माता रूपाबाईने स० १९६० में १२३४ उपवासके उद्यापनमें २५००) बम्बई बोर्डिंग कमेटीको इस लिये सुपुर्द किये थे कि इसके व्याजसे हर वर्ष कार्तिक सुदी १५के दिन बोर्डिंगमें मंडलकी पूजा करके उत्सव किया जावे, उसीके अनुसार इस स० १९६४ में भी हुआ। रात्रिको सभा हुई। अलबरके प० महाचंद्रजीका संस्कृत विद्याकी आवश्यक्तापर भाषण हुआ। संस्कृत विद्यालयके परीक्षोत्तीर्ण छात्रोंको पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिये गए।

श्रीमती मगनबाईजीका आम व्याख्यान।

इधर जब सेठजी समग्र भारतवर्षके जैनियोंके महा हितकारी कार्यमें लगे हुए थे उधर इनकी दीर्घदर्शिनी, सुविचारधारणी पुत्री अपनी आत्मोन्नति करनेतथा जैन स्त्रीसमाजके उद्धार व अपनी लेखन व व्याख्यानशक्ति बढ़ानेके प्रयत्नमें लगी थीं। अर्थप्रकाशिकाजी अच्छी तरह मनन करके आपने श्री पंचास्तिकायका संस्कृत टीकाके साथ मनन किया तथा बृहत् द्रव्यसंग्रहकी संस्कृत टीका देखी। ऐसे ही संस्कृत ग्रंथोंके देखनेका अभ्यास शीतलप्रसादजीकी संगतिमें होता रहा तथा लेख भी लिखकर इन्होंसे शुद्ध करा लेती थी। सामायिक व ध्यानका अभ्यास भी सवेरे व शामको अच्छा होने लगा था। बम्बईमें एक हिन्दू यूनियन क्लब है उसकी ओरसे हिम ऋतुमें प्रति शनिवारको अनेक विद्वता पूर्ण व्याख्यान हुआ करते हैं। इस वर्ष वह हेमन्त व्याख्यानमाला सेठजीके मनोहर हीराबागके लेक्चर हॉलमें हुई। ता. ७ नवम्बर ०७ को श्रीमती मगनबाईने 'आर्य्य स्त्रियोंके चरित्र' पर एक बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान दिया था।

सेठजीका वार्षिक उत्सवोंके लिये उद्योग।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष कहा हो इसकी आपको बहुत बडी चिंता थी। मुशी चम्पतरायजी महामंत्रीसे व बाबू देवकुमारजीसे व बाबू जुगमन्धरदास नजीबाबादसे पत्र व्यवहार करके कुडलपुर क्षेत्र (दमोह) में उसके वार्षिक मेलेपर उत्सव करना इस लिये उचित समझा कि सेठजी इस क्षेत्र पर हो गए थे व बुंदेलखंडके दिगम्बर जैनियोंकी अवनति दशाको जान चुके थे। यहाके जैनियोंमें उन्नतिका पवन भरे, इसी आकाक्षासे निश्चय करके सेठ विंद्राबनजी दमोहसे लिखा पढी करके समझाया। उक्त सेठजीने महासभाको बुलानेके लिये निमत्रण पत्र दफ्तर महा सभाको भेज दिया, तब महा सभाके दफ्तरसे इस जलसेकी सफलताके लिये तय्यारी होने लगी। इस समय महासभाके ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी बाबू जुगमन्धरदास रईस नजीबाबाद थे जो बहुत दिल लगाकर काम कर रहे थे। महासभाका काम इस समय बहुत जागृति पर था।

सूरतमें कांग्रेस और जैन यंग मेन्स एसोसियेशन।

सन् १९०७ में सूरतके डिसम्बर मासके अतिम सप्ताहमें राष्ट्रीय कांग्रेसका अधिवेशन होनेवाला था। इसकी स्वागतकारिणी सभामें सेठ माणिकचदजी भी मेम्बर थे। गुजराती मिती कार्तिक वदी ४ को सूरतमे स्वागतकारिणी कमिटीकी सभा थी। इसमें सेठजी हरजीवन रायचद आमोद, ल्लूभाई प्रेमानद आदिको लेकर गए थे। का-

प्रेसके लिये सभापति चुननेके लिये बैठक थी। इसी रात्रिको ७॥ बजे चदावाडीमें ल्लूभाई प्रेमानन्द एल० सी० ई० के सभापतित्वमें एक सभा हुई। सेठ हरजीवन रायचदने विद्योन्नतिपर भाषण दिया तथा "दिगम्बर जैन" पत्र मूलचद किसनदास कापडिया द्वारा शुरू होकर उन्नतिमें आवे ऐसी भावना प्रगट की। फिर सेठ माणिकचदजी जे० पी० ने इसकी पुष्टता की और सभाजनोंका आभार माना और मूलचदजीको पत्र चलानेमें उत्तेजना दी। सेठजीको मूलचदजीपर अधिक प्रेम इसी कारणसे था कि यह सेठजी द्वारा स्थापित हीराचद गुमानजी जैन पाठशाला सूरतका फलरूप एक रत्न था। इन्होंने व्याकरण साथ चद्रप्रभु काव्य तक अभ्यास कर लिया था।

सूरतमें जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, इसलिये बाबू चेतनदास बी० ए० जनरल सेक्रेटरी, एसोसियेशनने वार्षिक जल्सा सूरतमे करना ठीक समझ कर सेठ माणिकचदजी बहुत जोर देकर लिखा। सेठजीने मूलचद किसनदास कापडियासे यह बात पत्रद्वारा प्रगट की। मूलचदजी अभी ताजे ही ताजे जैन जातिके कार्य्यक्षेत्र-मे आए थे। इन्होंने कुछ श्वेताम्बरी सभासदोंसे वार्तालाप की और अति उत्साहसे सेठजीको लिख दिया कि सर्व प्रबन्ध हो जायगा। तब सेठजीने चेतनदासजीके साथ मूलचदजीका पत्रव्यवहार कर दिया। ता० २२ नवम्बर १९०७ को चदावाड़ीमें सर्व जैनियोंकी एक जाहर सभा नगरसेठ बाबूभाई गुलाबभाईके सभापतित्वमें हुई, जिसमें दि० श्वे० स्थानकवासी जैनियोंमेंसे १९० मेम्बरोंकी एक रिसेप्शन कमेटी नियत हुई, इसके **सभापति** सेठ माणिकचद हीराचद

जे० पी० हुए तथा एसोसिएशनके प्रमुख पदको जैपुरनिवासी बाबू गुलाबचंद ढड्ढा एम० ए० ग्रहण करें ऐसा निश्चित हुआ ।

पावागढमें बम्बई प्रा० सभा ।

पावागढ बडौदाके पास सिद्धक्षेत्र है । जहासे श्रीरामचद्रके पुत्र लव और कुश और ५ करोड मुनि मोक्ष पधारे है । यहापर बम्बई प्रान्तिक सभाका वार्षिक उत्सव मेलेके समय माह सुदी १२ से १५ तक करनेके प्रबधार्थ ता० ७ डिसम्बर सन् ०७को हीराबागमें एक सभा हुई । सेठजी भी उपस्थित थे । जलसेका खर्च ११००) का तजवीज हुआ व सेठ लालचद कहानदास स्वागतकारिणी सभाके सभापति नियत हुए । इस जल्सेके लिये सेठ हीराचद नेमचद–आनेरेरी मजिस्टेट शोलापुर सभापति नियत किये गए थे ।

द० म० जैन सभाका वार्षिक जलसा ।

इसी तरह दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका अधिवेशन जो प्रतिवर्ष हुआ करता है उसके प्रबन्धार्थ ता० १७–११–०७को चिंचलीमें सभा हुई जिसमे **सेठ माणिकचदजी** स्वागत कमेटीक अध्यक्ष नियत किये गये ।

जैन यगमेन्स एसो० सूरतमें ।

जैन यगमेन्स एसोसियेशन कि जिसका नाम अब भारत जैन महामडल है उसका नवमाँ वार्षिकोत्सव सूरतमें ता० २९–३०–३१ डिस०को नगीनचद इन्स्टीटयूट हॉलमें हुआ । बाबू चेतनदासजी, बाबू सुलतानसिंह वकील मेरठ, प० अर्जुनलाल सेठी जैपुर आदि अनेक दिगम्बरी व अहमदाबाद भावनगर आदिसे श्वेताबरी स्थानवासी आए थे ।

भैयपुरवाले सेठ गुलाबचन्दजी ढढ्ढाका स्टेशनपर अच्छी त
स्वागत किया गया । पहली बैठकमें **सेठ माणिकचंदजी**
स्वागत कमेटीके प्रमुखकी हैसियतसे अपना भाषण पढा त
धार्मिक, औद्योगिक, स्त्रीशिक्षा, बालविवाह, वेश्यानृत्य निषेध, श्र
सम्मेदशिखर, तीर्थोंके झगडे, ऐक्यता आदि विषयोंपर विवेच
किया।

ऐक्यताके सम्बन्धमें आपने कहा " मैं सर्व जैन प्रतिनिधि
योंसे प्रार्थना करता हूं कि तीर्थोंके सम्बन्धमें जो किसी तरहक
खराब भाव हो उसको निकाल देवें और परस्परके झगडोंक
मिटानेके लिये एक सम्मिलित कमेटी बना लेव। इन्हीं तीर्थो
लिये कर्मबंध करानेवाले झगडोंके कारण हम लोग परस्पर मेल नह
रख सक्ते, और इस एकताके अभावमें जैसे सिया और सुन्नी व
भिन्न २ सम्प्रदायक लोग एक होकर शिक्षा और सुरीतिका प्रचा
करते हैं वैसे हम नहीं कर सक्ते। "

धार्मिक शिक्षापर कहते हुए आपने कहा कि " धार्मि
शिक्षाके लिये शिक्षकोंकी प्राप्तिके लिये संस्कृत पाठशालाएँ भ
खोलनी चाहिए, जिनमें ऐसी पद्धतिकी शिक्षा होनी चाहिये ज
हमारे नए जमानेके लोगोंको समझानेमें अत्यन्त उपयोगी होवे। "
गुलाबचन्दजी ढढ्ढाने हिंदीमें भाषण दिया। कुल प्रस्ताव १२ पा
हुए जिनमें खास ये थे—

१ शोलापुरके सेठ हीराचन्द नेमचन्द द्वारा अणाप्पा फड्याप्प
चौगले बी० ए० एलएल० बी० को सोनेका एक तमगा इसलिये
दिया जाय कि इन्होंने **सर्वार्थसिद्धि** संस्कृत धार्मिक ग्रन्थको

-

परीक्षामें सफलता प्राप्त की है । वह तमगा भेज दिया गया तथा अन्य भी विद्वान् धार्मिक शिक्षा लेवें ऐसी प्रेरणा की गई । वास्तवमें जब तक इंग्रेजीके ग्रेजुएट लोग धर्मके ऊँचे तात्विक ग्रंथोंको न जानेंगे तब तक जैन तत्वज्ञानका विस्तार नही हो सक्ता ।

२ उदेपुर, वड़ोदा, जामनगर, राधनपुर, गोंडल, मोरबो व अक्कलकोटके अधिकारियोंने पशुवध बंद किया या घटाया इमसे धन्यवाद दिया जाय ।

३ सेठ माणिकचन्द हीराचंदजीने प्रस्ताव किया कि तीर्थक्षेत्रोंके झगड़ोको मिटानेके लिये ६ दि० और ६ श्वे० सज्जनोंकी कमेटी नियत की जावे ।

४ प० लालनने प्रस्ताव किया कि जैनियोंके तीनों फिर-कोंमे एकता रहे । इसका समर्थन सेठ माणिकचन्दजीने भी किया ।

५ एक जैन बेंकमे तीर्थ व मदिरोंके रुपये रोके जाय, इसकी व्यवस्थाके लिये कमेटीमें दि० की ओरसे सेठ माणिकचन्दजी नियत हुए ।

६ शिखरजीपर बगले बननेका विरोध सम्बन्धी प्रस्ताव रादेरके नगरसेठ छोटालाल नवलचन्दने पेश किया, जिसका समर्थन बाबू शीतलप्रसादजीने भी किया ।

७ लेजिसलेटिव कौंसिलोंमें जैनियोंका एक २ मेम्बर हो ।

सेठ माणिकचंदजी और मूलचन्द किसनदास कापड़िया-के प्रयत्नसे बिना किसी अंतरायके ऐसोसियेशनका काम पूर्ण हो गया ।

सूरतमें कांग्रेस गर्म और नर्म दलमें विभक्त हो गई। इससे अधिवेशन होते२ बन्द हो गया। इसमें श्री शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव लेना भी स्वीकृत हुआ था तो भी गर्मदलकी सभामें यह प्रस्ताव पास हुआ कि शिखरजी पर्वतपर बगले बंधनेका विचार सर्कारको छोड देना चाहिये। कांग्रेसके मंडपमें सोशल कान्फरन्सका जलसा हुआ। उसमें **श्रीमती मगनबाई**जीने स्त्री शिक्षा पर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया था।

सोशल कान्फरन्समें श्रीमती मगनबाई।

इस अवसरको देखकर सेठ माणिकचंदजीके उत्साहसे फुलकौर कन्याशालेकी इनामकी सभा सूरतमें नवापुरामें ता० ३१ डिसम्बरको सबेरे ९ बजे इन्दौरवाले सेठ झुन्नालाल मुन्नालालके सभापतित्वमें हुइ। बालिकाओंने गीत गाया। एक वर्षकी रिपोर्ट पढ़ी गइ। इस समय ७९ कन्याए थी, इनमे ४० जैन थीं। लौकिक परीक्षाका फल ८० टका व धार्मिकका ९४ टका आया था। बाबू शीतलप्रसादजीने स्त्रीशिक्षाके लाभ दिखाए। मेरठके बाबू सुलतानसिंह वकीलने मिशनरी कन्याशालाओंमे जानेसे क्या२ गैरलाभ है सो बताए। फिर ओढनी, पुस्तकें व मिठाई आदि इनाममें दी गई। सभापतिने प्रशंसा करके ५१) दिये, फिर सर्व मंडली गाने बाजेके साथ कन्याशालाके मकानमें आई। वहांपर सेठजीने अपनी स्वर्गवासिनी पुत्री फुलकौरकी छबि खोलनेकी क्रिया की। किसी फोटो या तसवीरका होना उसके गुणोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक दर्पणके समान है। इस

फुलकोर कन्याशालाका उत्सव।

समय सेठ माणिकचंदजीने १०१) कन्याशालाको भेट किये। जगह २ दानकी चर्चा करना ही सच्चा दानवीरपना है, जिस गुणसे सेठजी भलीभाति सज्जित थे।

आबूजीके मंदिरके उद्धारका प्रयत्न। अजमेरसे श्री गिरनारजीकी यात्राको जाते हुए रास्तेमें आबूरोड (खरेडी) स्टेशन है। यहा श्वताम्बरियोंकी दो व हिन्दुओंकी १ धर्मशाला है। कुछ परदेशी दिगम्बर जैनी हैं जिन्होंने दो मंजिला एक मंदिर बनवाया है। यहासे आबू-पहाडके दिलवाडा स्थान तक २८ मील सडक है। टागे इक्के बैल गाडी जाती है। रास्तेमे सिरोही राज्यकी चौकी व कुए दो दो मीलके फासले पर है। दिलवाडामे ५ जैन मंदिर ९०० वर्षके पुराने ३७२७५१८८००) रु की लागतके है जिसकी प्राचीन पत्थरकी शिल्पकला दुनियाम अद्वितीय हे। इन्ही मंदिरोंके मध्यमे एक दिगम्बरी बडा प्राचीन मंदिर है, जिनमें २३ बिम्ब है। मूलनायक श्री कुंथनाथ स्वामी है। इसके सिवाय इन मंदिर समूहके बाहर सरकारी सडककी दाहनी ओर दिगम्बरी श्रावकोंका एक बडा मंदिर श्री नेमनाथ स्वामीका है इसमे भिन्न २ तीर्थंकरोंके १६ बिम्ब हैं। शिलालेखसे मालूम होता है कि इस जिनालयकी प्रतिष्ठा ईडरके भट्टारक द्वारा वि० स० १४९४ वैसाख सुदी १३ को हुई थी। इस मंदिरमें प्राय देव अतिशय हुआ करते है, जैसे रात्रिको १२ बजे दीपकोंका उजियाला व बाजोंका बजना। बीचमें कुछ कालसे दिग० ने अपने मंदिरोंकी तरफ बिल्कुल बेपरवाही कर रक्खी थी, श्वे० कारखानेकी तरफसे साधारण सम्हाल रहती थी, पर न, ---ादि

कायदेमें होती न जीर्णोद्धारकी ओर ध्यान दिया गया। जो यात्री वहा जाते उन्हें धर्म साधनमें व ठहरने आदिमें व मदिरजीकी कुव्यवस्थाको देखकर बहुत दुःख होता था। यह सब समाचार सेठजीको जबानी व पत्रद्वारा मालूम होते रहते थे, इसलिये इस क्षेत्रका सुप्रबन्ध किस तरह हो यह ही बडी भारी चिंता सेठजीको थी। अजमेरके एक जवाहरातके दलाल पन्नालाल दिगम्बर जैनी थे, जो बहुधा सेठजीको बबईमें मिला करते थे। एक दफे इनसे आबूजीका वर्णन आगया, तब पन्नालालजीने कहा कि आबूमें मेरे एक मित्र **बाबू पूनमचंद कासलीवाल** एजन्ट साहबके दफ्तरमें असिस्टेन्ट है यह बडे धर्मात्मा है। मै इनको आबूजीकी व्यवस्थाके लिये जोर देकर लिखता हू। आप कमेटी द्वारा पत्रव्यवहार करें। तब सेठजीको बडा हर्ष हुआ। दफ्तर द्वारा ता० १ नवम्बर १९०७ को पूनमचदजीको आबू पत्र लिखा तथा दिगबरी मदिरोंका प्रबन्ध अपने हाथमें लेनेके लिये पूर्ण अधिकार दिया। पूनमचन्दजीका ध्यान सबपर था। आपने श्वेताम्बरियोंसे मिलकर बहुत सभावानोंके साथ प्रबन्धको अपने हाथमें लिया। सेठजीने अपनी तरफसे पूजाका सामान वर्तन और शास्त्र भेजे तथा कमेटीसे १ पुजारीको भिजवाया। ता० २१ फर्वरी १९०८ से पुजारी और अन्य ८ सेवक नियत किये गये और दोनों मदिरोंमें शास्त्रानुसार अष्टद्रव्यसे पूजन प्रक्षाल होने लगा। फिर सेठजीने यात्रियोंके आरामके लिये धर्मशालाके वास्ते लिखा। उस समय अलग जमीन न मिलती हुई देखकर पूनमचन्दजीने उस बडे मदिरजीके हातेमें ही चारों ओर धर्मशाला बनवाना ठीक समझा। तब सेठ माणिकचन्दजीने पुराने बाडेमें ४

कोठरिया व सामने ४ वराडा और १ रसोडा बनवानेकी परवानगी अपनी ओरसे दी । २, ३ वर्षके भीतर रायबहादुर सेठ नमीचद, हरमुखराय अमोलकचद, विनोदीराम बालचद, माणेकबाई बम्बई, आदिको उपदेश देकर पूनमचदजीने १५० मनुष्योंके ठहरने योग्य स्थान बनवा दिया । हालमें पूनमचदजी कोटामें है । प्रबन्ध आप ही करते हैं । सेठ साहबके तन मन,धनके योग देनेसे और पूनमचदजीके पूर्ण परिश्रमसे श्री आबूजीका प्रबन्ध बहुत अच्छा हो गया है । इन दोनोंको इस क्षेत्रका उद्धारक कह सक्ते है ।

द० म० जैन सभा व श्राविकाश्रम कोल्हापुर ।

८० महाराष्ट्र जैन सभाका दशवा वार्षिकोत्सव पौष सुदी १४ से वदी २ तक ता १७ जनवरीसे २० तक श्रीस्तवनिधिक्षेत्रमें बडे ठाठसे हुआ । इसमें देशभक्त रा० रा० गोपालकृष्ण देवधर एम० ए० व श्रीधर गणेश बी० ए० आदि कई सज्जनोंने भी पधारकर शिक्षा आदिके सम्बन्धमें उपदेश दिया था । इस उत्सवमे सेठ माणिकचदजी इस कारणसे नहीं जा सके थे कि व इसी समय शोलापुर गए हुए थे । आप स्वागत कमेटीके प्रमुख थे । आपने बहुत उदासीके साथ तार भेज दिया था । श्रीमती मगनबाई भी नही आई थी, पर उनका भेजा हुआ लेख " श्राविकाश्रमकी आवश्यक्ता " पर ता १८ की महिला परिषदमें सुनाया गया । महाराष्ट्र सभाने पाचवा प्रस्ताव यह किया कि श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणानुसार कोल्हापुरमे एक **श्राविकाश्रम** खोला जावे । इसके लिये दानवीर सेठ माणिकचदजीने १०) व बाबू देवकुमारजी, आरावालोंने भी

१०) मासिक मदद एक २ वर्षको स्वीकार की थी तथा कुछ स्त्रियोंमें भी फड हो गया था। सभान १० वें प्रस्तावमें नांदणीके भट्टारकके मठकी व्यवस्थाके लिये एक कमेटी नियत की उसमें **सेठजी**को भी मेम्बर किया तथा उठेमें श्री सम्मेदशिखर रक्षा सम्बन्धी व १९ वें में तीर्थभक्त सेट चुन्नीलाल मनेरचदके वियोग पर शोक प्रगट किया गया। इस सभाके नाम बम्बईके गवर्नर सर जार्ज क्लार्कका तार भी आया कि जैनियोंमें शिक्षाके प्रचारकी उत्तेजनामें मैं सहानुभूति प्रदर्शित करता हू।

"I cordially wish success to your efforts to encourage education among Jains"

ता० ३० जनवरीको कोल्हापुर श्राविकाश्रम खोलनेका महूर्त **श्रीमती मगनबाईजी**की अध्यक्षतामें जिनसेन भट्टारकके मठमें किया गया। १ वर्षके लिये भट्टारकजीने स्थान दे दिया था। डा० कृष्णाबाइ कलवकर एल० एम० टी० भी हाजिर थी। मगनबाईजीने अपने सुन्दर भाषणमें—जो उन्होंने मराठीमें कहा था क्योंकि बाईजीको गुजरातीके सिवाय मराठी और हिन्दीमें भी भाषण करनेका अच्छा अभ्यास था—दिखलाया कि केवल कोल्हापुर प्रान्तमें ५००० जैन विधवाएं है तथा दक्षिण महाराष्ट्रमे १५००० है जो ज्ञान बिना व्यर्थ जीवन बिता रही हैं, इनके ज्ञान सम्पादनार्थ हरएक प्रान्तमें **श्राविकाश्रम** खोलने चाहिये। द० म० सभाको इस कार्यके लिये धन्यवाद है। जो आज यह खोला जाता है। श्रीमतीने २००) की मदद भी दी व प्रबन्धार्थ कमेटी

बनी जिसमे अध्यक्षा मगनबाईजी हुई। १२ स्त्रिया दाखल हुई जिनमे ४ को छात्रवृत्ति दी गई।

शोलापुर जिलेमें हूमडोंकी वस्ती ग्रामोंमे अधिक है, जहा उनको विद्या प्राप्तिका साधन नहीं है। सेठ माणिकचदजी शोलापुरके धनवानोंको एक बोर्डिंगके लिये बार बार प्रेरणा कर रहे थे। उसका फल यह हुआ कि जैसे पहले प्रसिद्ध **नाथारंगजी** आक्लूनवालोंके घरानेने २५०००) सस्कृत ग्रथप्रचार व छात्रवृत्ति आदिके लिये निकाले थे वैसे ही उसी कुटुम्बने सेठजीकी बातपर ध्यान देकर २५०००) **का फड** बोर्डिंगके लिये अलग किया। ता० १९ जनवरीको शोलापुरमे एक सभा सेठ बालचद रामचदके प्रमुखत्वमे हुई, इसमे सेठ माणिकचदजी बाबू शीतलप्रसादजीके साथ आए थे। आनेवाले फाल्गुण मासमे **"सेठ नाथारंगजी दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग स्कूल"** खोलनेका निश्चय हुआ। फडके व्याजसे ४० टका सस्कृत विद्याके लिये व ६० टका अग्रेजी व औद्योगिक शिक्षामें खर्च हो। छात्रोंको धर्मशिक्षाके साथ ये विद्याए पढनी होगीं। गरीबोंको छात्रवृति भी दी जायगी। ६ महाशयोंकी कमेटीमें धर्मात्मा परोपकारी **सेठ माणिकचंदजी जे० पी०** भी नियत किये गए। १३ महाशयोंकी मेनेजिंग कमेटी हुई व नियमावली तय्यार हुई। सेठजीने बोर्डिंगके लिये स्थान पसद किया व सर्व सामान मगानेका प्रबन्ध बाध दिया।

सेठजीके अनुकरणसे शोलापुरमें बोर्डिंगका विचार।

ता० १ फर्वरीको कलकत्तेमें बाबू धन्नूलाल, सेठ परमेष्टीदास, आदि ४ प्रतिनिधियोंसे लाट साहबने मुलाकात करके बहुत देर तक वादानुवाद किया। अतमें आपने वादा किया कि हम फिर इस विषयमें विचार करेंगे, ऐसा तार पाकर सेठजीकी चिंतामें कुछ कमी अवश्य हुई।

कलकत्तेमें लाट साहबका उत्तर।

ता ६ फर्वरी १९०८को बम्बइके माधोबागमें श्वेताम्बर जैन बीसा श्रीमालियोंकी एक सभा हुइ थी जिसमें सभापतिका आसन सेठ माणिकचन्दजीको अर्पण किया था। इस सभामें सेठ देवकरण मूलजी सचवीको सौराष्ट्र बीसा श्रीमाली शुभेच्छुक मडलकी तरफसे मानपत्र इसलिये भेट किया गया था कि आप कपड़ेके व्यापरी व मिलके दलाल है। आपको १ लाख रुपयेकी परिग्रहका प्रमाण था। उससे अधिक बढे तो धर्ममे लगाऊँगा, सो पुण्ययोगसे आपका प्र॰ पूर्ण होने पर अब जो पैदा करते है सो अपनी जातिक गरीब अनार्योंको विद्या व आजीविकादानमें लगाते हैं। आपकी पुत्रीका विवाह इसी दिन था, आपने न वश्यानृत्य होने दिया न आतशबाजी छुडवाई जैसा कि अभी तक रिवाज उस जातिमें था, किन्तु ६५५) का दान इस भाति किया—२०१) मित्र मडल सभा, १०१) काठियावाट मडल, १००) मागरोल जैन कन्याशाला, १०१) पालीताना बालाश्रम, १०१) निराश्रित जैनी, ५१) उद्योग वृद्धि। इसके सिवाय जूनागढ जिलेके पुस्तकालयोंमें कन्याविक्रय निषेधकी पुस्तकें बाटना स्वीकार

श्वेताम्बर जैनसभामें सभापति।

किया । सेठजीने आपकी प्रशंसा करके मानपत्र भेट किया । ऐसे मानपत्रके भेटकी शोभा वास्तवमें ऐसे दानवीर परिग्रह परिमाण व्रत धारी सेठके द्वारा ही उचित थी ।

पावागढमें बंबई प्रांतिक सभा ।

पावागढमे मिती माह सुदी १२ से १५ तक बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका उत्सव बडी धूमधामसे हुआ । गुजरात देशके कई हजार जैनी एकत्र हो गए थे । सेठ हीराचद नेमचद शोलापुर जो इस सभामे प्रमुख नियत हुए थे सेठ माणिकचदजी जे० पी०, लल्लूभाई प्रेमानद व सेठ रावजी सखारामके साथ ता० १३ फर्वरीको सवेरे बडौदा स्टेशनपर पधारे । उस समय बटौदाके पचोने हारतोडा व **मानपत्र**से सम्मानित किया । शीतलप्रसादजी यहा १ दिन पहले आ गए थे । फिर यहासे सब मिलके चापानेर स्टेशनपर पहुचे । वहा बालन्टियरोंने गाजे बाजेके साथ सम्मानित किया । यहा कलेवा करके पार्टी गाडियों द्वारा पावागढ पहुची । वहा एक जुलूसके साथ स्वागत हुआ । स्वयसेवकोंने अपने हाथसे गाड़ी खींची । ता० १४ फर्वरीसे सभाकी तीन बैठकें हुई। प्रथम ही हरजीवन रायचद आमोदके पुत्र शातिलालने सस्कृत श्लोकोमे मगलाचरण किया । फिर स्वयसेवकोंने सेठ माणिकचद और सेठ हीराचद, दो धार्मिक परोपकारी मित्रोंके गुणानुवाद वर्णन किये। सेठ लालचद कहानदासने स्वागतकर भाषण दिया। फिर सेठ माणिकचदजीके प्रस्ताव व जयसिंहभाईके अनुमोदनसे सेठ हीराचदजी सभापति हुए । आपने अपना विद्वत्तापूर्ण छपा हुआ भाषण सुनाया फिर लल्लूभाई प्रेमानददासजीने रिपोर्ट पढी । पहली

बैठकमे पचमहालके कलेक्टर और शिवराजपुरकी सोनकी खानके फॉरेस्टर कई इंजिनियरोंके साथ आए थे। सभाने बहुत सत्कार किया। कलेक्टर साहब बहादुरने आभार माना। तब लल्लूभाई प्रेमानंदने कहा कि पावागढ़ जैनियोंका अतिशय पवित्र स्थान है। आशा है साहबबहादुर उसे अपवित्र होनसे बचाये रखनेका स्मरण रक्खेंगे। फिर १४ प्रस्ताव पास हुए। जिनमें मुख्य ये थे—

१—सेठ नाथारंगजीको २५०००) पहले व २५०००) अब शोलापुर बोर्डिंगके लिये निकालनेके अर्थ धन्यवाद। सभापतिने कहा कि उपयोगी विद्यादानमे सेठ माणिकचंदजीसे दूसरा नम्बर इनका है।

२—महासभाके सभापति सेठ द्वारकादासजी, मथुरा जिनका मरण ता० २० जनवरी १९०८ को हुआ व सेठ चुन्नीलाल झवेरचंदके मरणपर शोक।

३—रा० रा० अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगले बी० ए०, एलएल०, बी०, बेलगावको **सर्वार्थसिद्धि** ग्रंथमें परिक्षोतीर्ण होनेपर सेठ नाथारंगजीकी ओरसे एक **स्वर्णपदक** प्रदान किया जाय। इसको **सेठ माणिकचंदजी**ने पेश करते हुए कहा कि "मि० चौगले ने अपनी बम्बई बोर्डिंगमें शिक्षा ली है और बहुत थोड़े समयमें यह विद्वान् होकर जाहर कामोंमे भाग लेने लगे हैं। अब यह बेलगावकी म्यूनिसिपालिटीके सभापति तथा दि० म० जैन सभाके सेक्रेटरी है। इन्होंने सबमे कठिन संस्कृतके सर्वार्थसिद्धि ग्रंथमे बहुत ऊंचे नंबरोंमें परीक्षा पास की है जिससे सेठ नाथारंगजीने स्वर्णपदक

दिया है। ऐसे पास होनेवाले गृहस्थोंको शिक्षाके उत्तेजनार्थ ऐसे मेडलोंके देनेकी जरूरता है। "

४–उपदेशकोंके भ्रमणकी आवश्यक्ता–इसको शीतलप्रसादजीने पेश किया व लल्लूभाई प्रेमानदने समर्थन किया तथा इसी समय अपील करनेपर (१२००) का चंदा तुर्त हो गया। इसमें सर्वसे पहले दानवीर सेठ माणिकचन्दजीने २०१) व सेठ हीराचंदने १५१) प्रदान किये।

५–ता० १ फर्वरीको कलकत्तेमें जो श्रीयुत छोटे लाटने शिखरजी पर्वत सम्बन्धमें पूरा विचार करनेको कहा है, उनको यह प्रान्तिक सभा फिर सूचित करता है कि सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है इससे वहां बंगले हरगिज न बनाए जावें व इसकी नकल छोटे लाटकी सेवामें भेजी गई।

६–पावागढपर एक अंग्रेज कम्पनीने तांबेकी खान जानकर उसके खोदनेकी परवानगी सर्कारसे मागी थी, इसका विरोध दिगम्बर जैनियोंने किया था तब इसकी जांच करनेको बम्बईके दयालु **गवर्नर सीडनहेम क्लार्क बड़ौदाकैंपके** रेसिडेन्टके साथ ता० २४ जनवरीको ४ बजे पावागढ पहाडपर गए थे। उस समय बडौदा, बोरसद, करमसद आदिके बहुतसे दिगम्बर जैनी हाजर थे। सबने योग्य सन्मान किया। फिर दाहोदके वकील जौहरी कालीदास जसकरण बी० ए० एलएल बी ने खान खोदनेसे जैनियोंके मंदिरोंको कैसी भारी हानि होगी व जैनियोंको धर्म सेवनमें क्या बाधाएँ आएगी सो एड्रसके रूपमें समझाई। फिर सेठ लालचंद कहानदास प्रबन्धकर्त्ता तीर्थने हार तोडा पान गुलाबादिसे सत्कार किया। तब गवर्नर साहबने आभार मानते हुए कहा कि

तुमको जो२ विघ्न आ सक्ते हों व जिससे तुम्हारा मन दुखता हो उन्हे मै दूर करूंगा । इस उत्तरसे सर्वको सन्तोष हुआ । ता० २५ को गवर्नर साहब और उनकी पुत्रीने पहाडके दर्शन किये और प्रसन्नता प्रगट की। ता २६ को नीचेके मंदिरजीके दर्शन करते हुए २०) की भेट दी थी। इस कारण प्रांतिक सभाने गवर्नर साहबको धन्यवाद दिया जो उन्होंने जैनियोंका जी न दुखानेका वचन दिया है ।

ता० १६ की रात्रिको **महिला परिषद्**का एक वृहत् अधिवेशन हुआ । अध्यक्षस्थान सेठ माणिकचंदकी धर्मपत्नी **श्रीमती नवीबाई**ने ग्रहण किया था। श्रीमती ककुबाई, ललिताबाई व मगनबाई तीनों विद्यावती बहनोंने अनेक उत्तमोत्तम विषयों पर व्याख्यान दिये जिससे कइ स्त्रियोंने गाला न गाने व रोन कूटनेका त्याग किया। परोपकारिणी मगनबाईजीने पढी हुइ स्त्रियोंको श्रावकाचार नामकी पुस्तक भेटमें दी ।

ता० १७ फर्वरीको गुजरातके सर्व भाइयोंने सेठ माणिकचंदजीकी सेवामें चंदनके कास्केटमें निम्न लिखित **मानपत्र** अर्पण किया ।

नकल मानपत्र (पावागढ़)

झवेरी शेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी नी पवित्रसेवामां प्यारा धर्म बंधु,

आजे अमो श्री गुजरात भागना दिगंबर जैनो आप साहेबनी स्वधर्म अने कलवणी प्रत्ये अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपवानी तक लइए छीए ते स्वीकारी आभारी करशो

श्री शिखरजीना पवित्र पहाड उपर ज्या वीस तीर्थंकर अने असख्यात मुनि मोक्ष पाम्या छे त्था यात्राळुओना सुख माटे पगथीआ करवामा आवता हता ते आपणा श्वेताबरी भाईओए वगर कारणे उखेडी नाख्या ते काममा तथा वीसपथी वडी कोठीनो वहीवट सुधारवाना कार्यमा आपे आगेवान थई महेनत लइने बधी कोर्टोमा जय मेळव्यो, जेथी आपनामा स्वधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे **श्री** जयधवल जेवा प्राचीन ग्रंथोना जीर्णोद्धार करवामा आपे आगेवानी भाग लई सर्व भाईओनी मददथी काम चलाव्यु छे जेथी आपनी धर्मशास्त्रज्ञान वृद्धि माटे अत्यत उत्कंठा जणाई आवे छे. **आपे** सुरत जेवा पौराणिक शहेरमा जैन यात्राळुओनी उतरवानी सगवड माटे जैन होल जेवु **चंदावाडी** नामनु मकान बधाववा अने वधारवा पाछळ रु २००००)नो खर्च करी जैन कोम उपकार कर्यो छे ते आपनी जैन भाईओ प्रत्येनी उदार लागणी बतावे छे आपणा जैनीभाईओने स्वधर्म सबधी, राजकीय, वैद्यकीय, शिल्पशास्त्र, अने इग्रेजी गुजराती साहित्य वीगेरेनी उँचा दरज्जानी केळवणी प्राप्त करवामा अत्यावश्यक साधन जे **बोर्डिंग** स्कुल छे, ते **मुंबई** जेवा मोटा शेहेरमा श्वेताबरी, दिगबरी गो भिन्नभाव राख्या विना पोताना आशरे एक लाख रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री सेठ हीराचद गुमानजीना स्मरणार्थे आपे बाधी आपी समस्त जैन कोम ऊपर जे उपकार कर्यो छे ते प्रशसनीय छे अने ते आपनी धर्म सहित ऊचा धोरणनी इग्रेजी केळवणी आपवानी अपक्षपात लागणी प्रदर्शित करे छे तेमज गुजरातमा दिगंबर जैन कोममा केळवणीनो वहोळो करवा मा

अभ्यास वीगेरे बधी सगवडो पुरी पाडनारी एक **बोर्डिंग** स्कुल आपना कैलासवासी भत्रिजा शेठ प्रेमचंद मोतीचंदना नामथी **अमदावादमां** ३४०००) ना खरचे बधावी आपी स्वधर्मी भाईओ प्रत्येनी शुद्ध लागणी अने धर्म कृत्यमा भारे उदारता प्रगट करी छे

मुंबाई जेवी अलबेली नगरीमा कोईपण कोमने उपयोगी थई पडे तेवी भव्य धर्मशाला (**हीराबाग**) बांधवा पाछळ दोढ लाख रुपीआ धर्मादा खरच्या छे, जेमा एक धर्मादा स्वदेशी दवाखानु पण उघाड्यु छे, ते आपनी गरीबो प्रति दयावृत्तिनी लागणी प्रगट करे छे वळी हालना राज्यकर्तानी गया वर्षनी वर्षगांठनी खुशालीमा नामदार ब्रिटिश सरकारे जे मान अने मरतबाथी वगर प्रयत्ने 'जस्टीश ओफ धी पीस (जे पी)नो मानवतो खीताब आपने नवाजेश कर्यो छे ते आपणी दिगंबर जैन कोममा आप पहेल वहेला मेळववा भाग्यशाली थया छो, अने सरकारे जे आपनी स्वधर्म सेवानी योग्य पीछान करी ते माटे अमो मायाळु सरकारनो आ तके उपकार मानवानी अमारी फरज समजीये छीये

छेवटमा आपनी आ आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तम सेवाओ माटे तथा विद्या अने विद्वान प्रति आपनी सदैव शुभ लागणीओ माटे अमो प्रार्थना करीये छिये के आप आवा हजारो खीताबो भोगववाने दीर्घायुषी थाओ, अने परमात्मा आपने आपवा उत्तम कार्यो करवाने सदैव सन्मति आपो, एवु ईच्छी आ मानपत्र आपने अर्पण करीये छीये ते मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राखीये छीए तथास्तु

चांपानेर (पावागढ)
ता १७-२-१९०८ } **आपना सद्गुण चाहनारा--**

दिया। पिंडरईकी कन्याओंकी परीक्षा ले इनाम बटवाया फिर कन्याशालाके लिये चन्दा करके शाला भी खुलवा दी व जैनी अध्यापिका भी नियत करा दी।

शोलापुरमें बोर्डिंगका मुहूर्त।

मिती फाल्गुण सुदी १० गुरुवारको शोलापुरमें "सेठ नाथारगजी दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल" का स्थापनका मुहूर्त था। बम्बईसे **सेठ माणिकचंदजी** प० धन्नालालजी और **शीतलप्रसादजी**को लेकर १ दिन पहले पहुच गए थे। शामकी सभामें शीतलप्रसादजीने "*प्रभावना अग*" पर व्याख्यान देकर शिखरजीके रक्षार्थ उद्योग करनेपर जोर दिया, इसका समर्थन प० धन्नालालजीने किया। और फीरोजाबादमें शिखरजीके निमित्त होनेवाली सभाके लिये प्रतिनिधि चुन गए। सभापति सेठ सखाराम नेमिचन्द हुए थे।

दूसरे दिन ७॥ बजे सवेरे रावबहादुर **केल्कर डिप्टी कलेक्टर**के सभापतित्वमें सभा हुई। पहले ही कुभ स्थापन कर सरस्वतीपूजन की गई। फिर सेठ हीराचद नेमचदने सेठ माणिकचदजीको बोर्डिंगोंका बीजभूत कहकर नियमावली आदि सुनाई। तब सभापतिने बोर्डिंगका द्वार खोला। प० वासु गोपाल शास्त्रीने छात्रोंको रत्नकरडश्रावकाचारका पाठ दिया। शीतलप्रसादजीने विद्याके महत्वपर उपदेश दिया। फिर सभापतिने अपने विद्वता पूर्ण भाषणमे कहा कि "हिन्दू लोग **जैन धर्मके कारणसे ही मांससे बचे हुए है।** आजकल भारतमें भारी दान देनेकी उत्तम रीति पहले पारसियोंने चलाई, फिर उन्हींका अनुकरण जैनियोंने

ल्यिा" उपस्थित मंडलीने बोर्डिंगको १(६७५) भेट किये। आजकल यह बोर्डिंग एक नए मकानमें बहुत उन्नतिके साथ चल रहा है। मंत्री सेठ हीराचन्द नेमचन्द बडे उद्योगी हैं।

फीरोजाबादमें शिखरजीकी सभा।

पर्वतरक्षाकमेटी कलकत्ता श्रीशिखरजीके लिये पूर्ण उद्योग कर रही थी। फीरोजाबादके मेलेका मौका जानकर शिखरजीके लिये खास विचार करनेको खास २ महाशयोंकी एक सभा बुलाई गई। कलकत्तेसे भी बाबू धन्नूलाल और सेठ परमेष्ठीदासजी आए थे। इन्दौरसे सेठ हुकमचन्दजी, फीरोजपुरसे लाला देवीसहायजी, शोलापुरसे सेठ हीराचद व रावाराम नेमचद आदि अनेक तीर्थभक्त उपस्थित थे।

बम्बईसे सेठ माणिकचदजीने अपने कुटुम्बको श्रीमती मगनबाईजीके साथ कुडलपुर (दमोह) मे महासभाके उत्सवपर भेज दिया, क्योंकि महासभाका अधिवेशन ता० २८ मार्चसे था और फीरोजाबादमें ता० २४ व २५ मार्चको सभा थी। सेठजीको धर्म कार्य्यके निमित्त शारीरिक कष्टकी बिलकुल भी परवाह नहीं थी। आपने यही निश्चय किया कि फीरोजाबाद होकर कुडलपुर चले आवेंगे। शीतलप्रसादजीके साथ आप फीरोजाबाद पहुचे। वहा सेठ मेवारामजी आदि रानीवालोंने सब तरह सर्व भाइयोंका सन्मान किया। पर्वतकी रक्षा तन मन धन लगाकर की जाव, इसमें कोई बात उठा न रक्खी जाय ऐसा निश्चय किया गया। यहासे सेठजी दमोह स्टेशनको रवाना हो गए।

दमोह जिलेमे कुंडलपुर अतिशयक्षेत्र है, जहा प्रति वर्ष चैत्रमें मेला हुआ करता है। इस वर्ष भा० दि० जैन महासभाका बारहवा अधिवेशन बड़े समारोहके साथ ता० २८ मार्चसे ३१ तक **बाबू देवकुमारजी** जमीनदार आराके सभापतित्वमें हुआ। आजकल ऐसा भारी समारोह किसी जलसेमे नही हुआ था। इस मेलेमें १२००० जैन व २८०० अजैन एकत्र हुए थे। दमोहकी स्वागतकारिणी सभाने व उत्साही स्वयसेवकोंने बहुत ही प्रशसनीय प्रबन्ध किया था। मडप भी बहुत बडा रचा गया था। प्राय सर्व प्रान्तोंके प्रतिष्ठित दि० जैनी उपस्थित थे।

कुंडलपुरकी महासभामें सेठजी।

सेठ माणिकचंदजी फीरोजाबादसे शोलापुरवाले व शीतलप्रसादजीके साथ ता० २६ की शामको दमोह आए और उसी समय कुडलपुरको रवाना हुए। बैठक ता० २८ से शुरू हुई। श्रीमान सेठ मोहनलाल खुरईने स्वागतका भाषण सभापतिकी हैसियतमे पढ़ा। फिर **सेठ माणिकचंदजीके** पेश करने और सेठ पूरणसाह सिवनीके समर्थनसे बाबू देवकुमारने सभापतिके आसनको ग्रहण किया। आपने अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण करके इतनी शातिसे प्रस्ताव सब्जेक्ट कमेटीमें ठीक कराके आमसभामें पास किये कि विघ्न आनेपर भी कोई अतराय नहीं पडा। वेश्यानृत्य, बालविवाह, वृद्धविवाह आदि कुरीति निषेधके प्रस्तावका समर्थन **सेठ माणिकचंदजी** और इनके मित्र धर्मचदजी मुनीम पालीतानावालोंने किया था। उपयोगी प्रस्तावोंमें एक जाति व धर्मकी सेवा करनेवालोंको पद दिये जानेका हुआ। दूसरा श्री सम्मेदशिखरजी सम्बन्धी हुआ।

सभामें बाबू देवकुमारजी सभापतिके नाम ए० एच० वी० अंडर सेक्रेटरी गवर्नमेंट बंगालका पत्र ता० २४ मार्चका इस आशयका आया था कि बी-चकी टेकरी या रास्ता छोड दिया जाय तथा इसे भी जैनी लोग अच्छे दाम देकर सदाके लिये खरीद लें या पट्टेपर ले लें। पश्चिमीय

लाट साहबका विरुद्ध हुक्म और जैन समाजका जोश।

पहाड यूरुपियन और पूर्वीय देशियोंके बंगलोंके लिये दिया जाय तथा नीमियाघाटसे नई बास्ती तक नई सडक बने। तथा अंतमें लिखा था कि यह भारत सर्कारका हुक्म है, सर्व जैनियोंमें प्रसिद्ध किया जाय तथा और जो कुछ कहना हो वह कोर्ट ऑफ वार्ड्‌ससे शीघ्र कहा जाय। इस पत्रको सुनते ही सेठ माणिकचंदजी बहुत ही उदास हो गए तथा हजारों आदमी असंतोषसे घबडा गए। तब महासभामें प्रस्ताव नं० १४ इस आशयका पास किया कि इस हुक्मसे सर्व जैन जातिके हृदयपर बहुत चोट लगी है। सर्कारने इस कार्रवाईसे व्यर्थ असन्तोष फैलाया है। जो असन्तोष है व होगा उसे महासभा रोक नहीं सक्ती क्योंकि यह पर्वत अनादि कालसे पूज्य और पवित्र है। इसपर ऐसा कृत्य किसी मुसलमान राजाने भी नहीं किया तथा इस प्रस्तावकी नकल इंडिया गवर्नमेन्ट व स्टेट सक्रेटरी लंडनको भेजी गई तथा जैन जातिसे प्रेरणा की गई कि वह जन धन और सहानुभूतिसे पूर्ण उद्योग करे। पंडित गोपालदास व पं धन्नालालने इस प्रस्तावका हाल सर्वको समझाकर पास कराया। प्रस्ताव नं १६ इस विषयका हुआ कि महासभाके भंडारमें जैनी मात्रसे प्रति मास एक पैसा

वसूल किया जावे। प्र० न० २० में बाबू देवकुमारजी महासभाके समापति नियत हुए। प्र० न० २२ में महाविद्यालय सहारनपुरसे काशी बदला गया। श्रीमान् पंडित गोपालदासजीका पुरुषार्थ पर, देशभक्त खापर्डे महाशयका भारतकी दशा पर बहुत प्रभावशाली व्याख्यान हुआ, बुन्देलखंड प्रांतिक सभाकी स्थापना हुई। श्रीमती पार्वतीबाई, कंकुबाई, मगनबाईजी आदि पढी हुई बहनोंने स्त्रियोंको अनेक विषयोंपर उपदेश दिया। **मगनबाईजीने** १००० भाषाप्रवेशकी पुस्तकें स्त्रियोंको बांटी और पढनेकी प्रेरणा की। दमोहमें कन्याशालाके लिये २२६) रु० वार्षिकका चंदा कराया। इसी मेलेमे मगनबाईजीको **बेसरबाई** बडवाहाका परिचय हुआ जिसने स्त्रीसमाजमें विद्याप्रचारार्थ अपनी लक्ष्मीका अच्छा भाग खर्च करना प्रारंभ किया है। यद्यपि इस सभामें कोई भारी चंदा नही हो सका तथापि बुंदेलखन्डके भाइयोंपर अपनी उन्नतिको कमर कसनेके लिये बहुत उत्तेजना हुई।

सेठजी भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका जलसा करना चाहते थे पर नियमावलीके अनुकूल एक मेम्बरकी कमी होनेसे जलसा न हो सका।

सेठजीको शीखरजी-की चिन्ता।

कुंडलपुरमे सेठजीके चित्तको श्री सम्मेदशीखरजी सम्बन्धी सर्कारी आज्ञासे बहुत बडा कष्ट हुआ। यह सर्कारी हुक्म कैसे टले और परम पवित्र पर्वतकी रक्षा हो इस विचारमे दिन रात लीन हो गए। इस मेलेमें १२००० जैनियोंके भारी क्षोभ और उनके क्लेशित चित्तसे निकले हुए वचनोंको सुनकर

और भी सेठजीको चिंता होती थी कि क्या होनेवाला है। कई तो यही कहते थे कि यदि बंगले बनने लगे तो हम पहाड़पर पड़ जायगे, मार खायगे, मरेंगे, पर परम पूज्य ध्यानकी भूमिको गृहस्थियोंका प्रपंचघर व पशु हिंसा, मदिरापान, विषयभोग, विलासका स्थान कभी न बनने देंगे। इस समय भारतमें स्वदेशी आन्दोलनकी बड़ी धूम थी। जैनियोंको भी व्याख्यानोंसे व अखबारोंसे यह सब चर्चा मालूम होती थी। उधर जैसे बंगाल बंगभंगके कारण विक्षिप्त चित्त था और विदेशी माल न व्यवहार कर स्वदेशी कारखाने, विद्यालय खोलनेमें अनुरक्त था ऐसे ही जैनसमाजका चित्त हो गया था। जैन अखबारोंके सिवाय अन्य पत्र भी सर्कारकी इस आज्ञाको बहुत ही अनुचित और जैनियोंके पवित्र धर्म व श्रद्धाके बाधक मानकर सम्पादकीय लेख लिखने लगे। जैनसमाजमें स्वदेशी वस्तु ग्रहण व शिखरजीपर प्राण न्यौछावर करनेके प्रस्ताव होने लगे। सर्व देशीय सभाओंने भी जैनियोंके इस दुःखमें सहानुभूति दर्शाई। बिहार प्रान्तिक कानफरेन्स बांकीपुरमें यह प्रस्ताव पास किया "सम्मेदशिखर पर बंगले बनानेकी आज्ञासे जैन प्रजा क्षुब्ध हो उठी है। सरकारको चाहिये कि इस अनुचित कृत्यसे अपना हाथ खींच ले"।

मुगलहाट जिला रंगपुरके भाइयोंने इस शिखरजीके उपसर्गको सुनकर विलायती नमक बेचना बन्द कर दिया, जो वर्षमें रु० २०००) का खपता था।

परम पवित्र तीर्थराजकी रक्षाकी चिंतामें मग्न भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिकारी और तीर्थोंकी रक्षाके जिम्मेवार

सेठ माणिकचंदजीके हार्दिक दुःखका अनुभव करना कठिन है। बम्बई आकर ता ९ अप्रैल ०८ को हीराबागमें एक सभा बुलाई। सेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजीके मुनीम लाला मिश्रीलालजी सभापति हुए। सर्व जैनियोंने सर्कारी आज्ञाका विरोध करके वादानुवादके बाद यही निश्चय किया कि अब केवल दो ही उपाय शेष है—एक मुकद्दमा चलाना दूसरा अपने प्राणोका विसर्जन करके पर्वतकी रक्षा करना। सभामे दो प्रस्ताव पास हुए—एक शोक प्रकाश करने और दूसरा गवर्नमेन्टकी आज्ञा अस्वीकार करनेके विषयमे। दोनोंकी नकल भारत सर्कारको भेज दी गई।

शिखरजीपर बगले बननेका विरोध।

ता ९ अप्रैलको निम्बगाव (पूना)मे दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाका नैमित्तिक अधिवेशन सेठ सखाराम नेमचद, शोलापुरके सभापतित्वमे हुआ। उसमे शिखरजीपर बगले बननेका विरोध व स्वदेशी ग्रहण और विदेशी **बहिष्कार**का प्रस्ताव पास हुआ। सेठ माणिकचदजीने कमेटी द्वारा इस सर्कारी धर्मघातक आज्ञाकी खबर सर्व पचायतियोंको करदी। तब जगह२ सभाए होकर विरोध किया गया। ता २० अप्रैलको बम्बई प्रान्तिक कॉनफरेन्सका जलसा धूलियामे राव बहादुर जोशीके सभापतित्वमें हुआ उसमें येवलाके दामोदर बापूने सन् १८५८की घोषणापत्रके विरुद्ध जैनियोंके धर्मघातको होते देख इस सर्कारी आज्ञाका विरोध किया। इसका समर्थन सेठ वालचद हीराचद, मालेगाव, मुशी गुलाम मुहम्मद (नगर), लोकमान्य बाल गगाधर तिलकने किया। ता २९ अप्रैलको बम्बईके

ग्वालियरमें श्वेताम्बर जैनियोंकी एक विराट सभामें इस आज्ञाका पूर्ण विरोध किया गया। अहमदनगरकी सर्व देशीय जिला कॉन्फरेन्समें भी इसका विरोध हुआ। सेठजीने गुजराती पत्रसे जानकर कि महाराज दर्भगा १ लाख रुपया लगाकर पहाड शिखरजीपर सैनिटेरियम बनाना चाहते हे, महाराज दर्भगाको १ अर्जी ता ४ मईको लिखी, जिसका उत्तर ता १० मईको आया कि यह बात बिल्कुल असत्य है।

जैनियोंकी अति क्षुब्ध अवस्था व विरोधको सुनकर छोटे लाट बंगालने ता १६ मई १९०८को कलकत्तेमें बाबू पन्नूलाल, परमेष्ठीदास, महाराज बहादुरसिंह, व राय मनीलाल, नाहर बहादुरसे भेंट की और उसी दिन एक पत्र वी० एकालिन्स प्राइवट सेक्रेटरीने राय मनीलालके नाम भेजा जिसकी नकल बम्बई सेठजीके पास आई। इसमें भी पहली आज्ञाको दृढ करते हुए इतना आश्वासन दिया गया कि जो कुछ प्रतिनिधियोंने सम्पूर्ण पर्वतको खरीदने व पट्टेपर सदाके लिये लेनेको कहा है, उसके सम्बन्धमें कमिश्नरसे रिपोर्ट करके कहा जायगा। जब तक जमीदार व कोर्ट ऑफ वार्डससे जाच न हो मामला योंही रहे। यद्यपि इस पत्रसे कुछ अधिक सतोष न हुआ पर इतना अवश्य प्रगट हुआ कि अभी बंगला बनना रोक दिया गया हे तथा सम्पूर्ण पर्वतको पट्टेपर लेनेका प्रयत्न होना चाहिये। सेठजीने कलकत्ते वालोंको लिखा कि खुलासा आज्ञा निकलना चाहिये कि बंगले न बनें तथा पर्वतकी रक्षाका पूर्ण प्रयत्न किया जाय।

बंगाल सरकारका दूसरा पत्र।

बम्बई गवर्नरका आश्वासन पत्र।

बम्बई प्रान्तमे इस विषयका विरोध सीमासे बाहर देखकर बम्बई गवर्नरने प्रसिद्ध प्रतिष्ठित जैनियोंसे इसका कारण पूछा तो सबने यही कहा कि लोग सर्कारकी बगले बननेकी आज्ञासे घबडा गए है। तब बम्बई गवर्नरने बगाल सर्कारसे मालूम करके जून मास १९०८मे एक पत्र **वीरचद दीपचद सी. आई. ई.**को लिखा, सो अखबारोंमें प्रसिद्ध हुआ जिसका यह आशय था कि जब कि आपकी जातिने राजासे कोई ऐसा प्रबन्ध नहीं किया है कि जिससे आप पहाड खरीद लेवें या जिससे राजा उसपर बगले बनवानेका विचार छोड देंे। वर्तमानमे जब तक पहाड कोर्ट आफ वॉर्ड्सके आधीन है इस प्रश्नको रोक देना ठीक समझा जाता है (The question should be dropped at any rate so long as the property remains under the Court of Wards at present) इससे आप देखेंगे कि सर्कार जैन जातिके धार्मिक विचारोंको हानि पहुचाना नही चाहती है । यह मामला जमीदार और जैनजातिका है और आशा होती है कि परस्पर योग्य फैसला जल्द हो जायगा और जैन जाति सदा राजभक्त होगी जिस राज्यक द्वारा उसने उन्नति प्राप्त की है। -

इस पत्रको देखकर सेठ माणिकचदजीको कुछ और भी सन्तोषकी मात्रा हुई पर बगाल गवर्नमेन्टकी कोई आज्ञा न निकलनेसे पूरा भरोसा नहीं हुआ कि बगले बनेंगे या नहीं। ता० ११ जुलाईको छोटे लाटने जैनियोंके दि० और श्वे० प्रतिनिधियोंसे फिर कलकत्तेमे मुलाकात की। इस समय बम्बईसे शीतलप्रसादजी और फिरो-

जयपुरसे देवीसहायजी भी आए थे और धन्नूबाबू व परमेष्ठीदासके साथ लाट साहबसे मिलेथे परतु बातचीतमें कोई निश्चित बात नही कही तथा रात्रिमे फिर बुलाया ।

पावागढमें तावेकी खान खोदनेकी आज्ञा ।

पावागढ पर्वतपर तावेकी खानक मोकको देखने बम्बईक गवर्नर ता० २४ जनवरीको आए थे तब दिग० जैनियोंन पर्वतरक्षाकी प्रार्थना की थी, उसके उत्तरमे विचारनको कहा था । तीर्थक्षेत्र कमेटीने भी एक प्रार्थना पत्र भेजा था उसका उत्तर बम्बई गवर्नरके चीफ सेक्रेटरीने न० ६३२६ ता० २४ जूनम लिखा कि सेठ माणिकचद महामत्री ती० क्षे० कमेटीकी अर्जी ता० २४ मर्चक उत्तरमे सूचित किया जाता है कि सर्कार पावागढपर खान खोदनेकी इजाजत नही देती है (The Government not allowing prospecting or mining operations in the Pawagarh Hill) सेठजीक आकुलित चित्तको पावागढ सिद्धक्षेत्रकी चिंताकी निवृत्ति होनेसे कुछ शाति हुई ।

एक भारी शोकमें सेठजी।

परतु तुरत ही कलकत्तेसे खबर आई कि महासभाके सभापति आरा निवासी **बाबू देवकुमारजी** रुग्ण अवस्थामे कई मास रहकर अतमें अपने धर्ममित्र ब्रह्मचारी नेमिसागरसे मरणके ६ घट पहले समाधिमरण लेकर ता० ५ अगस्त १९०८की रात्रिको ११ बजे **स्वर्गधाम** पधारे। आपकी अवस्था केवल ३२ वर्षकी ही थी। इतनी उम्रमें ही आपने महा-

सभाकी व जैन जातिकी बहुत कुछ सेवा की थी। स्याद्वाद पाठशाला काशीको अपनी धर्मशालामें आश्रय दिया व जीवन पर्यंत उसकी रक्षा की। दक्षिणयात्रामें ग्रंथोंके भडार ठीक कराए। सरस्वती भवन खोलनेकी फिक्रमें थे, किन्तु यह नियम ले लिया था कि **जब तक भवन न खोलूं** तब तक **ब्रह्मचर्य पालूंगा**। ऐसे होनहार धनाढ्य और एफ० ए० तक सस्कृत इंग्रेजी पढे हुए धर्मप्रेमी देवकुमारका स्वर्गारोहण जानकर सेठजी शोकसागरमे डूब गए। बाबू साहबकी सेठ माणिकचदमे अनन्य भक्ति थी। अन्तमें वे कह गए कि—

" दानवीर सेठ माणिकचदजी आदिसे मेरा धर्म स्नेह पूर्वक जुहारु कहना और उनसे सरस्वती भडार शीघ्र स्थापित करनेकी प्रार्थना करना। "

पीछे जब सेठजीने सुना कि वे अपने एक वसीयतनामेमे १००००) नकद व १ गाव ९०००) वार्षिककी लागतका धर्म कार्योंके लिये दे गए हैं, तब आपको कुछ सतोष हुआ। इस दानकी विगत जैनमित्र अक २१ ता० २८ आगस्त १९०८में छपी है। इसमें १५००) वार्षिक सरस्वती भवन, ८००) औषधालय शिखरजी और ५००) छात्रवृत्ति धर्मशिक्षार्थ भी है।

बम्बईमें सभा।

ता० ११ अगस्तको सेठ माणिकचदजीके सभापतित्वमे सभा होकर बाबू देवकुमारजीकी मृत्युपर शोक प्रगट किया गया। बाबू शीतलप्रसादजीने मरणके थोडे दिन पहलेकी अपनी मुलाकातका वर्णन किया। जब वह कलकत्ते गए थे कि बाबूसाहब एकान्तमें

बडे कमरेमें लेटे थे, शरीर सुख गया था, अपने पास कुटुम्बीको बैठने नहीं देते थे, धर्मात्मा ब्र० नेमीसागर आदिको बिठाए रखकर धर्मभावकी वृद्धिमें लीन थे।

राचीमें शिखरजी प्रकरण।

छोटे लाट सर फ्रेजरने शिखरजी सम्बन्धी बात करनेको राचीमें जैन प्रतिनिधियोंको बुलाया उस समय बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी शीतलप्रसादजीको लेकर राची गए। ता १६ सितम्बर १९०८को वार्तालाप हुआ। कुल पर्वतको पट्टापर देनेकी वातें हुई। यहा राजा भी बुलाया गया था। लाट साहबने २ लाख रु० नकद व १९ हजार रु० वार्षिक मागे। जैनियोंने अपनी सामर्थ्य न समझकर इनकार किया–मामला तय न होकर योंही रह गया।

माता रूपाबाईको मानपत्र।

सेठ माणिकचंदकी भावज सेठ प्रेमचंद मोतीचंदकी माता रूपाबाई बडी ही धर्मात्मा थीं। अपने द्रव्यका निरन्तर सदुपयोग विचारा करती थीं। अहमदावाद बोर्डिंगके चैत्यालयके लिये आपने ४०००) लगाकर एक मनोहर चादीका समवशरण बनवाया था। उसे स्थापित करानेके लिये आप मिती ज्येष्ठ सुदी २ को अहमदाबाद गई थीं। वहा विधिसे पूजन कराई तथा यह ठहराव किया कि प्रति भादों सुदी ९ को श्री सम्मेदशिखरजीकी पूजा ठाठवाटसे हुआ करे जिसके खर्चको एक रकम अलग कर दी कि इसके व्याजसे हर वर्ष पूजा हो। उस समय बोर्डिङ्गके कार्यकर्ता और विद्यार्थियोंने श्रीमती बाईजीको अति

प्रतिष्ठाके साथ अपनी कृतज्ञता प्रगट करनेको एक **मानपत्र** अर्पण किया । वास्तवमें धर्मात्मा स्त्री व पुरुष सर्वके अंतःकरणको प्यारे लगते हैं ।

स्या० महा वि० की प्रबन्धकारिणी सभामें सेठजी।

राचीसे आते हुए सेठजी काशी आए । आपको तीर्थ भक्तिके साथ २ विद्यावृद्धिके कार्मोका भी हर समय ध्यान रहता था । ता २० सितम्बरको मैदागिनी जैन मंदिरमें सभा हुई । बाबू देवकुमारजीके वियोग पर शोक प्रगट करके बाबू जैनेंद्रकिशोर मंत्री और लक्ष्मीचद्रजी उपमंत्री नियत हुए। सभासदोंकी संख्या फिरसे ठीक हुई । महाविद्यालय और स्याद्वाद पाठशालाके सम्बन्धका प्रस्ताव हुआ । देशी गणित और **इंग्रेजी पढ़ानेका प्रस्ताव** हुआ । अध्यापकोंका वेतन बढाया गया । पंडित माणिकचंदने प्रमेयकमलमार्तंड और प० गणेशप्रसादने अष्टसहस्रीमें परीक्षा पास की थी । ये दो ग्रंथ जैनियोंमें गंभीर न्याय विषयके हैं । इससे इनको विशेष पारितोषिक देनेका प्रस्ताव हुआ ।

अलाहबादमें जैन बोर्डिङ्गकी कोशिश।

यहासे सेठजी ता० २२ सितम्बरको **प्रयाग** आए । आप अलाहबादमें बोर्डिङ्ग स्थापित करनेके लिये पत्रव्यवहार तो कर ही रहे थे। बाबू शिवचरणलाल रईसको तार कर दिया था । स्टेशनपर उक्त बाबू साहब कई भाइयोंको लेकर उपस्थित हुए । अति सन्मानसे अपने यहाकी गाड़ियोंपर ले जाकर अपने मकानमें ही ठहराया और बहुत खातिर की । ता० २२ की रात्रिको सेठजीके सन्मानार्थ बाबू साहबके मकानपर

ही सभा हुई। सभापति सेठजीको ही नियत किया। बाबूलालज
प्रयागकी प्रार्थनापर कि शिखरजी व स्याद्वाद पाठशालाका हा
बताया जावे शीतलप्रसादजीने कहा कि हम लोग राची गए थे
लाट साहब कुल पर्वतका पट्टा देनेको तयार है पर वह २ ला
नकद व १५०००) वार्षिक मागते है। जब कि इधरसे अर्जी दी ग
कि मुआफ लिये झगडा मिटानेको हम लोग २॥ लाख नकद औ
४०००) वार्षिक देना चाहते है अभी मामला तय नही हुआ
तथा काशी विद्यालयमे २७ छात्र भली प्रकार सस्कृत अध्ययन क
रहे है। इतना कह धार्मिक विद्याकी आवश्यकताको बताते हु
जहा कॉलेज हो वहा जैन बोर्डिङ्गकी जरूरत दिखाई। इसका समर्थन
बाबू जुगमन्दरलाल एम० ए० के भाई समन्दरलाल और बाब
बच्चूलालने किया। सेठजीने भी इसकी पुष्टि करके सभाको समाप्त
किया। दूसरे दिन जैनधर्मशालामें सभा हुई। बाबू शिवचरणलालजी
सभापति हुए। शीतलप्रसादजीने ऐक्यता और प्रेमपर व्याख्यान
दिया। समर्थन पडित झम्मनलालजी अध्यापक जैन पाठशालाने
किया। फिर सेठजीने जैन बोर्डिंगकी आवश्यकतापर कहा। बाबू
शिवचरणलालने पुष्टि की और चदा खर्चका लिखनेको तय्यार हुए
पर पूरा होनेकी आशा न देखकर काम बद रहा। दूसरे दिन सवेरे
सेठजी शीतलप्रसादजी और गजकुमारजी आराको लेकर स्वर्गवासी
बाबू सुमेरचदजीकी धर्मपत्नीको बोर्डिंगकी आवश्यकता बताने गए
तथा यह सुन रक्खा था कि उक्त बाई २००००) किसी धर्मकार्यमें
लगाना चाहती है। इनमें समझाया गया कि यहा बोर्डिंग होनेसे
कालेजके छात्र जैन धर्मके श्रद्धानसे च्युत न होंगे, बडा भारी उप-

कार होवेगा । बाईजीने विचार कर १५ दिन बाद उत्तर देनेको कहा । सेठजीने गजकुमारजीको अच्छी तरह जचा दिया जो इस बाईके भ्राता है व स्टेटके प्रबन्धकर्ता थे । यहासे चलकर सेठजी बम्बई आए ।

श्रीमती पार्वतीबाई-जीका कार्य्य व तीर्थभक्ति ।

श्रीमती मगनबाईजीकी प्ररणासे लखनऊ निवासी श्रीमती पार्वतीबाई इधर उधर स्वखर्चसे भ्रमणकर बहुत उपकार कर रही थी । सर्धना जिला मेरटमे स्त्रियोपकारक नामकी सभा स्थापित की जिसकी सभा प्रति चतुर्दशीको होनी निश्चित हुई । वहाकी पाठशालाके प्रबन्धको ठीक किया तथा शिखरजीके रक्षार्थ यहा व मुबारकपुर जाकर रु० ९००) का चदा कराया । वहासे सहारनपुर जाकर आश्विन सुदी ८ को किरपीबाईजीके मंदिरजीमे सभा की । स्त्रियोंकी ऋतु सम्बन्धी क्रियापर उपदेश देकर कईने नियम लिया । आश्विन सुदी १० को आप नकूड गई । वहा तीन दिन सभा की । वहा विधवाश्रम कायम करनेको उपदेश देकर रु० १०२) का चदा कराया । यहासे मुजफ्फरनगर, खतौली व मेरठ उपदेश देती हुई दिल्ली पधारी ।

किष्किधापुरकी रक्षा।

श्री किष्किन्धापुर श्री पुष्पदन्त स्वामीका जन्मक्षेत्र है । वहापर श्री जिनमदिरजी व उस सम्बन्धी जमीन है । इस जमीनको सर्कार अपने कब्जेमें करना चाहती थी तथा इसके लिये नोटिस दिया था। इसकी उजरदारी गोरखपुरके भाईयोंन की तथा सेठजीको सूचना की । सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा छोट

लाटको अर्जी भेजी। इसका अंतिम उत्तर आया कि सरकारने गोरखपुर जिलेके खुखुंदो स्थान पर ६४ एकड जमीन जैन मंदिर, धर्मशाला. और बागकी अपनी आधीनताईसे निकाल दी है। ऐसी सूचना नं० २९९७, ३६७ ता० १२ नवम्बर १९०८में प्रगट की है। वास्तवमें जो शांति व प्रभावक साथ उद्यम किया जाय उसमें अवश्य सफलता होती है।

बम्बईमें सभा। भादों मास धर्मध्यान महित पूर्ण होनेपर मिती आसौज सुदी १४ को बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीके सभापतित्वमें एक सभा हुई जिसमें सम्मेदशिखर सम्बन्धी हकीकत जो रांचीमें हुई थी सो सब वर्णन की गई। तथा फीरोजपुर छावनीके धर्मात्मा दानी लाला रामलालजी (पिता लाला देवीसहाय) की मृत्यु पर शोक प्रदर्शित किया गया। आपने शिखरजीकी रक्षामें बहुत मिहनत की थी। आप १००) मासिक जैन अनाथाश्रम हिसारको देते थे। मरनके पहले १४३०४) रु० का दान कर ता० २ अक्टूबर १९०८ को परलोक सिधारे। इसमें १००००)रु० वास्ते धर्मशाला और जैनमंदिर स्टेशन इसरी शिखरजीके मार्गमें, ५२५) जैन अनाथालय हिसार, २२९) के आटा चावल शिखरजी पर व २२९) हस्तनापुरके दीनोंको, १०१) अयोध्या व १०१) गिरनारके दीनोंको बंटे; २९००) रथ बनानेको, ९२९) जैनमंदिर रिवाड़ी, ९१) प० रिवाडीकी नसिया व ५१) गौशाला फीरोजपुरमें दिये। सेठ साहबने आपके गुणोंकी सराहना करते सभा विसर्जन की।

जैपुरमें श्री० मगनबाई।

जैपुरमे प० अर्जुनलाल सेठी द्वारा स्थापित जैन शिक्षा प्रचारक समितिका वार्षिक अधिवेशन कार्तिक सुदी १को था । सुदी २ को बम्बईसे श्रीमती मगनबाईजी भी जयपुर पधारीं । आपके कई व्याख्यान हुए । इनके असरसे गुमानीजीके मदिरमें पद्मावती कन्याशाला समितिकी तरफसे खोली गई तथा विधवाश्रमके लिये जोर दिया जिसमें १०) मासिक विधवा फडसे व ५) रु० मासिक स्वय मदद देना कहा ।

दहीगावमें सेठजीका भ्रमण।

सेठ माणिकचदजीको सदासे ही जातिकी बालविवाह आदि कुरीतियोंके निवारणका खयाल था । दहीगाव एक अतिशय क्षेत्र शोलापुरके ताल्लुके माढ-सिरसमें डिगमल स्टेशनसे २२ मील दहीगाव है । यहा एक बृहत् श्री महावीरस्वामीका दि० जैन मदिर विशाल, मानस्तभ और शिखरोंसे दूर २ तक अपनी प्रभा चमका रहा है। इसकी प्रतिष्ठा स० १९१२मे फलटनके बालब्रह्मचारी सेठ हीराचद अमोलकके उपदेशसे हुई, जिन्होंने अपने गुरु ब्रह्मचारी महतीसागरके स्मरणमे यह मदिर निर्माण कराया । यह ब्रह्मचारी बडे धर्मात्मा तथा त्यागी थे । इनके उपदेशसे दक्षिणमें बहुत सुधार हुआ था । यहा प्रतिवर्ष मगसर वदी २ से ७ तक रथोत्सवका मेला भरता है जिसमें **बीसाहूमड़** भाई अधिक आते है । इस वर्ष गाधी नाथारगजीने कुरीति निवारणका विशेष प्रबन्ध करेंगे ऐसी सूचनाके छपे हुए नोटिस भेजे थे । इसीपरसे **सेठ माणिकचंदजी** सकुटुम्ब शीतलप्रसादजीके साथ मेलेपर पधारे ।

आकलूजसे सेठ गंगाराम और उत्साही नवयुवक बापूजी पानाचंद नाथा तथा फल्टनसे बाबू चन्दूलाल वकील आदि आए थे। मगसर वदी ९ को ब्र० महतीसागरजीके स्मरणार्थ **महतीसागर धर्मोद्योतनी** नामकी सभा स्थापित हुई। यह प्रतिवर्ष इस क्षेत्रपर होवे और धार्मिक व सामाजिक उन्नति करे। इसका अधिवेशन हुआ। **सेठ माणिकचंदजी सभापति हुए।** शिक्षा प्रचार, कन्याविक्रय निषेध, स्वदेशी वस्तु व्यवहारके प्रस्ताव पास हुए। रात्रिको फिर जल्सा हुआ।

शीतलप्रसादजीने सभाके लाभ बताए। फिर क्षेत्रके सुप्रबन्धार्थ ७ महाशयोंकी कमिटी बनी। मंत्री बाबू चन्दूलालजी हुए। फिर सेठ वीरचंद कोदरजी फल्टनने कहा कि कल रात्रिको वीसाहुमडकी पंचायतने सेठ माणिकचन्दजीकी सम्मतिके अनुसार नीचे लिखा **पंचायती ठहराव** स्वीकार किया है—

"वीसाहुमड जात सुधारिणी सभा "ऐसा ठहराव करती है कि कोई भी वीसाहुमड अपनी लडकीकी सगाई ९ वर्षकी कम अवस्थामें न करे।"

इस पर उपस्थित भाइयोंके दस्तखत हुए हैं। शेष हस्ताक्षर कराये जायगे। मैं मंत्रीका काम करूंगा। कन्याविक्रय न करेंगे इस पर भी बहुतसे भाइयोंने दस्तखत किये। इस मौकेपर कुरीति निवारण पर एक भाषण जो स्वयं सेठजीने लिखकर छपवाया था पढ़ा।

यहां जैनियोंके ७ घर व संख्या ३० होने पर भी स्वागत व भोजन सत्कारका प्रबन्ध अच्छा था। ८०० जैनी स्त्री पुरुष एकत्र हुए थे।

जक्कप्पा उर्फ आप्पा साहब टेमाई हनगटीकर हुए। सेठ माणिक चदजीने इनके अध्यक्ष स्थान लेनेके लिये अनुमोदन दिया। सभामें सेठ रामचद्र नाथा आवलुन व अनेक अजैन विद्वान् भी थे। इनमेंसे ता० ९ को अध्यक्षके भाषणके पीछे **बेलगांवके प्रसिद्ध वकील रा० रा० श्रीपादराव छत्रेने** व्याख्यान देते हुए कहा कि—

" ऋग्वेदके कालमे जैन मत उच्च दशामें था। ऋग्वेदकार जैन तीर्थंकरोंको बहुत पूज्य मानते थे। जैन लोग पाखडी या नास्तिक नहीं है। "

बहुतसे प्रस्तावोंमें कई उपयोगी हुए जैसे (१) कोल्हापुर बो० के लिये स्थान मुफ्त देनेके उपलक्षमें महाराज कोल्हापुरको धन्यवाद, (२) धन्यवाद सेठ नाथारगजीको जो दो वर्षमें २४०) प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देते है, (३) शिखरजीका मामला सतोषकारक निवटनेके कारण बाबू बन्नूलाल, सेठ परमेष्ठीदास और सेठ माणिकचदजीका उपकार, (४) हुबलीमे कनडी छात्रोंके लिये एक बोर्डिंग स्थापन हो इसके लिये रा० रा० ब्रह्मप्पा तवनप्पवरने ५०१) दिये। सभापतिने २०००) दिये कि व्याजसे राजाराम कालिजमें सर्वोच्च जैन छात्रको छात्रवृत्ति दी जाय (५) प्रौढ विवाह किया जाय इस प्रस्तावको **शेठ माणिकचंद हीराचंद** जे० पी० ने इन शब्दोंमें एक जोरदार भाषणके साथ पेश किया।

"बालक और बालिकाओंकी लग्न बडी उम्रमें करनेसे उनकी प्रकृति अच्छी रहेगी, विद्याभ्यास अच्छी तरह चलेगा, तथा बाल वैधव्यके सकट कम होंगे"। (६) धर्मादे पैसेके उपयोगके प्रस्तावका

अनुमोदन करते हुए सेठजीने कहा कि धर्मादेकी इकट्ठी की हुई रकम सत्कार्यमें लगाना अपना कर्तव्य है, दूसरे काममें नहीं, इतना ही नहीं, उस पैसेको प्रत्येक गावके व्यापारी पचायत द्वारा एकत्र करके सत्कार्यमें लगा सकते है। बम्बई आदिमें ऐसी व्यवस्था भी चालू है। (७) हुबलीमे बोर्डिंग स्थापनके लिये एक कमेटी बनी, (८) मैसूर सर्कारने शालाओंमें धार्मिक शिक्षा देनेका जो प्रस्ताव किया है उसपर अभिनदन, (९) कोल्हापुर बोर्डिंगमे अलग जिनमदिर बाधनेकी स्वीकारता पर **भूपाल अप्पाजी जिरगेको** धन्यवाद। श्रीमती ककुबाईजीकी अध्यक्षतामे महिला परिषद हुई जिसम श्राविकाश्रम कोल्हापुरकी बाइयोंने व श्रामती **मगनबाईजीने** भाषण किया। मगनबाईजीने कहा कि "जैसे तुम लोग कभी २ अपने पुरुषोंसे गहनोंके वास्ते हठ करती हो ऐसे ही विद्या सीखनेके लिये हठ करो।" सभामें दो कन्याओंने मगनबाईजीकी स्तुति एक ललितपदमें की वह इस प्रकार है—

[चालः—'चद्रकांत राजाची कन्या सुगुण रूप खणी"]

धन्य! धन्य! तू सुगुणशालिनी **मगनबाई** भगिनी ॥
भूषविला स्त्रीसमाज आजी ज्ञानदान करुनी ॥ ध्रु० ॥
इहलोकी स्त्रीपुरुषा मोठे भूषण ज्ञान असे ॥
भगिनिजना ते प्राप्त हो वमें तुज चिंता विलसे ॥
कलिकालाचा दुस्तर फेरा अज्ञाना वितरी ॥
त्यायोगें ज्ञानाव जाहले समाज एकसरी ॥
भरतजननिच्या शुभ दैवाने आगलप्रभु मिलले ॥
ज्ञानबलें आयातें त्यानी उद्बिवत केलें ॥
आमुचा बनला जनसघ तव प्रागतीक जगतीं ॥
हिरे माणकें तयात रत्नें चमकती पुढती ॥

[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible], राजापुत

जक्कप्पा उर्फ आप्पा साहब देसाइ हुनगटीकर हुए। सेठ माणिक चंदजीने इनके अध्यक्ष स्थान लेनेके लिये अनुमोदन दिया। सभामें सेठ रामचंद्र नाथा आकलून व अनेक अजैन विद्वान् भी थे। इनमेंसे ता० ९ को अध्यक्षके भाषणके पीछे **बेलगांवके प्रसिद्ध वकील रा० रा० श्रीपादराव छत्रेने** व्याख्यान देते हुए कहा कि—

" ऋग्वेदके कालमे जैन मत उच्च दशामे था। ऋग्वेदकार जैन तीर्थंकरोंको बहुत पूज्य मानते थे। जैन लोग पाखंडी या नास्तिक नहीं है। "

बहुतसे प्रस्तावोंमें कई उपयोगी हुए जैसे (१) कोल्हापुर बो० के लिये स्थान मुफ्त देनके उपलक्ष्यमें महाराज कोल्हापुरको धन्यवाद, (२) धन्यवाद सेठ नाथारंगजीको जो दो वर्षमे २४०) प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देते है, (३) शिखरजीका मामला संतोषकारक निबटनेके कारण बाबू धन्नूलाल, सेठ परमेष्ठीदास और सेठ माणिकचंदजीका उपकार, (४) हुबलीमे कनडी छात्रोंके लिये एक बोर्डिंग स्थापन हो इसके लिये रा० रा० ब्रह्मप्पा तवनप्पवरने ५०१) दिये। सभापतिने २०००) दिये कि व्याजसे राजाराम कालिजमे सर्वोच्च जैन छात्रको छात्रवृत्ति दी जाय (५) प्रौढ विवाह किया जाय इस प्रस्तावको **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे० पी० [illegible] ोंमे एक जोरदार भाषणके साथ पेश किया।

"बालक और बालिकाओंकी उम्र बडी [illegible] ी प्रकृति अच्छी रहेगी, विद्याभ्यास अच्छी त[illegible] ।७ वैधव्यके संकट कम होंगे"। (६) धर्मादे पैसेके [illegible]

अनुमोदन करते हुए सेठजीने कहा कि धर्मादेकी इकट्ठी की हुई रकम सत्कार्यमें लगाना अपना कर्तव्य है, दूसरे काममें नहीं, इतना ही नहीं, उस पैसेको प्रत्येक गावके व्यापारी पचायत द्वारा एकत्र करके सत्कार्यमें लगा सकते हैं। बम्बई आदिमें ऐसी व्यवस्था भी चालू है। (७) हुबलीमें बोर्डिंग स्थापनके लिये एक कमेटी बनी, (८) मैसूर सर्कारने शालाओंमें धार्मिक शिक्षा देनेका जो प्रस्ताव किया है उसपर अभिनंदन, (९) कोल्हापुर बोर्डिंगमें अलग जिनमंदिर बानेकी स्वीकारता पर **भूपाल अप्पाजी जिरगेको** धन्यवाद। श्रीमती कंकुबाईजीकी अध्यक्षतामें महिला परिषद् हुई जिसमें श्राविकाश्रम कोल्हापुरकी बाइयोंने व श्रीमती **मगनबाईजीने** भाषण किया। मगनबाईजीने कहा कि 'जैसे तुम लोग कभी २ अपने पुरुषोंसे गहनोंके वास्ते हठ करती हो ऐसे ही विद्या सीखनेके लिये हठ करो।" सभामें दो कन्याओंने मगनबाईजीकी स्तुति एक ललितपदमें की वह इस प्रकार है—

[चालः—"चंद्रकांत राजाची कन्या सुगुण रूप खणी"]

धन्य! धन्य! तू सुगुणशालिनी **मगनबाई** भगिनी ॥
भूषविला स्त्रीसमाज आजी ज्ञानदान करुनी ॥ ध्रु० ॥
इहलोकीं स्त्रीपुरुषा मोठें भूषण ज्ञान असे ॥
भगिनिजनां तें प्राप्त हो कसें तुज चिंता विलसे ॥
कलिकालाचा दुस्तर वेग अज्ञाना वितरी ॥
यायोगें ज्ञानांध जाहले समाज एकसरी ॥
भगतजननिच्या शुभ स्थान आगलप्रभु मिळले ॥
ज्ञानबळें आर्यांतिं त्यांनी सुविदित केलें ॥
आमुचा बनला जैनसंघ तव प्रागतीक जगतीं ॥
हिरे माणकें तयांत रत्नें चराक्ती पुरती ॥

ज्ञानार्जनिं गृहिसघ पुढें हो स्त्रीसमाज मागें ॥
उरला देखुनि भगिनीहृदयी चिंता बहु जागे ॥
'अनभिषिक्त भूपा' ची कन्या धर्मशील बाला ॥
स्त्री उन्नति होण्यास स्थापी **श्राविकाश्रमाला'** ॥
त्या आश्रमिंच्या आम्ही बाला ज्ञानार्जन करनी ॥
सद्धर्मे वागेनी जाऊ भावोदधी तरनी ॥
स्त्रीवर्गावर मगनबाईनें केला उपकार ॥
जन्मोजन्मीं न हो! तयाचा आम्होंते विसर ॥
अनभिषिक्त राजा करवी हो! समाजहितकृत्यें ॥
स्त्रीउन्नतिपर कार्य होवो! भगिनीच्या हस्तें ॥
भो! **जिनवरा** जगन्मगला, ठेव सुखी आमुची ॥
राजकन्यका **मगनबाई** ही पित्यासवें साची ॥ १ ॥

तारंगाजीमें बम्बई प्रा० सभा व सेठजी।

सेठजी बम्बई आकर तुर्त ही **श्री तारंगाजी** पर्वतको रवाना हुए (यहां भी शीतलप्रसादजी शरीरमें रोगके कारण न जा सके) जहां बम्बई प्रांतिक सभाका ७ठा वार्षिकोत्सव मिती माघ सुदी २ से था। इस जल्सेके नियत किये हुए अध्यक्ष सेठ हीराचंद अमीचंद, शोलापुरनिवासी, श्रीमान् दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी० व अन्योंके साथ माघ सुदी १ प्रातःकाल अहमदाबाद पहुंचे। जैसिंहभाई हरजीवनदासकी तरफसे वालन्टियरोंने हारतोरे आदिसे सन्मानित किया। दोपहरको खेराळू स्टेशनपर आए। स्टेशनपर २०० भाइयोंके साथ सेठ लल्लूभाई लक्ष्मीचंद अध्यक्ष स्वागत कमेटी उपस्थित थे। स्वागत करके अनेक पताकाओंके साथ गाजते बजाते धर्मशालामें गए। यहां शामको दिगम्बर और श्वेताम्बर भाइयोंकी सभा हुई। जिसमें श्वे०

ने तारगाजीपर चलनेवाली तकरारको आपसमें निबटानेका वादा किया। रविवारको सबेरे पर्वतपर पहुंचे। पर्वतपर ठहरानेका सुप्रबन्ध था। ४००० आदमियोंके बैठने लायक मंडप था। रात्रिको हमारे सेठजीके सभापतित्वम उपदेशक सभा हुई जिसमे सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया सम्पादक "दिगम्बर जैन"ने सभाके लाभ बताए। सोमवारसे जल्से शुरू हुए। ६००० जैन एकत्र थे। ठाकुर साहब, पृथ्वीसिंह तखतसिंहजी व सर्कारी अमलदार वर्ग उपस्थित थे। सेठ माणिकचंदजीने सभापतिका प्रस्ताव करते हुए कहा कि हमारे सभापति इंग्रेजी मराठीके विद्वान, धर्मात्मा तथा एक प्रतिष्ठित पुरुष हैं। इनके बड़ोंने इसी तीर्थपर एक शिखरबंद मंदिरकी प्रतिष्ठा कराई है। सभामे १३ प्रस्ताव पास हुए, इनमे मुख्य ये थे (१) शिखरजीके निकालपर सेठ माणिकचंदजी आदिका आभार (२) मुम्बई समाचार, गुजराती व अन्य पत्रोंमें वीर संवत् व दि० जैन त्यौहारकी टीप रहे व इसका प्रबंध सेठ माणिकचंदजीके सुपुर्द हुआ। (३) जैनमित्रके सम्पादक शीतलप्रसादजी नियत हुए। तारगाजीमे सभाके उपदेशक खाते आदिके लिये करीब १५००) के चंदा हो गया। इसमे सभापति और सेठजी प्रत्येकने २०१) दिये। यहां मंदिरजीके ध्वजा दंड चढ़ाई गई जिसमें ५०००) की उपज हुई।

जैन महिलाओंकी एक भारी सभा सेठ हीराचंद अमीचंदकी धर्मपत्नी नवलबाईकी अध्यक्षतामे हुई। इसमे श्रीमती मगनबाईजीने **अहमदाबादमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम** स्थापित होनेकी आवश्यक्ता बताई और स्वयं १०००) देनेका उत्साह

बताया। तब और स्त्रियोंने भी चढ़ा दिया जो कुल ४०००)का हो गया। सेठ माणिकचंदजीके पूर्ण उद्योगसे सभाका काम निर्विघ्न हो गया, तब सेठजी बम्बई आये।

कोल्हापुरमें चतुरबाई सभागृहके लिये ४०००) खर्च।

सेठजीका कोल्हापुर जानेका बहुत प्रसंग रहता था। वहां भारी सभा भरनेको कोई सभागृह नहीं था। एक दफे आपके चित्तमें आई कि बन जाना चाहिये। इससे जैनियोंके सिवाय सर्व साधारणको भी लाभ पहुंचेगा। आप इमारत शुरू करानेके लिये नींवका पत्थर रखनेको मुम्बईसे चलकर ता. ११ मार्चको कोल्हापुर आए और एक भारी सभा करके युवराज राजाराम महाराजके हस्तसे अपनी स्वर्ग प्राप्त धर्मपत्नी चतुरबाईके स्मरणार्थ सभागृह बनानेका पत्थर रखवाया। बहुतसे बाहरके जैनी भी आए थे। इसमें ४०००) खर्चनेका विचार किया।

धर्मादेके प्रस्तावकी अमली कारवाई।

इस समारंभके पीछे सेठजीने कोल्हापुरके जैन व्यापारियोंके धर्मादे पैसेकी सुव्यवस्थाके लिये कहा, तब सबने कबूल करके कुछ भाग जैन बोर्डिंगमें देना स्वीकार किया। शाहपुरकी मंडलीने अपने यहांके धर्मादेको एकत्र कर एक जिन मंदिर बांधनेका प्रस्ताव किया। वास्तवमें यदि जैन व्यापारी वर्ग सच्चे दिलसे अपने २ यहांकी धर्मादकी रकमोंको जो पैसा वास्तवमें सर्व साधारणके लाभमें ही उपयोग आने लायक है, एकत्र कर एक साथ राय करके खर्च करें तो हर स्थानमें पाठशाला, औषधालय

आदि धर्मके काम सहजमें हो जावें। ऐसा करनेमें सत्यता व नेक नियतीकी जरूरत है। बडे २ व्यापारी बहुत धर्मादा काढते हैं वे ही देनेसे हिचकते है इसीसे योग्य उपयोग नही होता। धर्मादा द्रव्य हमारा नहीं है यह भाव यदि हो तो बडा उपकार हो सक्ता है। दूसरे दिन जैन बोर्डिङ्गके छात्रोंने सेठजीका बहुत सन्मान किया। सेठजी फौरन बम्बई आए। बडे ही आनन्द व आश्चर्यकी बात हे कि सेठजीको यात्रा करने व देश परदेश जानमे शरीर कष्ट व खर्चका कुछ भी खयाल नहीं होता था। वास्तवमे जो ऐसे ही **निरालसी दातार होते है वे ही कुछ कर जाते है।**

श्री अंतरीक्षजीमें मारामारी और सेठजीको भारी चिंता।

जैसे गृहारभादिके कामोंमे नाना चिन्ताए रहती है इसी तरह व्यवहार धर्मके साधनमे भी बहुतसी चिन्ताए हो जाती है। अब सेठजीको धर्म सम्बन्धी ही चिन्ताए रहा करतीं थी। श्री शिखरजीकी चिन्तासे कुछ मुक्त हुए थे कि यकायक **अंतरीक्ष पार्श्वनाथके** झगडेमे भारी चिता हो उठी। वरार प्रान्तमें अकोला स्टेशनसे ४० मील सीरपुर गाव है वहा श्री अतरीक्ष पार्श्वनाथजीकी भव्य दिगम्बर जैन मूर्त्तिसे शोभायमान एक जिन मदिर है। यह अतिशयकारी प्रतिमा है। यात्रार्थ आनेवाले श्वताम्बरी भी दर्शन करने जाने आने लगे थे। बम्बईसे एक सघ यात्राके लिये पन्यास मुनि आनदसागरजीके साथ वहा गया था। उसने श्वताम्बरी २ प्रतिमा व १ यत्र वहा सदाके लिये विराजमान करनेका उद्यम किया तब

वहाके दिगम्बरियोंने मना किया इसपर बोलचाल बढी । श्वे० के साथ तलवार बदूक आदि थी उससे ७ दिगम्बरी घायल किये गए। पुलिस आई। २० श्वे० व आनन्दसागरजीके ऊपर मुकद्दमा चलाया। इस सम्बन्धी विचारके लिये हीराबागमें फाल्गुन सुदी ८ को दिगम्बरियोंकी एक आम सभा राजा ज्ञानचदके सभापतित्वमें हुई । सेठ माणिकचदजी और प० पन्नालालने सर्व हकीकत वर्णन की । सर्व सभासद इसके लिये योग्य प्रबन्ध करें ऐसी प्रार्थना सेठजीने की । यह मुकद्दमा बहुत दिन चला इसमे सेठजीने तीर्थक्षेत्र कमेटीसे रुपयोंकी बहुत मदद दी ।

सेठजीका हुबली बोर्डिंगके लिये भ्रमण।

जातिसेवाके लिये कमर कसे हुए सेठजी शीतलप्रसादजीको लेकर ता० २९ मार्च ०९ को सबेरे बबईसे **बेलगांव** स्टेशन पहुचे । उत्तम प्रकारसे स्वागत हुआ । शामको जैन लोगोंकी तरफसे सेठजीके सन्मानार्थ सभा हुई । उसमे शीतलप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण देते हुए जैन बोर्डिंगके लाभ वर्णन किये । रा० रा० चौगलेने समर्थन किया व बेलगावमें भी ऐसे बोर्डिंगकी आवश्यकता बताई । बेलगावके अजैन वकील रा० रा० छत्रेने शीतलप्रसादजीके व्याख्यानकी प्रशसा पूर्वक अनुमोदना की । अतमे सेठ माणिकचदजीने कहा कि लोगोंकी इच्छा प्रमाण यहा भी बोर्डिंगकी जरूरत है पर यह काम एकदम नही हो सकता । स्थापनाके पहले बहुत परिश्रमकी आवश्यकता है।

रात्रिको यहासे बहुतसे महाशय हुबली सबेरे सेठजीके साथ पधारे । जैन बोर्डिंग खोलनेका मुहूर्त्त चैत्र सुदी ६ ता०

२७ मार्चको होगा ऐसी सूचना पाकर बहुतसे भाई परदेशसे आए थे जैसे मैसूरसे श्रीयुत अनतराजय्या, वर्धमानैय्या, दावणगिरीसे ब्रह्मप्पा आणा तवनप्पा आदि। ता० २७ को सवेरे शुभ लोर बोर्डिङ्गके स्थानपर जाकर सरस्वती पूजन हुई। व बोर्डिङ्गमें प्रवश होनेवाले छात्रोंको रत्नकरंड श्रावकाचारका पाठ दिया गया। श्री पायसागर स्वामी विदरेने स्थापन विधि की। शामको ९ बजे मंडपमें एक भारी सभा की गई जिसमें नगरके प्रतिष्ठित पुरुष भी आए। अध्यक्ष स्थान धारवाड जिलेके कलेक्टर **मि० हडसन** साहबने ग्रहण किया। रा० रा० चौगले बी० ए० एल्एल० बी० वकील बेलगामने उप्रमीम ठ० म० जैन सभा व बोर्डिङ्ग खोलनका उद्देश्य बताया व साहब बहादुरको प्रार्थना की कि बोर्डिङ्ग खोलें। अध्यक्ष महोदयने 'बोर्डिंग खोला गया' ऐसा जाहर करके कहा कि " जैन लोग प्राचीन कायदेके अनुसार विद्याकी तरफ जो ध्यान दे रहे है सो स्तुत्य है। विद्यामे जैन लोग आगे बढे ऐसी मेरी उत्कट इच्छा है।' कई भाषण हुए। शीतलप्रसादजीने जैनियोंकी प्राचीन गुरुकुल प्रद्धतिको समझाया तथा बोर्डिङ्ग उसीका कुछ अनुकरण है ऐसा बताया। बेलगावक धरणप्पा सेठीने कलेक्टरका आभार माना। बादशाह एडवर्डकी तीन जय बोलकर सभा समाप्त हुई।

रात्रिको पायसागर स्वामी विदरेके सभापतित्वमे सभा हुई तब शीतलप्रसादजीने श्रावकके पटकर्मपर कहते हुए धर्म शिक्षणकी आवश्यकता कालेजक छात्रोंके लिये बतलाई तथा इस बोर्डिंगरूपी वृक्षको द्रव्यरूपी पानीसे सींचनको कहा। रा० सा० चौगले व अन्यक समर्थन होनेपर उदारचित्त भाइयोंने इस भांति दान किया।

सेठजीका १०००) दान हुबली बो०।

१०००) दानवीर सेठ माणिकचंदजी।

५०१) तवनप्पा आप्पण्णा लेंगडे, शाहपुर।

५०१) धर्मराव सूबेदार, बेलगाव।

५०१) चडाप्पा भीमराव देसाई,

कुछ रकम फुटकर भी आई।

रात्रिको पायमागर विदरेके सभापतित्वमें फिर सभा हुई। ऐलक त्यागी पन्नालालजी महाराजके साथ जैनविद्री जाते हुए पं० पासु गोपाल शास्त्रीका दान पर भाषण हुआ। श्रीयुत यल्लाप्पा मटगणी कर मास्तरने स्त्री शिक्षा पर कहा। श्रीयुत बुरसेने हुबलीक शिक्षण फंडमे १२००) दिये। सेठजीके प्रयत्नसे बोर्डिङ्गके प्रबन्ध व धर्मादा रकमकी व्यवस्थाके लिये १३ महाशयोंकी स्थानीय कमेटी बनी। सेक्रेटरी श्रीयुत कृष्णराव बुरसे हुए तथा यह ठहराव हुआ कि धर्मादेकी रकम कोषाध्यक्ष जमा करके बोर्डिङ्ग, पाठशाला व जिन मदिरके लिये खर्च करें।

यहाके परदेशी श्वेताम्बरी लोगोंने एक प्राचीन दिगम्बर मंदिरको ठीक कराकर अपनी प्रतिमाएं विराजमान की है जिसमें दिगम्बर प्रतिमा भी है। इनकी ओरसे पाठशाला व कन्याशाला चल रही है। सेठजी व शीतलप्रसादजीने परीक्षा ली। फल अच्छा ही रहा। हुबलीसे सीधे बम्बई आए।

कर्नाटक देशमें हिन्दी भाषा।

हुबली कर्णाटक भाषी देश है। सर्व स्त्री पुरुष कनडी भाषा बोलते व लिखते है। यह भाषा हिन्दीसे गुजराती व मराठीकी अपेक्षा अनमिल है तो भी यह देखनेमें आया कि हिन्दी भाषा भी यहा वाले समझ लेते है व हिन्दी बोलनेवाले से हिन्दीमें बात कर लेते हैं। यह दशा देखकर भारतमे जो एक

राष्ट्रीय भाषा करना चाहते है उनको अवश्य यह निश्चय होना चाहिये कि **हिन्दी** ही इस सन्मानके योग्य है।

लल्लूभाई परीखके गुणकी कदर।

गुजरातकी दिगम्बर जैन कौम शिक्षामे बहुत पीछे पड़ी हुई थी, इसको विद्याकी ओर उत्तेजना देनवाले **दानवीर सेठ माणिकचंदजी** थे। बोरसद निवासी मेवाडा जातिके परीख **लल्लूभाई प्रेमानददास** एल० सी० ई० सेठजीके धार्मिक कार्योंमें पूर्ण मददगार थे और अब भी है। बम्बई प्रान्तिक सभाके सहायक महामंत्रीके सिवाय अहमदाबाद बोर्डिंगके मन्त्रित्वका काम बहुत ही दिलसे करते थे। आप इन्कमटेक्स ऑफिसमे अच्छे पदपर थे। सर्कारने इस समय इनको काम चलाऊ **डिप्टी कलेक्टरका** पद दिया तब सेठजीने इनके परिश्रम व उन्नतिका दृष्टान्त और गुजराती बालक लेवें इसलिये वैशाख वदी २ ता० ८ अप्रैल १९०९ को हीराबागमे एक आम सभा **आनरेबल मि० गोकुलदास कहानदास पारेख**के सभापतित्वमें की। इसमें जैन अजैन बहुतसे विद्वान् व प्रतिष्ठित पुरुष शामिल हुए। **सेठ हीराचंद नेमचद** शोलापुरने इनके जीवनका हाल कहते हुए वर्णन किया कि सन् १९०३ में यह एल० सी० ई०की परीक्षामें पास हुए तथा अपने परिश्रम और योग्यतासे केवल ५ वर्षमें ही ऐसे ऊंचे पदको प्राप्त हुए है। फिर **शेठ माणिकचदजीने** कहा कि इस उच्च पदपर पहुचनेका कारण इनकी **प्रमाणिकता** और **सत्यता** है। इनको बहुत ही जोखमदारीके काम मिले पर यह आज तक प्रमाणिकपनेसे

चलने आए है। **हमारे और बंधुओंको इनका अनुकरण करना चाहिये**। तब प्रमुखने कहा कि जैन कौम व्यापारमे धनी कुशल और बुद्धिशाली होती है ऐसे ही विद्यामें भी कुशल होनेका यत्न करना चाहिये। तब लल्लुभाईने कहा कि म इस मानके योग्य नही हू। कौमकी सेवा करना हर एकका फर्ज है। **सम्पूर्ण गुजरातमें हमारे दिगम्बर भाइयोंको विद्यामें अग्रसर करनेवाले हमारी कौमके दानवीर सेठ माणिकचंदजी है**, और मैं **जिस मान पानेका भाग्यशाली आज हुआ हूं वह दानवीर सेठके प्रतापसे ही है**। मैं सेठजीका अतःकरणसे आभारी हू।

महाराज बड़ौदा और सेठजी।

ता० ३ मईको श्री महाराज सयाजीराव गायकवाड बडौदाने कोल्हापुर जैन बोर्डिंग और श्राविकाश्रमका निरीक्षण किया। जैन कौमने बहुत सन्मान दिया। प्रोफेसर लट्टेने बोर्डिंग व श्राविकाश्रमका हाल सुनाया, तब महाराजने अपने भाषणमें स्त्रीशिक्षाकी बडी आवश्यकता दिखाई व कहा कि जैनियोंको ज्ञान प्रसारार्थ यत्न चालु रखना चाहिये। मैं अपनी प्रजाको शक्तिके अनुसार जो शिक्षण दे रहा हू उससे मुझे समाधान नहीं वह और बढना चाहिये। जैसे **सेठ माणिकचद पानाचंदजीने इस इमारतको बंधवा दिया** है ऐसे ही प्रत्येकको ऐसे कार्योंमे मदद करना चाहिये।

बवईमें त्यागी पन्नाला-लजीका केशलोंच। बम्बईमे त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराज जो केवल एक लगोटी मात्र परिग्रह रखते है, भिक्षावृत्तिसे एक दफे आहार करते हे, शीत उष्ण पवनकी परीषह सहते है, रात्रिको गमन नही करते हैं, ध्यान स्वाध्यायमे लीन रहते है, पधारे। आपके केशोंको अपने ही हाथसे लोंच करनेका समय आ गया, तव बवईवालोंने रथोत्सव किया व माधोवागमें पूजन व सभाए हुई। बाहरसे भी बहुत लोग आए। मिती वैशाख सुदी १९ बुधवार ता ७ मई १९०९को सवेरे ८ बजे हजारों नरनारियोंके मध्यमे अपने हाथसे अपने मस्तक, डाढी और मूँछके बालोंको आध घंटेमे पद्मासन बैठकर बडी शातिसे उपाड डाला। सर्व जन आश्चर्यमे भर गए उस समय सबके मनमे वैराग्य आ गया, बहुतोंने परस्त्री त्याग आदिके नियम लिये। त्यागीजीने थोडासा उपदेश केशलोंच करनेके पहले किया था। उसके व इस दृश्यके प्रभावसे उपस्थित मडली व खासकर सेठ माणिकचदजीके भाव चढ आए। उसी समय **औषधालयके** लिये ८०००) का चदा हुआ, जिसमें सेठ माणिकचद पानाचन्दजीने भी ९०१) दिये। सेठजीकी कुटुम्बकी स्त्रियोंने १०१) रु देकर स्त्रियोंमें २००) का चदा कराया। श्रीमती मगनबाइजीकी प्रेरणासे **श्रीमती केसरबाई बडदाहा** ने ११००) श्राविकाश्रमके लिये दिये। सेठ माणिकचदजीने अपने हीराबागके देशी औषधालयका नाम बदलकर **ऐलक पन्नालाल औषधालय** रख दिया और वह रकम इसी काममे खर्च होने लगी। यह दवाखाना बबईमे बहुत प्रसिद्ध हो गया है। वैद्य एक

जैनी शोलापुरका पढा हुआ बहुत योग्य है । इससे सैकडों गरीबोंको लाभ पहुच रहा है ।

वर्षातमे प्राय सेठजी बम्बई ही में ठहरे और धर्म-ध्यानमे लीन रहे । इस वर्ष शीतलप्रसादजीने दशलाक्षणीपर्व बोरसद ग्राममें सेठ चुन्नीलाल प्रेमानद मंत्री उपरैली कोठी शिखरजी बीम पथी कोठीकी प्रेरणासे विताया था और वहा १० दिन तक शास्त्र-सभामें सूत्रजीके अर्थके साथ २ धर्मोपदेश दिया था ।

कोल्हापुरमे सेठजीका गमन ।

भादोंके कुछ दिन पीछे ही सेठजी कोल्हापुर गए । वहा ता ९ सितम्बर ०९ को श्रीमती चतुरबाई हालमें दक्षिण महाराष्ट जैन सभाकी प्रबन्ध कारिणी सभाकी बैठक सेठजीके सभापतित्वम हुई, निश्चय हुआ कि कार्तिक अष्टान्हिकाम कोल्हापुरमें वार्षिक परिषद की जायव उसके साथ कलाकौशल्य और खेतीकी प्रदर्शनी दिखाई जाय । सभापतिक लिये श्रीयुत अण्णा तवनप्पावर नियत हुए । सर्व मेम्बरोंने अनेक कार्य्य बाट लिये । इसी अवसरपर श्री अनत जिनकी पचकल्याणक पूजा व नवीन मदिरकी प्रतिष्ठा करना भी निश्चय हुआ जो सेठ भूपाल जिरगेने बोर्डिंगके छात्रोंके लाभके लिये निर्मापण कराया था । सेठ भूपालने ३०००) से अधिक मदिर निर्मापणमे लगाए व २०००) की कीमतकी जमीन मदिर खानेको दी जिससे १००) वार्षिककी उत्पन्न हो ।

आश्विन वदी १२ ता० १२ अक्टूबर ०९को हीराबाग धर्मशालाम सभा हुई। सेठ शामलाल चादवड़ सभापति

हीराबागमें सभा व हुए। सेठ माणिकचदजी व अन्य अनेक **सेठजीके अनुकरणमें** भाई नासिक जिलेके मौजूद थ। बम्बई **२००००)का दान।** प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवेशन श्री मागीतुगीम मिती कार्तिक सुदी १२, १३ और १५ ता० २४–२५ और २६ नवम्बर ०९ को करना निश्चित हुआ था। उसके लिये सभापति हरीभाई देवकरणवाले सेठ हीराचद रामचद निश्चित हुए। स्वागतकारिणी कमेटीके सभापति सेठ गुलाबचदजी हीरालालजी धूलिया व मत्री सेठ शामलाल चादवड नियत हुए। हमारे सेठजीको उस बातका खयाल था जो बेलगावके लोगोंने हुबली बोर्डिंगकी स्थापनाके लिये जाते हुए सेठजीसे कहा था कि यहा बोर्डिंग होना चाहिये। आपने इस कार्यको करने लायक शाहपुर बेलगावनिवासी **धर्मप्पा सूबेदारको** पक्का किया जो कि जवाहरातके व्यापारी थे और बहुधा बम्बई आया जाया करते थे। सेठजीने २००००) बीस हजार रुपयेकी स्वीकारता करा ली। वह भी इस सभामें मौजूद थे। सेठजीने प्रेरणा करके कहा कि सूबेदार साहब कोई हर्षका समाचार प्रगट करना चाहते हैं। तब सूबेदार साहब उठे और प्रगट किया कि बेलगावमें बोर्डिंग-की बहुत बडी जरूरत है अतएव उसके लिये मैं अभी २००००) बीस हजारका सकल्प करता हू व आवश्यकता होनेपर दस पाच हजार और भी लगाऊगा।" इस समाचारको सुनके सभाको बडा आनन्द हुआ।

which group themselves as "Hindus" as the Jain Community of India is, it has no reasonable hope of success in the matter of obtaining representation in Council if it is left to take its chance with the general "Hindu" community

7 That the Jain Community of India fervently hopes and feels confident that your Excellency will be most graciously pleased to reserve one seat in your Excellency's Legislative Council for a member of the Jain Community of India

And Your Excellency's Humble Petitioner as in duty bound will ever pray

I have the honor to remain, Your Excellency's most obedient servant

I e Maneckchand Hirachand J P Bombay

Oftg President, Bharat Varshiya Digambar Jain Maha Sabha

Office —

Khurai, Dist Saugor C P

Dated the 2nd September 1909

(2)

Copy of the reply from the Home Department received under letter No 3843 dated 6th October 1909

The undersigned is directed to inform Mr Maneckchand Hirachand that his letter dated the 2nd September 1909 regarding the representation of the Jain Community on the Legis-

lative Council has been transferred to the Government of Bombay for disposal

Sd H C STAKE
Deputy Secretary
to the Government

(3)

No 5403 of 1909
General Department
Bombay castle, 15 the October 1909,

To

Maneckchand Hirachand Esquire offg president, Bharat Varshiya, Digambar Jain Mahasabha

Sir,

With reference to your memorial to His Exellency the Viceroy and Governer General of India dated the 2nd September 1909, praying that a seat in the Imperial Legis Lative council may be reserved for a member of the Jain Community, I am directed to inform you that a Number of seats have been reserved for the representation of minorities by nomination and that in allotting them the claims of the important Jain Community will receive full consideration

I have the honour to be,
Sir
Your most obedient servant
Sd/-
for Secretary to Government.

सेठ माणिकचंदजी अहमदाबादमें प्रेमचंद मोतीचंद दि० जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव करने व श्राविकाश्रम स्थापन करनेके लिये शीतलप्रसादजीके साथ आए। बाहरसे बहुतसे भाई आए थे। आसोज सुदी १० को सवेरे एक भारी सभा जुड़ी। नगरके प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद थे। सेठ माणिकचंदजी हीराचंदजीके प्रस्ताव करने और सेठ जेसिंहभाई गुलाबचंदके समर्थनसे ट्रेनिंग कालेजके प्रिन्सपल रा. सा. कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी बी ए ने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सेक्रेटरी लल्लूभाइने रिपोर्ट पढ़ी फिर शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगका कार्य्य संतोषकारक है ऐसा कहकर शुद्ध आहारके लाभ व अशुद्ध आहारके अलाभ बताते हुए हड्डीके संसर्गसे बनी हुई परदेशी शक्करके निषेधपर कहकर धार्मिक शिक्षाकी उपयोगिता बताई। सेठ हरजीवन रायचंद अमोदवालेने समर्थन किया फिर सभापतिने अपने भाषणमें कहा कि सेठ माणिकचंदजीका ध्यान शिक्षाप्रचार पर है, इससे मुझे बड़ा आनन्द है, तथा बोर्डिंगकी संस्थाएं रीति भांति सुधरती व मनमें एकाग्रता आती है। रात्रिको विजिटर्स कमेटीकी बैठक इमणावाले सेठ नरसी गंगादासके सभापतित्वमें हुई। पालीतानावाले मुनीम वरमचंदजी हरजीवनने मनोहर कविता पढ़ी। श्राविकाश्रम खोले जानेकी सूचना हरजीवन रायचंदने की। छोटेलाल घेलाभाई अंकलेश्वरने श्राविकाश्रमके लिये प्रबन्धकारिणी कमेटीका नाम सुनाए। सभापति सेठ माणिकचंदजी व मंत्री छोटेलाल घेलाभाई हुए। नारायणदास मोतीलालने २५०) बोर्डिंगमें दिये। शीतलप्रसादजीने

कहा कि धर्मशिक्षामें बालकोंको विशेष ध्यानकी जरूरत है। सम्पादक दि० जैनने बोर्डिंगके छात्रोंको जैनधर्मकी माहिती और नियम पोथी भेटमें दी।

श्राविकाश्रमकी स्थापना। आसौज सुदी ११ ता० २५ अक्टूबर १९०९ सोमवारको ७॥ बजे बोर्डिंगके सामने एक मकानमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रमकी स्थापनाका महूर्त बम्बईकी परोपकारिणी सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेनेवाली जमनाबाईजी सकर्इकी अध्यक्षतामें बड़ी धूमधामसे हुआ। तारगाजीपर पास हुए प्रस्तावके अनुसार अध्यापिका व उपदेशिका तय्यार करनेके लिये यह आश्रम खुला। इसमें धर्मशिक्षाके साथ उद्योग घरू व लिखना, बाचना सिखलाया जावगा ऐसा विवेचन श्रीमती ललिताबाईने किया। प्रमुखाने आश्रम खोलते हुए कहा कि धर्म और नीतिकी ज्ञाता पवित्र माता बनानेसे ही इस आर्यभूमिमें धर्मिष्ट और परोपकारी प्रजा रत्न उत्पन्न होंगे। अज्ञान माताकी अज्ञान प्रजा देशको अधम बनावेंगी। श्रीमती जमनाबाईजीने अजैन होनेपर भी ५१) भेट किये। श्रीमती मगनबाईजीने सर्वका आभार माना। यद्यपि बम्बईम सेठ माणिकचंदजीने कुछ मकान अलग करके श्राविकाओंको परदेशसे आनेके लिये पत्रोंमे नोटिस सन् १९०६ म ही दिलाया था परन्तु उससे सिवाय एक इन्दौरकी आनंदीबाईजीके और कोई नहीं आ सकी। इस बाईको मगनबाईजीने अपने ही साथ रक्खा व छ ढाला आदिका ज्ञान कराया। तब यह सलाह करके कि आश्रम ऐसे स्थानपर हो जहांसे विधवाएं सुगमतासे अपने देश भी जा सकें व

गुजरातका विशेष हित हो, सेठजीने अहमदाबादमें खोलनेका प्रबन्ध करा दिया। अब मगनबाई व ललिताबाई वहीं रहने लगीं और शिक्षादानमें मन वचन कायसे लीन हो गई। रात्रिकी सभामें ३००) का फंड आश्रमके लिये हुआ।

यह आश्रम अब बंबई आगया है। इससे बहुत लाभ हुआ है। जिस समय स्थापित हुआ केवल ४ बाइयें ही भरती हुई थीं। पर १ वर्षके भीतर २२ श्राविकाए हो गई जिनमें कन्याए ७, सधवाए ३ व विधवाए १२ थीं, जो आमोद, उाणी, बड़ोदा, वसो, शाहपुर, अंकलेश्वर, कलोल, सोजित्रा, जबूसर आदि ग्रामोंकी निवासिनी थी। इनमेंसे श्रीमतीव्हेन तबनप्पा तय्यार होकर अब बड़वाया जिला नीमाटकी कन्याशालामें शिक्षा दे रही हैं। प्रभावतीव्हेन शीतलसा शिक्षिकाका अभ्यास अहमदाबाद टेनिंग कालेजमें कर रही है।

सेठजीका काठियावाड़में भ्रमण।

श्रीगिरनारजी सिद्धक्षेत्र जूनागढ रियासतसे ४ मीलपर बहुत ही मनोज्ञ ऊचा व रमणीक अनेक प्रकार जंगलोंसे सुशोभित प्रसिद्ध पर्वत है इसको उज्जयतगिरि भी कहते हैं। यहासे श्री कृष्णके चचेरे भाई जैनियोंके बाईसवें तीर्थंकर **श्री नेमीनाथ** व वरदत्तादि ७२ करोड मुनि मोक्ष पधारे हैं। पर्वत पर व नीचे दिगम्बर जैन मंदिर है, जूनागढमें कारखाना है। यद्यपि इस तीर्थकी बहुत बड़ी सेवा परतापगढ जिला मालवाके दिगम्बर जैनियोंने की थी तथापि जबसे बंडी मन्नालालजी प्रबन्धकर्ता हुए अन्धेर बहुत होने लगा। यात्रियोंको कष्ट–जिसकी

शिकायेती चिट्ठिया सेठ माणिकचन्दजीके पास बराबर आती रही। हिसाब व भडारका भी कुछ पता नही। तीर्थक्षेत्र कमेटीने फार्म बार २ भेजे। सेठ चुन्नीलालने बहुत लिखा पढ़ी की पर फार्म हिसाबका भरकर नही पहुचा। वहा सब जगह श्वेताबर जैन पुजारी रक्खे हुए व मुनीम ब्राह्मण था। कटनीक सनकी ताकीदसे कमेटीने जब दिगम्बर जैन मुनीम भेजा तब उससे फौजदारी होगई। पर सेठजीने मुनीमको बराबर वहीं ठहरने दिया तथा उसको दूर करा कर परतापगढवालोंको बार २ लिखा गया कि ऐसी प्रबन्धकारिणी कमिटी बनाओ जिसमें बाहरक भी प्रतिष्ठित पुरुष हों व हिसाब बराबर प्रगट करो। कुछ भी सुनाइ न होनेपर सेठजीने अप्रैल १९०९ म मास्टर दीपचदजी उपदेशकको भेजा। यह १०–१० दिन ठहरे, बहुत समझाया पर सफलता न हुई। पत्रोंके द्वारा बहुत धमकी देनेपर वहासे शाह जवाहरलाल गुमानजी बम्बई एक नियमावली बनाकर लाये। इसको सहायक महामत्री लाला प्रभुदयालने ठीक कराई और कहा कि यही छपे व इसी तरह कार्रवाई हो, परतु ऐसा न हुआ। उन्होंने मनमानी नियमावली छपा दी व बाहरके मेम्बर प्रबन्धकारिणीसे हटाकर जनरल सभामें कर दिये तथा ८ वर्षका एक हिसाब भी सवत् १९५७ से १९६९ तकका जैनगजट ता० ८–९–०९ में प्रगट कर दिया। सेठजीने इन दोनोंको ठीक न समझा और परतापगढवालोंको लिखा कि आप गिरनारजी आवें मैं भी आता हू। वहा हम आप मिलके प्रबन्ध करें। सेठजीने आसौज सुदी १९ ता० २८ अक्टूबर ०९ मिती कायम करके २२ दिन पहले परतापगढ, भावनगर आदिके भाइयोंको

तक योग्य प्रबन्ध हो और नियमावली दुरुस्त न की जावे तब तक कोई यात्री श्री गिरनारजीके भंडारमें द्रव्य न देवें किन्तु तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें भेज कर रसीद मंगा लेवें। सेठजीने बड़े आनन्दके साथ ता. २९को पर्वतकी यात्रा की। श्री नेमनाथ स्वामीके चरणोंके वहां एक दिगम्बर जैन प्रतिमा कोरी हुई परम शांतताको लिये हुए है दर्शन कर शीतलप्रसादजीने उसी समय भक्ति रससे पूर्ण हो एक भजन बनाकर गाया। लौटते हुए सहस्राम्र वनमें आए। यहांसे नीचे जानेको रास्ता बहुत विकट है। यदि और जगहोंकी भांति यहांसे नीचे तककी भी सीढ़ियां बन जावें तो बहुत उपकार हो। ता. ३० को जूनागढ़ लौट कर सर्व देखभाल की। सेठजी कई सर्कारी अफसरोंसे मिले।

शेत्रुंजयकी यात्रा व अभिनंदनपत्र।

यहांसे चलकर ता. ३१ को पालीताना आए। नवीन दि० जैन मंदिरके रमणीक सभामंडपमें रात्रिको एक आम सभा श्वे० नगरसेठके सभापतित्वमें हुई। पहले शीतलप्रसादजीने धर्मोन्नतिपर व्याख्यान दिया फिर नगरसेठने सर्व उपस्थित नगरवासी भाइयोंकी तरफसे सेठजीको सन्मानसूचक अभिनंदनपत्र दिया व पढ़कर सुनाया और सेठजीकी सर्व जैनियोंके साथ इस समान दृष्टिकी बहुत २ प्रशंसा की कि " वह अपने बम्बईकी बोर्डिंगमें दिग० श्वे० स्था० तीनोंके विद्यार्थियोंको रख कर एकसा वर्ताव करते हैं। धर्मचंदजीने भजन गाकर मंडलीको प्रसन्न किया। ता. १ नवम्बरको सेठजीने सबके साथ बड़े आनन्दसे यात्रा की। यद्यपि सेठजी नीचेसे डोली पर गए थे पर ऊपर आदिनाथ मंदिरके बाहर ही डोली छोड़

केवल लकडीके सहारे ऊपर गए, यात्रा की और लौटे—सेठजीका साहस देखकर आश्चर्य होता था।

ता. १ को चलकर फिर सेठजी अहमदाबाद आए और अपने श्राविकाश्रमको देखकर उसकी व्यवस्था ठीक कराई तथा स निमित्त कि कोई बाई सर्कारी स्त्रीशिक्षकशालामें पढ़न भेजी जावे लक्ष्मीबाई फीमेल ट्रेनिंग कालेज व उसके बोर्डिंगको देखा। इसम ५० बाइयें हैं। यहां मांसाहार किसीको नहीं दिया जाता है।

यहांसे ता० २ की रात्रिको चलकर ता० ३को दाहोद आए।

सेठजीको मानपत्र।

यहांवाले बहुत दिनोंसे सेठजीको बुला रहे दाहोदमें पाठशालाके थे। स्टेशनपर गाजेबाजे सहित बहुत भाई लिये फंड व मौजूद थे। यहां १०० घर हूमड दि० जैनियोंके व दो जिनमंदिर है। मास्टर दहुलालकी अध्यापकी १ में वर्षसे पाठशाला चल रही थी। सेठजीने परीक्षा लिवाई। रात्रिको सभा हुई। शीतलप्रसादजीने धर्मपर व्याख्यान देते हुए। पाठशालाको चिरस्थाई करनेके लिये जोर दिया। तुर्त दानवीर सेठजीने १०१) दिये, बातकी बातमें २६००)का ध्रौव्य व ३६०) का चालू फंड हो गया। दूसरे दिन सबेरे मि० प्लैनकेन यूरुपियन डिप्टी कलेक्टरके सभापतित्वमें छात्रों व छात्राओंको इनाम बांटनेके लिये एक भारी सभा हुई। शीतलप्रसादने धर्मका स्वरूप कहा। सेठजीने बाबू बनारसीदास एम० ए० रचित जैन इतिहास सेरीज न० १ मंदिरोंमें कलेक्टर साहबको भेट की। पाठकोंको यह मालूम ही

है कि सेठजी यात्राके समय अपने बाहरके एक पैकेटमें बांटनेके लिये जैनधर्म व जीवहिंसा मांसाहार रोकनेवाली पुस्तकें हमेशा रक्खे रहते थे और जहां जिसको जब जो देनेका अवसर होता था हर्षसे देते थे व जबानी भी समझाते थे। बहुतसे इन्टेन सेकन्ड क्लासमें आपसे पुस्तक प्राप्त करते थे। सभापतिने इनाम बांटकर अपने भाषणमें कहा कि "विद्यार्थियोंको अन्य शिक्षाके साथ धार्मिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिये, **तथा यदि कन्याओंको योग्य सुशिक्षिता माता बनाया जावे तो तीन पीढ़ीमें यह भारत अपनी प्राचीन उन्नतिको प्राप्त कर ले।"**

इसी समय दाहोदके भाइयोंने सेठजीके सन्मानार्थ निम्नलिखित **मानपत्र** अर्पण किया—

नकल मानपत्र (दाहोद)।

मङ्गलाचरण।

तज्जयति परंज्योति, सम समस्तैरनन्तपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला, प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥१॥

दोहा।

धन्य दिवस तिथि आजकी, धन सम्वत्सर वार।
सभ्य कुमुद विकसित किरण, सभा चांदनी सार ॥ १ ॥

परम हर्ष ! परम हर्ष ?? परम हर्ष ???

भारतवर्षके विख्यात सूरत नगरमें एक प्रतिष्ठित नररत्न श्रीयुत् सेठ गुमानजीके सुपुत्र हीराचन्दजीके चार पुत्ररत्नों (मोतीचन्दजी, पानाचंदजी, माणिकचन्दजी, नवलचन्द्रजी) की उत्पत्ति हुई। पश्चात्

मोतीचन्द्रजीके पुत्र प्रेमचन्द्रजी, पानाचन्द्रजीके पुत्र रत्नचन्द्रजी, माणिकचन्द्रजीके पुत्री मगनव्हेन, नवलचन्द्रजीके पुत्र ताराचन्द्रजी हुए। स्वकीय नामकरणोंको अपने गुणोंसे विभूषित किया—"यथा नाम तथा गुण" इस कहावतको चरितार्थ किया। प्रथम ही तो बम्बईमें हीराचन्द्रजी गुमानजीके नामसे बोर्डिंग स्थापित किया, इन्हीं नररत्नोंने हीराबागका वृहद् न यात्रीगणोंके विश्रान्तिके लिये बनाया और आपहीके प्रयत्नसे अहमदाबाद, कोल्हापुर, जबलपुर इत्यादि स्थानोंमें दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापित किये है, धार्मिक विद्याके प्रचारार्थ उदैपुरमें एक पाठशाला स्थापित की है और स्याद्वाद पाठशाला काशी, तथा अन्यान्य पाठशाला तथा धर्म सम्बन्धी कार्योंमें तन मन धनसे सहायता करते रहते है और भारतवर्षीय धर्मसंरक्षिणी दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिकोत्सव (जम्बूस्वामीके मेले) पर श्रीमान् परम दयालु गुणज्ञ राजा लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० ने भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीका कार्य सम्पादन करनेके लिये आप ही को महामंत्री नियत किया था, सो आपने सहर्ष स्वीकार करके सपरिश्रम तन मन धन द्वारा स्वकीय धर्मनिष्ठामें दिगम्बर जैन तीर्थोंका सच्चा महदुपकार किया। और सम्मेदशिखर, गिरनारजी, शत्रुंजय, अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ, तारगा, मांगीतुंगी आदि तीर्थक्षेत्रोंपर कितनी विपत्तियां थी सो सर्व आपकी पूर्ण सहानुभूतिसे सहज ही मे दूर हो गई और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके अधिवेशन (सहारनपुर) मे सभापतिके आसनको सुशोभित करके आपने जैन जातिकी भरसक सेवा की थी। आप ९ वर्षसे दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा बम्बईकी तन मन

धनसे सेवा कर रहे है। हमारी न्यायशीला भारत गवर्नमन्टने भी आपको जे० पी० (Justice of the Peace) की पदवीसे विभूषित किया हे, और आज श्री वात्सल्यादि गुण मडित दानवीर महानुभाव माननीयका शुभागमन हुआ है। आपके मुखारविंदके दर्शनसे हम सर्व लोगोंको असीम हर्ष हो रहा है। आपने सपूर्ण जैन जातिपर जितने उपकार किये है उनके प्रत्युपकार करनेके लिये हम अशक्य हे। अत आपकी सेवामे यह तुच्छ अर्पणपत्रिका समर्पण करते है। और आशा रखते है कि आप इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और सर्व सभा शुद्धान्त करणसे कोटिश धन्यवाद देती हुई परम पूज्य श्री सर्वज्ञदेवसे प्रार्थना करती है कि चारों तरफ जैसी आपकी कीर्त्ति विस्तृत हे उसमे दिन दूनी रात्रि चतुर्गुणी वृद्धि होवे और आपको सहकुटुब चिरायु करें। अलमिति विस्तरेण। ॐ शान्ति शान्ति शान्ति।

कार्तिक वदी ७
वीर स० २४३९

दाहोद (पचमहाल)
की समस्त पचानकी, तरफसे—

सेठ चुनीलाल हंसराज,
गांधी जैचंद नाथजी,
गेबीलाल सुंदरलालजी वगेरे,

रात्रिकी सभामे शीतलप्रसादजीने निश्चय और व्यवहार धर्मपर इसलिये कहा कि यहा कई भाई मनसुख दादा स्व० के उपदेशसे केवल निश्चयावलबी हो रहे थे। उनको निश्चय साध्य व व्यवहार परम्पराय साधक है, ऐसा बताया। फिर सेठजीके बम्बई बोर्डिङ्गमें रह कर एलएल बी पास करनेवाले शा चदूलाल मेहता श्वेताम्बरी वकीलने धर्म और स्त्रीशिक्षापर असरकारक

व्याख्यान दिया। यहांसे सेठजी ता ४ को चलकर सूरत होते हुए ता ६ नवम्बरको बम्बई आए।

इतनेमें कार्तिककी अष्टान्हिका निकट आगई तब

मांगीतुंगीमें प्रा० सभा व सेठ नवलचंदजी। सेठजीको विचार हुआ कि इन्हीं दिनों बम्बई प्रान्तिक सभाका अधिवेशन तो मांगीतुंगीपर है और द० म० जैन सभाका कोल्हापुरमें है तथा दोनोंका मैं स्थाई सभापति हूं, दोनोंमें मुझे वहां जाना चाहिये इस विषयमें सेठजीने शीतलप्रसादजीसे सम्मति की, तब यही राय ठहरी कि कोल्हापुरमें प्रदर्शनी व पंचकल्याणकोत्सव है तथा जिन मंदिरकी प्रतिष्ठा है उसे सेठ भूपाल जिरगेने सेठजीकी प्रेरणासे ही निर्मापण कराया है इससे कोल्हापुर ही जाना ठीक है। तब शीतलप्रसादजीने कहा कि श्री मांगीतुंगी उत्सवकी शोभा आपके विना कुछ न होगी। तब आपने कहा कि हम अपने भाई नवलचंदजी व श्रीमती मगनबाईको मांगीतुंगी भेजेंगे व आप भी मांगीतुंगी जावें जिससे जलसा सफलतासे हो। कोल्हापुरमें आपके न जानेसे कुछ क्षति न पडेगी। इसी भांति तय हुआ। सेठजीने नवलचंदजीको बहुत समझाकर मांगीतुंगी जानेको सूरत लिखा और आप कोल्हापुर गए। सेठ नवलचंदजी सूरतसे मूलचन्द किसनदास कापड़ियाको साथ लेकर मांगीतुंगी गये। मांगीतुंगी नासिक जिलेमें २॥ मैल ऊंचा जंगलोंके बीचमें एक पर्वत है, यहांसे श्रीरामचंद्र हनुमानजी, नील, महानील आदि ९९ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। इस पर्वतके दो भाग हैं। एकको मांगी दूसरेको तुंगी कहते हैं। बहुत ही प्राचीन कालके तीन२ मंदिर हरएक पर हैं, जिनमें दिगम्बर

की गई। ता, २४ तक ५ वैठकें हुई जिनमें २१ प्रस्ताव पास हुए उनमें उल्लेख योग्य ये हुए.–(१) अहमदावादमें बाम्बके हमलेसे वचनेके कारण बडे लार्ड मिन्टोके लिये आनन्द प्रदर्शन करके तार भेजा गया (२) प्राथमिक शिक्षणका प्रसार हो, (३) नवीन कायदे कौन्सिलमें जैन प्रतिनिधि रखनेका बम्बई सर्कारने जो वचन दिया है इसके लिये सर्कारका आभार माना गया, (४) धर्मशिक्षणक प्रचारकी जरूरत। इसको पेश करते हुए सेठ हीराचद नेमचदने कहा कि इस महाराष्ट्र देशमे जव १०० मे २९ धर्मको जानते, तव उत्तर हिन्दुस्तानमें १००मे ७९ है, (५) खेती व व्यापार ये जैनियोंके मुख्य धंदे है इस लिये इनमें पाश्चात्य विद्याकी सहायतासे नवीन सुधारणा करनेका प्रयत्न जैन लोगोको करना चाहिये। इसका समर्थन करते हुए **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे. पी ने कहा कि कच्छी और माडवाडी लोग अपने देशसे फक्त डोरी और लोटा लेकर आते है और इस देशमे आकर थोड़े ही वर्षोंमें धनवान बन जाते है। इस उदाहरणको मनमे लेओ। उन लोगोंको अपने वरमे छुटपनमें ही व्यापारी शिक्षण मिलता है इसी तरह तुमलोग भी पद्धतिसे उद्योग करोगे तो सपन्न हो जाओगे।" वास्तवमें सेठजीके वचन बहुत उपयोगी है कारण जो बालकोंको बडे होने तक भी व्यापार करना नही सिखाते है वे व्यापार करने लायक नहीं बनते है। व्यापार करना भी एक शिक्षा है। जैसे और कला चतुराई शिक्षा विना नहीं आती ऐसे ही व्यापार करना नहीं आसक्ता है। (६) उपाध्यायोंको शास्त्रानुसार रीतिया जानकर संस्कार क्रिया आदि व उपदेशादि क्रियाए

करनी चाहिये। (७) स्त्री शिक्षा प्रचारार्थ श्राविकाश्रम कोल्हापुरको समाज आश्रय देवे इस प्रस्तावके समर्थनमें सौभाग्यवती गोदूबाई उपाध्येने प्लेटफार्मपर आकर भाषण दिया। (८) सभाके कार्योंमें द्रव्यकी सहायता की जाव इसका अनुमोदन सेठ माणिकचंदजीने किया और कहा कि जब तुम सभाको द्रव्य न दोगे उन्नति नहीं हो सक्ती। तब सभापति महोदयने ५०१) दिये, औरोंने भी दिया। इस वक्त सभामें शाहपुर बेलगावके धर्मराव आप्पाजी सुनेदारकी बहुत प्रशंसा की गई जिन्होंने बेलगाव बोर्डिंगके लिये २००००) देनेका बचन दिया था। पाचवे दिन सभामें पोलिटिकल एजन्ट व दीवानसाहब रघुनाथ व्यकाजी सबनिस आदि आए। सभामें धन्यवाद देनेका काम चल रहा था। तब सेठ माणिचन्दजीने दीवानसाहबको चार शब्द बोलनेके लिये विनती की। तब दीवान साहबने कहा कि 'कोल्हापुरमे जैनी बहुत हैं पर बहुत सुस्त है। अब इस परिषदके अविश्रात खटपट व सेठ माणिकचदजीके उदार कृत्यसे, इन लोगोंका लक्ष्य उन्नतिकी तरफ झुका है। हिंसा न करके प्रत्येक उत्तम काम मन बचन कायसे करो ऐसा अपना जैन धर्म कहता है। यह सर्व धर्मापेक्षा विशेष है। **"पृथ्वीके सर्व धर्मोंमें ऐसा कहनेवाला कि हिंसासे निवृत्त हो, यदि कोई धर्म है तो वह एक जैन धर्म ही है।"** इतनेमें महाराज सर्कारकी सवारी सभामें आ पहुची। सेठ हीराचद नेमचदने एक प्रशसनीय भाषणसे महाराजका स्वागत किया। फिर सेठ माणिकचदजीने महाराजको पुष्पहारादिसे सन्मानित किया। महाराम विदा हो गए। तब सेठ माणिकचदजीने

सभापतिको धन्यवाद दिया। आगामी वर्षके लिये श्रीयुत रावोबा आनन्दराव खाडेने अध्यक्ष स्थान स्वीकार किया। इस सभामे इसी साहूकारने इस बोर्डिंगमे एक व्यायामशाला बनवानेको ५०१) दिये व ५०१) शाहपुरके तवनप्पा आण्णा लेंगडेने होनेवाले वेलगांव बोर्डिंग व्यायामशालाके लिये दिये। ता २४ को पहली जैन महिलापरिषद सौ० फूलबाई भ्र० रावजी नानचद गाधी शोलापुरकी अध्यक्षतामें हुई। अनेक जैन व अजैन स्त्रियोंने भाषण कहे। ता २५ की शामको लेडी मूर मेकेन्जीके सन्मानार्थ सभा हुई। लेडी साहबाने अपने भाषणमे स्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी, कहा कि बालकके माता पिता यदि सुशिक्षित होंगे तब ही बालककी मानसिक शक्ति सुदृढ रह सकेगी। इस समारभमे प्रदर्शनी भी सभाने अच्छी सजाई थी जिसके खोलनेका म्हूर्त्त बम्बई सरकारके मुख्य कौन्सलर सर जान मूर मेकेन्जी द्वारा ता २९ नवम्बर ०९ को बड़े ठाठके साथ हुई। जैन बोर्डिंगके हातेमे मदिरकी पच कल्याण पूजापूर्वक प्रतिष्ठा महोत्सवकी विधि कार्तिक सुदी ५ से १२ तक दौर्बल्य शास्त्री द्वारा पूर्ण की गई। इस उत्सवमे सभाको जैनयोंमे जागृत्ति पैदा करनेका अच्छा मौका मिला। सेठ माणिकचंद और प्रोफेसर लट्ठेके दृढ प्रयत्नसे काम निर्विघ्न समाप्त हुआ। इसी वर्ष सेठजीने अपनी जिन्दगीके १००००) बीमेकी रकम प्रसन्न हो द० म० जैन सभाको प्रदान कर दी। फिर सेठजी बम्बई आए।

इन दिनों ऐलक पन्नालालजी इसी तरफ थे। शोलापुर वालोंकी इच्छानुसार आपने अपना केशलोंच मिती मगसर सुदी १ वीर सं० २४३६ ता १२ दिसम्बर १९०९ नियत किया था। अत शोलापुरमें बडी तैय्यारियां हो रही थी।

शीतलप्रसादजीके ब्रह्मचारी होनेका कारण।

शीतलप्रसादजी मागीतुगीजीसे बम्बई आकर एक दिन एकातमे विचारने लगे कि हे आत्मन्! अब तेरी स्थिति कैसी है? तुझे क्या कर्तव्य है? तुझे इस शरीरमे रहते हुए अनुमान ३१ वर्ष हो चुके। तेरा बडा भाई अनतलाल ८ मास हुए करीब ३८ वर्षकी आयुमे ही यकायक चलबसे। यदि तुमभी थोडी ही उम्रमे चल दोगे तो तुमसे कोई भी विशेष लाभ नहीं हुआ। तुम्हारा यह अमूल्य जीवन वृथा ही गया ऐसा होगा। इससे तुम्हें कुछ विशेष काम करना चाहिये। इस समय शीतलप्रसा-जीको अध्यात्मिक ज्ञानका मनन रहता था। जिसका कारण यह था कि चौपाटीके संस्कृत ग्रन्थोंमें श्री कुदकुदाचार्य महाराजकृत समयसार ग्रथकी तात्पर्यवृत्ति टीका बहुत सुगम थी। उसे एक दफे स्वय समझकर दुबारा श्रीमती मगनबाईजीको बचवाई व बृहद्, द्रव्यसग्रह और पंचास्तिकायकी संस्कृत टीकाका भी भाषाकी सहा-यतासे मगनबाईजीके साथ स्वाध्याय किया था व गोम्मट्टसार जीव-काडकी संस्कृत टीका जो चौपाटीपर थी उसका भी विचार किया था। इससे परिणामोंमें शुद्ध आत्म मननकी कुछ रुचि हुई थी। उस रुचिके ही कारण **अनुभवानद** नामका लेख जैनमित्रमें निकलने लगा था। सन् १९०९में कर्मयोगसे शीतलप्रसादजीको

ज्वरकी ऐसी बाधा रही कि बम्बईमें बहुत दवाई करनेपर भी वह दूर न हुई इससे यह लखनऊ गए। वहा १९ दिनमें ही ठीक हो गए। उसी बीचमें इनके मझले भाई जो कलकत्तेमें थे व जिन्होंने अपने उद्योगसे अनुमान एक लक्ष रुपये जवाहरातके काममें पैदा किया था सो लखनऊ आए। शीतलप्रसाद उनसे मिलकर बम्बईको लौटे। रास्तेमें इनकी इच्छा अध्यात्मप्रेमी वीरसेन स्वामीसे कारजा जाकर मिलनेकी हुई। यह अकेले भुसावलसे कारजा गये। वहा गंगादास देवीदास चौरे व प्रद्युम्नकुमारसे आत्मिक चर्चा करके बहुत आनन्द पाया। यहा स्वामी न थे। मालूम हुआ कि सिरपुर (अतरीक्ष) के पास मालेगावमे हैं। तुर्त वहा गए। तब ही अंतरीक्ष पार्श्वनाथजीके दर्शन किये। वहासे स्वामी अकोलाकी तरफ चल दिये थे तब यह उसी तरफको आए। वहा मालूम हुआ कि बनारसको रवाना हो गए। तब यह निराश हो अकोलासे बम्बई आए। यहा बंगलेपर जाते ही लखनऊका तार मिला जो यहा पहले ही आ गया था कि अनन्तलालका बोल बंद हो गया जल्द आओ। विश्वास न होनेपर फिर तार किया। जवाब ताकीदीसे बुलानेका आया। फिर यह लखनऊ लौटे। जब यह पहुचे अनन्तलालका आत्मा वहा न था। वह अन्यत्र जा चुका था शरीर भी स्मशानमें दग्ध हो चुका था।

उदास मन उनकी स्त्री और एक छोटीसी कन्या सजीवित थी। मालूम हुआ कि लकवा यकायक गिरनेसे बोलना बंद हो गया। हाथ कापता था इससे न तो कुछ बोल सकते और न लिख सक्ते थे। मनमें इच्छा होती थी कि कुछ जायदादके विषयमें कहें व कुछ

धर्ममें लगावें पर वचन और काय दोनोंकी क्रिया मानसिक भावको प्रगट करनेसे लाचार हो गई थी। अतमें तडफ२ कर सिर पटक२ कर बहुत दुःखसे ३ दिन ही बीमार रहकर प्राण त्याग दिये थे। धन होनेपर भी एक पैसेका भी दान न कर सके। इस असमय वियोग व **अनित्य ससारकी घटनाने शीतलप्रसादके चित्तमें बहुत बडा असर जमा दिया** और इनको अपने आपकी फिक्र पडने लगी। सबसे बडे भाई सतलालजी सकुटुम्ब थे। उन्होंने बहुत चाहा कि शीतलप्रसाद सब कारबार सम्हाले और गृह जजालमें फसे पर शीतलप्रसादका मन जो ८ दिनमें माता, स्त्री व लघु भ्राताके वियोगसे पहले ही उदास था, अब इस दृश्यके होनेपर कैसे जम सकता था। १९ व २० दिन बाद शीतलप्रसाद बबई आगए। और अमृतचद्र महाराजकृत समयसार कलशोंका अर्थ श्रीमती मगनबाईके साथ विचारने लगे। इन श्लोकोंमे अद्भुत रस है। इनका मनन चित्तको बहुत शान्ति देने लगा। इस दिन ये ही सब बातें याद आने लगीं। मनने कहा कि तू न तो गृही है न त्यागी—यह बीचकी अवस्था अच्छी नहीं। एक तरफ होजाना चाहिये, तुर्त ही श्री महावीर स्वामीका जीवन-चरित्र हृदयके सामने आ उपस्थित हुआ कि प्रभुने ३० वर्षकी आयुमें गृहवास छोड दिया था इसी लिये कि आत्माके भीतर भरे हुए रत्नत्रय भडारको प्रकाशमें लाया जाय। तू तो ३१ वर्षका हो चुका। आयुकायका कोई भरोसा नही। यह अवसर चुकेगा तो फिर भेद विज्ञान द्वारा आत्मोन्नति करनेका अवसर हाथ आना अति कठिन हो जायगा। ऐसा विचार त्यागकी ओर वृत्ति जमी

चढचले सुगम पद धरे मोक्ष वस्तीको ॥
पहुचे शिव तियको मिले तजे हस्तीको ॥ १४ ॥
यह छन्द अघहन दो चौं त्रय छैमें गाये ॥
वदि पदरस प्रथम साज मगमे उपजाये ॥
मन वचन शुचिकरि जो नरनारी गावे ॥
सुखोदधिमे डूब सव चित्त विकार मिटावे ॥

सवेरे शोलापुर पहुचे । सेठ हीराचद नेमचदके मकानपर ठहरे। यहा श्रीमती कंकुबाईजीको ही पहले यह खबर हुई थी और शोलापुरमें किसीने नहीं जाना ।

मगसर वदी १के दिन शहरके बाहर एक बडा भारी मडप बनाया गया तथा श्री जिनेन्द्रदेवकी प्रतिबिम्ब रथद्वारा लाकर अलग मडपमें विराजमान की गई थी। ८ बजे सवेरे ही १५००० नर नारी अपने स्थानपर बैठ गए थे । इनके बिठाने व शात करनेको शोलापुरके सेठोंके पुत्र नवयुवक वालन्टियर होकर चारोंओर खडे थे। जिससे सब चुप और शात थे प्रबन्ध बहुत अच्छा था। ऐलकजी महाराज उच्च आसनपर एक पत्थरशिला पर पद्मासन विराजमान हुए । प्रथम भजन हुए, फिर शोलापुर पाठशालाके एक विद्यार्थीने पडित सदासुखजी कृत सोलह कारण भावनामेंसे शक्तिस्तप नामकी भावनाको मराठीमे बडी ही शातिासे सुनाया । सेठ जीवराज गौतमने केशलोंचकी महिमा सूचक छपा पत्र पढा, जो वितीर्ण किया गया था । सेठ हीराचद नेमचंदजीने ११ प्रतिमाओंका स्वरूप, केशलोंचकी महिमा और विद्यादानकी सर्वोत्कृष्टता बताई। फिर ऐलक महाराजने मनुष्यजन्मकी दुर्लभता बताते हुए शीलव्रत धारने व दान धर्म करनेका उपदेश दिया। तब बहुतोंने परस्त्री त्याग व्रत लिया व

पर्वोंके दिनोंमें पूर्ण शीलव्रत ग्रहण किया। तब एक भाईने कहा कि आज इस नगरके हिन्दू मुसलमान सबने पशुवध करना बंद किया है तथा धीवरोंने ३ दिन तक मछली पकड़ना बंद रक्खी है। फिर शीतलप्रसादजीने त्यागीजीके व्याख्यानको दुहराते हुए दानार्थ प्रेरणा की तथा प्रगट किया कि सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुर श्राविकाश्रमके लिये ७०००) प्रदान करते हैं उसी तरह यहाकी पाठशाला यदि ऐलकजीके नामसे हो जावे तो महाराजकी स्मृति रहे। इसमे आपलोग सहायता कर प्रबन्ध करें।

इसका समर्थन कोल्हापुरके बुगटे महाशयने किया तथा किसीने हजार किसीने ५००) इस तरह बातकी बातमे १२०००)का चंदा दि० जैन पाठशालाके लिये होगया। एक अजैन मिलके मालिकने भी हर्षित हो ५००) रु० दिये। यह दानका प्रवाह रात्रि तक जारी रहा। इस अवसरपर सेठ नाथारंगजी गांधीने जो ५००००) का उपयोगी दान पहले कर चुके थे ९०००) और जैन बोर्डिंग शोलापुरमें अर्पण किये। तथा धाराशिवके सेठ नेमचंद वालचंदने प्राचीन जैन ग्रंथोंके जीर्णोद्धारके लिये ५०००) दान किये। ७५०) अमरावती जैन बोर्डिंगके लिये हुए व ३००) के करीब बोधेगावके भाइयोंको दिये गए।

शीतलप्रसादजी ब्रह्मचारी हुए।

दानकी अनुमोदना करके **शीतलप्रसादजीने** ऐलक महाराजके सामने अपना **प्रतिज्ञापत्र** रक्खा तथा प्रार्थना की कि मैं **ब्रह्मचर्य्य प्रतिमाके** नियम धारना चाहता हूं। ऐलकजीने आज्ञा दी। तब शीतलप्रसादजी मंडपसे बाहर गए। इधर ऐलकजीने करीब ९॥ के केशलोंच शुरू किया। इसी बीचमें शीतलप्रसादजी, जो

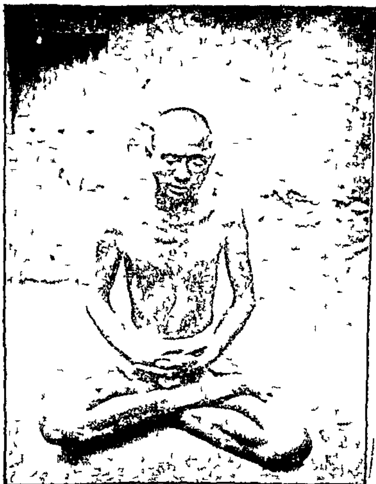
पहिले बाबूके लिबासमें थे अब गेरुए रंगका मुरेठा, धोती, चादर व रूमाल लेकर ऐलकजीके प्लेटफार्म पर आकर बैठ गए ।

पौन घंटेमें केशलोंच समाप्त हुआ। सर्व लोग इस दृश्यसे वैराग्यमे भर आए। इसी समय सेठ रावजी नानचदने ९ लाख रु के परिग्रहका नियम लिया । शोलापुरमें बडी भारी धर्म प्रभावना हुई । उसी दिन स्त्रियोंकी सभामें श्रीमती रखाबाई, कंकुबाई तथा मगनबाईजीके धर्मोपदेशसे १००) का चदा पाठशालाके लिये हुआ । शोलापुरमें यह पाठशाला श्रीमान् ऐलकजीके प्रतापसे १००००) से अधिक फंडको रखनेवाली बहुत उत्तम प्रकारसे चल रही है । ऐलकजीने शोलापुर जिलेमें घूमकर पाठशालाके फडके लिये द्रव्य एकत्र करानेमे बहुत परिश्रम उठाया ।

शोलापुरके लोगोंको शीतलप्रसादजीके ऐसे यकायक परिवर्तनसे आश्चर्यके साथ आनद भी हुआ ।

अब शीतलप्रसादजी नियमित रूपसे सामायिक आदि क्रिया करने लगे, एक दफे शुद्ध भोजन लेकर सतुष्ट रहने लगे। ऐलकजीकी सगतिमे दो दिन ठहरे । फिर आज्ञा लेकर बम्बई आए ।

अब यह चौपाटी बगलेमे न ठहर कर हीराबाग धर्मशालामे ठहरे । सेठ माणिकचदजी सुनते ही धर्मशालामें आए । और देख कर कायदेसे वन्दना की, हाथ जोड़े और आखोंमें आसु लाकर कहने लगे कि आपने मुझे कुछ खबर नहीं की नहीं तो हम बडा उत्सव करते । आपने जो यह व्रत ग्रहण किया है सो मुझे बडा आनन्द है । आप अच्छी तरह इसे पालिये पर **मुझे जो आप**



श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ब्रह्मचर्यावस्थामें

(देखो पृष्ठ ६१५).

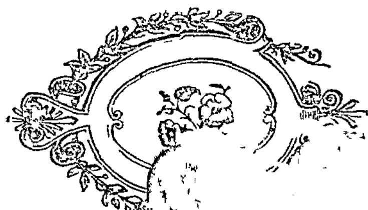
सहायता देते थे उसमें कभी कमी न कीजिये मेरा काम सब धर्मका ही काम है। मुझे आपने धार्मिक कामोंमे बहुत मदद दी है पर जब तक मैं जीवित हू तब तक मुझे आप मदद करेंगे तो मैं कुछ भी धर्म व जातिकी सेवामें अपने मन, वचन, कायको लगा सकूगा। शीतलप्रसादजीने कहा कि मेरे इन नियमोंके धारनेसे **आपके काममें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पड़ेगी।** आप निश्चिन्त हो जैसे धर्मकार्य करते थे वैसे ही करें। मुझसे जहाँतक बनेगा आपकी सहायताको तैय्यार रहूगा। आपका जो काम है सो मेरा ही है। इस तरह कहनेसे सेठजीको बहुत सन्तोप हुआ।

वास्तवमें जबतक बाह्यमे निवृत्ति मार्गको धारण नहीं किया जाता है तबतक चित्तके सकल्प विकल्प नहीं मिटते। तथा जबतक नियमोंकी प्रतिज्ञा नहीं होती तबतक मन बन्दर व इन्द्रियें काबूमे नहीं आती। और जबतक मन और इन्द्रियें स्थिर न हों तबतक ध्यान स्वाध्याय यथेष्ट नहीं हो सकता। और जबतक ध्यान स्वाध्याय नहीं हो तबतक आत्मोन्नति नहीं हो सकती। इस आत्मोन्नतिकी तरफ लक्ष्य धरना यही सर्वसे पवित्र काम मनुष्यके जीवनका है। इसके पथपर चलना और इसके विराधक काम, क्रोध, लोभ, मोह, शत्रुओंको विजय करते जाना यही वीरता व वीर पुरुषका कार्य्य है। आत्माकी उन्नति केवल बातें बनानेसे व अपनेको ज्ञानी व अकर्त्ता मान लेनेसे नहीं होती। ज्ञानपूर्वक रागद्वेषादि विकारोंको जब हटाया

जायगा तब ही आत्मध्यान होगा । आत्मध्यान है सो ही आत्मोन्नतिका सोपान है। कहा है—

तव सुद वद वङ्केदा झाण रह धुरन्धरो हवे जहा ।
तम्हा तत्तिय णिरदो तल्लद्धीए सदा होह ॥   (द्रव्यसंग्रह)

भावार्थ—जो तप करे, शास्त्र जाने, व्रत धारे सो ही ध्यानरूपी रथकी धुरीको धर सकता है। अतएव ध्यानकी सिद्धिके लिये इन तीनोंमें अर्थात् तप, शास्त्र और व्रतोंमें सदा लीन रहो ।



१२ वाँ अध्याय।

—

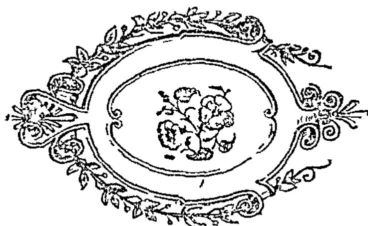
महती जातिसेवा तृतिय भाग।

श्रीमान् सेठ माणिकचन्दजी ऐसे पुरुषोंमें नहीं थे कि जैसे प्राय व जमींदार लोग होते हैं जो तकियेके सहारे पडे हुए अपना अमूल्य जीवन बिताते हैं और जिनके गावोंकी बंधी हुई आमदनी चली आती है, अथवा जैसे वे पेनशन याफ्ता होते हैं जो सर्कारसे माहवारी लेकर घरमें पडे हुए बच्चोंको खिलाया करते, चौसर सतरंज खेला करते व आलस्यमें पडे हुए इधर उधर करवट बदला करते हैं। सेठजी एक **कर्मवीर महान् आत्मा थे।** जिनको अपने जागनेके समयसे रात्रिके शयनके समय पर्यंत जाति हित, देशहित, जगतहितका ध्यान था। जिस दिन सेठजी सबेरे कुछ न कुछ जातिसेवा सम्बन्धी विचार, खटपट व दौड धूप नहीं कर लेते, थे तबतक उनको रोटी खाना अच्छा नहीं मालूम होता था। इस समय सेठजीकी अवस्था अनुमान ५८ वर्षकी थी। पैरमें चोट थी हीं, तौभी साहस व उत्साह २५ वर्षके युवानके समान था। ठंडकमें पैर देर तक रहनेसे आपके सांधेमें दर्द हो जाया करता था तौभी कभी उसके पीछे पड नहीं रहते थे। **अपने समयको वृथा न खोकर उपयोगमें लगाए रखना सेठजीके जीवनका मुख्य उद्देश्य था।**

जायगा तब ही आत्मध्यान होगा । आत्मध्यान है सो ही आत्मोन्नतिका सोपान है। कहा है–

तव सुद वद वञ्चेदा झाण रह धुरन्धरो हवे जह्मा ।
तम्हा तत्तिय णिरदो तल्लद्धीए सदा होह ॥ (द्रव्यसंग्रह)

भावार्थ–जो तप करे, शास्त्र जाने, व्रत धारे सो ही ध्यान रूपी रथकी धुरीको धर सकता है। अतएव ध्यानकी सिद्धिके लिये इन तीनोंमें अर्थात् तप, शास्त्र और व्रतोंमे सदा लीन रहो ।



१२ वां अध्याय।



महती जातिसेवा तृतिय भाग।

श्रीमान् सेठ माणिकचन्दजी ऐसे पुरुषोंमें नहीं थे कि जैसे प्राय व जमीदार लोग होते हैं जो तकियेके सहारे पडे हुए अपना अमूल्य जीवन बिताते है और जिनके गावोंकी बधी हुई आमदनी चली आती है, अथवा जैसे वे पेंशन याफ्ता होते हैं जो सर्कारसे माहवारी लेकर घरमें पडे हुए बच्चोंको खिलाया करते, चौसर सत रंज खेला करते व आलस्यमें पडे हुए इधर उधर करवट बदला करते हैं। सेठजी एक **कर्मवीर महान् आत्मा थे।** जिनको अपने जागनेके समयसे रात्रिके शयनके समय पर्यन्त जाति हित, देशहित, जगतहितका ध्यान था। जिस दिन सेठजी सवेरे कुछ न कुछ जातिसेवा सम्बन्धी विचार, खटपट व दौडधूप नहीं कर लेते, थे तबतक उनको रोटी खाना अच्छा नही मालूम होता था। इस समय सेठजीकी अवस्था अनुमान ६८ वर्षकी थी। पैरमें चोट थी ही, तौभी साहस व उत्साह २५ वर्षके युवानके समान था। ठंडकमें पैर देर तक रहनेसे आपके साथमें दर्द हो जाया करता था तौभी कभी उसके पीछे पड नही रहते थे। **अपने समयको वृथा न खोकर उपयोगमें लगाए रखना सेठजीके जीवन का मुख्य उद्देश्य था।**

सेठजीका पजाबमें गमन।

बहुत दिनोंसे सेठजी इस चिन्तामें थे कि प्रयाग, लाहौर, और आगरा कालेजोंमें अपने दिगम्बर जैन छात्र बहुतायतसे पढ़ते हैं। ये धर्ममें स्थिर रहें। लाला लाजपतरायके समान जैन कुलमें जन्म लेकर भी जैनधर्मको न जानकर भ्रष्ट न होवें इसीलिये इन तीनों स्थानोंमें आपका उद्योग जारी था। आगरा और प्रयाग तो एक दफे आप दौरा भी कर आए थे, पर लाहौर नही गए थे। लाहौरमे बाबू रामलाल सब-डिवीजनल ऑफसरसे बहुत दिनोंसे पत्रव्यवहार चल रहा था। सन् १९०९ दिसम्बरमें लाहौरमें राष्ट्रीय कांग्रेस होना निश्चित हुआ तथा इसी समय जैन यगमेन्स एसोसियेशनका वार्षिकोत्सव भी निश्चित हुआ। तब बाबू रामलालने सेठजीको लिखा कि यदि ऐसे समयपर आप यहा पधारें तो शायद बोर्डिंगका कुछ प्रबन्ध हो सके। सेठजीने शीतलप्रसादजीको यह बात बयान की। शीतलप्रसादजीने सेठजीको पुष्ट किया कि आप अवश्य चलें। आपके पधारनेसे अवश्य कार्यकी सफलता होगी। शोलापुरसे लौटनेको एक सप्ताह ही बीता था कि शीतलप्रसादजीको लेकर सेठजी लाहौरको रवाना हुए। साथमें प्रोफेसर ए० बी० लट्ठे एम०ए० को भी लिया। ता० २३ दिसम्बरको मेलसे चलकर ता २४ को **ललितपुर** आए। शीतलप्रसादजीके निमित्तसे एकदम नही जा सकते थे। पहले तार कर दिया था सो सेठ मथुरादास टडैयाने भले प्रकार स्वागत किया। शहरसे बाहर क्षेत्रपाल स्थानपर ठहरे। यहाका जिन मदिर बहुत रमणीक है। थोड़े दिन हुए महोबेमें कुछ प्राचीन

प्रतिमाएं मिली थीं जो सर्कारके कब्जेमें थीं। राजाराम बाबाकी प्रेरणासे तीर्थक्षेत्र कमेटी और भारतवर्षीय दि० जैन महासभाने लिखा पढ़ी करके छोटे लाट युक्तप्रान्तकी आज्ञासे उन प्रतिमाओंको प्राप्त किया। उनमेंसे श्रीअभिनन्दननाथकी करीब १२०० के सम्वत् की बहुतही ध्यानाकार २॥ हाथ ऊंची पद्मासन प्रतिमाको सेठ मथुरादासजीने लाकर यहा विराजमान की। शेष बाबामें रहीं। रात्रिको पाठशालाकी परीक्षा ली। यहा इस समय स्याद्वाद पाठशाला काशीसे विशारद परीक्षोत्तीर्ण प० ब्रजलाल दो मासमे अध्यापक थे। सेठ माणिकचन्दजीने सेठ मथुरादासजीको बहुत उपदेश किया कि आप यहा एक छात्रालय खोलें, उसमें बुंदेलखन्डीय छात्रोंको रखकर सम्स्कृतादि पढवावें। शहरके लडके विशेष नहीं पढते। उनका विद्वान् बनना कठिन है। शास्त्रसभामें कुछ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया।

लाहौर दि० जैन बोर्डिंगका प्रबन्ध

यहासे ता २५ को चलकर सीधे ता २६ को **लाहौर** आए। भावडा गलीके दिगम्बर जैन मंदिरके निकट एक मकानमें लाहौरवालोंने बडे सन्मानके साथ ले जाकर सेठजीको ठहराया। ता २६ और २७ को एसोसियेशनके अधिवेशन हुए। इनमें एक दिन शीतलप्रसादजीने श्रावक धर्म, प्रोफेसर लट्ठेने जैनधर्मका महत्व और प० **अर्जुनलाल** सेठी बी० ए०ने कर्म सिद्धान्तपर व्याख्यान दिये। सेठजीने बहुतसे इंग्रेजी पढे जैनियोंको स्वाध्यायका उपदेश देकर छ ढाला दौलतरामकृत याद करनेको कहा तथा जिसने स्वीकार किया उनको इसकी प्रतियें व जैन

नियमपोथी बाटीं। पहलीका उल्था शीतलप्रसादजीने श्री गजपंथाजीमें अपनी बीमारीकी हालतमें वीर स० २४३५ मार्गसीर्ष सुदीमें किया था व नियमपोथी श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणासे रची थी, ताकि जैनियोमे नियमोंके ग्रहणका प्रचार हो। इन दोनोंको मुफ्त बाटनेके लिये सेठजीने छपवा लिया था। ता २७ की रात्रिको दिगम्बर जैनियोकी खास बैठक हुई इसमें **दिगम्बर जैन ग्रेजुएट एसोसियेशन** स्थापित होनेका प्रस्ताव हुआ। श्वेताम्बरी जैनियोमे ऐसा एक श्वे० जैन ग्रेजुएट एसो० है जिसके द्वारा श्वे० समाजका बहुत कल्याण होता है। अपने दिगम्बर समाजकी सेवामें मुख्यतासे दिग० जैन पढे हुए ध्यान देवें इसलिये सेठजीके पूर्ण प्रयत्नसे इसका प्रस्ताव हुआ व प्रोफेसर लट्ठे मत्री नियत हुए। खेद है कि इसकी अबतक कोई अमली कार्रवाई न हुई। इसी समय सेठजीने पजाबमे बोर्डिंगकी आवश्यक्ता प्रगट की। सर्वने पसन्द किया तथा तय हुआ कि एक वर्षका चदा लाहौरवाले जमाकर बोर्डिंग चलावें, फिर पजाबके सर्व स्थानोंसे चदाका खास प्रबन्ध किया जावे। उसी समय **सेठ माणिकचंदजीने** १ वर्षके लिये २५) मासिक दिया, ऐसा ही २५) मासिक लाला जियालाल खजाची बगाल बेंकने दिये, यही मैनेजिंग कमेटीके सभापति और कोषाध्यक्ष नियत हुए। उसी समय १४०) मासिकका प्रबन्ध हो गया। मत्री बाबू रामचंद्र एम० ए० व उपमत्री बाबू शामचद बी० ए० बी० एस० सी० मास्टर सेन्ट्रेल ट्रेनिंग कॉलेज नियत हुए।

ता० ३१ दिसम्बरको मेनेजिंग कमेटीकी बैठक हुई जिसमें मुख्य दो नियम रक्खे गए—कि सर्व छात्रोंको धार्मिक शिक्षा लेनी

होगी व बोर्डिंगमें चैत्यालय रक्खा जाय ताकि सर्व छात्र नित्य दर्शन करें। छात्रोंको धार्मिक व्याख्यानोंको देनेका काम लाला प्रभूलाल और मुरारीलालजीने लिया। सेठजीने शहरमें नूमरर नई मकान देखकर बोर्डिंगके लिये आटे और खोलनेके लिये १ मासका समय दिया गया।

अमृतसरमें सेठजीका प्रयास।

यहासे ता १ को चलकर अमृतसर आए। लाला उमेदसिंह मुसद्दीलालने ठहरानेका प्रबन्ध किया था। यहा १४ घर दि०जैनियोंके है। कई लक्षपति मारवाड़ी हैं जैसे रामलाल, गनपतराय, परन्तु धर्मसे प्रेम नहीं है। एक जैन मंदिर है, उसमें दि० जैन प्रतिमाए हे परन्तु लोग दर्शन नही करते। अलग मंदिरके लिये चंदा ४५००) हो चुका है पर बना नहीं है। सेठजीने बहुत प्रेरणा की। ता २ को गुजराती मित्र मंडल लाइब्रेरीके मेम्बरों और स्थानकवासी जैनियोंने सेठजीके सन्मानार्थ सभा की। धर्मोन्नतिपर प्रो० लट्ठे और शीतलप्रसादजीने व्याख्यान दिया। यहा स्थानकवासी जैन पाठशालाको सेठजीने १०) की मदद दी व लाइब्रेरीमे पुस्तकें भेजना स्वीकार किया। यहा सेठजीने नानक शाही सुनहरी मंदिर देखा।

दिहलीमें जैन हाईस्कूलकी प्रेरणा।

ता० ३ जनवरीको दिहली आए पहाडी पर लाला जग्गीमलजीके कमरेपर ठहरे। यहाकी शालाओंका निरीक्षण कर सेठजीने छात्र व छात्राओंको मिठाई वितरण की। शामको शहरकी कन्याशाला देखी। ५) का इनाम दिया। ता०

४ की रात्रिको पहाडी धीरजमें आम सभा हुई, जिसमें प्रो० लठे और शीतलप्रसादजीने धर्मपर व्याख्यान दिया। ता० ५ की रात्रिको शहरमें लाला सुगुनचंदके मंदिरजीमें सभा हुई। इसमें उक्त दोनों महाशयोंने मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्य त्यागपर उपदेश दिया। बहुतसे भाइयोंने वेश्यानृत्य न करानेका व पर स्त्रीत्यागका नियम लिया। सेठ माणिकचंदजीने विद्योन्नतिपर कहते हुए दिहलीमें जैन हाईस्कूल और **बोर्डिङ्गकी आवश्यक्ता बताई।**

आगरा बोर्डिंगका प्रबंध।

यहांसे चलकर ता ६ को आगरा आए। ता ७ को मोती कटरेके बड़े मंदिरजीमे आम सभा हुई। शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगकी आवश्यक्ता बताई। इसका समर्थन भा० दि० जैन महासभाके महामंत्री मुंशी चम्पतराय, प्रोफेसर लठ्ठे और सेठ माणिकचंदजीने किया। सेठजीने ४०००) भेजकर हरिपर्वतके पास जमीन पहले ही ले दी थी। रायबहादुर बमडीलालने कहा कि आगामी पौष सुदी ६ को चौधरी मोतीलालके हाथसे मुहूर्त बोर्डिंग मकान बनानेका करा दिया जायगा। कमेटीके उपमंत्री बाबू अमृतलाल बी० ए० नियत हुए। चंदा देनेकी प्रेरणा करके सेठजी यहांसे बम्बई आगए।

सेठजीको पुत्रका लाभ।

श्रीमान् सेठजीकी धर्मपत्नी नवीबाईजीको कई मास पहलेसे गर्भ था। सेठजीको निराशा ही थी कि पुत्रका लाभ होना कठिन है। आपकी निराशाका बहुत बडा उदाहरण यह है कि एक दिन शीतलप्रसादजीसे आपने कहा कि मैंने अपनी स्त्रीके लिये बहुत कुछ जायदाद अलग करली है, पुत्रका

लाभ तो मुझे होना ही नहीं है। **मेरे तो बोर्डिंगके छात्र हैं सो ही मेरे पुत्र हैं।** मगनबाई व ताराबाईको बीस २ हजारकी जायदादके मकान दे चुका हू। ऐसा ही बडी कन्याको दिया है। यद्यपि वह मर गई है परन्तु उनकी पुत्री कमला है। अब मुझे कुछ और दान करना है। जुबलीबागमें ११००) मासिकके भाडे की आमदनी है इसको मैं अपने जीतेजी रजिस्ट्री करके पक्काकर दू। यह बात होकर आपने किसर मद्देमे देना सो खूब सोच विचारकरके वकीलसे ट्रस्टका मसौदा ठीक करा शीतलप्रसादजीके साथ रजिस्ट्रारके यहा जा रजिष्टरी करा दिया था। पुण्य योगसे मिती पौष सुदी १ स० १९६६ व वीर स० २५३६ ता० १२ जनवरी १९१० के दिन सेठानीने एक पुत्ररत्नको जन्म दिया। सेठजीको कुछ आनन्द तो हुआ पर उसके जीवनकी आशा नहीं इससे कोई विशेष न किया। क्योंकि एक पुत्र थोडे ही दिन पहले प्राणान्त हो चुका था पर सेठजीका पुण्य तीव्र था कि आपने अपने मरण समय तक इस पुत्रको सजीवित खेलता हुआ देखा। यह पुत्र जीवनचद अब अपनी माताकी रक्षामे शिक्षा पारहा है।

सेठजीके द्वारा महान् लाभ।

सेठजी मासाहार रोकनेके लिये अच्छी २ विज्ञापनकी छपी पुस्तकोंको बाटा करते थे। कलकत्तानिवासी बाबू रज्जूलाल जैनी जब यात्रा करते हुए बम्बई आए तब उनको उत्साही व उद्योगी जानकर (Uric acid) यूरिक एसिड नामकी पुस्तक दी थी। उक्त रज्जूलालने वह पुस्तक बेचूलाल चैरीटेबल डिस्पेन्सरीके डाक्टर आशुतोष बनर्जी एल एम एस को पढनेको

दी । डाक्टर साहबको अब तक मास व मत्स्यका त्याग न था, पुस्तक पढनेसे ऐसी घृणा हुई कि डाक्टर साहब और उनकी पत्नी दोनोंने मास मत्स्यका खाना त्याग दिया । इन अभक्ष्योंके छोडनेसे डाक्टर साहबकी कई बीमारियां जाती रहीं । सेठजीने सुनकर बडा आनन्द माना ।

बम्बईमें आम सभा । मिती पौष शुक्र १४ वीर स० २४३६ को बम्बई मारवाडी मदिरमें सभा हुई । उसमें दक्षिणकी यात्रासे लौटकर आए हुए अलीगढनिवासी पडित श्रीलालजीका व्याख्यान धर्मकी महिमापर हुआ । इसी दिन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिकोत्सवके लिये जो श्रीसम्मेद शिखरजीपर माघ सुदी १ से ५ तक होनेवाला था, बम्बई दि० जैन पचायतकी तरफसे **सेठ माणिकचद हीराचद** जे पी, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, प० धन्नालालजी, लाला प्रभुदयालजी आदि प्रतिनिधि चुने गए । माघ कृष्ण २ को हीराबागमें विलसन कॉलेजके सस्कृत प्रोफेसर श्रीयुत हरि महादेव भडकमकर बी० ए० के सभापतित्वमें सेठजीने सभा करवाई । इसमें पडित श्रीलालजीने जैनधर्म ही जीवका कल्याणकारी धर्म हो सकता है—ऐसा सिद्ध किया ।

सम्मेद शिखरजीमें महासभा । श्रीमन्त सेठ पूरणसाह सिवनी छपारा म-यप्रदेशने श्री शिखरजीकी तेरापथी कोठीमें एक नवीन जिन मदिर तैयार कराकर उसकी बिम्बप्रतिष्ठा कराई थी । इसकी बडी धूम हुई । मेलेमें ३०००० से अधिक मनुष्य आए थे । विद्वद्वर पडित नरसिंहदासजीके द्वारा बिम्बप्रतिष्ठाका समारम्भ एक बडे

भारी मंडपमें विधिपूर्वक हुआ। सभी प्रान्तोंके धनवान, विद्वान् व परोपकारी आगए थे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका १४ वा वार्षिकोत्सव माघ सुदी १ ता० १० फर्वरी १९१० से प्रारम्भ हुआ। इस उत्सवके लिये श्रीमान् **सेठ हुकमचंदजी** इंदौरनिवासी सभापति नियत हुए थे सो माघ वदी ३० ता० ९ फर्वरीको गाजेबाजेके साथ अपने पुत्र हीरालालके साथ १ हाथीपर विराजमान हो आए। सर्व भाइयोंने स्वागत करके मनोज्ञ डेरेमें ठहराया। बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी, ब्र० शीतलप्रसादजी, मूलचंद किसनदास कापडिया-सम्पादक दि० जैन भी आए थे। २॥ बजे दिनको जलसा शुरू हुआ। पहले ही श्रीमान् पंडित गोपालदासजीने मंगलाचरण किया। फिर महामंत्री मुंशी चम्पतरायजीने सभापति होनेके लिये सेठ हुकमचंदजीका प्रस्ताव किया। इसका समर्थन श्रीमान् सेठ मोहनलाल खुरई और श्रीमान् **सेठ माणिकचंद हीराचंद** जे. पी. ने किया। सेठजीने अपना भाषण पढ़कर १००००) महासभाके प्रबन्ध खातेमें दिये। कुल बैठकोंमें १९ प्रस्ताव पास हुए, जिनमें मुख्य ये थे-(१) सर्कारसे प्रार्थना-कि बड़े लाटकी धारा सभामें जैन जातिका प्रतिनिधि नियत किया जावे जैसा कि ता० १९-१०-०९ के पत्रमें आशा दिलाई गई है। व इसका तार भेजा जावे, (२) ११ प्रतिमाधारी ऐलक पन्नालाल और ब्रह्मचारी शीतलप्रसादके साहसपर हर्ष, (३) जैन बेंक खोला जावे, (४) वाइसरायसे प्रार्थना की जाय कि भादों सुदी ५ और १४ को जो दिगम्बरियोंके महान पवित्र दिवस हैं, तमाम भारतमें जाहर छुट्टी मनाई जावे, (५) सभापति-**दानवीर सेठ माणिकचंदजी** व महामंत्री सेठ हुकमचंदजी और कोषाध्यक्ष मुंशी चम्पतरायजी

हुए। इनको महामन्त्रीके पदसे १ वर्षको छुट्टी दी गई, (६) श्वेताम्बर दिगम्बरोंके परस्परके तीर्थ सबन्धी झगडोंको तय करनेके लिये यदि श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंस पच नियत करके भेज दे तो महासभा भी अपनी तरफसे पच नियत कर देगी।

बसन पचमीके दिनकी बैठकमें प्रस्ताव हुआ कि सेठ माणिकचद हीराचद जे पी० के अद्भुत कार्यकी कदर

सेठजीको दानवीर जैन करके 'दानवीर जैनकुलभूषण' का कुलभूषणका पद। पद अर्पण किया जावे व मुशी चम्पतरायने १४ वर्ष तक जो समाजसेवा की है उसके उपलक्ष्यमे "जैन जातिभूषण" का पद दिया जावे। पडित गोपालदासने आशीर्वाद सूचक शब्द कह कर **नारियल और निम्नलिखित मानपत्र** दोनों परोपकारियोंकी सेवामें भेट किया।

नकल मानपत्र (महासभा)

श्री वीतरागाय नम ।

स्थान श्री समेदशिखरजी, मधुवन
पो० पारसनाथ (हजारीबाग)

श्री वीर निर्वाण सवत् २४३६ मिती माघ शुक्ला ५ १४ फेब्रुवरी १९१०

सन्मानपत्र।

भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभाकी तरफसे श्रीमान् दानवीर सेठ **माणिकचंद हीराचंद** जे० पी० जौहरी बम्बईनिवासीकी

श्रीयुत मान्यवर महोदय,　　　सेवामें अर्पित।

आपने इस दिगबर जैन जाति और पवित्र जैनधर्मकी उन्नति करनेमें जो अपना तन, मन और धन लगाकर असीम परिश्रम उठाया

है तथा अब भी उठा रहे हैं इससे समस्त दिगंबर जैन समूह आपका अंत करणसे कृतज्ञ है। आपने अपने बुद्धिबल और अटूट परिश्रमके द्वारा न्यायपूर्वक व्यापार करके जो प्रचुर सम्पत्ति उपार्जन की तथा उसमेंसे कई लक्ष रुपयोंसे ममत्व छोड़ उसको मुख्यतया छात्रालयोंके द्वारा विद्यादान और धर्मशालादिके द्वारा अभयदानमें व्यय किया तथा धर्मायतन, तीर्थक्षेत्र और जैन मंदिरोंके रक्षार्थ अकथनीय परिश्रम उठाया तथा द्रव्य खर्च किया इत्यादि अनेक शुभ कृत्य करके आपने शास्त्रोक्त गृहस्थ धर्मका पालन किया है। यह बात सब जन समूहके लिये अनुकरणीय है। आपने लक्ष्मी उपार्जन करके भी कभी अपने धार्मिक नित्य नियमको नहीं छोडा तथा स्वयं शास्त्राभ्यासी रहकर अपनी सन्तानको भी प्रसिद्ध सद्विद्या रत्नसे विभूषित कर अपने रत्नस्वामित्वको सार्थक किया है। आपके इन्हीं सद्कृत्योंपर मोहित होकर गवर्नमेंटने जे० पी० (Justice of Peace) की तथा श्री दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाने **दानवीरकी** पदवि‍ए प्रदान की है, और यह भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा आपके उपकारकी ओर अपनी भक्ति प्रकट करनेके लिये आपको उन पदविओंमे भी विशेष **" जैन कुलभूषण "** की सुपदवीसे सम्मानित कर अपना हार्दिक प्रेम पुष्प अर्पण करती है। आशा है आप इसे स्वीकार कर जैनसमाजको कृतार्थ करेंगे।

द **हुकमचंद**
सभापति
भारतवर्षीय दि० जैन महासभा।

सेठ माणिकचदजीने अपनी लघुता प्रगट करते हुए उपरोक्त मानपत्र स्वीकार करके ९०१) महासभाके प्रबन्ध खाते, १०१) जयपुर जैन शिक्षाप्रचारक समिति व १०१) महासभाकी लाइफ मेम्बरीको दिया । डिप्टी चम्पतरायजीने भी अपनी आधीनता बताई और ९००) की छात्रवृत्तिया उन छात्रोंको देनेको कहा जो पंडित गोपालदासजीके पास धर्मशास्त्र पढेंगे । प्रबन्ध खातेमे और भी मदद आई (बाबू किरोडीचदजी आराने एक चित्र द्वारा शास्त्रोंके भंडारोकी दुर्दशा दिखाई व सरस्वती भवनकी आवश्यक्ता बताई। उसी समय अपील करनेसे ७००) वार्षिक उपजके वादे १० वर्ष तकके लिये हो गए । कई उपदेशक सभाए हुई। माह सुदी २ को शिक्षाप्रचारक समिति जयपुरका जल्सा हुआ। उसमे **ब्रह्मचर्याश्रम**की आवश्यक्ता बताई गई। उसके लिये बाबू गेंदनलालजीने १०००) नक्द प्रदान कर दिये। इस समय कुल फड २०००) का हुआ । अनाथालय हिसारको भी ८००) का फड हुआ । सेठजीने अपनी ओरसे कटनीनिवासी भाई मन्नूलालको एक सोनेका चाद अर्पण किया, क्योंकि महासभाके कामसे उसने सभासद आदि बढानेमें बहुत परिश्रम किया था ।

जलसा तीर्थक्षेत्र कमेटी। माह सुदी २ की रात्रिको भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका बडा प्रभावशाली अधिवेशन सेठ हुकमचदजीके सभापतित्वमें हुआ, जिसमें महामत्री सेठजीने अपनी रिपोर्ट सुनाई, जिसका बडा प्रभाव हुआ। बडी मन्नालाल गिरनार तीर्थके प्रबन्धक आए थे। सेठ हुकमचदजीके समझानेसे उन्होंने दूसरी कमेटी ठीक की जिसमें बाहरवाले भी मेम्बर हुए ।

रिपोर्टका साराश कहते हुए **सेठ माणिकचंदजीने** प्रबन्ध खातेमें द्रव्यकी जरूरत बताई तथा १०००) आपने दान किये। तब सेठ हुकमचंदजीने ५०१) दिये इस तरह ३१२२)का चंदा हो गया। सोनागिरजी व तेरापंथी कोठीके लिये कमेटिया बनाई गई। शिखरजी पर्वत रक्षाके लिए द्रव्य एकत्र करनेको भाई नियत हुए।

भा. दि. जैन महिला परिषद्का स्थापन।

श्रीमती मगनबाई, जानकीबाई, ललिताबाई, पार्वतीबाई, लाजवतीबाई, चदाबाई आदि पढी हुई धर्मकी जानकर बहनोंके उद्योगसे यह स्त्रीसभाए हुई। अनेक प्रकारके उपदेश हुए। ६०)की मुद्रित पुस्तकें पढी बहनोंको बांटी गई और स्त्री-शिक्षाके लिये ५५०)के अनुमान फंड हुआ तथा महासभाके समान सारे भारतको जगानेके लिये **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् स्थापन हुई**। इसकी प्रबंधकारिणी सभामें **श्रीमती मगनबाईजी मंत्री व पार्वतीबाईजी प्रमुखा** नियत हुई।

मंदिर प्रतिष्ठामें भंडारके जो २००००)के अनुमान आए सो पर्वतरक्षा फंडमें शामिल होनेको सेठ परमेष्ठीदास कलकत्ताको दिये गए।

उपरैली कोठीमें कलश व ध्वजा-रोपणोत्सव।

सेठजीने उपरैली कोठीके बड़े मंदिरजीके जीर्णोद्धारमें भंडारसे २५०००) खर्चकर एक बडा रौनकदार भव्य मंदिर कर दिया था, इसीपर ध्वजा चढानेका कार्य वसंत पंचमीके प्रातःकाल हुआ। कलश चढानेकी बोली सेठ सुखलालजी हजारीलाल छिन्दवाड़ाने ५५००) में, ध्वजा चढानेकी सूरतके जयचंद हीराचंद तासवालेकी विधवा कंकु-

बाईने १०००) मे ली। सेठजीने मदिर जीर्णोद्धार करनेवाले मिस्त्री जवेरदास व कोठीके सर्व कर्मचारियोंको मुद्रिका, कंठी, शाल दुशाले आदि इनाममें दिये । उपरैली कोठीके ट्रष्टियोंकी मीटिंग हुई। सभापति बाबू देवकुमारके स्थानमे बाबू गुलाबचंद अनरेरी मजिष्ट्रेट छपरा तथा मत्री सेठ हरसुखदास हजारीबाग हुए। कोषाध्यक्ष सेठजी ही रहे । सेठ माणिकचदजीके ध्यान देनेसे ही उपरैली कोठीके द्रव्यकी केवल रक्षा ही नहीं हुई, किन्तु मदिर धर्मशाला आदि सुधार होकर द्रव्यका सदुपयोग भी हुआ ।

सेठजीका दौरा। शिखरजीकी यात्रा भले प्रकार करके सेठ माणिकचदजी, शीतलप्रसादजी, मूलचद किसनदासजी कापडिया व श्रीमती मगनबाईजीके साथ ईसरी स्टेशनसे चल ता० १९ फर्वरीको **गयाजी** आए । यहा बुद्ध–गयाका मदिर देखा । यहा बुद्धकी मूर्ति बैठे-आसन दो गज ऊची है । एक हाथ गोदमे व एक हाथ लटकाए है । मदिरका शिखर १८२ फुट ऊचा है । इस मंदिरके पीछे पीपल वृक्ष है । कहते है यहा बुद्धको ज्ञान हुआ ।

काशी स्याद्वाद पाठशालाका वार्षिकोत्सव यहासे चलकर शेठजी ता २० को काशी आए । उसी दिन पाठशालाका वार्षिकोत्सव लाला भगवानदास एम ए. अग्रवालके सभापतित्वमें हुआ। १८ विद्यार्थियोंको १०० के करीब इनाम दिया गया । विद्याप्रेमी पार्सी जमशेदजी नौरोजी ऊनवाला भी आए थे । सभापति साहबने एक विद्वता पूर्ण भाषणमें कहा कि न्याय (तर्क) विद्या सत्य बात निर्णयके लिये



सेठजी ५० वर्षकी अवस्थामें.

बाईने १०००) मे ली। सेठजीने मदिर जीर्णोद्धार करनेवाले मि
जवेरदास व कोठीके सर्व कर्मचारियोंको मुद्रिका, कंठी, शाल दुश
आदि इनाममें दिये। उपरैली कोठीके ट्रस्टियोंकी मीटिंग हु
सभापति बाबू देवकुमारके स्थानमे बाबू गुलाबचद अनेरेरी मजि
छपरा तथा मत्री सेठ हरसुखदास हजारीबाग हुए। कोषाध्य
सेठजी ही रहे। सेठ माणिकचदजीके ध्यान देनेसे ही उपरै
कोठीके द्रव्यकी केवल रक्षा ही नहीं हुई, किन्तु मदिर धर्मशाल
आदि सुधार होकर द्रव्यका सदुपयोग भी हुआ।

सेठजीका दौरा।

शिखरजीकी यात्रा भले प्रकार करके सेठ माणिकचदजी शीतलप्रसादजी, मूलचद किसनदासजी कापडिया व श्रीमती मगनबाईजीके सा ईसरी स्टेशनसे चल ता० १९ फर्वरीको **गयाजी** आए। यहा बुद्ध-गयाका मदिर देखा। यहा बुद्धकी मूर्ति बैठे आसन दो गज ऊंची है। एक हाथ गोदमे व एक हाथ लटकाए है। मदिरका शिखर १८२ फुट ऊंचा है। इस मदिरके पीछे पीपल वृक्ष है। कहते है यहा बुद्धको ज्ञान हुआ।

काशी स्याद्वाद पाठशालाका वार्षिकोत्सव

यहासे चलकर सेठजी ता २० को काशी आए। उसी दिन पाठशालाका वार्षिकोत्सव लाला भगवानदास एम ए अग्रवालके सभापतित्वमें हुआ। १८ विद्यार्थियोंको १०० के करीब इनाम दिया गया। विद्याप्रेमी पार्सी जमशेदजी नौरोजी ऊनवाला भी आए थे। सभापति साहबने एक विद्वता पूर्ण भाषणमें कहा कि न्याय (तर्क) विद्या सत्य बात निर्णयके लिये

लिये यत्र तत्र जैन बोर्डिङ्गहाउस नियत किये, पाठशालायें स्थापित कराई, यात्रियोंके सुभीतेके लिये तीर्थक्षेत्रोंका सुधार किया, धर्मशालायें निर्माण करवाई, आपको इस पतित पावन जैन धर्म व धर्मात्माओंसे अत्यन्त प्रीति है। आपके इस सुकर्तव्यके लिये हम सम्पूर्ण जन व जैन मतावलम्बी आपको शुद्ध अन्त करणसे कोटिश धन्यवाद देते हैं और ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि आप जैसे धर्मात्माओंको सदा दीर्घायु बनावें।

भागगयो मनको तिमिर, भयो परम आनन्द।
पुण्य उदय दर्शन भये, **शीतल माणिकचन्द** ॥ २ ॥

आपका कृपाभिलाषी—

माघ शुक्ला १५ स १९६६ **दामोदरदास मन्त्री,**
जैनधर्मप्रवर्धिनी सभा, लखनऊ

यहाकी पाठशाला व औषधालयको देखकर सेठजीने प्रसन्नता प्रकट की। तथा इन कार्योके प्रबन्धार्थ एक नियमावली व प्रबन्ध कारिणी सभा बनवा दी तथा अयोध्या, रत्नपुरी और सहेट महेटके प्रबन्धार्थ कमेटी बनानेकी प्रेरणा की। भाईयोंने चैत्रमें होनेवाली रथयात्रामें बनाना स्वीकार किया।

यहा जैनसभाके मत्री लाला दामोदरदासजी शास्त्रज्ञाता, परोपकारी धर्मात्मा हैं। श्रीमती मगनबाईने कन्याशालाके लिये २०) मासिकका चदा कराया। मूलचन्द किसनदासजीने वेश्यानृत्य, बाललग्न आदि कुरीति निवारण पर उपदेश दिया। भाईयोंने आगामी प्रबन्ध करना स्वीकार किया। वास्तवमें सेठजी ऐसे परोपकारीकी सुपुत्री ऐसी शिक्षा प्रचारिका जैन स्त्री समाजके सुधारमें दत्तचित्ता

नकल मानपत्र (लखनऊ)

ॐ

श्रीमहावीराय नमः ।

दोहा ।

"शीतल" देखत शिथिल भये, सर्व कर्मके फन्द ।
भाग हमारे उदय भये, आये माणिकचन्द ॥ १ ॥

इस समय हम अपने परम पूज्य श्री वीतराग परमेश्वरको नमस्कार करते हुए, अङ्गमें फूले नही समाते है कि आज कैसा सुअवसर है, कि जिस महानुभावकी कीर्त्ति हम सब बहुत कालसे श्रवण करके अपने कर्णोको तृप्त किया करते थे, आज वही शान्ति छवि, अपने चन्द्रसम मुख कमलके दर्शन देकर हमारी नेत्ररूपी कमलिनीको प्रफुल्लित कर रही है व यों कहिये कि जिस प्रकाशमान चन्द्रमाके देखनेके वास्ते हमारे चितचकोर बहुत कालसे तृषित थे, आज वही शुभ चन्द्र स्वच्छ स्फटिक शोभाविरजिरजि श्री श्रेष्ठि **"माणिकचंद"** अपने पूर्ण रूपसे दर्शन देकर अपनी सौम्य चित्तहारी दृष्टिरूपी किरणोंसे हमारे हृदयको शान्ति और आनन्द उत्पन्न कर रहे है । महाशय ! हम आपकी प्रशंसा (स्तुति) करनेके लिये असमर्थ है क्योंकि सम्पूर्ण भारतवर्षमें जैन समाजमें ऐसा कौन जन होगा जिसके मुखसे आपका सुयश, कीर्ति, गुणगान व नाम न लिया गया हो ! जैन समाज व हम सकल लखनऊ निवासी श्रीमानके परम आभारी है, कि आपने अपने सुकृत्यसे सञ्चित किये हुए धनको अपनी मान बडाईके लिये व्यर्थ व्यय न कर जैन धर्म व जैन जातिके परमोपकारक मार्गमे लगाया । आपने विद्यावृद्धिके

लिये यत्र तत्र जैन बोर्डिङ्गहाउस नियत किये, पाठशालायें स्थापित कराई, यात्रियोंके सुभीतेके लिये तीर्थक्षेत्रोंका सुधार किया, धर्मशालायें निर्माण करवाई, आपको इस पतित पावन जन धर्म व धर्मात्माओंसे अत्यन्त प्रीति है। आपके इस सुकर्तव्यके लिये हम सम्पूर्ण जन व जैन मतावलम्बी आपको शुद्ध अन्त करणसे कोटिश धन्यवाद देते है और ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि आप जैसे धर्मात्माओंको सदा दीर्घायु बनावे।

भागगयो मनको तिमिर, भयो परम आनन्द।
पुण्य उदय दर्शन भये, शीतल माणिकचन्द ॥ ७ ॥

आपका कृपाभिलाषी–
माघ शुक्ला १५ स १९६६ **दामोदरदास मन्त्री,**
जैनधर्मप्रवर्धिनी सभा, लखनऊ

यहाकी पाठशाला व औषधालयको देखकर सेठजीने प्रसन्नता प्रकट की। तथा इन कार्योंके प्रबन्धार्थ एक नियमावली व प्रबन्ध कारिणी सभा बनवा दी तथा अयोध्या, रत्नपुरी और सहेट महेठके प्रबन्धार्थ कमेटी बनानेकी प्रेरणा की। भाईयोंने चैत्रमें होनेवाली रथयात्रामें बनाना स्वीकार किया।

यहा जैनसभाके मन्त्री लाला दामोदरदासजी शास्त्रज्ञाता, परोपकारी धर्मात्मा है। श्रीमती मगनबाईने कन्याशालाके लिये २०) मासिकका चंदा कराया। मूलचन्द किसनदासजीने वेश्यानृत्य, बाललग्न आदि कुरीति निवारण पर उपदेश दिया। भाईयोंने आगामी प्रबन्ध करना स्वीकार किया। वास्तवमें सेठजी ऐसे परोपकारीकी सुपुत्री ऐसी शिक्षा प्रचारिका जैन स्त्री समाजके सुधारमें दत्तचित्त

थी कि जहा पधारें वहा अवश्य सुधार होता है। यहासे ता० २५ को चल २६ फर्वरीको बम्बई आए।

लाहौर बोर्डिङ्गकी स्थापना और सेठजीको हर्ष।

जिस बातको चाहते हो यदि वह हो जावे तो चित्तकी आकुलता मिटती है। और आकुलताके मिटनेसे ही सुखका अनुभव होता है। कई वर्षोंसे सेठजी पजाबमें बोर्डिंग हाउस स्थापित कराना चाहते थे सो ता० ३० जनवरी १९१० के दिन लाहौरके दिगम्बर जैन पचानने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार बोर्डिंग खोल दिया। उस दिन १० छात्र भरती हुए। सेठजीके पास जब पत्रद्वारा खबर आई, आप बडे ही आनन्दित हुए। यह बोर्डिंग अभी तक उन्नतिरूपमें चल रहा है। १ वर्षमें ही २३ छात्र हो गए थे अर्थात् लॉ कालेज (कानून) के ५, बी० ए०के ३, एफ० ए०के ७, इञ्जीनियरिंग ४, मैट्रकुलेशन २ और मिडिल्क दो।

धर्मशिक्षा छ ढाला दौलतरामकृत पढाया गया व लिखित उत्तरोंसे परीक्षा ली गई। फल अच्छा रहा। पारितोषिक भी दिया गया। आगे वर्षोंमें द्रव्यसग्रह, तत्त्वार्थसूत्र तककी पढाई होती रही है। बोर्डिंग जब खुला तब ही **लाला देवीसहाय** फीरोजपुर छावनी और **लाला लक्ष्मीचंद** इच्छाराम कम्पनीवालोंने देखा और उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर २५१) और २००) की क्रमसे सहायता दी।

वर्तमानमे करीब ४०के छात्र हैं। मकान अभी किरायेका ही है पर जमीन बहुत मौकेसे मिल गई है। कोई धर्मात्मा सेठ

माणिकचन्दजीके जीवनका यदि अनुकरण करके बोर्डिंग बना दें तथा खर्च जो कि कठिनतासे चलता है उसके लिये कुछ ध्रौव्य फंड दे दें जिसके ब्याजसे काम चले तो पंजाबमें जैनधर्मका झंडा गाडनेके समान महान पुण्य बंध हो। मंत्री लाला रामलालजी व उपमंत्री बाबू शामचंदजी बी० ए० व सभापति लाला जियालाल खजांची इस संस्थाकी उन्नतिमें दिनरात दत्तचित्त रहते हैं। लाहौरमें १०० जैनी छात्र कॉलिजोंके पढनेवाले हैं। स्थान बिना चाहे जहां रहकर धार्मिक ज्ञान व आचरणसे भ्रष्ट हो रहे हैं। यहां पर पहले छात्रोंके खयाल आर्य समाजी थे पर अब सब जैन धर्मके गौरवको समझ गए हैं और अपने अनेकान्तमई तत्वके सामने एकांत तत्वोंको तजने योग्य ही जान रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि इस छात्राश्रमसे लाभ लेकर आजीविका पर लगे हुए परमानंद एम० ए० सियालकोटसे अपने ता० २१ सितम्बर १५ के पत्रमें लाला रामलाल मंत्री बोर्डिंगको लिखते हैं कि मैंने यहां तीन वर्ष रहकर उन अमूल्य जैन धर्मके रत्नोंको जाना है जिनको मैं बिल्कुल भूल रहा था। अब मुझे घमंड है कि मैं जैन धर्ममें पैदा हुआ। मैं छात्राश्रमके उपकारको कभी भी भूल नहीं सक्ता। आपके इंग्रेजीके कुछ वाक्य ये हैं —

Ram Kaur Lane
SIALKOTE CITY
21-9-15

my dear

I have lived for full three years at the Lahore Jain Boarding House Unless I am to

be ungrateful and thankless, I cannot possibly forget it I have no hesitation in adding that the institution shall always be near and dear to me The Jain Boarding House has afforded me an invaluable opportunity for realising what Jems are embedded in the jain religion and how miserably I was neglecting them. I come out of the Boarding House as a Jain, proud of Jainism and its brilliant heritage I shall always look upon the institution as one which has been a means of providing me with an eyeopener in the matter of religion May to Jainedia that my interest in Jainism may be ever-increasing

I am,
Yours very Sincerely,
PARAMANAND (M A)

पाठकगण । इमसे समझेंगे कि पजाबमें जैनधर्मकी जड इस छात्राश्रमने जमादी है। सेठ माणिकचदजीकी दीर्घदृष्टिकी प्रशसा सहस्र मुखसे भी नही हो सक्ती । कॉलिजोंके साथ जैन बोर्डिंगका होना ही विद्वान छात्रोंको जैन धर्मका प्रेमी बना सक्ता है। अन्यथा एकान्त मतके रगोमें रग जाना नव युवकोंका बहुत सुगम है। धनवानोंको जिनमदिरसे भी अधिक पुण्य श्रद्धानको दृढ करानेवाले उपायोंके लिये द्रव्य खरचनेमें होता है। ऐसा जान इन पजाब बोर्डिंगको पक्का कर देना एक अमूल्य धर्मका अग होगा। क्या सेठ माणिकचदजीके समान धनबान देहली, पानीपत, फीरोजपुर, अम्बाला

आदिमें नही है? अवश्य है। केवल उदार बुद्धि व परोपकार दृष्टिकी आवश्यक्ता है। जिन सेठ माणिकचन्दजीने अनेक बोर्डिंग स्थापित किये तो क्या पजाबके धनाढ्य मिलकरके भी एक बोर्डिंगको भी पक्का नही कर सक्ते?

सेठजीका विद्याप्रेम। सेठ माणिकचन्दजी सदा ही गुणग्राही और गुणवानोंका मान करते रहे हैं। सहारनपुर निवासी बाबू जुगमन्दिरलाल एम० ए० हैं। यह पहले अलाहाबादमें थे, जब ही से इंग्रेजी 'जैन गजट'की सम्पादकी करनी शुरू की। फिर आप बैरिष्टरी आदि कई परीक्षाओंको पास करनेके लिये विलायत गये। वहा करीब चार वर्ष रहे। जब शिखरजी पर बगले बाधनेकी आपत्ति आई तब सेठजीने आपको विलायत लिखा था। आपने अपने ता० २ अक्टोबर १९०७ के पत्रमे लिखा कि **यह सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है। मैने ४ दफे शिखरजीकी यात्रा की है और कुल पर्वतकी प्रदक्षिणा दी है। यदि उसके कहीं पास भी शराब मांसका संसर्ग होगा तो यह बडी आपत्ति होगी।**

कुछ वाक्य यह हैं—

It will be indeed a sad sight that after so many centuries meat and wine may be sold and taken, and perhaps even prepared in the near vicinity of Sikharji, it is tragic I have myself made this round four times my Pilgrimage to Sikharji

आपने वहा इग्रेजोंमें बहुत उद्योग किया और पार्लियामेन्ट तक यह बात पहुचाई। बाबू साहबको जैन धर्मका प्रेम बाल्यावस्थासे ही था। आप बडे धार्मिक थे। इसी सस्कारसे आपने विलायतमे भी जैन धर्मका उपदेश जब जिससे अवसर बात करनेको मिला उसको दिया तथा सन १९०९ में वहा एक जैन लिटरेचर सोसायटी कायम कराई जिसके मत्री **मि० हर्बर्ट वारन** (न ८४, शेल गेट रोड, लडन एम० डबलू०) नियत किये जो बाबू साहबकी संगतिसे जैनधर्मके पक्के श्रद्धालु हुए। इसमें हमारे सेठजी भी १ पाउन्ड भेजकर मेम्बर हुए। आप ता० ११ मार्च १९१० को जहाजसे बम्बई उतरे, उस समय सेठ माणिकचदजी डाकपर आपको लेने गए और सन्मान पूर्वक अपने ही चौपाटीके रत्नाकर पेलेसमें उतारा। आपने एकान्तमें उक्त बाबू साहबको लेजाकरके बातचीत की जिससे आपको निश्चय हो गया कि जुगमन्दिरलालजीने अपना खानपान भ्रष्ट नही किया है। सेठजीने स्नानादि कराया और अपने साथ चैत्यालयमें ले गए। उस समय बाबू साहबने बडे भावसे श्री चद्रप्रभुस्वामीकी ध्यानाकार प्रतिबिम्बके दर्शन किये और नमस्कार किया। फिर थोड़ी देर सामायिक की। उक्त बाबू साहब विलायतमें भी नित्य सामायिक करते थे। यह आपकी नित्यकी क्रिया है। जब सेठजी चौकेमे भोजन करने गए अपने साथ ले गए, और एक ही पक्तिमें बैठ भिन्न २ थालोंमे सेठजी व दूसरोंके साथ बाबू साहबने भोजन किया। सेठजीके इस धार्मिक प्रेमसे बाबू साहबके चित्तपर बहुत बडा असर हुआ।

इसी अवसरपर खुरजेवाले पंडित सेठ मेवारामजी दक्षिणकी यात्रासे लौटकर बम्बई आए थे और इसी तारीखकी रात्रिको आपका व्याख्यान नियत हुआ था। जिसके छपे नोटिस वितरण हो चुके थे। सेठजी रात्रिको हीराबाग लैक्चर

पंडित मेवारामजीका व्याख्यान।

हॉलमें उक्त बाबू साहबको ले गए। सभामें जैन अजैन अनेक प्रतिष्ठित भाई थे। प्रथम ही ब्र० शीतलप्रसादजीने मंगलाचरण करके सभाका हेतु कहकर कहा कि आज पंडित मेवारामजी "जगत्कर्ता ईश्वर नहीं है" इस विषयपर भाषण देंगे। सभाको बाबू जुगमन्दिरलालका परिचय कराया और कहा कि आप ४ वर्ष विलायत रह बैरिस्टरी पास करके आज ही बम्बई पधारे है। दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदजी जे० पी० की प्रार्थनासे एल्फिस्टन हाईस्कूलके संस्कृत प्रोफेसर मगनलाल दलपतराम शास्त्री एम० ए०ने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सभापतिके बैठनेपर पंडितजीने अपना व्याख्यान बहुत ही विद्वत्तापूर्ण दिया जिसको सुनकर पंडित लालनने उठकर कहा कि इस अपूर्व विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानको सुनकर मैं इतना मुग्ध हो गया हू कि जी चाहता है कि पंडितजीका साथ निरंतर करू। बाबू जुगमन्दिरलालने भी व्याख्याताको धन्यवाद दिया और कहा कि मैं आज इनके युक्तिपूर्ण व्याख्यानको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ हू। सभापतिजीने कहा कि आजके व्याख्याता एक बडे अच्छे पंडित हैं। मेरा जैनधर्मसे जो परिचय हुआ है उससे मैं कह सक्ता हू कि इसके बहुतसे अंश वैष्णव धर्मसे साम्यता रखते हैं। यदि जैन और वैष्णव धर्मके आचार्य मिलकर एक विश्व धर्म निर्मापण करें तो भारत क्या बल्कि जग[त]का उदय हो जाय।

सेठ हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी लिटरेरी सोसायटीकी तरफसे ता १४ मार्च सन् १९१० को

बैरिष्टर जुगमन्दिरलालजीका व्याख्यान। हीराबागमें सेठ गुलाबचदजी ढड्डा एम ए के सभापतित्वमे एक बृहत सभाका अधिवेशन हुआ। सभापतिने आसन लेते वक्त यह कहा कि आजके व्याख्याता इतनी डिगरी प्राप्त करनेपर भी अपने धर्ममे दृढ रहे है। फिर व्याख्याती जुगमन्दिरलालजीन विद्यार्थियोंके कर्तव्यपर अपना विद्वत्ता पूर्ण भाषण कहा। उसमे यह बातें भी कही कि भारतवर्षकी प्राचीन कालकी शिक्षामे तीन बातें थीं–**सादगी, सस्तापन और धीमापन**–सादा भोजन, सादा आसन, सादी शय्या रहती थी। गुरुओंको फीस नहीं देती पडती थी सुगमतासे गुरुओंके पास विद्यार्थी हर समय प्रश्न कर सक्ता था। एक ही विषय बहुत धैर्यके साथ पढा जाता था। आजकलकी भारतीय शिक्षामे तीनोंका अभाव है। विलायतकी और यहाकी पढाईमें बहुत अन्तर है। वहा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों विषयोंमें पूरी २ शिक्षा दी जाती है। विलायत जानेसे जैन धर्म टूट जाता है ऐसा कहना ठीक नही है। विलायतमें आप जैन धर्म अच्छी तरहसे पालन कर सक्ते है। भक्ष्याभक्ष्यका विचार भी रख सक्ते है। **मैं चार वर्ष विलायतमें रहा लेकिन मांसके एक अणुने भी मेरे उदरमे प्रवेश नही किया।** वहापर शाक भोजी सोसायटी बढती जाती है। सेठजी को आपके व्याख्यानको सुनकर बडा ही हर्ष हुआ। बम्बईमें बाबू साहब सेठजीके पास ही ठहरे रहे। इस

वक्त सेठजी श्री गोम्मट स्वामी (जैनविद्री) जानेकी तैयारी कर रहे थे क्योंकि वहा श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिका मस्तकाभिषेक समारभके साथ २ **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका** नैमित्तिक अधिवेशन था जिसके लिये हमारे सेठजी ही **सभापति** निर्वाचित हुए थे। मस्ताभिषेककी मिती चैत वदी ५ नियत थी तथा महासभाका अधिवेशन चैत्र वदी १ से ४ ता २६ मार्चसे २९ तक नियत था। सेठजीने बाबू साहबको कहा कि इस समय आप हमारे साथ दक्षिणकी यात्रा करिये और जैनविद्री सरीखे अति प्राचीन स्थलके दर्शन कीजिये, जहासे श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवलीने समाधिमरण प्राप्त किया व जहा श्री बाहुबलि स्वामीकी अति मनोज्ञ ध्यानाकार ५६ फुट ऊँची प्रतिबिम्ब विराजमान है। सेठजीने बाबू साहबके चित्तको ऐसा आकर्षित कर लिया था कि आपने तुर्त ही अपनी स्वीकारता दे दी। अब सेठजी सकुटुम्ब रवाना हुए। साथमें ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी और बाबू जुगमन्दिरलालजी थे। एक ही सेकड क्लासमें बैठकर मदरास मेलसे सब लोग बेल्गाम हुबली होते हुए टिपटूर स्टेशन पहुचे। वहापर अनेक जैनी जन स्वागतार्थ खड़े थे। सेठजीको बड़े सम्मानके साथ स्टेशनसे ३० मीलके करीब श्रवणबेलगोला नगरसे एक मील इस तरफ ले जाकर ठहराया। इतनेमे हजारों भाई नाना-प्रकारकी पगडी व वस्त्र पहरे एक पालकी लेकर आए। सेठ वर्धमानैय्या मैसूरने सेठजीके गलेमें हार क्षेपण किया। दूसरोंने सेठजीपर पुष्पों-

श्री बाहुबली मस्तकाभिषेक और महासभा।

की वर्षा की। पालकीपर बिठाया और गाजेबाजेके साथ नगरमे ले गए। इधर रिवाजके मुवाफिक लोग रास्तेमें नारगी, नारियल आदि फलोंकी भेट चढाते हुए नमस्कार करते थे। सेठजीकी सवारी शहरमे फिरी। एक स्थानपर फोटो लिया गया। एक खास तबूमें सेठजीको ठहराया था। इस वक्त सेठ नवलचन्दजी भी स कुटुम्ब पधारे थे।

इस समय अनुमान ४०००० स्त्री पुरुष आगए थे। बाबू अजितप्रसाद वकील, प० अर्जुनलाल सेठी आदि अनेक जन उत्तर भारतसे आए थे। यहा पचकल्याणकोत्सव भी हुआ था जिसका प्रारम्भ फाल्गुण सुदी ३से हुआ था।

फाल्गुण सुदी १२को जन्मकल्याणकमे १००८ कलशोसे दर्शनीय अभिषेक हुआ था। उसी दिन तपकल्याणक, सुदी १४को केवलज्ञानकल्याणक और सुदी १५को मोक्षकल्याणककी अपूर्व रचना हुई थी। इस समय जैनबिद्री महा आनन्दसागरमें निमग्न थी। चहुओर स्त्री पुरुष दोनों पर्वतोंपर मदिरोंके दर्शन पूजन करते दिखाई देते थे। **श्री बाहुबलि स्वामी**की शाति मूर्तिकी पूजन करते हुए चरणोंका अभिषेक करते हुए हजारों स्त्री पुरुष परमानन्दमें निमग्न दृष्टिगोचर होते थे। स्वागतकारिणी सभाके सभापति अनन्तराजैय्या व मत्री सेठ वर्धमानैय्या थे।

महासभाकी बैठकें चैत्र वदी १ ता० २६ मार्चकी दुपहरसे प्रारम्भ हुईं। सभामडप बहुत बडा बना था। इसमें भट्टारक और ब्रह्मचारियोंके बैठनेको भिन्न उच्च स्थान नियत था। काची, मूडबिद्री, कारकल, कोल्हापुर आदिके भट्टारक ब्रह्मचारी सब

२४ व २९ आर्यिकाएं मेलेमें उपस्थित थीं। सेठजीको डेरेसे गाजे बाजेके साथ मंडपमें ले गए। दौर्बल्य जिनदास शास्त्रीने मंगलाचरण किया। सेठ अनन्तराजैय्याने स्वागतका भाषण कनडीमें पढ़ा जिसका हिन्दी उल्था बाबू जुगमन्दिरलालने सुनाया। सभामें दोनों भाषाओंमें हरएक काम होता था। हिन्दीको सिवाय इसके ग्रामवासियोंके और सब समझते थे उनके लिये कनडीकी जरूरत होती थी। आपके भाषणमें यह कहा गया कि "श्री बाहुबलीकी प्रतिबिम्ब बहुत प्राचीन है। राजा रामचन्द्र और रावणने भी इनकी पूजन की थी। **चामुंडराय**के पीछे मैसूरके महाराजा यहांके जीर्णोद्धार करानेवाले हुए हैं। यह श्वेत सरोवर मैसूर महाराजसे बनवाया गया है।" जी० के० पद्मराजैय्याके प्रस्ताव व बाबू किरोडीचंद आरा व हीराचंद नेमचंदके समर्थनसे सेठजीने श्री महावीर स्वामीकी जयध्वनिके मध्यमें प्रमुखके आसनको ग्रहण किया। और अपना भाषण हिन्दीमें पढ़ा जिसका कनडी उल्था वर्णी नेमीसागरजीने सुनाया। सभापतिजीके अंतिम वाक्य थे—

"विना स्वार्थ त्याग किये कभी जैन समाजकी उन्नति नहीं हो सकती। विद्वानोंको अपना जीवन और धनाढ्योंको लाखों रुपया विद्याप्रचारमें प्रदान करना चाहिये। खास करके जो व्यापारी बहुत समय तक व्यापार करके धन कमा चुके और अपने पुत्रोंको सामर्थ्यवान बना चुके हैं तथा जो सर्कारी नौकरी करके पेंशन पाते हैं उन्हें अपना **शेष जीवन** जैनधर्म और जैन **जातिकी उन्नति** तथा **आत्मकल्याण**में विताना चाहिये।"

बैठकोंमें १२ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे—

(१) मैसूर प्रांतके २००० **सादर जाति**के घरोंको जो

धर्ममें अब शिथिल हैं धर्ममें स्थिर करनेके लिये ११ महाशयोंकी कमेटी बनी। (२) श्रवण बेलगोलामें एक छात्राश्रम खोला जावे व कोल्हापुर, हुबली और मंगलोरके छात्रालयोंकी मदद की जावे। वहाके छात्राश्रमके लिये एक कमेटी बनी। (३) धर्मादेका सदुपयोग हो। (४) मैसूर दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा स्थापित की गई। (५) विरासतके कानून ठीक करानेके लिये कमेटी बनी। यही मलावार प्रान्तमें जारी आलिया सनानके कानूनको भी ठीक करे जिससे पुत्र जायदादका मालिक न होकर भानजा होता है नही तो माल सरकारमे जप्त हो जाता है। (६) श्री बाहुबलि स्वामीकी मूर्तिकी रक्षाके लिये एक फंड स्थापित हो इसमें महा मस्तकाभिषेक सम्बन्धी आमदनी शामिल हो। इसकी व्यवस्था एक कमेटी करे तथा यही इस तीर्थके सुप्रबन्धको भी करे।

इस कमेटीके अध्यक्ष—पंडिताचार्य भट्टारक श्रवण बेलगोला व मंत्री जी० के० पद्मराजैय्या बेलगोला हुए। ता० २७ मार्चको श्रवण बेलगोला छात्राश्रमके लिये ८७५०) व कोल्हापुर आदि ३ बोर्डिंगके लिये २२००)का चंदा हुआ। इनमें दानवीर सेठ माणिकचदने दोनों फंडमें ५०१), ५०१) प्रदान किये। ता० २९के दिन श्री बाहुबलि स्वामीकी प्रतिमाजीपर क्रमश कलसोंके न्हवनकी बोली हुई। जो पहली बोली ले वह पहला कलश चढावे ऐसा सेठ माणिक-चदजीने ठहराव किया। आज तक यहा कभी ऐसा हुआ नही था। सेठजीने इस भव्य मूर्तिके रक्षार्थ एक भारी चंदा हो जाय इस निमित्त सबको राजी करके यह रीति निकाली। यद्यपि यहाके उपाध्याय इस बातसे कुछ विरुद्ध भी रहे, पर सेठजीकी बातको

खडन करनेका किसीका हौसला नहीं पडता था। १ हजार रुपयेके ऊपरकी बोलिके ७ कलश हुए जो यहा इस बातके जाननेको दिये जाते है कि लोगोंमें अभिषेक करनेका कितना उत्साह था।

न० कलश	
१–जल–सेठ विनोदीराम बालचद झालरापाटन।	५१०१)
२–दूध–सेठ ओंकारजी कस्तूरचद ईन्दौर।	३१०१)
३–दही–सेठ नथूराम लक्ष्मणलाल पाडचा बम्बई।	१५०१)
४–घृत–सेठ दौलतराम कुदनलाल बूंदीवाला ,	११०१)
५-इक्षुरस–सेठ जीवनराम लूणकरणजी पाडया झालरापाटन	१५०१)
६ सर्वौषधि–सेठ ओंकारजी कस्तुरचद इन्दौर	३००१)
७ ईशानकोण-बाबू रामलाल पन्नालाल धर्मपुरी	११०१)

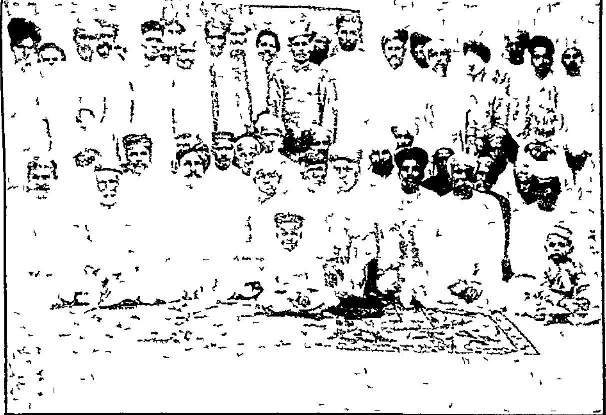
कुल २०० कलशोंकी बोली हुई–४०१)से लेकर १०)तक २५००२) की बोली हुई। यह सर्व सेठजीके उद्योगका फल था।

इसी दिन सभामें जब कलशोंकी बोलिया हो रही थी महाराज मैसूरके **कौन्सलर व डिप्टी कमिश्नर** आदि सभामे पधारे। बाबू अजितप्रसादजीने इंग्रेजीमे मैसूर राज्यका धन्यवाद माना तब कौन्सलर साहबने कहा कि–

"मैसूर गवर्नमेन्टको यह देखकर परम अभिमान होता है कि उसके प्रान्तमें जैनियोंका एक ऐसा उत्कृष्ट तीर्थस्थान है जहा पर जैनी आकर अपना आत्मकल्याण और धर्मोन्नतिका विचार करते है। मैसूर महाराजको जैनजाति अति प्रिय है। **मैसूर सरकार यह जानती है कि यह जैन जाति दानवीर, उदार, दयामय और सहनशील है।**

चैत्र वदी ९ ता० ३० मार्चको मस्तकाभिषेकका दिन था। कई सौ रुपया खर्चकर प्रवीण कारीगर द्वारा सीढी ऊपर जानेको बनाई गई थी जिसपर खडे होकर मस्तक पर धारा डाली जावे। तीन बजेसे अभिषेक प्रारम हुआ। जिस जिसका जो कलश था वह नम्बरवार ऊपर जाकर चढाता था। दर्शक लोग चारों ओर खडे बैठे थे। पहले ही सेठ माणिकचद पाटनवालोंने जल कलशकी धारा दी। वह धारा प्रभुके मस्तक परसे नीचे पग तक आती हुई महा शोभाको विस्तारती थी। फिर सेठ कस्तूरचदने दूधका बडा घडा लेकर धारा छोडी। दूधके कई घडे छोडने पर वह प्रतिमा श्वेतवर्ण निर्मल प्रति भासती हुई उस समय दर्शकोंको जो आनन्द आया वह कथनसे बाहर है। प्रतिमाजीका दर्शन कोसोंसे होता था। बस देखनेवाले दूर २ बैठे हुए अभिषेकका आनन्द ले रहे थे—भीड बहुत बडी थी—सेठ माणिकचद और नवलचद दोनों हरएक प्रबन्धमे लवलीन थे कि सानन्द अभिषेक हो जाय। रात्रिके २ बजे तक अभिषेकका कार्य पूर्ण हुआ। यह अभिषेक २२ वर्षक पीछे हुआ था।

दूसरे दिन सेठजीने पर्वतोपर क्या २ मरम्मत व सुधारकी जरूरत है सो वहाके लोगोंको दिखाई और कहा कि हम मिस्त्री भेजेंगे, आप सर्व ठीक करालेवें व इस फडसे तीर्थकी उन्नति करें। अब यहासे सेठजी बम्बई लौट गए। ब्र० शीतलप्रसादजी, बाबू किरोडीचंद आदि आरावालोंके सत्रके साथ मूडविद्रीकी यात्राको चले गए। वहा श्री जयधवल महा धवलादि ग्रथोंके दर्शन भी किये व उनकी बालबोध लिपिको पढकर भी आनन्द लिया। बाबू जुगमन्दिरलाल



(देखो पृष्ठ ६६१) जैन शिक्षाप्रचारक समिति जयपुरकी तरफसे सेठजीको मानपत्र.

श्री गोमटेशकी पूजासे महा आनन्द लाभ लेकर अपने देश सहारनपुरको रवाना हुए।

भारतवर्षीय दि० जैन महिला परिषद्।

यहां श्रीमती ककुबाई व मगनबाईजी पार्वतीबाईके व आरा निवासिनी चंदाबाईजीके परिश्रमसे स्त्रियोंमें भी बहुत उपदेश हुआ। ता० ३१ मार्चकी रात्रिको महासभाके मंडपमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषदकी बैठक बड़े ठाठसे हुई। सेठ हीराचंद नेमचंदकी धर्मपत्नी सौ० सखुबाईने अध्यक्षस्थान धारण किया। अनेक प्रकार उपदेश हुए। यहां कन्याशालाकी आवश्यकता बताकर उसके लिये ५००)का चंदा हुआ।

सेठजीकी पुत्री तारामतीका विवाह

सूरतमें शा कीकाभाई किसनदासका पुत्र कीकाभाई (गुलाबशाह) अनुमान २० वर्षका व्यापार कुशल व साधारण सौम्य प्रकृतिका था। उसीके साथ सेठजीने अपनी तृतीय पुत्री तारामतीका शुभ लग्न मिती वैशाख सुदी १० के दिन जैन पद्धति अनुसार कर दिया। इस समय ताराकी उम्र १४ वर्षकी थी। छोटालाल ढेलाभाई अंकलेश्वर वालेने जैन विधि कराई थी। इस विवाहमें दोनों ओर वेश्या नृत्य नहीं हुआ। केवल साधारण गीतोंके दो जलसे हुए थे। स्त्रियोंने खोटे गीत बिलकुल नहीं गाए तथा सर्व मिठाई स्वदेशी खांडकी बनी। सेठजीने १०००) रु के करीब खर्च कर बम्बई प्रसिद्ध चित्रकारसे पापकर्म और उसके फल-नर्कके कष्ट इनको दिखानेवाले चित्र तैयार कराकराके विता सहित 'नर्कदु खचित्रादर्श' पुस्तक छपवाली थी। इस अवसर पर सेठजीने

यह पुस्तक तथा एक गीतावली अपनी बिरादरीमें बाटी व खास २ व्यक्तियोको दी। भाजी बाटनेकी अपेक्षा पुस्तकोंकी भेट बहुत लाभदायक है तथा फूलकुवर कन्याशालाकी बालिकाओंको इनाम वितरण करनेकी सभा चदावाडीमें बैशाख सुदी १३को सेठ तुलसीदास त्रिभुवनदासके प्रमुखत्वमे करके इनाम बटवाया तथा तारामतीके लग्नके हर्षमें ५००) कन्याशालाको भेट किया। तथा स्याद्वाद पाठशाला आदि सस्थाओंको दस २के हिसाबसे ११०) रु का दान किया। इस प्रसग पर सेठ नवलचद हीराचदजीके पुत्र रत्नचदकी सगाई सूरतमें ही पकी हुई जिसके हर्षमे लघु अभिषेककी पुस्तक वितरण की। पुस्तकोंकी भेट सर्व भेटोंसे श्रेष्ठ भेट है।

जेठसे भादों तक सेठजी शातिसे बम्बई रहकर यथा साध्य धर्म साधन करते रहे व तीर्थक्षेत्र कमेटीके कार्योंमें विशेष लक्ष्य दिया।

शिखरजीकी फिर चिंता।

शिखरजी पर्वतके पट्टेपर देनेकी स्वीकारता बगाल गवर्नमेन्टने कर दी थी व ५००००) जमा भी करा दिये थे। डिप्टी कमिश्नर हजारीबागकी आज्ञासे पहाडकी माप आदि होने लगी इसीमे बहुतसा समय बीता। पक्की लिखा पढी हो नहीं पाई थी कि यकायक गवर्नमेन्ट बगालके सेक्रेटरी डबलू आर गोरलेका पत्र न० १३८० टी आर ता. ६ सितम्बर १९१० का मार्गन एड कम्पनीके नाम आया जो दिगम्बरियोंकी तरफसे सोलिसिटर नियत थे, जिसका आशय यह था कि श्वेताम्बरी सम्प्रदायके हकको ज्यादा पसन्दगी देकर जो पट्टा ता० २६ नवम्बर १९०८को हुआ था उसे भारत सर्कार न्याय रूप नहीं समझती

इससे वह रद्द हो गया, रुपया ९००००) ४) फी सदी व्याजसे लौटा दिया जावे।

शोकसागरमें सेठजी।

इस पत्रको सुनकर सेठजीको आश्चर्यके साथ बड़ा शोक हुआ और यही खयाल आया कि यह कार्रवाई अवश्य श्वेताम्बरियोंके साम प्रयत्नका फल है। यद्यपि पट्टा दिगम्बरियोंको मिलनेसे श्वेताम्बर समाजके पर्वत सम्बन्धी हकमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं थी और इसीलिये पट्टा तय होते वक्त श्वेताम्बरियोंने परवाह नहीं की और दिगम्बरियोंको लेने दिया पर श्वे० भाइयोंको अपनी हानि न होते हुए भी यह बात न रुची और वे अवश्य इसके रद्द करानेकी चेष्टामें लग गए और अन्तमें वे भारत सर्कार द्वारा कृतकार्य हुए। तब सेठजीने धैर्य प्रगट कर सर्व बड़े २ स्थानोंमें खबर भिजवाई और कमेटीक ओरसे ता० १९ सितम्बरको भारत सर्कारको तार भेजा कि दिगम्बरी लोगोंका पर्वत पर हक श्वेताम्बरियोंसे अधिक है तथा छोटे लाटका फेसला आखरी है अतएव पहला बन्दोबस्त रद्द न किया जाय। ऐसे ही तार कलकत्ता, खुरई, फीरोजपुर, मुजफ्फरनगर, झालरापाटन आदिसे भी गए व बम्बई सभाने भी तार किया था, इस तारका जवाब भारत सर्कारके उपमन्त्री बौसन साहबने दिया कि आपकी प्रार्थनाको बंगाल सर्कारके पास कार्रवाईके लिये भेज दिया है। तब दिहलीमें भारतके मुखिया भाइयोंकी एक सभा करनेका निश्चय ता० २६-१०-१० के रोज किया गया इसके लिये सेठजीने, सर्व स्थानोंमें सूचनाएं भेज दीं और आप बम्बईसे अहमदाबाद होते हुए रवाना हुए।

अहमदाबादके सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका ८ वा वार्षिक उत्सव आसौज सुदी

अहमदाबाद बोर्डिङ्ग-का वार्षिकोत्सव।

१३ ता० १६ अक्टूबरको सबेरे रमणभाई महिपतराम नीलकंठ बी० ए० एलएल० बी०के सभापतित्वमें हुआ। सेठ माणिकचन्दजी आ गए थे। आप ही ने प्रमुखकी प्रस्तावना की थी। लल्लुभाई लक्ष्मीचन्द चौकसीने रिपोर्ट सुनाई इसमें कहा कि दिगम्बर जैन मुम्बई परीक्षालयमें २२ विद्यार्थियोंने परीक्षा दी थी, २० पास हुए है व इस बोर्डिंगकी कमेटी तरफसे प्रगट होनेवाले **"दिगम्बर जैन"** पत्रने बहुत कुछ जागृति जैन समाजमें फैलाई है इससे श्रीयुत मूलचद किसनदास कापड़िया धन्यवादके पात्र है। फिर नानचद पूनाभाई बी० ए० व मूलचन्द किसनदासजी आदिने भाषण कहे। प्रमुखने अपने भाषणमे सेठ माणिकचन्दजीको धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे बोर्डिंगोसे तुर्त फायदा नही मालूम होता है लेकिन २५ वर्ष पीछे एक आश्चर्यकारक फायदा आप देख सकेंगे। मैंने इसी मकानमें इग्रेजी पहली पुस्तक पढी थी जहा मैं अब प्रमुख हुआ हूँ।

श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव।

दोपहरको अहमदाबाद श्राविकाश्रमका प्रथम वार्षिकोत्सव उक्त प्रमुखकी पत्नी सौभाग्यवती विद्यागौरी बी० ए०के सभापतित्वमें बहुत धूमसे हुआ। रिपोर्टके सुनाने बाद जीवकोरबाई आदिके भाषण हुए। परीक्षामे १५ मे १४ पास हुई थी। उनको इनाम दिया गया। शा० हरजीवन रायचदने

भक्तामरस्तोत्र गादे। सेठ माणिकचन्दजीकी तरफसे एक स्त्रीको सोनेके रगकी १ पेन्सिल भेट की गई। फिर मदद फंडके लिये कहते ही ४८४) रु० भर गए जिसमें हरगोविंददास प्रभुदास करमसदने १०१) व हरजीवन लालचद बडौदाने १०१) दिये। प्रमुखके भाषणके पीछे श्रीमती मगनबाईने सर्वका आभार माना। रात्रिको सेठजीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें सेठजीने प्रगट किया कि हमारी भावज रूपाबाईने बोर्डिंगके स्थानमें धर्मशालाके लिये दो कमरे बनवानेकी इच्छा दर्शाई है। सेठजीने यहा बहरे गूगोंकी शाला देखी कि उन्हे कैसे शिक्षण दिया जाता है।

अजमेरमें सेठजी और सभा।

सेठजी मूलचद किसनदास कापडियाके साथ ता० १८ अक्टूबरको अजमेर पहुचे। सेठ नेमीचन्दजीने बहुत सत्कार किया। रात्रिको जैनमदिरमें सभा हुई और १९ प्रतिनिधि दिल्लीके लिये चुने गए।

जैपुरमें प्रवास व सेठजीको मानपत्र।

ता २० को जैपुर आए। स्टेशनपर १०० भाई हाजिर थे। सेठ बालमुकन्द बजकी हवेलीमे उतरे। यहा पर ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद चातुर्मासके प्रारभसे ठहरे हुए थे। ठोलियोंके मदिरमें तेरहद्वीप विधान पूजा बहुत ठाठसे हो रही थी। रात्रिको भजन व कीर्तन होते थे। ता २१ की दोपहरको **वर्द्धमान जैन विद्यालयमें** जिसको **पं० अर्जुनलाल सेठीने** अपने खास प्रयत्नसे स्थापित किया था जैन शिक्षा प्रचारक समितिकी तरफसे ठाकुर कुवर भोमराजसिंहके प्रमुखत्वमें एक **मानपत्र** अर्पण किया गया। **सेठजीने उत्तरमे कहा कि**—

"मैने कुछ नहीं किया है। मेरे समान ओरोंकी भी तारीफ होय तो मै बहुत खुशी होऊं । जैपुरमें ५००० घरोमेंसे १८०० रह गए इसका कारण कुरीतियोका प्रचार मालूम होता है। इस कलकसे जैपुरको दूर करो ।"

ब्र० शीतलप्रसादजीने मरण पीछे जीमनके खर्चको घटानेको कहा। सेठजीने समितिको १०१) प्रदान किया अन्तमें । सभाका फोटू लिया गया जो अन्यत्र मुद्रित है । रात्रिको ठोलियोंके मदिरमे बडी उपदेशक सभा हुई जिसमे ब्र० शीतलप्रसाद, अर्जुनलाल सेठी व मूलचदजीके भाषणोके पीछे सेठजीने विद्यापर बहुत बहुत उत्तेजना दी। ता २२ को मुख्य भाइयोंकी सभासे २० प्रतिनिधि दिल्लीके लिये चुने गए। ता २३ को सागानेरके अद्भुत जिन मदिरोंके दर्शन किये। दो पहरको ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ २५ वर्षसे स्थापित जैन महा पाठशालाका निरीक्षण किया। पाठशालामें एक सभा हुई। सेठजीको मानपत्र दिया गया। **सेठजीने कहा** कि जैपुर जो एक वर्षके लिये भी जीमनोंको बंद करके उस रुपयेको महा पाठशालामें देदें तो एक मोटा फड हो जावे। आपने १०१) पाठशालामें दिये। फिर समितिके बोर्डिंग व दफ्तरको देखकर इसी रात्रिको चल ता २४को **दिल्ली** आए।

ता २६ अक्टूबरको लक्ष्मीनारायणकी धर्मशालामें सभा हुई। २०० भाई हजारीबाग, कलकत्ता, इन्दौर, लखनउ आदि स्थानोंसे आए थे। सब १००० दि जैनी जमा थे। सेठ माणेकचदजीके प्रस्ताव व रा० ब० घमडीलालजीके समर्थनसे **लाला ईश्वरीप्रसादजी** रईस म्यूनिसिपल कमि-

देहलीमें शिखरजी विषयक सभा।

श्वर व गव० ट्रेजरर दिल्ली सभापति व बाबू धन्नूलाल अटार्नी उपसभापति हुए। बहुत विचारके बाद सेठ माणिकचंदजीके प्रस्ताव करने व बाबू धन्नूलाल और अर्जुनलाल बी ए के समर्थनसे यह प्रस्ताव हुआ कि—

दिगम्बरियोंको पैरवीका कोई समय न दिया जाकर पट्टा रद्द किया गया इससे यह सभा क्षोभ प्रगट करती है तथा पुन विचारके लिये निवेदन करती है। इसकी नकल तारा द्वारा भारत सर्कारको भेजी गई। फिर सेठ हुकमचंदजीके प्रस्ताव व बा० सुल-तानसिंह मेरठके समर्थनसे बडे लाटको मेमोरियल भेजना निश्चय हुआ। इसकी एक सब कमेटी बनी। तीसरा प्रस्ताव डेप्युटेशन भेजे जानेका हुआ। व तीर्थक्षेत्र कमेटीको पत्रव्यवहारकी सत्ता दी गई। यहासे ता० २७ को चलकर ता० २९को सेठजी बम्बई आ गए।

श्रीमती मगनबाईजी-की यात्रा।

अहमदाबादसे श्राविकाश्रमका प्रचार करनेके लिये श्रीमती मगनबाई और ललिताबाई ता० २६ अक्टूबरको चलकर अजमेर आए। रात्रिको सभा करके मिथ्यात्वका त्याग कराया। ता० २८ मीको जैपुर गए। यहा पर कई सभाए करके स्त्रीशिक्षाका प्रचार किया।

न० १—ता० २९—१०—१०को पाटोदी मदिरमें "स्त्रियोंका अज्ञान कैसे मिटे" इस विषयपर।

२—ता० १—११—१०को महावीर स्वामी मदिरमें "ज्ञानकी महिमा" के ऊपर।

३—ता० २—११—१०को शास्त्र सभाद्वारा नियमादि दिलाए

व सरस्वती कन्याशाला देखी जो समितिके आधीन चलती थी। इसमें अनुभवके साथ ज्ञान दिया जाता था।

ता० ३-११-१०को सागानेरमें जाकर दर्शन किये व उपदेश दिया।

ता० ४-११को आमेरमें जाकर प्राचीन मदिरोंके दर्शन किये, पूजन की।

ता० ६को सार्वजनिक खास सभा करके शीलव्रतकी महिमा कही। अनुमान २००ने नियम लिया। ता० ७ को रत्नत्रय धर्म पर व्याख्यान दिया।

ता० १२ को दारोगाजीके मदिरमें सभा हुई। आश्रमके लिये २३०)का फड हुआ। समितिके आधीन तीन कन्याशाला व बोर्डिंगके छात्रोंको मिठाई बाटी व इनामके लिये २५) दिये।

इन बाइयोंके उपदेशसे जैपुरकी स्त्रीसमाज **स्त्रिशिक्षा**में जो कुछ बुराई समझती थी उसे दूर कर कन्याओंके पढानेमें **रुचि** करनेवाली हुई व पढनेकी निन्दा त्यागती हुई।

वास्तवमें जैसे सेठजी बालकोंके उद्धारमें कमर कसे हुए थे ऐसे ही उनके यशको विस्तृत करनेवाली उनकी सुपुत्री मगनबाईजी स्त्री समाजके उद्धारमें दृढ प्रयत्नशील थी।

बारामतीमें सेठजी।

इस वर्ष ऐलक पन्नालालजीने अपना चातुर्मास शोलापुरमें किया था। वहासे त्यागीजी मगसर वदी २ को बारामती पहुचे। सेठ माणिकचन्दजी बम्बईसे और श्रीमती मगनबाईजी सीधी जैपुरसे यहा आगई थीं। मगसर वदी ४ को त्यागीजीका केशलोंच हुआ। इस अवसरपर सेठ हीराचन्द

नेमचदने ' **दान** ' पर व्याख्यान दिया, उसी समय ३०००) का फड बारामती पाठशालाके लिये हुआ । १००००) का पहले था । इसका नाम " ऐलक पन्नालालजी पाठशाला रक्खा गया । अर्जुनलाल सेठी भी आये थे । समितिके लिये ७००) का व अहमदाबाद श्राविकाश्रमके लिये १२५) का चदा हुआ । यहासे सेठजी

नातेपूतेमें इनाम बाटा ।

नातेपूते गए । वहा मगसर वदी ८ को पाठशालाकी परीक्षा लेकर इनाम बाटा । यहासे आप दहीगाम आए । २ वर्ष हुए तब ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ यहा हो गए थे । उस वक्त हूमड ज्ञाति सुधारक कमेटी नियत हुई थी । उसके मत्री बापूभाई पानाचदने २ वर्षकी रिपोर्ट सुनाई जिससे मालूम हुआ कि १० वर्षसे नीचे लडकीकी सगाई न करना ऐसी प्रतिज्ञा जिन्होंने लीथी उन्होंने अच्छी तरह पाली । जिन्होंने सही नहीं भी की थी उन्होंने पाली । तथा जिन्होंने कन्याविक्रय न करनेकी प्रतिज्ञा ली थी वे भी दृढ रहे । सेठजीको इससे बहुत सतोष हुआ । सभामे कितनेक भाईयोंके मुहसे सेठजीने सुना कि जो ५ वर्ष तक ऐसा ही नियम चला तो कन्याविक्रय आपसे आप बद हो जायगा । इस अवसरपर सेठजीने मराठीमे कुरीति निवारण पर भाषण भी कहा । सेठजी मराठी, गुजराती, हिंदी तीनों भाषाए अच्छी तरह बोल लेते थे ।

कार्कलमें सेठ नवलचंदजीका दान ।

सेठ नवलचदजी जब गोमटस्वामीके मस्तकाभिषेक पर मूडविद्रीकी तरफ गए थे तब आप कार्कल भी पधारे । वहा पर सस्कृत पाठशाला तो चल रही थी पर परदेशी छात्रोंके लिये बोर्डिङ्गकी बडी आवश्यकता थी । तब उस समय वहा सेठ ओंकारजी कस्तूरचदजी भी थे । सेठ नवलचंदजीकी

प्रेरणासे ४०१) कस्तूरचंदजीने, २९१) सेठ हीराचद गुमानजी व ९१) तीर्थभक्त स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलालकी धर्मपत्नी जडावबाईने दिये थे। वास्तवमें सेठजीका घरानाभर ही उदारचित्त धारी है।

महाराज सीकरको हीराबागमे मानपत्र।

फतहपुर (सीकर) निवासी सेठ गुरुमुखराय सुखानदकी कोठी बम्बईमें बहुत प्रसिद्ध है। आप दिगम्बर जैन समाजमें अग्रगामी उदारचित्त धर्मप्रेमी सज्जन हैं। किसी कारणवश सीकर महाराज आपसे अति प्रसन्न हुए तब आपसे कहा कि जो कोई हमारे लायक काम हो सो कहो तब दयालुचित्त सेठन अपने स्वार्थको त्यागकर यह अभयदान मागा कि सीकर, लछमनगढ, फतहपुर, और रामगढमें भादों सुदी ५ से १४ तक १० दिन दशलाक्षणी और हर मासकी चौदसको कोई **जीव हिंसा** न हो—कसाईखाने बद रहें। महाराजने यह स्वीकार करके सेठ सुखानदजीको पत्र मिती मगसर वदी १३ संवत १९६७ को लिख दिया और राज्यमें घोषणा करनेकी प्रतिज्ञा की। इस दयालुताको देखकर बम्बई दिगम्बर जैन प्रा० सभाने ता० ३ दिसम्बरको हीराबाग लेक्चर हॉलमें श्रीमान् महाराजके सन्मानार्थ सभा की। श्रीयुत **खेमराज श्रीकृष्णदास** 'वेंकटेश्वर' पत्रके स्वामी, सेठ ओंकारजी कस्तूरचद आदि ५०० से अधिक भाई सभा भवनमें विराजित थे। श्रीयुत १०८ श्री माधवसिंहजी महाराजकी सवारी मोटर द्वारा ७ बजे रात्रिको पधारी। स्वागतके लिये सेठ माणिकचंदजी आदि कई भाई द्वारपर खडे थे। उनके साथ पहले आप दफ्तर तीर्थक्षेत्र कमेटीमें आकर बिराजे और सेठ**माणिकचंदजी**से

धर्मशाला आदिके सम्बन्धमें बहुत वार्त्तालाप की। फिर हॉलमें विराजमान होनेपर मंगलाचरण आदिके पीछे श्रीमान् सेठ **माणिकचंद हीराचंद जे० पी०** और सेठ गुरुमुखराय सुखानन्दजीने दिगम्बर जैन सभाकी ओरसे एक मनोहर कामकेटमें अभिनन्दन पत्र अर्पण किया। इसका उत्तर महाराजकी ओरसे कहा गया कि मैंने जो कुछ किया है इसमें सिर्फ अपना फर्ज अदा किया है।

अलाहाबादमें बोर्डिंग-का निश्चय व सेठजीका गमन।

इस वर्ष अलाहाबादमें बडे दिनोंमें कांग्रेसका अधिवेशन था तथा प्रदर्शनीकी बडी धूम थी। ऐसे अवसरपर सेठजी भी श्रीमती मगनबाईजीको लेकर प्रयाग आए। ब्र० शीतलप्रसादजी, कुंवर दिग्विजयसिंह, प० अर्जुनलालजी सेठी, सेठ हुकमचन्दजी, पंडित गणेशप्रसादजी सागर, मुंशी चम्पतरायजी आदि अनेक परदेशी जैनी आए थे। इस वक्त सेठजीके आगमनका उद्देश्य प्रयाग बोर्डिंगका निश्चय करना था। सेठजी और मगनबाईजीने धर्मपत्नी **लाला सुमेरचंदजी**से मिलकर अच्छी तरह समझाया कि आप अपनी इस पचीस हजारकी रकमको अपने पतिके नामसे बोर्डिंग कायम करनेके लिये ही अर्पण करके पुण्य और यशका लाभ लेवें। ब्र० शीतलप्रसादजीने भी समझाया कि यह सर्व धर्मका काम है। धार्मिक शिक्षा लेनेसे कॉलेजके छात्रोंका बहुत कल्याण होवेगा। दूसरी तरफ सेठजीने प्रयागके भाईयोंको राजी किया कि वे इस काममें मन वचन कायसे मदद देवें। ता० २८ और २९ दिसम्बर १०को

जैनधर्मशालामें दानवीर सेठजीके सभापतित्वमें दो सभाए हुई जिनमें ब्र० शीतलप्रसादजी और पडित अर्जुनलाल सेठीके बोर्डिंगकी आवश्यकता पर व्याख्यान हुए । ता० २९की सभामें प्रकट किया गया कि प्रयागनिवासी लाला सुमेरचदकी धर्मपत्नी "**सुमेरचद दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग हाउस**" स्थापित करनेके लिये २५०००) पच्चीस हजार प्रदान करती है। इस बातके सुनते ही सर्व सभाने कोटिश धन्यवाद दिया । उसी समय १५ महाशयोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई जिसके सभापति दानवीर सेठ माणिकचन्दजी, उपसभापति लाला शिवचरणलालजी, कोषाध्यक्ष लाला मूलचन्दजी, मत्री बाबू जगमन्दिरलाल, उपमत्री बाबू बच्चूलाल व धर्मोपदेशक बाबू ऋषभदासजी नियत हुए तथा तय हुआ कि कोई बगला शीघ्र तलाश कर बोर्डिंग खोलनेका प्रबन्ध किया जायगा । सेठजीने सब बात पक्की कर दी । फिर आप बगलोंको देखनेके लिये निकले । एक बगला ठीक भी किया पर उसको खाली होनेसे विलम्ब था ।

यहा ३ सभाओंमे जैन विद्वानोंके भिन्न २ विषयोंके व्याख्यान हुए तथा सेठजीने प्रदर्शनी और राष्ट्रीय सभाके अधिवेशन भी देखे । जमना तटपर प्रदर्शनीका अद्भुत ठाठ था । यहापर एक अंग्रेज हवाई विमान लाया था जिसपर लोगोंको बिठाकर आकाशमे दूरतक फिराता था । फिर सुगमतासे उतार लाता था । एक दिन सेठ हुकमचदजीने १२५) दिये और जहाजपर बैठकर आकाशकी सैर की । प्रयागमें श्रीमती मगनबाईजीने स्त्रियोको उपदेश दिया व श्राविकाश्रमके लिये १५०) का चदा किया ।

सेठजीका दौरा काशी और जबलपुर।

सेठजी श्रीमती मगनबाईजी और सेठ हरीभाई देवकरणजी-वाले जीवराज वालचंदके साथ काशी ता० १–१२–११ को आए। ब्र० शीतलप्रसादजी भी सेठजीके साथ थे। स्याद्वाद महाविद्यालयका प्रबन्ध संतोषजनक पाया। दिल्लीके बाबू नंदकिशोरजी ३ मास पहलेसे आकर प्रबन्धकी देखभाल रखते हुए यहां विद्याध्ययन करते थे। प्रबन्धसे प्रसन्न हो जीवराजने २९०) प्रदान किये तथा सेठ कल्याणमल इन्दौर ने प्रयागसे १००) की सहायताका वचन सेठजीको दिया था।

यहांसे सेठजी जबलपुर आए। इस समय सिंगई नारायणदासजी बीमार थे। शरीर बहुत अस्वस्थ था।

जबलपुर बोर्डिंगको २००००) नकद और एक बंगला का दान।

सेठजीने लक्ष्मीका उपयोग बोर्डिङ्गके निमित करनेके लिये उपदेश दिया उसी समय आपने एक बंगला जिसकी आमद करीब १५०)के मासिक है तथा २००००) नकद बोर्डिंग और धर्मशाला बांधनेको निकाल दिये जिसका प्रबन्ध सेठजी व अन्य चार जबलपुरके भाइयोंकी ट्रष्टीमें सौंप दिया। **वार वार उपदेश कभी न कभी अवश्य अपना फल दिखलाता है।** सिंगई नारायणदासजीसे जब कभी सेठजी मिलते थे **लक्ष्मीके सदुपयोगका उपदेश** दिया करते थे।

पावागढमें बम्बई दि जैन प्रा० सभा और मगनबाईजीका उद्योग।

पावागढ सिद्धक्षेत्रके पर्वतपर कई जिन मदिर जीर्ण पडे हुए है इनमेंसे एक मदिरका जीर्णोद्धार सेठ माणिकचदजीके भानजे सेठ चुन्नीलाल हेमचद जरीवाले बम्बई और दूसरेका वेडच निवासी जीवाभाई काशीदासकी विधवा इच्छाबाईने कराया। तथा इसीके साथ बिम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव भी किया गया था। माह सुदी ७से ढाईद्वीपका पाठ प्रारभ हुआ व अकुरारोपण विधान हुआ। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक श्री गुणचद्रजी थे। इसी अवसर पर बम्बई दिगम्बर जन प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवेशन प्रसिद्ध दानी **नाथारंग**जी गाधीवाले सेठ **रामचंद नाथा**के सभापतित्वमें हुआ। स्वागतकारिणी सभाके सभापति सेठ चुन्नीलाल हेमचद थे। जलसा बहुत सफलतासे हुआ। श्री शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुआ। **पंडित गोपालदासजीको 'स्याद्वादवारिधि'** का पद प्रदान किया गया तथा तीर्थके प्रबन्धके लिये एक कमेटी बनी जिसके सभापति सेठ चुन्नीलाल व कोषाध्यक्ष व मत्री लालचद कहानदास वडौधा हुए। इस सभाके अवसर पर सेठ माणिकचदजी दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके अधिवेशनपर सागली गए हुए थे इससे वे जलसेमे नही आ सके थे। उनकी सुपुत्री श्रीमती मगनबाईजी आई थीं जिन्होके उद्योगसे माह सुदी ११ ता० १०–२–११की रात्रिको चुन्नीलाल हेमचदकी धर्मपत्नी नवकोरबाईके सभापतित्वमें

सभा हुई। १५०० स्त्रिया थी। श्राविकाश्रमकी बाईयोंने उपदेश दिया। अहमदावाद श्राविकाश्रमके लिये ३९०) का चदा हुआ जिसमें प्रमुखाने १००) दिये। दूसरी स्त्रीसभा माह सुदी १३ को प्रतिष्ठा मडपमें हुई। इसमें १००० स्त्रिया थीं। मगनबाईजीने स्त्री-धर्म और आचारपर व्याख्यान दिया जिसका अच्छा प्रभाव पडा। प्रान्तिक सभाके उपदेशक फडके लिये २५००)रु का चदा हुआ। पर्वत पर कलश स्थापनादिकी उपज ३२००)की हुई। बाबू माणिकचदजी बैनाडा प्रान्तिक सभाके महामत्री और सेठ माणिकचद पानाचद जौहरी कोषाध्यक्ष नियत हुए। त्यागी ऐलक पन्नालालजीके पधारनेसे बहुत ही प्रभावना हुई। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी भी आगए थे। प० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० व सेठ नवलचद हीराचदजी भी आए थे। समिति जपुरके लिये ३००) की उपज हुई। भडारमें कुल आमद ७०००) हुई। जन सख्या ६००० थी। सेठ मूलचद किसनदास कापडिया सपादक "दिगम्बर जैन" ने इस महोत्सवके लिये बहुत परिश्रम उठाया था। सेठ माणिकचदजीने सागलीसे सहानुभूति सूचक तार व सभापतिपदसे स्तीफा भेजा। सभाने स्तीफा अस्वीकार किया और सेठजी जैसे इस सभाकी रक्षा अब तक करते रहे है वैसे करते रहें ऐसी सर्व सभाने इच्छा प्रकट की।

सागलीमें द० म० जैन सभा और सेठजी।

बेलगावके निकट सागली एक राज है। यहा माघ सुदी ७ ता० ५ फर्वरीसे ११से माघ सुदी १२ ता० १० फर्वरी तक बिम्ब प्रतिष्ठा व रथोत्सव था। तथा इसी अवसर पर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका तेरहवा वार्षिक अधिवेशन था। इस उत्सवमें हमारे प्रसिद्ध दानवीर सेठ माणिचदजी पधारे थे। सभापति सेठ हीराचंद

अमीचंद शाह शोलापुर हुए थे। इसके साथ सेठ हीराचद नेमचदजी भी आए थे। प० अर्जुनलालजी सेठी भी मौजूद थे। कुल २६ प्रस्ताव पास हुए इसमें मुख्य २ प्रस्ताव ये थे—

(१) बादशाह सातवें एडवर्डकी मृत्यु पर शोक, (२) बादशाह पचम जोर्जके सिंहासनारूढ होने पर अभिनदन, (३) जीवहिंसा बन्द की जाय। कई रजवाडोंने हिंसा कम की है, बादशाह जार्ज भी दयाका विस्तार करे। इस प्रस्तावको **सेठ माणिकचंदजीने** प्रस्तावित किया था (४) सभाके शिक्षण सम्बन्धी फड वसूल करनेको डेपुटेशन हुआ जिसमें सेठ **माणिकचंद हीराचंदजी** भी समासद नियत हुए। सागली सरकार श्रीमन आपा साहबने विद्याकी ओर बहुत रुचि दिखलाई। सेठ माणिकचदजीने यहाके छात्रोंको विद्यासम्पादनार्थ उद्यम करके एक **दिगम्बर जैन बोर्डिंग** कायम करानेका प्रबन्ध कराया जिसमें वहाके निवासियोंने **अपना धर्मादा** देना स्वीकार किया। प्रबन्धार्थ स्थानिक कमेटी बनाई जिसके अध्यक्ष श्री बाबाजीराव शातप्पा औरबाड़े, मत्री श्रीयुत बाल्पा चंदप्पा धावते हुए। इस बोर्डिंगको खोलना जून मासमें निश्चय हुआ।

जबलपुर दि० जैन बोर्डिंगमे अपना द्रव्य सेठ माणिकचन्दजीकी प्रेरणासे लगाकर सिंघई नारायणदासजी फागुण वदी ८ को अपनी दो पत्नियोंको नि सन्तान छोड इस शरीरको त्याग गए। इस समाचारसे सेठजीको कुछ शोक हुआ पर धर्मात्मा सेठजी इस बातमें सन्तोष मानते हुए जो थोडे ही दिन

सिंघई नारायणदासजीका परलोक।



सेठजीके पुत्र चिरजीव जीवनचद.

J. V. P C

(देखो पृष्ठ ६११)

पहले सेठजीकी मुलाकातसे उन्होंने २००००) बोर्डिंगका मकान बनाने व एक बगला खर्च चलानेको अर्पण कर दिया था।

पंजाब दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव।

सेठ माणिकचन्दजीके पत्रव्यवहारकी प्रेरणासे पंजाब दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव ता० २६ फर्वरी ११को हुआ। सेठजीने ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको भेज दिया था, आप अति दूरीके कारण नहीं जा सके। यह बोर्डिंग ६४) मासिकके किराये पर एक मकानमे स्थापित था। इसीके हातेमे दिनको ११ बजेसे लाला रामानंद रईस फीरोज़पुर शहरके सभापतित्वमें वार्षिकोत्सव हुआ। रामलालजी मंत्रीने रिपोर्ट पढी, पीछे लाला कूडामल छात्रको एक चादीका तमगा इनाम दिया गया कि उसने १२२) बोर्डिंगके लिये एकत्र किये व महावीरसिंहको धर्मशास्त्र दिये गये क्योंकि उसने ९९) जमा किये थे। **ब्र० शीतलप्रसादजीने** बोर्डिंगसे धर्मकी स्थिरता व चारित्रकी शुद्धता होती है ऐसा कहकर **दानकी प्रेरणा** की तब उसी समय २०००) से अधिक चदा हो गया। मंत्री रामलालजीने बोर्डिंग मकानके एक कमरेके लिये ५००) देनेका प्रण किया। दो दिन तक धार्मिक व्याख्यानोंका अच्छा आनन्द रहा। आम सभामें अन्यमतियोंने भी लाभ लिया। सेठजी जल्सेकी सफलता जानकर हर्षित हुए।

भा० दि० जैन महा सभा मुजफ्फर-नगरमें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाका, जिसके सेठ माणिकचदजी सभापति थे, १९वा वार्षिकोत्सव **रायसाहब द्वारकाप्रसादजी** सब इजीनियर कलकत्ताके सभापतित्वमें सानन्द हुआ। तथा भारत-जैन महामडलका भी, जिसका पूर्व नाम जैन यग मेन्स एसोसिएशन था, वार्षिक जलसा बाबू जुगमन्दिरलाल जैनी एम ए बैरिस्टरके सभापतित्वमे हुआ। सेठजी नहीं आसके। **श्रीमती मगनबाईजी,** चदाबाईजी, गगाबाईजी आदि महिलाएँ परिषदके लिये आई थी। ब्र० शीतलप्रसादजी, व कुवर दिग्विजयसिंहजी भी आए थे, जिनके व्याख्यानोंका अच्छा प्रभाव पडा। **कुंवर दिग्विजयसिंहजी** पहले क्षत्री ठाकुर आर्यसमाजके अनुयायी थे पर प० पुत्तूलाल इटावाकी सगतिसे जैन धर्मको श्रेष्ठ जान पहले जैनी हुए। अब वे ब्रह्मचारीकी ७ प्रतिमाके नियम पालते है। अपने तीन पुत्र व स्त्री होते हुए भी घरसे स्नेह हटा दिया है।

महिला परिषदका २ रा जलसा व मगन-बाईका उद्योग।

चैत्र सुदी ३ ता २ अप्रैल १९१२को महासभाके मंडपमें ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषदका, जो शिखरजीमे स्थापित हुई थी, दूसरा अधिवेशन बडे प्रभावसे हुआ। २००० स्त्री सख्या थी। शहरकी प्रतिष्ठित अजैन महिलाए भी आई थी। श्रीमती चमेलीबाई लाला अजितप्रसाद खजाञ्चीकी धर्मपत्नीने, जो बहुत उदारचित्त है, सभापतिका आसन ग्रहण किया था। जैसे

महासभाके जल्से होते हैं–एक प्रस्ताव करता है दूसरा समर्थन करता है इसी तरह यह परिषद भी हुई। प्रस्ताव नं० १ में नियमावली पास हुई। ता० ३ अप्रेलको दानका स्वरूप श्रीमती चन्दाबाईने कहा जिससे प्रमुखा चमेलीबाईने २५०) सरस्वती भवन आरा व २९०) महिला परिषदके स्त्रीशिक्षा फंडमें दिये और स्त्रियोंने ६२६॥।≈)॥। भेट किये। ४ अप्रेलको करीब ६० परदेशी बालिकाओंकी परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। पुस्तकें व दस्तकारीकी चीजें श्राविकाश्रमकी बनी हुई दी गई। मुजफ्फरनगरकी कन्याशालाको ९०) मगनबाईजीने स्त्रीशिक्षा फंडसे दिये। फिर ८ प्रस्ताव और पास हुए जिनमें मुख्य दो (१) श्रीमती जानकीबाईजी पहले इटरकी कन्याशाला फिर आराकी शालामें अध्यापिका थीं, धर्ममें बहुत दृढ व परोपकारिणी थीं, उनकी मृत्यु पर शोक तथा उनके स्मरणमें 'गृहस्थ स्त्री धर्मपर' सर्वोत्तम लेख लिखे उसे ९) ७) व ५) का इनाम दिया जाय, (२) श्रीमती मगनबाइ एक मासिक पत्र हिन्दी लिपिमें निकालें। इसी प्रस्तावके अनुसार सेठ माणिकचन्दजीकी सम्मतिसे अलग पत्र न निकाल २ पेज जैनमित्रमें महिला परिषदके बढाए गए, (३) अहमदाबाद श्राविकाश्रमका लाभ सर्व लेवें, (४) स्त्री समाज देशकी बनी चीजें पहने व देशी कारीगरीकी उत्तेजना देवें। इस जल्सेकी नियमित कार्रवाई देखकर और शांततासे सर्व कार्यका होना जानकर स्त्रियोंकी व खास कर मगनबाईजीकी कार्यकुशलता पर सबको आश्चर्य होता था। इसके पहले श्रीमती मगनबाईजी करहलके मेलेमें गई थी वहा ता० २४ मार्चसे २९ तक रथोत्सव था। दो दिन स्त्रियोंको उपदेश करनेसे १०

बाईयोंने अपनी पुत्रियोंके बालविवाह न करनेका नियम लिया। तथा ९) मासिक चदा कन्याशालाके लिये हुआ था।

श्राविकाश्रमका बम्बईमें आना।

सेठ माणिकचदजीको मगनबाईजी पुत्रके समान थी। जबसे श्राविकाश्रम अहमदाबादमें खोला गया तबसे बाईजीका बम्बईमे जाना कचिद् ही होता था इससे सेठजीको धार्मिक कामोंमें सम्मति करनेका बिलकुल मौका न मिलता था। तथा पूर्व सम्बन्ध भी कुछ ऐसा था कि मगनबाईजीके विना बम्बईनिवास सेठजीको फीका लगता था तब आपने यही विचार किया कि श्राविकाश्रमको बम्बई ही में स्थापित किया जाय। एक त्रुटि अहमदाबादमे यह भी थी कि द्रव्यकी मदद भी नहीं होती थी। बम्बईमें परदेशी बहुत आते है इससे द्रव्यकी मदद भी हो सकेगी इत्यादि विचार कर सेठजीने अपने जुबली बागके बीचके बगलेको, जिसका किराया अनुमान ८०) मासिकके आता था खाली कराया तथा कुछ कोठरिया उसके पीछे खाली कराई और निश्चय कर लिया कि वैशाख सुदी ३ वीर स० २४३७ अक्षय तृतीयाके दिन आश्रम बम्बईमे खोला जावे।

बम्बईमें नवीन मंदिरकी प्रतिष्ठा।

तारदेवके सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगमें छात्रोंके दर्शनार्थ एक कोठरीमें चैत्यालय था पर ट्रष्ट फडमें मदिरजीके लिये कुछ रकम निकालनेका नियम था इससे कुछ हजार रुपये जमा होनेपर एक छोटासा मदिर बोर्डिंगके हातेमें बनवाया तथा उसका शिखर बनानेको सेठ गुरुमुखराय

सुखानदजीने ५००) से ऊपर रुपया दिया । मदिर तैय्यार होनेपर उसकी प्रतिष्ठा श्रीयुत गनपति उपाध्यायने वैशाख वदी १४ ता० २७ अप्रैल ११से वैशाख सुदी ३ ता० १ मई तक की। पहला रथोत्सव पहले दिन दूसरा अतिम दिनको हुआ । चैत्र वदी १४ की रात्रिकी सभामें **सेठ माणिकचन्दजीने** यह प्रस्ताव मजूर कराया कि जो कासार, पचम, सेतवाल आदि बम्बईमे व्यापार व नौकरीके लिये आते है उनको भोजनका कष्ट रहता है इससे एक जैन रसोईघर खोला जाय । वैशाख सुदी १ की सभामे श्रीयुत गनपति उपाध्यायने श्री जयधवल महाधवल ग्रन्थोंके लिखनेमे जो कष्ट पड़े थे उनका वर्णन किया तथा कहा कि अजमेरवाले सेठ नेमीचन्दजीने जयधवलादि ग्रथोंकी एक प्रति लेनेको भट्टारकजीको १००००) देने कहे पर ग्रन्थ न दिये गये । सेठ माणिकचद और हीराचद नेमचदका ही प्रयत्न था जिससे उनकी कनडी और हिन्दी भाषामे लिपि मेरे द्वारा हो सकी । स० १९५३से मैंने नकल शुरू की जब तक पहले कनडी फिर बालबोध लिपि पूरी करके मे यहा आया हूँ । एक **राद्धान्त** ग्रन्थ ३००००) श्लोकोंका और नकल होनेके योग्य है ।

अक्षयतृतीयाके सबेरे मदिरजीकी प्रतिष्ठाका कार्य पूर्ण हुआ उस समय अच्छी उपज हुई ।

बम्बईमें श्राविकाश्रमका स्थापन।

प्रतिष्ठाके पीछे ही सब स्त्री पुरुष पास ही जुबली बागके बगलेमें गए । वहा **सेठ हीराचद नेमचंदजीके** द्वारा आश्रमका मकान विधि सहित खोला गया । रिपोर्ट सुनी गई व आश्रमके लाभार्थ व्याख्यान हुए । अहमदा-

बादमें यह आश्रम आसौज सुदी ११ ता० २९ अक्टूबर १९०९ को स्थापित हुआ था। १॥ वर्ष तक वहां अपना काम निर्विघ्न चलाकर यह बम्बई आया। अब यह बम्बईमें बहुत उन्नति पर है। श्राविकाओंको धर्मका ज्ञान देनेमें शुरूसे अब तक **श्रीमती ललिताबाई** परिश्रमशील हैं। आश्रमकी ओरसे कई श्राविकाएं पूना कर्वेके विधवाश्रममें उच्च शिक्षा ले रही हैं। एक बाई अहमदाबाद ट्रेनिंग कॉलिजमें शिक्षिकाका क्रम सीख रही है। सेठ माणिकचंदजी दूसरे तीसरे दिन आश्रममें जाकर घंटा दो घंटा

सेठजीकी श्राविकाश्रम पर महती कृपा।

सर्व देखते थे व मगनबाईजीको सुप्रबन्धार्थ सम्मति देते व लेते थे। कुछ दिनोंमे आपने ७०) मासिक करीबके कई कमरे और खाली कराके आश्रमके सुपुर्द किये जिसमें छात्राएं खूब अच्छी हवादार जगहमें रहें तथा वहीं एक कोठरीमें चैत्यालय भी कर दिया कि नित्य धार्मिक क्रियाको दूर न जाना पड़े। कोई २ बाईएं नलका पानी नहीं पीती थी उनके लिये एक कुआ भी खुदवा दिया व बगलेके आगे व बगलमें खूब वृक्षोंकी बहार व पानीका फवारा चलने लगा जिससे श्राविकाओंको वृक्ष स्पर्शित सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त पवनका लाभ हो। इस समय आश्रम इसी स्थानपर है। खेद है सेठजी यकायक मृत्युवश हुए नहीं तो वे इसको भी चिरस्थाई कर जाते जैसे उनकी आदत थी कि जो काम अपने हाथसे खोलना उसे सदाके लिये पक्का कर देना, जिसमें दीर्घकाल रहकर वह काम अपना लाभ बता सके।

जिस दिन श्राविकाश्रम बम्बई आया उसी दिन हस्तनापुरमे ऐलक पन्नालालजीके करकमलोंसे वह

ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम का स्थापन।

ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम भी खुला जिसके लिये लाला गेंडनलालजीने अपनी १००) मासिककी नौकरी छोडी व जिसमे १०००) नकदके सिवाय अपना जीवन अर्पण किया व १ पुत्रको भी दाखल कराया। लाला भगवानदीनजीने भी अपनी स्त्रीको त्यागकर केवल एक छोटे पुत्र और अपनी बहनके पुत्रको आश्रममे दाखल कराकर आश्रमके लिये अपना सर्वस्व दान किया। बाबा भागीरथजीने इसके लिये बहुत प्रयत्न किया। सेठजी इस बातको जानकर बहुत ही हर्षित हुए। शीतलप्रसादजी इस समय हस्तनापुरमें थे।

पाठकोंको यह बात मालूम ही है कि सेठजी प्रवास करनेमें बिलकुल आलसी न थे। जिसदिन किसी भी धर्म कार्यको जाना होता था तुरत ही चल देते थे। हरएक यात्राका खर्च अपने पाससे ही करते थे।

ता १४ मई को आप **सितारा** गए। वहा जैनियोंके १०० घरका सार जातिके हैं पर वहा

सितारामें जैन मदिर स्थापनमें सेठजीका प्रयत्न।

जिन मदिर न होनेसे व जैन धर्म क्या है ऐसा न जाननेसे ये लोग कालिका देवीके मदिर ही में जाते थे जब कि इनके जो सम्बन्धी कोल्हापुर और पूनामें है वे जिन मदिरजी जाते है वे भी अपनेको जैन कहते है। सेठजीने मराठीमें उपदेश देकर जैन धर्मका व्यवहारिक ज्ञान कराया व जिनेन्द्रबिम्ब दर्शनका

महत्त्व बताया। तब लोगोंने प्रतिमाजीकी स्थापना होनेपर दर्शन करना कबूल किया। सेठजीने चैत्यालयके लिये सूरत व अन्यत्रसे जिनबिम्ब भेजना स्वीकार किया। धन्य सेठजीका धर्म प्रेम व श्रद्धा!

श्रुत पचमीमें बेलगांव दि० जैन बोर्डिंगका स्थापन व सेठजीका गमन।

जेठ सुदी ५ अर्थात् श्रुत पचमी वीर स २४३७की बहुत नामाकित हुई कि उस दिन ता० १ जून १९११को एक काम तो यह हुआ कि जिसकी कामनाको हृदयमे रखते हुए आरा निवासी बाबू देवकुमारजी स्वर्गधाम पधारे थे अर्थात ब्रह्मचारी नेमीसागर और बाबू कीरोडीचद आराके उद्योगसे बहुतसे ताडपत्रके ग्रथ एकत्र करके बडे ठाठमे **जैन सिद्धान्त भवन**की स्थापना हुई जिसमे ब्र० शीतलप्रसादजी भी शरीक हुए थे तथा सेठजीने सहानुभूति प्रदर्शक तार भेजा था। इसी दिन बेलगाममें श्रीयुत धर्मराव सुबेदारके २००००) रु के दानका कार्य अर्थात् ९० छात्रोंके लायक एक भाडेके मकानमें दिगम्बर जैन बोर्डिंगकी स्थापना—का जलसा हुआ। हमारे सेठजी व अन्य आसपासके भाई पधारे थे। कुभोत्सव होकर गाजेबाजेसे स्थानपर जाकर सरस्वती पूजन हुई। फिर सेठ हीराचद नेमचंद शोलापुर सभापति नियत हुए। फिर ए० बी० लट्ठे आदिके भाषण हुए। नियमावली व १७ मेम्बरोंकी कमेटी ठीक की गई। सभापति ए० पी० चौगले वकील व मत्री बाल्प्पा मुजप्पा मिरजी हुए। सुबेदार साहबने कहा कि वह रकम ट्रष्टियोंके सुपुर्द की गई। १४०१) व्याज प्रति वर्ष आवेगा सो एक वर्षका मैं अभी

-देता हू तथा फरनीचर वर्तन आदि अलगसे खरीद दिया गया है। सर्वने दाताको धन्यवाद दिया। सेठजी मानो बोर्डिंगके भक्त थे। इस बोर्डिंगके खुलनेसे आपको बहुत ही आनन्द हुआ।

सांगली दिगम्बरजैन बोर्डिंगका स्थापन व सेठजीका १०१) का दान।

सांगलीके गत उत्सवके समय सांगलीके भाईयोंने अपनी पचायती धर्मादेकी रकमसे दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापनका विचार परमोपकारी सेठ माणिकचन्दजीके उपदेशसे किया था, उसीके स्थापनका महूर्त जेठ सुदी १२ वीर स० २४३७ ता० ८ जून १९११को प्रात काल बड़े ठाठबाटसे परमोपकारी **दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचदजी जे० पी०** के द्वारा हुआ। कुभ स्थापन व सरस्वती पूजनके बाद ही सेठजीकी प्रमुखतामे सभा हुई। सेठजीके उपकारमे श्रीयुत वालचदजीने विस्तार पूर्वक विवेचन किया कि उन्हींके प्रतापसे यहाके धर्मादेकी रकम सार्थक हुई। फिर राज्यमे प्रतिष्ठित **न्यायाधीश रावबहादुर पाटकरने** अजैन होने पर भी कहा कि " कितने समयसे जैनी लोग विद्यामें बहुत पीछे थे परतु अब सेठजीके महान प्रयासमे शिक्षाके साधन बनते जाते हैं इससे मै सेठजीका अति आभार मानता हू "। फिर सभापति सेठजीने कहा कि " आपने जो आज मुझे मान दिया है उसके लिये में योग्य नहीं हू कारणकि अपनी मनुष्य जातिका यह कर्तव्य ही है कि दूसरोंका उपकार करना ही चाहिये। और उसीके अनुसार मैं केवल अपना कर्तव्य बजाता हू इसमें मैं कुछ विशेप नहीं करता हू। "

फिर बोर्डिंगका मकान सेठजीने खोला। ८ छात्रोंको रत्नकरंड श्रावकाचारका पाठ दिया गया। सेठजीने १०१)का दान दिया उसी समय अनुमान ९००) रुपयेकी आमदनी हो गई।

सेठजीको इस नवीन बोर्डिंगके स्थापनसे और भी आनन्द हुआ। वास्तवमें आत्म समाधि जब परमानन्द प्रदायक है तब उनके मुकाबलेमे शुभोपयोगमे चित्तका आल्हाद होना भी आनन्ददायक और पुण्यवर्धक है। जो केवल इन्द्रियोंके विषयोंसे सुख मानते हैं उन्हें इन शुभ कार्योंसे पैदा होनेवाले स्वाभाविक आनन्दोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिये। जब कि विषय सुखोंमें आत्मिक व शारीरिक शक्तिका क्षीण करना है तब इस स्वाभाविक आनन्दमे दोनों शक्तियोंको बढाना है।

श्री गिरनार क्षेत्रके सुधारके लिये परतापगढ गमन।

सेठजी तीर्थोंके सुधारके भी अनन्य भक्त थे। आप श्री गिरनारजीके सुधारमें लगे हुए थे। श्रीशिखरजी पर सेठ हुकमचदजीके उद्योगसे प्रबन्धकर्ता बडी मन्नालालजीने नियमावली व योग्य रीतिसे कमेटी करना व योग्य प्रबन्ध करना स्वीकार कर लिया था, परन्तु उसके अनुमार कोई कार्रवाई जब नही हुई तब ता० ५–६–१० को तीर्थक्षेत्र कमेटीने अपने सभासदोंसे प्रस्ताव पास करा लिया कि अदालती कार्रवाई की जावे तो भी पत्र व्यवहार होता रहा कि किसी तरह समझ जावें चूंकि अदालतमें बहुत परेशानी व खर्च पडता है। सेठजीने एक दफे यही विचारा कि हम स्वय परतापगढ जाकर निबटारा करें, यदि काम सीधा न हो तब

अदालतसे निबटा जाय। अतएव आप **मूलचन्द किसनदास** कापडिया सम्पादक **"दिगम्बर जैन"** को लेकर **रतलाम** दोपहरको ता ३० जून ११को पहुचे। यहा सेठजी बोर्डिंग खोलना चाहते थे सो घूमकर मकानोंको तलाश किया। फिर लौटकर आनेका निश्चय कर आप सांझको ही चल कर रात्रिको **इन्दौर** पहुचे। सेठ हुकमचन्दजीने भले प्रकार स्वागत किया। ता १ जुलाईको ६ मंदिरोंके दर्शन करके सेठ हुकमचद बोर्डिंग देखी। १७ छात्र माष्टर दर्यावसिंह सोंधियाकी सम्हालमें थे। इस छात्राश्रममें प्रति छात्रको ६) मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी। हरएक अपने हाथसे रसोई करता था। रात्रिको १०की गाड़ीसे **सेठ हुकमचंदजी** और **लाला हजारीलालजी**को लेकर ता २ जुलाईको सवेरे **मंदसोर** पहुचे। वहा रु १५०००) खर्च कर जो मनीराम गोरधनवालेने नई धर्मशाला बनवाई थी उसमें ठहरे। यहा अच्छा स्वागत हुआ। यहासे मदसोरके तीन मुख्य भाईयोंको लेकर २० मील परतापगढ दोपहर को १ बजे पहुचे। **सेठ कस्तूरचद तलेटी**के यहा ठहरे। बडी मन्नालालजी आदिसे मिले। रात्रिको ८ बजे कमेटी हुई जिसमें यहाके खास २ भाई बुलाए गए। वादविवादके पीछे जो नियमावली छपी थी उसमें नियम ठीक किये गये और वह नियमावली छपानेके लिये **मूलचन्दजी**को सौंप दी गई। इस नियमावलीके नवीन कार्यकर्ताओंने प्रबन्ध करना स्वीकार किया। सभापति सेठ गुमानजी और बडी मन्नालालजी, कोषाध्यक्ष और उपसभापति सेठ कस्तूरचद तलहटी, मन्त्री शाह कपूरचद अमृतलाल खासगीवाले व उपमन्त्री शाह गुमानजी जवाहरलाल हुए। नियमावलीमें नियम हुआ कि १०००)

कोषाध्यक्ष रक्खें बाकी सेठ हुकमचन्दजीके पास भेजें । वे अपने, कोषाध्यक्ष और सेठ नेमीचन्दजी, ऐसे तीन नामोंसे योग्य स्थानपर जमा करावै । हिसाब प्रतिवर्ष प्रगट करना व कमेटीके दफ्तरमें भेजना निश्चित हुआ । उपमंत्रीको आज्ञा की गई कि एक मासके भीतर शिलक व हिसाब कस्तूरचन्दजीके सुपुर्द किया जाय। बडी मन्नालाल-ने भी स्वीकार किया ।

यह सब बातें रात्रि ८ से २ बजे तक तय हुई । फिर ३॥ बजे तक गिरनार तीर्थके एक मकानका झगडा सुलझानेमें सेठजी लगे, इतनेमे सेठ हुकमचदजी तागेपर बैठ मदसोर आ इन्दौर रवाना हो आए । सेठजीने दूसरे दिन मदिरोंके दर्शन कर रात्रिको नवीन मंदिरमे सभा की । १००० उपस्थिति थी । सभाने **सेठजीको सभापति** नियत किया। मूलचदजीने 'अपनी स्थिति और उन्नतिके उपायोंपर अनुमान १० बजे तक भाषण दिया । फिर कुरीति निवारणके लिये अग्रगामी व उद्योगी सेठजीने अपने पहले रात्रिके जागरणकी कुछ परवाह न करके **बीसा हुमड़की पंचायत जोड़ी** और इस विषयका लिखित प्रस्ताव करानेकी चेष्टा की कि **१० वर्षसे पहले कन्याकी सगाई नहीं करनी** । उस समय सफलता न हुई, आगे प्रतिज्ञा करेंगे ऐसा कबूल किया । ता ४ को सवेरे ही चलकर मदसोर होते हुए शामको ५ बजे रतलाम आए ।

रतलाम बोर्डिंगके लिये प्रबन्ध ।

रतलाममें रात्रिको दीवानसाहबसे मिलकर बोर्डिंग खोलनेकी बात कही । दीवान साहबने मदद करना स्वीकार किया । ता ५ जुलाईको दोपहर तक मकान तलाश किये । शामको महाराज **सर सज्जनसिंहजी बहादूरजीसे**

मिले । राजासाहबने १ घंटा बात की व बोर्डिंग खोलना जानकर सेठजीको धन्यवाद दिया तथा बोर्डिंगके लिये जमीन मुफ्त व और भी मदद देनी कबूल की । फिर सूरत निवासी यहाके सर न्यायाधीश मि मगनलाल आत्माराम काजीसे मिले । इस दिन घूमकर चादनीचौकमें एक मकान पसन्द किया और आगामी आसोजमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय किया । यहाके हाईस्कूलके हेडमास्टर मि कान्तीलाल क नानावटी एम ए से मिले । हेडमाष्टर साहबने छात्रोंको फ्री दाखल करनेकी इच्छा दर्शाई। यहा सेठ **गंगाराम गुलाबचंद**ने बहुत मदद दी ।

शामको चलकर ८ बजे रात्रिको **दाहोद** आए। ७ जुलाईको सवेरे गाजे बाजेसे अष्टान्हिकाकी पूजन हुई । १० से १२ तक सभा हुई । मूलचंदजीने उन्नति पर भाषण दिया । पाठशाला जो बद हो गई थी चालू करने, सभा स्थापित करने आदि पर कहा । सेठजीने उपदेश देकर लगभग ४० दशाहूमड भाईयोंके हस्ताक्षर एक प्रतिज्ञापत्र पर लिये कि **हम कन्याकी सगाई १० वर्षसे कम** मे न करेंगे, औरोंसे कराना स्वीकार किया । यहासे रात्रिको चलकर सेठजी ता ८ जुलाई १९११को बम्बई आए ।

सेठ माणिकचदजी जैसे प्रत्येक प्रातमें बोर्डिंग स्थापनमे लीन थे वैसेही उनकी एक विद्वान् सत्पुत्रके समान परम यशस्विनी **मगनबाईजी** प्रति प्रान्तमें श्राविकाश्रम स्थापित कराना चाहती थीं । मुजफ्फरनगरमें श्रीमती मगनबाई और **चंदाबाईजी** आराने (जो प्रसिद्ध बाबू

मगनबाईजीके असरसे मुरादाबादमे श्राविकाश्रम ।

देवकुमारके छोटे भाई धर्म कुमारकी विधवा स्त्री वैष्णव कुलमें जन्म लेने पर भी जैन धर्मके मर्मसे भले प्रकार विज्ञ है) श्रीमती **गंगादेवीको** आश्रमके लिये दृढ किया व **चमेलीबाई** देहरादूनसे मिलकर मासिक चदा करा दिया । मुरादाबादकी स्त्रियोंने भी सहायता करके कुल चदा ५०) मासिकका हो गया । तब गगादेवीने आश्रमका महूर्त **आषाढ़ वदी ११ वीर सं० २४३७** को लोहागढवाले मदिरकी धर्मशालामें करके स्वय पढाना व रहना स्वीकार किया । ८ पुरुषोंकी निरीक्षक व ९ स्त्रियोंकी कार्यकारिणी कमेटी बनी । यह आश्रम अब तक कायम है । इसमें परदेशी सात विधवाए है । ४ यहासे निकलकर फीरोजपुर, अम्बाला, रोहतक आदि स्थानोंमे काम कर रही है । श्रीमती **गगादेवी** मुकुन्दरामकी पुत्री है जो जैनजातिमे कालेज कायम करनेके लिये सबसे पहले प० चुन्नीलालके साथ दौरा करने गए थे व अच्छे विद्वान् थे । इनके पुत्र लाला सनलाल मुरादाबादके रईस है ।

रतलाम बोर्डिङ्गका रतलाम नरेश द्वारा स्थापन ।

सेठ माणिकचदजीने षोडशकारण भावना व उसके आसपासके दिन सुखशातिसे बिताए तौ भी शिखरजी पर्वतकी चिंता मनमें सदा ही बनी रहती थी। भादों बाद आपने रतलाम बोर्डिङ्ग खोलनेके लिये विचार किया । वागड प्रान्तमें शिक्षाका बहुत ही अभाव है इस बातको आपने पं० कस्तूरचंद उपदेशक द्वारा स० १९६३ में अच्छी तरह जान लिया था । उनके दौरेकी रिपोर्टसे मालूम हुआ था कि ४२ ग्रामोंमें केवल एक ग्राममें ही जैन पाठशाला है तथा ५७०० जैनियोंमें

सिर्फ १९० पुरुष और ७ स्त्रिया ही स्वाध्याय करनेके योग्य है। बस आपने वागड प्रान्तको सुशिक्षित बनानेके लिये वागडके नाके रतलाम नगरमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय करके उसमें नियम रक्खा कि ८ वर्षसे ऊपरके लडके वागड व उसके आसपासके मुख्यतासे हूमड भरती हों। मिती आश्विन सुदी १२ गुरुवार ता० ९ अक्टूबर १९११ को मुहूर्त नियत करके बाहरसे बहुत लोगोंको बुलाया। मन्दसोर, दाहोद, उज्जैन, इन्दौर आदि स्थानोंके भाई आए। आमोद वाले सेठ हरजीवन रायचन्दको आपने खास तौरसे आनेको लिखा सो सेठजीसे ट्रेनमें मिल गये, एक साथ रतलाम पहुचे। सभाके लिये एक बडा मंडप बाधा गया था। सवेरे ही १००० स्त्री पुरुष हाजिर हो गए थे। पहले कुंभ स्थान और सरस्वती पूजन हुई उस समय प्रभावनार्थ नवीन सामायिकपाठ बाटा गया था। दीवान साहब आदि राज्यकारबारी आनेके बाद ठीक ९ बजे रतलाम नरेश मोटरमें आए। तुर्त कारवाई शुरू हुई। मास्टर दीपचंद उपदेशकने मंगलाचरण किया। फिर सेठजीने एक सुन्दर **मानपत्र** बडे सन्मानसे भेट किया जिसको पंडित कस्तूरचन्द उपदेशक मालवा प्रान्तिक सभाने पढकर सुनाया।

२५०००) नकद व १२५) मासिककी मिलकतका दान।

सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़ियाने बोर्डिङ्गका हेतु व नियमावली बनाई और कहा कि इस बोर्डिंग के निमित्त सेठ माणकचन्दजीके कुटुम्बियोंके तरफसे २५०००) नकद व करीब १२५) मासिककी मिलकत प्रदान की जाती है। सेठ हरजीवन रायचन्द्र व सेठ कस्तूरचन्दके

बुरका पहनती है। ता० २३–८–१० मगलवारकी साझको ४ बजे जहाज सुएज नहरके उत्तर मुखको छोड कर भूमध्य-सागरमे चलने लगा। ता० २५–८–१० के दोपहरको मेसीनाकी खाडीमे पहुचा। यहा तटपर ऐसा मालूम होता था कि पहले कोई मोटा शहर होगा। आगे चलकर **एटनाका ज्वालामुखी** पर्वत दीखता था जहासे धुआ व पदार्थ निकल कर एक तरफ गिरते थे। ता० २८–८–१० को स्टीमर फ्रेंचोंके आधीन **मार्सेल्स** बदरमे पहुचा। यह शहर व्यापारी है। कारखाने है। फ्रेंच भाषा है, फ्रान्क सिक्केका चलन है जो ॥≈) का होता है। यहा पर जहाजसे उतर रेलके द्वारा ३० घटे चलकर दूसरे दिन **पेरिस** आए। रास्तेमें हरएक गावमे गिरजाघर देख पडता था। खेतोंमे क्यारिया कायदेसे थीं। ठडी पडती थी। रेलवेमे सफाई नहीं, चोरी व जेब कटे जानेका भय था। पेरिस एक सुन्दर नगर है। ३० लाखकी वस्ती है। मकानोंकी कतारें सीधी थीं। बडे रास्ते पर ४ खनसे नीचेके मकान नहीं है। शहरमे जमीनके नीचे **मोटरोपोलीटन** नामकी बिजलीकी रेलवे चलती है। हरएक पाच२ मिनटमे आती है। व्यापारी शहर है। ये लोग अपने एक भरुचनिवासी देशी मित्रके यहा जीमते व होटलमे ठहरे थे। यहा हरएक बालक बालिकाको ६ वर्षसे १४ वर्ष तक पढाना ही पडता है। नीच जातिकी स्त्रिया भी पढना लिखना जानती है। फूल बेचनेवाली, व गाडीवाला, व कूडेको ढोनेवाला भी समाचारपत्र वाचता है। यहा हरएक पुरुषको १९ या २० वर्षकी उम्रके पीछे २ वर्ष तक लशकरी खातेमें

आनेरेरी नौकरी करनी पडती है। ये लोग २ दिन पेरिसमें रहे। फिर ३० पट रेलमें चलकर जर्मनीके **हेम्बर्ग** नगरमें ता० १-९-१०को सबेरे पहुंचे। यहांके लोग प्रेमी व उद्यमी थे। यह जर्मनीका द्वितीय भारी नगर व दुनियाके व्यापारी नगरोंमें चौथे नम्बरपर है। यहा व्यापार बहुत भारी है। रंग, व कपडोंके बडे २ कारखाने हैं। यहा **एक्सचेंज** ऑफिसमें १॥ बजे दिनसे २॥ तकमें ७००० व्यापारी और दलाल एक होकर सौदा कर लेते हैं। शेष काम टेलीफोन और पत्रसे होता है। शरदी बहुत है। ॥।) आनेवाला मार्क सिक्का चलता है। यहांके लोग विवेकी व साफ मनके हैं। ९ लाखकी वस्ती है। कुछ शौकीन भी हैं। अरहरकी दाल विना सब वस्तुएं दूध, शाक आदि मुम्बईके समान मिलता है। घी वैसा सता नहीं मिलता है। ठंडीके सबब हरएक घरमें अग्निकी अगीठी जलती है या विजलीसे हवा गर्म की जाती है। ये लोग व्यापारके लिये गए थे सो वहा १ मकान भाडे लेकर दूकान खोल दी। कुछ दिन व्यापार किया, पर योग्य लाभ न देखकर लौट आये थे।

बोर्डिंगकी तरफसे लल्लूभाई प्रेमानन्दको प्रमुखके हाथसे मानपत्र अर्पण किया गया। इसका जवाब देते हुए परीख लल्लूभाईने कहा कि " मैं इस मानके लायक नहीं हू पर **इस मानके योग्य सेठ माणिकचंदजी हैं**, जिनकी सूचना और सलाहसे मैं कोई भी सेवा बजा सका हूं। प्रमुखने अपने भाषणमें कहा कि " विद्यार्थियोंको नौकरीकी आशा न रखके स्वतंत्र व्यापारके योग्य हो ऐसी शिक्षा लेनी योग्य है। दोपहरकी सभामें माता **रूपाबाई**-

को धर्मशाला बाधनेके लिये धन्यवाद दिया गया। मास्टर दीप-चन्दजीके उपदेशसे चैत्यालयमे विद्यार्थियोन हररोज अष्ट द्रव्यसे पूजनका नियम लिया व ९ वर्ष तक पूजाके द्रव्यका खर्च अहमदा-बादके महासुखभाई दामोदरदासने देना स्वीकार किया।

प्रस्तावकी पाबन्दी। श्रीमती मगनबाईजी भी अपने पिताके समान अपने वचनोंकी पावन्दी व वर्तव्य पालनमे दृढ है। इसी मुकद्दमेके कारण अपने मुजफ्फरनगरमें होनेवाली महिला परिषदके प्रस्ताव नं० ३ के अनुसार महिला परिषदकी तरफसे २ पेज "जैनमित्र" मे वीर सवत् २४३८ के प्रारभमे बढवा दिये और उसमे स्त्रियोके लेख स्त्रियोपयोगी प्रकट होने लगे।

एक समाजसेवी होनहार रत्नका वियोग। सेठ माणिकचदजीको सेठ नाथारगजीके कुटुम्बके एक होनहार परोपकारी रत्न **बालचंद पानाचंदका** वियोग मिती आसौज वदी ११ स १९६७ क दिन २७ वर्षकी आयुमे ही सुनकर चित्तको बहुत उदासीनता हुई। दहीगाव क्षेत्रमे **बीसाहूमड़ सभा** व महतीसागर उद्योतनी सभा स० १९६१ मे स्थापित कर उसके मत्रीपनका काम बहुत योग्यतासे किया था। सेठजी इसीके उत्साहके कारण दो दफे दहीगाव गए व शिखरजीमें जब पहाडपर लाट साहब आए थे तब भी आप सेठजीके साथ गए थे। सेठजीके इस उपाय पर कि १० वर्षसे कमकी कन्याकी सगाई कोई न करे, आपने बहुतसे वीसा हूमडोंके दस्तखत लिये थे व दक्षिणके वीसा हूमडोंकी

डाइरेक्टरी तैयार की थी। धर्मशिक्षाके असरमें मरते समय १००००) शोलापुरमें बोर्डिंगकी इमारत बनाने व १०००) जैनियोंमें ज्ञान वृद्धि व ५००) बम्बई प्रान्तके गरीब अनाथ किसानोंके लिये दान किया और शांतिसे णमोकारमंत्र जपते हुए प्राण छोडा। वास्तवमें यह दानवीरता दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ही संसर्गमें प्रादुर्भूत हुइ थी।

११५००) का दान।

मिती कार्तिक सुदी १४ वीर सं० २४३८ ता० ६ नवम्बर १९११ को श्रीमती मगनबाईजीने श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव गोंडलकी युवराज्ञी श्री राजकुवरबाईके सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ किया था। ललिताबाईजीने रिपोर्ट सुनाई। आश्रमकी श्राविकाओंने पद व भजन, श्लोक कहे। इनाम बांटा गया। प्रमुखाने कहा—" दया धर्मके कारण जैन धर्म प्रसिद्ध है इससे वह स्त्रियों व विशेषकर विधवाओंके दुःखोंकी तरफ दुर्लक्ष रक्खेगा यह बात समझ नहीं है। उनको शिक्षा देना यही उनके साथ दया करना है।"

मुम्बई श्राविकाश्रम-का वार्षिकोत्सव।

मिती कार्तिक सुदी १४ को ही काशी स्याद्वाद महाविद्यालय-का वार्षिकोत्व जैनजातिभूषण डिप्टी **चम्पतरायजी**के सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ हुआ। उसमें **दानवीर जैन-कुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी.** का अति मनोहर विशाल चित्रपटका उद्घाटनमहोत्सव उक्त सभापति-

स्याद्वाद महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव व सेठजीका चित्र उद्घाटन।

जीने किया उस समय आपने कहा —

"जैन जातिमें लोग सिंघई, सवाई सिंघई, श्रीमन्त आदिकी पदविया पानेके लिये केवल रथयात्रा और जातिको जिमानेमें लाखों रुपया खर्च किया करते थे और अब भी करते है। जिससे वास्तविक अज्ञानाधकारको मेटनेवाली प्रभावना नहीं हो सकती है। धन्य है जाति शिरोमणि सेठ माणकचदजीको कि जिसने विद्याकी वृद्धिमे छह लाखके अनुमान द्रव्य खर्चकर चिरकालके लिये ज्ञान वृद्धिका पथ स्थापित कर दिया है। ऐसे शिरोमणिका सन्मान यह जाति करनेसे असमर्थ है। इस विद्यालयके स्थापकों और पोषणकर्ताओंमें आप मुख्य है। इसलिये ऐसे महानुभावका चित्र विद्यालयके छात्रोंको उदाहरण बतलानेके लिये अत्यन्त आवश्यक है।"

सेठजीका उदाहरण व धर्मप्रचारका गाढ प्रेम ।

सेठजीने कई वर्ष पहलेसे उपदेशकोंकी जरूरत देखकर उपदेशकीय परीक्षाका पठनक्रम व नियम ठीक करके उपदेशक भडार महासभाके मत्री बाबू सूरजभानके सुपुर्द किया था पर उसमे कोई भी कार्य हुआ न जानकर आपने स्वय नोटिस निकलवाकर ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके द्वारा वीर स २४३७मे परीक्षा लिवाई। मध्यमामे कुंवर दिग्विजयसिंहजीने परीक्षा देकर २२) पारितोषिकके पाए। जघन्यमे हीराचद सखाराम कोठारी आलद और पीताम्बरदास बासाने उत्तीर्णता प्राप्त की। प्रथमको १८) तथा द्वितीयको १०) इनामके मिले। इन तीनोंसे ही धर्मोपदेशका अच्छा उपकार हो रहा है। पीताम्बरदासजी बम्बई प्रान्तिक सभाके उपदेशक हैं और समाधानकारक कार्य कर रहे है। अब यह परीक्षा बद है। यदि " पारि-

तोषिककी उत्तेजना देकर यह परीक्षा जारी रक्खी जावे तो जैनियोंमें जो उपदेशकोंकी भारी कमी हो रही है सो दूर होजावे ।

बादशाह जार्जका भारत आगमन व बम्बईमें सभा ।

भारतमें विलायतके बादशाहोंमें सबसे पहले ही आगमन महाराज पचम जार्जका ता २ दिसम्बर १९११को हुआ तथा ता १२ डिसम्बरको दिहलीमें एक बडा स्मरणीय दर्बार हुआ था। उसमे महाराजने भारतीयोंके लिये ये आनन्द वचन भी कहे कि " हमारे बडोंने तुम्हारे हकोंको कायम रखने तथा तुम्हारी भलाई व सुख शातिके लिये जो विश्वासपात्र वचन दिये हे उन्हीको फिरसे ताजा करनेका अवसर मुझे आज मिला है, उसके लिये में अपना हर्ष प्रकट करता हू। दरबारमे बहुतसे जैनी भाई गए थे, पर हमारे सेठजी नही जासके थे। आपने इसी ता १२ की शामको दूसरे भोईवाडके जिन मदिरजीमे लाला छज्जूमल अलीगढ निवासीके सभापतित्वमे सभा की और महाराजको सुख शाति रहे ऐसा तार भिजवाया। सबेरे यहा व चौपाटीके जिन मदिरजीमें श्री जिनेन्द्र देवकी पूजा की गई व राज दम्पतिके कल्याणकी भावना भाई गई। इसी दिन भूखोंको अन्न भी बाटा गया।

पर्वतरक्षार्थ सेठजी कलकत्तेमें ।

श्री सम्मेदशिखरजी पर्वतकी रक्षाके लिये जो पट्टा दिगम्बरियोंको हुआ था उसको रद्द होनेका हुकम वाईसरायका जबसे आया था तबसे उसकी एक भारी चिंता सेठजीके चित्तमे थी। कलकत्तेमें बाबू धन्नूलाल अटार्नी और सेठ परमे-

छीदासजीको प्रेरणा करके आप उद्योग कराते रहे । इन लोगोंने बंगाल सर्कारसे लिखापढी की तथा ता २८ दिसम्बर १९११के दिन कलकत्तेमे मुख्य २ भाईयोंकी एक कमेटी नियत की। सेठजी सेठ बालचंद रामचंद और बालचन्द्र नेमचन्द्र शोलापुरवालोंके साथ कलकत्ते पहुचे और ता २८को विचार किया गया । बाबू धन्नूलालने भरोसा दिया कि बंगाल सर्कारसे बातचीत हो रही है, आप चिंता न करें। सेठजी यहा २ दिन ठहरे और श्वेताम्बरी भाईयोंसे मिलाप की भी चेष्ठा की परंतु कोई सफलता न हुई। ता ३०की रात्रिको कि जब महाराज पचम जार्ज और महारानी मेरी कलकत्ते पधारे थे, नए दि० जैन मंदिरमे सेठ बालचंद रामचंदके सभापतित्वमे सभा हुई । सेठजीने हरीभाई देवकरणके घरानेकी बहुत प्रशंसा की । इस सभामें बादशाहकी सुख शांतिका प्रस्ताव पास हुआ । ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने “ जैन धर्मकी महिमा” पर व्याख्यान दिया ।

सेठजीके शरीरकी स्थिति व रुचि ।

इस वर्ष यद्यपि सेठजी आवश्यक कार्यवश बाहर जाते थे पर पहलेकी अपेक्षा शरीरकी स्थिति बहुत निर्बल हो गई थी जिससे आप बहुधा घंटा दो दो घंटा सवेरे मंदिरजीसे आकर कौचपर लेट जाते थे व रात्रिको भी दीवानखानेमे थोडा बैठकर लेट जाया करते थे। परंतु अपने नित्यकर्मको छोडा नहीं था । चौपाटी चैत्यालयमे प्रक्षाल पूजा व स्वाध्याय करना तथा हीराबाग धर्मशाला व दूकानपर जाना बिलकुल बंद नहीं किया था।

आपको अपने आधीन धर्मकार्योंक सम्हालकी बहुत बडी चिंता थी, अतएव अपने परोपकारी मित्रोंको अपना हाल

लिखा करते थे। आमोदके **सेठ हरजीवन रायचंद**को आपने एक दफे लिखा–

' हवे मारू शरीर सारू रहेतु नथी अने मारी शारीरिक शक्ति घटती जाय छे, तेथी जे खाताओ अने हिल्चालो हाल चाले छे तेनो भार हवे तमारा जवाए उपाडवानी जरूर छे इत्यादि "

पाठक देखेंगे कि सेठजीको भविष्यके सुप्रबन्धकी कितनी भारी चिन्ता थी।

लेटे लेटे भी आप कभी सुस्त नहीं रहते थे, पुस्तकें पढा करते थे। इन दिनों आपके हाथमे भारत और विलायतके प्रवासकी पुस्तकें गुजराती भाषामे पढनेमे आई जिससे कभी २ मनमे तरग उठती थी कि जो स्थान हमने नही देखा है उसे अवश्य देखलेना चाहिये। आपने **ब्रह्मदेश** ही नही देखा था। रगूनसे यद्यपि आपका पत्र व्यवहार था तथा अपने आढतियेको आप प्रेरणा करते थे कि बौद्ध लोगोंसे मासका आहार छुडानेका यत्न करें। पुस्तकें भी बटवाते थे तथा वहा एक **फलाहारी होटल** खुल्वाना चाहते थे कि जिससे मासाहारियोंको भोज्य पदार्थ खिलाकर उनकी रुचि स्वादिष्ट और उत्तम मासवर्जित भोजन पर आकर्षित की जावे। इसके लिये आप लिखापढी कर रहे थे।

ब्रह्मदेशकी यात्रा।

अब आपने अपना पक्का विचार जानेका कर लिया था और कलकत्तेकी कमेटी करके आप ता० ३० दिसम्बरको रगून रवाना हो गए और वहा सैर करके कलकत्ते ता, १५ जनवरीको

आए । वहासे श्री शिखरजीकी यात्रा करते हुए आप ता० २० जनवरीको माह सुदी १ के दिन पीछे बम्बई आए । आपने अपनी यात्राका हाल अपने हाथसे लिखकर "**दिगम्बर-जैन**" पत्र फाल्गुण स० १९६८ अंक ५ मे प्रकाशित कराया है सो नीचे प्रमाण है---

ब्रह्मदेशनो प्रवास.

व्हाला बधुओ ! गत मासमा अमोए **रंगुन (ब्रह्मदेश)नी मुसाफरी** करी हती, जेमानी केटलीक जाणवा लायक हकीकत अत्रे प्रकट करवानु योग्य धारीए छीए केमके एथी ब्रह्मदेशनी स्थिति अने देखावनु भान वाचकोने मळी शकशे

प्रथम अमो ता २६-१२-११ (**पोस सुद ५**)ने दिने **मुंबईथी** नीकळी ता २८मीए साजे **हावरा (कलकत्ता)** स्टेशने पहोच्या, ज्याथी हेरीसन रोडपर आवेली **हरकीसनदास बाबूनी दिगंबर जैन धर्मशाळामां** उतर्या, जे पछी ता. ३१-१२-११नी सवारे **रंगुन** जती मेल स्टीमरमा जवाने **रेमघाट** उपर आव्या, के जे घाट एडना गार्डननी सामे चादपाल घाट नजीक आवेलो छे त्या सामे **एलेनकोरा स्टीमर** आवेली हती तेमा जईने अमारी जग्याए बेठा ए स्टीमरनी **टिकिट** त्रण वर्गनी होय छे, तेमा पहेला वर्गना रु ९५), बीजा वर्गना रु ४५) अने त्रीजा **वर्गना रु. १०)** होय छे अने टिकिट स्टीमरना उपडवाना मुकरर दिवस पहेला पण मळी शके छे आवी रीते अठवाडीआमा त्रण स्टीमरो **कलकत्तेथी रंगुन** जाय छे

हवे स्टीमर क्लाक ७-१० मीनीटे बारा उपरथी उपडी.

आ स्टीमर वराळयंत्रथी चाले छे ए स्टीमरमा **छ माळ** हता, तेमा अडधा माळ पाणीमा रहे छे, तेमा नीचला त्रण माळना आगळना अडधा भाग सुधीमा सांचा रहे छे अने वळी अडधा भाग सुधीमा लगेजनो सामान भराय छे, तेमज चोथा माळना थर्ड क्लासना (त्रीजा वर्गना), पांचमा माळमा सेकन्ड क्लासना अने छट्ठा माळमा फर्स्ट क्लासना पेसेन्जरो बेसे छे अमो **सेकन्ड क्लासमा** बेठा हता, जेनु वर्णन नीचे मुजब छे—सेकन्ड कलासना पेसेन्जरो माटे एक **केबीन** (ओरडी) होय छे, जे ओरडी आशरे आठ चोरस फुट होय छे, तेमा त्रण पेसेन्जरोनी सगवड करेली होय छे, जेमने माटे बीछानु, कबाट, दीवो तथा ओरडी दीठ एक सर्वंट (नोकर) होय छे फार्स्टक्लासमा आथी पण घणी सारी सगवड होय छे, स्टीमरमा अनेक देशोना पेसेन्जरो होय छे, तेथी तेमनी भाषानी माहिति तेमज व्यापार उद्योगने सारो फायदो थाय छे स्टीमरमा फ्रुट मेवो वगेरे जे कांई जोइए ते पण मळी शके छे अने त्या हिंदु होटल पण होय छे, तेथी आपणे जेम घरमा बेठा होईए तेमज लागे छे

हवे आ स्टीमर ता० ३–१–१२नी सवारे सात वागते **रगुनना** बारा उपर आवी अने अमो **मींनापुल घाट** उपर उतर्या अने त्याथी मोगलस्ट्रीट न० १४मा आवेली **सूरजमल लल्लुभाई झवेरीनी** पेढीमा उतर्या एज दिने अमो शहेर जोवाने गया, त्या **चच** (अपासरा) तेमज **रोयल लेक** (तळाव) के जे बहुज विशाळ छे, ते जोई त्याथी **सुलेडोगफयो (बौद्ध धर्मनुं देवल)** जोवाने गया क जे रोयल लेक उपर आवेलु छे.

आ देवल बौद्धोनु मोटामा मोटु देवल (मंदिर) छे, जेमा आशरे १९ फुट ऊंची आरसपहाणनी **प्रतिमाओ छे.** आ **चौदस**नो दिवस होवाथी त्या घणा **कुंगी** (साधु)ओने **स्वाध्याय** करता जोया आ लोको धर्म उपर घणाज श्रद्धालु तेमज मायाळु होय छे तेओना आचरण तेमज देवल अदरनी रचना जोई अमोने अत्यत आनन्द थयो जेम बावन जनाळी देवल होय छे, तेमज आ देवळ पण हतु तेमा एक देवलनु खर्च रु० १२००००) थएलु छे आ देवल जोया पछी अमो **मेमोरीयल गार्डन** तथा केन्टोमेन्ट गार्डनो (बगीचाओ) जोवा गया आ गार्ड नो (बगीचाओ) सारा छे ए पछी कोलेज, होस्पीटल अने अने **सुलेफयो पेगोडा** (बौद्ध धर्मनु देवल) जोता कमीन डाइनमा गया के ज्या धातुनी प्रतिमाओ सारी बने छे

आ शहेरमा इलेक्टीक (वीजलीक) ट्राम, टेलीफोन (तार) तथा बीजी दरेक व्यवस्था मुबाईना जेवीज छे अत्रे हिंदुस्ताननी वस्ती पोणो भाग अने बाकीनी **ब्रह्मी** लोकोनी वस्ती छे आ शेहेरनी वस्ती आशरे बे लाखनी छे अत्रे आशरे ९० जैनी व्यापारार्थे रहेला छे अने आपणु मदिर पण छे अही मुख्य पेदाश **चोखा**नी छे अने **हीरा**नो व्यापार सारो छे

अत्रेथी ता ९–१–१२ने दीने उपडी ट्रेनमा बेसी ता ६ ठी ए **मांडले** गया अने शा जमनादास उदेचदने मुकामे उतर्या अने तेज दिने अमो **राजा थीबोनो मेहेल** जोवा गया आ मेहेल बहुज पुरातन छे अने एनी बाधणी लाकडानी छे मेहेलनी आसपास एकेक माइल फरतो कोट छे, जे जोई अमो **मांडला हील** जोवाने गया आ हील (टेकरी) उपर जवाने पगथीआ

बधावेला छे सौथी उंचे फयो (देवल) छे, ते फयामा आशरे २९ फुट उंची **कायोत्सर्ग प्रतिमा** छे अत्रेथी शहेरनो देखाव रमणीय नजरे पडे छे ए पछी नीचे उतरीने अमो माडलानी पासे **सांजो** गाम छे त्या ट्राममा बेसीने **फयो** (देवल) जोवाने गया आ फयानी अदरनी व्यवस्था घणीज रमणीय छ ए पछी बीजे दिने **केरोसीन ओइल मील** (ग्यासतेलनो मील) जोवाने लाच (नानी होडी)मा बेसीने गया, के जे मीलमा **रंगुननी खाडी** ओळगीने जवाय छे त्या प्रथम ४० कोस उपर **ग्यासतेलना कुवा** होय छे, त्याथी स्टीमरमा भरीने कचरावाळु ग्यासतेल लावे छे, जेमाथी पछी मीलमा प्रयोगो करीने प्रथम चोख्खु ग्यासतेल जुदु पाडे छे, जेमाथी **पेट्रोल** काढे छे अने बाकी रहेला कचरामाथी मीणबत्ती बनावे छे अने तथी बाकीनो कचरो मीलमा बाळवाना उपयोगमा ले छे अन तथी बाकीनो भाग सडक उपर छटवाना उपयोगमा ले छे आवी रीत दरेक चीज उपयोगमा ले छे आ मील जोया पछी अमे माडलेनी पासे **भामो** नामनु गाम छे ते जोवा गया ज्या एक **मोटो घट** छे के जेना जेवडो मोटो घट आखी दुनिआमा नथी माडलामा हिंदुस्ताननी वस्ती पा भाग अने बाकीनी **ब्रह्मी** लोकोनी मालम पडे छे आ देशनी हवा बहु सारी छे आ शहेर ब्रह्मदेशनी राजधानीनु शहेर छे अत्रे दरेक जातनु अनाज पण सारु पाके छे तेमज हीरा, पाना अने माणकनो व्यापार सारो चाले छे, शहेरनी अने बजारनी बाधणी बहुज सारी छे

ए पछी ता० ८–१–१२ ने दिने **गोकटेक** जवाने नि-

कळया अही ट्रेन डुगर उपर थईने जाय छे आ डुगर साडात्रण हजार फुट ऊचो छे ऊचागमा **मेमीयो** शहेर छे त्यानी हवा बहुज सारी छे त्याथी नीचाणमा जता **गोकटेक** स्टेशन आवे छे त्या अमो ता० ९ मीए उतर्या अने तेज दिने **गोकटेकनी खीण** जोवाने गया के जे खीण पुल्थी ८७९ फीट नीचाणमा छे आ खीणमा २५० फुटनु बोगदु मालम पडे छे आ बोगदु कुदरती छे त्या लाबेथी **पाणीनो धोध** जबरो आवे छे आ पाणीना धोधनु उडाण आशरे ५० फुट हशे बोगदा उपर ३०० फीट ऊचो डुगर छे अने तेना उपर ३२५ फुट उचो पुल छे अने ते पुल डुगरनी ऊचाईथी ४०० फीटथी वधारे नीचाणमा हशे

ता० १०मीए आ खीण जोईने पाछा फरी ता० ११मीनी साजे अमो **रंगुन** पहोंच्या अत्रे लाकडाना कामनी मील सारी चाले छे, ते जोईने अमो ता० १२–१–१२ ने दिने कलकत्ते जवाने उपडया अने एलीफटा स्टीमरमा ता० १९मीए **कलकत्ते** आवी पहोंच्या अने तेज दिने त्याथी **समेदशिखरजी** जई यात्रा करीने पाछा कलकत्ते आव्या ज्याथी अमो कालीघाट स्टेशनथी बे माइल दूर आवेला **टाटा आयर्न कुंपनी** (टाटानु लोखडनु कारखानु) जोवाने गया अत्रे पासेनी लोखडनी खाणमाथी माटी लावे छे अने ते माटीने पहेला **हाइड्रोजन ग्यास** वती गाळे छे अने पछी जेवु जोईए तेवा आकारनु लोखडकाम बनावे छे हालमा आ मीलमा **१०००० माणसो** काम करे छे, जेमने रहेवाने माटे कपनी तरफथी मकानो बधावी आपवामा आवे छे एटले त्या एक **नानु गाम** जेवु थई पडयु छे आ कपनी

हालमा सारु काम करे छे अने हजु वधु काम चालु छे, जे बे मासमा पुरु थशे आ कंपनी तणुज सारु बीझनेस करी शकशे एम स्पष्ट जणाय छे

आ कंपनी जोया पछी बीजेज दिने एटलेता १७-१-१२ नी साजे त्याथी उपडी अमो ता २०-१-१२ (माहा सुद १) नी सवारे पाछा मुंबाई आवी पहोच्या

ता ५-२-१२ जाति सेवक-

माणेकचद हीराचद जे. पी मुंबाई.

यद्यपि आप रंगूनमे फलाहार होटल स्थापित करना चाहते थे परतु व्यवस्थाके लिये कोई प्रबन्धक न मिलनेसे आपने अपने विचारको बद रक्खा।

बादशाह पचम जार्ज-की सेवामें मानपत्र।

सेठजी बम्बई आए तब यह चर्चा चली कि दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासी तीनों आम्नायोंके जैनी भाई मिलकर अपनी २ महासभाके मुख्य कार्यकर्ताके हस्ताक्षरसे एक सम्मिलित मानपत्र श्रीमान् महाराज पचमजार्ज और महाराणी मेरीकी सेवामे अर्पण करें। यह मानपत्र बम्बई कलेक्टरके द्वारा ता० ३० जनवरी १९१२ को महाराजकी सेवामे भेज दिया गया। इसमे सेठजीने भा० दि० जैन महासभाके सभापतिकी हैसियतसे, सेठ कल्याणमल सौभागचदने जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेसकी हैसियतसे और राय सेठ चादमलजीने जैन स्थानकवासी कानफरेन्सकी हैसियतसे हस्ताक्षर किये थे।

दक्षिण म० जैन सभाका १४ वा वार्षिकोत्सव और सेठजी।

ता० १ मार्च १२ से ६ मार्च तक बेलगाममे पचकल्याणकोत्सवके समय दक्षिण महाराष्ट्र दि० जैन सभाका चौदहवा वार्षिकोत्सव श्रीमान् स्याद्वादवारिधि **पं० गोपालदास न्यायवाचस्पति**के सभापतित्वमे बडे समारोहके साथ हुआ। उत्तर हिंदुस्तानके केवल दिग्विजयसिंह आदि अनेक महाशय पधारे थे। श्रीमान् सेठजी साहब भी ता० २ री मार्चको पहुच गए थे जिनका यथायोग्य सत्कार किया गया था।

कुल प्रस्ताव २१ पास हुए थे जिनमे उल्लेख योग्य ये थे—

(१) श्रीमान् सेठ माणिकचद पानाचन्दजीको २५०००) नकद व १५०) मासिक रतलाम बोर्डिगके लिये देने पर धन्यवाद।

(२) बाललग्न निषेधके प्रस्तावको मराठी, हिन्दी, कनडी, गुजराती, सस्कृत व बगाली ऐसी छ भाषाओंमें विवेचन किया गया। इस समय सभाका फोटो लिया गया था।

(३) डेपुटेशन शिक्षण फड वसूल करनेको बाहर निकले—इसको सेठ माणिकचदजीने स्वय पेश किया था।

(४) बेलगाममे बोर्डिग खोलनेके सम्बन्धमे सेठ धर्मराव सूबेदारका आभार मानना।

(५) धर्म द्रव्यका सदुपयोग।

इस सभामें कोल्हापुर निवासी मि० कलाप्पा मावडेंकरको चित्रकला सीखनेको इटाली भेजनेके लिये ११९४) का फड कर दिया गया। इसने सेठ माणिकचन्दजीने बहुत परिश्रम उठाया।

ता० ४ मार्चको जिलेके कमिश्नर मि शेपर्ड साहबका स्वागत सभामें हुआ। उस समय साहबने अपने भाषणमें कहा "जैन कौमका वर्तन बहुत सरल, उद्योगी और कर्तव्य दक्षताका होता है, जैनधर्म पृथ्वीके अत्यत पवित्र और शुद्ध धर्मोमेंसे एक धर्म है। इनके अनुयायी शांततामिय और सुधारणाशील होते हैं, ऐसा मुझे मालूम होता है।"

श्रीमती मगनबाई ककुबाई आदि परोपकारिणी स्त्रियोंके उद्योगसे ता० ४ और ५ मार्चको भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषदकी दो बैठकें सेठ हीराचन्द नेमचन्दकी धर्मपत्नी सौ० सखूबाईके सभापतित्वमें हुई। ४ प्रस्ताव पास हुए। स्त्रीशिक्षा फडमें ३००) नकद आए। ४००० स्त्रियोंको उपदेश मिलनेसे स्त्री समाजमें अच्छी जागृति हुई थी।

बेल्गावमें मि ए० पी० चौगले बी० ए० एल एल० बी० ने १००००) खर्च कर एक सुशोभित मंदिरजी बनवाया था उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा लक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरके द्वारा फाल्गुण सुदी १२ से वदी ३ तक हुई थी।

सेठ माणिकचन्दजी ललितपुरके सेठ मथुरादास टडैया और पन्नालालजीको वार वार यह उपदेश किया करते थे कि ललितपुरमें आप ग्रामीण बालकोंको विद्या पढानेके हेतुसे बोर्डिंग खोलें। उपदेशका असर कभी न कभी होता ही है।

ललितपुरमें बोर्डिंग स्थापन।

वीर स० २४३८ मे क्षेत्रपालपर बोर्डिंग सहित सस्कृत एग्लो पाठशाला खुल गई और १९ छात्र बोर्डिंगमे रहने लगे ।

खांमगाममें सभा और सेठजी । खामगाम जिला वरारमे नवीन जिन मदिर व बिम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव वैशाख सुदी ३ मे १९ तक हुआ था। इसी बीचमे ता २६ अप्रैल १९११ से ३० अप्रैल तक बम्बई दि. जैन प्रान्तिक सभाका नवम वार्षिकोत्सव रानीवाले सेठ पदमराज फूलचद कलकत्तानिवासीके सभापतित्वमें बडे समारोहमे हो गया । सेठ **माणिकचंदजी** भी पधारे थे। कुल १२ प्रस्ताव पास हुए, जिनमे उल्लेख योग्य प्रस्ताव ७ शिखरजी व चपापुरकी तेरापथी कोठीके सुधारके विषयमें व नं १२ बरार प्रातमे छात्रवृत्ति देनेके लिये था । इस आखरी प्रस्तावका समर्थन हमारे सेठजीने किया था । सेठजीकी प्रेरणासे रा. रा देवीदास चौरे बी ए एल एल बी वकील अकोलाने एक बोर्डिङ्ग १६–६–१९१०को **अकोला**मे खोल दिया था, पर उसकी आर्थिक दशा अच्छी नही थी । सेठजीके इशारा करनेसे तुर्त ११००)का चदा बरार शिक्षाप्रचारक खातेमे होगया तथा सभाके खातोंमे भी ८५० आए । बाबू करोडीचद आराके उद्योगसे सरस्वती भवन आराके लिये भी ४००) हो गए । भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिने आरा भवनको १५१) नकद व १ प्रति **संस्कृत गोमटसार**की भेट की ।

जब सेठजी अमदेशकी यात्रा सहीसलामतीसे जहाज व रेल द्वारा पूर्ण करके लौट आए तब आपके भाव विलायत यात्राके भी हुए। आपकी इच्छा थी कि लंदनमें एक जैन बोर्डिङ्ग हाउस स्थापित करा दिया जाय जिससे जैनी छात्र व व्यापारी अपने धर्म व खानपान आचारकी रक्षा करते हुए लौकिक लाभ उठा सकें। यह विचार अप्रैल मास १९१२में पक्का भी हो गया यहातक कि ता. २८ अप्रैल १९१२ के 'प्रगति आणि जिनविजय'मे यह प्रसिद्ध भी होगया कि सेठ वालचंद हीराचंद व २-३ गृहस्थो के साथ सेठजी जूनके आरभमें विलायत जानेवाले है। परंतु शरीर-अस्वस्थताके कारण आप जा नही सके। विलायत जानेकी उत्कंठा-से आपने कई मास पहलेसे एक मास्टरके द्वारा बगलेपर इग्रेजी पढना भी शुरू कर दिया था।

सेठजीके विलायत जानेकी इच्छा।

आपका यह विचार कितना पुख्ता था इसके प्रमाणमें पाठकोको एक कार्डकी नकल बनाई जाती है जो सेठजीने ता. ३१ मई १९१२मे बाबू सुमतिलाल बनारसको लिखा था।

"Your kind letter of 24th instant to hand and I am very glad to read it For a long time I am intending of opening a vegetarian or Jain Boarding House at England and still having that intention, I am now thinking over its scheme and will let you know soon in the subject."

अर्थात्—आपका २४ तारीखका पत्र पढकर हर्ष हुआ। मैं बहुत दिनोंसे इंग्लैंडमें एक जैन बोर्डिङ्ग खोलनेका इरादा कर

रहा हूं और अब भी वही विचार है। मैं उसका उपाय सोच रहा हूं और आपको शीघ्र इस विषयपर लिखूंगा।

पाठको ! सेठजीका स्वर्गवास थोडे ही काल पीछे हो गया। यदि उनका जीवन दो चार वर्ष और रहता तो संभव था कि विलायतमें एक जैन बोर्डिंग खुल जाता। अब उनके पीछेके **धनवानोंका कर्तव्य** है कि इस आवश्यक्ताको पूरी करें।

अलाहाबाद दि० जैन बोर्डिंगका स्थापन।

जिस बोर्डिङ्गके खोलनेके लिये सेठजी बहुत ही उत्सुक थे व जिसके लिये आपने २५०००) का दान कराया था उस बोर्डिंगके खोलनेका मुहूर्त आषाढ वदी २ ता० १ जुलाई १९१२ को पार्क रोडपर एक किरायेके बंगलेमें **बाबू शिवचरणलाल** बी० ए० एलएल० बी० रईस-म्यूनिसिपल कमिश्नर प्रयागके द्वारा बडे समारोहसे सरस्वती पूजनके साथ हो गया। बम्बईसे सेठजी स्वयं नहीं आ सके थे पर अपनी सुपुत्री मगनबाईजी व श्रीमती ककुबाईजीको भिजवा दिया था व ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको भी काशीसे वहां बुलवाया था। धर्मपत्नी ला० सुमेरचंदजीने सर्व प्रबन्ध योग्य रीतिसे कराया था। मास्टर दीपचंदजी उपदेशक बम्बई प्रान्तिक सभाको सेठजीने यहांकी सुपरिन्टेन्डेन्टीके लिये भेजा था। प्रारंभमें ९ ही छात्र भरती हुए। फिर बढते २ ता० ३१ जुलाई १९१४ तक १९ छात्र बी० ए०, बी० एस० सी०, एम० ए० आदि कॉलेजकी पढाईके अजमेर, सीतापुर, मेरठ, बिजनौर आदिके हो गए। ये सब गोमट्टसारसे लेकर तत्त्वार्थ सूत्र छहढाला तक धर्मशिक्षा लेने लगे। तथा इसके लिये मेयो कॉलेजके-

पास ही पीली कोठी नामकी एक हवादार इमारत ९०००) के अनुमानमें खरीद ली गई है तथा इस २५०००) की रकमका ट्रष्टडीड भी हो गया है। मास्टर दीपचन्दके उद्योगसे इस बोर्डिंगका काम अब बहुत पक्का हो गया है। बाबू कन्छूलाल मंत्रीका काम बहुत विचारसे करते हैं। स्थापनाके समय सेठजीने अपनी पुत्रीद्वारा ३००) फंडमें दिये, तब सभापति शिवचरणलालने २५०) इस तरह ९६२) का चंदा हो गया। इस बोर्डिंगमें भी बहुत बड़ा लाभ हो रहा है। छात्रोंमें जैनधर्मसे प्रेम बढ़ रहा है। बाल्पनमें सेठजीको Will power (आत्मिक दृढ़ता) बड़ी प्रबल थी। यह इसीका ही प्रताप था कि जो वह चाहते थे उस कार्यको कभी न कभी पूरा कराके ही छोड़ते थे।

श्रीमती मगनबाईजीका पंजाब भ्रमण।

पूज्य पिताश्रीकी आज्ञा लेकर परोपकारी सुपुत्रके समान कार्यकुशल श्रीमती मगनबाईजीने श्रीमती ककुबाई शोलापुर और श्रीमती चन्दाबाई आराके साथ ता. २९ मई १९१२ से २ जुलाई तक पंजाबमें भ्रमण करके अपने धर्मोपदेशसे स्त्रियोंमें उत्तेजना दी तथा श्राविकाश्रम बम्बईका प्रचार किया। आपके भ्रमणका संक्षेप हाल यह है —

ता. १ जूनको **मथुरा**से मेरठ होती हुई **हस्तिनापुर**में पहुंचकर ता. ३से ८ तक ठहरीं। ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमका निरीक्षण किया। बाईजीने ५१) व चन्दाबाईने ५१) व ३०)के कपड़े, व ककुबाईजीने ५) आश्रमको भेट किये। बहसूमा ग्राममें दर्शन करके सभा की। यहासे चलकर **मेरठ** शहरमें आईं। वहां रत्नत्रयपर व्याख्यान देकर

आश्रम बम्बईके लिये ३२९) का चदा किया । सदरमे भी स्त्रीसभा की व कन्याओंकी परीक्षा लेकर इनाम बाटा । ता० ११ जूनको **जालंधर** गई। यहां उपदेश होकर ३२९) सरस्वती भवन आरा व २४) आश्रमको प्राप्त हुए । कन्या महाविद्यालय देखा । वहा ३०० कन्याए रहकर पढती है । २०००) मासिकका खर्च है। २१ शिक्षिकाए व शिक्षक हैं । ११ श्रेणिया है । ता० १३ जूनको **अमृतसर** जाकर यहा सिक्खोका मदिर देखा । ता० १४ जूनको लाहौर गई, बोर्डिंग देखा व स्त्रियोको श्राविकाचार समझाया । ता १६ को **देहरादून** आई । यहा धर्मात्मा चमेलीबाईने १००) बम्बई व १००) मुरादाबाद आश्रमको दिये । कुल ३२४) का चन्दा हुआ । तीनो बाइयोके व्याख्यानोसे धर्मकी जागृति हुई। यहा १० अजैन बाइयोंने पानी छानकर पीने व रात्रिमे भोजन न करने व मद्य मास त्यागका नियम किया ।

ता १८ जूनको **हरिद्वार** जाकर कागडी गुरुकुल देखा फिर ता० २०को **मुरादाबाद** आई। वहा श्राविकाश्रमको देखा व जैनधर्म पर उपदेश दिया। ता २४ जूनको **देहली** आई। पहाडी धीरज-शाला देखी व शिक्षाप्रचार, सद्विद्या व रत्नत्रयकी दुर्लभतापर तीनों बाइयोके उपदेश हुए । दूसरे दिन शहरकी शाला देखी व सभामे षट्कर्म व ब्रह्मचर्यपर उपदेश दिया । ता २६ जूनको प्रयाग आकर बोर्डिंगका मुहूर्त करके ता २ जुलाईको बम्बई आ गई तथा श्रीमती चदाबाई देहलीसे वृन्दावन रवाना हुई । सेठजीने सर्व हाल प्रवासका जानकर इनके कार्यपर सन्तोष प्रकट किया ।

श्री शिखरजीकी तेरापथी कोठीका प्रबन्ध बहुत दिनोसे

शिखरजीकी तेरापथी कोठीका व चपापुर-जीका उद्धार।

खराब था जिसकी लिखित व जबानी शिकायतें सेठजीके पास वर्षोंसे आती थी। जब लाट साहब शिखरजीपर आए थे तब सेठ हुकमचंद आदिने इसके प्रबन्धार्थ एक कमेटी बना दी थी जिसके मंत्री बाबू बन्नूलालजी व कोषाध्यक्ष सेठ परमेष्ठीदासजी नियत हुए थे। इन्होंने उपाय किया पर काम हाथमें नहीं आया। तब सन् १९१०में शिखरजी पर तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिवेशनके समयपर यह प्रस्ताव कमेटीने पास किया कि वह कमेटी एक माहके भीतर प्रबन्ध हाथमें ले ले नहीं तो अदालती कार्रवाई की जावे। इस कमेटीने फिर भी शिथिलता की। यकायक बाबू बन्नूलाल जौहरी-प्रबन्धकर्ता तेरापथी कोठीका देहान्त हो गया। तब सेठजीने उसका प्रबन्ध अति शीघ्र होना उचित समझकर इन्सपेक्टर बाबू बशीधरको कलकत्ते भेजा। वहांपर यह एक मास ठहरे। तब ता २ जुलाई १९१२को कलकत्ताके दिगम्बर जैनियोंकी एक पंचायत हुई, जिसमें १९ महाशय कलकत्तेके प्रबन्धार्थ नियत किये। तब बाबू बन्नूलालने बशीधरजी-को लिखित पत्र देकर तेरापथी कोठी शिखरजी और चपापुरीका चार्ज लेनेको भेजा। बशीधरजीने ता ९ व १० जुलाईको चपापुरी-जीका चार्ज लिया। फिर ७ जुलाईसे २० तक शिखरजीकी कोठी-का अधिकार हाथमें लिया, तबसे प्रबन्ध दोनों स्थानोंका ठीक चल रहा है। चपापुरीजीका प्रबन्ध सेठ हरनारायण भागलपुर तथा तेरापथी कोठीमें बाबू बशीधर मैनेजर है। हिसाब आदि अब ठीक रहता है। इन दोनों कोठियोंके उद्धारमें सेठजी और उनके सहायक लाला प्रभुदयालजीने बहुत उद्योग किया।

भागलपुरमें १६ कोस **मंदार** हिल नामके स्टेशनसे १ मील मदारगिरि नामका पर्वत है। यहींसे श्री वासपूज्य स्वामीकी मुक्ति हुई है, चरण पादुकाएं हैं कुछ दिनोंसे जैनियोंने जाना आना बंद कर दिया था। बाबू देवकुमारजी आरा-निवासीकी खास प्रेरणासे सेठजीने इस क्षेत्रका सुप्रबन्ध करानेको बाबू बंशीधर इन्सपेक्टरको भेजा। बंशीधर-जीने सेठ हरनारायणजीके दृढ प्रयत्नसे इसका प्रबन्ध हाथमें लिया और बालचंद मुनीमको ता० १६ दिसम्बर ११ को नियत कर कोठी कायम कर दी। जबसे इसका प्रबन्ध बराबर चला आरहा है। सेठ हरनारायणजी प्रबन्धकर्ता है। बारामतीनिवासी सेठ तलकचंद कस्तूरचंदकी ओरसे पहाडके मंदिरके जीर्णोद्धारका काम हो रहा है। सेठजीके जीवनमें इस सिद्धक्षेत्रका उद्धार होना भी एक महा पुण्यदायक बात हुई है।

मंदारगिरि क्षेत्रका उद्धार व ५००) की मदद।

शोलापुर जिलेके दिगम्बर जैनी वास्तवमे उदारचित्त है। श्रीमान् सेठ गुलाबचंद रेवचंदगुजेटी वालोंने अपनी पूज्य माता **चतुरबाई**के स्मरणार्थ ११०००) दान करके श्राविकाओंके लाभार्थ एक श्राविका विद्यालय खोलनेका निश्चय किया व जिसका मुहूर्त श्रावण सुदी ३ गुरुवार ता० १९ अगस्त १९१२ को ठीक करके दानवीर सेठ माणिकचंदजी और उनकी सुपुत्री मगनबाईजीको निमंत्रित किया। श्रीमान् सेठजी अपनी सुपुत्री व श्राविकाश्रमकी

चतुरबाई श्राविका विद्यालय शोलापुर उद्घाटन।

सुपरिन्टेन्डेन्ट बाई यशोदाको साथ लेकर शोलापुर पहुचे। नियत स्थानमें प० पासू गोपाल शास्त्रीद्वारा सरस्वती पूजन होकर सभाका कार्य प० वशीधरजीके मगलाचरण पूर्वक प्रारभ किया। ऊपर लिखित ११०००) के सिवाय सेठ देवचद हीराचदकी पत्नी राजूबाइने भी १००००) देना मजूर किये। इस २१०००) ९ के टृष्टि नियत हुए। प्रबन्धकारिणी कमेटीमे मत्री रावजी सखाराम हुए। सेठ माणिकचदजीने स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकता बताते हुए श्राविका विद्यालयका बोर्ड खोला। उस समय उपस्थित मडलीने २६९७) की भेट की, जिसमे १०००) झुमाबाई भर्तार गौतमचद नेमचदने ५००), नवलबाई भर्तार परमचद रामचन्द, १०१) सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे पी, १०१) सेठ हीराचन्द नेमचन्द, १०१) सेठ माणिकचन्द आलद आदि। श्रीमती श्यामाबाई जैन और राधाबाई हेड मिस्ट्रेस शिक्षिकाए नियत हुई। इसका काम भी भले प्रकार चल रहा है।

काशी विद्यालयमें सेठजीका गमन

यद्यपि सेठजीका शरीर अस्वस्थ्यतासे थका हुआ रहता था तौभी आपको आवश्यक कामोंके लिये जाने आनेमें जरा भी आलस्य न था। शोलापुरसे लौटकर आए थे कि बनारससे पत्र आने लगे कि यहापर आकर प्रबन्ध ठीक करें। वहा विद्यालयसे ७ छात्र एकाकर चले गये थे, उनके समझानेका प्रयत्न था। सेठजीकी इच्छा वहा जानेकी बिल्कुल न थी, पर तार व पत्रोंके आनेसे तथा अपनी सभापतिकी जिम्मेदारीको समझ कर आप इच्छा न रहते भी काशी पधारे और ता० २९ अगस्त

१२ को कमेटी करके प्रबन्धमे सब समाधानी की।

सेठ माणिकचन्दजीकी चलाई हुई बोर्डिगकी पृथाने बहुतसे स्थानके भाईयोको इस कामके लिये उत्तेजित कर दिया। उन स्थानोमे एक मध्य प्रान्तका **वर्धा** स्थान भी है। यहा जैनियोके ७० घर है। आसपास भी जैनी है।

वर्धामें दिगंबर जैन बोर्डिग।

यहाके भाई प्रति वर्ष रथोत्सव भादो पीछे करते है। वीर सं० २४३८मे इन्होने बोर्डिग खोलनेका निश्चय करके बम्बईसे बोर्डिगके जन्मदाता सेठ माणिकचन्दजीको निमंत्रित किया। निराल्सी सेठजी अपनी सुपुत्री मगनबाई और श्रीमती ककुबाईके साथ वर्धा पधारे। आसोज वदी ९को रथोत्सवका समारम्भ होने पर दूसरे दिन ता० २ अक्टूबर १९१२ को सबेरे ८ बजे बोडिंग खुलनेका मुहूर्त हुआ। सरस्वती पूजन प० हीरालाल नागपुरने कराई। फिर सभा हुई। तब सेठजी सभापति नियत हुए। जयकुमार देवीदास चौवरे वकीलने 'विद्यादान' पर मनोहर भाषण दिया। उसके प्रभाव व सेठजीके गुप्त प्रयत्नसे तुर्त १९०००) का चंदा हो गया, जिसमे २१००) सेठ पन्नालाल, २०००) सेठ वकाराम वाइकाजी व १०००) सेठ मानमल पुलगाव इस तरह उदारचित्तोने दान किया। सेठजीने बोर्डिग भाडेके मकानमे खोला तथा मकान बनवानेका भाईयोंने प्रण किया। ता० ३ को श्रीमती मगनबाई और ककुबाईजीका 'स्त्रीशिक्षा' पर भाषण होकर १००) बम्बई श्राविकाश्रमके लिये एकत्र होगए। इस बोर्डिगमे १ वर्षमें ही २४ की सख्या छात्रोंकी होगई, इनमे ५ बोर्डिगके खर्चसे

रहनेवाले थे। अब इसका काम अच्छी तरहसे चल रहा है। सन् १९१९–१६ की परीक्षामें रत्नकरंड श्रावकाचारमें ८–१० छात्रोंने परीक्षा दी। जिसमें प्राय सबने अच्छे नम्बर पाये। मगनबाई और ककुबाईजीने ता० ३की रात्रिको एक सार्वजनिक सभा की "जिसमें स्त्रियोंके कर्तव्य" पर व्याख्यान देकर गाली गाना व होली खेलनेका त्याग कराया। यहा एक महेश्री रईस सेठ जमनालाल हैं जिन्होंने मारवाडी विद्यालय व बोर्डिङ्गको चला रक्खा है, ४००००.में ऊपर अपनी रकम प्रदान की है। इनकी धर्मपत्नीने १०१) मदद श्राविकाश्रम बम्बईको दी।

बबईमें परदेशगमनमें सभा।

ता १९ अगस्तको बम्बईसे कोल्हापुरनिवासी श्रीयुत कल्लापा बाबाजी मावर्डेकर और श्रीयुत चिंतामणि नागेन्द्र पत्रावली ऐसे दो दि० जैन विद्यार्थी बम्बइ जे जे आर्ट स्कूलमे चित्रकलाका पठनक्रम समाप्त करके विशेप शिक्षण लेनेके लिये **साडिनी** स्टीमर द्वारा इटाली देशके फ्लोरेन्स शहरके लिये रवाना हुए। उस समय हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंगके छात्रोंने अभिनन्दन किया व ता १४ को इनके सन्मानमे १ दावत दी व रात्रिको लल्लूभाई प्रेमानद परीखके सभापतित्वमे सभा करके सन्मान किया। तब प्रमुखने दोनों छात्रोको श्री रत्नकरड श्रावकाचार ग्रथ भेट किया और कहा कि परदेशमें जिन धर्मपर पूर्ण श्रद्धा रखना। इनके भेजनेमे दक्षिण महाराष्ट्र सभासे बेलगाममे जो फड हुआ था उसके सिवाय सेठ माणिकचदजी और सेठ नाथारगजीने भी छात्रवृत्तियें दी।

सेठ माणिकचंदजी जैन जातिमे हरएक विद्योन्नतिके काममें अग्रगामी रहते थे। शोलापुरकी मंडलीने

गायन वर्ग प्रारंभ।

आसोज सुदी १०के दिन एक जैन गायन समाज वर्ग स्थापित किया उसका समारंभ दानवीर सेठजीके द्वारा बड़े समारंभसे हुआ था।

शोलापुरसे आकर सेठजी **रतलाम** पधारे। अपने स्थापित बोर्डिङ्गका प्रथम वार्षिकोत्सव मिती आसोज

रतलाम बोर्डिंगका प्रथम वार्षिकोत्सव।

सुदी १४ को सबेरे ९ बजे एक भव्य मंडपमें यहाके दीवान रायबहादुर पं० वृजमोहन बी. ए. एल एल. बी के प्रमुखत्वमे बड़े समारोहके साथ हुआ। सेठजीने सभापतिका प्रस्ताव किया। सेक्रेटरी लल्लूभाई प्रेमानंदने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी, जिसमे बताया कि अब १९ हूमड, ५ खंडेलवाल, १ बघेरवाल ऐसे २५ छात्र दाहोद गढी, कुशलगढ आदिके हैं जो धर्मशिक्षा सिवाय चौथी इंग्रेजी क्लास तक के हैं। पं० कस्तूरचन्दजी व मूलचन्द किसनदासजीके भाषणके पीछे दीवान साहबने अपने भाषणमें बहुतसी उपयोगी बातोंमे यह भी कहा कि जैनियोमे जीमन वगैरहमें बहुत द्रव्य उडाते हैं तथा सुना गया है कि यहाकी ९ जातियोमें जो ज्योनार होनेवाली है उसमें २ लाख रुपया खर्च हो जायगा, इस रकमको विद्यादानमें खर्चना जरूरी है। बापदादोंके रिवाज फेरनेके लिये हिम्मतकी जरूर है। इसका ताजा दृष्टांत यह है कि महाराज रतलामके

यहा प्रति वर्ष श्राद्ध होता था जिसमे २०००) ब्राह्मणोंके जिमानेमे खर्च होते थे, *महाराजने इस खर्चको बन्द करनेको* १९०) मासिकके खर्चमे ब्राह्मणोंके लिये एक बोर्डिंग खोले जानेका हुक्म किया है। व्यापारमे धर्मादा जो कटे सो विद्यामे लगाना चाहिये तथा इस बोर्डिंगके मकानके लिये रजपूत बोर्डिंग जो बनवानी है उसके लिये भी महाराजा साहब मुफ्त जमीन दे सकेंगे।

सेठजीने सभापतिका हार तोरा आदिसे सन्मान किया। यहा विजिटर कमेटी बनी जिसमे ३० मेम्बर हुए। इनको 'दिगम्बरजैन' पत्र मुफ्त दिया जाना निश्चय हुआ। विद्यार्थियोंकी धार्मिक शिक्षामे परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। उद्योगशील सेठजी रतलाममे अपनी लक्ष्मीके सदुपयोग-

अहमदाबाद बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव।

को देखकर अहमदाबाद पधारे। कार्तिक वदी २ को सबेरे अनेक परदेशी व शहरके जैन व अजैन प्रतिष्ठित पुरुषोंकी सभामे परीख लल्लुभाईके प्रस्ताव करने व सेठ **माणिकचन्दजी**के समर्थनसे आनरेरी मजिस्ट्रेट रायबहादुर जीवनलाल प्राणजीवनदास लाखिया सभापति हुए। लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द सेक्रेटरीने रिपोर्ट सुनाई-इसमे कहा कि धर्म शिक्षामे ३१ मे २९ पास हुए हैं व श्रीमती रूपाबाईने ३२००) मे नवीन धर्मशाला बनवा दी है। फिर स्वय सेठ माणिकचदजीने रा० ब० लालशङ्कर उमियाशङ्करकी मृत्युके लिये शोक प्रदर्शक प्रस्ताव पेश किया। प० कस्तूरचद आदिके व्याख्यानोंके पीछे प्रमुखने अपने भाषणमे कहा कि सेठ माणिकचन्दजीने अनेक स्थानोंमे बोर्डिङ्ग खोलके तुम्हारी कौमके ऊपर भारी उपकार किया-

है । तुम श्रीमानोंको इनका अनुकरण करना चाहिये । ” रात्रिको सभामें अकलेश्वरके वीसा मेवाडा डिगम्बर जैन पचोंको निम्न लिखित जातीय प्रस्ताव करनेके उपलक्ष्यमें धन्यवाद दिया गया।

“ कन्याकी उम्र १० वर्ष हुए विना सगाई या लग्न करना नहीं तथा कन्यासे वरकी उम्र छ वर्ष बडी होना चाहिये जो इस प्रस्तावका भग करे तो दोनो पक्षको ५०१) रु दड देना पडेगा ”

विद्यार्थियोंको इनाम दिया गया व बोर्डिङ्गके लिये करीब ३००) के फट हुआ ।

भा० दि० जैन महिला परिषद्का तृतीय वार्षिकोत्सव ।

यह बडे आनन्दकी वात देखनेमे आती थी कि श्रीमती मगनबाईजीने जिस कामको अपने हाथमें लिया उसको वे बराबर नियमित रूपसे करती चली आती थी । जो भारतवर्षीय डिगम्बर जैन महिला परिषद सन् १९१०में श्री शिखरजीपर स्थापित हुई थी उसका तीसरा वार्षिकोत्सव श्री जम्बूस्वामीके मेलेपर मथुरामें ता १ नवम्बरसे ३ तक स्वर्गवासी राजा सेठ लक्ष्मणदासकी धर्मपत्नी चावबाईके सभापतित्वमे बडी सफलतासे हुआ । कायदेके अनुसार प्रमुखाजीका भाषण होनेके पीछे श्रीमती मगनबाईजी सचालिकाने रिपोर्ट सुनाई । ६ प्रस्ताव पास हुए । गगादेवी मुरादाबाद, व लडतीबाई इटावा आदिके व्याख्यान हुए । अध्यक्षाने श्राविकाश्रम बम्बईको १०) मासिककी सहायता दी व स्त्री शिक्षा फडमें १००) का चदा हुआ ।

सेठजीको हर्षके समाचार।

सेठजीके पास जबलपुरसे पत्र आया कि जिस बोर्डिंगके बनानेके लिये सिंघई नारायणदासजी २००००) दे गये थे उसके मकान बननेका मुहूर्त आश्विन वदी ९ को दीवान बहादुर सेठ वल्लभदासजीके द्वारा बडे समारोहके साथ हुआ। शहरके प्रतिष्ठित जन पधारे थे तथा उस समय धर्मपत्नी नारायणदासजीने कई सो रुपये दान भी किया। जैन मंदिर व संस्थाओंके सिवाय १००) हितकारिणी हाईस्कूल ९०) अंजुमन (मुसलमान) हाइस्कूल व ५० मिशन हाईस्कूलको, भी दिये। सेठजी इस पत्रको पढ़कर बहुत ही आनन्दित हुए क्योंकि जिस बातकी आपकी भावना थी यह बात अपनी सफलताके निकट आने लगी।

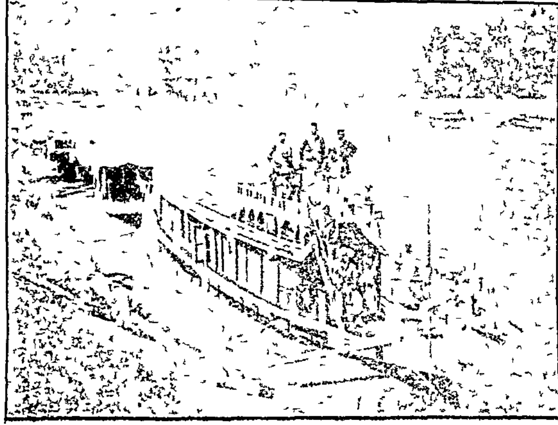
बम्बईमें रथोत्सव तथा प्रान्तिक सभाका १२ वा वार्षिकोत्सव।

वीर सं० २४३९ मिती पौष कृष्ण ३ से ९ मी तक ता० २६ डिसम्बर १९१२ से १ जनवरी १९१३ तक बम्बईमे रथोत्सवका समारंभ व मुम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका बारहवा अधिवेशन बडे समारोहके साथ लखनऊ निवासी बाबू अजितप्रसादजी एम ए एलएल बी के सभापतित्वमे हुआ। इसके प्रबन्धमें सेठ माणिकचंदजीने खास तौरसे उद्योग किया। इस सभाम श्रीमान् न्यायवाचस्पति प० गोपालदास, प० अर्जुनलाल सेठी, कुवर दिग्विजयसिंह, बाबू जुगमन्दिरलाल एम० ए०, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी आदि पधारे थे जिससे धर्मोपदेशका अच्छा समागम रहा था। कुल ९ प्रस्ताव

पास हुए । जिनमे मुख्यये थे। (१) ता० २३ दिसम्बर १९१२को जो उपसर्ग दिहलीमे बडे लाट वाइसरायको हुआ उसपर खेद प्रकाश व उससे रक्षित रहनेपर हर्ष (२) आगामी अधिवेशन पालीताना सिद्धक्षेत्र पर हो। श्रीमान् पडित गोपालदासजीको **स्याद्वादवारिधिके** पदका अभिनन्दन पत्र व न्यायवाचस्पतिके पदका सस्कृत मानपत्र जो कलकत्तेकी विद्वज्जन समाजसे आया था सो अर्पण किया गया। यहा रथोत्सवकी बोली २५००) की हुई जिसमे सेठ माणिकचन्द पानाचन्दने खवासीकी बोली २०१) रु मे ली।

श्रीमती मगनबाईजीने भी इस मौकेपर ता २८ और ३१ दिसम्बरको दो स्त्री सभाए की। एकमे श्रीमती नानीबाई गज्जर (अजैन) वनिताविश्रामकी सचालिका और दूसरीमे सेठ सुखानदकी धर्मपत्नी प्रमुखा हुई। अनेक उत्तम व्याख्यान हुए। श्राविकाश्रम बम्बईको ३६७) का लाभ हुआ इस सभामे प्रान्तिक सभाको कोई फट नहीं हुआ इसका कारण यह हुआ था कि बाबू अजितप्रसादजीने अपना विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानमे यह बताया था कि जैनियोंको परस्पर खान पनके साथ परस्पर सम्बन्ध भी करना चाहिये ऐसा ही प्राचीन शास्त्रीय नियम था। इस वातको सुनकर यहाके मारवाडी लोग भडक उठे थे। इसीसे धनवानोंको हाथ सकोडनेका मौका लग गया।

(देखो पृष्ठ ७२५)



काश्मीरके प्रवासमें सेठजी.

J V. P Surat.



काश्मीरका प्रवास.

(देखो पृष्ठ ७२२)

J. V. P. Surat.

आश्रम बाधनेके लिये श्रीयुत भूपाल आप्पाजी जिन्होंने जो २३००) सभाको दिये है व मंदिरके खर्चके लिये १००) वार्षिकका उत्पन्न देनेका विचार किया है इसके लिये आभार माना जावे (३) लाहौरके लाला रामचंद एम ए सबसे पहले जैनियोंमें सिविल सरविशकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए इस पर आनन्द प्रकाश (४) जैनियोंकी सख्याकी कमीके कारणोंकी जाँच कीजावे (५) सच्चे धर्मोपदेशकोंके भ्रमणका प्रबन्ध कराया जावे (६) **व्यापारमें एकत्रित धर्मादेकी रकम धार्मिक कामोंमे लगाई जावे** । इस प्रस्तावको स्वय सेठजीने पेश किया। यह सेठजीका खास अमली प्रभाव था। इसके बदौलत आपने बहुतसा रुपया इधरके लोगोंकी जो यातो खाली जमा रहता व ऐसे वैसे काममें जाता उसे शिक्षा प्रचार आदि उपयोगी कामोंमें खर्च करादिया यहा तक कि सागलीकी बोर्डिंग इसी रकमसे ही खुल गया। खेती सम्बन्धी वस्तुओंकी प्रदर्शनी भी एकत्र की गई थी जिसको स्वय सेठजीने अपने हाथसे खोला।

वास्तवमें दक्षिण महाराष्ट्र सभाके कार्य अतिशय श्लाघनीय हुए है।

जिस समय यह पन्द्रह्वी बैठक हुई थी उस समय इस सभा द्वारा कार्योंकी स्थिति निम्न प्रकार थी —

(१) जैन बोर्डिंग कोल्हापुरमे ६० विद्यार्थी कॉलेज व हाईस्कूलका शिक्षण धर्म शिक्षाके साथ लेते थे। ३२०००) की इमारत विद्यार्थीगृह, चतुरबाई सभागृह, श्री अनन्तनाथ मंदिर वगैरह लेकर बधी हुई थी।

लाला सुलतानसिंह रईस देहलीके सभापतित्वमें प्रस्ताव ३ पास हुए (१) जो शिखरजीकी प्रतिष्ठामें रुपया आया था वह पर्वतरक्षा फंडमें मिलाया जाय (२) मुकद्दमा न० २८८ चलाया, जाय तथा इसका खरचा आधा २ तेरापंथी व बीसपन्थी कोठीसे लिया जाय (३) मुकद्दमेंके प्रबन्धके लिये १९ महाशयोंकी कमेटी बनाई जाय जिनके मंत्री और खजान्ची सेठ हरसुखदास हजारीबाग हों।

यहासे सेठजी बम्बई आए कि आपको दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके पद्रहवें वार्षिक अधिवेशनमें जानेकी फिक्र हुई। यद्यपि सेठजीका शरीर बहुत अस्वस्थ था। अब थोडासा भी परिश्रम करने व चलनेसे जिस पगमें चोट थी उसमें दर्द हो उठता था तौभी जाति प्रेम इस कदर था कि आप इधर उधर जाने आनेसे घबड़ाते नहीं थे। दूसरे द० म० सभा पर आपका अधिक प्रेम इसलिये था कि इस सभाके कार्यकर्ता सेठजीकी आज्ञानुसार काम करते व बहुत ही दिलचस्पी दिखलाते थे। अतएव सेठजी कानपुरसे लौटते ही दक्षिणको रवाना हो गए। इस वर्ष सभाका पद्रहवा वार्षिकोत्सव श्री स्तवनिधि क्षेत्रपर सेठ **रामचंद नाथा** गांधीके सभापतित्वमें हुआ। हमारे सेठजीने सभापतिके प्रस्तावका अनुमोदन किया। सभामें २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे (१) लार्ड हार्डिंगके उपसर्गसे बचनेपर हर्ष। इसका अनुमोदन सेठजीने किया (२) कोल्हापुर बोर्डिंगकी जमीनपर धर्मशाला व यति

द० म० जैन सभाका १५वा वार्षिकोत्सव स्तवनिधि।

आश्रम बाधनेके लिये श्रीयुत भूपाल आप्पाजी जिन्होंने जो २३००) सभाको दिये हैं व मंदिरके खर्चके लिये १००) वार्षिकका उत्पन्न देनेका विचार किया है इसके लिये आभार माना जावे (३) लाहौरके लाला रामचंद्र एम ए सबसे पहले जैनियोंमें सिविल सरविसकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए इस पर आनन्द प्रकाश (४) जैनियोंकी संख्याकी कमीके कारणोंकी जाँच कीजावे (५) सच्चे धर्मोपदेशकोंके भ्रमणका प्रबन्ध कराया जावे (६) **व्यापारमें एकत्रित धर्मादेकी रकम धार्मिक कामोंमें लगाई जावे।** इस प्रस्तावको स्वयं सेठजीने पेश किया। यह सेठजीका खास अमली प्रभाव था। इसके बदौलत आपने बहुतसा रुपया इधरके लोगोंकी जो यातो खाली जमा रहता व ऐसे वैसे काममें जाता उसे शिक्षा प्रचार आदि उपयोगी कामोंमें खर्च करादिया यहा तक कि सांगलीकी बोर्डिंग इसी रकमसे ही खुल गया। खेती सम्बन्धी वस्तुओंकी प्रदर्शनी भी एकत्र की गई थी जिसको स्वयं सेठजीने अपने हाथसे खोला।

वास्तवमें दक्षिण महाराष्ट्र सभाके कार्य अतिशय श्लाघनीय हुए हैं।

जिस समय यह पंद्रहवी बैठक हुई थी उस समय इस सभा द्वारा कार्योंकी स्थिति निम्न प्रकार थी —

(१) जैन बोर्डिंग कोल्हापुरमें ६० विद्यार्थी कॉलेज व हाईस्कूलका शिक्षण धर्म शिक्षाके साथ लेते थे। ३२०००) की इमारत विद्यार्थीगृह, चतुरबाई सभागृह, श्री अनंतनाथ मंदिर वगैरह लेकर बधी हुई थी।

(२) सागली विद्यार्थीगृहमें १५ छात्र छात्रवृत्ति लेकर सीख रहे थे।

(३) सुभेदार विद्यार्थीगृह बेलगावमें २००००) के फंडसे जो स्थापित हुआ था। १८ विद्यार्थी थे।

(४) हुबली बोर्डिंगमे १८ छात्र थे। इमारतके लिये ६०००) जमा थे तथा ४०००) की जमीन एक गृहस्थने दे रक्खी थी।

(५) 'जिनविजय' कन्डीमें मासिक व साप्ताहिक मराठी "प्रगति आणि जिनविजय" ऐसे दो पत्र जारी थे व श्रीयुत चौपडे कीर्तनके साथ उपदेश करते हुए भ्रमण करते थे।

(६) स्त्रीशिक्षाके लिये छात्रवृत्तियें देकर अध्यापिकाएं तैयार कराई जा रही थी।

(७) स्तवनिधि क्षेत्रमें सडक, तालाव आदि ठीक करानेमे हजारों रुपये खर्चे थे।

सेठ माणिकचंदजी एक दक्षिण प्रान्तमें ४ बोर्डिगोंके द्वारा जैनियोंमें शिक्षाका प्रचार होते हुए देखकर बहुत ही हर्षित थे। आप स्तवनिधिसे लौटते हुए **सांगली** गए। वहाके कामको ठीक होते हुए देखकर आपके चित्तमें वहा इमारत बांधनेकी आ गई क्योंकि सेठजीको मकान बनवानेका व अच्छे हवादार, रोशनीवाले मकानोंमें छात्रोंको रहते हुए देखनेका शौक था। आप अपने समान अपने छात्रोंको भी समझते थे। जैसे आप योग्य महलमें रहते थे ऐसे ही छात्रोंके लिये भी चाहते थे। आप सेठ रामचद नाथाके

साथ सागलीके महाराजसे मिले । महाराजने इमारतके लिये जमीन देनेका व अन्य प्रकारसे सहायता करनेका वचन दिया । वास्तवमें उद्योग इसको कहते हैं । सेठजी बम्बई आ गए ।

काश्मीरका प्रवास । विक्रम सम्वत् १९६९ जेठ मासमें सेठ माणिकचन्दजीने शोलापूर निवासी सेठ वालचन्द हीराचन्द दोशी, सेठ जीवराज गौतमचन्द गाधी और सेठ जीवराज वालचन्द्र गाधीके साथ ३ मास तक काश्मीरमें भ्रमण किया । इसका विवरण बहुत कोशिस करने पर हमें नहीं मिल सका परन्तु जो बहुत ही सक्षिप्त हाल जाना गया—नीचे प्रकट करते हैं । बम्बईसे रवाना होकर आगरा पहुचे और बोर्डिंगकी व्यवस्था ठीक कराई । यहासे दिल्ली होकर मेरठ पहुचे और यहाकी बोर्डिंगका निरीक्षण किया । यहासे हस्तिनापुरके दर्शन करके देहरादून और मसूरी पहाड होकर शिमला पहुचे और यहा मन्दिर स्थापनके लिये प्रेरणा की और दान भी दिया। यहासे अमृतसर पहुचे । यहा सोनका नानकसाई देखा । यहासे लाहौर जाकर अपनी बोर्डिंगका निरीक्षण किया । यहासे साम्भरलेक जाकर सैन्धवको देखा । यहासे जम्मू और रावलपिन्डी होते हुए फिटन व तागेमें बैठकर काश्मीर पहुचे । यहा १२ दिन ठहरे। यहा जेलम नदी, बाग, बड़ी मसजिद आदि देखे और केशरके खेत देखकर केशर खरीद की । यहासे रावलपिन्डी, पेशावर, मुल्तान, कराची, जोधपुरमें जा कर २ या ३ दिन तक ठहरे और जोधपुरसे सीधे श्रावण मासमें बम्बई आ पहुचे । इस भ्रमणमें दो स्थानपर ग्रुप फोटो लिये गये थे जो अन्यत्र मुद्रित है ।

बम्बई गुजराती दि० जैन मंदिर ।

बम्बई नगरमें पुराना गुजराती दिगम्बर जैन मंदिर है । यह पर माणिकचद लाभचद नामकी जैन पाठशाला चालू की गई थी । उस मदिरके मुख्य प्रबन्धक नेमचदने इसका विरोध किया जिसपर पंचोंमें परस्पर झगडा हुआ । मामला अदालत तक पहुचा । इसमें सेठजीको उलझकर कोशिस करनी पड़ी इससे मदिरका ७ या ७ हजारका भडार खर्च हो गया तथा जिन प्रतिपक्षियोंके पास भडार न था उनका जातीय रुपया खर्च हुआ । अतमें आपसमे समाधानी हुई । कोर्टने कुछ नियम बनाके पाच ट्रस्टी नियत कर दिये जिनमें सेठ माणिकचदजी भी एक हुए ।

सेठ पानाचदजीकी संतान ।

जब सेठ पानाचदजीका देहान्त हुआ तब आपके अतिम विवाहसे अर्थात् रुक्मणीबाईसे तीन सतान सजीवित थी, उनमेंसे लीलावतीका विवाह परोपकारी, विद्याप्रेमी व उद्योगी जौहरी ठाकुरदास भगवानदासके साथ हो गया जिनके सयोगसे वर्तमानमे एक पुत्री है। स १९६९में लीलावती १७ वर्षकी थी । इसी समय दूसरी कन्या रतनबाई जो सं० १९६९में १९ वर्षकी थी व पडनेमें बहुत ही चतुर थी, जिसने ६ वी श्रेणी तक चदाराम गर्ल्स हाईस्कूलमें इग्रेजी शिक्षण प्राप्त किया था सो यकायक बहुत सख्त बीमार होकर सूरतमें जा

ता ३ मार्च १९१३को इस ससारसे चल बसी। इसको शिक्षाका बहुत प्रेम था। मरनेके पहले इसने अपनी इच्छासे ही १५०००) का दान स्त्री शिक्षाके लिये किया और मातासे कह गई कि इस रकमसे दि० जैन समाजमें स्त्री शिक्षाका प्रचार किया जाय। वास्तवमें दानियोंकी सतान भी दानी होती है। इसके वियोगसे इसकी माता रुक्मणीबाईको तो शोक हुआ ही पर सेठजीको भी भारी दुःख हुआ क्योंकि ऐसी शिक्षित सुशील कन्यासे सेठजी भविष्यमे जैन जातिकी उन्नतिकी बहुत कुछ आशा रखते थे। रुक्मणीबाईको अपनी तीसरी सतान पुत्र ठाकुरभाईको देखकर सतोष हो जाता था। स० १९६९में यह १३ वर्षका था और नित्य स्कूलमें पढने जाता था। इसका चित्त सरल व कुछ धर्म-परायण है। सेठ पानाचदकी कीर्तिको यह विस्तृत करेगा ऐसी आशा रुक्मणीबाई व अन्य कुटुम्बी जनोंको है।

एक कन्याका १५०००)का दान।

पिताके समान आलस्य रहित श्रीमती मगनबाईजीने इन्दौर छावनीमें सेठ गेंदनलाल और भूरीबाई द्वारा निर्मापित नवीन जिन मदिर बिम्ब प्रतिष्ठोत्सव पर जाकर ८ दिन तक कई स्त्री सभाएं करके मिथ्यात्वत्याग, शीलव्रत आदि पर व्याख्यान देकर सैकड़ों स्त्रियोंसे नियम कराए। श्रीमती पार्वतीबाई, गुलाबबाई, हगामीबाई आदि पढी हुई बहनोंके साथ ज्ञान चर्चा करके बहुत लाभ प्राप्त किया, फिर ता २८-२-१३ को बम्बई लौट आई।

श्रीमती मगनबाईजी का उद्योग।

सेठजीका विद्यार्थियोंसे प्रेम और कोल्हापुर गमन।

हम ज्यों २ सेठजीके कृत्योंका विचार करते है त्यों २ सेठजीके निरालस्य और शिक्षाप्रेमी स्वभाव की कोमलता देखकर आश्चर्य होता है। कोल्हापुर बोर्डिंगके विद्यार्थियोंने एक विद्यार्थी सम्मेलन स्थापित कर रक्खा था जिसका उत्सव ता० २१ अप्रैल १९१३ को बडे समारोहसे करना विचार कर सागली, हुबली, शोलापुर व बेलगाव बोर्डिंगोके छात्रोंको व अन्य गावोंकी करीब ४०० जैन मडलीको एकत्रित किया। मि० ए० पी० चौगले, रा० रा० ल्ट्ठे तथा विद्यार्थियोंके **सच्चे पिता सेठ माणिकचंदजीको भी बुलाया था।** ध्वजा पताकाओंसे सुशोभित करके एक मडप बाधा गया था। सवेरे ही दर्शन पूजादि नित्य कर्मके पीछे सर्वका दूध चायसे सत्कार किया गया। फिर सर्व विद्यार्थियोंका फोटो लिया गया। सेठजीने अखाड़ेका द्वार खोला। कुस्तियोंकी कसरतक साथ २ पटा खेलना, दौडना, गेंद फेंकना आदि खेल दिखलाए गए। हरएक खेलमें सर्वोत्तम तीनको इनाम दिये गए। १०॥ बजे प्रोफेसर शिंदेका जादूका खेल हुआ। फिर सर्व मडलीका विद्यार्थियोंने पक्वान्न मिठाई आदिसे खूब भोजन सत्कार किया। फिर ४ बजे **सभा** प्रारभ हुई। अजैन विद्वान् भी पधारे थे। सभापतिका आसन **हमारे दानवीर सेठजी**को प्रदान किया गया। गानके बाद श्रीयुत् हाल सेठीने रिपोर्ट सुनाई। उसके भीतर कहा कि द० म० जैन सभाके स्थापनके पहले इस प्रातमें शिक्षा प्रचारका प्रयत्न रा० रा० चौगले, हजे, लट्ठे, आवटेने किया था। फिर सभा स्थापित

हुई और **सेठ माणिकचंदजी**का समागम मिला जिससे यह बोर्डिंग व उस सम्बन्धी अनेक सभाएं हुईं। इस बोर्डिंगसे आज तक १५० छात्र पढ़कर चले गए हैं और अब भी ६० पढ़ रहे हैं। फिर उक्तोंक इग्रजी व मराठीमें भाषण होनेपर रावसाहब जादवरावने विद्यार्थियोंको उपदेश किया उसमे' कहा कि "सत्य बोलो, कर्तव्य कर्म करो तथा अपनी शिक्षामें प्रमाद न करो—यह उपदेश पूर्वके गुरु देते थे, उसीको ग्रहण कर सबको चलना चाहिये। रा० रा० डोंगरे, व लट्ठेके भाषणके पीछे अध्यक्ष सेठजीने कहा कि "यहा विद्यार्थियोंका सम्मेलन देखकर मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है। विद्यार्थी अपना २ काम अच्छी तरह करते हैं, यह बात भले प्रकार देखी जाती है। बम्बई बोर्डिंगकी अपेक्षा कोल्हापुर बोडिंगकी व्यवस्था अच्छी नजर आती है। इसका कारण रा० रा० लट्ठेका नित्य निरीक्षण है।" फिर रा० रा० डोंगरेने अच्छे निबन्ध लिखनेपर दो छात्रोंको १०) व ५) इनामके दिये। पहलेने १०) बोर्डिंगकी होटलके इमारत फंडमें अर्पण कर दिये।

रात्रिको ८ बजे पूजाका वृहत् समारभ हुआ। इस तरफ रात्रिको पूजन करनेका खास कर समारभके अवसरपर बहुत बडा रिवाज है। पूजनके पीछे रा रा चौगलेके सभापतित्वमें मि बुगटेने जैनधर्मपर व्याख्यान दिया। दूसरे दिन कोल्हापुर और बेलगावके विद्यार्थियोंका मैच हुआ, जिसमें कोल्हापुरके विद्यार्थी जीते। सेठ माणिकचदजी इन छात्रोंकी कार्रवाईको देखकर व अपने तन, मन, धनके उपयोगकी सफलताको जानकर अतिशय आनन्दमें लीन हो गए।

सेठ नवलचदके तीन सतान हैं। इनमें पुत्र ताराचंदका जन्म

और लेडी महोदयके फोटो प्राप्त हुए वे सो बाटे गए । इस समय श्रीमती पार्वतीबाईने ९०) आश्रमको दिये । और भी १००) से ऊपरका फड हुआ । श्रीमान् सेठ जमनालाल वर्धाकी धर्मपत्नीने लार्ड महोदयके फोटोपर व प्रमुखाको हार पहनाया । मगनबाईजीने सबका आभार मान सभा विसर्जन की ।

स्त्री शिक्षामें ५०००)

दानवीर सेठजीके भानजे स्वर्गवासी **सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद**की विवाहिता पुत्री कीकीव्हेन उर्फ परसनबाईका मरण ता २५ जुन १९१३ को हो गया । इस बाईको भी धर्मका अनुराग था सो मरणके पहिले ५०००) स्त्री शिक्षा प्रचार व ९००) अन्य धर्म कार्यमें दान किये । इनकी माता जडावबाईको इनके वियोगसे बहुत कष्ट हुआ, क्योंकि जडावबाईके दो पुत्रिया थी–एक तो पहले ही चल बसी थी दूसरी अब चल दी । सेठ माणिकचदजी और मगनबाइजीके समझानेसे जडावबाईजीको सन्तोष हुआ और यह अपने जीवनको धर्मकार्यमें लीन करने लगी ।

महावीर ब्रदरहुड स्थापन।

सेठजीको यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि विलायतमें बेरिष्टर जगमन्दिरलालजीके प्रयत्नसे ता १४–८–१३को **महावीर ब्रदरहुड** स्थापित हुई, जिनके सभापति मि हर्बर्ट **वारन**, उपसभापति जुगमन्दिरलाल जैनी और मंत्री अलेक्जैन्डर **गॉर्डन** और उपमंत्री उनकी स्त्री **मिस गॉर्डन** है जो जैनधर्म धारण करते है वे इसके सभासद होते है ।

हीराचन्द गुमानजी बोर्डिंगमें सभा।

सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग बम्बईमें ता० २ सितम्बर १९१३ को मणीलाल होकमचद उदाणी एम० ए० एलएल० बी० (जो इसी बोर्डिंगके छात्र थे) के सभापतित्वमें सभा हुई, जिसमें सेठजी भी उपस्थित थे। उस समय ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने जैन समाजोन्नतिके विषयमें व्याख्यान दिया। प्रमुखके विवेचनके पीछे सेठजीने सर्वको धन्यवाद दे सभा विसर्जन की। इस समय इस बोर्डिंगके छात्र सेठजीको बडी ही भक्तिसे देख रहे थे, क्योंकि जिस बम्बई स्थानमें ठहरनेको जगह नहीं मिलती थी वहा अनेकों छात्रोंने इस स्थानमें सुखसे रहकर विद्याका लाभ किया था, इसी उपकारकी स्मृति छात्रोंकी भक्ति सेठजीपर कराती थी।

वर्धा दि० जैन बोर्डिंग व सेठजी।

वर्धा दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव मिती आसोज वदी ९ स० २४३९ ता० २१ सितम्बर १३ को बहुत धूमधामसे हुआ। वहाके भाइयोंके प्रेमसे आकर्षित होकर सेठजी भी पधारे थे। वहाके कार्य्यका निरीक्षण कर आप सतोषित हुए।

रायबहादुरको सन्मान और २५००) का दान।

मिती कार्तिक वदी १ ता० १६ अक्टूबर १३ की रात्रिको हीराबाग लेक्चर हॉलमे सेठ कस्तूरचद इंदौर-निवासीको सर्कारसे **रायबहादुर**का पद मिलनेके उपलक्षमें सेठ माणिकचदजीके सभापतित्वमें बम्बईके दिगम्बर जैनोंकी सभा हुई। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी भी मौजूद थे। चादीके

कास्केटमें एक सुन्दर मानपत्र सेठ कस्तूरचंदजीको अर्पित किया गया। सेठजीने इस अवसरपर २५००) स्याद्वाद महाविद्यालय बनारसके ध्रुवफंडमें प्रदान किये। हजारोंके दानकी प्रथा चलानेमें सेठ माणिकचंदजीकी उदारता ही कारण है।

श्री गजपंथाजी तीर्थके लिये प्रबन्धकारिणी सभा।

गजपंथाजी तीर्थका प्रबन्ध केवल सेठ रावजी नानचंद शोलापुरके ही आधीन था जिससे प्राय· शिकायतें रहा करती थीं। सेठजीने हीराबाग धर्मशालामें ता० २७ अक्टूबर १९१३ को रावजी नानचंद, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी और बालचंद रामचंद दोशीसे सम्मति करके एक नियमावली व ११ महाशयोंकी सर्व प्रान्तीय प्रबन्धकारिणी कमेटी बनाई, जिसके मंत्री शाह हीराचंद अमीचंद और सभापति सेठ रावजी नानचंद नियत किये। जबसे तीर्थका काम यह कमेटी सन्तोषकारक कर रही है।

सेठजी इन्दौरमें और २ लाखका दान।

इन्दौरके विद्याप्रेमी सेठ तिलोकचंद कल्याणमलने २ लाख रुपया विद्याप्रचारके लिये निकालकर विद्वानोंकी सम्मति ली थी कि किस काममें लगावें तथा इसीलिये कार्तिक सुदी ८ वीर संवत् २४४० ता ६ नवम्बर १९१३ गुरुवारको आपने खास २ भाइयोंको निमंत्रण कर बुलाया। बम्बईसे सेठजी भी पहुंचे थे। पं० गोपालदासजी, पं० अर्जुनलालजी सेठी, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी आदि भी आए थे। बहु सम्मतिसे "**तिलोकचंद जैन हाईस्कूल**" का खोलना निश्चय हुआ व मैनेजिंग

कमेटी बनी। इस सभामे सेठ हुकमचदजी सभापति हुए थे जिनके नियत होनेके प्रस्तावका समर्थन दानवीर सेठजीने किया था। सेठ माणिकचदजीकी ओर विशेष लक्ष्य होनेसे उसीके अनुसार ही हाई स्कूल खोलनेका दृढ विचार हो गया। यह दान व ऐसा विचार यह सब **सेठजीकी दानवीरताका अनुकरण** है।

सेठजीके कार्योकी दृढता।

सेठ माणिकचदजी जिस काममें रुपया लगाते थे उस कामको इतना पक्का कर देते थे कि उस कार्य्यकी नीव कभी भी न बिगडे। आपने बम्बई, अहमदाबाद, रतलाम बोर्डिंग व हीराबाग धर्मशालाके फडोंको एक रजिष्टरी हुई ट्रष्ट कमेटीके सुपुर्द कर दिया था कि जिससे कोई भी उस रकमको सिवाय उस नियत कामके और किसी काममे कोई खर्च न कर सके व यदि कभी किसी ट्रष्टीकी नियत खराब हो तो वह सर्कार द्वारा भी दडित हो सके।

कोल्हापुर बोर्डिंगकी ट्रष्ट डीड।

कोल्हापुर बोर्डिंगके लिये राजा साहबसे जमीन मुफ्त लेनमे व इमारत बाधनेमें सेठजीने बहुत परिश्रम उठाया था। आपने ता १४ जुलाई १९१३ के रोज ५ ट्रष्टी नियत कर कोल्हापुर बोर्डिंगकी ट्रष्ट डीड रजिष्टरी कराके बोर्डिंगकी जमीन व इमारतकी अनुमान ९००००) की मिल्कियत उनके सुपुर्द कर दी। ५ ट्रष्टी ये हुए–(१) स्वय सेठजी (२) आप्पा साहब देसाई परगणेतेर दाल ठाणे हनगडी (३) चौगले वकील (४) रा रा लट्ठे एम ए (५) भूपाळ आप्पाजी जिरगे-कोल्हापुर।

पर जाते व समयपर ही लौटकर आते, सर्वसे बातचीत करते व समयपर ही रात्रिको शयन करते थे।

स्याद्वाद महा विद्यालय काशीका नवम वार्षिकोत्सव।

इस वर्ष श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशीके सञ्चालकोंने बनारसमें नवम वार्षिकोत्सव ता २३ से २९-१२-१९१३ तक बडी धूमधामसे टौनहालमें मनाया था। सेठ माणिकचदजी इस संस्थाके सभापति थे। आपको पधारनेके लिये प्रेरणा भी बहुत हुई तथा आना भी चाहते थे पर शरीरकी अशक्तता काशी आनेके लिये गवाही नहीं देती थी इससे आप नही आए पर समाजके अच्छे २ व्यक्ति प गोपालदासजी, प अर्जुनलालजी, जुगमन्दिरलालजी एम ए, अजितप्रसादजी एम ए आदि उपस्थित थे। जर्मनीके प्रोफेसर **हमन जैकोबी** भारतमे आए थे। इनका स्वागत भले प्रकार करके सभापति बनाये गये थे। सर्व दिगम्बरियोंकी ओरसे आपको मानपत्र अर्पण किया गया था। ता २९ दिसम्बरको **मिस ऐनी बिसेन्टने** सभापतिका आसन ग्रहण किया था उस समय भारत जैन महामडलकी ओरसे श्रीमती मगनबाईकी स्त्री शिक्षा प्रचारकी सेवाको ध्यानमे लेकर उनको **जैन-महिला रत्नका** पद प्रदान किया गया और एक मनोहर कविताके साथ भेजा गया। बाई जी जल्सेमे आ नही सकी थी।

मगनबाईको जैनमहिलारत्नका पद

ता २६ को सभापति पंडित गोपालदासजी हुए थे। ता-२७ को महामहोपाध्याय डा सतीशचद्र विद्याभूषण एम ए पी-

एच डी प्रिन्सिपल सस्कृत, कॉलेज कलकत्ता सभापति हुए। तब डा जैकोबीको मानपत्र दिया गया व भारत जैन महामंडलकी ओरसे **"जैनदर्शनदिवाकर"** की उपाधि डा जैकोबीको प्रदान की गई। २८ को हर्मन जैकोबी सभापति हुए तब डॉ० सतीशचन्द्र-को **'सिद्धांतमहोदधि'** का पद दिया गया। ता २९ को प्रोफेसर डाक्टर ओ० स्ट्रास कलकत्ता सभापति हुए तब हर्मन जैकोबीने अपना व्याख्यान पढा उसमें दिखलाया कि— (Jainism is independent of Budhism, Jainism is even older than Budhism, Budhists Borrowed from Jains the technical term Ashrava ") जैन धर्म बौद्ध धर्मसे स्वतत्र है, जैन धर्म बौद्धसे भी बहुत पुराना है, बौद्धोंने **आश्रव** का विशेष शब्द जैनियोंसे लिया है। इसी दिन भारत जैन महामंडल की ओरसे सेठ कल्याणमलजी इन्दौरको **"दानवीर"** ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको **'जैनधर्मभूषण'** व प्रयाग बोर्डिंगके लिये २५०००) दान करनेवाली सुमेरचदजी-की धर्मपत्नीको **'विद्याप्रेमिणी'** का पद दिया गया। आमद ३०००)की हुई। बाबू देवेन्द्रकुमार, और बाबू नदकिशोरने बहुत परिश्रम उठाया। तथा बाबू चेतनदास बी ए महामत्री महामंडलने अपने मेम्बरोंको भी बुला लिया था जिससे उसका भी जलसा सायमे ही हो गया था। सेठजीके पास सर्व रिपोर्ट गई। आपने पढकर हर्ष माना कि अपने निमित्तसे खुलनेवाला स्याद्वाद् महाविद्यालय प्रसिद्धिमें आ रहा है।

नकल कविता उपाधि जैनमहिलारत्न।

श्री मगनबाई देवि!, जय जयति जिन-पद-सेवि।

तुम धन्य है सु-प्रयत्न, हो जैन-महिला-रत्न ॥ १ ॥
तुम्हारो सबै स्वच्छन्द, स्वागत करैं सानन्द ।
तुम किये बहु शुभ कृत्य, है चुकीं तुम कृतकृत्य ॥ २
महिला रहीं जो अज्ञ, तुम्हारी भईं सु कृतज्ञ ।
"शिक्षा" प्रचार प्रशस्त, तुम कियो घूमि समस्त ॥ ३
दै "धर्म"को उपदेश, पूरण कियो उद्देश ।
मृदु मधुर बानी बोलि, शुभ "श्राविकाश्रम" खोलि ॥४
"छात्रालयन" खुलवाय, "विधवाश्रमन" बनवाय ।
करि सक नरन प्रवीन, वह काम तुम करि दीन ॥ ५ ॥
सत् **दानवीर** अमद, **श्रीसेठ माणिकचद ।**
जे. पी., कुलालङ्कार, जिन लह्यो शुभ सत्कार ॥ ६ ॥
तिन योग्य तुम सन्तान, कहि सब करे सन्मान ।
यदि पुत्र सों तुम काज, कीन्हों सुता है आज ॥ ७ ॥
"जैनी-महिला-परिषद्"का सस्थापन करने वाली !
करें कहाँ तक, देवि, प्रशसा, तुम हो नारि निराली ! ॥८
भारत-जैन-महामण्डल यह, आदर सों आराधि ।
"जैनी-महिलारत्न" नाम की, अर्पण करै उपाधि ॥९॥
आशा है, निज जनन को, यह सादर उपहार ।
उत्सवके आनन्द महँ, है है अङ्गीकार ॥ १० ॥

कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन-काशी

मगनबाईजीकी पुत्रीका विवाह । वीर सं० २४४० मे मार्गशीर्ष सुदी ३ के दिन श्रीम मगनबाईजीने अपनी एक मात्र कन्या के मती की लग्न सूरतमे जाकर पूना निवा जेचद मानचदके पुत्र चदूलालके साथ समारोहके साथ जैन पद्धतिके अनुसार की

उस समय सूरतकी फुलकुवर कन्याशालाकी कन्याओंसे गायन गरबा आदि गवाया व कन्याओंको मिठाई सहित प्याले व अध्यापकोंको भी इनाम दिया। (८९) जैन सस्थाओंमें बांट। केशरमतीको गुजराती, हिन्दीकी शिक्षा होकर अग्रेजीकी शिक्षा हो रही थी, सस्कृतमें मार्गोपदेशिका चल रही थी। अपनी पुत्रीके पढानेमें माता मगनबाईने कोई कसर नही रक्खी थी। तथा इसके वर चदूलाल भी धर्मप्रेमी व कॉलेजकी पढाई पढनेवाले हैं जिनकी द्वितीय भाषा सस्कृत है। अब ये दोनो दम्पति सुखसे बम्बईमे ही निवास करते है।

बडवानीके मेलेमें मगनबाईजी।

श्रीमती मगनबाईजीका चित्त भी समाजसेवा करनसे कभी उकताता नही था। आप पुत्रीके लग्नसे छुट्टी पाकर बम्बई आ श्री बडवानी सिद्धक्षेत्र-के मेलेमे उपदेशार्थ पधारी। यह नीमाड जिलेमे मऊकी छावनीसे ८० मील एक देशी रियासत है। वही श्री **चूलगिरि** पर्वत है जहासे प्रसिद्ध रावणके पुत्र **इंद्रजीत** और **कुंभकरण**ने मुक्ति प्राप्त की है। पर्वतपर ८४ फुट ऊची श्री ऋषभदेवकी अति प्राचीन दर्शनीय मूर्ति है जिसको **बावन गजाजी** कहते हैं। इसकी बडी महिमा है। यहा मालवा प्रान्तिक सभाका वार्षिक जल्सा था। सेठजीको बहुत आग्रह करके बुलाया गया पर सेठजी न आ सके। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी आए थे। मेला पौष सुदी ८ से १९ तक था। दानवीर सेठ हुकमचदजी आए थे। माघ सुदी १३, १४, १५ को जल्से हुए। खास बात बावनगजाजीके जीर्णोद्धारके लिये

११४१२) का चंदा हुआ। जिसमे सेठ हुकमचंदजीने २१००) व रोडमल मेघराज सुसारीने १००१) दिये।

बडवानी बोर्डिंग स्थापन । कमेटी बनी तथा सुदी १५ को दीवान साहब कुवर भारतसिंह द्वारा **दिगम्बर जैन बोर्डिंग** खोला गया जिसमे श्रीमती मगनबाईजीने १०१) दिये व श्रीमती मगनबाईके व्याख्यानोको राज्य वर्गने भी सुना। स्त्रियोंमे आपके जानेसे बहुत जागृति फैली। २०० श्राविकाश्रमके लिये चंदा भी हुआ। बहुतसी स्त्रियोसे अनेक नियम लिवाये।

पालितानामें प्रांतिक सभाका जल्सा। श्री सेत्रुंजय तीर्थ पालीतानामें बम्बई प्रान्तिक सभाका वार्षिकोत्सव मिती माघ सुदी ३ से ६ तारीख २९ जनवरीसे १ फर्वरी तक था। सेठ माणिकचंदजीको जानेकी बहुत बडी आवश्यक्ता थी पर आपने शरीरकी अशक्तताके कारण जाना उचित नही समझा पर आपके छोटे भाई सेठ नवलचंदजीको भेज दिया। सभापति श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी हुए थे।

४ लाखका दान। आपने अपने व्याख्यानको पढते हुए विद्या-प्रचारादि कार्योंके लिये ३ लाखका दान व अपनी धर्मपत्नी कंचनबाईके ओरसे १ लाखका दान किया। १३ प्रस्ताव मांमूली पास हुए। सभाके लिये जनरल फंडकी अपीलमे १००१) दानवीर सेठ हुकमचंदजीने दिये। कुल फंड करीब १७००) का हुआ। इस समय यात्री ४०००) के अनुमान आया था। सेठ नवलचंदजी और

मूलचन्दजी कापडियाने निर्विघ्न सबका स्वागत, पूजा व सभाका प्रबन्ध आदि करनेमे खूब परिश्रम लिया।

श्रीमती ककुबाई, ललिताबाई व कई श्राविकाश्रमकी बाईयोंके पधारनेसे स्त्रियोंमे भी खूब उपदेश हुआ। शरीरकी बीमारीके कारण श्रीमती मगनबाईजीका आगमन नहीं हुआ था।

महिला परिषदका चोथा वार्षिक उत्सव।

भारत दि० जैन महिला परीषदकी चौथी वार्षिक सभा शोलापुर निवासी सेठ जीवराज गौतमचदकी धर्मपत्नी रतनबाईके सभापतित्वमे हुआ। २ बैठक हुई। चार प्रस्ताव पास हुए। श्राविकाश्रमके लिये २५०) का फट हुआ जिसमे श्रीमती ललिताबाईने स्वय १०१) दिये। यह बाईजी ऑनरेरी रूपमे श्राविकाश्रम खुलनेकी मितीसे बराबर काम कर रही है। अपनी प्राइवेट कुछ सम्पत्ति है उसमेसे यह रकम दानमे लगाती है।

शोलापुरमें बोर्डिंगके मकानका खुलना।

शोलापुरमें सेठ नाथारगजी गाधीन २६०००) खर्च करके एक मनोज्ञ मकान बोर्डिंगके लिये बनवाया था तथा सेठ हीराचद नेमचद मत्रीने ऐलक पन्नालालजी जैन पाठशालाके लिये भी एक मकान उसी हातेमें बनवा दिया था। इसीके उद्घाटनकी क्रिया फाल्गुण सुदी २ को इन्दौर निवासी रायबहादुर सेठ कस्तूरचदजीके सभापतित्वमे हुई। शरीर ठीक न रहनेपर भी दानवीर श्रीमान सेठजी बोर्डिंगके प्रेमवश प० पन्नालालजी आदिके साथ बम्बईसे पहुच गए थे। उत्सव सानन्द हुआ तब

प्रमुखने १०००) पाठशाला व ७००) बोर्डिंगके फंडमे दिये व १ वर्षतक दो छात्रोंके लिये मासिक वृत्तियें नियत कीं। सेठजी मकानको देखकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि इनको मकान बनवानेका बहुत शौक था तथा इस फंदमे एक अच्छे इंजीनियरसे भी अच्छी सलाह दे सकते थे।

बडवाहामें बोर्डिंग। सेठजीको बम्बई लौटकर यह सुनकर और भी हर्ष हुआ कि बडवाहा जिला नीमाडमे भी श्रीमती भागाबाईने १००००) दानकर अपने पतिके नामसे **"प्यारचन्दशा दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग"** रायबहादुर सेठ तिलोकचन्द कल्याणमलके हाथसे मिती फाल्गुण सुदी २ ता० २६ फर्वरी १४को खुलवा दिया।

धर्मात्मा रूपाबाईजीका परलोक। बम्बईमे सेठ माणिकचंदजीकी भावज सेठ मोतीचन्द हीराचंदकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपाबाईका शरीर वृद्धावस्थाके कारण अशक्त हो गया। खाना पीना कम हो गया। अवस्था भी इस समय ९८ वर्षकी थी। आपने मिती फाल्गुण सुदी ३ स० १९७०के दिन अपने होशमें णमोकारमंत्रका जाप जपते व श्री चंद्रप्रभु स्वामीका ध्यान करते हुए अपने इस नाशवन्त देहको छोडकर स्वर्गमें विहार किया। सेठजीके कुटुम्बमें माता रूपाबाईके समान धर्मबुद्धि, वात्सल्यगुणधारी, वैयावृत्यमे सावधान, दान धर्म तप करनेमें लवलीन दूसरी स्त्री नहीं हुई। २२ वर्षकी उम्रमें ही आपको वैधव्य प्राप्त हुआ तबसे बाईजीने अपने धर्मको परम श्रद्धाके साथ आजन्म निवाहा।

आपने अपने जीवनमें उद्यापन सहित जितने व्रत उपवास सहित किये उनकी गिनती इस प्रकार है—

(१) १२१४के उपवास स० १९९१ से ६० तक।
(२) कवलाहार व्रत।
(३) कर्मदहनके १७९ उपवास।
(४) भक्तामर स्तोत्रके ९१ उपवास।
(५) सहस्रनाम स्तोत्रक १३ उपवास।
(६) तत्वार्थसूत्रके १३ ,,
(७) मुक्तावली व्रत ९ वर्ष तक।
(८) चौवीस तीर्थकरोंके २४ उपवास।
(९) अष्टान्हिका व्रत ८ वर्ष तक।
(१०) रविवार व्रत ९ वर्ष तक।
(११) फलदशमी व्रत १० वर्ष तक।
(१२) चान्द्रायण व्रत ६ वर्ष तक।
(१३) निर्वाण तेला ३ दफे।
(१४) फूलव्रत।
(१५) दीपकव्रत।
(१६) फलव्रत।
(१७) द्रव्यव्रत।
(१८) देवव्रत।

इतने व्रतोंके सिवाय आपने श्री **सम्मेदशिखरजी, चंपापुरजी, पावापुरजी** व **राजगृही आदिकी यात्रा** स १९९८ और स १९९६ मे सहित की।

इस महान् यात्राके सिवाय नीचे लिखी यात्राए और भी की।

श्री गोम्मटस्वामीकी यात्रा दो दफे सं १९४१ और १९६६।

श्री केशरिया, पालीताना, गिरनार स १९४३मे।

श्री गजपथाजी स १९३६ और १९५६ में।

कुथलगिरिजीकी दो दफे।

तारगाजी।

पावागढजी।

मक्सीजी आदि।

तथा आपने अपने परिणामोंसे पौना लाखसे अधिक दान अति उपयोगी कामोमे इस भाति किया—

३५०००) अहमदाबादमे प्रेमचद मोतीचद बोर्डिङ्गके लिये।
५०००) १२३४ व्रतके उद्यापनमे।
२५००) बोर्डिंग बम्बईमें कार्तिक सुदी १५को वार्षिक पूजोत्सवार्थ।
६०००) उदयपुरमे दि० जैन पाठशालाके लिये।
१५०००) अहमदाबाद बोर्डिंगमे देशी औषधालयके लिये।
४८००) ,, ,, मे धर्मशालाके लिये।
३३००) ,, ,, मे चादीक समवशरणके लिये।
११००) ,, ,, दशलाक्षणीमें पूजनके लिये।
३५००) सुदेटी (गुजरात) मे ध्वजादड उत्सवके लिये।
५५००) मरते समय भिन्न २ धार्मिक कार्योंके लिये।
कुल ८१७०० रुपये।

इनमें छोटे दान नहीं गिने गए है। उन सबको जोडा जाय तो १ लाखसे अधिक रकम हो जायगी। एक विधवा द्वारा उपयोगी कामोंके दानका किया जाना एक बडा भारी उदाहरण अन्य विधवा बहनोंके लिये है।

प्रेमचद पुत्रके वियोगके पीछे १९ वर्षकी **चंपाबाई** विधवाको आपने नित्य विद्या पढने, शास्त्र स्वाध्याय करने, व्रत उपवासमे लीन रहनेमे उपयुक्त कर दिया और उसकी गोदमे एक सुशील पुत्र **रतनचद** बिठा दिया जिससे प्रेमचदका वश सजीवित रहे और चपाबाईको कष्ट न हो।

अब चपाबाई भी रूपाबाईके समान दान धर्ममे लीन है, निरतर रतनचदके पढानेमे दत्तचित्त है, रतनचन्दका विवाह भी कर दिया है और अपनी सुकीर्तिको विस्तारती हुई चौपाटी बगलेको सुशोभित कर रही है।

माता रूपाबाईका स्मारक।

माता रूपाबाईकी स्मृतिको कायम करनेके लिये अहमदाबाद बोर्डिंगमें ता० २८ फर्वरीको एक स्मृति फंड कायम हुआ जिसमें छात्रों व सुपरिन्टेन्डेन्टने ७३।=) उसी समय जमा कर लिये। "दिगम्बर जैन" के ग्राहकोंको बाईजीके स्मरणार्थ **श्रीपालचरित्र** भेट किया गया था।

बम्बईमे जैन सभा।

श्रीमन्त सेठ मोहनलालजी, भा० दि० जैन महासभाके सहायक महामत्री व बुदेलखड दि० जैन प्रान्तिक सभाके सभापति यात्रा करते हुए बम्बई पधारे। श्रीमान् सेठ माणिकचदजीने आपका

बहुत सन्मान किया और मिती चैत्र वदी ६ ता० १८ मार्च १९१४ की रात्रिको हीराबाग धर्मशालामे आपके सभापतित्वमे सभा हुई, जिसमें शामलालजी उपदेशकका 'जीवनके कर्तव्य पर व्याख्यान हुआ। मेठजीन हार तोरा आदिसे सन्मान करके मभा विसर्जन की।

इन्दौरमें धार्मिक कार्य।

इन्दौरमे रायबहादुर सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजीकी माताने तकूगजमें एक नवीन जिन मंदिर निर्मापण कराया था जिसकी प्रतिष्ठा प० बालाबक्स-जीके द्वारा चैत्र सुदी ६ से १२ व ता० ३१ मार्चसे ६ अप्रैल तक बडे समारोहके साथ हुई। सेठ माणिकचंदजीको बुलाया गया पर आप शरीर अस्वस्थ्यताके कारण तथा इन्दौरमे आवश्यक काम न होनेके कारण नहीं आए थे। सुपुत्री **मगनबाईजी**को भेजा था। मालवा प्रान्तिक सभा नैमित्तिक अधिवेशन शोलापुरके परोपकारी सेठ हीराचंद नेमचंदके सभापतित्त्वमें बडी सफलताके साथ हुआ। २०००के अनुमान भाई पधारे थे। प० गोपालदासजी भी आये थे। तिलोकचंद हाई स्कूल खुलनेका मुहूर्त भी इन्ही दिनोंमे था पर अचानक स्कूलके अधिष्ठाता **पं० अर्जुनलाल सेठी** जयपुर निवासी पर **आपत्ति** आ गई कि उनको **संदेह** पर सर्कारने गिरफ्तार कर लिया और नजरबन्द कर दिया इस कारण वह कार्य तो बन्द रहा। जन सख्या २००० हो गई थी। मालवा सभाके जनरल फन्डमे ५००) का चदा हुआ। ११११)के ११ यावज्जीव सभासद हुए। इन्दौरमें **उदासीनाश्रम** खोलना निश्चय होकर सेठ

हुकमचद, कल्याणमल व कस्तूरचन्द तीनो भाईयोंने दस दस हजार यानें ३००००) व २०००) फुटकल ऐसे ३२०००) का फन्ट हुआ । मोरेना विद्यालयको सेठ हुकमचन्दने १००००) व रोडमल मेगराज सुसारीने १०००) कुल १३०००) का ध्रुव फन्ड हुआ । सेठ कल्याणमलजीकी मातांने २५०००) कन्याशालाके लिये दिये जिमका मुहूर्त ता० ६ अप्रैलको हुआ। मुनीम धर्मचदजीने पालीताना धर्मशालाके लिये कहा तो तुर्त ही १०००) का चदा हो गया । श्रीमती मगनबाई, कंकुबाई आदि विद्यावती बहनोंके पधारनेसे बहुतसी स्त्री सभाए हुई । स्त्री शिक्षा फडमें ८००) का चदा हो गया ।

श्राविकाश्रम बम्बईमे जंबूसर जिला भडोच निवासिनी श्रीमती **जीवकोरबाई** कई वर्षतक एक **श्राविकाका वियो**- रहकर अर्थ प्रकाशिका आदि ग्रंथोंकी जानग व **मगनबाईजीको** कार हो गई थी व उमसे बहुत कुछ आशा थी **शोक** । सो बीमार हो गई और वैशाख वदी २ सोमवार ता० १३ अप्रैलको समाधिमरण महित २५ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास पधारी । मरण पहिले अपनी १५०००) की जायदादमे से ३०००) धर्मार्थ दान कर दिये जिसकी विगत अति उपयोगी जानकर यहा प्रकट की जाती है ।

१००१) श्राविकाश्रम बम्बई ।
५००) अथप्रकाशिका छपानेको ।
५००) जबूसरमे सस्कृत पाठशाला ।
१००) धर्म पुस्तकें रखनेकी ४ अल्मारीके लिये ।

१००) शास्त्रदानके लिये श्रावकवनिता बोधनीका गुजराती भाषातर " **दिगम्बरजैन** " के ग्राहकोंको देनेके लिये
२०१) पावागढ तीर्थमें ।
१००) गरीबोंको औषधिदान ।
१४७) परचूरन भडार, मदिर व तीर्थ ।
५०) जैन धर्मकी पुस्तकें मदिरमें रखनेको ।
९०) ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर ।
९०) श्राविकाश्रम बम्बई, कपडा और भोजनके लिये ।
२९) सोजित्रा जैन पाठशाला ।
२९) करमसद ,, ,,
१९) जयपुर शिक्षा प्रचारक समिति ।
१९) बनारस स्याद्वाद महाविद्यालय ।
१९) फुलकोर कन्याशाला, सूरत ।
१९) जैन सिद्धान्त पाठशाला, मोरेना ।
१९) अहमदाबाद दि० जैन बोर्डिंग ।
१९) रतलाम दि० जैन बोर्डिङ्ग ।
१५) वनिताविश्राम, सूरत ।

श्रीमती मगनबाईजीको इस वियोगसे महान् कष्ट हुआ । सेठ माणिकचदजीको रूपाबाई ऐसी धर्मात्मा भावजके वियोगसे भी शोक हुआ था । इतनेमे आपने मालूम किया कि महासभा महामत्री जैनजातिभूषण मुंशी चम्पतरायजी वैशाख सुदी १२ ता०

सेठजीको शोक ।

१८ मई १९१४ को स्वर्गधाम पधारे। आप महासभाके आजन्म रक्षक रहे थे। इस खबरसे सेठजीका चित्त और भी उदास हो गया।

दिगम्बर जैन डायरेक्टरीका छपकर तैयार होना व १५०००) का व्यय

सेठ माणिकचन्दजीके चित्तमें जो बात बहुत कालसे जमी थी कि दिगम्बर जैनियोंकी संख्या व अवस्थाकी दिखलानेवाली कोई पुस्तक तैयार हो वह कामना इस सन् १९१४में पूर्ण हो गई। बाबू सूरजभानजीने इस विषयमें कार्य प्रारम्भ नहीं किया। तब इसको स्वयं सेठजीने बम्बईमें अपने ही भानजेके भानजे सेठ **ठाकुरदास भगवानदास जौहरीके** अधीन किया। ठाकुरदासने ता० १९ नवम्बर १९०७से इसका कार्य उत्साह पूर्वक करना प्रारंभ किया और ७ वर्षोंके लगाकर परिश्रमसे अब इसकी १ बड़ी पुस्तकको जिसमें १४२३ सफे हैं छपाकर प्रसिद्ध कर दिया जिसका मूल्य ८) रक्खा इस। कार्यमें दौरा करनेवाले डिरेक्टरोंने फार्म भरवाए जिनके छाटनेका काम हीराबाग धर्मशालाके सुपरिन्टेन्ट माणिकचन्द रावजी और भालचन्द्र महादेव द्वारा तथा क्लार्क कुन्दनलाल और गुलाबचन्द लुहाड्या द्वारा हुआ। मुख्य डाइरेक्टरोंने इस तरह प्रांतवार संख्या ली —

मध्यप्रदेश राजपूताना और मालवा—फतहपुर जिला दमोह निवासी खूबचंद जैन।

संयुक्तप्रांत बंगाल और पंजाब, जुगमन्धरदास जैन बाराबंकी बम्बई हाता और मैसूर प्रांत बारसीवाले तात्या नेमिनाथ पागल व अन्य दो कर्मचारी।

वहां बहुतसे पत्र लिखवाए, १ पत्र दि० जैनक्षेत्र आबूजीके प्रबन्ध-कर्ता बाबू पूनमचद कासलीवालको कोटा रियासतमें भी लिखा जिसकी नकल आपके हस्ताक्षर सहित कमेटीकी कापी बुकमें मौजूद है। शामको भोजनके पीछे आप नियमानुसार समुद्र तटपर कुछ टहल कर लोगोंसे बातें करते रहे व रात्रिको ९॥ बजे तक श्री मगनबाईजीसे अनेक धर्म व आत्मोन्नति सम्बन्धी वार्तालाप की। जब वह श्राविकाश्रमको रवाना होगई तब आप चैत्यालयमे गये, दर्शन करके १ घंटे तक सामायिक करते रहे। चैत्यालयसे लौटकर आप शयनालयमे आए और अपनी धर्मपत्नीसे सम्मति ली कि यह चिरजीव **बाबू (जीवनचद)** ४ वर्षका हो गया है। इसे कुछ अक्षर ज्ञान कराना चाहिये। आज गुरुवारका शुभ दिवस है। कल शुक्रवार पड जायगा। आप रात्रिको ही करीब ११ बजे पुत्रको अक्षर पढाने और लिखाने लगे, मानों उस बालकको अपने अंतिम समय पर यह शिक्षा देगए कि ज्ञानकी प्राप्तिसे ही तू अपना सच्चा हित समझना। विद्याके प्रेमीने विद्याका सस्कार अपने पुत्रमें कर दिया। इतनेमें आपके उदरमें कुछ दर्द हुआ, आप बाधा निवारणार्थ शौचको गए। लौटकर आये फिर भी शान्ति नही हुई। आप फिर गए लौटकर उदरमे अधिक पीडा होनेके कारण आप शात चित्तसे कौच पर लेट गए और अपने भाई नवलचदजीको बुलाकर कहा कि उदरमें कुछ शूल मालूम होती है। भाईने बाहरी उपचार किया और वैद्य बुलानेको गाडी भेजी। इतनेहीमे आप अर्हत, सिद्ध जपते २ वैद्योंके आनेके पहले ही इस जीर्ण शरीरको छोडकर **स्वर्गधाममे** पधार गए। वैद्य आया। उधर भतीजा ताराचद आया

पर सबने परम प्रकाश रहित जडपिंजरको ही पाया। वह आत्मा जो इस पर्यायमें सेठ माणिकचन्द कहलाता था नहीं रहा। आपकी शुभ भावना इग्लैंडमें एक जैन बोर्डिंग स्थापित करनेकी थी। जिसके लिये आपने मरणके दिनको भी बोर्डिंगमे देखते हुए मि उदाणी 'एम ए से कहा था। यह आपकी भावना पूर्ण नहीं हो सकी।

सेठजीको धार्मिक कार्योंका कितना बडा ध्यान था इस सम्बन्धमें आपके लिखे सन् १९-१२-१३के पत्रकी नकल यहा प्रकट की जाती है जो उन्होंने सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारीको भेजा था।

पत्र नकल सेठ रोड़मल मेघराजजी।

श्रीमान् सेठ रोड़मलजी मेघराजजी सुसारी।

मान्यवर महाशय,

धर्म स्नेहपूर्वक जुहारु। अपरञ्च आपका पत्र न० ११४ ता० १४-१२-१३ ई०का मिला। बाचकर हर्ष हुआ कि आप लोगोंने समाजकी उन्नतिका भार अपने ऊपर लिया है। सिर्फ अफसोस इतना ही है कि उस उन्नतिके भारमें मैं आप लोगोंका सहायक नहीं हो सकूगा। तथापि आशा है कि जब आप सरीखे महानुभाव, उत्साही, उद्यमी, धनाढ्य, समाजसेवाके लिये तन, मन, धनसे कटिबद्ध हो गये हैं, अवश्य ही समाज अपनी उन्नति कर लेगी इसमें शक नहीं। यह भी आशा है कि आप मुझे इसके लिये क्षमा करेंगे।

बावनगजाजीकी मूर्तिका जीर्णोद्धार, तीर्थक्षेत्र बडवानीजीका सुप्रबन्ध तथा बोर्डिंग हाउसका स्थापन ये तीनों ही कार्य अत्यन्त आवश्यक हैं। मेरी श्रीजीसे यही प्रार्थना है इनके सम्पादनमें आप

महाशयोंको बल प्राप्त हो। इस समय मुझे पूरा विश्वास है कि आप लोग इन तीनों कार्योंको पूरा कर देंगे। इसकी सूचना पानेकी मैं प्रतीक्षा करता रहूंगा।

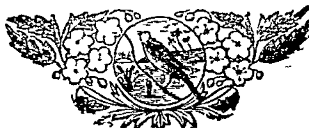
ता १९-१२-१३

आपका कृपाकांक्षी,

माणिकचंद हीराचंद।

२५००००) का अंतिम दान।

आपने अपने सर्व स्टेटकी लिखा पढी दो वर्ष पहले ही कर रक्खी थी व करीब ढाई लाखकी मिलकियतका **जुबली बाग** ११००) मासिक किरायेका धर्मार्थ दान कर पहले ही उसकी रजिष्टरी करा दी थी। मरणके पीछे इसका प्रकाश हुआ और जिसने सुना उसने सेठजीकी इस उदारताका धन्यवाद दिया। **सच्चे दानवीरने** अंतसमय तक दानसे अपनी जातिकी महती सेवा करके एक अपूर्व उदाहरण जगतके अनुकरणके लिये स्थापित कर दिया।



अध्याय तेरहवाँ।

दानवीरका स्वर्गवास।

गुजराती आषाढ वदी ९ (मारवाडी श्रावण वदी ९) वीर सं० २४४० विक्रम संवत् १९७० ता०
श्रावण वदी ९ की १६ जुलाई १९१४ वृहस्पतिवारकी रात्रि
भयानक रात्रि। बड़ी भयानक थी कि जब चौपाटीका जीता जागता बंगला महान् दीपकके बुझ जानेसे परम अन्धकारमय हो गया। देखते देखते बिना किसीके दिलमें पहलेसे इस बातका खयाल भी आए हुए और बिना किसी महान् कष्टके सेठ माणिकचंदजीका चेतन स्वरूप आत्मा ६२ वर्ष तक औदारिक शरीरकी झोंपड़ीमें रहकर अपने सुकृतमयी जीवनमें महा शुभ कर्मवर्गणाओंका बंधकर तैजस और कार्माण शरीरको लिये हुए किसी वैक्रियिक शुभ शरीरमें प्राप्त होकर अपने तन, मन, धनके निःस्वार्थपने दान करनेके महान् फल स्वरूप मनको सातादायक शुभ सामग्रीका लाभ लेता हुआ उस शरीरमें अमररूप या दीर्घकाल स्थायी हो गया। यह नियम है कि जैसा भाव अंत समयमें होता है वैसा ही पर्यायमें जाता है। नर्क और तिर्यंचगतिमें ले जानेवाला रौद्र और आर्तध्यान होता है जो हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद, परिग्रहानन्द तथा इष्ट वियोगज, अनिष्ट संयोगज, पीडा चिन्तवन, व निदान रूप होता है। तो यह कोई ध्यान सेठ माणिकचन्दजीको न था। परोपकारता, धर्म व जातिकी अवस्था की उन्नति,

कल्याण, उनको धर्म विद्याका लाभ, श्री शिखरजी पर्वतकी रक्षा व पशुओंकी दया इत्यादिमेंसे कोई न कोई भाव होगा जिसमें सेठजीका मन अटक रहा हो व केवल पच परमेष्ठी या श्री अरहतके स्वरूपमें लगा हो यही सभव हो सकता है। यह सब **धर्मध्यान** है। सेठजीको जैन धर्मका पक्का श्रद्धान था। श्रद्धाकी नीवपर जमा हुआ धर्म ध्यान शुभ लेश्यारूप होता है और नियमसे देव पर्यायमें पहुचाता है। जैन सिद्धान्तानुसार सेठजीकी अतिम चेष्टा अवश्य इस बातका विश्वास दिलाती है कि दानवीरका आत्मा स्वर्गमे पधार कर उत्तम देव हुआ हो। वास्तवमें ऐसे महान् पुरुष जो परके कल्याण निमित्त अपने आपको बलिदान करते है और जगतके अज्ञान और अधर्म मेटनेका उद्यम करते हैं, परम्पराय तीर्थंकर ऐसे महान् पदके अधिकारी होते है। सिद्धान्त कहता है कि इस पचमकालके जन्मे १२२ मनुष्य इस क्षेत्रसे सीधे विदेह क्षेत्रमे जन्म प्राप्त करके उसी भवसे मोक्षको प्राप्त करेंगे। यह पचमकाल या दुखमाकाल २१००० वर्षका है। इसके तीन २ हजारके ७ भाग किये जावें सो पहले ३००० वर्षके काल विभागमे ६४, दूसरेमे ३२, तीसरेमे १२, चौथेमे ८, पाचवेंमें ४, छठेमें २ तथा अतिम ७ वें तीन हजारमें एक मनुष्य इस भरतक्षेत्रसे सीधे विदेहमें जन्म ले कर्म काट परमानन्दमई सिद्ध होवेंगे। वर्तमानमें अभी यहा पहला भाग ही वर्त्त रहा है। जब श्री महावीरस्वामी मोक्ष पधारे थे तब चौथे दु खमा सुखमा कालके तीन वर्ष साढे आठ महीने बाकी रहे थे। वीर स २४४०मे २४३६ वर्ष साढे तीन महीने ही पचमकालको

बीते थे यह ६४ जीव वास्तवमें सेठ माणिकचन्दजी ऐसे धर्मात्मा और परोपकारी तथा जगतके हितमे उद्यमी ही लेसकते है। इससे यह भी अनुमान किया जासकता है कि **सेठजीका आत्मा** इस ६४ जीवोंमेंसे एक हो और अब वह विदेह क्षेत्रमे उत्तम मनुष्यकी वज्रऋषभनाराच संहनन (वज्रके समान दृढ वेष्टनके जाल, कीले व हड्डीवाली) रूपी देहमे विराजमान हो बालपनेकी क्रीडा कर रही हो। सिवाय उत्तम मनुष्य या देव पर्यायके और किसी भी पर्यायमें सेठजी ऐसे महान् शुभ भाव धारक आत्माका गमन नहीं हो सकता।

सेठजीके सर्व चैतन्यपनेकी चेष्टासे रहित मृतक शरीरको देख देखकर चौपाटी बगलेके नरनारियोंको शोकने घेर लिया और रात्रिभर सबने महाशोक रुदन व उदासीमें विताई। सेठजीकी पत्नी-जीवनचन्दकी माता सिर पटक व छाती कूटकर समय समय पर रो उठती थी जिसकी आर्त्तनादको सुनकर कठोर मन भी पिघल जाता था। मगनबाईजी रात्रिको ही तारदेव श्राविकाश्रमसे आई और जिस अपने पूज्य पिताकी शरणको अपना श्वसुर गृहका ममत्व त्यागकर आलम्बन कर रक्खा था उस शरणका इस तरह अकस्मात् निराकरण देख कर महान् आर्त्त ध्यानमें मग्न हो गई। बार बार पिताके उस अनबोल कलेवरको, जिसने घंटे पहले अच्छी तरह वर्तालाप की थी अब चेतनता रहित देखकर **मगनबाईजीका चित्त** परम अशरण भावको प्राप्त होगया। धर्मज्ञानके कारण इस बाईको मन कभी आर्त्तध्यानमें व कभी वैराग्यमई धर्मध्यानमें कल्लोलें मार रहा था। **सेठ नवलचंद**को भी अपने जाति प्रसिद्ध नामाकित भाई-

के वियोगसे परम निराधारता प्रकट हुई। रात्रिभर सर्वने उदासीमें विताई, सवेरा होते ही यह खबर बिजलीकी झडपके समान बम्बईमें फैल गई, जिसने सुना वही रोता, उदास होता हुआ चौपाटी बगलेपर आ पहुचा। बातकी बातमें सैकडों जैन और अजैन जमा हो गए। दानवीर सेठ हुकमचन्दजी भी बम्बईमें थे। यह भी तुर्त आए। सेठ सुखानन्दजी भी आए। प्रसिद्ध २ मारवाडी व गुजराती कोई भी जैनी ऐसा न था जो इस समय न आया हो। पुण्यात्मा नरके प्रेतको एक बडी भारी भीडके साथ स्मशानमे ले गए और चन्दनादि सुगन्ध वस्तु तथा उत्तम काष्ठमें प्रेतको विराजित कर अग्निसंस्कार किया गया। उस समय सर्व भाइयोंने "**सेठ माणिकचन्दजीकी जय**" ऐसे शब्द किये थे। हरएक सेठजीके साधारण व मिलनसार मिजाजको विचार २ कर व इनके कृत्योंको याद करके इनके ऐसे पुरुष जैनियोंमें अब नही है, यह एक अपूर्व पुरुष थे, अब इनके स्थानको कोई पूर्ति करनेवाला नहीं है, यही परस्पर चर्चा होती थी।

वास्तवमें सेठजीका जीवन एक श्रद्धावान, कर्मवीर, निरालसी, सत्यवादी, स्वावलम्बनधारी जैन गृहस्थीका जीवन था। जिसने अपने तन मनके उपयोगसे अपनी आर्थिक स्थितिको एक साधारण मजदूरसे लक्षोंके स्वामित्वमें पहुचा दिया था। बम्बईमें चारों ओर वीसों बगले और मकान आलीशान सेठजीके हाथसे बनवाए हुए शोभाको दे रहे है। **आर्थिक उन्नति** करनेमें सेठजीने अन्याय और असत्यको अपना हथियार नहीं बनाया था। किन्तु सत्य और न्यायसे द्रव्य उपार्जन किया था। यह इसीकी महिमा थी जो

उस धनको दिल खोलकर उत्तम कामोंमें खर्च किया और अपने पीछे महान् भंडार छोड गए। आजके दिन भी सेठजी द्वारा स्थापित '**माणिकचन्द पानाचन्द**' नामका फर्म जौहरियोंमें सबसे अधिक महत्त्व व नामाङ्कितताको धारण कर रहा है जिसका ताजा प्रमाण यह है कि इसी सन् १९१६में स्पेशी बैंकके मोतीके स्टाकको एक मुष्ट १५ लाखमें खरीद कर लिया। बम्बईमें और किसी जौहरीकी हिम्मत नहीं हुई जो ऐसे भारी विकट यूरोपियन युद्धके समय इतनी रकमके सौदेको एक साथ कर सके। यह स्थिति **न्यायोपार्जित धन** ही की होती है। जो धन अन्यायसे दूसरोंको कष्ट देकर पैदा किया जाता है वह प्राय बहुतकाल नहीं टिकता है।

नीतिकारोंने कहा है —

अन्यायोपार्जित वित्त दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते त्वेकादशे वर्ष समूल च विनश्यति॥ १॥

अर्थात् अन्यायसे पैदा किया हुआ धन १० वर्ष तक रहता है और ग्यारहवा वर्ष प्राप्त होने पर वह मूल रहित नष्ट हो जाता है। बहुतसी कोठिया कई २ दफे दिवाला निकालकर फिर फिर स्थापित होती है। पर सेठ माणिकचन्द पानाचन्दके फर्मको सवत् १९२७ से आजतक व्यापार करते हुए कभी भी इस कलकके लगनेका अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

सेठ माणिकचन्दजी वास्तवमें सोती हुई दिगम्बर जैन समाजको जागृत करनेके लिये एक महान् पुरुष ही जन्मे थे। उत्साही और उद्योगी सेठजीने जैनियोंको निम्नलिखित उन्नतियोंके मार्गमें डाल कर चिरस्मरणीय उपकार किया है —

द्वारा भारतमें स्त्रीशिक्षाकी जागृति फैलना आप ही की अतरग इच्छाका प्रभाव था ।

(७) जीवदया प्रचार व मासाहार त्याग करानेमें पूर्ण खटपट करना । इसके लिये आप पुस्तकें बाटते, इनाम देते, दया प्रचारक सस्थाओंको मदद देते रहते थे। आपने बम्बईमें दो वर्ष तक इस बातकी पूरी २ खटपट की कि जो भैंसे व गाए दूध देना बन्द करें व फिर दूध देने लायक जब तक न हों तब तक उनको पालनेका एक कारखाना खोलना और उनको कसाइयोंके हाथ विक्री होनेसे बचाना । आपने जो स्कीम बनाई थी वह व्यापारके ढग पर थी कि जिन दामोंमे ग्वाले लोग पशुओंको कसाइयोंके हाथ वेचते हैं उन दामोमें खरीद लेना व गाभिन न होनेपर अच्छे दामोंमें वेचना । इससे नफा भी दिखलाया। इसकी कार्रवाई रेवाशकर जगजीवन आदिके सम्बधमें कुछ दिन चली भी, पर सच्चा व ईमानदार कार्यकर्ताके विना यह काम नहीं हो सका ।

(८) जैन ग्रन्थोंको मुद्रित कराना । आपने अपने पुस्तकालयके साथ २ जैन नियम पोथी, नर्क दु ख चित्रादर्श, ७ ढाला, दिवालीपूजन, न्यायदीपिका, आदि ग्रन्थ मुद्रित किये थे और उनका बहुत अल्प मूल्यमें प्रचार किया था ।

आपके विचारे हुए काम अपूर्ण व अधूरे जो रह गए है उनमें रगूनमें मासरहित भोजनालय स्थापित होना, तथा इग्लैडमें जैन बोर्डिगका होना मुख्य है। और सर्वसे बडा काम

जिसको आप कराना चाहते थे वह जयधवल, महाधवल ग्रंथोंका प्रकाश होना है। यद्यपि आपके व सेठ हीराचन्दजीके उद्योगसे इनकी बालबोध लिपियें हो गई हैं पर इनका प्रचार नहीं हुआ था। एक यह काम बडा भारी अधूरा रह गया है।

जुबीली बागका दान।

इसके सिवाय आप यह भी चाहते थे कि दिगम्बर जैन धर्मका विद्वत्ता पूर्ण उपदेश सारे भारतमें व विदेशोंमें भी हो। यह कार्य भी होना बाकी है। जिन २ कार्योंसे आपको बहुत प्रेम था उनको सहायता देनेके लिये आपने अपने **जुबलीबाग**का दान कर दिया था और उसकी आमदको नीचे प्रमाण खर्च किये जानेके लिये नियम बाध दिया था।

११००) मासिक किरायेकी आमदनीसे ५०) मासिक मरम्मतकी रक्षाके लिये बचाकर शेषमेंसे—

(१) १४) सैकडा हीराचन्द गुमानजीकी सर्व संस्थाओंके निरीक्षणके लिये एक योग्य सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत करनेमें।

(२) ७) सैकडा—बम्बई प्रान्तिक सभाके परीक्षालयमें।

(३) ७) ,, बम्बई दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बईके दफ्तर खर्चमें।

(४) १२) सैकडा दिगम्बर जैन धर्मके उपदेशके प्रचारमें।

(५) ५०) ,, छात्रवृत्ति देनेमें, जिसमेंसे ३३) सैकडा बागड प्रान्तवालोंके लिये, ३०) सैकडा मध्य प्रान्तवालोंके लिये और ३७) सैकडा सर्व प्रकारके छात्रोंके लिये।

सर्व हॉल ऊपरसे नीचे तक खचाखच भर गया था । ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी जो इस समय काशीमें थे सभाके समय तार जानेसे आजके दिन आ गएथे। प्रथम ही प० खूबचन्दजीने सेठजीके आत्माकी शातिके लिये श्री शातनाथ स्वामीकी स्तुति की फिर परीख लल्लूभाई एल० सी० ई० के पेश करने व माणिकचद बैनाडा महामत्री, बम्बई प्रान्तिक सभाके समर्थनसे **दानवीर सेठ हुकमचंदजी**ने सभापतिका आसन ग्रहण किया ।

सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुरने सेठजीके गुण गाए और ये वाक्य भी कहे " सेठजीकी मृत्युसे दि० जैन समाजने एक शात महान् दानवीर रत्न खोदिया   सेठजी बिल्कुल निरभिमानी, सादे स्वभाव, परमार्थके काममे अतिशय भाग लेनेवाले और अनेक सभा सोसाइटियोंके आधारभूत थे.... . वे महा पुरुष थे इस लिये अब अपनेको जो उनकी यादगारीमें करनेका है वह यह है कि उनके द्वारा की हुई अधूरी योजनाओंको पूर्ण की जावें और उनके सदगुणोंका शक्त्यनुसार अनुकरण किया जावे ।

फिर ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने सेठजीकी महिमा वर्णन की जिसमे यह भी कहा कि " स्वर्गीय सेठ साहब अपने जीवनमे एक उच्च और उम्दा जीवनका आदर्श जैन और जैनेतरोंके लिये छोड गए हैं । वास्तवमें जैन कौमका पथप्रदर्शक लुप्त हो गया है । उनके गुणका उत्तम लक्षण विद्याकी रुचि है   ।"

फिर (श्वे०) पंडित फतहचंद कपूरचद लालनने कहा "उनके जीवनका उद्देश्य ज्ञान और दया था। और उन्होंने इनको पूर्ण किया है । उनकी मृत्युसे दिगम्बरियोंको ही नहीं परतु श्वेताम्बर और



सोलापुर व्यायामशालामें सेठजी.

(१२)

स्थानकवासी कौमको भी बडा भारी आघात पहुंचा है। उनके हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगसे हरएक जैन लाभ ले सकता है।

फिर जीवदया ज्ञान प्रसारक फंडके मंत्री (श्वे०) मि० लल्लूभाई गुलाबचंदने कहा—"स्वर्गीय सेठ साहबको जीवदयासे बहुत प्रेम था। इस कार्यमें अच्छी सलाह और मदद दिया करते थे ....जो हजारों मासाहारी वनस्पत्याहारी बने है, उनके पुण्यमें उनका भी हिस्सा है।"

श्वे० संघपति सेठ रतनचंद तलकचंदने कहा—"धनाढ्य लोग बहुत द्रव्य दान करते है परंतु दानके अंतिमसे अंतिम ढगकी शुरूआत सेठ माणिकचंद्जी हीने की थी। उनका दान शिक्षाके लिये ही होता था"। मि० उदानी एम०ए० ने कहा—"सेठ साहबकी इच्छाएँ बहुत ऊंची थी। उनका विचार बम्बईमें मासाहारियोंके सुभीतेके वास्ते एक वेजीटेरियन रसोडा और लंडनमें बोर्डिंग स्थापन करनेका था। वे तो गए परन्तु उनकी कमी प्रत्येक जैनको मालूम हुए विना न रहेगी।"

फिर पं० नाथूराम प्रेमीने कहा—"सेठजी साहबने १९ वर्षके भीतर जैन समाजमे एक नया युग खडा कर दिया है। वे नित्य शामको भोजन करनेके बाद अपने दीवानखानेमें बैठते थे और उस वक्त उनसे मिलने या सलाह लेने जो कोई भी छोटेसे बडा, गरीबसे अमीर तक आता था उसे सन्मान पूर्वक बिठाते, उसका हाल सुनते और उसको योग्य सलाह देते थे। परदेशी जैनियोंसे आप बडे प्रेमसे बिठाकर उनके देशका, उनके गावका हाल पूंछते थे कि आपके गावमें कितने घर जैनियोंके है? पाठशाला स्कूल है या

नहीं ? कितने लडके लडकी पढने योग्य है, फिर आप वहा पाठ शाला क्यों नही स्थापित करते आदि बातें पूछते और उन्हें सामाजिक और धार्मिक कार्योंके लिये उत्साहित करते थे । ...सेठजी एक **महात्मा** थे । विद्यार्थियोके लिये तो आप **कल्पवृक्ष** थे । अतमें सभापति **सेठ हुकमचंदजी**ने जोशदार भाषणमे कहा कि हमारी दिगम्बर जैन कौममें सेठ माणिकचदजीकी मृत्युसे हुई क्षतिको पूरा करनेको कोई पुरुष नही है । हमारी कौमको बडा आघात पहुचा है और उससे हमको बहुत नुकसान हुआ है । सेठ साहबका **स्मारक** अवश्य स्थापित करना चाहिये । " फिर सभापति साहबने उनके कुटुबियों पर सहानुभूतिसूचक पत्र भेज नेका व स्मारक स्थापनका प्रस्ताव पास कराया । और कहा कि सेठ साहबकी स्मृतिमें मैं नसिया इन्दौरकी धर्मशालामें ५०००) की कोठरिया सेठ माणिकचदजीके नाममें बनवाऊगा व १००१) स्मृतिफडमे यहा प्रदान करता हू । इस समय ५०१) सेठ गुरुमुखराय सुखानद, २५१) गुरुमुखराय निहालचद, २५१) नाथारगजी गाधी बम्बई, २०१) जौहरी अनूपचद माणकचद बम्बई, २०१) खेमचद मोतीचद, १०१) हीराचद नेमचद शोलापुर, १०१) देवचद धनजी गुनौटीवाले, १०१) कीकाभाई कसनदास झवेरी, १०१) सूरजमल लल्लूभाई, इस तरह ३८७२) का चदा उस वक्त हुआ ।

लल्लूभाई प्रेमानदने आभार मान श्री महावीर स्वामीकी जय बोलकर सभा विसर्जन की ।

बम्बई स्मारक फडके प्रबन्धके लिये नीचे लिखे ११ महाशयों-

की कमेटी नियत है। इस फंडसे संस्कृत प्राकृत दिगम्बर जैन ग्रंथोंको ही प्रकाशित करना व मूल्य लागत मात्र रखना तय हुआ है। कमेटी कभी कोई देश भाषाका महत्वपूर्ण ग्रंथ भी प्रकाशित कर सकेगी। इसने अब तक ये ग्रंथ प्रकट किये हैं—

१ लघीयस्त्रयादि संग्रह—इसमें भट्टाकलंक देवकृत लघीयस्त्रयादि संग्रह सटीक, आचार्य अनंतकीर्तिकृत लघु सर्वज्ञसिद्धि और बृहत् सर्वज्ञसिद्धि तथा अकलंकदेव कृत स्वरूप संबोधन मूल्य ।≈)

२—सागारधर्मामृत सटीक—पंडित आशाधरकृत „ ।≡)

३—विक्रांतकौरवीय नाटक—श्री हस्तिमल्लकृत „ ।≈)

४—पार्श्वनाथ चरित्र—वादिराज सूरिकृत „ ॥)

५—मैथिली कल्याण नाटक—कवि श्री हस्तिमल्लकृत „ ।)

६—आराधनासार सटीक—मूल गाथा श्री देवसेनाचार्यकृत और संस्कृत टीका „ ।)॥

७—जिनदत्त चरित्र—आचार्य गुणभद्र कृत „ ।)॥

८—प्रद्युम्न चरित्र—आचार्य महासेनकृत „ ॥)

९—चारित्रसार—श्री चामुंडराय विरचित „ ।≈)

१०—प्रमाणनिर्णय—श्री वादिराजसूरिकृत „ ।)

कमेटीके मेम्बर।

१—रायबहादुर सेठ स्वरूपचंद हुकमचंद।

२— „ तिलोकचंद कल्याणमल।

३— „ ओंकारजी कस्तूरचंद।

४—सेठ गुरुमुखराय सुखानंद बम्बई

५— „ हीराचंद नेमचंद आनरेरी मजिष्ट्रेट शोलापुर

६–मि० लल्लूभाई प्रेमानन्द परीख एल० सी० ई०

७–सेठ ठाकुरदास भगवानदास जौहरी

८–ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

९–पंडित धन्नालालजी

१०–पं० खूबचंदजी

११–पं० नाथूराम प्रेमी (मंत्री)

सम्पादक " दिगम्बर जैन " ने भी एक स्मारक फंड स्थापित किया और अपने ग्राहकोंके द्वारा १३९१।-) एकत्र किया है और उसमें सेठजीके कुटुम्बियोंने ९००) की सहायता की है। इससे यह सुन्दर जीवनचरित्र और अन्य उपयोगी दि० जैन साहित्य प्रकट किया जायगा।

सेठजीकी खबर पाते ही बहुतसे नगरोंमें सभाएं हुईं, कहीं बाजार बंद रहे और सैकड़ों सहानुभूति सूचक तार व पत्र आए।

कोष्टक बाबत सभा।

	तारीख सभाकी	स्थान	सभापति।
१	१९–७–१४	बैम्बई	दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचन्दजी इन्दौर।
२	१९–७–१४	सूरत	सभापतिके स्थानपर सेठजीका फोटू रक्खा गया।

१ करीब ४०००) स्मारक फंड हुआ और ५०००) रुपयेसे इन्दौर बोर्डिङ्गमें सेठजीके नामका एक मकान बनानेकी सभापतिने इच्छा प्रकट की जो बन चुका है।

२ 'दि० जैन' द्वारा स्मारक फंड चालू हुआ उसवक्त करीब २००) रु भरे गये।

तारीख सभाकी		स्थान	सभापति।
३	२१–७–१४	अंकलेश्वर	
४	२१–७–१४	बड़ौदा	सेठ लालचन्द कानदासजी
५	२२–७–१४	व्यॅारा	
६	२२–७–१४	अलाहाबाद	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद शुक्ल मार्फत निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन।
७.	१५–८–१४	बेलगाव	एस. एम अक्ले।
८	२६–७–१४	मेरठ	
९.	२६–७–१४	अलाहाबाद	लाला होशियारसिंहजी जैन मुजफ्फरनगर।
१०	२१–७–१४	आलन्द	अध्यक्ष माणिकचन्द मोती-चन्दजी।
११	२५–७–१४	झालरापाटन सिटी	
१२	२९–७–१४	रणासण	सेठ पूनमचन्द साकरचन्दजी
१३	१९–७–१४	बोधेगाव	
१४	१९–७–१४	रतलाम	
१५	२०–७–१४	अहमदाबाद	सेठ रूपचन्दजी मुनीम गोर्धन-मिल्स, मन्दसौर।

३ ८२।) स्मारक फंडमें भरे गये।

४ ४००) स्मारक फंडमें हुए।

५ ५४॥) स्मारक फंडमें हुए।

	तारीख सभाकी	स्थान	सभापति ।
१६	२०–७–१४	बैम्बई	स्या वा न्या प गोपालदासजी बरैया ।
१७	२३–७–१४	हस्तिनापुर	अधिष्ठाता ऋषभब्रह्मचर्याश्रम ।
१८.	२३–७–१४	झाबुआ	
१९	२१–७–१४	कलकत्ता	श्रीमान् बाबू धन्नूलालजी जैन
२०	२२–७–१४	दिल्ली	सेठ जग्गीमलजी जैन
२१	२१–७–१४	फतहपुर	मेहता मणिकचन्द्र छगनलालजी
२२	२८–७–१४	मुलतान	
२३	२४–७–१४	बडवानी	बाबू देवीसहायजी स्टेट एका०

इसके सिवाय प्रान्तिज, पावागढ, पादरा, सोजित्रा, बोरसद, सोनासण, आमोद, बाकरोल, सायमा, शोलापुर, कोल्हापुर, दाहोद, भावनगर, ईडर, माडवी, करमसद, वेडच, वलासण, डबका, मखिआव, इन्दौर, नादगाव, महुआ, मधुवन, मालावाड़ा, वसो, खडवा, रणासण, गोटेगाव, होसूर, राणापुर, बनारस, लाकरोड़ा, जबलपुर, बोधेगाव, वायज, कुशलगढ, लाहौर, ओरण, सतना, गया, अजमेर, मैसुर, सिवनी, बिजनौर, बडौत, ललितपुर, फल्टन, भागलपुर, बडनगर, वर्धा, शाहपुरा, बेलगाव, नासिक, बाराबंकी, सुरवाड़ा इत्यादि अनेक शहरों और गामोंमें शोकसभाएं हुई थीं और कई स्थानोंपर तो एक दिनके लिये व्यापारधन्दा बन्द कर दिया था और मन्दिरोंमे पूजन की गई थी।

६ सेठजीके अन्तिम ढाई लाखके दानके लिये कुटुम्बियोंको धन्यवाद ।

कोष्टक सहानुभूतिसूचकपत्र जो आये।

संख्या	तारीख	नामावली	स्थान
१	१७-७-१४	सेठ मूलचंद किसनदास कापडिया-सं० "दिगम्बर जैन"	सूरत
२	२३-७-१४	रा० रा० दोशी दलुचंद जैन	कुमारगाव
३	२८-७-१४	दिगम्बर जैन पंच	घायज
४	२४-७-१४	रोडमलजी गेंदराजजी	सुसारी
५	२६-७-१४	सेठ भीमचन्द्र टोडरमलजी	उदयपुर
६	२७-७-१४	Ugrasen Jain	मेरठ U. P.
७	२०-७-१४	रेवचन्द छगनलालजी जैन	रंगून
८	२८-७-१४	समस्त प्रयागस्थ जैन पंच मा दीपचन्द परवार सुपरिन्टेन्डेन्ट	अलाहाबाद
९	२५-७-१४	रामलाल मुरारीलाल जैन	छावनी जालंधर
१०	२५-७-१४	श्रीमती राधा	छावनी जालंधर
११	२५-७-१४	दयाचंद गोयलीय, बैरूनीखंदक,	लखनऊ
१२	२१-७-१४	हीराचन्द्र सखाराम कोठारी	मु० आलंद
१३	२५-७-१४	बाबू बूलचंद धनराजजी महेता	कुशलगढ
१४.	२२-७-१४	देवीदास शंभुराम जैन	मुलतान सिटी
१५	२५-७-१४	दिगम्बर जैन सभा	झालरापाटन सिटी
१६	२७-७-१४	दिगम्बर जैन पंच	मालावाडा
१७	२९-७-१४	पूनमचंद साकलचंद	रणासण
१८	३-८-१४	दगडुमा सेवकदास	सामोडा
१९	९-८-१४	घासीराम परवार दि० जैन	पावापुरी

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
२०	८-८-१४	गोविन्द नरसिंह सिखेर(अजैन)	कोल्हापुर
२१	१-८-१४	प्रबन्धकर्त्ता स्या. महाविद्यालय	बनारस सिटी
२२	१-८-१४	छोटालाल बावरदास	करमसद
२३	१-८-१४	श्रीमती लाजवन्तीबाई	सरधना
२४.	१२-८-१४	दशाहूमड दिगम्बर जैन पञ्च	पाटनाकुआ
२५	१२-८-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	बुहारी
२६	५-८-१४	किशनदास ईश्वरदास	जलालपुर
२७	१२-८-१४	बलवन्त बापुराव क्षीरसागर	बोधेगाव
२८.	१२-८-१४	मन्त्री जैन सभा	कालका
२९	८-८-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	हरदा
३०	८-८-१४	सुरजमल जैन	हरदा
३१	१९-८-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	बारसी
३२	१२-८-१४	बाबू सुधारसीलाल जैन	उलीगढ़
३३	२७-७-१४	भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी	सोजित्रा
३४	२१-७-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	वलासण
३५	२२-७-१४	नाथालाल सोभागचन्द	ईडर
३६	२२-७-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	बडू
३७	२२-७-१४	दिगम्बर जैन पञ्च	महुआ
३८	२१-९-१४	बालचन्द सखाराम आदि	मोहोल
३९	२१-७-१४	सौ० काशी	अक्लेश्वर
४०	२२-७-१४	मैनाबाई जैन पाठशाला	ईडर
४१	२२-७-१४	नाथीबाई	करमसद

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
४२	२२–७–१४	अप्पाराव वकूर	विरापुर
४३.	२२–७–१४	प० माणिकचन्द जैन सु जन बोडिंग	बिजनौर
४४	२२–७–१४	सेठ हरजीवन रायचन्द	आमोद
४५	२१–७–१४	ईश्वरलाल टोलिया	जयपुर
४६	२१–७–१४	सगप्पा मल्लप्पा आरले	बेलगाव
४७	२३–७–१४	वीरचन्द्र कोदरजी	फलटण
४८	२६–७–१४	रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजी	इन्दौर
४९	२३–७–१४	सकल जैन पच	नादगाव
५०	२२–७–१४	ब्रह्मचारी हेमसागरजी	करमसद
५१	२३–७–१४	नलीभद्र तुकाराम पानगाव कर (अजैन)	पूना
५२	२४–७–१४	पानाचद कुबेरदास	वेडच
५३	२२–७–१४	बाबू सुन्दरलाल बैनाडा	झालरापाटन सिटी
५४	१८–७–१४	मोहनलाल हेमचन्द्र (श्वे०)	अहमदाबाद
५५	१८–७–१४	छोटालाल घेलाभाई गाधी	अङ्कलेश्वर
५६	,,	वीसा मेवाड पच समस्त	,,
५७	१८–७–१४	परीख चुन्नीलाल प्रेमानन्ददास	बोरसद
५८	,,	परीख जेठालाल प्रेमानन्ददास	,,
५९	१८–७–१४	रतलाम मा पा दिगम्बर जैन बोर्डिङ्गके सु और विद्यार्थीगण	रतलाम
६०	१९–७–१४	समस्त दिगम्बर जैन पच	रतलाम

सख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
६१	,,	मैनेजिङ्ग कमेटी मा पा. दिगम्बर जैन बोर्डिंग	रतलाम
६२	१८–७–१४	केशवलाल डाह्याभाई बी ए	अहमदाबाद
६३	१८–७–१४	कालीदास जसकरण जवेरी बी ए एलएल. बी (श्वे०)	अहमदाबाद
६४	१८–७–१४	मनसुख रवजीभाई म्हेता मा रायचद साहित्य मदिर	अहमदावाद
६५	१८–७–१४	गोरधनदास सुरजराम	सूरत
६६	१९–७–१४	जैन हितेच्छु मण्डल	करमसद
६७	,,	सेठ लालचन्द कानदास	बडौदा
६८	,,	दिगम्बर जैन पत्र	आरा
६९	१८–७–१४	K N and A S Framjee की ओरसे गुस्तादजी सोराबजी भरूचा	बम्बई
७०	२०–७–१४	गुलाबचन्द हीरालाल	धूलिया
७१	१९–७–१४	माणिकबाई दिगम्बर जैन पाठशालाकी ओरसे गांधी पूनमचन्द्र साकलचन्द्र	ईडर
७२	२०–७–१४	जगमोहनदास वरजीवनदास (अजैन)	पूना
७३	१२–७–१४	चिमनलाल जयसिंहभाई	अहमदावाद
७४.	,,	कीकाबाई वखतचन्द्र	सूरत

सख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
७५	१९—७—१४	रामचन्द्र उदयचन्द्र	लौल
७६	१२—७—१४	भूखणदास हरजीवनदास	सुरत
७७	१९—७—१४	सेठ हीराचन्द्र वेणीलाल तासवाला	सुरत
७८	,,	महेताजी परमानन्द इच्छाराम (अजैन)	,,
७९	१६—७—१४	सेठ विनोदीराम बालचन्द्र	झालरापाटन
८०	१९—७—१४	जयचन्द्रभाई जीवनचन्द्र (श्वे)	भोयणी
८१	,,	दिगम्बर जैन पत्र	पादरा
८२	,,	छोटालाल वेचरदास	बोरसद
८३	१८—७—१४	वोहरा लीलाचन्द हरिचन्द्र	पूना केम्प
८४	,,	शाह भगवानदास शोभाराम	,,
८५	१४—७—१४	सेठ भगवान उगन	भावनगर
८६	२०—७—१४	दोशी तलकचन्द कस्तूरचद	बारामती
८७	१९—७—१४	नरोत्तमदास भीखाभाई	भावनगर
८८.	२०—७—१४	गाधी नाथारगजी	आकलुज
८९	१९—७—१४	दोशी पद्मशी जोयतादास	ईडर
९०	,,	गाधी हरिभाई देवकरण	शोलापुर
९१	,,	गाधी रावजीभाई नानचद	,,
९२	,,	वालचद गुलाबचंद वागडया	भावनगर
९३	,,	तवनप्पा अणप्पा लेंगडे	शाहपुर
९४	२०—७—१४	दिगम्बर जैन पाठशाला	बड़ौदरा
९५	,,	लल्लुभाई करमचद दलाल	वीजापुर

सख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
९६	२१–७–१४	मनसुख अनूपचद शाह (श्वे)	अहमदावाद
९७	१९–७–१४	दोमाडा बाबूभाई देवचद	टेम्मुरणी
९८	२०–७–१४	बाबा तवनप्पा कावलकीया	शाहपुर
९९	२०–७–१४	नरसिंहपुरा दिगम्बर जैन पच	नरोडा
१००	२०–७–१४	अहमदावाद प्रे० मो० दि० जैन बोर्टिङ्ग	अहमदावाद
१०१	,,	उमेदचद ककुचद	वीजापुर
१०२	२१–७–१४	गोर्धन हरचद	मखीआव
१०३	२३–७–१४	मणीलाल जीवराम	विसनगर
१०४	२२–७–१४	दोशी अमूठक जयचन्द	देशोत्तर
१०५	,,	समस्त दिगम्बर जैन पच	दाहोद
१०६	२१–७–१४	बाबू नवलकिशोर मा बार लायब्रेरी	कानपुर
१०७	२४–७–१४	दिगम्बर जैन पच	मखीआव
११८	११–७–१४	डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर वीसपंथी कोठी	गिरीडी
१०९	२२–७–१४	कालिदास साकलचन्द	उजडिया
११०.	२२–७–१४	जीवण जेठीराम	दहीवडी
१११	२०–७–१४	माणिकचन्द मोतीचन्द	भावनगर
११२	३०–७–१४	गाधी माणिकचन्द	आरा
११३	२०–७–१४	विचित्रशोध रत्नाकर का	सागर
११४	,,	जीवण रावजी	माढ
११५	१५–७–१४	सन्तुमलजी	लखनऊ

सख्या	तारीख	मामावलि	स्थान
११६	२२-७-१४	फूलचन्द उगनलाल	मगरोळ
११७	२०-७-१४	सामनराम सेवाराम	उज्जन
११८	,,	राय व० सेठ नमडीलालजी	मुजफरनगर
११९.	२०-७-१४	भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशिनी सस्थाके सचालक प पन्नालालजी बाकलीवाल, प श्रीलाल, प गजाधरलाल, पं मुन्नालाल, प वृजभूषण लालजी, आदि	बनारस
१२०	२२-७-१४	प फतेहचन्द कपुरचन्द लालन	देवलाली
१२१	२१-७-१४	माणिकबाई लायब्रेरीके प्रमुख	बोरसद
१२२	३०-७-१४	बुधमल पाटनी	इन्दौर
१२३	२०-७-१४	दिगम्बर जैन पच	शाहपुर
१२४	१८-७-१४	दिगम्बर जैन पच काणीसा	खम्भात
१२५	२१-७-१४	वीया कुन्दनजी कपुरचद	परतावगढ
१२६	१७-७-१४	सुरजमल लल्लुभाईकी कपनी	रगुन
१२७.	१८-७-१४	जीवदया ज्ञान प्र० फड	बम्बई
१२८	२-८-१४	J L Jaini M A. Bar-at-law मा० महावीर ब्रदरहुड-लण्डन	Stockport (England)
१२९.	२५-८-१४	पण्डिताचार्य भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी महाराज	श्रवणबेलगुल

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१३०	२–८–१४	मोतीलाल वकील जैन ओर्फनेज मा०	दिल्ली
१३१	२६–७–१४	बेचरदास भाईदास (अजैन)	राजकोट
१३२	२४–८–१४	मेहरचन्द पुत्र ला धवलकिशोर (रईस)	सहारनपुर
१३३	२५–७–१४	मदनमोहन जैन	झालरापाटन
१३४	२९–७–१४	दिगम्बर जैन पत्र	सायला
१३५	२४–७–१४	काशीबाई	पाटण
१३६	२५–७–१४	हीराबाई	सादरा
१३७	१८–७–१४	श्रीमती चन्दाबाई	आरा
१३८	,,	श्यामाबाई अनन्त मुरूशे	कोल्हापुर
१३९	१२–७–१४	दिगम्बर जैन पत्र	इडौरा
१४०	२ –७–१४	बी० ए० पटील	सिरोल
१४१	२२–७–१४	दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग	हुबली
१४२	१४–७–१४	विजकोरबाई	वलसाड
१४३	३१–७–१४	दलपतभाई केवलभाई शाह	,,
१४४	३१–७–१४	सेठ गुलामहुसेन कासमभाई	जूनागढ
१४५.	३०–७–१४	रावसाहब गुलाबचन्द्रजी	छपरा
१४६.	३१–७–१४	प० गोपालदास बैरया, सभापति दि० जैन सभा	बम्बई
१४७.	२३–७–१४	ला० जग्गीमलजी	दिल्ली
१४८.	२४–७–१४	दीवान ब अम्बालाल साकरलाल देशाई एम० ए०	अहमदाबाद

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१४९	२०–७–१४	सेठ हरनारायण जैन	भागलपुर
१५०	२१–७–१४	भगवानदीनजी अधिष्ठाता ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम	हस्तिनापुर
१५१	२१–७–१४	देवीसहायजी जैन	फिरोजपुर
१५२	२५–७–१४	पीताम्बरदास उपदेशक	ईडर
१५३	२३–७–१४	बाबू ऋषभदास वकील	मिरत
१५४	२४–७–१४	नानचन्द्र पदमसिंह मुनीम	तारङ्गाजी
१५५	२१–७–१४	बच्चूलाल जैन	आरा
१५६	२१–७–१४	मोदी अम्मरशी जेठाभाई	जुनागढ
१५७	२३–७–१४	ज्योतिप्रसादजी स० जैन प्रदीप	देवबन्द
१५८	२२–७–१४	दि मालवा प्रा महा सभा के सभापतिकी ओरसे सेठ वालचन्दजी	इन्दौर
१५९	२३–७–१४	दिगम्बर जैन पत्र	ढाका
१६०	२२–७–१४	फुलचन्द रुगनाथदास	पेटलाद
१६१	२३–७–१४	सर्वसुखदास खजाची	जयपुर
१६२	२५–७–१४	घनश्यामदास लल्लूभाई गुड्स क्लार्क (अजैन)	सूरत
१६३	२३–७–१४	धन्नूलाल अग्रवाल, सभापति दि जैन पचायती	कलकत्ता
१६४	२३–७–१४	भगवानदास झवेरदास	सोजित्रा

संख्या	तारीख	नामावलि	स्थान
१६५	२५–७–१४	दोशी हिराचद नीलचद	कुपारगाव
१६६.	२३–७–१४	दिगम्बर जैन सभा	पहाड़ीधीरज
१६७	,,	चुनीलाल उगरचन्द	फतेहपुर
१६८	२६–७–१४	दि जैन पच	अलुवा
१६९	२५–७–१४	जयसिंहभाई गुलाबचद	प्रभासपाटण
१७०	२६–७–१४	सेठ भीखाभाई वेचरदास	बाच
१७१	२२–७–१४	दिगबर जैन पच	बेडच
१७२	२७–७–१४	चौथमलजी	मुलतान
१७३	१७–७–१४	तासवाला वेणीलाल केशुरदास	सूरत
१७४.	१८–७–१४	ए बी लट्ठे एम० ए०	कोल्हापुर
१७५	१७–७–१४	चुन्नीलाल एम० कापडिया	बम्बई
१७६	,,	नगीनदास हरजोवनदास, नानावटी (अजैन)	सूरत
१७७	१८–७–१४	ताराचद मगनलाल	वडौदरा
१७८	२०–७–१४	मोहनलाल कालीदास शाह	मुंबई
१७९	१८–७–१४	दुलीचद ओंकारदास	खामगाव
१८०	१७–७–१४	सरदार सेठ ईश्वरदास जगजीवनदास स्टोर (अजैन)	सूरत
१८१	१९–७–१४	कातिलाल नाणावटी एम ए हेडमास्तर दरबार, स्कूल (अजैन)	रतलाम
१८२	१९–७–१४	छोटालाल घेलाभाई गाधी	अकलेश्वर



सेठजी ६० वर्षकी अवस्थामें

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
१८३	१४—७—१४	सौ० गिरजाबाई	सोलापुर
१८४	१७—७—१४	प्रभुदास हेमचन्द्र	सूरत
१८५	१७—७—१४	त्रिभुवनदास त्रिजलाल	,,
१८६	१७—७—१४	नवलचंद सौभागचंद	,,
१८७.	१७—७—१४	अमरचंद उर्फ कीकाभाई अभेचंद	,,
१८८	१७—७—१४	प्रेमचंद हरगोवनदास मोतीरूपावाले	,,
१८९	१७—७—१४	दलीचंद गणपत मिस्त्री (अजैन)	,,
१९०	२०—७—१४	म्यास सिपोटिया फोटोग्राफर	बम्बई
१९१	३०—७—१४	मोतीलाल दिल्लीवाले	मसूरी
१९२	२०—८—१४	स वन्दे जिनवरम्	सिवणी
१९३	३०—७—१४	राजवैद्य प० बाबूलाल जैन	सहडोल
१९४	२९—७—१४	दि० जैन पंच	राणापुर
१९५	१—८—१४	बापूलाल काला	इन्दौर
१९६	३१—७—१३	मेहता हुकमीचन्द मगनलाल	मीडर
१९७	१—८—१४	चिरंजीलाल बडजात्या मा० दि जैन पंचान	वर्धा
१९८	२८—७—१४	दिगम्बर जैन सभा	मुलतान
१९९	१८—७—१४	मोहनलाल चुन्नीलाल	पाटण
२००	२९—७—१४	लक्ष्मीनाराणजी	(गुनावा)

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
२०१.	२३–७–१४	नानाभावजी पेंडेकर मन्त्री शिक्षण प्रसारक संस्था	दुरगाव
२०२	१८–७–१४	मोतीलाल त्रिकमदास मालवी	बारसोल
२०३	२–७–१४	मूलचन्द्र सर्राफ	बरूआसागर
२०४	१८–७–१४	हरजीवन रायचन्द शाह	आमोद
२०५.	१८–७–१४	J C फिलिप्स, प्रबन्धक, किलिक निकशनकी कम्पनी	बम्बई
२०६	१८–७–१४	रूपसी जैन श्राविकाशाला	बम्बई
२०७	१७–७–१४	मा गंगाशकर मु० प्रे० मो० दिगम्बर जैन बोर्डिंग	अहमदाबाद
२०८	१९–७–१४	समस्त दिगम्बर जैन पञ्च	सूरत
२०९	,,	समस्त दि० जैन पञ्च, घोघा और भावनगर	भावनगर
२१०	,,	वीसामेवाडा जैन पञ्च समस्त	बोरसद
२११	१८–७–१४	बी पी पाटील	होसूर
२१२.	१८–७–१४	दिगम्बर जैन पञ्च	बनारस
२१३.	१९–७–१४	दिगम्बर जैन कारखाना	पालीताणा
२१४	२७–७–१४	देवीसहायजी स्टेट अकाउटन्ट	बडवानी
२१५	१७–७–१४	ठाकोरदास नवलचन्द सबजज	सूरत
२१६	१७–७–१४	हेमचन्द जैन	सूरत
२१७.	७–८–१४	भगवानदास दुल्लभदास	बम्बई
२१८	८–८–१४	जयवन्ती गौरा अस्पताल	रायबरेली

नंबर	तारीख	नामावलि	ग्राम
२१९	२८—७—१४	महामन्त्री सेठ चुन्नीलालजी	इन्दौर
२२०	९—८—१४	हीरालाल महामन्त्री	राघोगढ
२२१	३—८—१४	श्रीमती	मेरठ
२२२	३—८—१४	समस्त जैन पत्र	आर्वी
२२३.	११—८—१४	सुखदेव वर्मा, मत्री, जैन कुमार सभा	मुलतान
२२४	३—८—१४	सकल जैन पत्र	कहौंदरा
२२५	२१—७—१४	जुगमन्दिरदास (रईस)	नजीबाबाद
२२६	१९—७—१४	जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (अजैन)	प्रयाग
२२७.	२३—७—१४	Kalidas K Patel मत्री आर्यसमाज मन्दिर	बम्बई
२२८	१—८—१४	S M Ankle	नैलगाव
२२९	१९—७—१९	समस्त दि० जैन पच	बम्बई
२३०	२०—७—१४	प्राणशकर लल्लूभाई देशाई	अहमदाबाद
२३१	२०—७—१४	श्री० जमनाबाई नगीनदास सकरई	वालकेश्वर
२३२	१८—७—१४	श्रीमान् श्रीमन्त सेठ पूरनसाहजी	सिवनी
२३३	१९—७—१४	झवरी लल्लूभाई रायचन्द	अहमदाबाद



कितनेक शोकजनक पत्र ।

श्रीयुत सेठ नवलचन्दजी हीराचन्द जौहरी, बम्बई,

स्वर्गीय स्वनाम धन्य दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके असमय वियोगका जो असह्य शोक आप पर और आपके परिवारपर आकर पडा है वह ऐसा नहीं है कि शब्दोंके द्वारा प्रकट किया जा सके। हमको सूझ नहीं पडता कि हम आप लोगोंके शोक सन्तप्त हृदयको किन शब्दोंसे शान्त करें, और आपको धीरज बधावें।

इस शोकका आपके ही समान प्रत्येक सहृदय जैनी अपने हृदयमें अतिशयताके साथ अनुभव कर रही है। क्योंकि स्वर्गीय सेठजीने अपने कृत्योंसे प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें सदाके लिये स्थान बना लिया है। उन्होंने जैन समाजपर जो २ उपकार किये है वे बहुत बडे और चिरस्थाई है। जैन समाज उनके उपकारोंके एक अंशका बदला देनेको भी समर्थ नही है। इसलिये उनके वियोगका शोक होना हम लोगोंके लिये भी बिल्कुल स्वाभाविक है। हमें नहीं समझ पडता कि हम आपके प्रति सहानुभूति प्रकट करें या अपने शोक प्रति औरोंकी सहानुभूतिकी आशा करें। इसलिये सेठ जीके दु खमे हम और आप समदु खी है। इस समय इस शोकसे मुक्त होनेका इसके सिवा और कोई उपाय नही है कि हम संसारके स्वरूपका चिंतवन करें। इसका यह नियम ही है कि जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती। "मरण प्रकृति शरीरिणाम्" मृत्यु होना प्राणी मात्रके लिये स्वाभाविक है। इसका विचार करके आप लोग शोकका परित्याग करें और सेठजी जो कीर्त्तिका मार्ग

बना गये है उसपरसे उन्हींके पदचिन्हों परसे आप आपकी सन्तानके सहित चलें जिससे आपके परिवारमें स्व० सेठजीके ही समान अनेक दानवीर सेठजी पाकर हम लोग भी इस शोकको भूल जावें। श्री जीकी कृपासे सेठजीकी आत्माको शान्ति लाभ हो। और आप लोग भी इस शोकसे मुक्त होनेकी शक्ति प्राप्त करें। विज्ञेष्वलमति विस्तरेण।

हीराबाग—बम्बई। } समस्त दिगम्बर जैन समाजकी ओरसे
ता १९-७-१४ } **सरूपचद हुकमचद** (सभापति)

London, 2nd August 1914.

Dearest Sister **Maganbai**,

My soul is shocked to silence at the loss of my beloved Sethji He was a friend, leader and colleague and to me almost like a father Your loss is very great, but our sympathy and loyalty to you and your family, to your little brother and our beloved Sethani will never fail. Now a few things have to be done

(1) A Committee must be formed of 5 or 3 members to prepare an authoritative life of Sethji A fund must be set apart for this

(2) One good memorial must be raised to Sethji He was the pioneer lover and founder of Jaina Boarding Houses His utmost ambition was to establish a Jaina Home in England. We should try and open a "Manekchand Jain

Home" in London For this, dear Maganbai, you should devote your splendid talents and in one or two year's time we can have a big Jaina Home in London But a beginning can be made with even one lac of Rupeess—Allow me to assure you of my loyalty and service to you and the family Consult my friends Br Sital Porshadji and Seth Hirachand Nemchand of Sholapur on this

In mourning,
Yours Sincerely,
J L Jaini Bar-at-Law

श्रीमान् सेठ नवलचद हीराचद, आदि सुकुटुम्ब सेठ माणिकचद पानाचद प्रति ।

समस्त दिगम्बर जैन पचान् बम्बईकी ओरसे विदित हो कि ता ३०–७–१४को हीराबागमें एक वृहत सभा हुई। उसमें जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ सो आपकी सेवामे प्रेषित किया जाता है।

"स्वर्गवासी श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचद हीराचन्द जे पी ने जो अपना अतिम दान ढाई लक्ष रुपयेका किया है व जिसके लिये जुबली बागका मकान ट्रष्ट कर दिया है और उसकी आमदको परीक्षालय, उपदेश फड, तीर्थरक्षा व विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति देनेके प्रशंनीय कार्योंमें खर्च करना निश्चय किया है उसके लिये बम्बईका समस्त दिगम्बर जैन समाज उक्त सेठजी व उनके सर्व कुटुम्बका अतिशय कृतज्ञ है और आशा करता है कि जिस भाति स्वर्गवासी सेटजीका लक्ष अपनी समाज व धर्मकी

उन्नति पर था उसी तरह उनके उदार और माननीय कुटुम्बी जनोंका भी पूरा २ ध्यान इस पवित्र जिन धर्म और समाजकी उन्नतिमें कटिबद्ध रहेगा। "

आपका हितकांक्षी–
गोपालदास वरैया, सभापति।

श्रीमती मगनबाईजी,

श्री० सेठ जै० माणिकचंदजीका स्वर्गवास सुन सारी समाजमे शोकरूपी मेघाच्छादित हो गया। हृदय कम्प होकर वेदना अनुभव होने लगा।

हा ! समाजका इंदु कालरूपी केतुसे दब गया।

इस समय हमारे यहांके सर्व नरनारी शोकातुर हैं–आपके प्रति तथा मातुश्री आदि सर्व कुटुम्बियों प्रति समवेदना प्रकट करते हैं। अन्तमें यह मनोकामना है कि पूज्य सेठजीके पवित्र आत्माको शान्ति मिले और आप लोग भी बारह भावना भावें।

दु:ख हृदया–**चंदाबाई**, *आरा।*

श्रीमती पंडिता मगनबाइजी, मुंबई

जैन समाजाचे पिते–सूत्रधार–आधारस्तंभ-एक अमूल्य रत्न–असे आपले वडील व आमचे पितृसदृश दा० जैं० कु० शेठ माणिकचंद याच्या आकस्मिक मरणाची वार्ता काल रोजी येथे पसरली मी हल्लीं थोडासा शीक (अमांशाच्या विकारानें) असल्या मुळें घरींच असतो कालरोजीं आमच्या एका मित्रानें सदर बातमी मला घरी येऊन सांग ताच एकदम् विद्युत्पात झाल्या सारखें वाटलें! फारच दुःख झालें माझ्या-वर तर त्यांची फारच प्रीती उपाय नाहीं कर्मच्छेपुढें कोणाचें काय

चालणार ? आपण सज्जन आहा त्याच्या मरणाने जैन समाजाची किती नुकसानी झाली आहे हें लक्षात आणून त्यातल्या त्यात समाधान पानाल अशी आशा आहे जैनसमाजाचा एक आधार व चालक नाहींसा झाला आज जैनसमाज लगडा-पगु झाला असें म्हटलें, तरी चालेल आपले वधु चि० बाबूम दीर्घकाल आयुरारोग्य प्राप्त होवो व आपल्या वडिलाचा कित्ता बरोबर गिरवो अशी श्रीजिनेश्वरचरणी प्रार्थना करून हें दु खवटयाचें पत्र सपवितो कळावें ही विनती ता० १९-७-१४

आपला एक बधु—

भरमप्पा पद्मप्पा पाटील, होसूर।

मान्यवर महोदयजी !

यह हृदयविदारक दु समाचार पढकर अत्यन्त शोक हुआ है कि जैन जातिके चिरस्थाई सभापति जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणिकचन्द्रजी जे पी बम्बईका अकस्मात् स्वर्गवास हो गया है। हाय! बडा अनर्थ हुआ। यह समाचार मैंने सभामे सुनाया। सभामें जितने जन उपस्थित थे सब हीके चित्त शोकातुर होने लगे और इस असार ससारकी छिन भगुर अवस्थापर विचार करने लगे और कहने लगे कि हाय काल! तू बडा अन्यायी है। योग्यायोग्यका रच मात्र भी विचार नहीं करता। अपनी गतिमें अरोक गमन करता रहता है। (विचार पूर्वक) वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है। जिसका सयोग है उसका वियोग अवश्य होता है। यथा—

गाथा—

ज किंचिण उप्पण्णे तस्स विणासो हवई णियमेण।
परिणामसरूवेण वि किंचिविनाय अत्थि॥

ऐसा विचार कर धैर्यका अवलबन करना उचित है। इस

प्रकार यह जैन सभा कालका शोकातुर होती हुई भी अतमें श्रीमान् सेठजीके कुटुम्बी जनोंसे प्रार्थना करती है कि इस ससारके स्वभावको विचार करके सतोपावलबन करें। दोहे—

काल बड़ा विकराल है सोचे नाही नेक।
अज्ञानी निर्दयी कुटिल राखे अपनी टेक ॥ १ ॥
अरे! दुष्ट पापात्मा करुणा हीन कठोर।
जैन जातिके रत्नको हा! हा! कीन्ह चिकोर ॥ २ ॥
हा! हा! दिनेश छिप गयो भयो घोर अधिकार।
हीरा जैसी ज्योति थी सो कित गई सिधार ॥ ३ ॥
हा! हा! माणिक ज्योति सम था! उडगनमें चंद।
हमें छोड तुम कित गए हे! प्रफुल्लित अँग ॥ ४ ॥
ज्ञानी धनी सुशील नर लीन सो पर उपकार।
तुम बिन इत हम सबनको कौन करे उद्धार ॥ ५ ॥
सागरवत गभीर हृदय कल्पवृक्ष सुख देन।
तुम बिन उन्नत जातिकी को सुध ले दिन रैन ॥ ६ ॥
जैनोन्नतिकी आशको ले गयो मास असाढ।
कृष्णा नवमीके दिना जाति भई अनाथ ॥ ७ ॥
हाय दैव! यह क्या कियो सुनतही भये अधीर।
हृदय शोक बाढो अबे बहता नयनों नीर ॥ ८ ॥
चाहत हूँ उन दर्शको पर नहिं पार बसात।
देख कालकी चालको काँपत है निज गात ॥ ९ ॥
काहे हृदय अधीर हो वस्तु स्वरूप विचार।
मनमें अब धीरज धरो यह ससार असार ॥१०॥
श्री अरहतसे वीनती करूं जोर युगपान।
श्रीमन्जीकी आत्मा धर्मे शात सुखधाम ॥११॥
होय कुटुंबी जननके हृदयशातको वास।
जैनजाति जिनधर्मसे नितप्रति प्रेम व्यवहार ॥१२॥

जेनन दीन विलोकिके करो मनाथ हे नाथ।

यह सुबुद्धि अब दीजिये करे निज पर उद्धार ॥१३॥

जैन समा कालिकातनी सुनहु बीनती ऐम।

करो कृपा इम जातिमे जासो बाढे प्रेम ॥१४॥

स्वजनन प्रति यह बीनती करहु हृदय धर धीर।

अथिर चरित ससार लखि धर सतोषि चितवीर ॥१५॥

बनारसीदास जैन,

मत्री, जैन समा, कालका।

सुप्रसिद्ध धार्मिक सिरोमणि श्रीमान् माणिकचन्दजीकु अकस्मात् स्वर्गवास हूआ कर्के वृत्त पत्रसे मालुम हुवा--इस्से ऐसा धार्मिक सिरोरत्नका वियोग हूये सो ह लोकके सदस साधु लोककु भी व्याकुलता सपादक है तुम लोकक कहना क्या है, तथापि आप लोक व्याकुलतासे निवृत्त होकर सेठजीके सदस परोपकार कार्यमे व्यापृत होकर ऐहिकामुष्मिक सुखप्रद धर्म कार्यमें निरत होना चाहिये।

म० **चारुकीर्ति** पडिताचार्य, श्रवण बेलगुल

(सही कर्णाटकी भाषामें)

श्रीयुत मान्यवर सेठ नवलचदजी हीराचदजी, जुहारू।

दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचद हीराचद जे० पी० क अचानक स्वर्गवाससे आज हमे अतिशय दु:ख है। सेठजीके स्वर्गवासके कारण जैन समाजको एक सच्चे मित्र और रक्षककी असह्य हानि उठानी पडी है। श्रीमान् सेठजी न केवल आपके ही बधु थे किन्तु वे लक्ष लक्ष जैन धर्मियोंके भाई थे और उन एकके मरणसे

आज लाखों जैनी अपने अपने भाईके खोजानेके समान दुखी है। तौ भी ससारकी स्थितिको देखकर हृदय सतोषित करना पडता है। हम आपके दु खसे सहानुभूति प्रकट करते है और निवेदन करते है कि आपको भी ससारके स्वरूपका ध्यान मनमे सतोष रखनेके साथ स्वर्गीय सेठजीके पदानुसारी होनेका प्रयत्न करना चाहिये।

शोकाकुल—

सूरजमल जैन, हरदा।

महोदयजी!

आजदिन इस शोकसमाचारको प्रकट करते लेखनी थर्रा रही है। विवश लिखना पडता है कि ऐसा विषय कभी न लिखना पडे। श्रीयुक्त माणिकचन्द हीराचन्द जे पी के मृत्युपर बडा ही दु ख-दायी आघात पहुचा है। आपके योगमे वैद्य शास्त्रीय हर एक प्रकारकी समुन्नतिकी आशा ही थी इतना ही नही आपने हीराबागमें धर्मार्थ औषधालय अपना अमर नामरक्षक नियत कर दिया है। ऐसे रत्नरत्नके न रहनेसे आजआयुर्वेदके शुभचिन्तक सभी सुजनोंकी बडी भारी हानि हुई है। आपकी आत्माको स्वर्गवास हो।

मुझे श्रा सुदी ४के कमेटीमे इस समाचार पर "**निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन**" की स्थायी समितिने आपलोगोंमे (सेठजीकी बाई और पुत्र आदि कुटुम्बी) समवदना प्रकट करनेकी आज्ञा दी है। तदनुसार मैं इस महा घोर दु खप्रद समाचारको लिये सम दु खी होते हुए आपलोगोंको वज्र हृदय कर धैय धार-

णके लिये दृढता दिलाता हुआ कहता हूं कि आप भविष्यमें सेठ-जीके आयुर्वेद प्रेमको अटल सिद्धान्तपर सेवायुक्त करते हुए अपने कर्तव्य पथपर आरूढ रहेंगे ।

भवदीय—

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग ।

व्हाला व्हेन ग० स्व० मगनव्हेन माणेकचंद

दिगम्बर जैन कोमना अग्रेसर धुरंधर दानवीर—तमारा पूज्य पिता-भाई माणेकचंद हीराचंदना एकाएक दिलगीरी भरेला मृत्यु समाचारथी हुं घणीज दिलगीर थई छु

जैन कोममा अने देशना सार्वजनिक कामोंमा पोतानी जात महेनतथी प्रमाणिकपणे वेपारमा सम्पादन कीधेली आवोनी दोलतनो तेमनी उदार लागणीथी सदुपयोग करनार महूम भाई माणेकचंद हीराचंदना मृत्युथी—खरेखर जैन कोमे तेमज देशना केटलाक सार्वजनिक खाताओए एक महान दानवीर नरने पोतानी वच्चेथी गुमाव्यो छे

तमारा कुटुम्ब ऊपर आ अणधारेली आवी पडेली आफतमा हु घणीज दिलगीर थई छु—दुःख सहन करवा ईश्वर शांति आपो . .

शुभेच्छक बहेन

जमनाबाई नगीनदास मकई, वालकेश्वर

शेठजी,

श्रीमान शेठ माणेकचंदजीना अकस्मात देवलोक थयाना समाचार साभळीने घणोज खेद कुदरती रीते थयो छे आपना कुटुंबने तो एमनी पूरी खोट लागेज परंतु आखी जैन जनसमाज साथे देशना मोटा भागने तेमनी खोट थई पडी एवा दानवीर पुरुषो क्यां छे के आ खोट पूरी पडे. ...

कदमलाल केशवराम नाणावटी, रतलाम-

आत्मस्नेही बेन मगनबेन,

ना तनदुरस्तीए देवलाली हतो. "जामे जमशेद" पत्रमा जे समाचार वाचवामा आव्या तेथी हृदयना ऊडा भागमा जे शोक थाय छे तेनो पार नथी तमारी स्थीतीन लागे केवो आघात थयो होवो जोईए तेओ तमारी माथे जैन कोमना पिता हता, तेमा पण त्रणे सम्प्रदायना अभेद भावे विद्यार्थी, दुखी जैनोना, अवश्य हता, पण बेन, आपणा पुण्यनी अवधि होय छे, आ अवधिनी पर रहेला आत्मामा रही आत्मबळ संपादन करी पितृश्रीने पगले चालवामा तओश्रीना आत्माने शांति अने आपणनु कल्याण छे शासन देवो तमारा कुटुंबन आ असह्य आघातमा रक्षण करो

तमारो शोकातुर,

वीरचाळ प० लालन

मान्यवरा श्रीमती मगनबाईजी।

यह सुन कर कि श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ मानकचन्दजी अकाल मृत्युके ग्रास हो गए अत्यंत शोक हुआ। न जाने इस जातिका कैसा दुर्भाग्य है कि प्रथम तो इसमें नररत्नोंकी उत्पत्ति ही नही, यदि एक दो की उत्पत्ति होती है तो उन्हें मृत्यु अपना ग्रास बनालेती है। सेठजीकी इस अकाल मृत्युसे जो दुख आपको तथा आपके कुटुम्बी जनोंको हुआ है उससे कई गुणा अधिक हम लोगोंको हुआ है जिसका हम शब्दों द्वारा प्रकाश करनेमें असमर्थ है। बाईजी, आप स्वय विदुषी है। आप ससारकी अवस्थाको भलीभाति जानतनी है, इसमें जो जन्म लेता है वह अवश्य एकदिन विनाशको प्राप्त होता है। इस पृथ्वीपर कितने बल्देव, कामदेव, नारायण, प्रति नारायण हुए परन्तु सबके सब कालके ग्रास हुए, अतएव यह ससार असार व अशरण है, यह जान कर

आप शोकको त्याग करें और धैर्य धारण करें और सर्वज्ञदेवसे प्रार्थना करें कि सेठजीकी आत्माको भव २ में शांति मिले।

आपके दुःखका साथी–
दयाचन्द गोयलीय, बैरूनी ग्वदक–लखनऊ।

परम स्नेही परम विवेकी शेठ नवलचंद हीराचंद जोग–

आजे सवारे एकदम ओचिंता शेठ माणेकचंदजीना स्वर्गवास थवाना समाचार तार द्वारा सांभळी अजायबी अने दिलगीरीनो पार रह्यो नथी के ओचिंतु आ शु थई गयु ! काइपण मांदा वगर आम ओचिंतु मृत्यु थवाना समाचार सांभळी हैयु भराई जावे छे ने शुं लखवु ते समज पडती नथी आथी दिगंबर जैन कोम उपर तेमा आपना कुटुंब उपर आ फटको जेवो तेवो लाग्यो नथी अने आ घा कदी रुझाय एम नथी आम ओचिंतु थवाथी घणी घणी बाबतोना खुलासाओ करवाना आपने रही गया हशे तेम अमारा पण मनना उमेद मनमा रही गया केमके घणी बाबतोना खुलासा अमने करवाना हता शेठजी ! आ गमगीन बनावथी आपना कुटुंब उपर जे कमनसीबनु अने ओचिंतु दुःख आवी पड्यु छे तेमा अमो अंतःकरणथी भाग लीए छिए आवतु 'दिगंबर जैन' आ शोक समाचार सहित बहार पाडवु पडशे, माटे शेठे जे पोता पाछळ वापरवानी व्यवस्था माटेनु वील करेलु छे तेनी नकल अमने वेहेली आपशो तथा शेठजीना पुत्रनु नाम शु छे अने उमर शु छे ते जणावशो महेरबानी करी विगतवार समाचार लखशो तो उपकार थशे एज कामकाज लखशो

अत्रे आजे चंदावाडीमां स्नान मंडाया हता रडवा कुटवानुं बंध राखवामा आव्यु हतु ने धर्मना गीतो गवाया हता....

आपनो आज्ञाकारी–**मूलचंद किसनदास कापड़िया–सूरत।**

गंगास्वरूप व्हेन मगनव्हेन,

आपना पूज्य शिरछत्र पिताना अचानक मृत्युना समाचार वाचीने अमो घणा दिल्गीर थया छीए. जैन कोमनी उन्नति माटे तेओश्रीए जे भोग आप्यो छे, तेवो भोग जैन कोमना श्रीमंतोमाथी आज पर्यंत कोईए पण आपेल नथी तेओश्रीना कार्योथी तेमना देहनोज आपणने वियोग थयेल छे, बाकी तेओ जीवताज छे एम माननामा अमो भूल करता नथी तेमना वियोगथी आपने असह्य दुःख थतु हशे अने थाय तो तेमा नवाई नथी, पण दुष्ट काळ कोईने छोडतो नथी, एम धारीने तेमना जेवा उच्च कार्यो करवा एज आ मनुष्य भवनी सार्थकता छे तेमना स्मरणार्थे आप यत्नतु करशो एवी अमारी नम्र विनति छे

मेसर्जा हीरजी–मुंबाई.

सेठ नवलचंदभाई तथा बहेन मगन बहन,

पृ० श्री माणेकचंदभाईना देह त्यागना अत्यंत दुःखदायक खबर जाणी बहुज दिल्गीरी थई तेओना जेवा सुंदर आत्माओ विरल्ज होय छे तेओना जवाथी आप तो कुटुम्बरत्न गुमाव्यु छे पण अमारा जेवा सबंधीओए एक पवित्र स्नेही गुमावेल छे अने आखी जैन समाजे एक परोपकारी पुरुष गुमाव्यो छे

तेओना जवाथी आपना कुटुम्ब उपर एक घणोज कारी घा वाग्यो छे, पण देहनी स्थितिज अनित्य होवाथी आपणे ज्ञान दृष्टिए आ खेद विचारी वदवो घटे छे

मनसुखलाल रवजीभाई महेता–अमदावाद.

श्रीमती विदुषी जैनगुणभूषण मगनबाई प्रति जग्गीमलका
धर्मस्नेह पूर्वक जयजिनेन्द्र !

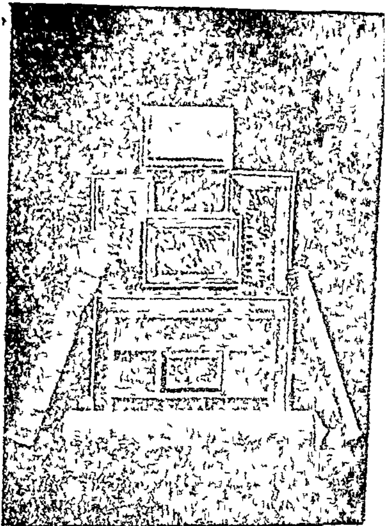
कलके रोज हमने अति हृदयविदारक महान् शोककारक यह अपने भाईयों द्वारा मालुम हुआ कि सेठ माणिकचन्द्रजीका अचानक देवलोक हो गया। अश्रुधारा वह चली, कलेजा कॉप उठा, हे विकराल काल! तूने यह क्या किया? वास्तवमें सेठजी जैन सम्प्रदायमें एक अपूर्व पुरुष थे। इनके गुणानुवाद करना, इनकी कीर्तिको गाना, जैन सम्प्रदायको जो २ लाभ हुए हैं उसका वर्णन करना, मेरी लेखिनीसे बाहर है। इसमे कोई सन्देह नहीं कि आपको और आपकी मातादिको अतिशोकदायक बात है मगर आप तत्ववत्ता हो। संसारकी दशा कैसी निःसार है आप जानो हो इसलिये सब कुटम्बी जनोंको समझाकर सतोषित करें और आप स्वयं भी सतोष प्राप्त करें।

आपका कुशाभिलाषी, **जग्गीमल जैन** ।

परमस्नेही परमविवेकी श्रीमती मगनब्हेन,

सप्रेम सविनय जयजिनेंद्र.

आजे मारे एकदम ओचिंता आपना बापाजीना स्वर्गवास थवाना समाचार साभळी आश्चर्य अने दिलगीरीमा गरकाव थई गया छिए के आ ओचिंतु शु थई गयु! वे दिवसपर तो एमनो कागळ आव्यो हतो ने एकदम शु मादगी थई ने ओचिंतु आ शु थई गयु! आ गमगीर बनावथी आपना कुटुब ऊपर तेम आखा दिगम्बर जैन कोम ऊपर जबरदस्त फटको लाग्यो छे अमे तो एम कहीए छिए आखी दिगम्बरी कोम रडाई छे आपने मेळाप थयो हतो के नहि के श्राविका-



मानपत्रोंके कास्केटोंका ग्रूप।

"जैनविजय" प्रेस-सूरत

श्रममा हता। आपना काकी तथा कीको हाल मुबाईज छे केनी ? शु मादगी अने शु बनाव। कई समज पडती नथी शु शब्दोमा आपने आ दीलगीरी भरेलो पत्र लखशे ते ममज पडती नथी काळनी गति अति विचित्र छे। आजे शु छे अने काले शु थशे तेनी खबर नथी आ ससार अनित्य छे माटे आवे समये धैर्य धारण करवा सिवाय छुटको तो नथी, पण आथी तमारो ज एक आसरो हतो ते विलय थई गयो छे श करीए। भावी बळवान छे आपने पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया हशे ने अमारे पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया छे

मूलचन्द कसनदास कापडिया, सूरत

गगास्वरुप मगनबेहेन,

तमने अने महारे रुबरु मळवानो प्रसग पड्या नथी पण आपना स्वर्गस्थ पिताना साथे माहरे घणो प्रसग पड्यो छे अने मारी विद्यार्थी अवस्थामा आपना पिताए जे कोमना हितार्थे कार्यो करला तेमाना जैन बोर्डींगनो लाभ पण लीधेलो छे एटले हु तेमना उपकार तळे छु

आजना "बोम्बे कोनीकल"मा आपना पिताना एकाएक स्वर्गस्थ थयाना समाचार जाणी घणो खेद थयो मनुष्य कर्माधीन छे ए तमारा जेवा सुज्ञ बेहेनने जणाववा जरूर नथी आपना पिताना मरणथी आपना कुटुबने जे भारे खोट पडी छे तेनु वर्णन करी शकु तेम नथी एटलुज नहीं पण तेमना मरणथी आखी जैन कोम अने मुख्यत्वे करीने दिगम्बर जैन कोम दु खी थई छे जे कोमे आपना पिता जेवा नर पेदा करेला ते कोममा बीजा एवाज नर पेदा थशे एमा शका लाववानी नथी, पण अत्यारे तो आवा सखी दिलोनी खोट जैन कोमने घणी भारे थई छे.

आपना पिताए जैन कोमना त्रणे फिरकाओना हित माटे दि०

जैन बोर्डींग विगेरे योजनाओ करी आपी तेवी योजना करी आपनार विरला नर हालना जमानामा थोडा मळे छे

आ सिवाय पण आपना पिताए घणीज रीते हिन्दुस्तानना जैनोनु भलु करवा अथाग मेहेनत करी छे अने अमारा पालणपुरने पण तेमनाथी बने तेटली मदद आपी छे एटले ते नरने विसरवो घणो मुश्केली भरेलु छे

धार्मिक लागणी साथे पाश्चात्य विचारोने उत्तेजन आपवानु आपना पितानु कार्य घणुज स्तुतिपात्र हतु आ साथे तमो बेहेने दुखी विधवाओने मदद करवानु जे कार्य माथे लीधु छे तेने माटे धन्यवाद घटे छे

छेवटे आपना कुटुंबने माथे पडेल दुखनी अदर हु भाग लेउ छु अने आपने सघाने विनती करु छु के हवे गयाने समारो खेद नहिं करता तेमना पगले पगले चालवाथी घणोज फायदो छे एम मानी ते प्रमाणे चालवा आपनो प्रयास चालु राखशो, ते साथे मारी प्रार्थना छे के तेमना आत्माने शान्ति मळो ।

. कालीदास जशकरण झवेरी, अमदावाद

ग. स्वरुप ब्हेन मगनब्हेन,

आपना परमपूज्य पिताजी, आ शाळाना खरा शुभेच्छक अने दरेक खारा अने जैन समाजना हितना कामना प्रेरक शेठजी माणेकचद हीराचदना अचानक अने अकाल स्वर्गवासना समाचार वाचताज स्वाभाविक खेद थयो हतो आ शाळा उपर एओना उपकारो अपरिमित हता एओश्रीनी प्रेरणाथीज स्वर्गस्थ रा रा लल्लुकरभाईए आ शाळा उपस्थित करवानु बीडु झडप्यु हतु एटले के एओश्री आ शाळाना मूळ उत्पादक हता एम केहेवामा अतिशयोक्ति नथी आ वस्तुस्थितिमा आ दुखद समाचार जाणवाथी अमने सघाने स्वाभाविक खेद थाय एमा काई नवाई नथी.

आपनी न्यातना बाळकोने विद्यादान आपी तमने जन्म जन्मान्तरो माटे सुखी करवाने हिंदुस्थानमा ठेर ठेकाणे एओए बोर्डिंगो स्थाप्या छे एओ आपणी समीपथी स्थल रूपे गया छता आ संस्थाओना रूपमा एओ जाळुने माटे जनसमाजनी समक्ष रहेवानाज जे वखते आपने, आपना कुटुंबने, आपनी कोमने अने दुःखी जनसमाजने एमना समीपनी, शुद्ध भावथी भरपुर बोधनी अने दरेक प्रकारनी मददनी जरूर हती ते वखते दैवे एमना अमूल्य आत्माने आपणी पासेथी झुटावी लीधा छे एओना अकाल स्वर्गवासथी आपने अने आपना कुटुंबने जे मोटी खोट पडी छे ते पूराय तेम नथी आपना पिताजीए शरू करेला शुभ कार्योने खीलववाने जोईए तेटलु मनोबल अने अनुकूलता ए दयाळु विभू आपने तथा आपना कुटुंबी जनोने हमेशा आपो एवी मारी एमने नम्र प्रार्थना छे स्वर्गस्थ शेठजीनो आत्मा अखंड शांति भोगवो ए शुभेच्छाथी आ लांबो कागळ लखेलु छु

लि० शुभेच्छक,

प्राणशंकर लल्लुभाई देशाई।

व्हेरा मुगानी शाळा, अमदावाद

मे शेठजी साहेब, नवलचद हीराचद जोग,

आपना जेष्ठ बधु मे शेठजी साहेब शेठ माणेकचद हीराचदे स्वर्गवास कर्याना एकाएक कमकमाट उपजावे तेवा दुःखदायक समाचार वर्तमानपत्रोथी ओचींता सांभळीने आ फडने जे लागणी थई छे ते तदन अवर्णनीय छे मर्हुम शेठश्री आ फडना एक खरा शुभेच्छक अने एक सलाहकार होवाथी तेओए करेला स्वर्गवासथी फडे एक महोटामा महोटो वगदार सलाहकार गुमाव्यो छे अने आखी जैन प्रजा बल्के मुंबई इलाकामा एक महान दानवीर

दयालू नर गुमावेलो छे ते माटे आ फड जेटली दिलगीरी दर्शावे तेटली ओछीज छे ते सद्गत शेठ साहेबे पोताना निखालस अने मलतावडा उत्तम निरभिमानी स्वभाव वडे समग्र प्रजानी प्रीति सपादन करी हती ते जगजाहेर होवाथी ते महान् परोपकारी सज्ज-ननो दु खदायक वियोग असह्य थई पडे ए देखीतु छे, पण जे काळे जे माइयु होय ते कदी पण मिथ्या थतु नथी एटले जे बाबतनी लगाम परमात्माना हाथमा छे ते बाबतमा आपणे तद्दन निरुपाय छईए माटे जे सुखदु ख माथ आवी पडे ते शात पणे सहन करवु अने मरनारना आत्माने अखड शाति इच्छवी एज आपणु कर्तव्य छे

मर्हुम शेठ श्रीना वियोगथी खेदयुक्त थयेला 'श्री जीवदया-ज्ञान प्रसारक फड' (मुबई) तरफथी हु छु

आपनो नम्र सेवक,

लल्लुभाई गुलाबचद झवेरी

कोष्टक सहानुभूति सूचक तार ओ आए ।

नं०	भेजनेवाला	स्थान
१	दिगबर जैन पचान	गोटेगाव (सी पी)
२	आवनीस दीवान कोल्हापुर	कोल्हापुर
३	महाराजा साहब कोल्हापुर	,,
४	शातप्पा सेठी	मगलोर
५.	सभापति, दि० जैन बोर्डिंग	लाहौर
६.	कछेदीलालजी जैन	जबलपुर
७.	सोहनलाल मा० जैन पंचान	देहेली

नं.	भेजनेवाला	स्थान
८.	अनतराजय्या मा० जैन पचान	म्हैसुर
९	भट्टारक श्री जिनसेनजी स्वामी नादणी	मेंगलोर
१०	अजितप्रसादजी एम ए एलएल बी	लखनऊ
११	रा० ब० दानवीर सेठ कल्याणमलजी	इन्दौर
१२.	सेठ बालचद रामचद मा० जैन पचान	सोलापुर
१३	महाराजा साहब फलटन	फलटन
१४	बाबू धन्नूलाल अटर्नी	कलकत्ता
१५.	रा० ब० सेठ नेमीचदजी ऑ० मजिस्ट्रेट	अजमेर
१६	धूमसिंह जैन मा०	मुजफ्फरनगर
१७	मत्री, नेनाथ लायब्रेरी	आथनी
१८	विद्यार्थीगण, जैन बोर्डिंग	कोल्हापुर
१९	मोतीलाल बशीधर क्लर्क तीर्थक्षेत्र कमेटी	कलकत्ता
२०.	दि० जैन पचान	प्रान्तिज
२१	विद्यार्थीगण, सुमेरचद दि० जैन बोर्डिंग	अलाहाबाद
२२	दि० जैन पचान	सतना
२३	हरनारायण जैन	भागलपुर सिटी
२४	कुमार देवेन्द्रप्रसाद और मा० दीपचदजी	अलाहाबाद
२५.	सेठ बालचदजी अजमेरा	इन्दौर
२६	शिवबचद केशरीमल	गया
२७	शाह गोरधन हरचद	मखिआव
२८	बाबू सुन्दरलाल बैनाडा	झालरापाटन
२९	सभापति दि० जैन सभा	अजमेर

नं.	भेजनेवाला	स्थान
३०.	कालूराम परवार सु०, मा० पा० दि० जैन बोर्डिंग	रतलाम
३१.	दिगंबर जैन पचान	खडवा
३२	डाह्याभाई शिवलाल मैनेजर, बीसपथी उपरेली कोठी शिखरजी	मधुवन
३३	सेठ मथुरादासजी टडैया	ललितपुर
३४	बाबू जुगमदरदास सभापति दि० जैन बोर्डिंग	बिजनौर
३५	प्रो० ए० बी० लट्ठे एम० ए०	कोल्हापुर
३६	सेठ मूलचन्द किसनदास कापडिया	सूरत
३७	पं० घन्नालालजी कासलीवाल	इन्दौर
३८	लाला देवीदासजी, सभापति दि० जैन सभा	लखनऊ
३९	मोरालीटी (Morality)	रंगून
४०	परीख चुन्नीलाल प्रेमानददास	बोरसद
४१	दिगबर जैन पच	बोरसद
४२	जैन मडली	बीजापुर
४३	दिगंबर जैन पचान	आक्लुज
४४	सेठ हीराचद नेमचद दोशी ओ० मजिस्ट्रेट	सोलापुर
४५	रेवचद ऊगनलाल शाह	रगून
४६	लक्ष्मीचद वेलचद	रगून
४७	सेठ माणिकचंद मोतीचद सभापति दि० जैन पचान	सागली
४८	शा हाथीचन्द माणेकचन्द दलाल मा० दि० जैन पचान	सोनासण
४९	बी बी जाधव, सभापति जैन सभा	कोल्हापुर

न.	भेजनेवाला	स्थान
५०	सेठ दालचन्दजी, सभापति, मालवा नीमाड प्रान्तिक सभा,	इन्दौर
५१	दिगंबर जैन पंचान	लाकरोडा
५२	मुंगीलाल पाटनी मंत्री, जैनधर्म प्र. सभा	इन्दौर
५३	दिगंबर जैन पंचान	अमदाबाद
५४	सेठ चुन्नीलाल मुन्नालाल मा० मालवा नीमाड प्रान्तिक सभा	इन्दौर
५५	पं० पीताम्बरदासजी उपदेशक दि० जैन प्रान्तिक सभा	ईडर
५६	मिसिस बापुजी (अजैन)	पूना
५७	बापुलाल काला मा० रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद	इन्दौर
५८	नगीनदास मोतीचंद शाह	माडवी
५९	सेठ गुलाबचंद हीरालाल, सभापति जैन पंचान	धूलिया
६०	सेठ कस्तूरचंद कल्याणमल	इन्दौर
६१	सेठ लूणकरण मदनमोहनजी	उज्जैन
६२	रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी	उज्जैन
६३	सेठ बिनोदीराम बालचंदजी	उज्जैन
६४	पं० धन्नालालजी	इन्दौर
६५	नरसिंगपुरा दि जैन पंचान	कलोल
६६	समस्त दि जैन पंचान घोघा और भावनगर	भावनगर
६७	हुमड पंच समस्त	ईडर
६८	श्रीयुत अण्णाप्पा लंगटे	शाहपुर
६९	समस्त छात्रगण आदि, स्याद्वाद महाविद्यालय	बनारस
७०	श्रीमत सेठ मोहनलालजी	खुरई

नं.	भेजनेवाला	स्थान
७१	रेवचट मगनलाल महेता	वसई
७२	श्रीमान् श्रीमत सेठ पूरनसावजी	सिवनी
७३	बापीची (Bappiche)	पेरिस (फ्रान्स)
७४	दिगवर जैन पचान, शातिनाथ मदिर	झालरापाटन सिटी
७५	समस्त जैन पचान	वर्धा गज
७६	समस्त जैन पचान	बडौत
७७	बाबू देवीसहायजी हेड एकाउन्टट	बडवानी
७८	जैन समाज	झासी
७९	नेमचन्द रवचन्द मत्री, दि० जैन हितवर्धक सभा	ईडर
८०	मत्री, मालवा प्रातिक दि० जैन सभा	बडनगर
८१	सिंघई नाथुरामजी मा० दि० जन पचान	नरसिंगपुर
८२	समस्त जैन पचान	कानपुर
८३	सेठ येसुसिंघई सोनासिंगई	अजनगाव
८४.	चौतर कन्नम सेठी	मूडबिद्री
८५	जैन पचान, वेलगाम, शाहपुर और होसुर	शाहपुर
८६.	जैन फ्री लायब्रेरी	माटवी
८७	मुलामचन्द जैन मा० जैन कुमार सभा	गोटेगाव
८८	जैन कुमार सभा और हितोपदेशिनी सभा	बीना
८९.	सिंघई फतेहलालजी, सभापति, जैन पंचान	मुरवाडा
९०	दि० जैन मडली	कपडवज
९१	सेठ जुगराजसाव कुवरसाव	सिवनी
९२	जैन सिद्धान्त प्रचारिणी सभा	मोरेना



कितनेक शोकजनक तार।

Sorry Shethaji died My sincere condolence with your family May Jineshwar bless noble soul of Shethaji

JINSEN BHATTARAK
Swami Nandni, Kolhapur

Sorry to learn Maneckchand's death Convey my sincere condolence to Nabibai on the sad bereavement

CHIEF OF PHALTAN (फलटणचे महाराजा)

Pandita Maganbai,

Offer sincere sympathy for your father's death whom I always admired for his public charity and philanthrophy

MAHARAJAH of KOLHAPUR

Offer hearty condolences for death of Manik Shet, who was a great benefactor of Jains of India

ABNIS DIVAN of Kolhapur

Dhannoolal, Parmestidass, Dayachand, Padamraj, Durgaprasad, Baldeodass, Birdhichand and others much shocked and aggrieved at sad news of Danbir Manakchand's death which caused irreparable loss to Digamber Jain com-

munity and offer sincere condolences to his generous widow, noble, daughter son and family members

DHANOOLAL—Calcutta

Extreamly sorry for sudden death of Sheth Maneckchandji By this Digamber Jain community has become without leader

MOOLCHAND KASONDAS KAPADIA, Surat

Deepest condolences of myself and Jains of Southern Maratha Country in your sad bereavement

A B LATHE M A., Kolhapur

Jain Community of Dhulia have heard with deep sorrow the death of Danavir Sheth Maneckchand Hirachand In him we have lost a prominent leader and sincere worker of Jain Digamber Community We offer our sincere condolence and sympathy to you and all family for sad death of Sheth Maneckchand

GULABCHAND HIRALAL, Dhulia

On behalf of Sangli Jain Community I beg to offer our most respectful and heartfelt-sympathy on the sad and untimely death of Sheth Manickchand and pray that God may give you

and your family strength and fortitude to bear this irrecoverable loss I shall ever remember the great services benevolently endured by Shett to the Jains

MANICKCHAND MOTICHAND, Sangli

Jains in Mysore assembled at special meeting learnt with profound sorrow the demise of Sheth Manickchand, offer their heart-felt condolence to his family in their sad bereavement

ANANTRAJAIYA, Mysore

I mourn deeply Maneckchand Sheths death post dignified phillanthrophist

REVCHAND CHHAGANLAL, Rangoon

Deeply grieved at the suddun death of Shethji an irreparable loss to jain community.

HARNARAIN JAIN, Bhagalpur City

शोकजनक कविताएं।

रंज ! शत रज !! सहस्र रज !!!

मर गये जगमें मनुष्य, जो मर गये अपने लिये।
पर व अमर जगमें हुए, जो मर गये जगके लिये ॥ १ ॥
जो उपजता सो विनशता, यह तो जगत् व्यवहार है।
पर देश, जाती, धर्महित, मरना यही जग सार है ॥ २ ॥
श्रीमान् अरु धीमान् राजपुरुष लोकमान अनेक है।
पर सेठ माणिकचन्द सा, दिखता मुझे नहीं एक है ॥ ३ ॥

वह सेठ माणिकचद हीराचद जे पी है नहीं ।
वह वीर दानी जैन कुलभूपण कहीं दिखता नहीं ॥ ४ ॥
चववीससो चालीस श्रावण कृष्ण नवमी दु खमई ।
जिस रैन माणिकचद विछुडे हा ! दियो क्या दु ख दई ॥ ५ ॥
वह अधकी थी लाकडी अरु रककी पूजी हुती ।
धर्म जाती उन्नतीके कुलुपकी कुनी हुती ॥ ६ ॥
घाटा अरब दीनारका श्रीमान् कुछ गिनते नहीं ।
पर एक कौड़ी रक खोकर दु ख सह सके नहीं ॥ ७ ॥
वे शिर उठा देखें जहा दिखता वही अधकार है ।
अंध खोई लाकडी हा ! दु खका क्या पार है ॥ ८ ॥
शोक भू फटती नहीं जाते समा उसमे कहीं ।
दुर्दैव प्रेरित जनों अब आश्रय दिखता नहीं ॥ ९ ॥
आश्रय जिसका जहा जब दीन जैनोंने लिया ।
तब काल निर्दयीने वहा ही आनकर पीछा किया ॥ १० ॥
उन्नती जात्यऽह धर्मके कुछ कार्य जिसको सौपकर
सो रहे थे जैन सारे हिन्दके हो बेफिकर ॥ ११ ॥
तब काल रक्षक पुरुपको ले गया इकला पायकर ।
सोते हुए ये लुट गये हे नाथ ! इनहिं सहाय कर ॥ १२ ॥
यह वज्रपात हुआ अचानक हाय प्रभु अब क्या करें ।
सच्चा हितैषी रतन खोकर किस तरह धीरज धरें ॥ १३ ॥
पर रुके नहीं होनी कभी होत अन होनी नहीं ।
यह जानकर धीरज धरो जो उपजना विनशे वही ॥ १४ ॥
अरु शोक क्या है सेठका वे सुख शाति पायँगे ।

घरघरके हम हो जायगे कहो कौन हमहिं अगायगे ॥१५॥
क्या मर गये है सेठजी ? नहिं वे अमर भूपर भये।
अदृश्य उनको देखकर ही लोग कहते मर गये ॥१६॥
महिमा उन्हींके दान पुण्यऽरु शाति सरल स्वभावकी।
घरघरमे गायी जा रही है उन्नतीके चावकी ॥१७॥
ये सभा बोर्डिंग आश्रम चटशाल जो हे दिख रहे।
सो सब उन्हींकी सौम्य दृष्टिसे अनहु लहरा रहे ॥१८॥
अब नाथ! ऐसे नरतनके आत्माको शाति दे।
अरु कर सनाथ हमहिं प्रभो! उत्साह अरु सद्बुद्धि दे। ॥१९॥
दुखित कुटुम्बी जनों अरु जैनोंको हे प्रभु! धैर्य दे।
दीप शाति दे प्रभु ' नित शाति दे, नित शाति दे ॥२०॥

शोकग्रसित—

मास्टर दीपचदजी परवार, नरसिंहपुर (C P)

शेठ माणेकचदजीना विरहनी वेदना।

अरर दवर, आ ते शु बन्यु, माणेकचदनु मृत्यु तो थयु,
जैन कोमनुं भूषण तो गयु, रत्न एवु का खरे ना रह्यु १
हिंदनो दीवो अस्त तो थयो, तिमिर कोममा व्यापीने रह्यो,
अखिल कोमना हृदय फाटीया, नेत्रसरीतथी अश्रु तो झर्या २
मेत्र नृपतिए, दृष्टि तो करी, एना शबपरे मौक्तिकी खरी,
स्वर्गलोकमा वास तो कर्यो, ससार त्यागीने सुखथी रह्यो ३
तुज विरह तो, ना खमायरे, एकवार तु दृष्टि फेंकरे,
अत प्रार्थना, एटलीज हवे, प्रभु तेमने शाति आपजे ४

अजब कोप दैवे आ कीधो रत्न जैन लीधुं हारी,
धर्मी प्राणीना प्राण हर्या छे, घा दीधो तें बहु कारी १
अखील कोम आ रुदन करे छे, नर बच्चाने कारणरे,
धन्य धन्य माणेकचंद तु ने, धन्य छे तुज माताने २
गरीब विचारा बाळकने तो, सहाय करीने सुख दीधा,
विद्यारूपी दानज दीधु, पुत्र रूप मानीज लीधा ३
बाळको ते रुदन करे छे, अम सहायक तें शीद गयो,
माणेकचंदे विश्वज मुक्यु, फानी ने ते स्वर्ग गयो ४

शोकोद्‌गार।

अहा दैव! तु छेकज निर्दय, केर कारमो गजब कर्यो,
झपट मारीने झड़पी लीधो, लेश नहिं तुं हृदय डर्यो॥
हतो हीरलो नायक नृरत्नम, तेर लक्ष जैनोमा जे।
खोळी खोळीने लीधो खुबवी, जड्यो नहिं शु बीजो के?
दिगंबरीमा दीपक सरखो, हतो वीर ए माणेकचंद।
कोम डुबेली तारी लाववा, धार्यो हृदये रुडो छंद॥
केळवणी दई कइक ताररया, बांधी बोर्डिगो बेस कर्यु।
दया लावीने दिलमा अनहद, दीन दु खी दु ख दूर कर्यु,
विधवा अबला बालक केरा, कष्ट निहाली काप्यो जे,
तेवा परदुःखभजन नरने, जतो मुक्यो ना जमडा तें
दानवीर हिंमतपुरण जे, काळ खरे तें कर्यो गुलाम,
काळ सुणी कपे अम दिलडा, शु सरीयु यम तारु काम?
पण एमा शु वाक ताहरो, खुट्यु तेल दीप अस्त थयो,
गयो गयो पण रही सुकीर्ति, जीवन सुयश झलकावी गयो.

जीवणलाल कसनदास कापड़िया—सूरत.

शेठ माणेकचंदजीनो विरह

शार्दुलविक्रीडीत छंद

आ संसार असार म्हाय भरती ने ओट दीठा घणा,
जेणे हर्ष विषादने सम गण्या गर्वे न जेने हण्या
सादा शांत दयाळ दान गुणथी दीप्या क्षधा देशमां,
ते पथी माणेकचंद चंद्र अथम्यो हा हा थयो लेशमां

(नेडो भाई बुडतो तारो रे अने आइ पार उतारोगे-ए राग)

गयो वीररत्न स्वधामे रे, शेठ माणेकचंदभाई नामेरे
विक्रम संवत ओगणीशेने, सीत्तेर वेरी साल,
अषाड वदी नोमने दीने, शेठ गया करी काळ-गयो १
तारथी माठी खबर ज्या पहोंची, गाम सुरत शहेर,
हाहाकार पडी हडहालो, वरतायो बहु केर-गयो २
लोक कहे गयो गरीबनो बेली, निराधार आधार,
धर्मनो धोरी गयो अहींथी, हा रूठयो कीरतार-गयो ३
शांत सरळ सादा सोभागी, गंभीर निर्मळचंद,
विद्या विनय विवेकी थशे कोइ, विरला माणेकचंद-गयो ४
सत्य क्षमा शील सत्वथी शोभीत, काया कंचनवान,
लक्षण लक्षीत अंग सुकोमळ, लेश नहि अभिमान-गयो ५
युगळ सम कर ढींचण सुधी, रेखा युक्त विशाळ,
शरद शशिसम मुखनी शोभा, तेजे तपे शुभ भाळ-गयो ६
नाशिका कर्ण ने नेत्र अनोपम, कोमळ हृदय विशाळ,
भाग्यशाळीना चिन्ह हता सौ, सफळ थया तत्काळ-गयो ७

गजगति गेले चाल हती जस, वाणी अमीरस पुर,
वदन सरोवरथी फूल खरता, बोलना बोल मधुर–गयो ८
गरिब कुटुंबमा सुरत गामे जन्म्या हता महाभाग्य,
पडती ने चढ़ती दीठी आ भवमा, धिरज न करी त्याग–गयो ९
भाग्य उदयथी वधी संपत्ति, दर्ष्यो क्षमा परे भाव
सज्जन संगथी हर्ष शोकमा, रह्यो सदा समभाव–गयो १०
राज्य प्रजानो मित्र शुभेच्छक, देश स्वजातिनो मित्र,
क्या गयो जैन जवाहीरमाथी, हीरो अमुल्य पवित्र–गयो ११
अकस्मात् ए पुरुषना मरणे, वर्त्यो बधे हा–हा–कार,
स्वजन ने परजन रुदन करे बहु, क्या गयो दीनदातार–गयो १२

ललीत छंद

अरर दैव तें, कोन शो कर्यो, गरिबनो खरो आशरो हर्यो,
सकल सज्जनो मित्र क्या गयो, अरर चंद तुं चालतो थयो १
विकट आ समे क्या गयो अरे, परम मित्र तु प्राण सहरे,
धरम धामना काम क्या थशे, तीरथ वाळवा कोण दोडशे २
विरह ताहरो ना खमायरे, तुज वियोगथी खेद थायरे,
पलक एकमा प्राण जायरे, धरम ध्यानमा मौन थायरे ३
अमर आतमा क्लेषथी शम्यो, शरीर धर्मथी मिन्नय रम्यो,
नियम कालनो ना कदी फरे, जनमनार ते प्राणीयो मरे ४
सफल जन्म तो तेहनो खरो, सुकृत पथमा जेह सचर्यो,
जगतमा रह्यो जीवतो खरे, विजय वावटो विश्वमा फरे ५

H. V.



सेठजीके लघु भ्राता सेठ नवलचंद हीराचंदजी

शोक सप्तकम्।

न्यपतत्किमु हाशनिर्गिरीशे चपला स्फटिकमंदिरेऽमले वा।
अथवा हिमसहतिर्विकाले फलसपादकभूतलेऽनुकूले ॥ १ ॥
ननाशमतोपकोऽमृताशुर्यदि वार्कस्तिमिरापहा गृहीत।
नेयतोऽद्यराहुणा यमेन प्रहतो **माणिकचंद्र** एप मेश ॥ २ ॥
नेहता यमनाथ भूरिवोवा शुभसपन्निधय पुरा प्रभूता।
नृपत्न तथापि रे खलेय विहिता जातिरपि त्वयाद्य दीना ॥ ३ ॥
चुरानवत्रोधसौरभासा चिरसतापित एप जैनलोक।
रिशातिभियाय यस्य मूले क्षितिज त्वा परिलोचयामहे क? ॥ ४ ॥
णमाल ! विनम्रभालजातिर्न हि चक्रे परिभूपण पर त्वा।
णमानडभारतीयराज्य पद **जे० पि०** प्रतिदानतोऽपि भूय ॥ ५ ॥
मतोपि सुदर्शन यदीय विविधेहाकुलितक्षणान्मनुष्यान्।
णपत्रविलवित्राहुशाव शुभकल्पद्रममाप्नुप कुतस्त्वाम् ॥ ६ ॥
वनविग्रहमानसेपु केचिद्भुवि जाता विकलेन कार्यका प्राक्।
सकलेन वलेन किंतु धीमन्नजनि त्वा परिलोचयामहे क? ॥ ७ ॥
अनियमपन्निधनाकुल त्वत्कथचनात्रोधिमन परत्र।
त्वमेहि शातिं तव यातु वश्या शुभाभिवृद्धिं ननु कामना न ॥

काशीस्थ विद्यार्थिसप्तक।

भावार्थ-हाय! क्या यह पर्वतपर वज्र गिरा? या निर्मल स्फटिक-मन्दिरपर विजली गिरी? अथवा वृक्षोंके फलनेका अनुकूल समय आनेपर उनपर हिम समूहने गिरकर उन्हें जला दिया? ॥१॥

जैसे मलिनात्मा राहुने लोगोंको सुख-शान्ति देनेवाले चन्द्रमाको या अन्धकार नष्ट करनेवाले सूर्यको ग्रसा हो, उसी तरह सेठ माणिकचन्द्रजी निर्दय काल द्वारा ग्रसे गये ॥२॥

पापीकाल! तू पहले बडे बडे ज्ञानी और बुद्धिमानोंको अपना ग्रास बना चुका है, तब भी तुझे सन्तोष नहीं हुआ, जो आज तूने सेठ माणिकचन्द्रजीको हरकर सारी जातिको भिखारिणी बना दिया? ॥३॥

जैनससार बहुत समयमे अज्ञानरूपी भयकर गर्मीसे सतप्त हो रहा था। भाग्यहीसे उसे सेठ माणिकचन्द्रजी सरीखे शीतल-वृक्षके नीचे आकर शान्ति मिली थी। हाय! उसे अब हम कहाँ देखेंगे? ॥४॥

हे गुणाकर! इस विनीत जातिहीने आपको अपना भूषण नहीं बनाया, पर गुणियोंका आदर करनेवाली भारत सरकारने भी जे० पी० का पद प्रदान कर आपका उचित सम्मान किया! ॥५॥

अनेक प्रकारकी वस्तुओंको देखनेकी इच्छासे असन्तुष्ट नेत्रोंको जिसका सुन्दर दर्शन सन्तुष्ट करता था, उस श्रेष्ठ कल्पवृक्षको अब हम कहाँ प्राप्त करेंगे? जिसके पत्रकी जगह तो आपके गुण थे और उँगलियोंकी जगह हाथ ॥६॥

सेठ साहब! ऐसे तो बहुत लोग हो चुके हैं, जो किसीने धनको, किसीने शरीरको और किसीने मनको समाजके हित लगाया, पर उन सबमें आप एक ही हुए जो आपने अपना तन, मन और धन समाजके लिये अर्पण किया। हाय! आप जैसे पुरुष रत्नको अब हम कहाँ देख पायँगे? ॥७॥

हे दयासागर! आपकी मृत्युसे हमारे अशान्त मनको किसी तरह समझाना ही पडेगा। (क्योंकि उसके लिये सिवा इसके कुछ गति ही नहीं है)। अन्तमें हम चाहते हैं कि आपका पवित्र आत्मा शान्ति लाभ करे और आपका कुटुम्बवर्ग भी सुखी हो।

काशीके सात विद्यार्थी।

शेठ माणेकचदजी यांचा निधनजन्य विलाप

(चाल-चन्द्रकात राजाची)

स्वानिजोद्भिज (ज) तिर्यञ्च-मनुज हे कोटि-चतुष्टय कीं।
असे तया सकलांत श्रेष्ठ परि मानव इहलोकीं॥ ध्रु

दुर्लभ ही मानव-तनु लाधे पुण्यबलें जीवा।
  शांत, सदय, अव्यग्र असा नरदेह सौख्य-ठेवा॥
उच्च वस्तु न्यूनतर पावती नीच बहुत जगतीं।
  मनुज, रत्न, गुण, धर्म असो सकलांचि हीच रीति॥
अखिल जीवसृष्टीस अभयकर श्रेष्ठ दयाधर्म।
  उच्चस्थानीं तया ठाव जा धर्म मूर्त-शर्म॥
सत्य सनातन अनुपम सुंदर परम धर्म ऐसा।
  असे अहिंसा प्रमुख जयामधिं जैन धर्म खासा॥
प्रसिद्ध श्रावक विशुद्ध विलसे भुवनीं इंदुपरी।
  निपजे "**नर-माणिक्य**" तयामधिं वर्णवे न थोरी॥
लक्ष्मीचें चिरनिवास-स्थानचि **मुंबापुरि** नगरी।
  भरतभूमि भूषण इहलोकीं मानव-इंद्रपुरी॥
पूनित केली **सुरत** भूमिका जन्मा येवोनी।
  विराजिती मुंबापुरिमाजी **माणिक** गुणखाणी॥
दानवीर महशूर असा माणिकचन्द्र श्रेष्ठी।
  औदार्य शृंगारिलि अक्षय अखिल जैन-सृष्टि॥
दिधली पुष्टी धर्म तरूने धनबल भक्ति जलें।
  शांतिवायुनें आम्रराज्य तो स्वातंत्र्यें डोले॥
अतिशय सिद्धक्षेत्रें तीर्थें तदीय शक्तीनें।
  विराजिती वहरात फुललि कीं धर्म-द्रुम-सुमनें॥
ठायीं ठायीं विद्यासदनें जैनशिशुस्तव तीं।
  स्थापुनि केली सफल भारती जिनविद्योन्नति ती॥
चिरशिवदायक, भेषजमंदिर, विद्यार्थी-सदनें।
  रुग्णमंदिर, चैत्य उठविले, मूर्तिमंत पुण्यें॥
आदिल हिंदु पायस्था सुंदर धार्मिक नव शाला।
  स्थापियल्या बहु प्रमुख शोभते '**हिराबाग**' अतुला॥

पापीकाल ! तू पहले बडे बडे ज्ञानी और बुद्धिमानोंको अपना ग्रास बना चुका है, तब भी तुझे सन्तोष नहीं हुआ, जो आज तूने सेठ माणिकचन्द्रजीको हरकर सारी जातिको भिखारिणी बना दिया ? ॥३॥

जैनसमाज बहुत समयसे अज्ञानरूपी भयंकर गर्मीमे सतप्त हो रहा था। भाग्यहीसे उसे सेठ माणिकचन्द्रजी सरीखे शीतल-वृक्षके नीचे आकर शान्ति मिली थी। हाय! उसे अब हम कहाँ देखेंगे ? ॥४॥

हे गुणाकर ! इस विनीत जातिहीने आपको अपना भूषण नहीं बनाया, पर गुणियोंका आदर करनेवाली भारत सरकारने भी जे० पी० का पद प्रदान कर आपका उचित सम्मान किया ! ॥५॥

अनेक प्रकारकी वस्तुओंको देखनेकी इच्छासे असन्तुष्ट नेत्रोंको जिसका सुन्दर दर्शन सन्तुष्ट करता था, उस श्रेष्ठ कल्पवृक्षको अब हम कहाँ प्राप्त करेंगे ? जिसके पत्रकी जगह तो आपके गुण थे और उँगलियोकी जगह हाथ ॥६॥

सेठ साहब ! ऐसे तो बहुत लोग हो चुके हैं, जो किसीने धनको, किसीने शरीरको और किसीने मनको समाजके हित लगाया, पर उन सबमें आप एक ही हुए जो आपने अपना तन, मन और धन समाजके लिये अर्पण किया। हाय! आप जैसे पुरुष रत्नको अब हम कहाँ देख पायँगे ? ॥७॥

हे दयासागर ! आपकी मृत्युसे हमारे अशान्त मनको किसी तरह समझाना ही पड़ेगा। (क्योंकि उसके लिये सिवा इसके कुछ गति ही नहीं है)। अन्तमें हम चाहते हैं कि आपका पवित्र आत्मा शान्ति लाभ करे और आपका कुटुम्बवर्ग भी सुखी हो।

काशीके सात विद्यार्थी ।

शेठ माणेकचंदजी यांचा निधनजन्य विलाप

(चाल-चन्द्रकात राजाची)

खानिजोद्भिज (ज) तिर्यञ्च-मनुज हे कोटि-चतुष्टय की ।
असे तया सकलात श्रेष्ठ परि मानव इहलोकीं ॥ ध्रु

होइल कवण तयाचा नेता।
खुलविल धर्मविभव तें आता ॥
मालाकाराचि तो धर्मतरूचा गेला।
जनिं हाहा काराचे पडला ॥ २ ॥
शोकविकल-**गणपत सोमाजी काळे**-चिनावलकर.

विरह विलाप।



(राग मरशिओ)

रेहाय ! केम, आज स्हेशे जैनो आ रडापो।
स्हेशे, जैनो आ रडापो,
प्रभु शान्ति **माणेकने** आपो-**रेहाय०** १
मानवता मुंबाईमा गणाय, शहेर सुरतना वतनी जणाय,
कहेता उठे छे अतरमा ल्हाय-**रेहाय०** २
अशाड कृष्ण नवमी केरी रात्रि, बार उपर एक कलाक जाते,
वार गुरु सीत्तेरनी राते-**रेहाय०** ३
कीधो शान्तिथी स्वर्गे जई वास, पड्यो भारतमा भारे आ त्राश,
काळे कीधो **कोहीनूर** नाश-**रेहाय०** ४
आश्रम, शाळाजनो दु:खी भारी, सुणी चोंक्या छोडी देई वारी,
त्राहे त्राहे करे नर नारी-**रेहाय०** ५
मित्रो सबंधी कुटुंब रुवे, आंख चोधारा आंसुड चुवे,
जैन ज्ञाती सुखे नव सुवे-**रेहाय०** ६
पाळक पुत्र **जीवणचंद** मेली, पुत्री **मगन, तारा** दूर ठेली,
जैन ज्ञातीनो कोण हवे बेली-**रेहाय०** ७

व्याख्यानालय, सभामडपा, जिनकन्याशाला ।
श्राविकाश्रमा स्थापुनि केल्या सस्कृत जिनशाला ॥
विद्यार्जनार्थसाह्य देउनी तुष्टविलें छात्रा ।
भाविक सुजना सवें घेउनी भूषविल्या यात्रा ॥
निखिल भारत जैन जनपद परिचय-ग्रथाला ।
श्रमुनी केलें पूर्ण ' दिगंवर जैन डिरेक्टरिला ' ॥
स्थापियलें त्या विद्वद्-रचिता काशिपुरिमाजी ।
' स्याद्वाद महाविद्यालय ' जिनवाणी ती गाजी ॥
प्रामाणिक माणिक आणिक या लोकि न नर कोणी ।
जे पी पदवी अर्पि तयातें अवनिपाल वाणी ॥
शात, सरल, अतिप्रेमळ सर्वप्रिय नच लव मानी ।
आप्त, जाति, साधर्मि, देशजन स्वकीय स्वच मानी ॥
करुनी स्वोन्नति, जात्युन्नति, धर्मोन्नति देशाची ।
सेवा करुनी मेवा मिळवी ठेवाचि पुण्याची ॥
यापरि वेंचुनि कायावाचामनें धनें आयु ।
विद्याहाराभयभेषजदानें हो चिर-आयु ॥
झाले सुरवर माणिक स्वर्गी गेले वा मोक्षीं ।
शात जाहला तदीय आत्मा सुकृतें तीं साक्षी ॥१॥

(चाल-आजि अक्रुर हा)

आजि अवचित हा जैनसुकृतनिधि संरला ।
माणिक्यचद्र मावळला ॥ ध्रु० ॥
ती प्रेमाची धर्मचद्रिका साची ।
जाहली नष्ट कीं अमुची ॥
जिनवाणीचा मेघाचि बोघसुधेचा ।
विगुळला जैनहृदाचा ॥ चाल ॥
भरविल धर्मसभा कणि आता ।

होइल कवण तयाचा नेता।
खुलविल धर्मविभव तें आता ॥
मालाकाराचि तो धर्मतरूचा गेला।
जनि हाहा काराचे पडला ॥ २ ॥
शोकविकल–**गणपत सोमाजी काळे**–चिनावलकर.

विरह विलाप।

(राग मरशिओ)

रेहाय! केम, आज स्हेशे जैनो आ रडापो।
स्हेशे, जैनो आ रडापो,
प्रभु शान्ति **माणकने** आपो–**रेहाय०** १
मानवता मुम्बाईमा गणाय, शहेर सुरतना वतनी जणाय,
कहेता उठे छे अतरमा ल्हाय–**रेहाय०** २
अशाड कृष्ण नवमी केरी रात्रे, बार उपर एक कलाक जाते,
वार गुरु सीत्तेरनी राते–**रेहाय०** ३
कीधो शान्तिथी स्वर्गे जई वास, पड्यो भारतमा भारे आ त्राश,
काळे कीधो **कोहीनूर** नाश–**रेहाय०** ४
आश्रम, शाळाजनो दु खी भारी, सुणी चोंकया छोडी देई वारी,
त्राहे त्राहे करे नर नारी–**रेहाय०** ५
मित्रो सम्बधी कुटुम्ब रुवे, आख चोधारा आसुज चुवे,
जैन ज्ञाती सुखे नव सुवे–**रेहाय०** ६
पाळळ पुत्र **जीवणचंद** मेली, पूत्री **मगन, तारा** दूर ठेली,
जैन ज्ञातीनो कोण हवे वेली–**रेहाय०** ७

जैन समना स्थंभरूप स्वामी, शिक्षण संस्था पिता गीरनामी,
भारत प्रजा वियोगे दु:ख पामी–रेहाय० ८
जैन शासन शान्ति सदा आपो, आवी आफत टीलाशाथी कापो,
करो दूर प्रभु परितापो–रेहाय० ९
हाथीचन्द्रनु हृदय बळे छे, स्मारक फंडनी अपील करे छे,
भावी बनता काळ बने छे,
रेहाय केम आज स्हेशे जैनो आ रंडापो० १०
वियोगी–हाथीचंद माणेचंद–सोनासण।

निर्दय काळने ठपको।

गझल–कवाली.

अरे न गुणा! अरे निर्दय! अदेखा काळ शुं कीधुं ?
अमे भूल्या तणु भाणु, भरेलु तें लई लीधु–अरे० १
साखी–चार दई वासेठने, लेवा बेठो हाल,
पाट्ट मारी पतितने, जरी न आवी व्हाल
रतन आ रकना करथी, अचानक छीनवी लीधु–अरे० २
साखी–अभागीओ आ देश छे, अभागणी आ कोम,
हीगे हस्त थकी गयो, उकळे रोमे रोम
हता मगरूर जे नरथी, उडी गई ते बधी आशा–अरे० ३
साखी–खीलता पहेल टोलर कळी, पवन झपाटा साथ,
ढळी पडी पृथ्वी परे, दई न शक्यो को हाथ
हवे ए पुष्पनी सुरभी, मळे क्याथी अमोने ते–अरे० ४
साखी–पुनर्जन्म लईने अही, करजो पूरण आश,

ज्या हो त्या सुख पामजो, व्हाला माणेकचंद
हती ए रत्ननी प्यासा, पञ्चा अरुळा वगा पामा-अरे० ५
मोतीलाल बी० मालवी-नाकरोल.

दानवीरनो स्वर्गवास.

(काळने ठपको)

ओचींती आफत शु! आ, स्वप्नमाके शुद्धिमा तु?
मायेरु "माणेक" मारू, गयु केम हाथथी?
काळ विकराळ ता, लज्जा जरी आवी नहि,
हिंदना **हीरानो** तन, झाल्यो केम अडपथी?
सवत मीतेर ओगणीश, केरी साल्मा शु?
अषाड आरी नवमीए, केम आवीओ?
जैन कुल जाति कुल, दानवीर जे पी हरी,
दीपक बुझाव्यो जैन कोम रडती करी १

(यक्षदेवे कहेली आगाही.)

चैत्रमा चळाव्यु मेत मायेरो **माणेक पिता,**
पर्युषण व्हेला जई, स्वर्गमा सीधावशे!
पण मे तो मान्यु नहि, खोटो आ आभास थाय,
आनु याद लावी शाने, दील्ने दुखाववु?
बीजीवार कीधी वात, जाणी गई नहि रात,
पत्र ते लखाय केम? ध्रुजे तन तापथी,
भाद्रवे भूलावी वात, प्रीतिमाही कीधो घात,
दैव यक्षराज तीथि, आपवामा शु डर्यो? २

(सुप्रसिद्ध कार्यो)

बोर्डिंग ने हीराबाग, मुबाइमा भावे कर्या,
 जुबेली, मदीर, श्राविकाश्रम ज्या शोभता,
चंदावाड़ी सुरतमा, कन्याशाळा, पाठशाळा,
 कोल्हापुर, काशी, उदेपूर माही ओपता,
" राजनगर " बोर्डिंगने, दवाशाळा, धर्मशाळा,
 पक्षपात वीण नरनारी, बहु शोभतां,
कथे हाथीचद्र जैन, जातिना मुगटमणी,
 रुदन करे छे हिंद, वियोगना तापथी ३
ककर समान द्रव्य, **लक्ष दश** दीधा दाने,
 हिंदना हाकेमोमा, प्रसिद्धी बहु पामीया,
मारवाड, मेवाड ने गुर्जर, दक्षिण देशे,
 कोन्फरन्स सभामाही, जाणे झट आवीआ,
पाठशाळा, ज्ञानशाळा, भूवन ने आश्रमोमा,
 लक्ष्मिनु देई दान, सज्जनोने भावीआ,
कथे हाथीचद्र मारा, तुरगोने आपी मान,
 हठीसत्र क्ही मने, प्रेमथी बोलावता ४
जैनोना प्रमुख प्यारा, बोर्डिंगोना पिता व्हाला,
 कमिटी मीटींग माहे, क्यारे हवे आवशो ?
कुधाराओ तोडवाने, सुधाराओ जोडवाने,
 केशरी समान फरी, क्यारे शीख आपशो,
धर्म, अर्थ, काम माट, धार्गी कर्या ध्राटठाठ,
 स्वर्गे सीधाव्या नाथ, असार ससारथी,

कथे हाथीचद्र मारा, शीरोमणी शाणा शेठ,
टीननी उच्चारी वात, क्यारे दीले लावशो ? ५
हीराबाग वेठकमा, मीटींग भरेली रहे,
देश ने विदेशना, भावे पधारे भेटवा,
रीद्धिमा कुबेर सम, **दान** कर्णराय सम,
बुद्धिमा अभयकुमार, प्रेमथी पधारता,
पडितोनो सुणी पाठ, प्रश्न पूछे प्रेमे करी,
समाधान थाए पछी, शान्तिए सीधावता,
कथे हाथीचद्र मने, बतावो माणेक पिता,
जैन जाति उन्नतिना, रसता बतावता ६
शान्ति सम दयावान, **दुकाळमा** दीधा दान,
ठामठाम गामगामे, धाम वन मोकल्या,
कमीटी सभाओ स्थापी, देशोदेश ज्ञान आपी,
उंघथी जगाडी कोम, झाली रुडा हाथथी,
श्रीमतोने स्थान आप्या, **पंडितोने मान** आप्या,
दरिद्रना दु ख काप्या, खरी खरी खतथी,
कथे हाथीचद्र थयु, वियोगे विशेप दु ख,
मेळाप थयो न मने, पूरवना पापथी ७
मदिरनी अदरमा, भावे जिनराज भजो,
पास आवे तेने बहु, प्यारथी बोलावता,
देईने **सुपात्र दान,** मनुष्य मात्र देई मान,
वाणिज्य विद्या तणेरी, नीतिने बतावता,
शुनिव्रष्टि **जैन ग्रंथ,** प्रीते त्या पढावा पथ,

जैनना व्हेवार माटे, प्रयत्न कर्यो प्रेमथी,
डिरेक्टरी, धवलजय, धार्मिक नैतिक ग्रथ,
भडारो खूलावीने, छपा या रुडी छापथी ८
उची डीग्री आपवाने, बाळ दुःख कापवाने,
स्कोलरशीप स्थापवाने, कोण व्हारे आवशे ?
ग्रेज्युएट गणवामा, विदेशे चढावबामा,
हाम दाम काम आपी, कोण दुःखो कापशे ?
तीर्थोना तोफान बुरा, आप विना कोण पुरा,
हाल रह्या जे अधुरा, सलाह कोण स्थापशे ?
कथे हाथीचद्र सदा, शान्ति, अविनाशी सुख,
प्रेमे परम आनंद, जिनराज बहु आपशे ९
समेद, पावन, चंपा, पावा, गज, तारगाने,
तुगी, मागी, बद्रीजैन, आदिनेक भेटीआ,
दान तणु देई दान, **तीर्थोना सुधार्या स्थान,**
आपी मान खोली कान, वेगे व्हेला आवीआ,
ज्ञान रुडुं आपवाने, तिमिरने कापवाने,
उपदेशको घेर घेर, खर्ते बहु फेरव्या,
मासिक, ने पाक्षिक, पत्रो कढावीया,
स्वर्गे सीधावी बहु, शान्ति जई पामीआ १०
लघुभ्रात, **नवलभाई,** के पुत्र जीवणचद्र,
तारा, रत्न, टाकोरने [illegible] सदा अ[illegible]
व्हेन मग्न, तारा व्हे [illegible]
दिलासो देईने प्र[illegible]

शीरोमणी शेठतणी, अंतरमां थाय याद,
परमेष्ठी उच्चारे पत्र एवी बुद्धि आपजो
कथे **हाथीचंद्र** बधु, " स्मारक खोली फंड, "
नामना अमर करी, कीर्तिने दीपावजो ११

वियोगी–**हाथीचंद माणेकचंद–सोनासण.**

शोकजनक अवसान.

अमूल्य हीरा रत्नने, माणेकना भंडार,
माणेकचंद्र उडी गया, नभ छायो अंधार!

गुणानुवाद.

पानानी खाणमांथी, माणेक उत्पन्न थया,
माणेकना यत्ने, बहु रत्नो उभराव्या छे,
पूर्वजना नामोने. तार्यां धन वामोने,
पुण्यमय कामो, पृथ्वीमां पथराव्या छे.
धर्म ध्वजा फरके छे, यश कीर्ति चळके छे,
रक मुख चातक, रसदाने मलकाव्या छे,
तप्तचित ठार्यां, बहु दुखीया उगार्यां ने,
निर्धनना द्वारो, धन धान्ये छलकाव्या छे,
अनाथालयो, देवालयो अने विद्यालयो,
आनंदारोग्यालयो, बांधनार क्यां गयो?
जनसेवा, देवसेवा, राज्य अने देशसेवा,
सेवाना मेवा चखाडनार क्यां गयो?
सभाओ गजावनार, **शान्ति** रेलावनार,

संपना सीतारनो ए सांधनार क्या गयो ?
धर्मवृत्ति वारनार, **दया प्रेम** पाळनार,
अधर्मने कापनार असिधार क्या गयो ?

स्वभाव परिचय

कलि काल करालनी जाळ महि, भय व्याकुळ भारत व्यस्त थयो,
सूर्य वह्यो अस्ताचळ त्या, शशीने निरखी मन मस्त थयो
ए ताप प्रताप जता हजीये, सद्भागी शशीनो दस्त रह्यो,
मणि माणेक मन्दिर शून्य करी, **श्री माणेकचंद्र** शु अस्त थयो ?
वीर हता वीर शासनना, अति धीर गभीर सुधीर हता,
नरवीर उदार पवित्र उता, अभिमानी न लेश लगीर हता,
स्वार्थ त्यजी, परमार्थ त्यजी, निज मार्गने कोण सुधारी शके ?
अहि माणेकचद्र जता जिन शासन, आमन आश न धारी शके ?
डुबता दु ख दु खना आरा विषे, हती एकज आश तु शासनने,
लई पामती धर्म प्रवृत्ति टकावी, शिखावी दया जिन सज्जनने.
करी कार्य अनेक प्रजा हितना, नही प्यारा गण्या तन के वनने,
जन्म्या जगमा ते भले जन्म्या, कर्यु सार्थक उन्नत जीवनने

शान्तिर्वाचन.

गुमान्यु श्रेष्ठ धन आजे, हमारू रत्न रोळायु,
शशी परलोकमा राजे, सुधानु जाम ढोळायु,
गयो नरवीर ए शूरो, दया धर्मे हतो पूरो,
करी दु ख दर्दनो चुरो, जीवननु सत्व चोळायु ? ।
पताका कीर्तिनी राजे, जगतमा नामना गाजे,
सुखेथी स्वर्गमा साजे, सुधा सर्वस्व घोळायु,

थयो तुं देवमा आदि, पडावी इन्द्रनी गादी,
नमी तुज धर्मनी डाडी, हशे ज्या पुण्य तोळायु !

निवेदक–**शोकनिमग्न सरैया** (सुरत)

शेठ माणेकचदजीनो विरह.

हरिगीत

गभीर दरियामा डुबातु व्हाण " दिगम्बर " हतु
पण दैवयोगेथी बनी खडको महि सपडायु'तु,
रस्ते च्हडावी तारवानो यत्न त्हें कीधो खरो,
पण व्हाण भरदरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्या गयो ? १
नामाक्षरो जेनी ध्वजाना नष्टप्राय थया हता,
अगो शीथील थइ अने जे भागवा माडया हता,
ऐक्य त्हें करी गगनमा सोनेरी ध्वज चोंटच्यो खरो,
पण व्हाण भरदरिये मुकी तु चतुर नाविक क्या गयो ? २
त्हें मुक्त करवा व्हाणने फरी डुबवाना भय थकी,
कुशळ नाविको बनावा सस्था स्थापी तणी,
आ कार्य कुशळता वडे बहु त्हारो यश वाध्यो खरो,
पण व्हाण भरदिये मुकी तु चतुर नाविक क्या गयो ? ३
विकट मार्गोमा कसोटी छे खरी नाविक तणी,
ते मार्गमाथी डाग विण त्हें चालवा हिंमत धरी,
छे धन्य त्हारा धैर्यने पण मार्ग पुरो ना कर्यो,
तो व्हाण भर दरिये मुकी तु चतुर नाविक क्या गयो ? ४
तु मध्यदरिये एकला चाल्यो गयो अमने मुकी,
लाग्यु खरु ते तें कर्यु पण उर विषे न दया धरी,

त्हें तारवा त्हारी पछी कप्तान कुशळ ना सुझ्यो,
तो व्हाण भरदरिये मुकी तु चतुर नाविक क्या गयो ? ५
हे व्हाणना माणेक नाविक रत्न अरज उरे धरो,
शाश्वत सुखो बहु भोगवो शान्ति सदा तुपे रहो,
अम उर विषे उत्साह आदि सद्‌गुणो भरपुर भरो,
आ व्हाण पार उतारवा अदृश्य रही स्हायी बनो . ६

Shah P C

शोकदर्शक संदेशो.

(रचनार —जेठालाल भाईलाल शाह, पादरा)

राग मैदानो)

माणेक तु स्वर्गे सिधाव्योरे ! दया नहि दीलमा लाव्योरे,
चौद लक्ष तारा साथीने छोडी, गयो प्रभु केरे द्वार,
तेथी रुवे तारा साथी सर्वे, जोई तुज गुण अपार—माणेक १
माणेक तु खरे माणेक हतु, तुज वीन शून्याकार,
जैन कोमे एक रत्न गुमाव्यु, तेथी थयो अवकार—माणेक. २
एकाएक काळ बळे आवी, ऊचकी लीयो झट वार,
जुलम वर्ताव्यो जगमांही, कीधा सर्वे निराश—माणेक ३
धर्म कार्य अने विद्या मार्गे, धन खरचे अपार,
धर्म मार्गमा पाछी पानी, काढे नव तुं लगार- माणेक ४
सगा सहोदर साथीने छोडी, गयो तु स्वर्ग मोझार,
हाय ! हाय ! थयो भूतळ विषे, देखी दीनकर अस्त—माणेक. ५
सने ओगणी चौदनी साले, जुलाई छे मास,

तारीख सोलनी काळी रात्रे, हीरो गयो प्रभू पास-माणेक ६
याचे जेठालाल प्रभू पासे, आप सुगति तत्काल
दीर्घायुषी कर पुत्र तेनाने करवाने धर्म काज-माणेक ७

विलाप।

कुलभूपण दूषणरहित, हग्न जाति सताप।
दानवीर अति धीरचित, गये हाय! कित आप॥

छन्द राधिका (२२ मात्रा)

कित गमन कियो हे! जैनजाति उपकारी!
महसभा भई है आज, विना सहकारी॥
व्याकुल विछोहसे भये, सकल नर नारी।
दृग टपटप टपकत नीर, प्रकट दुख भारी॥ २॥
तजि निज विलासता आप, स्वार्थ पर कीना।
अरु त्याग रमासे मोह, दान बहु दीना॥
आहार औपधी अभय, शास्त्र परचारी।
अब कियो गमन कित 'दानवीर' पटधारी॥ ३॥
जैन जातीसे।
पुनि कीना बहु उपकार, विविध भातीसे॥
अब त्याग तासुकी चाह, छोड मझधारी।
किम कारणसे हुए देव, देव-पुर-चारी॥ ४॥
जब यह अनुशासन प्रकट, हुआ सरकारी!
सम्मेदशिखरपर बनें, भवन सुखकारी॥
वह आमिप भक्षण करें, केलि विस्तारें।
तब होय धर्मकी हानि, जीव बहु मारें॥ ५॥

यह विपत परी अति आन, धर्मपर भारी।
सब रुदन करत ये जैन, अजैन दुखारी॥
तब धारि हृदय सन्तोष, शान्ति विस्तारी।
कर अमित परिश्रम आप, विपत निरवारी ॥ ६ ॥
तुम सत् विद्या परचार, हेतु श्रम कीना।
चपल लक्ष्मीसे नेह, त्याग तुम दीना॥
तुम धन्य धन्य नररत्न, दीन दुख हर्त्ता।
निज करनीके वश सुयश, जगत विस्तर्ता ॥ ७ ॥
वह हीरासा उद्यान, लगत है सूना।
हिय आवत ताकी याद, होय दुख दूना॥
बहु सभा सुसैटी स्याद्वाद चटशाला।
बिन तेरे विधवा हुई, हाय[1] तव बाला ॥ ८ ॥
सद्विद्या प्रेमी छात्र-वृन्द बहु तेरे॥
होगये सकल असहाय, हाय! बिन तेरे॥
इक तुम्हरे ही अवलम्ब, रही जिन जाती।
अब तुव विछोहसे रुदन, करत दिन राती ॥ ९ ॥
तसु डूबत हति मझधार, शरण तुम दीनी।
अब त्याग तासते नेह, स्वर्ग गति लीनी॥
नहिं धारी किंचित दया, मार्ग गह लीना।
हा! शोक जलधिमें डुबो, कहा चल दीना ॥ १० ॥
इस आर्य भूमिपर उपजे, पुरुष घनेरे।
ऐसे ही नररत्न, हुए सम तेरे॥

---

१ हीराबाग धर्मशाला.



शेठजीकी स्त्री नवीबाई वैधव्यावस्थामे और
चीरंजी जीवनचंद

जैन विजय प्रेस, सुरत।

पुनि गह अयोग गुनठान, कर्म वसु टारें ॥
वे केवलज्ञान उपाय, तत्त्व परकाशैं ।
हों मुक्ति वधूके कंत भ्रमण भव नाशैं ॥ १७ ॥
तसु शेष सकल परिवार, बन्धु सुत नारी ।
लहि शोक सिंधुसे पार, धैर्य्य दृढ धारी ॥
करि करि तिनको अनुकरण, करणसे दानी ।
बनि बनिकें होवें 'मूलचन्द' सुख खानी ॥ १८ ॥

मूलचन्द वडकुर जैन, दमोह।

"दिगंबरजैन" के कितनेक शोकजनक लेख।

—❀—

दिगंबरीनो दीवो बुझाई गयो!

आ परिवर्तनशील संसारमा जीववु अने मरवु सवनी साथे लागेलु छे जे मरे छे ते पुनर्जन्म ले छे अने जे जन्मे छे ते निश्चय एक दिवस मरशेज, पण जे पुरुषना जन्मथी देश, धर्म, जाति अने कुलनी उन्नति थाय तेवाज पुरुषनु जीववु सार्थक छे अने तेज पुरुष इतिहासमा अमर नाम करी जाय छे

• •• .

दिगंबरीना राजा।

आ दानवीर सेठथी आखा हिंदनो एक पण जैन अजाण्यो नहि होय, केमके एमनी **दानवीरता** अने आ... जैनो प्रत्येनी एकसरखी प्रिय ... माणेकचंद...

चीना त्रगाए पुरुषो छे, पण शेठ माणेकचदजी स्वभाव, उदारता अने जातिभोगादिने लीधे आखा हिंदना दिगबर जैनोना एक **राजा** याने **वायसरॉय** जेवा हता, केमके ए जे कहेता, ते सर्वे मान्य करता हता, तेम भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभाना प्रमुख पग आ महान पुरुषज हता, तेथी दि जैनोना राजा कहेवा ए योग्यज लागे छे एमणे जिंदगी दरम्यान दानपूण्यना शु शु महान कार्यो करेला छे ते आ अकमा आपेला जीवनचरित्रमाथी वाचकोने मळी आवशेज, पण एटलु तो अत्रे जणावीए छिए के आ महान नरना वियोगथी दिगबर जैन कोमे एक महान सचालक गुमाव्यो छे अने तेनी खोट कदी पण पुराई शकवानी नथी गुजरात, मुबाईमा दिगबरी कोण, ए कोई जाहेरमा जाणतु नहोतु अने जैनो ने मात्र श्वे० जैनोज छे एम भासतु हतु, पण लगभग २५ वर्ष थया **गुजरात**मा अने आखा हिंदमा जे **धर्मजागृति** आ शेठे फेलावी छे, तेथी जैनोमा दिगबरी जैनो पण एक मोटो विभाग छे, एवु जगजाहेर थई गयु छे

तन, मन अने धननो भोग.

कोई तनथी कार्य करे छे, कोई मनथी कार्य करे छे अने कोई धनथी कार्य करे छे पण तन, मन अने धन त्रणेने एक सरखी रीते रोकनार जो कोई वीरनर जैनोमा थयो होय तो ते आ शेठ माणेकचदजीज हता, के जेओ दश पदर वर्ष थया व्यापार वगेरेथी फारेग थई रात्रिदिन पोतानो समय जैन कोमनी उन्नति थाय एवा धार्मिक कार्योमाज जातिभोग आपीने रोकता हता, अने लगभग ६२ वर्षनी उमर थवा छता एक युवान माणसनी माफक दरेक कार्य

उमगथी करता हता मकानो बाधवा संबधीनी माहिती अने अनुभव एमनो एटलो विशाळ हतो के कईपण सस्था के मकान बाधवाना प्लान माटे सेंकडो लोको एमनी सलाह लेता ए शेठ तीर्थक्षेत्र कमीटीना महामंत्री तेम अनेक सभा, बोर्डिंगो, पाठशालाओ वगेरेना प्रमुख तथा ट्रस्टी हता तेथी ते दरेक खाताने एमना अणधारेला ओचिंता स्वर्गवासथी घणीज अगवडो पडशे अने ते खोट पुरावी मुश्केलज छे मर्हूमने कुटुब सबधी अनेक आफतो रहेवी पडी हती, छता पण धर्मकार्यमा पाछा न हठता वधु ने वधु धार्मिक कार्यो ठेठ सुधी करता हता एमना भत्रिजा शेठ **प्रेमचद** मोतीचंद तथा भाणेज शेठ **चुनीलाल** झवेरचदना अकाल वियोगथी तेमने असह्य आफत पडेली अने आ बे पुरुषो एवा विरला हता के तेओ जो आजे होत, तो दानवीर शेठ माणेकचदजीनु दरेक कार्य महेलाईथी उपाडी लेत आ शेठने बीजी आफत पोतानी एक मोटी अने मोळी पुत्री फूलकोर मृत्यु पामवानी अने बीजी पुत्री **मगनबहेनने** २० वर्षनी वयमा वैधव्य प्राप्त थवानी हती, पण जेवु पुरुषोमा माणेकचद शेठे नाम मेळ यु छे, तेवुज नाम हिंदना तमाम स्त्री वर्गमा श्रीमती मगनव्हेन मेळववा भाग्यशाळी थया छे, तेना प्रताप तेमना पुण्यशाळी पिताज हता वळी आ **अल्पज्ञ सेवक** उपर शेठ माणेकचदजी एक **पुत्र करतां पण वधु स्नेह** राखता हता अने आजे अमो समाजनी जे कई अल्प सेवा बजावी रह्या छिए, तेनुं मूळ कारण तेमज " **दिगंबर जैन** " पत्र शरू थवानो मूळ पायो आ शेठथीज रचायो हतो घणा घणा स्थळोए सभाओमा, मेळावडा वगेरेमा अमो आ शेठ साथे जता, जेथी अमने घणुज

जाणवानु अने जोवानु मळयु छे, जे ५ाड कदि पण विसरी जवाय तेवो नथी

विद्यादाननो महान पाठ.

चार प्रकारना दानो पैकी मुख्यत्वे करीने दानवीर शेठ माणेकचदजी विद्यादान माटेना जे महान कार्यो करी गया छे तेनो पाठ दरेक व्यक्तिए शीखवानो छे जे **पारसी** कोम आजे वेढक लाखनी सख्यामा छे ते केळवणीने लीधेज हिंदमा अग्रगण्य गणाय गणाय छे, तेवी रीते शेठ माणेकचदजी केळवणीना जे महान कार्योनो आरभ एवी युक्ति पूर्वक करी गया छे के ते जो पुरा थशे तो एक समय एवो आवशे के जैन कोम पण केळवणीनी बाबतमा अग्रगण्य गणाशे

तीर्थोनी संभाळ अने डिरेक्टरी.

मर्हूम शेठ माणेकचदजीए दिगबर जैन तीर्थक्षेत्रो, सिद्धक्षेत्रो, अतिशयक्षेत्रो तथा अनेक मदिरोनी एटली बधी सारसभाळ अने सुव्यवस्था जातिभोग आपीने करी छे के जे माटे जैन इतिहासमा आ वीररत्नु नाम सोनेरी अक्षरे कोतरायलु रहेशेज, तेमज आखा हिंदना दिगबर जैनोनो अने तीर्थोनो पूर्ण इतिहास, अथाग परिश्रम अने खर्चथी तैयार करावी जे " दिगबर जैन डिरेक्टरी " आ शेठ प्रकट करावी गया छे, तेथी आखा हिंदना दिगबर जैनोनी माहीति सर्वेने घेर बेठा मळी शके एम छे अने ए उपकार कई जेवो तेवो नथी.

हीराबाग धर्मशाळा.

मुंबाईमा एक सार्वजनिक महान कार्य जो दानवीर शेठ माणेकचदजी करी गया होय तो ते ' हीराबाग ' याने 'हीराचद

विनोद-वाण ।

भाईओ ! गया मासनों **गंडेरीना ककडा** जेवो अने वळी बेहद काळा लीटा खेंचेलो " **दिगंबर जैन** " नो अक जोई हु तो आश्चर्यमाज गोथा खावा लाग्यो के आ वळी शी आफत ! काळा लीशोटा तो शोकदर्शक गणाय, तो ' दिगंबर जैन ' ने एवो शु जबरो शोक पडी गयो हशे के ठाम ठाम लीशोटाज लीशोटा ! खेंची मार्या छे, पण उपर लपेटेली दानना सागर माणेकचदजीनी उबी जोई वदी न्हेमायो के आ मोटी छबी वळी शु काम ? विचार थयो के अदर वाचु तो खरो, शी भयंकर खबर छे ? वाचु शु मारू कपाळ! पहेले पानेज " दिगबरीनो दीवो बुझाई गयो " झगझगता हीरातुल्य वीरपुत्र माणेकचदनु आदुई रीते मरण! हाय ! शु ते वखतनी मारा हृदयनी स्थिति ! चोपानीयु पण हाथमाथी पडी गयु एक पछी एक अनेक तर्कवितर्क दोडी आवे के हाय, हाय! आ शु स्वप्नु के साची वात, पण खोटु शु होय ? आपणा दिगबरीओना नशीबज टूका त्या काळनो शु वाक ? गयु ! गयु ! चिन्तामणी रत्न हाथथी गयु !!!

चिंतामणी रत्न गयुं !

जे नरबच्चाए पोतानी कोमने माटे दश लाख रुपिया कारवा माफक खरची विद्यादाननो अमुल्य स्तभ स्मारक फंड माटे रोप्यो ! उन्नती दिगबरी कोममा जागृति स्वार्थत्यागनी जरूर पेदा करी, असल्य अभण बाळकोने विद्वान बनाव्या, अनेक अनहद दु खी विधवाओने सुमार्गे लगाडी, अनेक

तीर्थोनु रक्षण कर्यु, अनेक टटा बखेडा पताव्या, ते महान् नरनो खाली अफसोस करी बेसी रहेवु ए शु आपणे माटे योग्य गणाय? नहि, कदी नहिंज त्यारे शु करवु? स्मारक फड खोलेलु छे तेमा नाणा मोकलवा के फड गजावर थाय तो तेमनी यादगीरी कायम रहे

विनोदी

('दिगबर जैन' वर्ष ८ अक ११)

हाय ! दुर्भाग्य !

न जाने जैन समाजका कैसा दुर्भाग्य है कि यह सदा किसी न किसी विपत्तिमें ही फसी रहती है। इसके जीवनका एक एक पल शोक और दु खमें ही बीतता है। इसके दुर्भाग्यसे प्रथम तो इसके जीर्ण रोगके दूर करनेवाले वैद्योंका ही अभाव है, यदि दैव-योगसे मिल भी जाते है तो इसके तीव्र अशुभ कर्मोके उदयसे स्वय वैद्यराज ही यम देवकी भेंट हो जाते है। कितने ही महापुरुषोंने दृढ सकल्प किया कि हम इस जातिको शीघ्र दुःखावस्थासे निकाल-कर रोगसे मुक्त करेंगे, परतु शोक है कि वे शीघ्र अकाल मृत्युके ग्रास बन गए। अभी हम बाबू **देवकुमारजी** आदि महापुरुषों-का शोक न भूले थे और समाजमें उनकी त्रुटि पूरी न हुई थी कि यकायक एक दूसरी आपत्ति हम पर टूट पडी, जिसने सर्वत्र भारतमें—जैनसमाजमें खलबली मचा दी। उत्तरसे दक्षिण तक, पूर्वसे पश्चिम तक जैन समाजमें शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ **माणिकचन्द** हीराचन्दजी जे पी बम्बईनिवासीका यशस्वी नाम न जानता हो। नहीं २ जैन समा-जका बच्चा २ ` ` परिचित है। आपके उदारता, दयालुता

आदि गुणोंसे सम्पूर्ण भारतभूमि गूज रही है ।

शोक, महा शोक ! कि आज आपकी दिव्यमूर्ति इस संसारमें हमारे नेत्रोंसे अदृश्य हो गई !! हा ! दुष्ट काल, तुझे किंचित भी दया न आई ? क्या तुझे किंचित भी दया न आई ? क्या तुझे अपने पापी पेटकी क्षुधा मिटानेके लिए और कोई न मिला ? क्या तुझे जैन समाजको ही दुःखी करना अभीष्ट था ? निर्दई, पापी, तूने १३ लाख जैनियोंके दिलोंको दुखाकर अपने वज्र हृदयको शात किया ! अरे दुष्ट पापी ! शेठजी जैसे सरल स्वभावी, शातचित्त मनुष्यने तेरा क्या बिगाडा था ? वे स्वप्नमें किसीका बुरा न विचारते थे, किंतु सदा इसी चिंतामे रहते थे कि किसी तरह जैन समाज जिसकी बडी हीन अवस्था हो रही है उन्नति करे और अन्य समाजोंकी समान उच्चावस्थाको प्राप्त हो ।

उनके जीवनका एक मात्र यही उद्देश्य था । बहुत दिनोंसे व्यापारादिका काम भी छोड दिया था और केवल धर्मोन्नति व समाजोन्नत्तिके कार्योंमे ही अपना सम्पूर्ण समय व्यय करते थे। एक प्रतिष्ठित धनाढ्य होनेपर भी आप स्वार्थ और अभिमानको तिलांजली देकर शारीरिक कष्टोंको सहते हुए चहू ओर भ्रमण करते थे और जहा जिस चीजकी कमी देखते थे तत्काल उसे दूर कर देते थे। आज समाजमें जितनी सस्थाए है, जितने आदोलन है, उन सबके नेता आप ही थे । ऐसा कोई भी उन्नत्तिका काम समाजमें नही हुआ, जिसमें आपने अग्र भाग न लिया हो और तन मन धनसे सहायता न की हो । आपने जैन समाजका जितना उपकार किया उसके

इतना ही कह कर सतोष करते है कि वर्तमानमें आपके समान सज्जन, धर्मात्मा, निस्वार्थी, समाज हितैषी, परोपकारी इस समाजम न कोई था और न कोई है। आपने अपना तमाम जीवन जैन समाजके हितार्थ अर्पण कर दिया था और आपके ही प्रभावसे आपका सम्पूर्ण कुल आपके समान उदार और दयालु हो गया था। आपके आश्रयमे कितने ही निर्धन धनवान हो गए और कितने ही मूर्ख विद्वान् हो गए।

अतएव जैन समाजका कर्तव्य है कि आप जैसे महापुरुषका एक स्मारक चिह्न बनावें, जिससे सदैवके लिए उनका नाम चिरस्मरणीय रहे और आपकी आपके उपकारियोंके प्रति भक्ति, प्रेम, वात्सल्य और कृतज्ञताका प्रकाश हो। हमें आशा है कि जैन समाज शीघ्र रुपया इकत्रित करके एक स्मारक चिन्ह बनायगी स्मारक क्या होना चाहिए इसका पीछेसे विचार किया जायगा।

अन्तमें हम श्री सर्वज्ञ देवसे प्रार्थना करते है कि सेठजीकी पवित्रात्माको भव २में शाति मिले और उसके द्वारा सदा जैनधर्म और जैन समाजका कल्याण होता रहे। हम स्वर्गीय सेठजीकी धर्मपत्नी, पुत्री तथा अन्य कुटुम्बीजनोंसे विनयपूर्वक निवेदन करते है कि इस ससारकी असारता पर विचार करके शोकको त्याग करें और धैर्य धारण करें।

सेठजीके वियोगसे दुःखी—दयाचद्र गोयलीय—लखनऊ।

('दिगम्बर जैन' वर्ष ७ अक ११)

* * * * *

अब क्या करें ?

बन्धुओं ! हमारा अग्रेसर तथा जैन मात्रका सच्चा हितैषी धर्मवीर दानी जैन कुलभूषण तो लोगोंसे सदाके लिये मोह छोडकर अमरपुर (स्वर्ग) को प्रस्थान कर गया ! चारोंओर करुणाजनक ध्वनि सुननेमें आ रही है । जैनों ही के नही, किन्तु उक्त महानुभावसे परिचित स्वदेशी तथा विदेशी अजैनोंके भी चेहरेपर शोक चिन्ह दृष्टिगत होते हैं, सो क्यों ? इसका कारण यह है कि उक्त सेठजी (माणिकचद हीराचद) ने अपने सरल स्वभाव, कार्यकुशलता मिष्टभाषण, परोपकार, दान, शील, उत्साह, उद्योग, प्रेम आदि सद्गुणों द्वारा हम सब पर ऐसा प्रभाव डाल रक्खा था, जिससे कि बार बार भुलानेपर भी वह गंभीर मूर्ति हमारे नेत्रोंसे अलग नही होती है । यही कारण है, कि चहू ओरसे यह ध्वनि ध्वनित हो रही है—अब क्या करें ? हाय ! अब क्या करें ? इत्यादि सो ठीक है ।

शोकाकुल और निराधार मनुष्योंके मुहसे ही ऐसे वाक्य निकलते है । यथार्थमें जैन समाज इस समय बिलकुल ऐसी ही निराधार हो रही है । वह शोकग्रसित है । उसे इस समय और कुछ सिवाय " अब क्या करें " के नही दिखता है, भला, जब रामचद्रजी, बलदाऊ जैसे महान नररत्न भी भाईके शोकसे विह्वल हुए छ माह तक भटकते फिरे थे तो हमारे मस्तकका छत्र उतरे अभी ६ सप्ताह भी नही हुए हैं, सो भला विह्वल क्यों न होंगे ? परन्तु भाइयों, यह अनादिका नियम है कि प्राय: ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते हैं, त्यों त्यों जीव अपने विषय कषायोंमें फसकर

शोकसे शाति पाते जाते है। यहा तक कि स्त्री अपने सर्वस्व पतिको खोकर विधवावस्थामें भी (अधिकतर) खान पान शृगार भूषणादिको नही त्याग सक्ती और कुछ दिन रड (रो) कूटकर 'हाय हाय हइ रे' के गीत गाकर फिर अपने रागमें मस्त हो जाती है। आजकल कितनी तो पतिको यहा तक भूल जाती है "कि वे फिरसे सुहागिन बन बैठती है" इसी प्रकार ज्यों ज्यों दिन बीतते जायगे, त्यों त्यों इधर उधरकी चिंताओंमें पडकर भाइयों, आप लोगोंको शोक तो क्या शायद सेठजीकी याद तक भी भूल जायगी।

थोडी देरके लिये हम यह मान भी लें कि जिन्होंने सेठजी साहबको देखा है व जिनको परिचय है वे कदाचित न भी भूलें तो भी उनकी भावी (होनहार) सन्तानको तो नाम भी सुनना एक तरह कठिनसा हो जायगा। यों तो सेठ साहेबका नाम दुनियाके इतिहासमे चिरकाल तक स्थान पावेगा, परन्तु उससे लाभ बहुत कम लोगो (खोजियोंके सिवाय) को मिलेगा। ऐसी अवस्थामे हमारा क्या कर्तव्य है कि जिससे हमारे सेठीजीका नाम और उनके गुण सदा तक हमें और हमारी परम्परा सन्तानके उत्साहोंको बर्धनार्थ चिरकाल स्मरण रहे। और हम लोग उनका अनुकरण करनेके लिये उत्साहित होते रहें। यों तो सेठजी साहेबने अपनी अवस्थितिमें ही ऐसे २ स्मारक कार्य किये है, कि जिससे उनका नाम कल्पात तक अमर रहेगा, तो भी हम लोगोंपर जो उनका असीम उपकार है, उसका परिचय यद्यपि हमारा आत्मा उनके आत्माके प्रति दे रहा है, किन्तु व्यवहारापेक्षा अब प्रत्यक्ष भी कुछ (परिचय) देना

आवश्यक है। यह परिचय देना भी उनके लिये कुछ नहीं है, किन्तु हमारी वर्त्तमान व भावी जातिके लिये एक प्रधान गौरवकी बात होगी। यह बात आगे चलकर बतायगी, कि जैनियोंमें ऐसे आदर्श पुरुष हो गये है, कि जिनकी कीर्ति चिरकाल तक चल रही है, उनका इतिहास हम लोगोंके मुर्दे दिलोंमें जीवत्व शक्ति पैदा कर देगा, इसलिये भाइयो, शोकको छोड़ो, अब क्या करें? अब क्या करें? ही मत करते रहो, किन्तु क्या करें का उत्तर भी सुनो–

बडे पुरुषोंकी सन्तान अपने पूर्वजोंके मरने पर ' हाय, हाय हइरे ' का पाठ नहीं पढती है। न क्या करें क्या करें, इत्यादि कायरों जैसे शब्द मुहसे निकालती है, किन्तु अपने पूवजोंकी कीर्ति सदा स्थिर रखके उनका स्मारक (यादगार) बनाती है। उनके उत्तम गुणोंका अनुकरण करके केवल उनके कुलकी ख्याति ही नही फैलाती है, किन्तु अपना स्वार्थ भी साधन करती है, अर्थात् पुरुषत्व पैदा करके महत्वता प्राप्त करती है। ऐसा समझकर भाइयों! आपका कर्तव्य है। यदि आपको सेठजीके वियोगका दु ख है, यदि आपके मनमे कुछ भी कृतज्ञताका अश है, तो स्वर्गवासी सेठ साहबके चिरस्मरणार्थ उनका एक बड़ा भारी स्मारक बना डालो। जैसे रायचन्द्रजी आदिके नामसे " रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला " निकल रही है इत्यादि। इस स्मारक बनानेके लिये बम्बई व सूरतमें एक ' दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द स्मारक फड ' खोला गया है, और अनुमान ५–६ हजारके चदा भी भरा गया है, परन्तु इतनेसे अभी कुछ कार्य न चलेगा। क्योंकि कोई

बृहत् कार्य होना चाहिये और उसके लिये लाखों रुपयोंकी आवश्यक्ता है, और हमारी कृतज्ञ समाजके लिये यह कुछ (चंदा करके भेजना) कठिन कार्य नहीं है। सहजमें ही हो सक्ता है इसलिये इस दशलक्षण (पर्यूषण) पर्वमें प्रत्येक ग्रामके भाइयोंको स्वशक्ति अनुसार रुपया एकत्र करके-संपादक, "दिगम्बर जैन"-सूरतके पते पर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द स्मारक फंडके नामसे भेजना चाहिये और सेठ साहबके गुणोंका अनुकरण करके उनके बोये हुए अकुरोंकी सेवा करना व और भी नवीन बीज बोना चाहिये। देखें, कौन कौन सज्जन अपनी कृतज्ञता व दिली शोकका परिचय देते है? बस बन्धुओं, अब क्या करें? का उत्तर मिला, कि स्मारक बनावो, (उसके लिये द्रव्य एकत्र करके भेजो) और उनके गुणोंका अनुकरण करो, तथा सेठजीके अनुसार आप भी अपने गुणोंसे संसारको मोहित करके स्वर्ग मोक्षका मार्ग पकडो। यही करो, अब यही करो, अब यही करो।

आपका कृपाभिलाषी—

मा० दीपचन्द परवार—नरसिंहपुर (सी० पी०)

("दिगंबर जैन" वर्ष ७ अंक ११)

*   *   *   *   *

शोकोद्‌गार.

आजे आपणी आसपास जे ग्लानि तथा शोकनी छाया प्रसरी रही छे ते शानी छे? सर्व कोई आ दुनियाना दिगम्बर जैन नानाथी ते मोटा सुधी गळगळित कंठे कही शके छे के आ असह्य ग्लानि ते आपणा अभेद मार्ग प्रवासी, ब्रह्मनिष्ठ सुरलोकमा विरहनार, तत्त्वविद् तथा मानवकूळमा मनुष्याकृतिथी फिरस्ताना रूपमा आवेला



दिगम्बर कोमने आखा गुजरातमा ओळखावनार अग्रगण्य दानवीर जैनकुलभूषण श्रीमान शेठ माणेकचंद हीराचद जे पी ना अवसानने लीधेज छे अवसान समय व्यतीत थयो, तोपण ते विषेनो विचार करीए छिए, तो आपणु हृदय एकाएक विदीर्ण थाय छे सन्ध्याकाळ पछी रात्रि पडवाना समये ज्यारे एकाएक मेघयूथ चहटी आववाथी तेज.पुज नष्ट थाय छे अने बधे शून्य निरव अने शमशमाकार लागे छे, तेम आजे पण जैन कोमना आगेवान श्रीना स्वर्गपन्थ तरफ रवाना थता जे शोके आपणा हृदयने घेरी लीधो छे तेथी खरेखर आनन्द रूप तेज पुज आजे आपणामाथी नष्ट थयु छे. हा! आजे ते पुण्यात्मा अने परोपकारीना गुण स्मरण थई आवता हु बोलवा कइ प्रयास करु छु के तरतज हृदय एकाएक कम्पवा लागे छे मन जाणे के बेशुद्धिमा पड्यु न होय एम लागे छे अने कण्ठ पण बाष्प कलुषित थई जाय छे हा! आ बनावे आपणा हृदयाकाशने घेरी लई जे आपणा मनना तरगोमा विकृति उत्पन्न करी छे, ते हवे आपणा उद्गार रूपे कोना आगळ ढोळीशु? हा, प्रभो! आ हृदय स्वार्थने लीधे एटलुं बधु कठण थई गयु छे ते फाटीने चुरा थई जतु नथी

अहा महात्मन्! आखेर ए मधुर! ए दयानी खाण परोपकारी जीवडो! अनन्त विश्वनी अपरिमित लीलामा जीवनतु टूकु प्रयाण आदरी आपज्योति रूपे सुंय लोकना पडदा भेदी परमपुराण विभुना अलौकिक धाममा विरमो छो प्रेमाळ सात्विक तेजथी भर्या नयनो आ फानी दुनीयामाथी हमेशने माटे उठी गया आ विचार हृदयभेदक छे. हे कुळभुषण! आप आ स्थळनो त्याग करी दिव्य प्रदे-

शमा सीधाव्या, पण आपणी पाछळ रहेला दिगंबर जैनगणनी शी अवस्था थशे? छोडवाओनी दरकार राखनार खरो माळी चाल्यो गयो, पछीथी उद्यान शोभा केवी रीते नवपल्लव कुसुमवासित थाय? प्रजान्तक आ दयाशील जैनोनो शो अपराध हतो के त्हें छळकपट करी त्हेमना परोपकारी जीवडाने त्हारी पासे बोलावी लीधा अरे अनापकारिन् प्रजान्तक! खरेखर मनुष्योने फसाववाने तु कई कई उपाय करी रह्यो छे

अरे विधि! तु जाणे छे के हु तो आ जगतमा एक जातनी क्रीडा करु छु, पण " कागडानु बेसवु अने ताडनु पडवु " ए प्रमाणे खरेखर अमारु तो आथी विपरीत थयु छे अरे! आ समये जो कोइ मृत्युभूमिना माणसे आवो छळकपट कर्यो होत तो अमे न्याय-यमदिरमा जइने तेनी सामे लडत, पण हव हे क्रूर विधि! त्हारी सामे अमे कया न्यायमदिरमा जईने दावो करीए अने त्या अमारो पक्ष करनार कया वकील या बेरोस्टरने शोधवो? अमारे नसीबे तो हमेशने माटे रोवणा रडवाना रह्या अने अमे ते प्रमाणे रोवणा रडीशु

महात्मन्! सर्व सामग्रीथी भरेला वहाणना जेवी तमारी मानसिक समृद्धिनी स्थिति हती तथी जे बदरे आ वहाण उतरतु त्या यश दाखवतु अने विजयी प्रकाशतु आपे आपनु जीवन जीवनतत्व-नो ए गंभीर अर्थ करी गाळयु हतु आपना हृदय–गिरिमाथी अनु-कम्पा, स्नेह, उत्साह, प्रशम, सवेग, आस्तिक्य अने औदार्यना विमळ झरणा हमेशा वह्या करता हता जीवननी गाभीर्यताना विचारे आपना हृदय उपर एटली ऊडी असर करी हती के तेथी

आपे जीवनशैलनी कई दिशामा विशाळ अने रमणीय उच्च भूमिका आवी छे ते विषे सारू सशोधन करी जीवनयात्राने ते पथे स्वीकारीज हती आथीज दिन प्रतिदिन ऊर्ध्व प्रयाण करता एमना आत्माए देहरूपी मृतपिंडनी अवगणना करी हती

प्रेमना सावळो तूटी गई, ससारनी स्वप्न वस्तु अदृश्य थई ! परोपकारनो अखूट भंडार, दयानिधान हमेशाने माटे विलोप थयो ! हा ! अरेरे मनोहर मूर्ति....परोपकारी जीवडो अदृश्य थयो ! शु हवे ते आ स्वप्न माया तरफ प्रयाण करशे ? हे बोर्डिंग वत्सल ! शु त्हारी ऊच आशाओ फलिभूत करशे ?

रे कोन्फरन्स ! शु त्हारो नेता फरीथी त्हने बोलाववाने मोटा सादे हाक मारशे ? ना, ना. असत्यना तिमिरो भेद्या, सत्यना द्वारे पेठा अने स्वर्गीय सुखो अनुभववा लाग्या. ससारने तुच्छ गण्यो, मायाथी अळगा थया अने अमरत्वमा एकाकार थई गया काष्ठनी चीता प्रदिप्त करी अने काष्ठवत् शरीरने अग्निज्वाळमा प्रवेश कराव्यो। पचतत्वो पचमहाभूतमा मळी गया अने स्थुळ मूर्ति सर्वने माटे अदृश्य थई

आहाहा ! सर्वनो सबध तूट्यो, सरितामा निर्मळ जळमा स्नान करी प्रेमनो प्रभाव, परोपकारनो अखूट भडार हमेशने माटे तरतो मूक्यो अने ते अतिम मूर्तिने छेल्ला नमस्कार करी दुनियाना स्वकार्यमां लक्ष आप्यु

हे विभो ! अमारा आ परोपकारी जीवडाने अने सर्व मित्रोना आत्माने शान्ति आपी सुखमय कोषमा प्रवेश कराव अने स्वप्नवत् दुनियामा विखुटा पडेला आत्माओने आश्वासन आप

हे प्रभो! जे अनुपम गुणनिधान पवित्र आत्माना प्रकाशथी दिगबर जैन कोम झळहळी रही ते अत्यारे अमारा हतभाग्यने लीधे सदाने माटे चाल्या गया छे अन्तिममा हे प्रभु! अमारी एटली विज्ञापना छे के ते पुण्यात्माने हमेशा शान्ति आपो

मनसुख कालीदास-बोरसद.

(दिगबर जैन वर्ष ७ अक ११)

× × × ×

कर्मवीर माणेकचद।

चल वित्त चल चित्त चले जीवित यौवने ॥
चलाचलमिद सर्व कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥

भावार्थ—मन चचळ छे, चित्त चचळ छे, जीवित चचळ छे, यौवन चचळ छे, अने बधु चळाचळ छे, तेथी जेनी सारी कीर्ति छे ते पुरुषज जीवे छे

प्रिय वाचक! सूर्य उगे छे अने आथमे छे, नदीमा पूर आवे छे अने जाय छे, श्रावण मासे वरसादना झपाटा पडे छे अने घडीमा तरोधान थई जाय छे, बीज चमकारा करी आपणा चक्षुओने आश्चर्यमा गरकाव करी छेवटे अदृश्य थई जाय छे, घटानी टेंटपाळ फरी फरीने पाछी त्यानी त्याज आवे छे, तेमज पाणीना परपोटा जेवो बनेलो आ नाशवत देहधारी मनुष्य जन्मे छे अने मरे छे, त्यारे आवा अनियमित जातना कार्यो माटे मनुष्ये शोक अने हर्ष शामाटे धारण करवो जोईए?

खरेखर! जे सूर्य सदैव पोताना किरणोद्वारा प्रकाश आपी आपणने तेजोमय बनावी रह्यो होय, जे नदी निश्चितपणे म्होटु पेट

राखी आवता पूरने शान्ति आपी रही होय अथवा तृपातुर दुःखी पुरुषने स्हेनी तृपाने शान्त करी आश्वासन आपती होय, जे वरसाद धीमे धीमे वर्षी जमीनमा पाणी पचावी कृपिकारोनां मन रंजन करतो होय, जेने वीजने आकर्षी पोताने स्वाधीन बनावी जगतनी विशाळ दृष्टि समक्ष मूकी होय, जे जीवात्मा पोताना जीवनने अल्प गणी पोताना सहचारी बन्धुओ माटे, पोताना प्रान्तना बाळको माटे के तेओनी दशा शोकजनक देखी तेओने उगारवा माटे के दुनियानी हरिफाईमा आगळ वधारवा माटे जेने अनेक सस्थाओ खोलवा खोलाववा अनहद परिश्रम लीधो होय, एवा सूर्य जेवा प्रकाशमान, सरिता जेवो समभाव राखनारा, आस्ते आस्ते दरेक कार्यो उत्साहपूर्वक करी बतावनारा, जेने विजळीक बळ आपी आपणने नवुं जीवन प्राप्त कराव्युं होय, जे मनुष्ये पोतानु जीवन समाजना उत्कर्ष माटेज अर्पण कर्युं होय, जेओए आपणे माटे लक्ष्मीनो भोग आपी अगणित प्रयासो आदर्या होय, तेमज आलोक अने परलोक बन्नेने सुधारनार जे सरस्वती, तेनो जेणे उद्धार कर्यो होय, तेमना गुणानुवाद देशेदेश गवाय, तेओने माटे तेमनो समाज, आ बालवृद्ध शोकाग्रस्त, निस्तेज अने विदीर्ण थयेलो दृष्टिगोचर थाय, तेमज तेओने माटे पवित्र प्रेमीओ अनेक राग रागणीमां गुणानुवादोना व्युगलो फूके, पत्रकारो शोक प्रदर्शित करवा पोताना हृदय घटरूपी पत्रोपर विरह भावनाओ रूपी काळी बोर्डरनी मर्यादा बाधी हृदयाकर्षक लखाणो लखी कोलमो भरे एटलुज नहि, पण तेओनी छबी प्रेमीहृदयोमा कोतराई रहे एमा शु आश्चर्य ?

वदन प्रसादसदन सदय हृदय सुधामुचो वाच
करण परोपकारण येषा केषा न ते वन्द्य

भावार्थ--जेओनु मुख प्रसन्नतानुज घर छे, जेओनु हृदय दयावंत छे, जेओनी वाणी अमृतने वरसावनारी छे अने जेओनु परोपकार (पारकाने माटे उपकार करवो) एज कर्तव्य छे, तेवा पुरुषो कोने वदन करवा योग्य नथी ? ज्यारे एम छे त्यारे तेवा सर्व सद्गुणभूषितने नेताओनो समागम दूर थता कयो सत्य धर्मानुरागी तेमना गुणानुवाद गावानी इच्छा नहि करे ? कयो कठोर हृदयनो पुरुष तेओना स्मारकमा नाणा भरवा इच्छा नहि करशे ? अल्बत करशेज !

विशुद्ध प्रेमीओ ! आवा एक कर्मवीर समाजनेता, हिंदुस्ताननना एक सुप्रसिद्ध, श्रीमान, उदारचित्त धर्मात्मा अने दानवीर, बोर्डिंग हाउस अने शिक्षण सस्थाओना पिता, दिगबर जैन समुहना एक जळहळता कोहिनुर, तेमज समग्र जैन सघना स्तभरूप गणाता अने उत्साही अग्रेसर जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणेकचद हीराचद जे. पी ना अचानक स्वर्गवासथी कदिपण न पूराय एवी जे भारे खोट आपणने पडी छे ते माटे आ लेखनी, आ हृदयनी अवस्थाओ प्रगट करवा असमर्थ छे, तेनु बयान म्हारे कया शब्दोमा करवु !

अरे ! हाय ! माणेक मोत लखता, दर्द दिलमा थाय छे,
लखता अचानक मोतने, मुज कलम ध्रूजी जाय छे

हे गुणियल समाज ! एक वखत आपणे धर्मानुराग छोडी मिथ्यात्वना वाडामा पड्या हता, एक वखत आपणा पुत्रोने केवी केळवणी आपवी तेनी आपणने खबर पण नहोती अथवा केळवणी एटले शु तेथी पण आपणे अज्ञान हता, एक वखत आपणी बाळाओने केवी केळवणी आपवी के जेथी खरी साध्वी, सन्नारी के गृहि-

णीओ उद्भवी शके विगेरे अनेकानेक बाबतोथी आपणने वाकेफ करनार जो कोई होय तो एक श्रीयुत माणेकचंदज हता तेओना अने तेमना कुटुम्बीओना भेगा बळथी परन्तु वीरनर माणेकचंदना उपदेशामृतथी आपणा आगणा पासे (गुजरातमा) अने एओश्रीनु अनुकरण करी आजे आपणी समाजमां लाखोना दान थवा माड्या छे, तेमज वणे भागे एमनाज प्रयासथी समस्त भारतमा दिगबर सप्रदायमा बोर्डिंगो, श्राविकाश्रमो, पाठशाळाओ, कन्याशाळाओ, पुस्तकालयो, ओषधालयो विगेरे संस्थाओ पुर जाहोजलालीमा चालती द्रष्टिगोचर थाय छे तेमज आपणा गुजरातमा एमणेज स्थापेली बोर्डिंगमाथी बी. ए सुधीनी उच्च डिग्री सपादन करी केटलाक रत्नो बहार पड्या छे अने केटलाको एवी डिग्रीओ मेळववा भाग्यशाळी थशे एमा सशय छेज नहि, परन्तु दिलगीरी साथे म्हारे कहेवु पडे छे के ए बी एनी डिग्री सपादन करनाराओ जाणे बी ए ना अभ्यासमा बीधा होय तेम अथवा तो बी ए नो अभ्यास करता मगज कटाळी गया होय अथवा पहोंचेला श्रमथी शान्ति लेता होय तेम गुजरातमा एक पण व्यक्ति अग्रगण्य भाग लेवा अथवा समाज हितार्थे आ पत्र द्वारा बे शब्द लखवा उत्सुक थई नथी, ए केटलु शोचनीय छे ? आपणापर अगणित उपकारोमांथी ए नररत्नना एक महद् उपकारनो उल्लेख करूं तो ते अस्थाने नहि गणाय

गुजरातना मशहूर शहेर सुरतना वतनी रा केशवलाल डाह्याभाई कोलेजमां अभ्यास करवा मुंबाई गया हता, ते वखते त्या गोकळदास तेजपाळनी एक हिन्दु बोर्डिंग हयात हती, ते बोर्डिंगना कार्यवाहकोए जैन जाणीने रा केशवलालने रहेवा देवा ना पाडी हती

त्यारे निराश, लाचार अने उद्मासिन च्हेरे रा केशवलाल धर्मप्रेमी
शेठ माणेकचंद पासे गया अने बोर्डिंगमा जे बीना बनी हती ते स
विदित करी सामळता श्रीमान् सेठ माणेकचंदनु हृदय अत्यत शोक
निमग्न थयु, परन्तु जैनधर्मना महान उपासके, स्वधर्मी युवकोनी आवी
आपत्ति दूर करवा, ए उद्देशने हृदयस्थ करी विद्याविलासी माणेकचंदे
तत्काळ मुंबाईमा बोर्डिंग खोली हती प्रिय गुर्जरीना वीर तन्यो !
शु आपणा पर आ जेवो तेवो उपकार? वीरना ए वीर पुत्रे आपणा
माटे सर्वस्व मेळवी आप्यु छे, परन्तु तेनो उपभोग करी वीतरागी
महावीर पितानी कीर्ति—धर्म-ध्वजा पृथ्वी तलपर फेलाववी एज कर्तव्य छे

. ....

जे गुजरातीओ अने दिगबर सप्रदाय जेवो के एक वस्तु
हस्तीमान नहोतो, जे गुजरातीओने घेरघेर शास्त्र शु छे, जैनधर्मना
व्रत नियमो केवा छे, जैनधर्ममा आहारविहार केवा छे तेनु शिक्षण
आपनार, जे जैन देहेरासरोमा के भडारोमा उधाइना भोग थयेला
शास्त्रो, तेनो उद्धार करी आधुनिक पद्धति पुर भर लखावी, छपावी
आपणी समक्ष मुकनार, जे शास्त्रोना अध्ययनथी थई गयेला पवित्र
मुनिगणोना सत्य शब्दनु पान करी भावी सुधारवा उत्सुक बन्या
छिए, विशेषमा जेने प्रतापे आपणे केळवणी पाम्या छिए, आपणने
तेमज आपणा दिगबर सप्रदायने दुनियामा ओळखाव्यो छे, तेमज
आपणा दिगबर जैनो माटे अनेक विद्यालयो उभा कर्या छे, कराव्या
छे अने तेथीज आजे जैनोना त्रणे फिरकामा दिगबर सप्रदायने
मुख्य नबरे मुकवा भाग्यशाळी थया छिए, एवा श्रेष्ठ पुरुषने माटे
पोतानी समाज जे करे ते थोडुज छे हे महावीर प्रभो ! ए पवित्र

णीओ उद्‌भवी शके विगेरे अनेकानेक बाबतोथी आपणने वाकेफ करनार जो कोई होय तो एक श्रीयुत् माणेकचदजी हता तेओना अने तेमना कुटुंबीओना भेगा बळथी परन्तु वीरनर माणेकचंदना उपदेशामृतथी आपणा आगणा पासे (गुजरातमा) अने एओश्रीनु अनुकरण करी आजे आपणी समाजमा लाखोना दान थवा माड्या छे, तेमज घणे भागे एमनाज प्रयासथी समस्त भारतमा दिगबर सप्रदायमा बोर्डिंगो, श्राविकाश्रमो, पाठशाळाओ, कन्याशाळाओ, पुस्तकालयो, ओषधालयो विगेरे सस्थाओ पुर जाहोजलालीमा चालती द्रष्टिगोचर थाय छे तेमज आपणा गुजरातमा एमणेज स्थापेली बोर्डिंगमाथी बी. ए सुधीनी उच्च डिग्री सपादन करी केटलाक रत्नो बहार पड्या छे अने केटलाको एवी डिग्रीओ मेळववा भाग्यशाळी थशे एमा सशय छेज नहि, परन्तु दिलगीरी साथे म्हारे कहेवु पडे छे के ए बी ए नी डिग्री सपादन करनाराओ जाणे बी ए ना अभ्यासमा बीधा होय तेम अथवा तो बी ए नो अभ्यास करता मगज कटाळी गया होय अथवा पहोंचेला श्रमथी शान्ति लेता होय तेम गुजरातमा एक पण व्यक्ति अग्रगण्य भाग लेवा अथवा समाज हितार्थे आ पत्र द्वारा बे शब्द लखवा उत्सुक थई नथी, ए केटलु शोचनीय छे ? आपणापर अगणित उपकारोमाथी ए नररत्नना एक महद् उपकारनो उल्लेख करूं तो ते अस्थाने नहि गणाय

गुजरातना मशहुर शहेर सुरतना वतनी रा केशवलाल दाह्याभाई कोलेजमा अभ्यास करवा मुबाई गया हता, ते वखते त्या गोकळदास तेजपाळनी एक हिन्दु बोर्डिंग हयात हती, ते बोर्डिंगना कार्यवाहकोए जैन जाणीने रा. केशवलालने रहेवा देवा ना पाडी हती

त्यारे निराश, लाचार अने उदासिन च्हेरे रा केशवलाल धर्मप्रेमी शेठ माणेकचंद पासे गया अने बोर्डिंगमा जे बीना बनी हती ते सर्व विदित करी सांभळता श्रीमान् सेठ माणेकचदनु हृदय अत्यत शोक-निमग्न थयु, परन्तु जैनधर्मना महान उपासके, स्वधर्मी युवकोनी आवी आपत्ति दूर करवा, ए उद्देशने हृदयस्थ करी विद्याविलासी माणेकचदे तत्काळ मुबाईमा बोर्डिंग खोली हती प्रिय गुर्जरीना वीर तन्यो ! शु आपणा पर आ जेवो तेवो उपकार? वीरना ए वीर पुत्रे आपणा माटे सर्वस्व मेळवी आप्यु छे, परन्तु तेनो उपभोग करी वीतरागी महावीर पितानी कीर्ति–धर्मध्वजा पृथ्वी तलपर फेलाववी एज कर्तव्य छे

• •

जे गुजरातीओ अने दिगबर सप्रदाय जेवो के एक वखत हस्तीमात्र नहोतो, जे गुजरातीओने घेरघेर शास्त्र शु छे, जैनधर्मना व्रत नियमो केवा छे, जैनधर्ममा आहारविहार केवा छे तेनु शिक्षण आपनार, जे जैन देहेरासरोमा के भडारोमा उधाईना भोग थयेला शास्त्रो, तेनो उद्धार करी आधुनिक पद्धति पुर मर लखावी, छपावी आपणी समक्ष मुकनार, जे शास्त्रोना अध्ययनथी थई गयेला पवित्र मुनिगणोना सत्य शब्दनु पान करी भावी सुधारवा उत्सुक बन्या छिए, विशेषमा जेने प्रतापे आपणे केलवणी पाम्या छिए, आपणने तेमज आपणा दिगबर सप्रदायने दुनियामा ओळखाव्यो छे, तेमज आपणा दिगबर जैनो माटे अनेक विद्यालयो उभा कर्या छे, कराव्या छे अने तेथीज आजे जैनोना त्रणे फिरकामा *दिगबर सप्रदायने* मुख्य नबरे मुकवा भाग्यशाळी थया छिए, एवा श्रेष्ठ पुरुषने माटे पोतानी समाज जे करे ते थोडुज छे हे महावीर प्रभो ! ए पवित्र

आत्माने अहोनिश शान्ति बक्ष एटली हमारी अनन्य भावे प्रार्थना छे, तेमज आपणे "गोल्डस्मिथ" ना शब्दोमां कहीशुं के—

म्हारी रमतगमतना मित्र, पुराण शी प्रं त, सदा सुखी रहेजे
तुज घरनी चोकी प्रतिपाळ करो, स्थळी देव जे जे ते

ॐ शातिः शाति शाति

लघुभ्राता-सरैया, सुरत.

('दिगवरजैन' वर्ष ७, अक ११)

× × × ×

अनुकरणीय पुरुषनुं अवसान.

प्रिय जैन बधुओ, महात्मा कबीरनु वाक्य छे के—

"जब तुम आये जगतमें, सब हसे तुम रोय;
ऐसी करणी कर चलो, तुम हसे सब रोय"

अर्थ—हे पुरुष! ज्यारे तारो जन्म आ दुनियामा थयो हतो, ते वखते तु तो रोतो हतो, पण तारा मातापिता तथा अन्य सगासबधी तारा जन्म (पुत्रप्राप्ति) ना समाचार जाणीने ह ता हता, हवे तु एवो करणी करीने दुनियामाथी जजे के जेथी मरते समये तु हसे ने तारा मरणथी अन्य सघळा रडे

भावार्थ—ए छे के ज्यारे मनुष्य सुकृत करीने आ दुनियामाथी जाय छे, त्यारे तेने एमज लागे छे के आ दुनियामा आवीने में तो मारु कर्त्तव्य बजाव्युं छे, पण तेवा माणसना वियोगथी सघळा आप्तजनो रुदन करे छे

आजे आपणे तेवा एक नररत्नने आ ससारमाथी विदाय थई गएल जोईए छिए दिगबर जैन समाजमां एवा भाग्येज कोई माणस

हशे के जे दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणेकचंदजी जे० पी० ना
ामथी अपरिचित हशे ता १९ मी जुलाईनो दिवस दिगंबर जैन
समाजने माटे घणोज कमनसीब लेखाशे के जे दिवसे उपरोक्त सेठ
ाहेब तेमना कुटुंबीओ तथा अन्य आप्तजनोने बल्के आखा दिगंबर
ैनसमाजने शोकसागरमा छोडी हरहमेशने माटे आ दुनियामांथी
ाली गया छे

जे महान पुरुषे निद्रामा पडेली जैन समाजने जगावी पोताना
र्तव्यनु भान कराव्युं छे एटलुंज नहीं पण खुद पोते तन, मन अने
नथी **भगीरथ प्रयत्न** आदरी ठाम ठाम सभा, सोसायटीओ,
ालाओ, बोर्डिंग—स्कूलो स्थापी छे, आवा एक महान नरने लई
ामा देवने पण कम दया नहीं आवी ? अत्यारे तेना विना सारी
माज सुनी पडी छे सामाजिक नावने मझदरिये छोडी सुकानी
न्तर्गत थयो छे हवे सदरहु नावने क्यो वीरपुरुष (सुकानी) कये
नारे लईने छोडशे, तेज जोवानु रह्यु छे

वानको, मरवु सघाने छे, मरण कोईने छोडनार नथी, पण
मनु अने मरवु तेनुज सार्थक छे के जेणे पोतानु जीवन परोपकार
ां खर्च्यु छे, तेवा माणसो मरवा छता पण तेमनी कीर्ति तो अच-
ा रहे छे शेठ माणेकचंदजी आज आ दुनियामा नथी, पण
णे जे कृत्य कर्या छे, तेथी तेमनु नाम हरहमेंशने माटे अमरज
वानु

दिगम्बर जैन समाजनी अवनत दशा थवानु मूळ कारण जे
विद्या हती तेने दूर करवाने माटे शेठ साहेबे जे जे स्तुत्य पगला
ां छे ने विद्या प्राप्त करवाने माटे जे जे साधनो तेमणे पुरा

पाडया छे, ते सर्वने जाहेरज छे. आजथी वीस वर्षपर गुजरातमा अंग्रेजी भणनार विद्यार्थीओने केटलु खर्च करवुं पडतु, तेम अमदावाद तथा मुंबाई शहेरमा के ज्या खावानु मळे पण रहेवानु न मळे तेवे स्थाने रहेवामा केटली अगवडो वेठवी पडती तेनो अनुभव जेने छे ते अत्यारे शेठ साहबनो अन्त करणपूर्वक आभार माने छे

पैसा कमावा तो सौ कोई जाणे छे, पण तेन सदरस्ते लगावी जाणनार थोडाज छे. पोतानी नामनाने खातर पैसा खर्चनारनी जैन समाजमा खोट नथी, पण जमानाने अनुसरी कये रस्ते पैसा खर्चवानी जरूर छे ते समजनार तो शेठ माणेकचन्दजीज प्रथम हता.

कोई पोताना कुटुम्बनाज श्रेयने खातर, तो कोई पोतानी ज्ञातिना हित खातर, तो कोई पोताना गामनी भलाइन वास्ते, तो कोई खास पोताना प्रातमा रहेनारा भाईओना भलाने खातर नाणा खर्चे छे, पण सदरहु शेठ साहेबे ज्ञाति के कुळनो भेद राख्या सिवाय जैन समाजने वसुधैव कुटुम्बकम् गणीने गरीब विद्यार्थीओने जे स्हाय करी छे ते बदल जैनसमाज शेठ साहेबनो जेटलो आभार माने तेटलो ओछो छे, आवा एक परोपकारी नरना मरणने लीधे शु गुजरात, शु पंजाब, शु दक्षिण अने शु हिंदुस्थान सारा भारतवर्षना जैन समाजे एके अवाजे दिलगिरी जाहेर करी छे.

शेठ माणेकचन्दजीने **महात्मानी** उपमा आपवामा जरा पण अतिशयोक्ति नथी, कोईपण दृष्टिथी तपासतां माळूम पडशे के एक मित्र तरीके, समाज तथा तीर्थना उद्धारक तरीके, गुरु तरीके, निराभिमानी पुरुष तरीके, पैसानो सद्व्यय करनार तरीके तथा सलाहकारक तरीकेना हरेक गुण तेओनामा हता, आटला गुणो एकी

वखते एक पुरुषमा होय एवो नर दिगम्बर जैन समाजमा तो हाल छेज नहीं अने भविष्यमा कोई विरलज पेदा थशे

जे जे माणसो शेठ साहेबना समागममा आव्या हशे तेमने मालूमज हशे के तेओ केवा सादा मिजाजना तेम निराभिमानी पुरुष हता, चाहे गरीब, चाहे अमीर, चाहे छोटो, चाहे वडो कोई माणस तेमनी पासे जतो तो तेओनी साथे ते घणी छुटथी वात करता हता, गरीब आदमीओने धन्धे वळगाडवानी सलाह आपवामा तथा विद्यार्थीओनो उत्साह वधारवामा ते एकाज हता

कहेवु अने करवु ए बेमा घणो तफावत छे भूल काढवी सहेज छे 'परोपदेशे पाण्डित्यम' दर्शावनारा तो घणा मळी आवशे, पण पोते कहेवा मुजब करी बतावनारा तो घणा थोडाज हशे तीर्थो उपर जैन समाजना हजारो रुपिया दरसाल जाय छे तेनो गेरव्यय थतो देखी तथा तीर्थना हकोने नुकसान थतु देखी शेठजीना दिलमा जे लागणी उद्भवेली तेना परीणामे **तीर्थक्षेत्र कमीटी**-नी स्थापना करावी तीर्थनी उन्नति माटे शेठ साहेबे जे जे फरज अदा करी छे ते आबालवृद्ध जैनथी अजाण्यु नथी अने तेनेज परिणामे आजे शेठ साहेबनु नाम घरघर जाणीतु थयु छे

शीखरजीनो पहाड अपवित्र थतो अटकावामा, **गोमट्टस्वामी,** गिरनार, पालीताणा, गजपथा, तारगा तथा घणा तीर्थोनो वहीवट सुधारी तेने उन्नत दशाए पहोंचाडवामा कोईए पहेल करी होय तो ते ए शेठ साहेबज छे, अने तीर्थोना उत्तम नमुना रूपे जे लोको शीखरजी तथा पालीताणा विगेरे स्थळे गया हश ते लोकोए जोयु हशे के वीस वर्ष पहेलाना ने हालना वहिवट-

मां केटलो तफावत छे यात्रीओने आराम पहोंचाडवा केटली तन बीजो करवामा आवे छे ? पैसानो केवी रीते उपयोग करवाम आवे छे तथा ते तीर्थोना हिसाब जे आज लगी अन्धारामा रहेल ते प्रगट करी तीर्थनी हालतथी समाजने केवी वाकेफ करी छे ?

लाबा टीला टपका करीने हाथमा माळा झालवाथीज भगवन्त ध्यारूगानी समाप्ति थती नथी, तेम हाथमा माळाने पेटमा लाळा समाजने अवनत दशाये पहोंचती जोईने जेने जरा पण दया आवत नथी एवा माणसो खरा भगत नही मण बगभगतोज छे. खरो भक्त तो तेना कृत्य परथीज जणाई आवे छे पुण्य शु चीज छे तथा शु कार्य करे पूण्यनी प्राप्ति थाय छे, ते शेठजीना तीर्थ सम्बन्धीन कार्यथीज जणाई आवे छे, हजारो माणस तरफथी भली बुरी सुणीने पण काम करवानो कईपण बदलो मेळववानी आशा विना निस्वार्थपणे पोताना कर्तव्यमा मरता सुधी दत्तचित्त रहेनार पुरुषने महात्मा नहीं तो बीजो शु कहेवाय ? धन्य छे तेवा पुरुषने अने धन्य छे तेन जननीने के जेणे आवा महात्माने पोतानी कुखे अवतार आप्यो कह्युं छे के—

" जननी जणजो भक्त जन, का दाता का शूर,
नहीं तो रहेजे वाझणी, न गमावीश फोकट नूर "

महाशयो, आ एक महात्मानु मरण साभळीने एवो कोण कठिन हृदयनो पुरुष हशे के जेनु हृदय पीगळ्या विना रहेशे निद्रामा पडेली तथा कर्त्तव्यनु भान भूलेली समाजने जगाडवी -वीर पुरुष सिवाय बीजो कोण करी शके ? तीर्थ प्रत्येनी खरी भक्ति ने समाजना दु खे दु खी ते एक भक्त नहीं तो बीजो शुं कहेवाय

स्वार्थने अंगे तो सघळी दुनिया काम करे छे, पण निःस्वार्थपणे अने ते पण बीजाना श्रेयने माटे महेनत करनारज महात्मा गणाय छे एवी कोण सभा ने सोसायटी, कमीटी के मिटींग हती के जेमा शेठ माणेकचंदजीए हाजरी नहीं आपी होय जिंदगीनो घणो भाग जेणे परोपकार अर्थेज गाळ्यो हतो एवा महात्माने तो हाल्नी प्रजाए जाते निहाळ्यो छे, अने तेवो एक नर पोतानी कोममा होवानु जे अभिमान आपणने हतु ते महात्मानु नाम भविष्यनी प्रजा पण याद करे तेने माटे एक स्मारक फंड उभु करी हरेक आदमी पोतानी शक्ति तथा भाव मुजब ते फंडमा पैसा भरी पोताना उपर करेला उपकारनो बदलो फुल नहीं अने फुलनी पाखडी रूपे वाळशे एम लेखक इच्छे छे आवु फंड सुरतमा खोलायलु छे अने तेमा रु २५) मोकली आपु छु अने एज मुजब बीजा वाचकोने ए फंडमा रकमा मोकलवाने आग्रह करू छु आवी रीते उपकारी पुरुषनो एक किंचित बदलो वाळवामा ज्यारे जैनसमाज पाछी पानी करशे तो एमज समजवु के समाज स्वार्थनीज सगी छे, तेम तेनी दशा सुधारवानी हजु घणीवार छे आवा स्मारक फंडमा पण अगर कोईनु श्रेय होय तो ते पण समाजनुज न के मरनारनु फक्त शेठजीनी यादगारी रूपमाज आ पोतानाज फायदाने माटे करवानु छे आवा स्मारक फंडमाथी विद्यादान तथा विद्यावृद्धि के जे मरनारनो मूळ मंत्र हतो, तेने सारु कोई संस्था स्थापी अगर जे छे तेमाथी लायक गणी तेने उन्नत दशाए पहोंचाडवामा आवशे, तो मरनारनो आत्मा स्वर्गमा रह्यो रह्यो पण संतोष पामशे के तेना चाहनाराओए तेना उद्देशनी पुष्टि करी छे

प्रिय वाचको, शेठ माणेकचंदजी एक खानगी गृहस्थ तरीके, कुटुंब वत्सल पिता तरीके, जाहेरमा समाज उद्धारक तरिके, सर्वना उद्धारक तरीके, उदार सुजन तरीके, क्षमा, निरभिमान न चारित्रनी मूर्ति तरीके पोतानु जीवन सुगासमय, आनंदमय, दृष्टान्तमय करी गया छे

सुखनिद्रामा शान्त हृदये काईपण मडवाड वेठ्या सिवाय एमनो आत्मा निज स्वरूपमां समाई गयो, एज बतावी आपे छे के " आनु नाम ते मरण " एमना जवाथी एमना नामथी जाणनार एवा प्रत्येक जने काई ने कांई खोयुं छे कुटुंबीओए अनुकरणीय महात्म्य दृष्टिमाथी जतु जोयु छे, मित्रोए हृदयनो विश्राम खोयो छे, लोकोए चारित्रनो नमुनो खोयो छे, प्रिय वाचक, मरनारना चारित्र परथी तने ग्रहण करवा योग्य काइपण शिक्षण मळ्यु होय अने ते प्रमाणे चाली समाजनी सेवा करवामा तु शक्त्यनुसार बहु नहीं तो थोडो पण भाग लेशे, तो सदरहु लेखनी सार्थकता गणाशे.

शेठजीना मरणथी जे शोक थाय छे ते करता तेमनी जग्या पुरनार कोई पुरुष नजरे नहीं आववाथी विशेष शोक थाय छे

ईश्वर तेमना आत्माने शाति आपो अने तेमना कुटुंबमा तेमनाथी पण विशेष उज्वल कीर्ति प्राप्त करनार पुरुष पेदा थाओ, एज हृदयनी प्रार्थना छे शाति ! शांति ! ! शाति ! ! !

डाह्याभाई शीवलाल शाह, गिरिडी.

('दिगंबर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

× × × ×

हजारो बाळकोना पिता।

अन्य कोमोना मुकाबले आ हरीफाईना युगमा जैन कोम घणी

पाळळ छे आ कोमनी उन्नति माटे तेर लाख जैनोमाथी मात्र एक ने सुशक्तिसंपन्न नरवरो सुमार्गे तन मन धनथी कोमनी सेवा स्वीकारी कर्तव्यक्षेत्रमा मान–अपमाननी दरकार विना कार्य करवा मडी पडया छे, जे जैन समाजनी भविष्योन्नतिनी आशाना चिन्हो बतावे छे जे जैन कोमने जमानाने अनुसरती उन्नतिना मध्य मार्गे लावी जैन कोमनी तन मन धनथी सेवा करनारो, हृदयथी जैन कोमनी उन्नति इच्छनारो अने ते मार्गे भगीरथ प्रयास करनारो सुलेहनो अमलदार **दानवीर** जैनकुलभूषण श्रीमान् शेठ **माणकचद** हीराचद झवेरीना पवित्र शरीरने गई ता १६मी जुलाईए क्रूर काळ–हजारो विद्यार्थीना भविष्यना कल्याणनी दरकार कर्या विना–कोळीओ करी गयो छे, ए परोपकारी शरीर आ पृथ्वी तलपरथी अदृश्य थयु छे, एवा हृदयभेदक अमगळमय अशुभ समाचार "दिगबर जैन" माथी वाची आ हृदयने अकथ्य अनुपम दिलगीरी थई छे

सर्व कोई कबुल करश के–दरेक समाज, ज्ञाति, कोम अने देशनी भविष्यनी उन्नतिनो आधार उक्त श्रेणीना बाळको–विद्यार्थीओपर अवलबी रहेलो छे

बाळको किंवा विद्यार्थीओने केळवायेल अने खरा मनुष्यो बनाववाने जैन कोममा बोर्डिंग हाउसो स्थापवानो प्रारभ करनार नरवर शु आ पृथ्वी तलपरथी चाल्यो गयो छे ? अरे कुदरती क्रूर कायदा! तारा! हृदयमाथी अनुकपा–दयानु बळ नष्ट थयु छे? सर्वने अजाण्या मनुष्य होय, तोपण–निर्दोष जीवन गाळनारा बाळको

प्रति प्रेम उद्भवे छे. अरे! कुदरती क्रूर कायदा! तारा हृदयमांथी प्रेमनुं नाम निशान पण अदृश्य थई गयु छे के शु? जो तारामां प्रेमनी ज्योत होय, तुं दयानु नाम जाणतो होय, तो अमारा रंक विद्यार्थीओनुं छत्र-रत्न हरी लेवाने अयोग्य वर्तन चलावी शके नहि. गृहमा शिक्षण मेळवनाराओ करता बोर्डिंगमा रही शिक्षण मेळवनाराओनु वर्तन उच्च बने छे, मगज उच्च संस्कारी बने छे, अन तेवा मनुष्या पोते सुधरी पोताना कुटुम्बने-ज्ञातिने अने देशनें सुधारी शके छे एवा बोर्डिंग हाउसो आ नरवरे मुंबाई, अमदावाद, कोल्हापुर, रतलाम विगेरे स्थळे पोताना खर्चथी स्थापित कर्या छे. बीजा स्थपायला अने स्थपाता बोर्डिंग हाउसोमा पण तेमनो फाळो प्रथम नडी आवशे सनाथ अने अनाथ श्राविकाओना हितन अर्थे मुंबईमा स्थपायेल श्राविकाश्रम तेमना कर्तव्यपरायणी, तेमना सुमार्गना अनुकरणीय विदुषी महिलारत्न व्हेन **मगनव्हेन**ना आश्रय तळे चाले छे. केटलीक पाठशाळाओ, संस्कृत शाळाओ अने कन्याशाळ ओ तेमना पोताना खर्चथी क मुख्य फाळाथी चाले छे, त उपरान्त मुंबाई सुरत-अमदावाद अने बीजें अन्य स्थळे जैन बंधुओना सगवड अर्थे **धर्मशाळाओ** घणाज साधन साथे स्थापी छे आ बधा खाताओ स्थापी पोताना प्रवृत्तिमय धंधा चलाववानी साथे प्रांतिक **कोन्फरन्सनी** उत्तमोत्तम व्यवस्था राखवा साथे तेनापर घणीज बारीक देखरेख जोई कोई अवलोकनकार आश्चर्यमां लीन थया विना रहेज नहि, जेनो एक नमुनो-हुं गई सालमा विद्याभ्यास माटे मुंबाई गयो हतो त्यारे सुरतथी रवाना थती वखते लाखोने खर्चे सर्वे लोकोने उपयोगी हीराबाग धर्मशाळा माटे वपराय छे, त्यां उतरवाना प्रोग्राम

साथे रवाना थयो हतो, पण कोई कारणथी (क जे जाहेरमा न मुकी शकाय) मेनेजरे उतारो आपवा आनाकानी करी हती आनु खुल्लु कारण "दिगंबर जैन" पत्रना अधिपति श्रीयुत मुलचंदभाईने जणावता अने ने श्रीमान् शेठ साहेबनां जाणवामा आवता मने बोलावी तेमणे करेली तपास तेमनी एक स्थानकवासी जेन फिरकाना विद्यार्थी तरफनी सहानुभूति, प्रेम, वर्तन अने वार्तालापना समयनो विचार करता आ वखने ते परोपकारी शेठनी मूर्ति म्हारा हृदय समक्ष खडी थाय छे ते समयने आजे याद करता, तेमनी अनुकरणीय प्रवृत्ति याद करता थोडाक अश्रु बिंदुओ मुकवा सिवाय हृदयनु यथेच्छ शान्तवन थई शकतु नथी तेमना सहवासमा आवला बळको किंवा वृद्धोने तेमना उच्च चरित्र, तेमनी मायाळु वृत्ति—निरभिमानी स्वभावादिमाथी कईक ने कईक गुण शीखवानु मळी आवतु नेओश्री साधारण स्थितिमाथी लक्षाधिपति बन्या हता नामदार सरकारे तेमने जस्टीश ओफ धी पीस बनावी तेमनी कीर्तिमा वधारो कर्यो हतो छता तेओ वर्तनमा हु श्रीमान् छु के मोटो छु एवु जणाए जण तु नहि

आजकाल निर्धन स्थितिमाथी सामान्य पेना प्राप्ति थएली छे एवा केटलाक पुरुषोना सहवासमा आव्या हशो तो जणाई आव्यु हशे क तेमनी प्रकृतिमा केटलो फेरफार थाय छे? तेओ गामना नहि, पण जगतना स्वामी बन्या होय, तेम जगतना पुरुषोने तुच्छ के तृणवत् गणता अभिमानमा आंधळा बने छे! वीरनर माणेक! त्हारी आवी उदार शक्तिने याद करता खरेखर मगज भ्रमित थई जाय छे.

गयो! वीर माणे ! गयो! भविष्यना विद्यार्थीओ कोना शरणे जशे! भविष्यनी श्राविकाओने कोण सहाय करशे? उमारूओनी साची समाळ कोण लेशे? प्रांतिक कोन्फरन्सनी उत्तमोत्तम व्यवस्था कोण चलावशे? तीर्थोनी समाळ कोण लेशे? आ सर्वनी उपेक्षा करी आप णने तेना मानव शरीरे देवना कार्य करी बतावी तेना सुगुणो–उच्च विचारोना यशोगानमां अथडाता मुकी ते तो स्वर्गपथे चाल्यो गयो! आपणा वारसामां नाम तेनो नाश छे The rich, the poor, the great the small are levelled death confounds them all जे खं ल्यु छे ते खरवा माटे, जे जन्म्यु छे ते मरवा माटे, एम मानी अहर्निश सत्कार्यो करी आ मनाना दुर्लभ मनुष्य-देहनु सार्थक करवु ए तेमनु हृदयवेधक अवसान–मृत्यु आपणने अमूल्य हृदयमा कोतरी राखवालायक **अमूल्य पाठ** शीखवतु गयु छे नरवर माणेकचंदजी शेठे जैन कोमनी उन्नति अर्थे लगभग दश बार लाखनी मजावर सखावत–जेनो उपयोग जेम तेम नहि करता उत्तमोत्तम खाताओ स्थापी कर्तव्यपरायणी बनी परम पूज्य महावीर पिताए बतावला मोक्षना चार मार्ग दान–शील–तप–भावना ए चार-माथी प्रथम मार्गे शूरवीर बनी आत्मश्रेय करी पोताना नरतननु सार्थक कर्यु छे आपणा जैन समाज प्रति तेमणे जे उपकारो कर्या छे तेनी कदर जैन कोम केटले दरज्जे करी शके छे, ते आपणे जोवानु छे

अत्रमा 'गुणा पुजा स्थान गुणिषु न च लिङ्गम् न च वय' ए सुत्रने अनुसरी तेमनु अनुकरण करनारा नरवरो जैन समाजने प्राप्त थाय अने स्वर्गवासी शेठनी खोट पुरी पडे ए हृदयनी शुभेच्छा साथे

महुम शेठ माणेकचदजीना पवित्र आत्माने शाति इच्छु छु
ॐ शाति ॐ शाति ॐ शाति ।

एजुकेशन वीरबाळ-**वाडीलाल मुळजीभाई संघवी.**

('दिगम्बरजैन' वर्ष ७, अक १२)

जड देहनो त्याग अने यश पींडनुं अवतरण ।

अनादि काळथी जड देहनी क्षणभगुरता सिद्ध थयेल छे ए जट देहना निकट सबधमा रही अज्ञानतिमिर पडळने दूर करवा" ए सिद्धातने अनुसरवा चैतन्य अने जडनो सयोग थाय छे

वासासि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥

भगवद्गीता ।

जेवी रीते एक माणस जुना लुगडा काढी नाखी बीजा नवा लुगडा पहेरे छे, ते प्रमाणे 'आत्मा' जुना अगनो त्याग करी दई नवा अग धारण करे छे"

वेदातनो आ सिद्धात जैनदर्शनने मळतो छे ए सरळ दृष्टातथी आत्मानी प्रतीति थाय छे, अने व्यवहारिक दशामा थता शोकादि विकारोने दबावी आत्मानु अमरत्व साबित करे छे

जे व्यक्तिए ससारमा रही पोताना देहने अनुसरता कर्तव्य बजाव्या छे, जेणे मिथ्यादृष्टि टाळी स्वत प्रकाशित दृष्टिथी व्यवहारिक वर्तन चलाव्यु छे, जेणे क्रोधादी महान शत्रुओनी समीपमा रही, तेमना पासमा न पडता तेमनी साथे अडग युद्ध चलाव्यु छे, जेणे समयोचित नीतियुक्त कार्यदक्षतावडे देशी, विदेशी बधुओनु हित करवा यावज्जीवन कमर कसी छे, जेणे हृदयनु अपरिमित

सामर्थ्य व्यवहारिक अने पारमार्थिक कार्योमा बतावी आप्युं छे, आवी रीते तन मन अने धनने संसार यज्ञमा रहेतु के बलिदान आपनार "कर्मवीर दानवीर शेठ माणेकचंदजीना जडपींडनु अवसान थाय, तेमा शोक शेनो ?

संसारनी विचित्र घटनाना भार तळे दबाएलो आत्मा योग्य समये ते बोजो आघो फेंकी दई, निरुपाधि थई स्वधाममा जई रहे एमा शोक शानो ?

अनत चतुष्टयधारक आत्मा पोतानी सुखवीर्यादि शक्तिओनो योग्य आविर्भाव करी संसार समुद्रनी पार जवा मथन करे तेमा शोक शेनो ?

बधुओ ! व्यवहार योगीना जडदेहनु अवसान शोककारक लेखातु नथी कोई स्नेही स्वधीने श्रम उठाववामाथी बचेला जोईने आपणने हर्ष थाय के शोक थाय ?

कोई स्नेही सवधीने विलायतमा ऊचा प्रकारनो अधिकार मळे, एथी आपणने हर्ष थाय के शोक ?

बेशक, आपणी स्वार्थबुद्धिथी नहि, परन्तु निर्मळ वात्सल्य-भावथी आपणे आपणा स्वजनोनी अधिकतर सारी स्थिति जोई आन-दित थईए छिए कारण —

'भले ते दरियापार, देशपार के पछी देहबहार होय, परन्तु तेना यश पींडना परमाणुओ आपणा वातावरणमांज प्रसरी रहे छे. ते परमाणुओना स्कध बने छे अने ते स्कधो बीजा पुद्गळ रचवामा सहायभूत थई नवीन तेजथी प्रकाशी नीकळे छे "

आ सिद्धात सत्य हो वा असत्य हो, परन्तु एटलु तो सत्यज

छे के –मक्तिभावथी द्रवित थयेला अन्तःकरणो तो आ यशपीडना परमाणुओने ग्रहण करशेज करशे

नागरदास नरोतमदास संघवी, केरवाडा-(भरूच)
(दिगम्बर जैन वर्ष ७ अंक १२)

कितनेक पत्रोंके अभिप्राय ।

सेठ मानिकचंद हीराचंद, जे० पी० ।

गत आषाढमें एक बडे दानी और धर्मनिष्ठ जैनका देहान्त बम्बईमें हो गया । इनका नाम सेठ मानिकचन्द था । इनके पिता, हीराचन्द सूरतके रहनेवाले थे । उनके चार पुत्र हुए–मोतीचन्द, पानाचंद, मानिकचन्द और नवलचंद । इन चारों भाइयोंने बम्बईमें पहले मोतीका रोजगार शुरू किया, पीछेसे वे जवाहरातका रोजगार भी करने लगे । धीरे धीरे इनका रोजगार बढा । लाभ भी होने लगा । मानिकचन्द पानाचन्द जौहरीके नामसे ये काम करने लगे । सेठ मानिकचन्दने अपने व्यवसायकी इतनी उन्नति की कि कुछ ही वर्षोंमें ये अमीर हो गये । ६२ वर्षकी उम्रमें इन्हीं सेठ मानिकचन्दने, बिना किसी बीमारीके, परलोकके लिए प्रस्थान कर दिया । रातको ११ बजे ये आरामसे लेटे । कुछ देर बाद अकस्मात् हृदयका स्पन्दन बन्द हो गया और इनकी इस लोककी लीला समाप्त हो गई । इनकी दानशीलतासे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने इन्हें जे० पी० (जस्टिस आव् दि पीस) की पदवीसे अलङ्कृत किया था । इन्होंने अपने जीते जी आठ नौ लाख रुपया जैन मन्दिरों, तीर्थों और ग्रन्थोंके जीर्णोद्धार करने, धर्मशालायें और

छात्रावास बनवाने, स्कूल, औषधालय और श्राविकाश्रम खोलने और छात्रवृत्तियां देनेमें खर्च कर दिया। इसके सिवा २॥ लाख रुपयेकी वसीयत भी कर गये है, जिसके व्याजसे जैन तीर्थ-रक्षा, परीक्षालय, छात्रवृत्तियां और धर्मोपदेश आदिका काम होता रहेगा। रुपयेका सद्व्यय इसे कहते है।

" सरस्वती " (सितम्बर १९१४)

× × × ×

दानवीरका देहान्त।

बडे शोकसे लिखना पडता है, कि इस सप्ताहमें जैन जातिका एक रत्न इस असार संसारसे उठ गया। बम्बईके जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी अब इस संसारमें नहीं है। सेठजीकी विद्वत्ता, धार्मिकता, दानशीलता और उदारताकी जितनी प्रशंसा करें, थोडी है। आप सच्चे जैनी और अपनी जातिके अग्रगण्य-अगुआ थे। मृत्यु समय आपकी अवस्था ६२ वर्षकी थी। आपके समान दानी इस समय भारतमें विरले ही होंगे। इसीसे आप दानवीर कहे जाते थे। जैनियोंमे आपका खाली स्थान मुश्किलसे पूरा किया जा सकेगा।

" वेंकटेश्वर समाचार " (मुंबई) ता० २४-७-१४.

× × × ×

माणिकचन्द हीराचंद जौहरी।

माणिकचन्द जौहरीकी मृत्युसे जैनजाति और भारतवर्षका एक जवाहिर उठ गया। माणिकचन्द बम्बईके बडे धनी व्यापारी थे। बहुत दिनोंसे धर्मके अर्थ ही अपना जीवन उन्होंने समर्पित कर दिया

दिगम्बर जैन डिरेक्टरी तैयार करावी छे धर्मरक्षण अने धर्मसेवाना काम माटे तेओ मुसाफरी पण बहु करता स्वभावे सादा, साळ, निरभिमानी अने मायाळू हता आ नररत्ननी खोट जैन वर्गमां वर्षो सुधी पुरावी मुश्केल छे आवा पुरुषोनी सद्गति माटे काई इच्छवानु रहेतुन नथी एमनी पाछळ एक स्मारक फंड थयु छे, जे सतोष लेवा जेवु छे

"जैनहितेच्छु" (बम्बई) ओगष्ट १९१४

THE LATE "DANVIR" SHETH MANECKCHAND HIRACHAND

On this side of India Sheth Maneckchand was known as a great philanthropist Born in Surat in Vikram Samvat year 1908, he died only a short time ago at the age of 62 His father Hirachand was poor and so was his grandfather Gumanji who emigrated to Surat from Bhindar (Udaypore) in A D 1840 to trade in opium in a small way Circumstances made the family to go to Bombay, where Maneckchand with his three brothers began business in a humble way and learnt the profession of pearlborers and stringers Fortune favored their honest efforts, and in a short time they began to purchase and sell land in Bombay at a great profit Ultimately they settled down as pearl merchants, exporting pearls to Europe and making huge profits Although a man with comparatively very little education Maneckchand's outlook on life was very wide, and just as he was able to amass a huge fortune, so he spent generously huge sums in works of charity His total gifts come to near ten lacs of Rupees and he

fully deserved the appelation of 'Danvir Jainkulbhusan' which was bestowed on him in these parts

He belonged to the Digambar sect of Jains, and in all parts of India his helping hand reached the needy and poor of his community and assisted them most liberally He early saw the utility of Boarding Houses if education was to spread, and his long purse was always opened to plan out and build Hostels in several towns in and out of the Bombay Presidency In Bombay proper, he would best be remembered by the splendid pile of building, which he has erected in that part of the town which is most thickly inhabited by Hindus, and called the Hirabag It is used as a Dharmashala for all Hindu pilgrims where they get accommodation of the best class and as an appanage of which is a fine lecture hall, which is used as a Town Hall of the locality A mere perusal of the list of his donations is enough to engender feelings of admiration for a man, who in raising himself from poverty to wealth never forgot the uses to which his enormous wealth could be put, and consequently gave them a practical and enduring shape Even on his death bed he has made a trust of Rupees two lacs and a half, all to be utilised for (sectarian) charitable purposes

He gave away Rs 8,000 for repairing a Jain temple at Surat, Rs 25,000 for building a Dharmashala at Surat, Rs 21,000 for repairing a Dharmashala at Palitana, Rs. 80,000 for a Jain Boarding House in Bombay Rs. 22,000 for a Jain Boarding House at Kolhapur, Rs. 10,000 for a similar institution at Ahmedabad, Rs 1,25,000 for a Dharmshala (Hirabag) in Bombay, Rs 50,000 for a boarding house at Jabbalpore, Rs. 15,000 for a dispensary at Ahmedabad

Various small sums between 6,000 to 10,000 for charitable purposes such as founding schools for girls, scholarships preparing Jain Directories, have not been included in the list Government rewarded him with a justiceship of the peace

It is no small wonder if the Digambar Jain community is mourning his loss as they would mourn the loss of a king

"Modern Review" Calcutta September 1917

राजा राणा छत्रपति हथियनके असवार । मरना सबको एक दिन अपनी अपनी वार ॥
दल बल देवी देवता मात पिता परिवार । मरती विरियां जीवको कोइ न राखनहार ॥

A great soul has passed away from amongst us, to accelerate his evolution to perfection *Danaveer, Jain Kula Bhushan, Shriman Seth Maneckchand Hirachand Justice of the Peace, Bombay,* was a respected and honoured name in every Jain family throughout India, and the grief caused by his parting is as general and wide spread *Jati sewak* or servant of the community is a title lightly adopted by many a young and old hypocrite as a means for gaining low personal ends But the great man, for whose loss to us we are in mourning to day, was a real benefactor and had the service of the Jain community at heart Born in 1851 in a great and famous family of jewellers, he for the last 16 or 17 years devoted the greater part of his life and fortune to the service of religion and community He did not know the English language but in the Jain community he was the first to conceive the idea of establishing Jain Boarding Houses to afford large and special facilities to students In 1898 at a cost of Rs 80,000 he founded

the *Hirachand Gumanji Jain Boarding House* in Bombay, named after his respected father He was a lover of Boarding Houses, a *Boarding Premi* as some of his malevolent critics at one time nicknamed him The Students' Boarding Houses at Ahmedabad Kolhapur, and Rutlam gradually came into existence The first impulse and initial support to what is now a splendid Boarding House at Jubbulpur was also given by him His benefactions were not limited to any city or province He worked hard, and contributed liberally wherever necessary towards the establishment of such Boarding Houses at Agra, Allahabad, Lahore Sholapur, Hubli, Sangli, Mysore, Banglore, Vardha, and Akola His activities were not however, limited in one direction The Kashi Syadvad Mahavidyalaya, was opened by him, and he made substantial donations to the permanent and current funds of the institution He was the President of its Committee of management

He was a firm believer in ' female education ' His beloved daughter *Mahila Ratna* (the jewel among ladies) *Shrimati Maganbai* is a well-read scholar of Jain Scriptures, and her knowledge of Jain philosophy is quite adequate to place her in the front rank of Pandits Her Shravikashram at Jubilee Bagh, Tardeo, Bombay a splendid building which was dedicated to the Ashram by her father, is the only institution of its kind in the community It is both a Model School for girls and a Training College for lady teachers

He was also the President of the *Tirtha Kshetra Committee*, in which is vested the management of all places of pilgrimage among Jains This was an arduous task, and he performed it with a diligence, which is rare among the favoured sons of Dame Fortune

His charities again were not limited to the Jain community alone The Hirabagh Dharamshala is a splendid rest house at Bombay where all persons who abstain from animal food, can stay free of charge Special furniture and necessary articles are also supplied to those who require them at very moderate charges The lecture Hall at Hirabagh is a well known place for public lectures at Bombay

In his mercy for the dumb creatures, he constantly distributed free and gratis a vast literature of the Humanitarian League and Vegetarian Societies

In his last days he was maturing a scheme for the efficient protection of milch-cattle, who, when they cannot supply milk are generally sold to the butcher for their flesh and skin His death was a sudden and painless one He worked as usual till within an hour or two of his last breath

His last idea which he discussed on the day he died with Mr M H Udani, M A, was that there should be established a Boarding House, with a *Chaityalaya* (place of worship), in London for the convenience of Jain students and visitors there And we trust that the Jain community will carry out this last wish of their great departed benefactor by establishing a Manekchand Boarding House in London, and thus perpetuate his illustrious name for ages to come

We offer our sincere and heartfelt condolence to the illustrious lady, Jain Mahila Ratna, Shrimati Maganbai, and to all other members of the family, in the sad bereavement, which, we seriously say, is a bereavement not theirs alone, but of the whole Jain community throughout India

The 'Digamber Jain' of Surat has brought out an obituary number giving a brief life sketch of the Philanthrophic Seth and a pathetic poem extolling his deeds and virtues and has enclosed a good portrait of the deceased

Death has no power th' immortal soul to slay,
That, when its present body turns to clay,
Seeks a fresh home, and with unlessened might,
Inspires another frame with life and light
Souls cannot die They leave a former home
And in new bodies dwell, and from them roam
Nothing can perish, all things change below
For spirits through all forms may come and go
Good beasts shall rise to human forms and men,
If bad, shall backward turn to beasts again
Thus, through a thousand shapes, the soul shall go,
And thus fulfil its destiny below

Jain Gazette" (Lucknow) July 1914



हाय ! जैनसंसारके भाग्याकाशका चमकता हुआ तारा टूट पडा ! ! !

समाचार तो केवल इतना ही है कि जैनसमाजके प्रसिद्ध दानी और मान्य श्रीयुत सेठ माणिकचन्द्रजी जे. पी अब इस संसारमें नहीं है । पर हाय ! कैसा भयानक, कैसा लोमहर्षण समाचार ! एक महान् आत्मा बातकी बातमें चल बसा ! जिसका स्वप्नमें भी भान नहीं था, वह बात आँखोंके सामने आ उपस्थित हुई ! जैनसमाज वैसे ही तो दुर्बल है, उसे अभी उठने तककी भी तो शक्ति प्राप्त नहीं हुई कि उसे हाथका सहारा देकर उठना सिखानेवाला ही एकाएक गायब ! जैनसमाज अभी थोडा भी कष्ट उठालेनेको तैयार

भी बहुत कम संभावना है । यद्यपि आज सारे जैनसमाजमें सेठजी की कीर्तिपताका फहरा रही है और सभी लोग उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा कर रहे है, तो भी हमारा विश्वास है कि वास्तवमे सेठजी किस श्रेणीके पुरुषरत्न थे, इस बातको बहुत ही कम लोग जानते होंगे । उनके हृदयमें जैनसमाजके प्रति जो भावनायें रहती थी जिन निष्कपट वृत्तियोंसे वे समाजसेवामें अहर्निश तत्पर रहते थे और जिन शान्तता उदारता तथा धीरतादि गुणोंसे उन्हें प्रत्येक काममें सफलता मिलती थी, उन सबके परिचय प्राप्त करनेका जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे उन्हें केवल दानवीर और धनी ही न समझते थे, किन्तु एक महात्मा समझकर अतिशय पूज्यदृष्टिसे देखते थे । सेठजीने गत बारह वर्षोंमें जो जो काम किये है, उन सब पर दृष्टि देनेसे यदि यह कहा जाय कि वे इस समयके युगप्रवर्तक थे—उनके प्रयत्नोने जैनसमाजमें एक नया युग उपस्थित कर दिया है, तो कुछ अत्युक्ति न होगी । केवल रथप्रतिष्ठाओंमें और मन्दिर बनवानेमे ही लाखों रुपया प्रति वर्ष खर्च करके सन्तुष्ट हो जानेवाले जैन समाजके धनियोंका चित्त विद्यामन्दिर स्थापित करनेकी ओर आकर्षित करनेका प्रधान श्रेय सेठ माणिकचन्दजीको ही प्राप्त था । उनकी देशव्यापी असाधारण कीर्तिने धनियों पर वह प्रभाव डाला है, जो बीसों समाचारपत्र, पचासों उपदेशक और सैकड़ों सभा समितियाँ नहीं डाल सकती हैं । यह आपहीके सभापति पदका प्रभाव है, जो सभा सुसाइटियोंको ढकोसला मात्र समझकर उनकी ओर आँख न उठानेवाले धनाढ्य लोग आज उन्हीं सभाओंके सभापति बननेके लिए रहते हैं और अपने प्रभावसे

पुरुषोंक द्वारा इसके लिए प्रयत्न तक कराते हैं ।

सेठजी केवल दानवीर ही थे, वे कर्मवीर भी थे। धनवानोंमें दानवीर तो अनेक है और आगे और भी हो जावेंगे, परन्तु सेठजी जैसा कर्मवीर होना कठिन है । उन्होंने जैनसमाजके लिए अपने पिछले जीवनमें कई वर्षों तक अश्रान्त परिश्रम किया है। यदि उनकी पिछली चार पॉच वर्षकी दिनचर्या देखी जाय, तो मालूम होगा कि जैनसमाजकी सस्थाओंके लिए उन्हें प्रतिवर्ष कमसे कम तीन महीने प्रवास–पर्यटनमें रहना पडा है और अपने व्यापारादिके तमाम काम छोडकर प्रतिदिन चार पाँच घण्टे प्रान्तिक सभा, तीर्थक्षेत्रकमेटी तथा अन्यान्य सस्थाओंके लिए देना पडे है । समाजके किसी कार्यके लिए उनको आलस्य न था। हर समय हर कामके लिए व कटिबद्ध रहते थे । इस समय दिगम्बर जैनियोंके जो डेड दर्जनसे अधिक बोर्डिंग स्कूल है, उनमें आपकी दानवीरताकी अपेक्षा कर्मवीरताने अधिक काम किया है ।....

सेठजी न अँगरेजीके विद्वान् थे और न सस्कृतके, वे साधारण देशभाषाका पढना लिखना जानते थे । परन्तु उन्होंने अपने जीवनमें जो कुछ किया है, उससे बाबू लोग और पण्डितगण दोनों ही बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते है । ज्ञानकी अपेक्षा आचरण अधिक आदरणीय है । उनका अनुभव बहुत बढाचढा था । जैनसमाजके विषयमें जितना ज्ञान उनको था, उतना बहुत थोडे लोगोंको होगा ।

यदि सक्षेपमें पूछा जाय कि सेठजीने अपने जीवनमें क्या किया ? तो इसका उत्तर यही होगा कि जैनसमाजमेंसे जो विद्याकी

प्रतिष्ठा उठ गई थी, उसको उन्होंने फिरसे स्थापित कर दिया और जगह जगह उसकी उपासनाका प्रारम्भ करा दिया। सेठ जीके हृदयमें विद्याके प्रति असाधारण भक्ति थी। यद्यपि वे स्वयं विद्वान् न थे, तो भी विद्याके समान मूल्यवान् वस्तु उनकी दृष्टिमें कोई न थी।

सेठजीके हृदयमें यह बात अच्छी तरह जम गई थी कि अँगरेजी स्कूलों और कालेजोंमें जो शिक्षा दी जाती है, वह धर्मज्ञानशून्य होती है। उनमेंसे बहुत कम विद्यार्थी ऐसे निकलते हैं जो धर्मात्मा और अपने धर्मका अभिमान रखनेवाले हों। अपनी जाति और समाजके प्रति भी उनके हृदयमें आदर उत्पन्न नहीं होता है। परन्तु वर्तमान समयमें यह शिक्षा अनिवार्य है-अँगरेजी पढ़े विना अब काम नहीं चल सकता है, इसलिए कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे इनके हृदयमें धर्मकी वासना स्थान पा लेवे। इसके लिए आपने 'जैन बोर्डिंग स्कूल' और उनमें स्कूल कालेजके विद्यार्थियोंको रखकर उन्हें प्रतिदिन एक घण्टा धर्म शिक्षा देना लाभकारी समझा। इस ओर आपने इतना अधिक ध्यान दिया और इतना प्रयत्न किया कि इस समय दिगम्बर समाजके लगभग २० बोर्डिंग स्कूल काम कर रहे हैं।

संस्कृत पाठशालाओंकी ओर भी आपका ध्यान था—संस्कृतकी उन्नति आप हृदयसे चाहते थे, परन्तु इस ओर आपके दानका प्रवाह कुछ कम रहा है--पूर्ण वगसे नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि एक तो कोरी संस्कृत शिक्षाको आप अच्छी न समझते थे—इस समय वह जीविकानिर्वाहके लिए उपयोगी नहीं और

सस्कृत पाठशालाओंकी पढाईका पुराना ढचरा तथा उनके प्रबन्धकी कठिनाइयाँ आपको इस ओर प्रवृत्त न होने देती थीं। तो भी आप सस्कृतके लिए बहुत कुछ कर गये है। बनारसकी स्याद्वाद-पाठशालाने आपके ही लगातार उद्योगसे चिरस्थायिनी सस्थाका रूप धारण किया है, आपके बोर्डिंग स्कूलोमें वे विद्यार्थी प्रथम स्थान पाते है जिनकी दूसरी भाषा संस्कृत रहती है और संस्कृतके कई विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्कालर्शिपें भी मिलती है। अपने पिछले दानमें वे जैनपरीक्षालयको स्थायी बना गये है। उक्त दानका और भी बहुत अश सस्कृतकी उन्नतिमें लगेगा।

सेठजी बडे ही उदार हृदय थे। आम्नाय और सम्प्रदायोंकी शोचनीय सकीर्णता उनमे न थी। उन्हें अपना दिगम्बर सम्प्रदाय प्यारा था, परन्तु साथ ही श्वेताम्बर सम्प्रदायके लोगोंसे भी उन्हें कम प्रेम न था। वे यद्यपि बीसपथी थे, पर तेरहपथियोंको अपनेसे जुदा न समझते थे। उनके बम्बईके बोर्डिंग स्कूलमें सैकडों श्वेताम्बरी और स्थानकवासी विद्यार्थियोंने रह कर लाभ उठाया है। एक स्थानकवासी विद्यार्थीको उन्होंने विलायत जानेके लिए अच्छी सहायता दी थी। उनकी सुप्रसिद्ध धर्मशाला हीराबागमें निरामिषभोजी हिन्दूमात्रको स्थान दिया जाता है। साम्प्रदायिक और धार्मिक लडाईयोंसे उन्हें बहुत घृणा थी। उनकी प्रकृति बडी ही शान्तिप्रिय थी। पाठक पूछेंगे कि यदि ऐसा था तो वे मुकद्दमेंबाजी-में सिद्धहस्त रहनेवाली तीर्थक्षेत्रकमेटीके महामत्री क्यों थे? इसका उत्तर यह है कि वे इस कार्यको लाचार होकर करते थे। अपने ढाई लाखके अन्तिम दानपत्रमे व तीर्थक्षेत्रोंकी रक्षाके लिए $\frac{७}{१००}$

भाग दे गये है, परन्तु उसमें साफ शब्दोंमें लिख गये हैं कि इसमेंसे एक पैसा भी मुकद्दमोंमें न लगाया जाय इससे सिर्फ तीर्थोंका प्रबन्ध सुधारा जाय ।

जैनग्रन्थोंके छपाने और उनके प्रचार करनेके लिए सेठजीने बहुत उद्योग किया था । यद्यपि स्वयं आपने बहुत कम पुस्तकें छपाई हैं, परन्तु पुस्तकप्रकाशकोंको आपने खूब जी खोलकर सहायता दी है । उन दिनोंमें जब छपे हुए ग्रन्थोंकी बहुत कम विक्री होती थी, तब सेठजी प्रत्येक छपी हुई पुस्तककी डेड डेड सौ, दो दो सौ प्रतियाँ एक साथ खरीद लिया करते थे जिससे प्रकाशकोंको बहुत बडी सहायता मिलती थी । इसके लिए आपने अपने चौपाटीके चैत्यालयमें एक पुस्तकालय खोल रक्खा था—उसके द्वारा आप स्वयं पुस्तकोंकी विक्री करते थे और इस काममें आप अपनी किसी तरहकी वेइज्जती न समझते थे । जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय तो आपका बहुत ही उपकृत है । यदि आपकी सहायता न होती, तो आज वह वर्तमान स्वरूपको शायद ही प्राप्त कर सकता । आप छापेके प्रचारके कट्टर पक्षपाती थे, परन्तु इसके लिए लडाई झगडा खण्डन मण्डन आपको बिलकुल ही पसन्द न था । जिन दिनों अखबारोंमें छापेकी चर्चा चलती थी, उन दिनों आप हमें अक्सर समझाते थे कि " भाई तुम व्यर्थ ही क्यों लडते हो ? अपना काम किये जाओ—जो शक्ति लडनेमें लगाते हो, वह इसमें लगाओ, तुम्हें सफलता प्राप्त होगी—सारा विरोध शान्त हो जायगा । "

सेठजीके कामोंको देखकर आश्चर्य होता है कि एक साधारण पढे लिखे धनिक पर नये जमानेका और उसके अनुसार काम



करनेका इतना अधिक प्रभाव कैसे पड गया। जिन कामोंमें जैन-समाजका कोई भी धनिक खर्च करनेको तैयार नहीं हो सकता, उस काममें सेठजीने बडे उत्साहसे द्रव्य खर्च किया है। दिगम्बर-जैन-डिरेक्टरी जो छपकर तैयार हुई है—एक ऐसा ही काम था। इसमें सेठजीने लगभग १५ हजार रुपये लगा दिये हैं। दूसरे धनिक नहीं समझ सकते कि डिरेक्टरी क्या चीज है और उससे जैनसमाजको क्या लाभ होगा। विलायतमें एक 'जैन छात्रावास' बनवानेकी ओर भी सेठजीका ध्यान था, परन्तु वह पूरा न हो सका।

दिगम्बर जैनसमाजमें इस समय कई पक्ष या दल हो रहे हैं। जिसे देखिए वही अपने पक्षका गीत गाता है और दूसरेको नीचा दिखानेका प्रयत्न करता है, परन्तु सेठजीका पक्ष इन सबसे निराला था, उनकी दृष्टि सदा समूचे जैनसमाजके कल्याणकी ओर रहती थी। किसी भी पक्षसे वे द्वेष न रखते थे। जब कभी इन पक्षोंमें लडाई झगडोंका मौका आता था और वह शान्त न होता था तब आप तटस्थवृत्ति धारण कर लेते थे। ऐसे अनेक मौके आये हैं जब अखबारोंमें आप पर बहुत ही अनुचित आक्रमण हुए हैं, परन्तु आपने उनमेंसे एकका भी खण्डन या परिहार करनेका प्रयत्न नहीं किया है।

धनवैभवका मद या अभिमान सेठजीको छू तक न गया था। इस विषयमें आप जैनसमाजमें अद्वितीय थे। गरीबसे गरीब ग्रामीण जैनीसे आप भी बडी प्रसन्नतासे मिलते थे—उससे बातचीत करते थे और उसकी तथा उसके ग्रामकी सब हालत जान लेते थे।

आप शामके दो घण्टे प्राय इसी कार्यमें व्यतीत करते थे। सैकडों कोसोंकी दूरीसे आये हुए यात्री जिस तरह आपकी कीर्तिकहानियाँ सुना करते थे, उसी तरह प्रत्यक्षमें भी पाकर और आपके मुँहसे चार शब्द सुनकर अपनेको कृतकृत्य समझने लगते थे।

विलासिता और आराम तलबी धनिकोंके प्रधान गुण हैं। परन्तु ये दोनों बातें आपमें न थीं। आप बहुत ही सादगीसे रहते थे और परिश्रमपर प्रेम रखते थे। अनेक नौकरों चौकरोंके होते हुए भी आप अपने काम अपने हाथसे करते थे। इस ६३ वर्षकी उमर तक आप सबेरेसे लेकर रातके ११ बजे तक काममें लगे रहते थे।

सेठजीकी दानवीरता प्रसिद्ध है। उसके विषयमें यहाँ पर कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं। अपने जीवनमें उन्होंने लगभग पाँच लाख रुपयोंका दान किया है जो उनके जीवनचरितमें प्रकाशित हो चुका है। उसके सिवाय उनके स्वर्गवासके पश्चात् मालूम हुआ कि सेठजी एक २॥ लाख रुपयेका बड़ा भारी दान और भी कर गये हैं जिसकी बाकायदा रजिस्टी भी हो चुकी है। बम्बईमें इस रकमकी एक आलीशान इमारत है जिसका किराया ११००) महीना वसूल होता है। यह द्रव्य उपदेशकभण्डार, परीक्षालय, तीर्थरक्षा, छात्रवृत्तियों आदि उपयोगी कार्योंमें लगाया जायगा। इसका लगभग आधा अर्थात पाँच सौ रुपया महीना विद्यार्थियोंको मिलेगा।

सेठजीके किन किन गुणोंका स्मरण किया जाय, वे गुणोंके आकर थे। उनके प्रत्येक गुणके विषयमें बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

"जैनहितैषी" ज्येष्ठ वीर स० २४४०

ग्रन्थकर्ताका प्रयोजन ।

माननीय सम्पादक, "दिगम्बर जैन," सेठ मूलचद किसनदासजी कापडियाकी प्रेरणा और सेठ साहबके वे अलौकिक गुण जो ग्रन्थकर्ताने स्वय अनुभव किये हैं और जिनका वर्णन वाचकोंको सुमार्ग पर आकर्षण करनेवाला है इन दोनोंने मुझे प्रेरित किया कि मैं सेठजीकी जीवनी जो एक बहुत बडी इतिहासकी वार्ताओंकी माला है लिखनेका उद्यम करूँ। मेरा प्रयोजन इस जीवनके प्रकाशमें अपनी शुभ भावनासे अपना लाभ और दूसरा वाचकोंको पढनेसे जो उनके जीवन पर असर पडेगा उसका अपूर्व लाभ है। जहा तक मसाला सग्रह कर सका वर्णन यथाशक्ति यथार्थ लिखा गया है तौ भी यदि कहीं अज्ञान व प्रमादवश भूल रही हो उसको विज्ञ पाठकगण सुधार लेवें तथा प्रकाशकको खबर करें जिससे आगामी आवृत्तिमें ठीक हो जावै।

प्रजा वत्सल व शिक्षाप्रचारके अग्रगामी महाराज सयाजीरावके शातमय बडौदा राज्यमें वीर स० २४४२-४३ के चातुर्मासमें ठहरकर व रात्रि दिन उपयोग लगाकर इस जीवनचरित्रको आजकी रात्रिमें पूर्ण किया है। यद्यपि इसका प्रारभ बडौदा आनेके पहले हो चुका था पर बहु भाग इसी शुभ स्थानमें ही लिखा गया है।

इस ग्रथको पढकर पाठकगण सेठ माणिकचदजीके सद्गुणोंका अनुकरण करके पवित्र जिन धर्मके प्रचारमें व जैन जातिको शिक्षित बनानेमें तन, मन, धन अर्पण करनेवाले हों। यही भावना करता हुआ विश्राम लेता हू और अपने द्वारा रही हुई इस ग्रथमें त्रुटियोंके लिये सज्जनोंसे क्षमाका प्रार्थी हू।

दिगम्बर जैन मदिर, वाटी वडौदा।	पवित्रधर्म व समाजकी वृद्धि चाहनेवाला-
वीर स० २४४३ मगसर वदी १०	ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद
ता० २०-११-१६	सम्पादक "जैनमित्र"-सूरत।

THE TRUST DEED OF

Sheth Hirachand Gumanji Dharmshala

HIRABAG.

Daily No 7,

Presented at the Bombay Sub Registrar office on Monday the 10th June 1907 between the hours of 2 and 3 p m

આનંદચંદ હીરાચંદ

J C D Almeida
Ag Sub Registrar

Received fees as follows —

Registration fee	Rs	100	0	0
Copying fee Folios 38		5	15	0
TOTAL	Rs	105	15	0

J C D Almeida
Ag Sub Registrar.

STAMP Rs 500

MESSRS MULJI AND KHAMBATTA

Stamp Rs Five hundred only

Assistant Superintendent of Stamps

General Stamp Office, Bombay 15th February 1907

CERTIFIED under section 32 of Act No 11 of 1899 that the full stamp duty Rupees (500) Five hundred only with which this instrument is chargeable has been paid

Seal of Court

(Signature)
Collector.

This Indenture made the tenth day of June one thousand nine hundred and seven BETWEEN MANEKCHAND HIRACHAND and NAVALCHAND HIRACHAND both of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants of the one part and MANEKHAND HIRACHAND NAVALCHAND HIRACHAND, HIRACHAND NEMCHAND, CHOONILAL JAVERCHAND, LALOOBHAI PREMANAND, RAJA GNANCHAND, son of Raja Bahadur Musavir Jung Raja (Deen Dayal) and TARACHAND NAVALCHAND all of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants hereinafter unless otherwise designated called the said trustees which trust shall unless repugnant to the context or meaning thereof include the survivors or survivor of them and the heirs executors and administrators of such survivor their successor or successors and the trustees for the time being of these presents) of the other part Whereas one Panachand Hirachand, Premchand Motichand, the said Manekchand Hirachand and the said Navalchand Hirachand were carrying on business in partnership as jewellers and shroffs in Bombay had with the intention of perpetuating the memory and comemorating the name of Sheth Hirachand Gumanji deceased, set apart a certain sum of money from the profits of their business for the purpose of building a Dharamsala to be called "Hirabāg" and for diverse other charitable purposes hereinafter mentioned for the use and benefit of the Jains in the first instance and generally for the benefit of other high caste Hindus visiting Bombay for a temporary purpose or staying in Bombay for a short period that is to say for the purposes of travel, business, trade, profession service,

pilgrimage and other like purposes and whereas the said Premchand Motichand and Panachand Hirachand died in Bombay on or about the eleventh day of April one thousand nine hundred and three and the fifteenth day of October one thousand nine hundred and three respectively and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand *out of the said sum so set* apart as aforesaid purchased at a cost of Rupees fifty six thousand in the names of both of them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand a piece or parcel of land or ground hereditaments and premises situate at Kavasji Patel Tank Road within the town of Bombey More particularly described in the schedule hereunder written and subsequently made certain alterations and additions in the said premises at a total cost of Rupees forty three thousand and hence the whole property is *about a lac of Rupees worth* And Whereas the said manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of establishing in the said premises hereinafter *unless otherwise designated* referred to as the trust estate a Dharamsala for the use and benefit of the persons aforesaid And also a charitable dispensary and are further desirous of allowing a portion to be used as a Hall for the purpose and with the object hereinafter mentioned And of setting apart a portion of the said premises to be used as an office for the purpose of transacting such business as may be connected with the diverse charities established or that may be established hereafter by the descendant of the said Hirachand Gumanji and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of declaring a trust thereof and of inviting some other fit and proper persons to join with

them as trustees upon the trusts and uses and fort he ends intents and purposes and with and subject to the powers, provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter mentioned, declared and contained concerning the same And Whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand having requested the said Hira chand Nemchand Choonilal Javerchand, Laloobhai Premanand, Raja Gnanchand son of Raja Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand to act as trustees along with them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand they the said Hirachand Nemchand, Choonilal Javerchand, Laloobhai Premanand, Raja Gnanchand son of Raja Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand have consented to act as such trustees by being parties to these presents Now this Indenture witnesseth and it is here by declared, that the lands hereditaments and premises hereinafter described were purchased out Of the said trust moneys and this indenture further witnesseth that in pursuance and in consideration of the premises they the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand do and each of them doth by these presents grant convey and assure unto the said trustees the said trust estate being all that piece or parcel of land or ground together with all buildings standing thereon situate lying and being at the said *Kavasji patel Tank Road* within the Town and Island of Bombay and more particularly described in the Schedule hereunder written and delineated on the plan hereto annexed and therein surrounded by a red boundary line together with all houses, out houses buildings, yards, ways, wells, waters, water courses,

sewers, ditches, drains, lights, liberties easements advantages, profits, privileges and appurtenances whatsoever to the said trust estate or any part thereof belonging of in anywise appertaining or with the same or any part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appurtenant thereto And all the estate, right, title interest, claim and demand whatsoever both at law and in Equity af them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand into or upon the said trust estate and every part thereof To have and to hold the said trust estate hereby granted and assured or expressed so to be unto the said trustees to the use upon the trusts and for the ends intents and purposes and with under and subject to the powers, provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter limited, declared and contained of and concerning the same that is to say that the said trustees shall hold and stand possessed of the said trust estate upon trust Firstly to allow such portion of the said trust estate as is coloured *yellow* on the plan hereto annexed to be used as a Dharamsala or resting-place for the use and benefit of Jains and other high caste Hindus visiting Bombay for the purpose of travel, business, trade, profession, service, pilgrimage and other like purposes with power to the said trustees to allot and setapart for the purposes aforesaid such further portion or portions out of the said trust estate as are hereinafter directed to be let to tenants as the trustees may from time to time deem fit and proper Provided always and it is hereby further agreed and declared that preference shall always be given to the Hindus professing the Jain pursuasion.

Secondly to allow a portion of the said trust estate for the purpose of opening a Dispensary replete with such drugs and chemicals as may not be repugnant to the feeling of a person Professing the Jain religion for the use and benefit of such persons and on such terms and conditions as the trustees may from time to time prescribe Thirdly to allow a portion of the said of trust estate to be used as a Hall or meeting-place (for the use of the Jains and other Hindus generally) for the purpose of delivering sermons, or lectures on religion, ethics, science, education, or for holdings meetings for any lawful purpose or for performing Jain religious rites and ceremonies or for such other purposes of a like nature and on such terms and conditions as the said trustees may think fit or proper Fourthly to allow a portion of the said trust estate for opening an office for the transaction and management of business aforesaid as well as of business relating to diverse charitable institutions established or to be established by the heirs and descendants of Seth Hirachand Gumanji Fifthly to let out such portion of the trust estate as is coloured *red* on the plan hereto annexed to such tenants or tenant and on such rent or rents and upon such terms and conditions as the said trustees in their absolute discretion may deem fit and the said trustees shall collect, get in and recover the rents and profits thereof and pay thereout in the first instance all rates and taxes of what nature and kind soever payable to the Government of Bombay and the Municipality of Bombay *Secondly* such sum or sums as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said trust estate in good order and Condition and insured against

loss by fire or accident and *lastly* the costs and ex[cut]
of and incidental to the management of the said
estate And shall out of the residue of such rent[cut]
profits thereof set apart (1) a sum equal to thirty
cent thereof to form the nucleus of a reserved fu[cut]
be used on occasions of urgency and emergency
accident such as in making repairs of a special
and in making additions and alterations into or
the said trust estate or any part thereof from tim[cut]
time as to the trustees may seem fit and proper
sum equal to forty percent for the purpose
establishing, equipping and maintaining the
Dispensary replete with all necessary instruments
appliances and also with such drugs, powders
chemicals as may not be repugnant to the feeling[cut]
persons professing the Jain religion for the use
benefit of persons professing the Jain religion
generally for all classes of high caste Hindoos and
the purpose of giving free of charge medical help
advice and dispensing medicines and for defraying
expenses of keeping a proper staff that is to say Doct[cut]
Compounders and other servants as may from time
time be found necessary And the trustees shall out
the residue of the said rents and Profits further set apar[cut]
sum equal to ten percent thereof and shall pay the sa[cut]
from time to time to the Secretary of the Digamb[cut]
Jain Prantic Sabha of Bombay as long as the office
the said Sabha remains in and continues to work
Bombay but if the said Sabha removes its office to a[cut]
other place out of Bombay then the said payment sh[cut]
discontinue and shall accumulate until the time t[cut]
said Sabha again remov[illegible] fice to and works in Bo[cut]

bay when the accumulated amount should be paid over to the said Sabha and payment of the said ten percent should thereafter be continued and the trustees shall out of the remaining twenty percent of the said residue pay such sum or sums of money to the poor members of the Jain Digamber Community who to the said trustees may appear deserving of support either in their business or for the purpose of maintaining them And it is hereby further agreed and declared that the Reserved Fund to be set apart as aforesaid and all sums of moneys remaining unexpended in the hands of the said trustees shall be invested in securities authorised under the provisions of the Indian Trust Act II of 1882 Section 20 or any of them or in the purchase of an immoveable property in Bombay which investments shall form part of the reserve fund and shall be utilised for the purposes hereinbefore mentioned in connection with the Reserve fund And it is hereby further provided and declared that for the proper management of the said trustees shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make such rules and regulations in respect of the proper and better management of the several objects of the trust as the said committee shall think fit and proper And it is hereby further agreed and declared that it shall be lawful for the managing committee to reserve from time to time such portion or portions of the said Dharamsala for the use and benefit of Digamber Jains only as they may from time to time think fit And that the said managing committee for the purposes aforesaid shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons as shall from

time to time be elected members of the Managing Committee of Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding School And it is hereby agreed and declared that if at any time the said trust estate or any part thereof shall be purchased or taken possession of by the Government or the Municipality of Bombay or by the Bombay City Improvement Trust for any public purpose under any law for the time being in force relating to the acquisition of land then and in that case it shall be lawful for the trustees of these presents to apply the moneys or compensation to be received therefor for the purpose of erecting one or more new building or buildings at such place or places in Bombay as the trustees may from time to time agree upon for the purpose of the trusts of these presents And it is hereby further agreed and declared that the trustees of these presents shall at all times be not less than six and more than eight and that two male descendants from the family of the said Hirachand Gumanji shall always act as trustees of these presents but if there be no such male descendant then two persons from the nearest male relations of the said Hirachand Gumanji and who may be found fit to act shall be appointed trustees of these presents And it is hereby further agreed and declared that Sheth Manekchand Hirachand shall be the Chairman of the trustees hereby appointed and after his decease the eldest surviving male member of the family of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed to act as chairman of the trustees and if there be no such member living then in such case any of the nearest male relations of the said Hirachand Gumanji shall be appointed to act as Chairman of the

trustees and that such Chairman shall also be the Chairman of the Managing Committee and shall preside at every meeting of the trustees and the Managing Committee and in his absence the trustees and the Managing Committee shall have power to appoint any one of them to act as such Chairman. And it is hereby further agreed and declared that the business of the trust shall be carried on by majority of votes and the Chairman shall have in addition to his own vote a casting vote Provided always and it is lastly declared that if the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall happen to die or continue to reside abroad for a period of more than twelve calender months or become bankrupt or take the benefit of any Act for relief of Insolvent Debtors or resign or be desirous of being discharged or disclaim neglect or refuse to act or become incapable of acting in the trusts hereinbefore declared before the same shall have been fully executed then and in every such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Maneckchand Hirachand and Navalchand Hirachand during their joint lives and after the decease of any of them or the survivor of them and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees or trustee for the time being of these presents or for the executors or administrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrument in writing from time to time to substitute or appoint within a period of three months from the happening of any of the aforesaid contingencies any persons or person in the place or stead of such trustees or trustee so dying or continuing to reside abroad bec-

oming Bankrupt or Insolvent desirous to be discharged disclaiming neglecting or refusing to act or becoming incapable of acting as aforesaid and immediately thereupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forthwith conveyed, assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting, undetermined and capable of taking effect and every instrument expressed to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the face of it to be invalid shall although not so made be valid and effectual for all purposes other than the exoneration of the parties to the making thereof from responsibilities and that every such new trustee or trustees either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same power and authority in all respects as if he or they had been originally appointed a trustee or trustees by these presents Provided always and it is hereby declared that the trustee or trustees to be appointed as hereinabove mentioned shall be appointed from the trustees of Sheth Hirachand Gumanji's Jain Boarding school and that there shall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the chairman shall convene a meeting of the trustees And that accounts and the reports shall be printed and published every year that bills of monthly expenses should bear

signature of at least two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid be responsible for the acts deeds or defaults of any co-trustee or co trustees nor for involuntary losses nor for moneys expressed to have been received in any receipt or receipts in which they or he shall join for the sake of conformity only nor be accountable for any banker broker attorney solicitor agent or auctioneer or any other person or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody or otherwise in execution of the aforesaid trust nor for the insufficiency or deficiency of any stock funds or securities nor for any other loss of damage that may happen to arise to all or any part o the said trust estate monies and premises unless through the wilful neglect or default of such trustees respectively and that the present or any future trustees or trustee shall or may reimbures himself and themselves out of the monies which shall come to his or their hands by virtue of these presents all such costs damages and expenses as he or they shall incur or sustain in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Manekchaad Hirachand and Navalchand Hirachand do hereby for themselves heir heirs executors and administrators covenant with the said trustees that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand or any person or persons lawfully or equitably claiming by from through under or in trust for them made, done or committed or omitted to the contrary they the said Manekchand Hirachand and Navalch and Hirachand

now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the said trust estate hereby granted and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees in manner aforesaid And that it shall be lawful for the said trustees from time to time and at all times hereafter peaceably and quietly to enter upon possess and enjoy the said trust estate and to receive and take the rents and profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction interruption claim or demand whatsoever of from or by them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by from under or in trust for them or any of them and that free from all incumbrancers whatsoever and further that they the said Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and their heirs executers and administrators and all and every other person or persons whosoever having or claiming any estate or interest whatsoever in the said trust estate or any of them or any part thereof from under or in trust for the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand their heirs or any of them shall and will from time to time and at all times hereafter upon every reasonable request and at the costs of the said trustees do and execute or cause to be done and executed all such further and other lawful acts deeds and things whatsoever for the

better and more perfectly conveying and assuring the said trust estate and every part thereof the unto said trustees in manner aforesaid as by the said trustees shall be reasonably repuired, in witness whereof the parties hereto have hereunto set their respective hands and seals the day and year first hereinabove written

Schedule

All that piece or parcel of Pension and Taxland being a portion of all that land or cart which is known by the name of Kapoorwady together with the messuages, tenements or buildings hereditaments and premises standing thereon lying and being in the *Kandewady Lane* at the corner of the Khatar Gully Lane opposite the Cawasji patel Tank out of the Fort in the Town and Island and in the Registration Sub District of Bompay containing by admeasurement 1706 square yards or thereabouts and bearing Collectors Old No 17 and 140 New No- B-77 and B-1273 Old Survey No-459, 462 and New Survey No- 7521 and assessed by the assessor and Collector of Municipal rates and taxes under D. Ward No 1266, 1267, 833, 832, 825, 827, and 830 ond street Nos 70, 72, 74, 149, 151, 147, 135, 3 and 5 and which said premises are bounded on the North partly by the said Kandewady Street and partly by the Bhooleshwar Road joins the said Kandewady Street on the East by vacant land formerly be-

/

The Trust-deed of Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding School.

STAMP Rs. 200	Daily No 6 of 23rd January 1900.

Received fees as follows.-
Registration fee Rs 40-0-0
Copying fee Rs 6-9 0
(12 Fols) ——
Total Rs 46-9-0

M. W Gadgil,
Sub Registrar.

Presented at the Bombay Sub-Registrar office on Tuesday the 23rd January 1900 at 2-15 P M

માણેકચંદ હીરાચંદ
M. W Gadgil,
Sub-Registrar.

This Indenture made the 4th day of December in the Christian year one thousand eight hundred and ninty nine between Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand all of Bombay Hindoos professing the Jain Digamber faith (hereinafter unless otherwise designated called the settlors) of the one part and the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, Premchand Motichand, ... Dharamchandra, son of Raja Bahadur ...ur Jung (Deen Dayal) and Hirachand ... all of Bombay Hindoos following Digamber Jain religion (hereinafter

Premchand Motichand, Raja Dharamchandra son of Raja Bahadur Mussavir Jung (Deen Dayal) and Hira band Manekchand and the Survivors and Survivor of them and their and his successors and assigns All that piece or parcel of land or salt balty ground with the messuage tenements and buildings standing thereon situate on the west side of the Gilder Street outside the Fort of Bombay in the Registration Sub District of Bombay containing by admeasurement two thousand six hundred and sixty square yards be the same little more or less and assessed by the Collector of Land Revenue New Nos 13862, 13874, 13930, $\frac{a}{10121}$ under old Nos 346, 131, and old Survey Nos. new Survey Nos $\frac{1}{7604}$ $\frac{1}{7603}$ $\frac{1A}{7607}$ and by the Assessor and Collector of Municipal rates and taxes under ward No E 2829, 2830, 2625, 2778 (1), (2) 2779, (2) (3) 2831 to 2833, 2626, and street No 1, 3, 474, 5 to 9,476 to 480 and bounded as follows, that is to say on or towadrs the East by the said Gilder Street, on or towards the West by the other property of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand, on or towards the north partly by the Falkland road, partly by the Low Lever road and partly by property of Cawasjee Kharadi

unless otherwise designated called the trustees) of the other part Whereas the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand are absolutely possessed of or otherwise well and sufficiently entitled to the piece or parcel of land or ground hereditaments and premises hereinafter described (and hereinafter unless otherwise designated referred to as the trust estate) free from incumbrances And Whereas the said settlors are desirous of establishing a Jain Boarding House for the use and benefit of their fellow countrymen, of the Jain caste in order to perpetuate the memory of their father Hirachand Gumanji, and whereas for the charitable purposes aforesaid the said settlors are desirous of settling the said trust estate to the uses upon the trusts and for the ends, intents and purposes and with and subject to the powers, provisoes, charges, declarations, and agreements hereinafter limited, declared and contained Now this Indenture witnesseth that in pursuance of the said desire and in consideration of the premises they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand do by these presents grant, convey and assure unto the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand,

Premchand Motichand, Raja Dharamchandra son of Raja Bahadur Mussavir Jung (Deen Dayal) and Hirabai Manekchand and the Survivors and Survivor of them and their and his successors and assigns All that piece or parcel of land or salt balty ground with the messuage tenements and buildings standing thereon situate on the west side of the Gilder Street outside the Fort of Bombay in the Registration Sub District of Bombay containing by admeasurement two thousand six hundred and sixty square yards be the same little more or less and assessed by the Collector of Land Revenue New Nos 13862, 13874, 13930, $\frac{a}{[illegible]}$ under old Nos 346, 131, and old Survey Nos. new Survey Nos $\frac{1}{7604}$ $\frac{1}{7003}$ $\frac{1A}{7007}$ and by the Assessor and Collector of Municipal rates and taxes under ward No E 2829, 2830, 2625, 2778 (1), (2) 2779, (2) (3) 2831 to 2833, 2626, and street No 1, 3, 474, 5 to 9,476 to 480 and bounded as follows, that is to say on or towards the East by the said Gilder Street, on or towards the West by the other property of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand, on or towards the north partly by the Falkland road, partly by the Low Lever road and partly by property of Cawasjee Kharadi

and on or towards the South by the Public Passage and which said land hereditaments and premises are now in the possession of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Nawalchand Hirachand, and Premchand Motichand and which said premises are particularly delineated in the ground plan thereof hereto annexed and marked with the letter A and therein coloured by a red boundary line and which said land hereditaments and premises are for the purpose of the Stamp Act, estimated to be of the present market value of rupees forty thousand Together with all houses, out houses, buildings yards, ways, wells, waters, water courses, sewers, ditches, drains, lights liberties, easements, profits, privilages and a appurtenances, whatsoever to the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises or any part thereof belonging or in any-wise appertaining or with the same or any part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appertenant thereto, and all the estate, right, title, interest, claim and demand whatsoever both at Law and in Equity of them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand into or upon the said piece or parcel of land or ground hereditaments a

premises and every part thereof. **To Have and to hold** the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises hereby granted and assured or expressed so to be unto the trustees and the survivors and survivor of them and their and his sucessors and assigns to the use upon the trusts and for the ends, intents and purposes and with under and subject to the powers, provisos, charges declarations and agreements, hereinafter limited, declared and contained of and concerning the same that is to say that the said trustees or trustee for the time being of these presents shall hold and stand possessed of the said land hereditaments and premises herein before described and shall collect and get the rents and profits thereof and shall pay thereout all the rates and taxes payable to the Government of Bombay and the Municipality of Bombay and shall spend such portion thereof as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said hereditaments premises in the good repair and condition and of keeping them insured and for the purposes of managing the said trust and shall out of the residue of the rents and profits set apart at least five percent of the net annual income towards forming a reserved fund to be used on occasions of urgency, emergeney or accident as the trustees may think proper and out of the

residue the trustees shall set apart a sum of Rupees twenty five per month for the purposes of the maintenance of a Dera (temple) to be hereafter erected on a position of the said land such as paying to a Poojari and lighting the temple and keeping Pooja articles such as *Kesar* &c and out of the residue shall pay the salary of a propers superintedent and shall appoint a proper person as superintendent to look after the boys or youngmen to be admitted to the Boarding House under or by virtue of this settlement with power to remove him and to appoint another in his stead and shall appoint a managing Committee for the management of the said Boarding House with power to remove the same or any member thereof and to appoint others, and shall have full power to make rules and from time to time to abrogate, alter, and add to the same for the guidance of such managing Committee and superintendent and generally for the purpose of carrying out this settlement and the object thereof provided only that no such rule shall be against the law or inconsistent with the provisions hereof Further that the said trustees shall out of the residure of the income and rent including the general charges of carrying one tenth for payments of scholarships to poor Jains engaged in learning the Jain Shashtras in Sanskrit and another four-

tenths towards payment of scholarships to the Degamber poor Jains who are taking general education in or out of Bombay and the remaining five tenths towards the payment of the Scholarship to the students residing in the Boarding House which shall be called "Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding House" FURTHER that any sums remaining unexpended shall be invested in securities of Government of India or upon any of the public stock fund port trust Bonds or Debentures or Municipal Loans or other eligible securities under the Law for the time being in force in this respect and form reserve funds for the purposes for which the unexpended sums are by this settlement intended Further that the premises marked **B** on the accompanying plan shall be used for Boarding purposes and that the premises marked **C** on the accompanying plan shall be used for Dharmsala and that the plate containing the inscription as to such Boarding House shall be fixed upon some conspicuous part of the said Boarding House and that the said trustees shall allow the Jain boys who have passed the Matriculation Examination and who intend to prosecute their studies in some College or are studying for the District Pleader's and Sub-judge's Examinations to live in the said Boa[illegible] free of rent provided

always that preference shall be given to the Digamber Jains who have passed their Matriculation examinations with Sanskrit as their second Language and provided further if there is any surplus accomodation in the Jain Boarding House Digambari Jain Students who have passed the fourth English standard and are studying for the higher standards or for the Matriculation examination may also be allowed to live therein free of rent **Provided always** that in the event and for the time there are no students living in the said Boarding House, the same may be temporarily used for such Jain religious purposes as the trustees for time being may deem meet **Provided** further that Digambari Jain (Travellers) may be allowed to lodge in the Dharmshala free of rent Provided further that any person of Jain religion desiring to build a Digambari Jain Dera (temple) on the premises hereby granted or intended so to be at his own cost expenses may be allowed to do so subject to such terms and conditions as to site and style of building as may be laid down by the trustees But no such person shall have any right whatever over the said temple after it is built and completed but the same shall vest in the trustees and only the ceremonies relating to the Jain Digamber religion shall be allowed to be performed in the temple that

the said trustees shall be at liberty to accept and take such sum or sums of money which shall be given by any Jain towards the purposes of the said trust and such monies shall form a part of this trust estate

that the trustees for the time being of these presents shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make such rules and regulations in respect of the proper and better management of the said Boarding House, Dharmshala, and Temple if built as they shall think fit and proper

That there shall be a Managing Committee for the purposes aforesaid which shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons from time to time as may be elected by such trustees out of the Jains following Digamber Jain religion

That there shall always be two trustees out of the male descendants of the said Hirachand Gumanji and if there shall be no male descendent of the said Hirachand Gumanji, such two trustees shall be appointed from the nearest relation of the said Hirachand Gumanji Provided always that if at any time the said land hereditaments or premises or any part thereof shall be taken by the Government for any public purpose under any Law for the time being in force the amount of compensation that

may be given for the same or any part thereof shall be applied for the ends, intents and purposes aforesaid That the number of the trustees shall be at least six and shall not exceed eight That Sheth Panachand Hirachand shall be the Chairman of the first trustees and after his decease the elder living scion of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed the Chairman of the trustees That the Chairman of the trustees shall also be the President of the Managing Committee unless he resigns During the temporary absence of the Chairman the trustees may appoint any one of themselves to act as chairman for the time being Provided always and it is hereby lastly declared that if the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall happen to die, continue to reside abroad for the space of more than twelve calendar months or shall become a bankrupt or take the benefit of any act for the relief of insolvant debtors or be desirous of being discharged from disclaim neglect refuse to act or become incapable of acting in the trust herein before declared before the same shall be fully performed and then and in such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Panachand Hirachand, manekchand Hirachand, Navelchand Hirachand and

Premchand Motichand, during their joint lives and after the decease of any of them for the survivor and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees or trustee of these presents for the time being or the executors administrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrument in writing from time to time to substitute or appoint within three months at the most any persons or person in the stead or place of such trustees or trustee so dying continuing to reside abroad becoming bankrupt or insolvent, desirous to be discharged, disclaiming, neglecting or refusing to act or becoming incapable of acting as aforesaid and immediately thereupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forth with conveyed assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses, upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting undetermined and capable of taking effect and every instrument expressed to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the f of it to be invalid shall although not

made be valid and effectual for all purposes other then the exoneration of the parties to the making thereof from responsibilities and that every such new trustees or trustee either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same power and authority in all respects as if he or they had been originally appointed a trustee or trustees by these presents and that thereshall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the Chairman shall convene a meeting of the trustees That accounts and the reports shall be printed and published every year, that the bills of monthly incomes and expenses should bear the signatures of at least two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid shall be responsible for the acts deeds or defaults of any co-trustee or co-trustees, nor for involuntary losses nor for monies expressed to have been received in any receipt or receipts in which they shall join for conformity only, nor be accountable for the sufficiency of any banker, broker, attorney, solicitor, agent or auctioneer or any other person or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody or otherwise or who may receive the same in

execution of the aforesaid trust, nor for the insufficiency of any stock funds or securities nor for any other loss or damage that may happen to arise of or to all or to any part of the said trust estate, trust monies and premises unless through the wilful default of such trustees respectively and that the present or any future trustees or trustee shall and may reimburse themselves and each other out of the monies which shall come to their respective hands by virtue of these presents all such costs, damages and expenses as they or any of them shall or may suffer, sustain expend disburse or be put into in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Panachand Hirachand, Manekchand, Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand do hereby for themselves their heirs, executors and administrators convenant with the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns, that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming by through, under or in trust for them made, done or committed or omitted to the

contrary they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand, now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the hereditament and premises hereby granted released and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns in manner aforesaid And that it shall be lawful for the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors administrators and assigns from time to time and at all times hereafter peacably, quietly to enter upon, possess, and enjoy the said hereditaments and premises and to receive and take the rents and profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction, interruption, claim or demand whatsoever of, from, or by them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by, from, under or in trust for them or any of them, and that free from all incumbrances, and further that they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand

Motichand and their heirs executors and administrators and all and every other person or persons whosesoever having or claiming any estate or interest whatsoever in the same hereditaments and premises or any of them or any part thereof, from, under, or in trust for the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand or their heirs or any of them shall and will from time to time and at all times hereafter upon every reasonable request and at the costs of the said trustees, their successors, and assigns and their heirs, executors, administrators or assigns do and execute or cause to be done and executed all such further and other lawful acts deeds and things whatsoever for the better and more perfectly conveying and assuring the said hereditaments and premises and every part thereof unto the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns in manner aforesaid as by the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors administrators or assigns or their counsel in the Law shall be reasonably required

In Witness Whereof the parties hereto have respectively hereunto set their respective hands and seals, the day and year first above written Signed.